Kadambini Oct-Dec 1982 G.K.U.

अपने घर को रोशन करें....

FRANK

SUN & MOON

आंधी और तूफान में भी न बुझने वाली

लालटेन

- अधिक तेज रोशनी के लिये।
- अधिक टिकाऊ खालिस टिन प्लेट द्वारा निर्मित।
- जर्मन तकनीक द्वारा निर्मित बर्नर।
- पीतल की बत्ती-नली (विक ट्यूब) के साथ।
- ISI डिजाइन के आधार पर बनी।
- नं. १ (२७०) गोल चिमनी वाली लालटेन।
- भारत में सबसे अधिक बिकने वाली लालटेन।

मोदी लालटेन वर्क्स

मोदीनगर-२०१२०४

हर उम्र में

आपका सहारा.

माता-पिता के लिए...बच्चों के लिए...दादा और नाना के लिए... हॉर्लिक्स सभी के लिए लाभकारी है। क्योंकि हॉर्लिक्स लेने का मतलब है हर रोज़ अच्छा स्वास्थ्य।

तभी तो सौ से भी अधिक वर्षों से लाखों लोग हॉर्लिक्स पर भरोसा करते आ रहे हैं।

दुनिया-भर में डाक्टर हॉर्लिक्स को अच्छे स्वास्थ्य का साधन मानते हैं, इसे हर रोज़ लेने की सलाह देते हैं।

और क्यों नहीं।

हॉर्लिक्स में भरपूर गुणों वाले शुद्ध तत्व हैं जिन्हें ऐसी प्रक्रिया से तैयार किया जाता है कि उनके गुण बने रहें और यह आसानी से पच सके।

अपने सारे परिवार के लिए हॉर्लिक्स अपनाइए।

आप इसके स्वास्थ्यदायक गुणों पर पूरा भरोसा कर सकते हैं।

महान शक्तिदाता

HTD-HMM-7545H
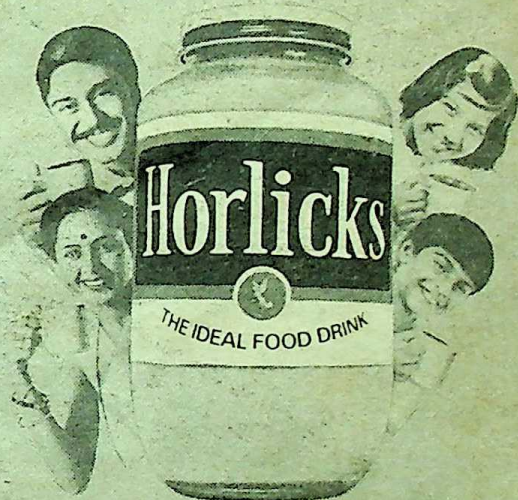
• ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **एकमना**—क. अलग-थलग, ख. निकट, ग. एक ओर मन लगानेवाला, घ. एक से विचारवाले।

२. **दुर्दांत**—क. बुरा दांत, ख. जिसे काबू में लाना कठिन हो, ग. कठोर, घ. अत्याचारी।

३. **आकीर्ण**—क. छिपा हुआ, ख. विस्तृत, ग. भरा हुआ, घ. फटा हुआ।

४. **ऊर्ध्व**—क. लंबा, ख. चोटी का, ग. सामनेवाला, घ. ऊपर उठा हुआ।

५. **आकंप**—क. झूलना, ख. धीरे-धीरे हिलना, ग. भूचाल, घ. तेजी से कांपना।

६. **कुचाल**—क. मैला-कुचैला, ख. खोटी चाल, ग. लंगड़ाकर चलना, घ. बुरा मकान।

७. **गतस्पृह**—क. सांसारिक भोग-लिप्सा से विमुख, ख. जिसका मन टूट गया हो, ग. दबी भावनाओं वाला, घ. अचेत।

८. **गरिष्ठ**—क. गला हुआ, ख. अत्यंत भारी, ग. गठा हुआ, घ. बहुत महत्त्वपूर्ण।

९. **ऋणार्ण**—क. कर्ज में डूबना, ख. ऋण से मुक्त होना, ग. एक कर्ज चुकाने के लिए दूसरा कर्ज, घ. भारी कर्ज।

१०. **इतिमात्र**—क. अंत, ख. सिर्फ इतना, ग. थोड़ा, घ. बहुत कुछ।

उत्तर

१. ग. एक ओर मन लगानेवाला, एकचित्त। **एकमना** होने से ही कार्यसिद्धि होती है। घ. एक से विचारवाले। इस प्रश्न पर सभी **एकमना** हैं।

२. ख. जिसे काबू में लाना कठिन हो। भारत को अनेक **दुर्दांत** आक्रमणकारियों का सामना करना पड़ा। जनसंख्या-वृद्धि एक **दुर्दांत** समस्या बन गयी है।

३. ग. भरा हुआ। जीवन-पथ अनेक कठिनाइयों से **आकीर्ण** है। **कंटकाकीर्ण** (कंटक+आकीर्ण) कांटों से भरा हुआ।

४. घ. ऊपर उठा हुआ, ऊपरी। स्तंभ के **ऊर्ध्व** भाग में एक मूर्ति है। **ऊर्ध्व-काय** प्रतिमा = केवल ऊपरी भागवाली प्रतिमा।

५. ख. धीरे-धीरे हिलना। मृदु बयार से पल्लरों का आकंप हो रहा है। (**आकंपन** का भी प्रयोग। वि.—**आकंपित**)

६. ख. खोटी चाल, किसी को नुकसान पहुंचानेवाला काम। शत्रु की **कुचाल** से सदैव सावधान रहो।

७. क. सांसारिक भोगलिप्सा से विमुख, जिसे कोई इच्छा न रह गयी हो। प्राचीन ऋषि अनवरत तपस्या से **गतस्पृह** हो जाते थे।

८. अत्यंत भारी। **गरिष्ठ** भोजन हानिप्रद होता है। घ. बहुत महत्त्वपूर्ण। उनका स्थान समाज के **गरिष्ठ** व्यक्तियों में है।

९. ग. एक कर्ज चुकाने के लिए दूसरा कर्ज। वह बेचारा **ऋणार्ण** द्वारा ही काम चला रहा है। (ऋण + ऋण)

१०. ख. सिर्फ इतना। कहानी का **इतिमात्र** जान लो।

पारिभाषिक शब्द

ऐक्शन = क्रिया, कार्य
ऐक्टिविटीज = कार्यकलाप
ऐक्टिव = सक्रिय, क्रियाशील
इंस्पेक्टर = निरीक्षक
इंस्पेक्टर-जनरल = महानिरीक्षक
सुपरवाइजर = पर्यवेक्षक
सर्वेयर = सर्वेक्षक
बैच = जत्था
ग्रुप = टोली, समूह
गैंग = गिरोह

समस्या-पूर्ति—४२

हइया हो हइया

प्रथम पुरस्कार

गहरे विस्तृत भवसागर में फंसी हुई जीवन की नैया
डूबेगी या पार लगेगी जाने है बस एक खिवैया
शेषनाग-सी लहरों पर है नाव बनी विष्णु की शैया
हो निश्चिंत तभी तो मांझी बोल रहे हइया ओ हइया

—लता श्रीवास्तव

द्वारा—श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव
म. नं.—१०१, पंसारी टोला (छैराहा),
इटावा (उ. प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

साहस जिनके साथ सफर में
तट मिलता है बीच भंवर में
गाता चल लहरों की धुन पर
हइया ओ हइया के स्वर में

—बाबूलाल कदम

रामगंज, होशंगाबाद (म. प्र.)

आस्था के आयाम

एक टाइपराइटर एक कहानी

पहाड़ी नदी की धारा में पहाड़ टूटने से जब रुकावट आ जाती है, तब नदी धीरे-धीरे अपने स्तर को ऊंचा करके उस अवरोध को लांघकर पार कर जाती है। मार्ग के अवरोधों को पार करके, अपना लक्ष्य प्राप्त करने का ऐसा ही उदाहरण अपने जीवन में प्रस्तुत किया, प्रसिद्ध शल्य-चिकित्सक और समाजसेवी स्व. डॉ. नीलांबर चिंतामणि जोशी ने। बात १९३७ की है। उनके पुस्तकालय में रखे पुराने टाइपराइटर को रखा देखकर एक निकटस्थ व्यक्ति ने उनसे कहा कि इस पुराने और बेकार टाइपराइटर को किसी को दे दें, या बेच डालें। सुनकर डॉक्टर जोशी गंभीर हो गये। फिर कुछ क्षणों के बाद बोले, कि इसकी एक कहानी है और उसे याद रखने के लिए मैंने उसे संभालकर रखा हुआ है। कहानी उन्होंने इस प्रकार सुनायी :

'हमारा संयुक्त परिवार था। हमारे चाचाजी ने एक बार ताऊजी के दोनों पुत्रों और मुझे, तीनों को बुलाकर इस टाइपराइटर से बारी-बारी से टाइप सीखने को कहा। उन्होंने कहा कि २५–२६ दिनों के बाद वे हमारी परीक्षा लेंगे। परीक्षा में जो सर्वप्रथम रहेगा, उसे यह टाइप राइटर इनाम में दिया जाएगा।

तीनों भाई लगन से टाइप सीखने लगे। कुछ दिन के बाद ताऊजी के दोनों पुत्रों ने मिलकर टाइप सीखना शुरू कर दिया। और मुझे टाइप सीखने के लिए टाइपराइटर देना बंद कर दिया। मेरी लगन इससे और भी बढ़ गयी। दिन में वे मेरी सीखने की बारी नहीं आने देते थे, तब मैंने रात को उनके सो जाने के बाद टाइप सीखना शुरू कर दिया। एक रात टाइप करने की टप-टप आवाज सुनकर वे मेरे कमरे में आ गये और कहने लगे "अच्छा अकेले-अकेले छिप-छिपकर टाइप सीख रहे हो।" यह कहकर टाइपराइटर छीन ले गये और उसके बाद रात को भी टाइपराइटर अपने पास ही रखने लगे। तब मैंने एक नया उपाय खोज निकाला। मैंने एक कार्ड बोर्ड पर टाइपराइटर का सारा 'की बोर्ड' उतार लिया और एकांत में उसी पर टाइपिंग की प्रैक्टिस करने लगा।

आखिर टाइप की परीक्षा हुई, तब मैं उसमें प्रथम आ गया और चाचाजी ने यह टाइपराइटर इनाम में मुझे दे दिया। तब से टाइपराइटर और 'की बोर्ड' दोनों को मैंने संभाल कर रखा हुआ है।'

घायल सैनिकों का मनोरंजन

अमरीकी हास्य-अभिनेता जिम्मी ड्यूरांट घायल सैनिकों के अतिरिक्त अन्य किसी सार्वजनिक स्थल पर कोई मनोरंजक कार्यक्रम पेश नहीं करते थे।

एक बार वे अपने पत्रकार मित्र एड सलीवन के साथ न्यूयार्क खाड़ी के स्टेटन द्वीप के एक अस्पताल में गये। वहां उन्हें द्वितीय विश्वयुद्ध के घायल सैनिकों का मनोरंजन करना था। उसी दिन उन्हें न्यूयार्क शहर में रेडियो पर दो कार्यक्रम भी प्रस्तुत करने थे। प्रोग्राम यह था कि सैनिकों का मनोरंजन करके उसी शाम को वे जहाज में बैठकर न्यूयार्क पहुंचेंगे और रात्रि को रेडियो पर कार्यक्रम प्रस्तुत कर देंगे। सैनिकों को उनका कार्यक्रम काफी पसंद आया। एक सैनिक के आग्रह पर वे एक नया 'आइटम' और पेश करने लगे, तब उनका मित्र एड सलीवन बोला, "आप यह नया 'आइटम' क्यों और रख रहे हो? जहाज निकल जाएगा तो हम न्यूयार्क शहर कैसे पहुंचेंगे।"

"मित्र, जरा सामने बैठे उन दो सैनिकों को देखो, जो प्रथम पंक्ति में बैठे हैं।" ड्यूरांट ने कहा।

एड सलीवन ने देखा—दो सैनिक बैठे थे और उनकी एक-एक बांह कटी हुई थी और दोनों मिलकर एक-दूसरे के एक-एक हाथ की सहायता से तालियां बजा रहे थे।

कला का ऐसा कद्रदान उन्हें पहली बार ही मिला था। जिम्मी ड्यूरांट ने रात्रिभर उन सैनिकों का मनोरंजन किया और रेडियो पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने का विचार त्याग दिया।

उसी दिन से उन्होंने संकल्प किया कि भविष्य में वे केवल घायल सैनिकों का ही मनोरंजन करेंगे। •

वचनवीथी

अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

—साइरस

मनुष्य को इसकी बड़ी अहतियात रखनी चाहिए कि वह इतना अधिक बुद्धिमान न हो जाए कि हंसने-जैसी महान खुशी से पृथक रहने लगे। —एडीसन

ज्ञानी पुरुष का हृदय दर्पण के सदृश होना चाहिए कि जो किसी वस्तु को बिना दूषित किये हुए परावर्तित कर देता है। —कन्फ्यूशस

बोलने में समझदारी से काम लेना वाक्पटुता से अच्छा है। —बेकन

समय की पाबंदी सुशीलता का चिह्न है। —सम्राट लुई

शासन-कार्य में भाग लेने से इनकार करने का दंड यह मिलता है कि गिरे हुए लोगों के शासन में रहना पड़ता है।

—एमर्सन

तंत्र विशेषांक पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय भी

'कादम्बिनी' का तंत्र-विशेषांक आद्योपांत पढ़ डाला। पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय है यह विशेषांक, पिछले वर्ष के तंत्र-विशेषांक से भी बढ़कर ; 'समय के हस्ताक्षर' से लेकर विशेषांक के अंतिम लेख 'ज्योतिष: भविष्यवाणियां' तक, सभी रचनाओं में कुछ न कुछ ऐसा अवश्य था, जिसने मुझे बांधे रखा।

'काल चिंतन' भी सदा की तरह विचारोत्तेजक लगा, आपने ठीक ही लिखा है, 'जी रहे हैं हम आशाओं के ताजमहल में, व्यर्थ नहीं होंगी यात्राएं—हमारे संकल्प, कर्त्तव्य-निष्ठा और फलित होंगी हमारे सामने या फिर हमारी पीढ़ी के लिए !' **शिवकुमार झा, पूणे**

तंत्र-विशेषांक के संबंध में हमें प्रतिदिन पाठकों के काफी बड़ी संख्या में पत्र प्राप्त हो रहे हैं। ऐसी सब प्रतिक्रियाएं अगले अंक में। —संपादक

युवा जागरूक हैं

अक्तूबर अंक में परिचर्चा, 'आज के युवा जागरूक हैं' रोचक रही। इस परिचर्चा में भाग लेनेवालों का आक्रोश उनका अपना व्यक्तिगत आक्रोश है, अपनी पहचान बनाने के लिए। उन्हें अपने युवा वर्ग पर भी आक्रोश है क्योंकि उनमें पारस्परिक सहयोग की भावना का अभाव है। अपनी-अपनी परिधियों में वे इतने जकड़े हुए हैं कि पारस्परिक विचारों को भी मान्यता नहीं दे पाते। कुछ कर दिखाने की इच्छा है, लेकिन क्रियान्वित करने के लिए दृढ़ संकल्प का अभाव है। वास्तव में आज का युवा वर्ग अपने आक्रोश के कारणों की भी स्पष्ट अभिव्यक्ति करने में अभी असमर्थ है। इसी कारण वे पारस्परिक विरोधी बातें करते हैं।

– शीला भटनागर, इलाहाबाद;

इस परिचर्चा के संबंध में इन पाठकों की भी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं—कमला रौतेला, अल्मोड़ा; राजीवकुमार जैन, शिवपुरी; राकेश दुबे, बाबई, (होशंगाबाद म. प्र.); किशोरचंद्र अग्रवाल, नानपारा (बहराइच); सुरजीत सिंह, खारवन (जगाधरी) अजय के. अग्रवाल, फीरोजाबाद।

अक्तूबर अंक में वीरेन्द्र मिश्र का गीत—'वक्त ठहर जाएगा' और नीरज की 'गीतिका' प्रभावकारी रहीं।

—ओम प्रकाश राय, इलाहाबाद

सबसे पहली लिपि

सितंबर व अक्तूबर अंकों में प्रकाशित डॉ. शि. रं. राव का हड़प्पा-सभ्यता की लिपि के रहस्योद्घाटन (?) से संबंधित लेख रुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक अवश्य था, लेकिन उनकी मान्यताएं विवाद और पूर्वाग्रहों से रहित नहीं कही जा सकतीं।

हड़प्पा-सभ्यता की लिपि को पढ़ने का प्रथम प्रयास १९२५ में वैडेल ने किया था। देश-विदेश के सैकड़ों विद्वानों ने भी इसे पढ़ने का प्रयास किया है।

मुझे विद्वान लेखक की अनेक मान्यताएं विवादास्पद और पूर्वाग्रहों से युक्त प्रतीत होती हैं। हड़प्पा और वैदिक लोगों के एक ही होने की मूल धारणा ही गले नहीं उतरती। हड़प्पावासी शिव एवं मातृशक्ति उपासक, योग से परिचित, जल की पवित्रता, लिंग व योनि-उपासक थे। इनका ऋग्वैदिक काल में अभाव था। लेकिन उत्तरवैदिक काल से धीरे-धीरे ये बातें आर्यों की संस्कृति में घुलती-मिलती गयीं। इसी तरह हड़प्पन संस्कृति नगरीय थी, जबकि वैदिक संस्कृति ग्रामीण। ऐतिहासिक विकास के क्रम में मानव-संस्कृति ग्रामीण से शहरी हुई है। डॉ. राव की मान्यतानुसार प्रारंभ में शहरी संस्कृति ग्रामीण होकर पुनः शहरी नहीं हो सकती।

——महावीरप्रसाद शर्मा, चूरु (राज.)

इस लेखमाला के संबंध में इन पाठकों ने भी अपने विचार भेजे हैं——रेखा रानी कुरे, अंबिकापुर; शकुनचंद गुप्त विशारद, लालगंज (रायबरेली); जगदीश शारंगपुरे, जुन्नारदेव।

हिम खंड कब पिघलेंगे ?

'कादम्बिनी' को अक्तूबर अंक में 'हिमालय के हिमखंड कब पिघलेंगे' लेख प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद देते हुए मैं कुछ मूल त्रुटियों को सुधारना चाहता हूं। यद्यपि पिछले १३ सालों में उत्तर-प्रदेश, हिमाचल-प्रदेश व जम्मू-कश्मीर स्थित अधिकतर पहाड़ी सड़क-मार्गों पर आनेवाले अवघावों की निशान-देही हो गयी है तथा उनके रोकथाम की प्रारंभिक योजना भी बना ली गयी है, पर समस्या का अभी समाधान नहीं हो सका है।

लेखक का कथन है कि सासे में जम्मू-श्रीनगर, श्रीनगर-लेह राज्य-मार्गों व त्रिलोकीनाथ (हि. प्र.) एवं बद्रीनाथ देव-स्थलों पर अवघावों से होनेवाले विनाश को पूर्णतया टाल दिया है, यह शत प्रतिशत भ्रमपूर्ण है। अवघावों की रोकथाम एक कठिन एवं बहुव्ययी काम है। सासे के वैज्ञानिक जी-जान से समुचित विस्तारपूर्वक योजनाएं बनाने में कटिबद्ध हैं और आशा है कि निकट भविष्य में अवघाव की समस्याएं काफी हद तक हल हो जाएंगी। अवघाव संबंधी समस्याओं का हल लंबे अरसे के आंकड़ों पर बहुत अधिक निर्भर करता है। इन आंकड़ों की हमारे देश में काफी कमी है।

——ले. कर्नल के. सी. अग्रवाल,
सहायक निर्देशक, मुख्यालय
हिम तथा अवघाव अध्ययन संस्थान,
द्वारा ५६ ए. पी. ओ.

नये धार्मिक केंद्र

'कादम्बिनी' के सितंबर अंक में प्रकाशित लेख 'नये धार्मिक केंद्र मानसिक रोग फैला रहे हैं' बहुत ही सामयिक रहा। वास्तव में ऐसे संप्रदायों के गुरु दुनियाभर में लोगों को गलत दिशा दे रहे हैं। लोग इनमें इसलिए शामिल होते हैं, ताकि उन्हें मानसिक शांति मिले। परंतु उन्हें मिलते हैं शारीरिक व मानसिक रोग। इन संप्रदायों के सदस्यों की बढ़ती हुई संख्या चिंतनीय है।

—गुरबीरसिंह चावला, रायपुर

ब्रिटिश झंडा एक भारतीय सिपाही ने उतारा था

सितम्बर अंक में डी. आर. मानकेकर की लेखमाला का लेख 'ब्रिटिश झंडा एक भारतीय सिपाही ने उतारा था' में स्वाधीनता-प्राप्ति के अवसर पर शंख बजाने के प्रसंग में एक त्रुटि है। शंख माननीय स्वर्गीय श्री गोविन्द वल्लभ पंत ने नहीं बजाया था। शंखनाद तत्कालिक केंद्रीय एसेंबली के सदस्य स्वर्गीय पं. गोविन्द मालवीय ने किया था।

प्रकाशित कार्यक्रम, जो सदस्यों को वितरित किया गया था, में कोई भी मंगलसूचक कार्यक्रम न रहने पर तथा यह अनुभव होने पर कि कार्यक्रम की जो भी प्रशासनिक रूपरेखा निश्चित कर दी गयी थी, उसमें सरकारी तौर पर कोई भी परिवर्तन कराना संभव न होगा, मालवीयजी ने १३ अगस्त को टेलीफोन करके वाराणसी से एक छोटा, सुंदर ध्वनि करनेवाला ऐसा शंख मंगवाया था, जो उनकी अचकन की जेब में आ सके। काशी में पंडित कालीप्रसाद मिश्र ने चुनकर एक शंख खरीदवाकर उसे मालवीयजी को भिजवाया। बिना किसी को बताये १४ अगस्त रात्रि के बारह बजे जब संसद-भवन के केंद्रीय कक्ष में लार्ड माउन्टबेटन व पंडित नेहरू सत्ता-हस्तांतरण द्वारा भारत को स्वाधीन करने की विधिवत कार्यवाही करने के लिए उठे तो ठीक उसी समय स्व. पंडित गोविन्द मालवीय ने अपनी अचकन की जेब से शंख निकालकर शंखनाद किया। पहले एक क्षण को तो स्वर्गीय पंडित नेहरू ने चौंककर देखा कि पूर्व निश्चित कार्यक्रम की जगह यह शंख कैसे बजा, किंतु दूसरे ही क्षण उनका मुखमंडल प्रसन्नता से देदीप्यमान हुआ देख, मालवीयजी ने दो बार और शंखनाद किया, जिसके पश्चात ही सत्ता-हस्तांतरण की सारी कार्यवाही हुई। दूसरे दिन कई समाचार-पत्रों की सुर्खियों में यह बात छापी गयी थी कि शंख-ध्वनि के मध्य भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। यह शंख अभी भी स्व. पंडित गोविन्द मालवीय के पुत्र श्री गिरिधर मालवीय के पास सुरक्षित है।

—शिवकुमार शास्त्री, वाराणसी

अनुवाद की असावधानीवश ही यह त्रुटि हो गयी है। सही वाक्य यह है—'यह शंख पं. गोविंद मालवीय चुपके से सेंट्रल हाल में ले आये थे।'

—संपादक

कादम्बिनी दो लाख से अधिक : समारोह की झांकी

समारोह में भाषण करते हुए उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला

हमारे सुधी पाठक इससे निश्चित ही प्रसन्न होंगे कि 'कादम्बिनी' की प्रसार-संख्या दो लाख से भी अधिक हो गयी। यदि यह मान भी लिया जाए कि एक ग्रंक दस लोग पढ़ते हैं, तो 'कादम्बिनी' के कम से कम बीस लाख पाठक तो हैं ही।

१२ नवंबर को होटल इंपीरियल, नयी दिल्ली में उपराष्ट्रपति श्री एम. हिदायतुल्ला के सान्निध्य में एक कार्यक्रम हुआ। श्री हिदायतुल्ला ने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि अच्छी ग्रौर सस्ती किताबें ग्रौर पत्रिकाएं पाठकों को उपलब्ध होनी चाहिएं। उन्होंने कहा कि ऐसी पत्रिकाग्रों की आवश्यकता है, जिनमें पुस्तकों का सारांश हो ग्रौर इस संबंध में 'कादम्बिनी' एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। श्री जैनेन्द्रकुमार ने 'कादम्बिनी' के कुशल संपादन की चर्चा करते हुए कहा कि हिंदी में यह एकमात्र अपने ढंग की पत्रिका है। हिन्दुस्तान टाइम्स समूह के कार्यकारी अध्यक्ष श्री एम. एम. अग्रवाल ने स्पष्ट किया कि 'कादम्बिनी' का ध्येय प्रारंभ से ही सांस्कृतिक ग्रौर साहित्यिक गति-विधियों को बढ़ावा देना रहा है।

'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने सहयोगियों के परिश्रम ग्रौर पाठकों की शुभेच्छाग्रों को प्रगति का आधार बताते हुए इसे ग्रौर भी अधिक पठनीय बनाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के ग्रंत में उप महाप्रबंधक डॉक्टर गौरी शंकर राजहंस ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

उपराष्ट्रपति का स्वागत 'कादम्बिनी'–संपादक द्वारा / समारोह में उपस्थित अतिथि

कादम्बिनी

वर्ष २३ : अंक २

दिसम्बर, १९८२

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

स्थायी स्तंभ

आवरण छाया : मंदिर (शंभु मुकर्जी) व नृत्यांगना : कोमला वरधन

कहानी

कविताएं

सार-संक्षेप

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

सह-संपादक
दुर्गाप्रसाद शुक्ल

उप-संपादक
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये
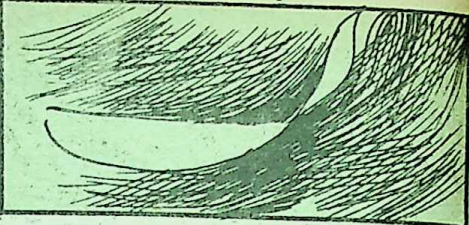
● चीटियों-सा हलके-हलके पहले रेंगता है, फिर अचानक काले नाग-सा सरकने लगता है और आकर निगल जाता है अपने शिकार को !

—यह विचित्र जीव है समय, और हम सब उसके शिकार हैं ! जाने-अनजाने हमें उसके शिकंजे में आना ही पड़ता है।

●

—कल ही शाम सुहावनी थी। शीत में डूबा मौसम मेमनों के साथ खेल रहा था ! घरों से लेकर होटलों और सड़कों तक बेतहाशा भीड़ थी !

—शाम गहराई और काजल में बदल गयी। तभी हमने हलचल देखी—चींटी काला नाग बन गयी है।

—हमारी दीवार के बेशकीमती कंगूरों में से एक कंगूरा निगला जा चुका था !

—मूर्खों की तरह ताजी भोर का हमने स्वागत किया; हमारी जिंदगी का एक बरस मर गया !

—समय-साकेत ने मक्खी बना दिया और मकड़ी की तरह वह लील गया; मृत्यु का स्वागत करना भी शायद हमारी एक परंपरा है !

●

—परंपराओं ने हमेशा तोड़ने का काम किया है।

—परंपराओं से जुड़ने के लोभ में ही तो हम समझौते करते रहे हैं।

—हर समझौता विवशता का एक इतिहास है !

—हर साल इसी इतिहास के अंग बनते हुए, कुछ साथियों को छोड़ जाते हैं, कुछ से जुड़ते हैं और अंततः हम स्वयं टूट जाते हैं।

—महासागर बनने का जो अंकुर जन्मते ही हममें फूटा था, कभी मात्र एक नाला बनकर रह जाता है, कभी एक सरिता।

—नदी से आगे हमारी जिंदगी नहीं बढ़ पायी और आधुनिकता के सभी उपकरण इस प्रक्रिया में प्रतिगामी सिद्ध हुए हैं।

●

—सोचता हूं, क्या हैं हम ?—बच्चे की संज्ञा से पहाड़ी-जिंदगी पार करने के बाद

भी हम उभर नहीं पाते !

--इतना भी नहीं पा सके, तो संघर्ष और नव-निर्माण का शोध किसलिए ?

--शायद इसलिए कि जाने के बाद एक बेजान पत्थर छूट जाए, जो किसी बाग या सड़क के कोने में खड़ा होकर मौसमों से लड़ता रहे और कभी न थकने का झूठा साहस देता रहे !

--सांसों के दरवाजे पर बुझा दीप अब आंधियों और तूफानों में भी जल रहा है !

--बस, इसीलिए हम जिंदगीभर बेचैन दौड़ते रहे, उसी बेचैनी में अपना अस्तित्व खो दिया; अब पत्थर बनकर हम चैन से जी रहे हैं।

●

--हमारे नाम दूसरों के ताजमहल हैं।

--हमारा संघर्ष दूसरों का राजमहल है !

--हमारी नष्ट जिंदगी आजादी का इतिहास है !

--यह सब होता रहेगा और इस क्रम को बनाये रखने के लिए हम हमेशा संघर्षरत रहेंगे।

--यही पर-सेवा है; यही दूसरों की दुनिया को उजागर करने की कीमत है !

●

--ठहरिए तो, वह अवसर आ गया है : कीमत चुकाने का क्षण सामने है।

--यह हमारी नियति है, नियति से बंधने को हम कटिबद्ध हैं !

--तो लौटें फिर ! परंपराओं के घुंघरुओं में समारोह के आयोजन करें !

--अभिनंदन करें नये वर्ष का !

--उस वर्ष का, जो हमारे छोटे-से मकान का एक कंगूरा, फिर तोड़ ले जाएगा !

राजेन्द्र अवस्थी

बीत गया वर्ष नये वर्ष की शुभकामनाएं

नवंबर में प्रकाशित तंत्र विशेषांक को हमने गत वर्ष प्रकाशित तंत्र विशेषांक से और अधिक प्रामाणिक और पठनीय बनाने का प्रयत्न किया। हमारा यह प्रयास सफल हुआ। कारण, पाठकों ने इस विशेषांक को हाथों-हाथ लिया। लाखों पाठकों ने इस तंत्र विशेषांक में प्रकाशित सामग्री से लाभ उठाया। तांत्रिक व्यक्तियों में शक्ति होती है, इसका प्रमाण हमें गत माह प्रकाशित तंत्र-विशेषांक के बाद मिला। बोध गया से एक तांत्रिक ने टेलीफोन पर हमसे संपर्क किया और चर्चा के दौरान हमारे कमरे में मौजूद व्यक्तियों और उनके कार्यकलापों के बारे में सही जानकारी दी। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह तांत्रिक कमरे में ही उपस्थित है और वहां घट रही प्रत्येक घटना का चश्मदीद गवाह है। संभव है, यह सूक्ष्म दृष्टि की शक्ति का ही चमत्कार था। चूंकि यह घटना स्वयं हमसे संबंधित है, अतः हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि तंत्र में शक्ति होती है। हम उन तांत्रिकों के साथ कदापि नहीं हैं, जो तंत्र के नाम पर ठगी करते हैं अथवा उसका उपयोग किसी के अहित के लिए करते हैं। हमारा विश्वास है कि ऐसी शक्तियों का प्रयोग हमेशा मानव-कल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए। हमारी संस्कृति और साहित्य में भी यही उल्लेख है कि ऐसी शक्तियों का हमेशा दूसरों के कल्याण के लिए ही उपयोग किया जाना चाहिए।

बहुत से पाठकों को तंत्र विशेषांक नहीं मिल पाया है। अनेक पाठकों ने हमें इस आशय के पत्र भी लिखे हैं। हमारा यही सुझाव है कि अब वे अपने परिचितों से मांगकर यह विशेषांक पढ़ें। आशा है, उन्हें अपने किसी न किसी परिचित के पास यह अंक अवश्य मिल जाएगा। तंत्र विशेषांक के सिलसिले में हमारे पास इतनी अधिक सामग्री प्रकाशनार्थ एकत्रित हो गयी थी कि उसका उपयोग एक अंक में कर पाना संभव नहीं था। जो सामग्री प्रामाणिक नहीं थी, हमने उसे महत्त्व नहीं दिया, लेकिन प्रामाणिक सामग्री को अपने पाठकों तक पहुंचाना हमने कर्त्तव्य समझा और इसी के फल-

स्वरूप प्रस्तुत है, यह दूसरा विशेषांक। विश्वास है कि पाठक इस अंक में प्रकाशित सामग्री का भी लाभ उठाएंगे।

१९८२ का वर्ष बीत रहा है। यह वर्ष बहुत दुर्घटनाओं और दैवी प्रकोपों से भरा रहा। लेकिन व्यतीत को भूल जाना हमें प्राचीनकाल से सिखाया गया है। इसी के आधार पर हम भविष्य का स्वागत कर सकते हैं। हमें आशा करनी चाहिए कि अगला वर्ष ऐसी घटनाओं से मुक्त होगा और न केवल हमारे पाठकों के लिए वरन समूची मनुष्य-जाति के लिए कुछ नये आयामों की बुनियाद रखेगा जो भविष्य के लिए शुभ-संकेत होंगे।

'कादम्बिनी' की नीति हमेशा नयी आवश्यकताओं के देखते हुए बदलते रहने की है। जनवरी के अंक में हम एक प्रश्न-तालिका प्रकाशित कर रहे हैं। उससे हमें पाठकों की अभिरुचि समझने का अवसर मिलेगा। उनके आधार पर हम 'कादम्बिनी' की सामग्री में परिवर्तन करेंगे। अनेक नये स्तंभ भी शुरू किये जाएंगे। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी इस पत्रिका को और अधिक संपन्न किया जाएगा। हम अपनी नीति अपने पाठकों की राय पर ही बनाते हैं, इसलिए आप अपनी महत्त्वपूर्ण राय हमें भेजकर दिशा-निर्देश दें। हम उसका स्वागत करेंगे।

नये वर्ष की शुभकामनाएं ग्रहण कीजिए।

—संपादक

• रत्नेश भट्ट

वे सही रास्ता भी दिखाती हैं

आत्मा और परमात्मा की शब्द-समष्टि आबद्ध व्याख्या करना इसलिए असंभव है कि भाषा मानसिक अनुभूतियों की स्थूलतम अभिव्यक्ति मात्र है। महाभारत के यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में यक्ष द्वारा युधिष्ठिर से पूछे गये अंतिम चार प्रश्नों में एक यह भी है कि आत्मा को परमात्मा से मिलानेवाला रास्ता कौन-सा है? युधिष्ठिर ने इसके उत्तर में कहा कि आत्मा या परमात्मा के संबंध में तर्क से कोई लाभ नहीं। तर्क मानसिक व्यापार है और आत्मा मन से भी सूक्ष्म है। इस संबंध में श्रुतियों से भी कुछ हाथ लगनेवाला नहीं है। और, अनेक ऋषियों ने अपनी-अपनी अनुभूतियों के आधार पर अपने मत प्रगट किये हैं, उनसे भी किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता। धर्म का तत्व तो आत्मा में निहित है। अतः इस दिशा में महापुरुषों ने जो रास्ता बतलाया है, उस पर चलिए।

अब सवाल उठता है कि महापुरुष किस रास्ते पर चलते रहे? पहले कहा गया है कि **'नास्ति मुनिर्यथा मतं न भिन्नम्'**—अर्थात इस रास्ते के
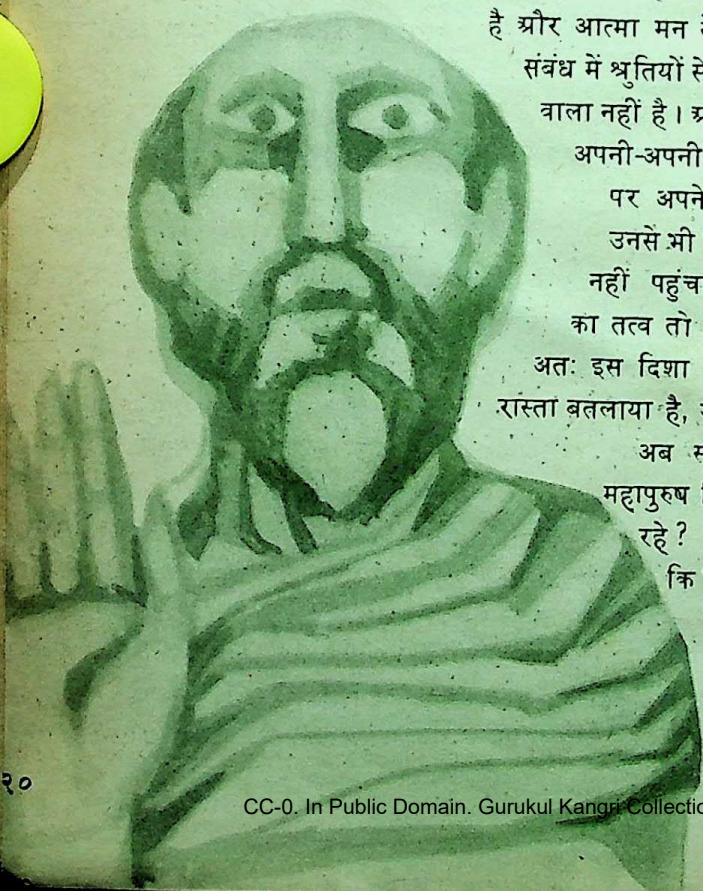
पथिक किसी महापुरुष को गुरु मान लीजिए और निष्ठापूर्वक उनके द्वारा बताये गये रास्ते पर चलिए। यह रास्ता है, तंत्र-मंत्र और पूजा का, जिस पर चलकर उन्होंने स्वकीय अनुभूतियों को प्राप्त किया।

योग : एकीकरण की मानसिक प्रक्रिया

संस्कृत में आत्मा का परमात्मा से एकीकरण करानेवाली मानसिक प्रक्रिया को योग कहा गया है। प्रारंभिक अवस्था में शारीरिक स्थिति भी इसमें सहायक होती है। अणु मन शरीराश्रयी है, इसलिए शुद्धि एवं पुष्टि के लिए विभिन्न प्रकार के योगासनों का विधान है। सद्‌गुरु जानते हैं कि अमुक व्यक्ति के शरीर में मनः स्थिति कहां है, उसी के अनुरूप वे योगासनों का भी विधान बताते हैं। सद्‌गुरु जन्म-जन्मांतर से अर्जित सद्‌कर्मों के फलस्वरूप मिलता है।

आत्मा और परमात्मा पर चर्चा करने से पहले अणु मन और भूमा मन को समझना जरूरी है। अणु मन व्यष्टिगत और भूमामन समष्टिगत है। अणु मन की तीन स्थितियां हैं—स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण। योगी सिद्ध-तंत्र की सहायता से स्थूल मन का सूक्ष्म में और सूक्ष्म का कारण मन में पर्यवसान करता है। कारण मन

पुण्य-शरीरी योनियां किसी का अपघात नहीं करतीं—बहुधा सन्मार्ग-दर्शन कराती हैं। अपूर्ण आकांक्षाओं से युक्त सामान्य-जन भी जब देह का त्याग करता है, तब पुनः देह धारण करने का अनुकूल वायु-मंडल न मिलने तक उसका सूक्ष्म शरीर भी क्रियान्वित रहता है . . .

ही भूमा मन है। योगी का लक्ष्य निर्विकल्प समाधि होता है। अणु चैतन्य का भूमा चैतन्य से एकीकरण ही निर्विकल्प समाधि है। यही मोक्ष है।

प्राचीन भारतीय महर्षियों ने इस जगत को पंचभूतात्मक माना है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाशमय। भूमा मन की परावर्तिनी स्थिति में जीव-विकास का जो क्रम चलता है, मानव की शारीरिक संरचना उसकी चरम स्थिति है। अणु मन के विकास की दृष्टि से भी मानव देह सर्वाधिक विकसित है। मानव का स्थूल शरीर सूक्ष्म शरीर पर आधारित है।

इस सूक्ष्म शरीर में ये चक्र हैं— पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और आज्ञा। योगी का मन गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्र-शक्ति का संबल लेकर इन चक्रों का भेदन कर विराट के साक्षात्कार की ओर बढ़ता है।

इन चक्रों के संबंध में बहुत कुछ साहित्य उपलब्ध है। इनमें आज्ञा-चक्र मन का स्थायी निवास है। इसे सिद्ध करने के बाद मन ब्रह्मरंध्र की ओर अग्रसर होकर विराट् चैतन्य में एकाकार होता है। कोई बिरला ही महामना योगी आज्ञा-चक्र के निम्नवर्ती चक्रों को शुद्ध कर और उससे प्राप्त शुद्धियों में न भ्रमित होकर ब्रह्मभाव की ओर बढ़ता है।

प्रेतात्मा कौन? कैसे?

अब रही बात प्रेतात्मा की। संसार के उन धार्मिक संप्रदायों में भी, जो जन्म-जन्मांतर पर विश्वास नहीं करते, प्रेतात्माओं से संबंधित कई मान्यताएं हैं। जीव-जगत में मानव-मन एवं शरीर संरचना की दृष्टि से सर्वाधिक विकसित है। शरीर, मन के कार्यकलापों की बाह्य अभिव्यक्ति का यंत्र मात्र है। मानव-देह के जटिलतम ग्रंथ-समूह में स्पंदन पैदा करनेवाली शक्ति मन है। मन में चैतन्य का स्फुरण आत्म-तत्व से प्रतिबिंबित होने के कारण होता है। योगी का अंतिम लक्ष्य अणु चैतन्य का भूमा चैतन्य में विसर्जन होता है। आत्मा कार्य-कारण भाव से परे है, इसलिए प्रेतात्मा होने का सवाल नहीं उठता। लेकिन संकल्पशक्तिशील मन की ऐसी अपूर्ण इच्छाएं अवशिष्ट रह सकती हैं, जो शरीर-संगठन के छिन्न-भिन्न होने पर भी बची रहती हैं।

सूक्ष्म शरीर में प्रतिष्ठित विभिन्न चक्रों—शक्ति केंद्रों से गुजरता योगी पथ-भ्रष्ट भी हो सकता है, ऐसी स्थिति में संकल्पित कामनाओं की पूर्ति के लिए वह पुनर्जन्म लेता है।

पंच-भूतात्मक देह के विनाश के बाद भी सूक्ष्म देह की स्थिति बनी रहती है। देह धारण करने के लिए ऐच्छिक वायु-मंडल न मिलने तक मन से परिचालित यह सूक्ष्म शरीर विद्यमान रहता है। महाभारत का यक्ष इसी प्रकार की योनि थी।

अपूर्ण आकांक्षाएं और प्रेत-योनि

ये पुण्य-शरीरी योनियां किसी का अपघात नही करतीं—बहुधा सन्मार्ग-दर्शन कराती हैं। अपूर्ण आकांक्षाओं से युक्त सामान्य जन भी जब देह का त्याग करता है, तब पुनः देह धारण करने का अनुकूल वायु-मंडल न मिलने तक उसका सूक्ष्म शरीर भी क्रियान्वित रहता है। यह सूक्ष्म शरीर चर्मचक्षु-गम्य नहीं होता लेकिन विभिन्न प्रतीकों से इसका आभास होता है। यही प्रेत-योनि है। पुराणों में इस प्रकार की प्रेत-योनियों की अनेक कथाएं हैं। धुंधकारी की कथा भी इनमें एक है।

पंचभौतिक देह-यंत्र के बिना ये योनियां वाणी-व्यापार नहीं कर सकतीं, लेकिन वस्तुओं को रूपांतरित करने की क्षमता रखती हैं। सामान्यजन की लालसा-

भिभूत सूक्ष्म देह किसी शरीरधारी के शरीर में प्रवेश कर उसका अनिष्ट कर सकती है।

प्रेतात्मा की मुक्ति

आज से लगभग पचास वर्ष पहले की बात है। हमारे गांव के एक युवक की मृत्यु गांव से लगभग साठ मील दूर स्थित एक निर्जन स्थान में हैजे से हुई थी। मरण के समय उसके पास गांव का ही एक नौजवान था, जो उसे मरणासन्न अवस्था में छोड़कर उसके पास के थोड़े बहुत पैसे लेकर गांव पहुंचा था। हैजे से उसकी मृत्यु की सूचना उसी ने दी थी। मरणोपरांत सरकारी सेवा में लगे एक अंत्यज ने उसके शरीर को गंगा में प्रवाहित किया था। लगभग एक साल बाद उस घर में नाना प्रकार के उपद्रव होने लगे, सुदूर गांववर्ती एक प्रेत-विद्या-विशारद को बुलाया गया। अपनी मां के मुख से उस प्रेतात्मा ने अपनी दयनीय मृत्यु का ब्यौरा देते हुए बताया कि उसके गांव का उसका वह साथी उसकी पूंजी लेकर कैसे गया। उसके साथी ने उन सभी बातों का समर्थन किया। उसी प्रेतात्मा के द्वारा निर्दिष्ट विधि-विधान करने पर उस घर की विपत्तियों का अंत हुआ।

प्रेत से साक्षात्कार

मेरे जीवन में भी एक आश्चर्यजनक घटना घटी थी। मैं इलाहाबाद में दैनिक 'भारत' के संपादकीय विभाग में काम करता था। साथ ही जमुनापार स्थित विद्यापीठ में आचार्य भी था। मेरे बच्चे वहीं राजा चंद्रशेखर की कोठी में रहते थे। एक दिन मैं रात बारह बजे की ड्यूटी समाप्त कर घर की तरफ साइकिल से चला। लीडर प्रेस से विद्यापीठ लगभग छह मील दूर है! गऊघाट से बढ़कर मैं जब जमुना-पुल पर पहुंचा, तब वहां बियाबान अंधकार था, पुल के बीचों-बीच जल में पहुंचा, तब देखा—आगे

प्रकाश से जगमगाती कोई सवारी चल रही है। लेकिन कुछ ही क्षणों के बाद देखा कि वहां न प्रकाश है और न सवारी। मैं एग्रीकल्चर कालेज के मोड़ पर महेवा गांव की तरफ मुड़ा। मोड़ पर ही मुसलमानों का एक कब्रगाह है, कब्रगाह के बीच से जब मैं गुजर रहा था, तब देखा कि एक ग्यारह-बारह साल का लड़का रास्ता रोके खड़ा है। मेरे घंटी बजाने पर भी वह न हिला

न डुला। मैं गुस्से में साइकिल से उतरा, लेकिन जब मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो, तब उसने गांव के ही एक मरे हुए आदमी का नाम बताया और फिर वह अदृश्य हो गया।

एक फर्लांग आगे बढ़ने पर फिर से सड़क के दाहिने ओर वह खड़ा दिखायी दिया। इस बार मैंने कुछ नहीं पूछा लेकिन पीछे कुछ अजीब-सी आवाज सुनी। यों मैं जीवनभर दुस्साहसी रहा हूं, लेकिन उस घटना ने मुझे भी भयाक्रांत कर दिया था।

दूसरे दिन हमारे यहां एक महात्मा आये। उन्होंने बताया कि जिस घर में आप रह रहे हैं, उसमें आज से चालीस वर्ष पूर्व तीन व्यक्तियों की हत्या की गयी थी। वे प्रेतात्माएं अभी भटक रही हैं। इस बात की छानबीन तो मैंने नहीं की, लेकिन उस रहस्य को मैं आज भी नहीं समझ पाया।

झाड़-फूक तंत्र-मंत्र नहीं

आजकल झाड़, फूंक आदि को मंत्र-तंत्र की संज्ञा दी जाती है। तंत्र का अर्थ संस्कृत में **तमस स्लायते यस्तू स तंत्रः**—अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर उन्मुख करनेवाली विद्या तंत्र है, और मन को उर्ध्वमुखी वृत्तियों की ओर बढ़ानेवाली शब्द-शक्ति तंत्र है। सिद्ध-तंत्र मन के भीतर तिरोहित अनंत शक्तियों को विकसित करता है, मन को आत्म तत्त्व की ओर उन्मुख कर विराटत्व की ओर ले जाता है। मारण और उच्चाटन आदि करनेवाले तामसिक तंत्रों के साधक आज की मान्यता के तांत्रिक हो सकते हैं—योगी नहीं। योग सत्व प्रतिष्ठित होता है।

भूत-प्रेतों को सिद्ध करने का भी शास्त्रीय विधान है। लेकिन उन साधकों का अंत भी उसी प्रकार भयानक होता है। प्रश्न मनन का है। अंतिम समय में मनन यदि वस्तुपरक है तो देह त्याग के बाद मन अधोमुखी गति की तरफ चलता हुआ अंत में उसी वस्तु के रूप में परिणत हो जाता है। इसलिए योग की सभी विद्याओं में मूर्ति पूजा-निषिद्ध है।

दुर्गा सप्तशती में भी **'प्रेतसंस्था तु चामुण्डा'** लिखा है। यहां प्रेत का मतलब शव से है। कापालिक साधक भी वीरासन में शव के ऊपर बैठकर साधना करते हैं। इस क्रिया में साधक अपनी प्रखर मानसिक शक्ति से शव में प्राण-शक्ति का संचार करता है। मानसिक संवल साधक का होता है। सिद्धि प्राप्त होने पर वह प्राणवान किंतु रचकीय मनः शक्तिरहित शव साधक का आज्ञानुवर्ती होता है, लेकिन उसके शारीरिक अस्तित्व को सिद्ध साधक ही परिलक्षित करता है। वह साधक की इच्छा के अनुसार नाना प्रकार के शरीरों को धारण कर सकता है, अनेक प्रकरणों में जन सामान्य से ये अलक्षित प्रेत अनेक प्रकार के उपद्रवों की सृष्टि करते हैं। शव-साधक कापालिक बहुधा तामसिक या राजसिक होते हैं।

—सी ४१९, बी १, महानगर लखनऊ

चित्र : मालिश करते हुए तोकुजीरो नामीकोशी

दर्द दूर करने की जापानी पद्धति

• एन नाकेनो

'क्रोधित होना शरीर के लिए घातक है!' यह परामर्श है, 'शियात्सु' नामक एक नयी मालिश-पद्धति का आविष्कार करनेवाले सज्जन तोकुजीरो नामीकोशी का। नामीकोशी लगभग सत्तर वर्ष के हैं, लेकिन बेहद चुस्त, बेहद स्वस्थ। अपनी बेहतरीन तंदुरस्ती का श्रेय वे दो बातों को देते हैं—मुक्त हंसी और शियात्सु नामक अपनी नयी मालिश-पद्धति को।

'शियात्सु' शब्द दो पृथक शब्दों को मिलाकर बना है—'शि' यानी अंगुली और 'अत्सु' अर्थात दबाव। नामीकोशी के अनुसार दर्द को दूर करने के लिए की जानेवली मालिश से ही उन्होंने अपनी नयी मालिश-पद्धति का आविष्कार किया है। नामीकोशी जब सत्रह वर्ष के थे, तब वे अपने अभिभावकों के साथ जापान के उत्तर में स्थित एक छोटे-से द्वीप होक्काडियो में रहते थे। एक दिन उनकी मां ऐसी बीमार हुई कि कई दिनों तक बिस्तर पर से उठ नहीं पायीं।

आजकल लोग छोटी-छोटी बीमारियों और दर्दों के लिए डॉक्टरों के पास दौड़ते हैं और उनसे मुक्ति पाने के लिए दवाएं, इंजेक्शन आदि लेते हैं, पर अधिकांश बीमारियां तो शरीर स्वयं ठीक कर लेता है--यह विश्वास है--'शियात्सु' नामक एक नयी मालिश-पद्धति को लोकप्रिय बनानेवाले एक जापानी वृद्ध तोकुजीरो नामीकोशी का . . .

उस द्वीप में कोई डॉक्टर भी नहीं था। अपनी मां की चिकित्सा का स्वयं नामीकोशी ने बीड़ा उठाया और कस्बे के पुस्तकालय में चिकित्सा की पुस्तकों की खोजबीन करने लगे। इसी पुस्तकालय में एक पुस्तक में उन्होंने जापान की अंगुलियों से मालिश की पुरानी जापानी चिकित्सा-पद्धति के बारे में पढ़ा। नामीकोशी ने उस पुस्तक में वर्णित उपायों द्वारा मां की चिकित्सा करने की ठानी। नामीकोशी का कहना है, 'शियात्सु के कारण मेरी मां पूरी तरह ठीक ही नहीं हो गयीं, वरन १९४० में इस पद्धति को सिखाने के लिए जब मैंने एक स्कूल खोला, तब वे मेरी शिष्या भी बन गयीं। मां ८८ वर्ष तक जीवित रहीं। मेरे पिता का भी ९७ वर्ष की अवस्था में निधन हुआ।'

शियात्सु : मां के स्नेह की भांति

आज जापान में नामीकोशी का नाम 'शियात्सु' का पर्याय बन गया है। बयालीस वर्ष पूर्व स्थापित उनके स्कूल से आज तक बीस हजार छात्र इस मालिश-पद्धति को सीखकर निकल चुके हैं। यही नहीं, अमरीका, कनाडा, अर्जेंटीना, हालैंड, इटली, बेलजियम, स्पेन और पश्चिमी जरमनी में भी नामीकोशी ने 'शियात्सु' का प्रशिक्षण देनेवाले स्कूल स्थापित किये हैं। नामीकोशी कहते हैं, 'शियात्सु मां के स्नेह की भांति है। हाथों के दबाव से जीवन का निर्झर फूट बहता है।'

शियात्सु : कुछ सरल तरीके

उपचार के कारगर होने के लिए जरूरी है कि दबाव चित्र में दर्शाये गये सभी बिंदुओं पर डाला जाए। यह अलग बात है कि मरीज की बीमारी के मुताबिक कतिपय बिंदुओं पर अतिरिक्त दबाव डालने की जरूरत पड़ सकती है। बीमारी विशेष के इलाज के लिए पीड़ाग्रस्त भाग से सबसे निकट के बिंदु पर ध्यान देना पड़ेगा। लेकिन कभी-कभी दूर के अंगों पर दबाव से भी आशातीत सुधार होता है, जैसे कि गुरदे के रोगों के लिए पैर की एड़ी पर और दिल को ताकत देने के लिए बायें हाथ पर दबाव डालना पड़ता है।

जब सिर भारी महसूस हो
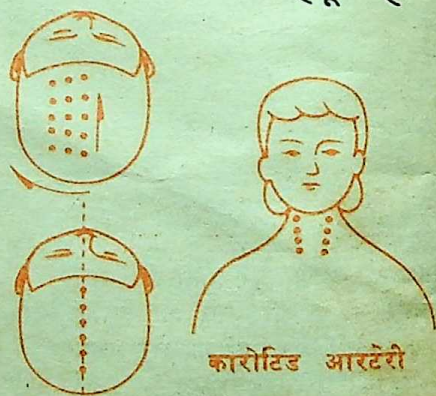
सिर के ऊपर स्थित बिंदु

सिर में भारीपन का कारण मस्तिष्क में बासी और अशुद्ध खून जमा हो जाना है। इसे नीचे दिये गये तरीके से ताजे खून का

वे मुझे बताते हैं, "मेरा अंगूठा हर बात मान लेता है। रोगी के शरीर पर अंगूठा रखते ही मैं तुरंत जान जाता हूं —उसे बुखार है या नहीं, दर्द है या नहीं। या वह किस बीमारी से ग्रस्त है। इस पद्धति में न तो एक्स-रे की जरूरत पड़ती है, न किसी दवा की। शियात्सु में केवल अंगूठा ही नहीं, आपकी अंगुलियों की पहली पोरों, हथेलियों का भी इस्तेमाल होता है। शियात्सु-चिकित्सक अपने रोगी की पीड़ा ही नहीं हरता, वह उसे मानसिक स्थिरता प्राप्त करने में भी सहायक होता है। हथेलियों के दबाव से उसका रक्त-संचार व्यवस्थित हो जाता है, फलतः शारीरिक स्वास्थ्य ठीक होने में भी मदद मिलती है।'

नामीकोशी पेचीदा बीमारियों को दूर करने का दावा नहीं करते, पर यह अवश्य कहते हैं कि शरीर-रचना के मूलभूत सिद्धांतों को समझनेवाला सामान्य व्यक्ति भी शियात्सु की सहज पद्धति से थकान, पीठ, कंधों, दांतों, मासिकधर्म के दौरान होनेवाले दर्दों को ठीक कर सकता है। इससे उच्च रक्तचाप भी कम किया जा सकता है। आजकल लोग छोटी-छोटी बीमारियों और दर्दों के लिए डॉक्टरों के पास दौड़ते हैं और उनसे मुक्ति पाने के लिए दवाएं, इंजेक्शन आदि लेते हैं। अधिकांश बीमारियां तो शरीर स्वयं ठीक कर लेता है।

प्रवाह जारी करके दूर किया जा सकता है।

सबसे पहले आप अपना कपाल दबायें। आपको महसूस होगा कि सिर हलका हो रहा है। फिर सिर के पीछे पहले दायीं और फिर बायीं नसों को धीरे से कई बार अंगूठे के पोर से दबाते हुए हंसुली तक ले जाएं।

इस प्रकार के दबाव से भारीपन ठीक होने के अलावा गले की जकड़न और मानसिक थकान भी दूर होती है। माथा तीन अंगुलियों से और गले का पिछले भाग (ग्रीवा-संधि) पर अंगूठे का पोर रखकर चार अंगुलियों से कुछ मिनट तक दबाने से ताकत और फुरती आती है।

बढ़िया नींद

पहले बायें अंगूठे के पोर से गले के सामनेवाले हिस्से के बायीं ओर दबाव

गरदन के सामने और बायीं ओर स्थित दबाव बिंदु

डालें। फिर ग्रीवा-संधि के हिस्से तक बड़ी धमनी के चार बिंदुओं पर दबाव डालें। ऐसा गले के बायें और दायें भाग पर तीन-तीन बार करें। फिर सिर के निचले हिस्से के तीन बिंदुओं पर तीन अंगुलियों से तीन

बार तीन-तीन सेकंड तक दबाव डालें। अब रीढ़ के निचले सिरे से लेकर कंधों के ऊपर पीठ की मांसपेशियों के तीन बिंदुओं पर तीन-तीन सेकंड तक तीन बार दबाव डालें। फिर दोनों पैर फैला लें और उनके अंगूठे, जितना हो सके पहले नीचे और फिर ऊपर करें। इससे निचले अंगों में खून का प्रवाह गतिमान हो जाएगा। इसके बाद अंगुलियों के पोरों से वक्ष के बिंदुओं पर दबाव डालें।

उच्च रक्तचाप कैसे कम करें

इन बिंदुओं को अंगुलियों से दबायें गरदन में सामने और बायीं ओर स्थित दबाव बिंदु

मस्तिष्क की ग्रंथियां फटने का खतरा दिमाग की नसों में रक्तवाहिनियां उत्तेजित होने के कारण होता है। इसे दूर करने के लिए जरूरी है कि रक्तचाप कम किया जाए और खून जमा होना रोका जाए। इसके लिए शरीर के सभी हिस्सों पर दबाव डालना पड़ता है। इस तरह की मालिश जमकर करने से सभी मांस-पेशियां लचीली रहती हैं।

इसके लिए अंगूठे के सभी पोरों से जबड़े के नीचे के पहले बिंदु पर जहां नाड़ी है, हलके से इतनी देर दबाव डालें, जितने में एक से दस तक गिनते हैं। इस तरह दबाव डालें, छोड़ें, गहरी सांस लें और फिर दबाव डालें। पहले तीन बार बायीं ओर दबाव डालें और फिर तीन बार दायीं ओर। यह बिंदु जहां से गले की नसें फूटती हैं, रक्तचाप सामान्य करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इसके बाद दोनों हाथों की मध्यमा से सिर के पीछे के हिस्से में उस जगह दबाव डालें, जहां वह गले से मिलता है। दबाव उतनी देर डालें, जितने में एक से दस तक गिनते हैं। ऐसा तीन बार करें।

अब दोनों हाथों की तीन-तीन अंगुलियों से गले के बाजू के हिस्से और उसके ऊपर के तीन बिंदुओं पर दबाव डालें। ऐसा तीन बार करें और हर बार दबाव पहले की तुलना में कुछ बढ़ा दें। फिर तीन अंगुलियों से गले के पीछे दोनों ओर हाथ ऊपर से नीचे लाते हुए दबाव डालें और तीनों बिंदुओं पर तीन-तीन बार ऐसा करें। अब एक से दस तक गिनते हुए पेट पर तीन अंगुलियों से एक के बाद एक हाथ से दस बार दबाव डालें। अंत में बायें हाथ की मध्यमा को खींचकर चटकायें और फिर दाहिने हाथ की मध्यमा को।

रक्तचाप कैसे बढ़ायें

रक्तचाप अगर थोड़ा बहुत कम हो, तो चिंता की बात नहीं, क्योंकि इससे आयु
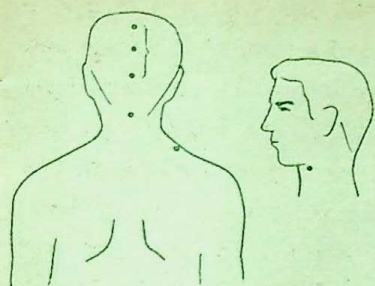
सिर, गरदन और जबड़े के नीचे स्थित दबाव बिंदु

दीर्घ भी हो सकती है, किंतु यदि रक्तचाप बहुत कम हो जाए और दिल की कमजोरी के चिह्न उभरने लगें, तो दिमाग में खून की कमी हो सकती है। अत्यधिक थकान, भारीपन, आंखों की थकान, अनिद्रा, बार-बार सिर-दर्द, ध्यान केंद्रित करने की अक्षमता, दिल की धड़कन, सांस लेने में कठिनाई और छाती या पाचन-संस्थान के हिस्से में कड़ापन महसूस हो, तो निम्न रक्तचाप तुरंत रोके जाने की जरूरत है। इन अस्पष्ट से संकेतों को अकसर दिमागी फितूर या हलकी-सी रक्ताल्पता समझ लिया जाता है जबकि ये रक्तचाप का नियंत्रण करनेवाली प्रणाली के ठीक काम न करने का चिह्न हैं। इस गड़बड़ी को ठीक करने के लिए पहले गले के गड्ढे पर दबाव डालें, फिर सिर के पिछले हिस्से के चार बिंदुओं पर। इसके बाद कंधे के ऊपरी भाग पर और फिर कंधे की हड्डियों के बीच के हिस्से पर।
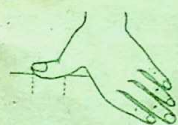
१. २. ३.

दबाव डालने के सही तरीके

१. अकेले अंगूठे से दबाव डालना

हमेशा दबाव अंगूठे के पोरों से दृढ़तापूर्वक डालें। अंगूठे के सिरे को आगे की ओर बढ़ाते हुए दबाव डालने से अंगूठे में थकान या मोच आ सकती है।

२. तीन अंगुलियां

चेहरे और कमर के उपचार में तर्जनी, मध्यमा और अनामिका का प्रयोग करें।

३. हथेली का प्रयोग

हथेली का प्रयोग आंखों और कमर पर दबाव डालने और कंपन चिकित्सा के लिए भी होता है।

दबाव की सीमा

गले के आसपास दबाव एक बार में कभी तीन सेकंड से ज्यादा नहीं होना चाहिए। अन्य हिस्सों में वह पांच से सात सेकंड तक होना चाहिए।

दबाव डालने का तरीका

दबाव अंगुली की पोर से सीधा नीचे की ओर डालना चाहिए। इसमें घिसने-जैसी क्रिया नहीं आनी चाहिए।

शाप द्वारा मृत्

बाल्टीमोर (अरीका) का एक अस्पताल। वर्ष १९६९। एक बाईस वर्षीया युवती की चीखों से सभी परेशान हो उठे थे। युवती एक ही वाक्य दोहरा रही थी, "मुझे शाप दिया गया है। मैं मर जाऊंगी . . . मैं मर जाऊंगी ! . . . मैं मर जाऊंगी।" और अगली सुबह वह सचमुच मर गयी। शाप सच हो गया था।

● डॉ. नीहार रंजन गुप्त

क्या सचमुच जादू-टोना करनेवाले लोगों के शापों से लोग मर जाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर खोजनेवाले एक शरीर विज्ञानी वाल्टर बी. केनन का कहना है कि 'हां; ऐसा हो सकता है।' यों, अनेक वैज्ञानिकों का विश्वास है कि 'शाप द्वारा मृत्यु' कपोल-कल्पना है, और किसी के शाप से कोई नहीं मरा करता। लेकिन कैनन ने अपने शोध द्वारा इस संबंध में जो तथ्य प्रतिपादित किये हैं, उन्हें भी नहीं झुठलाया जा सकता। शाप से मृत्यु भी हो सकती है-जैसी कि बाल्टीमोर के अस्पताल में उक्त युवती की मृत्य हुई।

वह ज्यादा जी नहीं पायेगी

मृत्यु के पूर्व उक्त युवती ने डॉक्टरों को वतलाया था कि वह जार्जिया के ग्रोके-फेनोके स्वांप नामक स्थान में जन्मी थी। उसका जन्म तेरह तारीख को हुआ था। उस दिन शुक्रवार था। उसके जन्म के समय मौजूद दाई ने उसे शाप दिया था कि वह २३ वर्ष की उमर के बाद नहीं जी पायेगी। उसकी तरह अन्य दो लड़कियों को भी उसने ऐसा ही शाप दिया था। वे लड़कियां भी उसी दिन जन्मी थीं। इनमें से एक लड़की को १६ वर्ष तक और दूसरी को २१ वर्ष तक जीने की मोहलत दी थी, उस दाई ने।

बाल्टीमोर के अस्पताल में पहुंची उस युवती का कहना था कि उसके साथ की दोनों लड़कियों की, दाई के कहे अनुसार,

पहले ही मृत्यु हो गयी है, और अब उसकी बारी है।

अस्पताल के चिकित्सकों ने उसके शरीर की परीक्षा की, उसे कोई रोग नहीं था। चिकित्सकों ने उसे यही बात बतायी थी। उसे यह भी आश्वासन दिया कि डर की कोई बात नहीं है। वह लंबी उमर जिएगी। पर सब व्यर्थ ! अगली सुबह एक परिचारिका ने उक्त भयभीत युवती को मृत पाया।

उसे शाप मिला कि मर जाएगा

वाल्टर बी. कैनन ने इस संबंध में आस्ट्रेलिया और अफरीका में आदिवासियों के मध्य रॉकफेलर फाउंडेशन की ओर से काम करनेवाले चिकित्सकों के अनुभव एकत्र किये। एक चिकित्सक ने उसे बताया कि उसके अस्पताल में एक दिन एक व्यक्ति आया। उसने चिकित्सकों को बतलाया कि उसे शाप दिया गया है और अब वह शीघ्र मर जाएगा।

चिकित्सकों ने उसकी जांच की। उन्हें भय था कि कहीं उसे विष न दे दिया गया हो। उन्हें किसी बीमारी के लक्षण नहीं नजर आये। लेकिन उन्हें तब बेहद आश्चर्य हुआ, जब कि अगले दिन उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी। शव-परीक्षा में भी उन्हें मृत्यु का कोई कारण ज्ञात नहीं हुआ।

इस संदर्भ में कैनन का स्पष्टीकरण है कि वह व्यक्ति अपने विश्वास के कारण ही मरा। उसे शाप पर विश्वास हो गया था। वह अपनी मृत्यु को स्वीकार किये बैठा था। कैनन का कहना है कि 'आतंक के कारण जन्मी आशंकाओं की घातक शक्ति' ही उसके प्राण ले बैठी।

पुजारी का शाप

कैनन ने एक और प्रसंग का उल्लेख किया है। हुआ यह कि ईसाई-धर्म अंगीकार कर चुके एक आदिवासी को झाड़-फूंक करनेवाले पुजारी ने एक हड्डी दिखाते हुए शाप दिया कि वह मर जाएगा। इसके बाद से वह आदिवासी बीमार रहने लगा। उसने अस्पताल के एक चिकित्सक को यह बात बतायी तो चिकित्सक ने उस पुजारी को फटकारा। चिकित्सक ने उसे धमकी दी कि यदि उसने शाप वापस नहीं लिया तो उसे रसद नहीं दी जाएगी। भयभीत पुजारी ने उस आदिवासी से कहा कि उसने अपना शाप वापस ले लिया है। इसके बाद से ही वह आदिवासी ठीक होने लगा।

कैनन का निष्कर्ष है कि शाप पानेवाला व्यक्ति आतंक के कारण ही असमय मृत्यु का शिकार होता है। होता यह है कि शाप सुनकर वह घबरा जाता है और दिन-रात अपनी मौत के बारे में सोचता रहता है। तनाव और घबराहट के कारण उसका रक्त-दाब तेजी से घट जाता है और गुरदे में एडरेनालाइन की अधिकता के कारण उसे 'शॉक' लगते रहते हैं। इन सब कारणों से रक्त-शिराएं संकुचित हो जाती हैं या फिर सख्त। फलतः रक्त
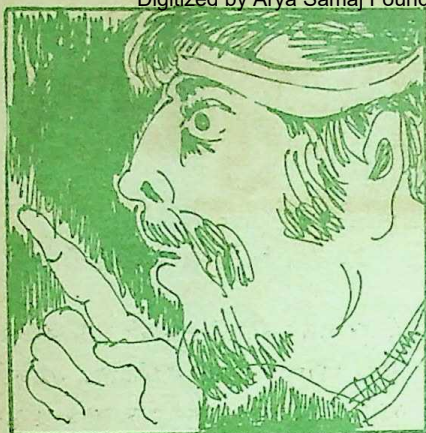
-संचार में गड़बड़ी पैदा हो जाती है। ओषजन की कमी के कारण शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगों का क्षय आरंभ हो जाता है। कभी-कभी शाप का शिकार व्यक्ति खाना-पीना भी छोड़ देता है। इससे भी उसकी मृत्यु निकट आ जाती है।

मृत्यु की घटना का उल्लेख

'साईकोसोमेटिक मेडीसन' नामक एक मेडिकल जरनेल में, पेनेसिलवानिया विश्वविद्यालय में साइकालाजी और साइकेट्री के एसोसियेट प्रोफेसर डॉ. मार्टिन सेलिगमैन ने शाप द्वारा मृत्यु की एक घटना का उल्लेख किया है। इस घटना में एक सुशिक्षित व्यक्ति को उसकी मां ने शाप दिया कि यदि तुम ऐसा काम करोगे तो तुम्हारा बहुत बुरा होगा। दर-असल वह व्यक्ति अपना नाइट क्लब बेचकर एक नया व्यवसाय शुरू करना चाहता था, पर उसकी मां इस प्रस्ताव का विरोध कर रही थी। मां के द्वारा शाप दिये जाने के बाद वह व्यक्ति दमे का शिकार हो गया, लेकिन जब मनःचिकित्सक ने उसे उसके रोग का कारण समझाया तब वह धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा। लेकिन एक दिन फिर, उसकी मां ने किसी बात पर नाराज होकर उसे शाप दिया कि तुम्हारा जल्दी ही अहित होगा। और वाकई, वह फिर से दमे का शिकार हो गया और डेढ़ घंटे के भीतर उसकी मृत्यु हो गयी।

एक अन्य डॉक्टर विलियम ए. ग्रीन ने भी एक विचित्र घटना का उल्लेख किया है। एक स्त्री अपने बेटे के वयस्क और कामकाज में लग जाने तक जीवित रहना चाहती थी। जैसे-जैसे उसका बेटा बड़ा होता गया, उसकी तबीयत बिगड़ती गयी। और, जब एक दिन उसके पुत्र का विवाह हो गया, तब उसकी मृत्यु हो गयी।

डॉ. ग्रीन का कहना है कि किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उसकी दिमागी हालत का भी बड़ा असर पड़ता है अर्थात मानसिक रुग्णता शरीर को भी रुग्ण बना देती है। और शाप का भय मनुष्य को अंततः मृत्यु के द्वार पर ले जाकर छोड़ देता है।

मानव की शक्ति और आनंद इसमें है कि वह पता लगाए कि परमेश्वर किस राह जा रहा है और उसी राह चला चले।

—बीचर

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

ऊंचा बोलना रोग तो नहीं

क. ख. ग., दिल्ली : मैं उन्नीस वर्षीय बायोलॉजी का छात्र हूं, प्रतिदिन करीब दस घंटे अध्ययन करता था। कभी-कभी लगता, कुछ समझ में नहीं आ रहा है और कभी मस्तिष्क एकदम हलका भी हो जाता। मैं ऊंचा-ऊंचा बोलकर पढ़ने लगता हूं, तो प्रतीत होता--यह तो मैं रटने लगा हूं। जैसे-तैसे पेपर दिया, तो फेल हो गया, जिससे मुझे गहरा धक्का पहुंचा। अब क्या करूं-बताइए ?

आपका अत्यधिक अध्ययन करना, सोचते रहना विक्षोभ आदि न करना ही आपकी इस मानसिक स्थिति के जिम्मेदार हैं। थक जाने पर ऊंचा बोल-बोलकर पढ़ने में भी कोई बुराई नहीं, आपको एक पेपर में फेल होने से निराश होकर नहीं बैठना चाहिए, बल्कि इसे आप एक चुनौती की तरह लें और पुनः अध्ययन में जुट जाएं। अध्ययन के साथ ही आराम भी जरूरी है। व्यर्थ की बातें सोचकर तनाव न बढ़ाएं। आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

दिमाग का हिस्सा भन्ना रहा है

जे. के. चौरसिया, इन्दौर : मेरी पोस्टिग ग्वालियर में जब से हुई है, तब से मुझमें असुरक्षा की भावना आ गयी है। मैं हर समय स्थानांतरण की बात सोचता रहा; परिणामतः बैंक में घोटाला, साजिशें आदि होती हुई महसूस होने लगीं। इन्हीं दिनों मैंने एक रेल-दुर्घटना देख ली। तब से मेरे दिमाग पर असर हो गया है। जोर-जोर से दिमाग का ऊपरी हिस्सा भन्नाने लगता है। नींद हमेशा के लिए गायब हो गयी है। दिमाग की नसें ढीली पड़ गयी हैं। मुझे अब कुआं, नदी, तालाब आदि देखकर दौरा-जैसे पड़ने लगता है घबराहट बढ़ने लगती है। डॉक्टर साहब बताइए क्या करूं ?

आप बहुत भावुक प्रकृति के व्यक्ति हैं। आरंभ से ही आपको घर में अत्यधिक सुरक्षा मिली, इसीलिए आप अपने पांव पर खड़ा नहीं होना चाहते व बाहरी दुनिया के तौर-तरीके आपको रुचिकर नहीं लगते। इसी कारण आप में असुरक्षा की भावना बढ़ गयी और इंदौर से ग्वालियर पोस्टिंग होने पर आपकी मानसिक स्थिति में विकार आने लगा। आप सोचिए तो आपका कार्यालय यदि घर के पास होता तो भी घर के लोग किसी घोटाले या बढ़ती साजिश में आपकी मदद नहीं कर पाते। घर से दूर रहकर आप आत्मनिर्भर नहीं

होना चाहते व हमेशा परावलंबी बने रहना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में कोई दुर्घटना आदि मानसिक तनाव को और अधिक बढ़ा देते हैं। अनिद्रा, मृत्यु का भय अकेलापन आदि बढ़ने लगता है आपको फोबिया हो गया है, यह सिर्फ डी-कंडीशनिंग से जा सकता है। आप इंदौर से बंबई चले जाएं, वहां बिहेवियर थेरेपी (व्यावहारिक मनोविज्ञान) द्वारा डी-कंडीशनिंग की व्यवस्था है।

फोबिया

अ. ब. स., चंपारन : मेरी उम्र १८ वर्ष है। करीब ढाई वर्ष पहले मुझे एक कुत्ते ने काट लिया था, चूंकि कुत्ता चौदह दिन तक नहीं मरा, इसीलिए मैंने—कोई इंजेक्शन नहीं लिया। हाल ही में मेरे पड़ोस में एक व्यक्ति की मृत्यु हाइड्रोफोबिया रोग से हो गयी। उन्हें छह साल पहले कुत्ते ने काटा था। अब मुझे भी भय बना रहता है कि कहीं मैं इस रोग का शिकार न हो जाऊं। क्या करूं?

कुत्ते के काटने पर, कुत्ते की यदि चौदह दिन में मृत्यु हो जाए या वह पागल हो जाए, तभी इंजेक्शन लगवाये जाते हैं। ढाई वर्ष तक कुत्ते के काटने का कोई असर नहीं रहता। आपके पड़ौस में जो मृत्यु हुई है, उसको कुत्ते ने उन्हीं दिनों काटा होगा। अपने मन से वहम निकाल दें तथा व्यर्थ का तनाव न बढ़ायें।

पत्र लिखे : कुछ नहीं हुआ

जगत प्रकाश त्रिपाठी, दिल्ली : मैं २५ वर्षीय नवयुवक हूं। एक लड़की से प्यार करता हूं, वह शादी करने को भी तैयार है, किंतु मैं सोचता हूं इससे मेरी छोटी बहन की शादी में अड़चन होगी। मैं छोटी बहन के विवाह के बाद ही शादी करना चाहता हूं।

डॉ. सतीश मलिक

लड़की-पक्ष के लोग विवाह के लिए जोर देने लगे। और कहने लगे कि वह उसका विवाह दूसरी जगह कर देंगे। परेशान होकर मुझ पर पागलपन छाने लगा और रोना, घूमते रहना, कविता, कहानी आदि लिखना शुरू कर दिया। अब शहर छोड़ दिया है। बहुत पत्र लिखे, कहीं से उत्तर नहीं मिला। क्या करूं?

आपके पत्र से प्रतीत होता है कि आप अत्यधिक भावुक हैं व छोटी बहन की भावना की कद्र करते हैं। आपका यों पागलपन का बढ़ना, या शहर छोड़ देना ही समस्या का समाधान नहीं। इसे तो वास्तव में संघर्ष से भागना (इस्केपिज्म) कहा जाता है। आपको चाहिए या तो आप लड़कीवालों को धीरे-धीरे सारी स्थिति समझाइए, फिर भी यदि बात न मानें, तो इस तरह से भाग खड़े होने के स्थान पर आप उन्हें स्पष्ट रूप से मनाही कर दें। ●

प्रशासन में भ्रष्टाचार करनेवाले बहुत कम संख्या में हैं। परंतु दुर्भाग्य यह है कि जो भ्रष्टाचार नहीं करते, वे दयालु व डरपोक हैं। हिम्मत के साथ भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करनेवालों की संख्या न के बराबर है . . .

एक दिन प्रातः काल मैं अपने निवास से निकलकर कार्यालय जाने लगा तो कार के पास एक लड़की आ खड़ी हुई। वह नंगे पांव थी। कपड़े मैले ही नहीं फटे हुए भी थे। वह हाथ जोड़कर आगे बढ़ी। उसकी वेशभूषा से टपकती गरीबी, उसके चेहरे के भोलेपन का मजाक उड़ा रही थी। मुझे बताया गया कि वह बहुत देर से मुझसे मिलने की प्रतीक्षा कर रही थी। मैंने उसे अपनी बात कहने के लिए कहा। बात कहने से पहले वह अपनी आंखें पोंछने लगी।

"बिजली विभाग में इंटरव्यू हुए थे . . .।" वह कुछ रुक-रुककर बोली, फिर चुप हो गयी।

"हां, बताओ क्या बात हुई . . . मुझे जल्दी है।" मैं इंटरव्यू की बात सुनकर कुछ रूखा-सा हो गया।

"उसमें मुझे नौकरी पर नहीं रखा गया।" उसके यह कहने पर उसको देख शुरू में उपजी मेरे मन की सहानुभूति जैसे हवा में उड़ने लगी।

"देखो, योग्यता के आधार पर चयन होता है। हमने सब विभागों को निर्देश दिये हैं कि नियमानुसार इंटरव्यू हों और योग्यता के आधार पर नौकरी दी जाए।" यह कहकर मैंने कार के खुले दरवाजे को पकड़ा और अपनी सीट पर जा बैठा। ड्राइवर ने कार स्टार्ट कर दी।

"नहीं नहीं ... मेरे साथ बड़ा अन्याय हुआ है, मेरा कोई नहीं है . . . आप मेरी बात सुन लें।" कार को पकड़ने की कोशिश करती हुई वह फूट-फूटकर रो पड़ी। मैं पसीज गया। गाड़ी से नीचे उतर आया।

एक मुख्यमंत्री के संस्मरण

• शांता कुमार

हिमाचल प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री शांता कुमार लेखक भी हैं। हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'राजनीति की शतरंज' में श्री शांताकुमार ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल के संस्मरण संजोये हैं। यहां प्रस्तुत हैं, इसी पुस्तक के कुछ अंश

"मेरा कोई नहीं . . .।" उसके ये शब्द अनायास मेरे मुंह से निकल पड़े।

"हां . . . मैं बहुत गरीब घर से हूं। मेरा कोई नहीं है, कोई भी नहीं . . .।" उसके आंसू जैसे शब्द बन गये।

"यह मत कहो। इस प्रदेश का मुख्य-मंत्री तुम्हारा है। तुम मेरी बहन हो। आंखें पोंछ लो। कहो, तुम्हें क्या कहना है।" मैंने उसे सांत्वना दी। वह बात करते हुए इधर-उधर देख रही थी और घबरा रही थी। इसलिए मैं उसे एक तरफ एकांत में ले गया।

"मैंने प्रथम श्रेणी में मैट्रिक पास किया है। पर मुझे नियुक्त नहीं किया गया। पर मेरे ही गांव का लड़का, जो तृतीय श्रेणी मैट्रिक है, रख लिया गया है, क्योंकि वह अमुक नेता के पी. ए. का भतीजा है।" वह एक सांस में सारी बात कह गयी।

उसने यह भी बताया कि वह एक गरीब हरिजन-परिवार से है। उसकी एक विधवा मां है तथा तीन छोटी बहनें हैं। उसकी मां ने लोगों के बरतन साफ करके उसे पढ़ाया। घर में आय का कोई भी साधन नहीं है। उसकी बातें सुनकर मेरी आंखें छलछला आयीं। मुझे लगा, मेरे मुख्यमंत्री होने का कोई अर्थ नहीं है। उसका नाम-पता नोट किया। उस लड़के का पता भी लिखा। उसे सायंकाल कार्यालय आने के लिए कहकर मैं कार में बैठ गया।

स्पष्ट आदेशों के बावजूद

बिजली बोर्ड में लगभग पांच सौ क्लर्क रखे जाने थे। कुछ दिन पहले इंटरव्यू हुआ था। उस समय भी कुछ शिकायतें आयी थीं। मैंने तभी संबंधित मंत्री तथा अधिकारियों को बुलाकर सावधान कर दिया था। यह स्पष्ट निर्देश दे दिये थे कि किसी भी स्तर पर, किसी भी प्रकार की अनियमितता न हो। यदि कोई करे तो सख्ती के साथ निपटा जाए। इस संबंध में कुछ खबरें भी छपी थीं।

मैंने दो प्रमुख अधिकारियों को दो घंटे के अंदर प्रारंभिक जांच करने के लिए कहा। उनमें एक भावुक प्रकृति के थे। जब वे फाइलों को देखकर आये, तब बोले, "सर, सचमुच ही बड़ा जुल्म हुआ

है।" उन्होंने यह भी बताया कि उस लड़की की दोनों बातें सही हैं। योग्यता की दृष्टि से वह चयन में आती थी, पर उसका नाम काट दिया गया, जबकि उस नेता के पी. ए. का भतीजा योग्यता की दृष्टि से बहुत पीछे था, फिर भी उसका चयन कर लिया गया।

उस समय तक पांच सौ का चयन कर लिया गया था, परंतु नियुक्ति-पत्र लगभग सौ को ही भेजे गये थे। शेष के नियुक्ति-पत्र भेजे ही जानेवाले थे। तुरंत आदेश देकर आगे की नियुक्तियां रोक दी गयीं। मैंने उन अधिकारियों को आगे जांच के लिए कह दिया।

दूसरे दिन बोर्ड के एक प्रमुख अधिकारी मुझे मिलने आये। वह काफी घबराये हुए थे। तब तक सभी फाइलों की जांच लगभग पूरी हो चुकी थी। उन्होंने कहा कि उन पर कुछ बड़े लोगों का दबाव था, इसलिए चयन में अनियमितता हुई है। वह क्षमा-याचना करने आये थे। ये वही अधिकारी थे, जिन्हें चयन के संबंध में कुछ शिकायतें मिलने पर मैंने बुलाकर सावधान किया था।

"आप पर किस-किसने दबाव डाला ?" मैंने उनसे प्रश्न किया।

"जी, किस-किसका नाम लूं। पूरी तीन फाइलें भरी पड़ी हैं।" वह रुआंसे होकर बोले।

"तीन फाइलें ? मैं समझा नहीं।"

"सर, इतने अधिक सिफारिशी पत्र आये थे। मैं क्या करता ? सब बड़ों को इंकार कैसे कर देता।" उन्होंने अनियमितता का औचित्य प्रकट किया।

"वे सब इसी प्रदेश के हैं ? स्तर में वे बड़े हैं या मैं बड़ा हूं ?"

"सर, आप तो सबसे ऊपर हैं।"

"मैंने आपको बुलाकर कहा था कि किसी भी प्रकार का गलत चयन न हो। आपने मेरा कहना नहीं माना और अन्य

सबके कहने पर गलत काम किया। इसका मतलब आप मुझे कुछ नहीं समझते। आपने मुख्यमंत्री की उचित बात भी नहीं मानी और दूसरों की गलत बात का भी पालन कर दिया।" मेरी इस बात का उनके पास कोई भी उत्तर न था। मैंने उन्हें कहा कि वे तीनों फ़ाइलें लेकर सायंकाल मुझे मिलें।

बड़े लोगों की सिफारिशें

शाम को वह फाइलें लेकर आ गये। एक फाइल में कुछ मंत्रियों, संसद-सदस्यों व विधायकों के सिफारिशी पत्र थे। कुछ ने अपने छपे पैड पर निःसंकोच उन लड़कों के नाम-पते लिखे थे, जिनका वे चयन चाहते थे। दूसरी फाइल में विभागाध्यक्ष और उसके ऊपर के बड़े अधिकारियों की सिफारिशें थीं। तीसरी फाइल में अन्य लोगों के पत्र थे। एक पत्र में एक केंद्रीय मंत्री की सिफारिश थी। वे तीनों फाइलें देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गये। एक-एक नाम पढ़कर दांतों-तले अंगुली दवाने लगा। मैंने फाइलें अपने पास रख लीं और उन्हें भेज दिया।

वे फाइलें अब भी मेरे पास पड़ी हैं। उनमें कुछ बड़े कहलाने या दावा करने-वालों के सिफारिशी पत्र पड़े हैं। जो साधु-संत होने का दावा करते नहीं थकते, उन्होंने भी गरीब बच्चों का गला काटकर अपने सिफारिशी लड़कों को रखने की सिफारिश की थी।

उन सिफारिशी पत्रों के आगे लिखा था कि अमुक का चयन हो गया, अमुक का नहीं हुआ। समान बटवारा करने की कोशिश की गयी थी। जिसने चार नाम दिये थे, उसके दो का चयन कर लिया गया था। आगे चयन-सूची का नंबर भी दिया था। सायं को जब चयन संबंधी फाइलें मेरे पास आयीं, तब इनका मिलान करना आसान हो गया।

जांच किसी की, मामला किसी का

हेराफेरी करने में सामान्य बुद्धि का बिलकुल भी प्रयोग नहीं किया गया था। इंटरव्यू आदि के सब अंक जोड़ दिये थे, उसके बाद सिफारिशी लड़कों के किसी के विषय के अंक काटकर अधिक कर दिये थे और उनका चयन कर लिया था। उतनी ही संख्या में बिना सिफारिश-वाले लड़कों के किसी विषय के अंक काटकर कम कर दिये गये थे। सारा रिकार्ड देखकर लगा कि आज भी हम जंगल के कानून की स्थिति में हैं। गरीब के लिए कहीं कोई न्याय नहीं है। रह-रहकर उस लड़की के शब्द मेरे कानों में गूंजते —"मेरा कोई नहीं है।"

अब तक इस संबंध में चारों तरफ शोर मच चुका था। मुझ पर दबाव पड़ने लगा कि कठोर पग न उठाया जाए।

एक बार भ्रष्टाचार का एक मामला मेरे ध्यान में आया। विभाग को इसकी जांच करने को कहा गया। कई मास बीत गये। मुझे याद न रहा। याद न रहना स्वाभाविक भी था। कुछ महीने के बाद वह सज्जन मिले, जिन्होंने वह मामला मेरे

ध्यान में लाया था। मैंने उन्हें कहा कि निश्चित रूप से उसकी जांच हुई होगी। उन्होंने कहा कि इस संबंध में कुछ भी नहीं हुआ है। मैंने संबंधित अधिकारी को बुलाकर पूछा, उन्होंने बताया कि जांच की गयी और वह व्यक्ति निर्दोष पाया गया। मैंने उस सज्जन को यही बात बता दी। वह हैरान होकर बोले कि न तो वह व्यक्ति निर्दोष है और न ही जांच हुई है। मैंने फाइल मंगवायी तो दंग रह गया। जांच किसी और ही व्यक्ति की कर ली गयी थी।

इस संबंध में उस सज्जन ने एक नयी बात बतायी कि एक साल पूर्व नीचे के स्तर पर उसकी जांच हुई थी। वह दोषी पाया गया था और जांच-रिपोर्ट उचित कार्यवाही के लिए शिमला भेज दी गयी थी। मैंने जब सारी फाइलें मंगवायी, तब यह बात बिलकुल सच निकली। पूछा गया कि जब नीचे से इस प्रकार की जांच रिपोर्ट आयी है, तब उस पर कोई कार्यवाही क्यों नहीं की गयी? कई प्रकार के कारण बता दिये गये।'आडिट करवाने के लिए कहा था। कुछ मुद्दों पर जांच-अधिकारी से स्पष्टीकरण मांगा था, कार्यवाही करने-वाले अधिकारी बदलते रहे'... आदि-आदि कारण बताये गये।

कार्यवाही नहीं हुई

मुझे हैरानी भी हुई और क्रोध भी आया। मुख्य सचिव को बुलाकर पूरी जांच करने के लिए कहा। उन्होंने लिखकर जांच के आदेश दे दिये। मूल मामले की भी पूरी जांच के आदेश दे दिये। उसमें गंभीर आरोप सिद्ध हुए। कोई कार्यवाही न करने के कारण एक अधिकारी को बदल दिया गया। मुझे बताया गया कि कड़ी कार्यवाही शीघ्र हो रही है। मैं निश्चित हो गया। बहुत दिनों के बाद किसी ने मुझे याद दिलायी। पता चला कि कोई भी कार्यवाही नहीं हुई। संबंधित अधि-कारी को बुलाया गया। छानबीन की गयी, तो बताया गया कि मूल फाइल ही गुम हो गयी है। दोबारा जांच के लिए एक विशेष अधिकारी नियुक्त कर दिया। मुझे लगा, जैसे इतने बड़े पद पर बैठकर भी मैं नौकरशाही के हाथों असहाय हूं। वह जांच पूरी होने से पहले-पहले सरकार भी बदल गयी और उस पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है।

बाद में पता चला कि दोषी व्यक्ति एक पुराना कांग्रेसी था। उसके प्रशासन में विशेष व्यक्ति थे। इतना ही नहीं, उसने हमारे एक मंत्री से संपर्क करके उनसे भी विभाग में कहलवा दिया था कि उस मामले में कोई कार्यवाही न की जाए। यह मंत्री बाद में कांग्रेस में शामिल हो गये थे।

प्रशासन में भ्रष्टाचार करनेवाले बहुत कम संख्या में हैं। परंतु दुर्भाग्य यह है कि जो भ्रष्टाचार नहीं करते, वे दयालु व डरपोक हैं। हिम्मत के साथ भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करनेवालों की संख्या न

के बराबर है। मेरे सामने अधिकतर यह होता था। जब भी कोई कर्मचारी या अधिकारी पकड़ा जाता, तब उसके लिए सिफारिशें आती थीं। सब प्रकार के लोग आकर कहते थे... कभी-कभी गलती हो जाती है। वैसे व्यक्ति ऐसा नहीं है... देखिए, इसके छोटे-छोटे बच्चे हैं... इस बार छोड़ दीजिए... इतने बड़े सरकारी कामों में कभी-कभी ऐसा हो ही जाता है!

वोट बनाम स्वच्छ प्रशासन

मैं प्रायः उन्हें कहता कि किसी के छोटे बच्चे होने से क्या उसे भ्रष्टाचार करने का लायसेंस मिल जाता है! उस स्थिति में तो उसे और भी संभलकर चलना चाहिए। मैंने यह भी अनुभव किया कि ऐसे लोगों के हाथ बहुत लंबे होते हैं। गलत काम करनेवालों की पहुंच सब तरफ होती है। वे विधायकों, राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं, मित्रों व संबंधियों तक को मेरे पास भेज देते थे।

यदि कहीं इस प्रकार का व्यक्ति किसी 'की वोटर' का संबंधी होता था, तब तो दबाव और भी बढ़ जाता था। विधायक कहते, "यदि इसको नहीं छोड़ा, तब उस इलाके के सारे वोट खराब हो जाएंगे।"

तब मैं भी गुस्से से उत्तर देता, "क्या हम वोट ही गिनते रहेंगे या प्रशासन को स्वच्छ करने की हिम्मत भी दिखाएंगे।"

वोट-राजनीति की यह सबसे बड़ी कमजोरी है कि हर बात को वोट के तराजू पर तोलने की कोशिश की जाती है। मैंने इस बारे में स्पष्ट घोषणा कर दी कि मैं वोट के लिए नहीं, देश के लिए जिऊंगा। वोट मिले या न मिले, पर हम भ्रष्टाचार से समझौता नहीं करेंगे।

राजनेताओं में सर्वप्रिय बनने की इच्छा रहती है। प्रशासक के तौर पर यह इच्छा भी एक बड़ी कमजोरी सिद्ध होती है। मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि एक अच्छा प्रशासक सर्वप्रिय नहीं हो सकता और यदि वह सर्वप्रिय है, तब इसका अर्थ है कि उसने ईमानदारी से प्रशासन नहीं चलाया है।

कई बार राजनीतिक क्षेत्रों में यह चर्चा होती है कि नौकरशाही उन्हें चलने नहीं देती और सहयोग नहीं देती। मेरा अनुभव इसके विपरीत रहा है। यदि सत्ता पर बैठे राजनेताओं में योजनाओं के प्रति ईमानदारी और निष्ठा है और प्रबल इच्छा शक्ति से वे उन्हें लागू करने के लिए कृतसंकल्प हैं, तब नौकरशाही पूर्ण सहयोग देती है। अनुसरण करती है। परंतु यदि उनमें थोड़ी-सी भी कमजोरी हो, तब फिर वह उस कमजोरी का लाभ उठाने की कोशिश करती है।

—पालमपुर, (हिमाचल प्रदेश)

"यदि तुलसीदास आज जीवित होते तो एक अद्भुत व्यक्ति होते।"
"तुम ठीक कहते हो, चार सौ वर्ष का वृद्ध पुरुष अद्भुत ही होता।
—नरेशकुमार बं[illegible]

युद्ध
प्राणो
त्रिशू

रहा
थी,
सकुश
कर्नल
बढ़
दिस

मूर्ति बैजनाथ महादेव की

मंदिर चमत्कारों का

युद्ध का मैदान...अंगरेज अफसर को जीत की कोई उम्मीद नहीं थी, उलटे प्राणों पर संकट था...सहसा उसने देखा, युद्ध में आगे-आगे एक दाढ़ीवाला साधु त्रिशूल लिये चल रहा है!...

● डॉ. देवव्रत जोशी

"मैंने देखा कि युद्ध में मेरे आगे एक दाढ़ीवाला साधु त्रिशूल लिये चल रहा था।...जीत की कोई उम्मीद नहीं थी, उलटे प्राणों पर संकट था, लेकिन मैं सकुशल लौट आया, डार्लिंग!"... कर्नल मार्टिन ने अपनी पत्नी से कहा।

पत्नी की आस्था महादेव पर और बढ़ गयी। वह पुलकित, गलदश्रु आस्था के साथ पति को सारी कथा सुनाने लगी।

"तुम गये, तब से बेहाल थी... एक दिन घूमते-घूमते उधर जंगल में निकल गयी... घोड़े से उतरकर एक टूटे-फूटे मंदिर को देखा। दो दीवारें लगभग बिलकुल गिर गयी थीं।...

"पुजारी से मैंने इस संबंध में बात की। वह बड़ा तेजस्वी और निष्ठावान

पुरुष लग रहा था।

"बात निकली तो मैंने बताया—हमारा साहब युद्ध में गया है, उनसे कहूंगी लौट आने पर। . . . 'अब मेरा साहब युद्ध से सक्षेम लौट आया', मंदिर बनवा दूंगी . . . और तुम आ गये!" कर्नल की पत्नी का स्वर भीग आया था।

आगरमालवा (म. प्र.) पहले ग्वालियर रियासत के अंतर्गत था। आज का सुप्रसिद्ध बैंजनाथ मंदिर सर्वाधिक पुराना है, आगर के सब मंदिरों में।

लार्ड वेलेजली की सहायक-संधि के अंतर्गत ब्रिटिश सरकार ने ग्वालियर रियासत के खर्च पर यह छावनी कायम कर फौज रखी थी। बारह सौ घुड़सवार और पैदल। कर्नल मार्टिन इसके 'इंचार्ज' थे।

अफगान-अंगरेज-युद्ध (१८८१—८२) के दौरान कर्नल मार्टिन युद्ध के मोरचे पर गये थे। युद्ध में जाने के पूर्व कर्नल मार्टिन ने भारत-भूमि और अपने परिवार से 'अंतिम विदा' ली।

लेकिन कर्नल मार्टिन लौट आये थे, युद्ध में विजयी होकर। . . . पत्नी से ऊपर वर्णित संवाद के पश्चात वे बैंजनाथ (तत्कालीन मंगलनाथ) मंदिर गये। वहां बाबा मंगलपुरी पूजा कर रहे थे। अंगरेज-दंपति को देखा, नीचे आये। भावविभोर मार्टिन बाबा मंगलनाथ के चरणों में गिर पड़े।

"यही तो थे वे बाबा, जो त्रिशूल लेकर मेरे आगे-आगे चल रहे थे।" कर्नल का कथन सुनकर सब श्रोता-दर्शक अभिभूत हो गये।

यह एक सत्य घटना है, जो पुरानी होकर लोक प्रचलित आख्यान, किंवदंती बन गयी।

"लेकिन इस चमत्कार को असत्य मानें तो कैसे?" श्रद्धालु कहते हैं, "वकील साहब स्व. जयनारायणजी 'बापजी' के

ब्रिटिश संसद में सर विलियम जांसन हिक्स धुआंधार भाषण दे रहे थे कि अचानक उनकी निगाह विंस्टन चर्चिल पर पड़ी। चर्चिल असहमति और विरोध में सिर हिला रहे थे। विलियम ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा, "माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं देख रहा हूं कि मेरे मान्य साथी मि. चर्चिल मेरे विचारों के विरोध में सिर हिला रहे हैं, जबकि मैं केवल अपने निजी विचार प्रस्तुत कर रहा हूं।"

यह सुनकर विंस्टन चर्चिल फौरन उठ खड़े हुए और बोले, "मान्य अध्यक्ष महोदय, मेरे साथी मि. विलियम यह क्यों भूल रहे हैं कि मैं अपना निजी सिर हिला रहा हूं।"

यह सुनकर पूरा पार्लियामेंट-भवन ठहाकों से गूंज उठा और विलियम महाशय खिसियासे गये।

—राजकुमार जैन

एक दुर्लभ चित्र : 'सेंट्रल इंडिया हार्स मैगजीन' में प्रकाशित सन १८८२ के रेजीमेंटल अफसरों का एक एक समूह चित्र । कर्नल मार्टिन, कुरसी पर बायें से चौथे।
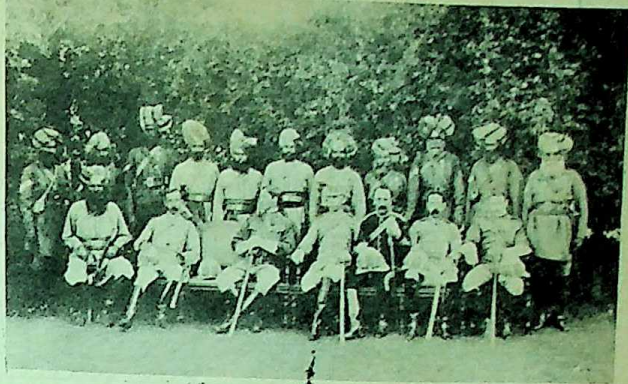
साथ रहनेवाले लोग अब भी मौजूद हैं। घर-घर लोग जानते हैं कि किस प्रकार नियमित रूप से बैजनाथ मंदिर जानेवाले बापजी एक दिन देर तक ध्यानावस्थित, मंदिर में बैठे रहे; घर आये, पत्नी को जल्दी खाना लाने को कहा। पत्नी विस्मित ! "आप अभी तो कचहरी से आये हैं!" बापजी ने कुछ ध्यान दिया। कचहरी गये। वहीं किसी ने उनके आधे घंटे पूर्व किये हस्ताक्षर बताये और आश्वस्त किया, "बापजी, आज क्या ज्यादा तरंग में हैं ?"

वकील साहब के अंतर्चक्षु खुल गये। वे सदा के लिए भोले के भक्त बनकर, संसार से विरक्त हो गये।

आज भी जयनारायण 'बापजी' का चित्र बैजनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार पर लगा हुआ है।

१९८० की बात है। अखंड रामायण-पाठ चल रहा था। मंदिर में। रात में दूध समाप्त हो गया। चाय कैसे बने? भक्तगण चितामग्न थे, कि एक साधुनुमा व्यक्ति आया। उसने अपने कमंडल से दूध डाला पात्र में और कहा, "मेरे लिए भी चाय रखना, अभी आता हूं।"—और साधु आज तक नहीं आया।

कौन था वह त्रिशूलधारी साधु? कौन था वह, जो बापजी के स्थान पर कचहरी में जाकर हस्ताक्षर कर आया?

बैजनाथ मंदिर में बाहर के हजारों लोग दर्शनार्थ आते हैं। कहते हैं, सबके मनोरथ पूर्ण होते हैं।

चमत्कारों से वेष्टित—आगर से दो किलोमीटर दूर यह स्थान आज भी रामचरितमानस के पाठ से गूंजता रहता है। हर समय भीड़ बनी रहती है।

तर्क श्रद्धा की कसौटी नहीं है। यहां आने पर ऐसा लगने लगता है।

—प्रोफेसर्स कॉलोनी, आगरमालवा
(उज्जैन) म० प्र०

● परशी रामचन्द्रन

उस हाल के चारों ओर अगरबत्ती और धूप की सुगंध फैल रही थी। दीवार पर कौंडैया राजू-रचित भगवान पट्टाभिरामन तथा संत त्यागराज के चित्र थे। वे फूलमालाओं से सुसज्जित थे। भगवान के इन चित्रों के सामने वेदमूर्ति बैठे कल्याणी राग के 'निन्बिसाल सुगमा' गीत में तल्लीन हो रहे थे।

धन्या ने अभी-अभी निकाला गाय का दूध पूजा के लिए उन चित्रों के सामने रखा। झाग दूध को ढंके हुए था। धन्या को ऐसा लगा—मानो त्यागराजजी फिर एक बार यहां खुद बैठे हों। वेदमूर्ति की आंखों के कोनों से पानी की बूंदें चमक रही थीं। बाबूजी के स्वर में सभी राग नाचा करते थे, फिर भी कल्याणी उनका विशिष्ट राग था।

दरवाजे पर पोस्टमैन की आवाज सुनायी दे रही थी। यह सुनकर धन्या दरवाजे की ओर भागी। पोस्टमैन पूछ रहा था। "पिताजी कहां हैं बेटी? रजिस्ट्री है!" धन्या की भौंहें धनुष की तरह झुक गयीं। बापू को रजिस्ट्री पत्र भेजनेवाला कौन हो सकता है?

कल्याणी राग अब रुक गया था। धन्या चिट्ठी लेकर जा रही थी, तब ठीक उसी समय वे भी बाहर आ रहे थे। "बापू जी, यह रजिस्ट्री पत्र दस्तखत करके दे दो! पोस्टमैन बाहर खड़ा है।" उनको भी आश्चर्य हुआ। धन्या झुककर देख रही थी; यह कौन-सी चीज हो सकती है! वह आनंद से चिल्ला उठी। आंखों में स्फुरण हो आया। वेदमूर्ति की हालत दूसरी थी। वे शिला बनकर रह गये।

"पिताजी वैसे ही खड़े क्यों रह गये?"

वेदमूर्ति ने कुछ नहीं कहा। केवल एक सूखी हंसी उनके मुंह से निकली। धन्या उनका मुंह ताकती रही। बेचारी! उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

आखिर वे बोले, "यह कौन-सी बड़ी बात है कि तुम इतनी प्रसन्न हो रही हो! सरकार मेरा सम्मान कर रही है तो क्या हुआ? बात तो अच्छी है। फिर भी . . ." आगे कुछ बोल नहीं पाये। उन्हें पता था कि इस क्षेत्र की गड़बड़ियों आदि को धन्या समझ नहीं पाएगी।

लोग एक-एक करके भीड़ लगाने लगे। थोड़ा-सा आराम करने 'इजी-चेयर' में लेटे होंगे—तभी मुंशीजी आकर

खड़े हो गये; पहले मुंसिफ साहब! वेद-मूर्ति को बधाइयां देने, सराहने आया करते थे। धन्या इस दृश्य को एक स्तंभ पर झुकते देख रही थी। वह शरमाती हुई मुसकरा रही थी।

एक कह रहा था—"जब मुझे इसका पता चला, तब तो मैं खुशी से एकदम फूल गया। क्या आपको याद है; मैं कहा करता था कि आप की वजह से गांव को गौरव मिलनेवाला है? मेरी भविष्यवाणी ठीक निकली कि नहीं?"

दूसरे ने कहा, "जब रेडियो ने कल रात के बुलेटिन में 'एनाउंस' किया कि वेदमूर्ति को सरकारी पुरस्कार मिला है, तब मुझे आपकी याद आयी, क्योंकि आपके सिवा और कौन व्यक्ति यह हो सकता था। फिर भी देखोजी एक मिनट मुझे सूझ नहीं रहा था कि यह आप ही हैं!"

"यही दुनिया है शायद! नहीं तो कैसी बात है कि अपने गांववाले भूल गये, सिर्फ मद्रास में रह रहे सरकारवाले याद रखते हैं—" वेदमूर्ति ने झट कहा।

बेचारे, रेडियो न्यूजवाले का सिर झुक गया फिर संभलकर बोला, "कुछ भी हो, भाई साहब, यह गांव सौभाग्य-वान बन गया. . .हां, मद्रास कब जाना होगा?"

"अगले हफ्ते, स्वतंत्रता—दिवस के साथ ही यह समारोह मनानेवाले हैं। सब तो मिल जाता है, आने-जाने के लिए पहले दर्जे का टिकट, खाना-पीना,

ठहरना। सबका बंदोबस्त हो गया। एक ही चीज बाकी रही ! गाड़ी में बैठना बस !"

गांव के लोग (सब के सब) उस छोटे स्टेशन पर इकट्ठे हो गये। गांववालों ने उनको धूमधाम से बिदा किया। कितनी मालाएं, कितनी प्रशंसा की बातें वाह ! प्रत्येक, चाहे बड़े हों या छोटे, समझ रहे थे कि यह गौरव अपने लिए ही है !

गाड़ी जब मद्रास एंबुलूर पहुंची, तब सूरज निकल आया था। स्टेशन में मूर्ति और धन्या को एकदम आश्चर्य हो आया। कुछ ही साल पहले उनका शिष्य रहा किट्टू (वे कृष्णस्वामी को वैसे बुलाया करते थे) वहां उनके स्वागत को खड़ा था ! हाथ में माला, मुख पर आश्चर्य की रेखाएं।

"क्या, दादा यह वही धन्या छोटू है ?" यह धन्या को बिलकुल पसंद नहीं था।

"जब मैंने सुना कि आपको गवर्नमेंट से गौरव मिल रहा है; संतुष्ट हुआ, बहुत संतुष्ट हुआ ! आप महा विद्वान हैं, खेद की बात है कि आप की विद्वत्ता को पहचानने में सरकार ने इतनी देरी कर दी !"

इतने में एक सरकारी अधिकारी वेदमूर्ति के पास आया "मैं समझता हूं आप वेदमूर्ति हैं ! 'अवार्ड' लेने आये हैं न ? माफ करना ! मेरे आने में थोड़ी देर हो गयी !"

वेदमूर्ति ने हाथ जोड़े, गवर्नमेंट अफसर ने उनको अपनी जीप में ले लिया, साथ ही किट्टू को भी। सरकारी गेस्ट हाउस को ले चले। धन्या मद्रास की शक्ल को देख-देखकर आश्चर्य चकित हो रही थी। कलाकारों का आवश्यक प्रबंध करके अफसर चल पड़ा। उस भवन में विभिन्न कलाओं के प्रतिनिधि लोग पधारे हुए थे। किट्टू चुपचाप देख रहा था।

"किट्टू, अब गुजारा कैसा चल रहा है ! कुछ प्रोग्राम तो मिल रहे हैं न ?"

किट्टू कुछ बोला नहीं। दो मिनट चुप रहने के बाद धड़ से किट्टू उनके पांव पर गिर पड़ा। बोला, "दादा मुझे माफ कर दीजिए!" उनकी आंखों में पानी छलछला आया था। उनकी समझ में कुछ नहीं आया।

"सात साल तक आप से शिक्षा पायी। अद्भुत ढंग से मुझे सिखाया। उस संपत्ति को लेकर मद्रास पहुंचा।

क्या बताऊं ! कोई भी देखता तक नहीं ! सभावाले चाहते हैं नाटक, सिनेमा का पीछा करते हैं। इतना कहें–कि मुफ्त में प्रोग्राम देनेवाला भी नहीं निकला, सौभाग्यवश एक सज्जन मिले। यह सुनकर कि मैं आपका शिष्य हूं नाटक में चांस दिया। अब अभिनेता हूं साथ ही 'डिमांड' के अनुसार गीतकार भी हूं। मेरी विवशता और भूख ने मुझे इस दिशा में मोड़ दिया, क्या करूं दादा।"

वेदमूर्ति का मन चूर-चूर हो गया। कैसा गायक था यह किट्टू, उसका यह हाल ? उनकी आंखें पानी से भर आयीं। हे राम, क्या आप की परीक्षा इतनी कठोर होती है ?' जब उनकी आंखें खुलीं तब वहां किट्टू नहीं था।

"धन्या,..वह चला गया ? "

"हां, बाबा, मैंने सोचा आप सो रहेहैं। कुछ आदमी आये, मैंने उनको लौटा दिया, क्योंकि आप सो रहे हैं।" वह कह रही थी। उसी समय त्यागराजन आ पहुंचा। जरी से उसकी धोती चमक रही थी। ऊपर रेशम की शर्ट, सारी उंगलियों में हीरों की अंगूठियां। माथे पर विभूति का चौड़ा छाप, मध्य भाग में कुंकुम का तिलक।

पता नहीं चला यह कैसा दिन है। दूसरा शिष्य त्यागू ! झट से उसे आलिंगन करके बुलाया, "आओ, त्यागू, आओ !" त्यागू उनके चरणों पर गिरा। यह सभी बातें धन्या अचरज से देख, सुन रही थी।

"दादा ! मैं क्या कहूं, कैसे कहूं ! यह सौभाग्य की बात नहीं तो क्या है ! एक ही दिन, एक ही समय गुरुजी आपको और शिष्य मुझको पुरस्कार ! यह जानकर आप जरूर खुश होंगे कि मुझे सुगम संगीत के लिए 'सुगम संगीत शिरोमणि' की उपाधि मिल रही है दादा !" —आवेश के साथ उसने बताया।

"बहुत खुश हूं, बहुत खुश हूं ! यह तो बताओ, असल में सुगम संगीत क्या चीज है ?" उनको देखकर मालूम हो गया कि वे समझ नहीं पा रहे हैं।

"क्या आप नहीं जानते सुगम संगीत क्या है...सुगम संगीत वह संगीत है, जो आप नाटकों में फिल्मों में सुना करते हैं, उसीको सुगम संगीत कहते हैं। सच बोलें तब यह कहना है कि मैं करीब पचास फिल्मों का म्यूजिक डायरेक्टर रहा हूं और उस कोटि के म्यूजिक डायरेक्टरों के क्रम में मुझे सब मानते हैं। यही कारण है कि मुझे 'सुगम संगीत शिरोमणि' की

उपाधि दी जा रही है।"

"तब तुम्हारा कहना यह है कि जो संगीत ज्ञान पहले वेदव्यासपुर के राघवेंद्र रावजी से कमाया बाद को मेरे यहां शिक्षा प्राप्त की—ऐसे संगीत को अब विदा कर दिया।"

"यों कहना ही ठीक होगा दादा ! मैंने संगीत को थोड़े ही छोड़ा, संगीत ने मुझे छोड़ दिया। कर्नाटक संगीत के लिए सालभर में दस दिन के लिए भी प्रोग्राम नहीं मिलता था। मैंने पाया कि कर्नाटक संगीत के साथ जब हिंदुस्तानी, और जॉज म्यूजिक को मिला दें, तब उसके लिए बहुत अच्छा रेस्पांस मिलता है।"

"अच्छा ! बात वैसी है ? खिचड़ी के लिए चीनी साथ लेना बुरा नहीं है, पर उलटा, कहीं केसरी के साथ नमक खाया जा सकेगा ?"

"शायद आप आज के टेस्ट से परिचित नहीं हैं। ऐसा ही हो रहा है दादा !
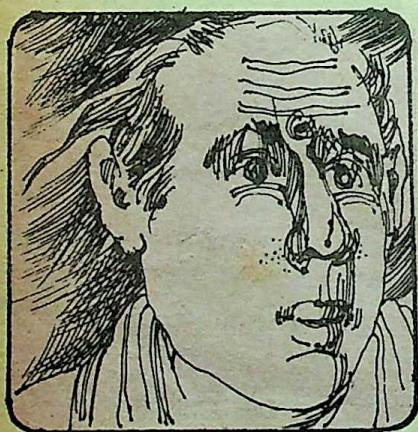
लोग केसरी के साथ नमक लेना बहुत पसंद करते हैं। सुनिए अभी-अभी मैंने एक पिक्चर के लिए एक संगीत रचाया जो आज बड़ा 'हिट' बन चुका है।"

"हिट बन चुका है। अच्छा? तो कौनसा है वह ?"

'लालाजी का लड्डू, तेरी आंखे हैं बड्डू.. देखके, तुझे बन गया दूध उफान मैंके उबर गया, दर्शन तेरा पाके, यों ही बना बेबी !'

वेदमूर्ति ने दोनों कान बंद कर लिये वह हंस नहीं सके, "त्यागू, भगवान के लिए बंद कर दो,"

"दादा, आपने ऐसे समझ लिया। आप जानते हैं यह रिकार्ड एक लाख बिक चुका है, अब तक ! गली-गली में यह गूंज रहा है, आप तो और कुछ कह रहे हैं दादा !"

"त्यागू ! मेरा आशीर्वाद, हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहेगा ! एक छोटी-सी सहायता करोगे ! किसी से यह नहीं बताना कि तुम मेरे शिष्य हो ! क्योंकि वे लोग शायद मुझसे भी आग्रह करेंगे, कि मैं भी, 'लालाजी का लड्डू गाऊं।"

त्यागू झट से उठकर चला गया।

"देखा, धन्या, याद है तुम्हें ! जब तुमने मुझसे यह पूछा था कि आप गवर्नमेंट की उपाधि की बात सुनकर दुःखी क्यों हुए। यही बात थी। मेरी परंपरा को बनाये रखने के लिए एक भी शिष्य नहीं रहा, जो मेरी शैली में, संगीत में मशहूर हो पाये ! इने-गिने जो थे वे सिनेमा

या नाटक की ओर झुक चुके हैं। शायद मैं भी गुजारा इसलिए कर सका, कि मेरा अपना मकान है, खेत हैं—मैं यह सोच रहा था कि मेरे शिष्य लोग एक-दो मद्रास में हैं और मेरी परंपरा का प्रसार कर रहे हैं—मुझे उपाधि मिल रही है। पर बात उलटी निकली।"

धन्या चुप हो गयी। बापू की अभिलाषा उसको मालूम थी। बेकार उपाधि पाना उनको अच्छा नहीं लगा। वे उपाधि को लिये बिना लौट सकते थे, फिर भी सरकार इसे अपमान मान सकती थी।

अगले दिन तड़के छह बजे उपाधि-वितरण का प्रबंध किया गया था। उस संबंध में एक अधिकारी किस-किस तरह राज्यपालजी से लेना है, उसका एक रिहर्सल-सा करा रहा था। रंगमंच तक उन सबको ले जाकर सब कुछ बताया। अतिथि-गृह नजदीक पड़ने के कारण वेदमूर्ति और धन्या पैदल लौट रहे थे। धन्या को मद्रास शहर के माउंट रोड की हलचल, भीड़ और आदमियों के रीति-रिवाज बहुत आनंद दे रहे थे;एकदम बच्ची बनकर यह सब देखती आ रही थी।

वह क्या है ! बापूजी बगल में कौन गा रहा है। वही स्वर,वही शैली ! कहां से आयी यह आवाज ?' कोई गा रहा था।

'पिताजी देखो तो सही ! उधर—हां.....।'

उस फुटपाथ के एक कोने में एक सूरदास गा रहा था, हारमोनियम उसका साथ दे रहा था। उसको घेरकर चारों ओर भीड़ लग रही थी। उसके सामने एक गंदा कपड़ा बिछा था। उसमें दो पैसे, पांच पैसे के सिक्के। गांभीर्य और कोमल स्वर में वह गाया करता था। पूरा का पूरा वह वेदमूर्ति के-जैसा था। कोई कह रहा था, "यह रोज यहां गाता है। ठीक वेदमूर्ति के ही-जैसा...उसके पास एक पुराना ग्रामोफोन है। उसमें सारे के सारे वेदमूर्ति जी के संगीत हैं। गाता तो उन्हीं के-जैसा है, फिर भी अभागा है।"

वेदमूर्ति रोमांचित हो उठे ! अब उनके कदमों में गर्व की छाप थी। यहां उनका एक अनुयायी मिल गया, सच्चा निष्ठावान, बस काफी है ! वह अपना सीधा, शिष्य नहीं रहा होगा, तो क्या हुआ, एकलव्य—यहां, एक एकलव्य, उनकी शैली, संगीत, गीत सबको बनाये रखने के लिए रहता है ! कृतार्थ हो गये !

अनुवादक : एस. के. रामन

एक पते पर भेजा गया लिफाफा वापस प्रेषक के पास लौट आया। लिफाफे पर डाकिये ने लिखा था, 'यह आदमी मर चुका है।'

गलती से कुछ दिनों बाद वह लिफाफा वापस डाक में डाल दिया गया। इस बार डाकिये ने उस पर यह लिखकर लौटा दिया, 'यह आदमी अभी तक मृत है।'
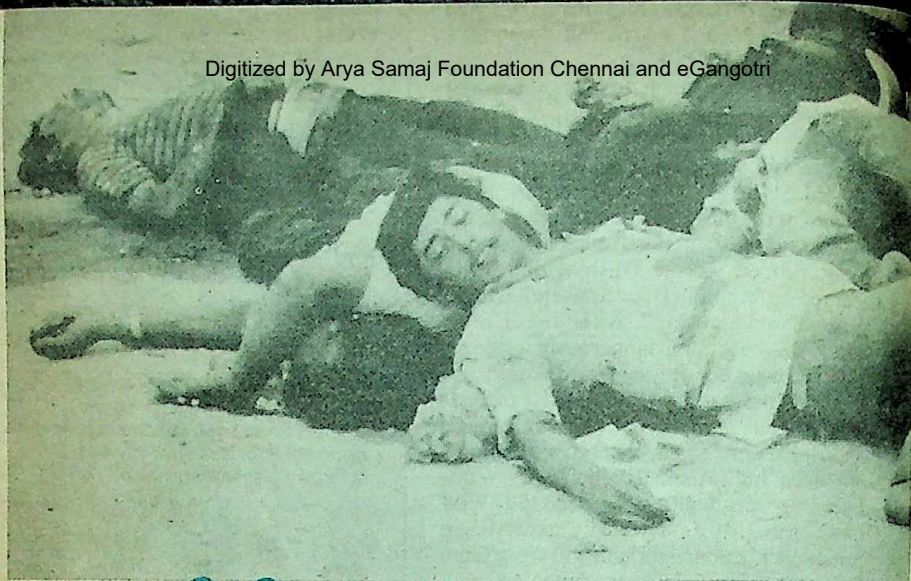
फिलस्तीनी युद्ध में भारत की भूमिका

● डॉ. राजेन्द्र सहाय सक्सेना

दमिश्क में मज्जे एवेन्यू स्थित होटल अल जला सरगरमियों का केंद्र बना हुआ था। कई देशों से चिकित्सा-दल इजराइल द्वारा आहत फिलस्तीनी जनता व सिपाहियों की सहायता के लिए आये हुए थे। सबसे प्रथम पहुंचनेवाला भारतीय दल था, जिसके कुछ घंटों बाद बुलगारिया की टीम भी आ पहुंची। पीछे-पीछे पड़ोसी अरब देशों के चिकित्सा-दल भी पहुंचने लगे। बंगला देश व ग्रीस की टीमें भी पहुंच चुकी थीं। इजराइल अपने श्रेष्ठ हथियारों का, जो उसे अमरीका से प्राप्त हुए थे, भरपूर लाभ उठा रहा था और अत्यधिक दबाव बनाये हुए था। हमारे चिकित्सा-दल को कुवैत से उड़ने के बाद ही खबर मिली कि दमिश्क का हवाई अड्डा बंद है, संभवतः वह क्षतिग्रस्त हो चुका है। मेरे दल के युवा चिकित्सक डॉ. ए. एन. सिन्हा, डॉ. ए. सी. मलिक, डॉ. जे. एस. दुआ व तकनीशियन श्री देवीराम व जोशी सब चिंतित लग रहे थे। यह उन सबकी प्रथम वायु-यात्रा थी और सिर मुड़ाते ही ओले पड़ने लगे। जैसे-तैसे धड़कते दिलों से हम दमिश्क उतरे। भारतीय दूतावास के काउंसलर श्री एस. जे. सिंह व पी. एल. ओ. के कर्मचारी हमारा स्वागत करने आये हुए थे। प्रोग्राम के अनुसार हमें टैक्सी द्वारा दमिश्क से बेरुत

> युद्ध उनके मस्तिष्क में सर्वोपरि था। 'आओ चलकर तरबूज खायें', यह वह नहीं कहते थे। 'आओ चलकर तरबूज पर "हमला" करें', यह उनका वाक्य होता। उनका चेहरा व मुस्कान देखकर हम लोग समझ जाते कि आज के युद्ध में पासा किस की ओर रहा।

पहुंचना था। यहां घटना-चक्र तेजी से घूम चुका था और इजराइलियों ने जल, थल व वायु के सभी मार्गों पर अपना कब्जा करके बेरुत को एकदम अलग कर दिया था। न वहां चिकित्सक जा सकते थे, न ही दवाइयां, यहां तक कि रसद भी नहीं पहुंच रही थी। बेरुत इजराइलियों के पूर्ण घेराव में था।

दिल दहलानेवाले दृश्य

होटल के लाउंज में रखे हुए कलर्ड टेलिविजन से लेबनान पर किये जा रहे 'बलात्कार' के दिल दहलानेवाले चित्र निरंतर प्रसारित हो रहे थे। अंतरदेशीय रेडक्रॉस इस प्रयत्न में था कि चिकित्सकों को, जहां उनकी बहुत आवश्यकता थी यानी, बेरुत पहुंचा दिया जाए। उनके हर प्रयत्नों को नाकाम किया जा रहा था। यहां तक कि रक्त को भी बेरुत नहीं ले जाने दिया गया। मैं समझता हूं कि इज-राइल ऐसा इसलिए कर रहा था कि चिकित्सा, औषधि व रक्त के अभाव में फिलस्तीनी, बिलों में कैद चूहों के समान

भारतीय चिकित्सा-दल: जय वल्लभ जोशी, लेखक, देवीराम

निकल भागें। उनका बेरुत में जमे रहना उसे किसी भी हाल में सहन न था। चिंतित फिलस्तीनियों ने विभिन्न चिकित्सा-दलों को यहां-वहां बांटना प्रारंभ कर दिया था। हम लोगों को दमिश्क से ४० किलो-मीटर दूर आद्रा स्थित स्कूल 'मर्दानित आश्शहोदा' यानी शहीदों के बच्चों के स्कूल में ठहराने का प्रबंध किया गया था, जहां हमने एक सप्ताह काटा। इस बीच चिकित्सा-दलों को जहां-जहां आवश्यकता

डॉ. राजेन्द्र सहाय सक्सैना

थी पहुंचा दिया गया। हम लोगों को फिर दमिश्क और बेक्का घाटी में अपना पूर्ण योगदान डेढ़ महीने से भी ऊपर देना पड़ा। यहां हमें इजराइली बमबारी को निकट से देखने का मौका मिला।

मार्गदर्शक : भारत

आद्रा स्कूल या कैंप, जो भी हम उसे कह लें, एक विस्तृत मैदान में पक्की इमारतों में बसा था। इसकी आधारशिला सीरिया के राष्ट्रपति हाफिज असद ने श्री यासिर अराफात की उपस्थिति में तीन चार साल पहले ही रखी थी। यहां छोटी कक्षाओं के साथ इंजीनियरिंग व कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने की भी योजना है। इहसान साल्हा उर्फ आबू तौफीक यहां के कुलपति हैं, और भारतीयों व भारत को बड़ी इज्जत की नजर से देखते हैं। उनका कहना है कि, 'अरब तो क्या, समस्त विश्व को भारत ही मार्ग-दर्शन दे सकता है। हमें भारत की श्रीमती गांधी से बड़ी अपेक्षा है।'

इस स्कूल में हाल ही के इजरायली आक्रमण से जिन बच्चों के माता-पिता का निधन हो गया है— उन्हें शरण दी ज़ाती है। कान्वेंट स्कूलों की अंतिम परीक्षा चल रही थी कि आक्रमण हो गया। बच्चों को गैर लाइसेंसी कारों में भरकर आद्रा ले आया गया। इन कारों को अभी भी 'सीरिया में चलने की आज्ञा नहीं है' के नोटिस लगे हुई देखे जा सकते हैं।

दो माह से लेकर अठारह वर्ष तक के बच्चे, लड़के व लड़कियां यहां परवरिश पा रहे हैं। जैसे ही लेबनान में शांति होगी, ये दो हजार बच्चे अपने निकट संबंधियों को पहुंचा दिये जाएंगे।

जिस ढंग से इनका पालन-पोषण हो रहा है, वह अपने में अनूठा है। माता-पिता के निधन से ये बच्चे उदास या विचलित नहीं लगते हैं। चमकती हुई धूप से प्रातः प्रारंभ हुई। एक बड़े हॉल में करीने से सजी मेज-कुरसी पर बच्चे बैठे थे और अपनी सहज शैतानियां करते हुए खाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। हर टेबल पर करीब १५ बच्चे थे, जिनके साथ एक वयस्क महिला भी बैठी थी—मानो परिवार की मां हो। उसका काम था, यह देखना कि बच्चे ढंग से पूरा खाना खायें और कुछ बरबाद न करें। प्रति सप्ताह 'मां' की ड्यूटी बदल जाती थी पर जो नहीं बदलती थी, वह थी 'मां की ममता।' वही स्नेह, वही पैनी नजर देखती हुई कि कोई बच्चा भूखा न रह जाए। सभी वयस्क भली-भांति अपना कर्त्तव्य समझते थे कि वह भावी कमांडो की देख-भाल कर रहे हैं।

लाल साफे में लिपटी जिज्ञासा

मानसिक रूप से बच्चे स्वथ्य हैं, यह प्रमाणित हो गया क्योंकि वह हमसे शीघ्र ही घुल-मिल गये और भारतीय चिकित्सकों को उनके साथ फुटबाल अथवा वालीबाल खेलते प्राय: देखा जा सकता था। डॉ. जतिंदर सिंह दुआ, जो हमारी टीम के 'बेबी' थे, उनमें विशेष लोकप्रिय थे। छतों से बच्चे उनको संबोधित करते और अपनी जिज्ञासा उनके लाल साफे में दिखाते। किशोरियां साफा खोलकर बाल देखने की जिद करतीं कि बाल कितने लंबे हैं!

मैंने सोचा, यह अच्छा अवसर है कि बच्चों का मनोविज्ञान पढ़ा जाए। सारे बुजुर्ग या यों कहा जाए कि समस्त फिलस्तीनी जाति उनकी पूर्ण देख-माल कर रही थी। कहीं कोई डर की अथवा असुरक्षित होने की शंका नहीं। खिले हुए चेहरे। स्वत: मन से निकल जाता, "शाबाश फिलस्तीनियों! संकट से जूझते हुए भी तुमने आनेवाली पीढ़ी के प्रति अपना पूर्ण दायित्व निभाया।" डॉ. मलिक ने एक छह साल के बच्चे से पूछा, "तुम भविष्य में क्या बनना चाहते हो?" तुरंत उत्तर मिला, "कमांडो।" प्राय: चुप रहनेवाले डॉ. सिन्हा ने पूछा, "डॉ. अथवा इंजीनियर क्यों नहीं?" "नहीं, हमें कमांडो की आवश्यकता है। हमारी देख-भाल आप तो कर ही रहे हैं।" बच्चों को स्थिति से पूर्ण रूप से अवगत करा दिया गया है, मैंने सोचा। कमांडो ही उनका रक्षक है, हीरो है। उनके पास वायुसेना अथवा नेवी तो है नहीं, वरना

दमिश्क का होटल अल जला

उस बच्चे के दिल में पायलट अथवा कैप्टन बनने का ख्वाब होता । मुख्य बात यह थी कि अपनी व अपनी जाति की रक्षा करने की इच्छा उसमें कूट-कूटकर भर दी गयी थी । आद्रा स्कूल से बिलकुल मिला, सड़क पार करते ही फिलस्तीनी कमांडो का एक कैंप था। वैसे तो वहां प्रवेश वर्जित था, पर मैं अपने विशेष मित्र के साथ वहां प्रायः रात्रि में दस बजे के वाद चला जाता था। भरे पूरे कद, सदैव मुसकराते होंठ, अरबों को देखते हुए सांवला रंग व चाल ऐसी कि जैसे लगता हो, वह दौड़ना ज्यादा पसंद करते हैं, यही उनका परिचय है। लेकिन नहीं, एक बात रह गयी, वह यह कि युद्ध व युद्ध सबंधी बातों में आबिद अफसूर उर्फ आबू मखान विशेष रुचि रखते थे। युद्ध उनके मस्तिष्क में सर्वोपरि था। 'आग्रो, चलकर तरबूज खायें', यह वह नहीं कहते थे। आग्रो चलकर तरबूज पर 'हमला' करें, यह उनका वाक्य होता । उनका चेहरा व मुसकान देखकर हम लोग समझ जाते कि आज के युद्ध में पासा किसकी ग्रोर रहा।

युद्ध और संगीत

रेगिस्तान की सुहानी जून महीने की रातों में वह कमांडो-कैंप, युद्ध-गीतों व मार्चिग गानों से गूंजता रहता। आद्रा कैंप के बड़े लड़के-लड़कियां वहां आना पसंद करते थे। आबू मखान सबसे जाकर बात करते। उनके साथ गाते। धीरे-धीरे मार्चिंग गाना ऐसी गति पकड़ता कि मेरे-जैसे अनभिज्ञ के कदम भी उसकी लय पर उठने लगते। ऐसे ही एक अवसर पर मैंने देखा कि एक युवा कमांडो प्रेम-गीत गाने लगा। सबने एक स्वर में उसको चुप करा दिया, "हमें युद्ध गीत चाहिए।"

जांबाज बालक

पांच नन्हे-मुन्ने ८ से ११ साल तक के वीर बच्चों को जो भी एक बार देख लेगा, भूल नहीं सकेगा। एक छोटे-से वृक्ष के नीचे, जमीन पर फोम रबर के गद्दों पर सोनेवाले, सबसे खतरनाक काम करते थे। छोटे कद के कारण ये दिखायी नहीं देते थे, टैंक ड्राइवरों को। उसके पास जाकर वे हथगोला टैंक में फेंक देते थे। यदि बच सके तो भागकर अपनी जान बचा लेते, वरना टैंक के साथ ही धराशायी हो जाते।

दस बजे रात्रिवाले कमांडो कैंप के एक फेरे में मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, जब 'आदाबअर्ज' सुनायी पड़ा। यह स्वर एक सौ अस्सी पाकिस्तानी सिपाहियों के नेता का था, जो फिलस्तीनियों की सहायतार्थ आये हुये थे।

महफिल जम गयी

अगले दिन हम छह लोगों का दल वायु-सेवन कर रहा था। पहाड़ियों के पीछे छुपता सूरज व उतरती हुई गरमी बड़ी सुखद थी। अपनी बातों में मगन हम उन गूढ़ गंभीर आवाजों की उपेक्षा नहीं कर सके, जो एक स्वर में हमें आमंत्रित कर रही थीं। इधर-उधर देखने पर आभास हुआ

कि वह एक अत्यंत विशालकाय ट्रक, (जिसमें गहन वातानुकुलित कोष भी था) के पीछे से आ रही थीं। ट्रक पार करते ही दो मजबूत ट्रक-ड्राइवर हमें दिखे। बड़े जिज्ञासु स्वर में उन्होंने पूछा "आप कहां से आये हैं?"

"हिंदुस्तान से।"

"ओ हो, तब तो बैठिए। हम यहां महफिल जमाएंगे। आपको उर्दू बोलते देखकर हमें बड़ी खुशी हो रही है। शीघ्र ही एक वृक्ष के नीचे एक दरी बिछ गयी, स्टोव पर चाय की केतली भी चढ़ गयी।

"मेरा नाम बत्ता खां है। मैं वजीरी हूं", वृषभ-जैसी मांसपेशियोंवाले कबाइली ने अपना परिचय दिया।

"उस्ताद अब बोत मजा आयेगा" बत्ता अपनी खुशी छिपा नहीं पा रहा था।" पलक झपकते ही मोहब्बत खां ने, जो उसका साथी था, हमारे सामने चाय रख दी। हमें मानना पड़ा, कि दो माह के आवास में हमने इतनी अच्छी चाय कभी नहीं पी। प्रायः घर में भी इतनी अच्छी चाय नहीं मिलती है।

पौन घंटे बाद ही अंधेरा घिरने पर वह महफिल बरखास्त हुई। चलते-चलते पूछा, "तुम लोगों के खाने का क्या इंतजाम है?"

"देखते हैं, क्या हो सकता है।" रमजान (जिसे अरबी 'रमादान' कहते हैं) के खाने से हम लोगों ने अपने नये मित्रों के लिए गोश्त और खुब्ज (अरबी रोटी) का प्रबंध किसी तरह कर ही लिया।

"मोहब्बत खां, बत्ता खां देखो हम तुम्हारे लिए क्या लाये हैं!" डॉ. मलिक ने प्लास्टिक का थैला पकड़ाते हुए कहा। पहलवान-जैसा बत्ता खां सहसा भावुक हो उठा, "उस्ताद! पूरी दुनिया में एक अजनबी का इतना ख्याल सिर्फ दो मुल्क-वाले रख सकते हैं। एक पाकिस्तानी, दूसरा हिंदुस्तानी। रहमदिली में आप हम से अव्वल हैं। हमें तो कल सुबह चला जाना है। तुम्हें इधर ही रुकना है। खुदा तुम्हारी हिफाजत करे।"

वापस लौटते समय दो मशीनगनधारी किशोरियों ने हमें रोका। जर्राहे हिंदी (भारतीय डॉक्टर) सुनते ही हमें जाने दिया।

कई विचार मेरे मस्तिष्क में एक साथ आ रहे थे। सर्वोपरि था घुंघराले बालों, व वृषभ-जैसी मांसपेशियोंवाला बत्ता खां। एक पाकिस्तानी होकर वह कितनी जल्दी हम से हिलमिल गया। शायद यह उसकी दुआ का ही असर है कि कई बार बमबारी व गोलियों के बीच से समस्त भारतीय दल सुरक्षित लौट सका। मेरे पाकिस्तानी दोस्तों हम सब का धन्यवाद!

—विभागाध्यक्ष, ऐनेस्थिसियालॉजी, सफदरजंग अस्पताल, नयी दिल्ली

"सुना है दो औरतें एवरेस्ट पहाड़ पर चढ़ गयीं।" श्रीमती वर्मा ने अपनी पड़ोसिन से कहा।

"बहन! मुझे तो काम से ही फुर्सत नहीं मिलती कि घर से बाहर जा सकूं।"

—भैरूलाल गर्ग

उन्होंने कैंसर अपने ऊपर ले लिया

● डॉ. रामकुमार करौली

इतिहास की पुस्तकों में हम पढ़ते हैं कि बाबर ने मृत्युशैया पर पड़े अपने पुत्र हुमायूं के प्राणदान की याचना करते हुए ईश्वर से निवेदन किया था कि वे हुमायूं की बीमारी उसे दे दें। हुमायूं स्वस्थ हो गया और बाबर चल बसा... यह इतिहास की बात है––यहां प्रस्तुत है––एक ऐसे महात्मा का प्रसंग, जिन्होंने किसी के कैंसर को स्वयं 'ओढ़' लिया . . .

हृदय-रोग विशेषज्ञ के नाते मैंने देखा कि मानसिक तनाव हृदय-रोग का बहुत बड़ा कारण है। लोग सांसारिक सुखों में शांति खोजते हैं। हमारे देश में मानसिक शांति का आध्यात्मिक साधन उपलब्ध है। एक ऐसे महात्मा थे, जो गृहस्थी थे। वे मेरे पूज्य पिताजी के गुरु थे। उनका नाम पं. जौहरीलाल शर्मा था। उन्होंने ९५ वर्ष की आयु में शरीर-त्याग किया। जब मैं बहुत छोटा था—तीन या चार साल का—तब से मुझे उनसे मिलते रहने का सौभाग्य मिलता रहा। मैंने उन्हें सदा बहुत वृद्ध तथा कृश शरीर ही देखा। वे भगवान कृष्ण के भक्त थे। उनको सब सिद्धियां प्राप्त थीं, मगर उनका प्रदर्शन नहीं करते थे।

जब मैं सात साल का था, एक बार मुझे बहुत ज्वर आया। छुट्टियों में बड़े भाई के पास दिल्ली आया था। ज्वर को दस दिन हो गये। टेंप्रेचर १०३° से १०५° तक रहता था, कुछ डॉक्टर टाइफाइड बताते थे। उस जमाने में कोई एंटीबायोटिक, यहां तक कि सल्फा ड्रग्स भी नहीं थीं। मैं बहुत कमजोर हो गया, तबियत घब-

राती थी। तब मैंने यह रट लगा दी कि पिताजी के गुरुजी को बुलाया जाए। वे आये और कुछ मंत्र पढ़कर मेरे सिर से पैर तक अपने हाथ एक बार ले गये। तापमान १०५° से ६८° पर आ गया। उसके बाद मुझे वह बुखार नहीं आया कोई पसीना भी नहीं आया तथा बुखार कम करने की दवाई भी नहीं ली।

जब मैं एम. डी. की परीक्षा दे रहा था, तब बहुत बीमार हो गया। मैंने उन्हें लिखा कि मैं परीक्षा नहीं दे सकता। मुझे बड़ा दुःख था, कि जीवन में कभी परीक्षा में फेल नहीं हुआ था; सदा सबसे ज्यादा नंबर से पास होता था और अब बीमारी के कारण फेल होना पड़ेगा।

उनकी चिट्ठी आयी, जिसमें लिखा था कि मैं ईश्वर का नाम लेकर परीक्षा में बैठूं, इसी भरोसे पर मुझे स्ट्रेचर पर ले जाया जाता था। उस परीक्षा में मैं पहली बार ही सर्वाधिक अंक लेकर उत्तीर्ण हो गया।

मेरी भाभी एक असाध्य रोग से मृतप्रायः हो चुकी थीं। ऐसा लगता था कि एक-या-दो दिन से अधिक जीवित नहीं रहेंगी। आधुनिक डॉक्टरी के सभी उपाय फेल हो चुके थे। मैं उस समय तक डॉक्टर नहीं हुआ था।

मेरे पिताजी ने अपने गुरुजी को दुःखभरी चिट्ठी लिखी। उत्तर आया कि तीसरे दिन से ठीक होने लगेंगी —ऐसा ही हुआ। मेरी भाभी अभी भी पूर्ण स्वस्थ हैं; किंतु उन महात्मा को कैंसर हो गया, जो बढ़ता ही गया। उन्हें भयंकर कष्ट और दर्द होने पर भी कभी कराह तक नहीं निकली। चेहरे पर अपूर्व शांति छा गयी। उनके मुंह से अंत तक हमेशा की तरह 'हे कृष्ण गोविन्द नारायण वासुदेव' ही निकलता रहा।

कभी मैं सोचता हूं कि क्या उन्होंने दया करके मेरी भाभी की असाध्य और भयंकर बीमारी अपने ऊपर ले ली थी?

बाबा नागरीदास

बाबा नागरीदास बृन्दावन में जमुना के किनारे पानी के पंप के पास एक पत्थर पर पड़े रहते हैं। उनका न आश्रम है न कोई शिष्य। कुछ चुंगी-पंप के कर्मचारियों ने एक छोटी-सी झोपड़ी बनायी है, बरसात में उसमें पड़े रहते हैं। उनका जन्म सन १८८८ में बिहार के एक बड़े जमीदार परिवार में हुआ। वे बार-एट-लॉ हैं।

आजादी की लड़ाई में गांधीजी के साथ रहे, अब ६० साल से पूर्ण विरक्त हैं। वे बड़ी उच्च कोटि के महात्मा हैं। उनके पास बैठकर असीम आनंद तथा परम शांति प्राप्त होती है। कभी-कभी तो अटूट ध्यान लग जाता है। वे सांसारिक बात नहीं करते। सांसारिक तथा आध्यात्मिक समस्याओं का उनके निकट शांत बैठने से ही हल मिल जाता है। एक बार मैं बहुत परेशानी में था, उनके पास गया। बैठा था, तब उन्होंने अपने आप कारण पूछा। आग्रह करने पर मैंने बता दिया। बोले, 'बंसीवाले के पास अरजी लगा दो' और बालसुलभ हंसी हंसे। मैं शांत रहा और रात को दिल्ली आ गया। कुछ ही दिनों में मेरी परेशानी दूर हो गयी।

इनसे भेंट का सौभाग्य मेरे गुरु समान मित्र राव साहब के द्वारा मिला। जो एक वरिष्ठ अधिकारी हैं। ज्योतिष में एक वैज्ञानिक की तरह अनुसंधान करके प्रश्नों के उत्तर देते हैं। उनकी एक भी भविष्यवाणी कभी गलत नहीं हुई। किंतु ज्योतिष तो उनका सहायक विषय है—मुख्यतः हैं, वे बहुत बड़े भक्त। उनका विवाह नहीं हुआ, क्योंकि वे आरंभ से ही अध्यात्म की ओर अग्रसर रहे हैं। अब तो इसकी पराकाष्ठा तक पहुंच गये हैं। इतने विनम्र और सादा तरीके से रहते हैं कि कोई कह नहीं सकता कि वे इतने बड़े अफसर हैं। अपना दफ्तर का काम निहायत प्रभावपूर्ण तरीके से करना और बाकी समय में भगवान का भजन और नाम-जप साधना करना, यही राव साहब के दो काम हैं। उनके पास शाम को कुछ देर बैठकर मन की पूर्ण शांति अनुभव करता हूं तथा सारे दिन की थकान दूर हो जाती है। उन्होंने ही मुझे सांसारिक परेशानियों को शांति से ईश्वर-इच्छा समझकर सामना करना सिखाया तथा ईश्वर-प्रेम की भेंट, मुझे अपनी माता-पिता तथा उनके गुरुजी के बाद इन्हीं से मिली।

—९, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नयी दिल्ली

शरीर से अलग होकर देखा है मैंने

अपने योगी-जीवन के दौरान मैंने एक बार अपने साथी-साधकों के साथ गुरुजी से पूछा कि वह हमें शरीर से अलग अस्तित्व के बारे में बताएं। एक सौम्य मुस्कान के साथ गुरुजी ने कहा कि मैं लेट जाऊं और सारे शरीर को ढीला छोड़ दूं। मैंने ऐसा ही किया। मैं एकाएक गहरी निद्रावस्था में चला गया। जब मेरी चेतना लौटी, तब देखा कि मैं अपने शरीर के पास खड़ा हूं और मेरा शरीर मृतवत पड़ा है। तभी मेरे गुरु ने मुझे कहा, "देखो, यह तुम्हारा शरीर, जिसे तुम हमेशा अपना समझते रहे हो, कैसा निर्जीव पड़ा है, जबकि तुम्हारा यह शरीर से अलग होना, अस्थायी है। इसी प्रकार एक दिन तुम्हें स्थायी तौर पर शरीर से अलग होना होगा। अब तुम ठीक तरह समझ सकते हो कि यह शरीर तुम्हारा नहीं है, तुम तो केवल इसमें रह रहे हो।" इसके बाद मैं एक बार फिर अचेतनावस्था में चला गया। कुछ देर बाद जब मेरी चेतना लौटी, तब मैंने पाया मैं अपने शरीर में हूं।

—डॉ. पंडित जी. कन्निह योगी, आत्म-योग ज्ञान सभा, मद्रास-५३

जी हां सूर्य भी घटता-बढ़ता है

• डॉ. ओमप्रभात अग्रवाल

कार्बन डाइऑक्साइड एक साधारण-सी गैस है, जो कार्बन और ऑक्सीजन के संयोग से बनती है। खुली-हवा में कोयला जलाइए और गैस तैयार होकर वायुमंडल में विलीन हो जाएगी। हजारों साल से मानव इसी प्रकार से इस गैस को बनाता और वायुमंडल में उसकी मात्रा बढ़ाता रहा है। पेट्रोलियम-काल के प्रारंभ के साथ यह वृद्धि और तीव्र गति से हुई है, क्योंकि पेट्रोलियम के किसी भी अंश, गैसोलीन, डीजल, आदि के ईंधन के रूप में प्रयोग से भी यही गैस निर्मुक्त होती है।

वायुमंडल में परिवर्तन

प्रयोगशालाओं में शोधकर्त्ता, जमी हुई अवस्था में सूखी बर्फ के रूप में इसका इस्तेमाल करते रहे हैं। कार्बन डाइ-ऑक्साइड—एक सामान्य गैस, जो भूतकाल में अपनी छोटी बहन कार्बन मोनॉक्साइड के विपरीत कभी बदचलन नहीं समझी गयी, क्योंकि मनुष्य के स्वास्थ्य पर इसका कोई भी हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता। सूर्य से प्राप्त होनेवाली ऊर्जा का लगभग आधा भाग पृथ्वी, वापस अंतरिक्ष में परावर्तित कर देती है। परंतु वायुमंडल में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड एक ऐसे आवरण की भांति कार्य करती है, जिसके कारण यह परावर्त्तन उस सीमा तक नहीं हो पाता, जिस सीमा तक उसे होना चाहिए। वास्तव में गैस, अवरक्त किरणों को अंतरिक्ष में वापस जाने से रोक देती है। इस प्रकार, पृथ्वी के चारों ओर कार्बन डाइऑक्साइड का आच्छादन कुछ उसी प्रकार से कार्य करता है, जिस प्रकार किसी बाग-बगीचे में बना शीशे का घर, जिसकी कांच की दीवारें बाहर से प्राप्त सौर ऊर्जा को पूरी तरह पुनः बाहर निकलने नहीं देतीं और इस प्रकार अंदर का वातावरण गर्म बना रहता है, जिसके कारण

अत्यंत ठंडे मौसम में भी वनस्पतियां जीवित रह सकती हैं। शीशे के इन घरों को ग्रीन-हाउस कहते हैं और इसी के आधार पर कार्बन डाइऑक्साइड की अवरक्त किरणों को पृथ्वी की ओर परावर्तित कर देने की क्रिया को ग्रीन हाउस प्रभाव कहते हैं। स्पष्ट है कि इस प्रभाव के कारण सूर्य से प्राप्त काफी गरमी वातावरण में कैद हो जाती है। वायुमंडल में इस गैस की मात्रा जितनी अधिक होगी, उतनी ही अधिक गरमी वातावरण में बनी रह जाएगी। तब परिणाम होगा—पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि। पिछले सौर-वर्षों में वातावरण में इस गैस की मात्रा में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

संगणकों की सहायता से यह अनुमान लगाया गया है कि अगले पचास वर्षों में (सन २०३० तक) यह मात्रा फिर दोगुनी हो जाएगी। इसका परिणाम होगा तापमान में लगभग २ अंश से.ग्रे. की वृद्धि। बढ़ने में यह भाग कुछ अधिक नहीं लगता, यदि इस वृद्धि से मौसम पर पड़नेवाले प्रभाव के बारे में विचार किया जाए, तो सर चकराने लग जाएगा। आर्कटिक महासागर की बर्फ पिघल जाएगी! यूरोप, अमरीका एवं रूस इतने ठंडे नहीं रह जाएंगे, विश्व में वर्षा का वार्षिक चक्र पलट जाएगा; संक्युत-राष्ट्र अमरीका और कनाडा की उपजाऊ भूमि बंजर हो जाएगी तथा अधिक वर्षा के कारण, उत्तरी एवं पूर्वी अफरीका, मध्यपूर्व, भारत, मेक्सिको तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में उपज आश्चर्य-जनक रूप से बढ़ जाएगी। कैसी अकल्पनीय बात है—मध्यपूर्व के रेगिस्तान तो हरे-भरे खेतों में बदल जाएंगे तथा पश्चिम में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। फिर तो जापान के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कोजी फुरुसावा की भविष्यवाणी खरी सिद्ध हो जाएगी कि पश्चिमी सभ्यता अब उतार पर है और अगली शताब्दी

लोकमान्य तिलक जब विलायत से लौटे, तब पूना के ओंकारेश्वर मंदिर के प्रांगण में उनके तथा तांत्या साहेब केलकर के सम्मान में एक छोटा-सा स्वागत-समारोह किया गया। समारोह के बाद जब लोकमान्य तिलक अपनी दो घोड़ों की बग्घी में बैठने के लिए चले, तब एक स्वयंसेवक ने आगे बढ़कर उन्हें पहनायी गयी मालाओं को बग्घी में रखने का प्रयत्न किया।

तिलक ने स्वयंसेवक को रोका दिया और सारी मालाएं कोचवान को देकर हंसते हुए बोले, "ये मालाएं तुम अपने दोनों घोड़ों के गले में डाल दो। तुम्हारे ये दोनों घोड़े जैसे इस बग्घी को खींचते हैं, वैसे ही हम दोनों भी तो 'देश रूपी बग्घी' को खींचते हैं। इसलिए हममें और इन घोड़ों में कोई अंतर नहीं, समझे।" और सचमुच मालाएं घोड़ों को पहना दी गयीं।

एशिया की होगी। परंतु, क्या पश्चिम इस स्थिति से समझौता कर पाएगा? यदि नहीं, तब एक और विश्व-युद्ध की भूमिका तैयार हो जाएगी।

सूर्य का घटता-बढ़ता आकार

अनुमान है कि १६८० तक पृथ्वी के तापमान में ०.२ अंश सें. ग्रे. की वृद्धि हो चुकी थी। फिर भी यह वृद्धि उतनी नहीं है, जितनी कि वातावरण में उपस्थित कार्बन डाइ-ऑक्साइड की बढ़ी हुई मात्रा के कारण होनी चाहिए थी। ऐसा क्यों है? उत्तर दिया है कोलोरैडो, अमरीका की हाइ अल्टीट्यूड ऑब्जर्वेटरी के डॉ. रोनाल्ड गिलिलैंड ने। दीर्घकालीन अध्ययन के बाद उन्होंने सिद्धांत प्रतिपादित किया है कि हमारा सूर्य, समय के साथ आकार में घटता-बढ़ता रहता है। सूर्य के संकुचन और फैलाव का यह चक्र ७६ वर्ष में पूरा होता है। पिछले लगभग ४० वर्षों में सूर्य बराबर संकुचित होता रहा है और इस समय उसका आकार, यदि सिद्धांत सही है तो, लघुतम होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, आनेवाले वर्षों में सूर्य का आकार धीरे-धीरे फैलना चाहिए। घटने से पृथ्वी पर गरमी घटेगी तथा आकार बढ़ने पर बढ़ेगी। पिछले दो दशकों में पश्चिम में पड़नेवाली भयंकर ठंड का कारण संभवतः यही है।

आशा की जा सकती है कि आनेवाली सरदियां शायद इतनी कष्टप्रद न होंगी। सूर्य के इसी संकुचन के कारण अभी तक कार्बन डाइऑक्साइड गैस अपना असली रूप दिखाने में असफल रही है। पिछले वर्षों में इसकी मात्रा में अभूतपूर्व वृद्धि के फलस्वरूप पृथ्वी के औसत तापमान में जो वृद्धि होनी चाहिए थी, वह सूर्य के संकुचन से संतुलित होती रही थी। परंतु आनेवाले समय में सूर्य का फैलाव तथा गैस की मात्रा में वृद्धि हाथ में हाथ डालकर कार्य करेंगे। परिणामस्वरूप तापमान में तीव्रता से वृद्धि होगी। आशंका प्रकट की गयी है कि १६६० तथा २००० के बीच तापमान में १° की वृद्धि हो जाएगी, यद्यपि केवल गैस के कारण यही वृद्धि २०१० तक होनी चाहिए। इसी तर्क को यदि आगे बढ़ाएं, तब कहा जा सकता है कि २०३० तक तापमान २° से अधिक भी बढ़ सकता है और तब ध्रुवों की बर्फ के भी पिघलने का खतरा पैदा हो सकता है।

वैज्ञानिक चिंतित हैं

वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की बढ़ती मात्रा से वैज्ञानिक कितने चिंतित हैं—इसका पता, १६८१ में स्टॉक होम के रॉयल स्वीडिश विज्ञान अकादमी के तत्त्वावधान में इसी विषय पर आयोजित एक सेमिनार में पढ़े गये शोध-पत्रों से, चलता है। पश्चिम के वैज्ञानिक विशेष तौर पर इस संभावना से आतंकित हैं कि आनेवाला समय विकासमान प्रदेशों के फलने-फूलने का है, और वह भी विकसित पश्चिम के स्वर्ण-प्रासादों को ध्वस्त कर।

—रीडर, रसायन-विभाग,
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

अलबेली टमटम शानदार घोड़ा, सन ६७ का विजेता

सजीली टमटम रंगीले कोचवान

● सत्यदेवनारायण सिन्हा

पचास साल पहले हम जिस पटना को जानते थे, वह आज के पटना में ढूंढ़े भी कहीं न मिलेगा। तब जिसने उस पटना को देखा होगा, इतने अरसे के बाद अगर अचानक वह आज के पटना को देखे, तब सहसा विश्वास नहीं कर सकेगा कि कभी इस शहर की वैसी भी शक्ल थी। तब न बिजली की चकाचौंध पैदा करने-वाली जगमगाहट थी, न मोटरों, बसों, स्कूटरों, साइकिलों और साइकिल-रिक्शों की भरमार थी, न ऐसे भीड़भरे चमचमाते, झलझलाते बाजार थे और न राहगीरों की ऐसी धक्कम-धुक्की ही थी। तब पटना का दिल 'चौक' में बसता था। कोठों पर सजी-धजी वारांगनाएं और बाजार में मनिहारी-परचून की दूकानें।

मनोरंजन के सीमित साधन

तब पटना के लोगों के मनोरंजन के साधन सीमित थे और आज से अलग किस्म के थे।

कबूतरबाजी, तीतरबाजी, पतंगबाजी, अखाड़ेबाजी आदि शौकों में पटना के रईसों का एक खरचीला शौक था—टमटम-बाजी। जहां चार टमटमबाज इकट्ठे होते, हंकैती की बाजी लग जाती। किंतु पटना की टमटमबाजी दो अवसरों पर विशेष रूप से होती थी। पहली चैत-नवमी के दूसरे दिन गुलाबबाग (आज का कंकड़-बाग) के मेले में और दूसरी. सावन के प्रत्येक सोमवार को बैकुंठपुर (पटना से दस किलोमीटर पूरब) के 'मलिया महादेव' के शृंगार के अवसर पर, जहां अकबर के नवरत्नों में से एक, राजा मान-सिंह द्वारा निर्मित महादेवजी का मंदिर है। सबसे अधिक टमटम-दौड़ होती थी, गुलाबबाग के मेले में।

तब पटना शहर के हर मोड़ पर, चैत-नवमी के अवसर पर नृत्यांगनाओं का नाच होता था। बनारस, मिर्जापुर, लखनऊ आदि की प्रसिद्ध नृत्यांगनाएं दल-बल सहित पहुंचती थीं। नाच के लिए सड़क के किनारे ही शामियाने लगते थे। मशाल की रोशनी में रातभर नाच होता था। तब बिजली और गैस-बत्ती थी कहां? सारा पटना शहर चैत-नवमी के नाच में मस्त रहता।

गुलाबों के बगीचे—घुंघरुओं की रुनझुन

तीन-चार बजे भोर तक लोग नाच देखते. फिर अपनी-अपनी टमटम पर सवार हो गुलाबबाग के मेले में आते, जहां सैकड़ों बीघा में गुलाबों की खेती होती थी। कई रईसों और नवाबों के अपने बगीचे थे यहां। इस मेले में गाजीपुर के गंधी और बनारस के तंबोलियों की कई दूकानें आती थीं। दैनिक क्रिया से निवृत्त होने के बाद लोग एक पैसे का चमेली का तेल मिट्टी की कुप्पी में लेते। सिर और बदन में तेल लगा, कुएं पर स्नानकर बदन को महक-ऊआ (सुगंधित) बनाते। कपड़े बदलने के बाद किसी दूकान पर कचौड़ी, घुंघनी और जलेबी का नाश्ता चलता। फिर टमटमबाजी शुरू होती। देखा जाता कि किसका घोड़ा 'फरवट' चाल में चारों पैर माफ निकालता है। हर रईस के पास अपनी-अपनी शान का टमटम-घोड़ा रहता था।

इस मेले में पटना की अलबेली टम-

पटनिया टमटम का नक्काशीदार पिछला भाग

टमों की सजावट देखते ही बनती थी। पहिये, अड़ानी, पंखा, कटहरा, डाला और बम आदि की लकड़ियों पर कमाल की नक्काशी की हुई रहती। पटना के नामी रंगसाज इस खूबी से इन्हें रंगते थे कि एक-एक फूल-पत्ती खिल उठती थी।

राज-सिंहासन की तरह जितनी सजी-धजी टमटमें आती थीं—उतना ही सजा-धजा, दूल्हे की तरह शृंगार किये घोड़ा भी रहता था। माथे और कंधे पर रंग-बिरंगी झालर, आंखों पर पीतल की चम-चमाती कलात्मक कृतियां जड़ी मोटे, काले चमड़े की पट्टी, गले में रेशमी धागों में गुंथी कटक के प्रसिद्ध कारीगरों की मीनाकारी की हुई चांदी के दरजनों तौक, ठेहुने के ऊपर लाल-हरा-पीला-नीला गोटे-दार रेशमी रूमाल बंधा रहता। किसी-किसी घोड़े के अगले दोनों पैरों में कंक-ड़ियांभरा चांदी का बाला पहनाया जाता था, जो उसके पैर उठाते ही झनझना उठता।

घोड़े की चाल पर पंचों की नजर

पटना की टमटमबाजी में दो रईसों के बीच झगड़े नहीं होते थे। 'अबे-तरे-अरे' नहीं होता था। घोड़े की चाल तय होते ही, टमटमों पर पंच बैठ जाते। 'दोगामा', 'इरगा' या 'गहरे' चाल में घोड़े चल पड़ते। कोचवान अपने-अपने घोड़े को, 'वाह बेटा, वाह-जवाब नहीं . . . बढ़ जा, हो राजा . . . अब लिया है . . . बाजी !' कहता हुआ बढ़ाये चला जाता। इस दौड़ में घोड़ा चाल से बेचाल हुआ नहीं कि, पंचों की डांट कोचवान को पड़ती, —'हे, ये क्या ? चाबुक देखा है न ?' फिर कोचवान की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि अपने घोड़े को बेचाल बढ़ा दे। टमटमबाज अगर स्वयं घोड़ा हांक रहा होता, तब पंचों की डांट के बोल बदल जाते थे, 'ऐ बाबू साहब ! चाल में रहिए, चाल में।' . . .

पंचों द्वारा फैसला होते ही मेले में शोर हो जाता कि फलां बाबू का टमटम-घोड़ा इस बार सब पर अव्वल हुआ। उस टमटम-घोड़े को देखने के लिए भीड़ लग जाती।

अलबेली टमटम का शानदार घोड़ा

पटना के एक रईस सहदेवजी (जिन्हें आदर से लोग 'बऊआजी' कहते थे) के पास एक बड़ी ही अलबेली टमटम और शानदार घोड़ा था—'हजारा।' एशिया के सबसे बड़े पशु-मेले सोनपुर में तब वह एक हजार रुपये में खरीदा गया था। अतः नाम पड़ा—हजारा। मुलतानी नस्ल, सुरमई रंग, ऊंचाई करीब आठ-नौ फुट, सांचे में ढला भरा-पूरा शरीर। क्या बांकी चाल थी उस घोड़े की। बारह बजे रात में पटना की सूनी सड़कों पर जब वह साठ-सत्तर मील की रफ्तार से 'इरगा' चाल में दौड़ता, तब सुननेवाले को ऐसा लगता कि कोई तबले पर 'त्रिताल' बजाता चला आ रहा है। उसी आवाज की बदौलत लोग पहचान जाते थे कि सहदेव बऊआ का टमटम-घोड़ा जा रहा है।

हजारा को घास ग्रौर जई के अलावा रोजाना दस सेर गाय के दूध में भिगोया हुआ चार सेर चना, एक सेर छुहारा, आधा सेर मक्खन ग्रौर भैंस का एक पाव शुद्ध घी दिया जाता था। इतनी 'गिजा' उसको रोज मिलती थी। दस से बारह बजे दिन तक उसकी मालिश होती, नारियल की रस्सियों से बने एक मोटे खरहरे से। दो घंटे की मालिश के बाद उसका बदन चमकने लगता। फिर उसके पुट्ठों पर 'कूचा' मारकर जोड़ का दर्द निकाला जाता। तीसरे पहर उसकी कमर, सीना ग्रौर पुट्ठों की घी की टहरी (हांडी) से सिकाई होती। उसका बदन एकदम फरहर हो जाता था। रात में एक सेर अरहर की दाल पकाकर उसमें एक सेर गेहूं की रोटियां तोड़कर डाली जातीं ग्रौर तब उसमें पावभर शुद्ध घी गरम करके छोड़ा जाता। रोटी-दाल खिलाने के बाद कोचवान अपने घर रवाना होता था।

मुक्खू—एक रंगीला कोचवान

अलबेली टमटम, शानदार बांका घोड़ा—तब भला कोचवान रंगीला क्यों न होता! कोचवान था—मुक्खू। गठा हुआ कसरतिया बदन। बचपन से घोड़ों का शौकीन। मालिक की ग्रोर से खाने-पहनने की पूरी आजादी थी उसे। सिर पर जरीदार बनारसी पगड़ी, गले में रंग-बिरंगे रेशम में गूंथा ग्यारह दाने का सोने का कंठा, (जिसका मूल्य आज के सोने के भाव से बाईस हजार रुपये होता) बदन पर भागलपुरी रेशमी
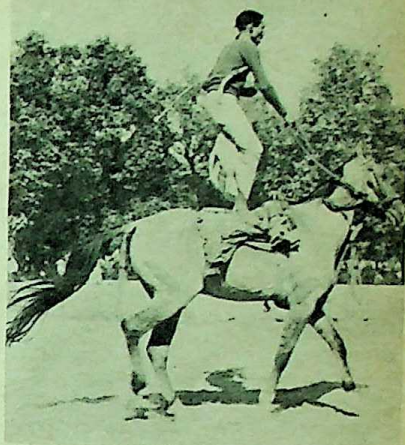
घोड़े की पीठ पर करतब दिखाता सवार

तसर का कुरता, कमर में काली कोर की मुट्ठी में आ जानेवाली बारीक 'ढाका छित्ला' धोती, पैरों में काले 'पिटीन' का चमचमाता जूता ग्रौर हाथ में बाईस फुदने का चाबुक। पटना के टमटमबाज मुक्खू को अपने घोड़े की रास थमाने के लिए ललचते थे। उसकी तलब के लिए बोली लगती थी। घोड़े की चाल बढ़ाने में उसका बड़ा नाम था।

बाबा चंचलदेव और 'मौला बख्श'

नंदगोला स्थित मठ के महंत बाबा चंचलदेव पहलवानी ग्रौर टमटमबाजी में बेजोड़ थे। क्या रूप-सौंदर्य ग्रौर शरीर पाया था उन्होंने! देखने में कोई 'देवपुरुष' लगते थे। अब तो वैसे लोग भी देखने में नहीं आते। बलिया जिले के नामी कारीगरों से शीशम ग्रौर वन-सुंदरी की

लकड़ी से उन्होंने एक अलबेली हलकी टमटम बनवायी थी। गेरुआ वस्त्र पहन, सिर पर साफा बांध, पालथी मारकर जब वे सफेद साटन की लाल कोर लगी टमटम की चमचमाती गद्दी पर मखमल की तकिया के सहारे बैठते थे, तब टमटम की शोभा बढ़ जाती थी।

बाबा के पास गहरे रंग का एक अरबी घोड़ा था—'मौलाबख्श।' बाबा रोज उसे अपने हाथों से दो-तीन सेर चना-किशमिश खिलाया करते थे। घोड़े का बदन भी बाबा के बदन की तरह गठीला था। उस जमाने में 'मौलाबख्श' की बराबरी करनेवाला कई वर्षों तक कोई ग्रौर घोड़ा नहीं हो सका। 'कदमदारी' चाल में वह इतना लाजवाब था कि उसकी पीठ पर बैठकर कटोरे में पानी ले, उसे हांक दीजिए। क्या मजाल कि कटोरे का पानी एक बूंद भी इधर-उधर छलक जाए। 'मौलाबख्श' की रग-रग में मानो बिजली भरी थी। कदमदारी चाल के बाद, उसके रगों में खून न जमे इसलिए उसके सीने, कमर एवं पुट्ठों पर साबुन, लाल-मिर्च, आमा हल्दी, फिटकरी, मोसब्बर आदि मिलाकर गरम लेप चढ़ाया जाता था।

काफिला टमटमों का

तब सावन के हर सोमवार को पटना के महाजन ग्रौर रईस बैकुंठपुर के महादेवजी पर जल चढ़ाने जाते थे। चार बजे भोर से ही टमटमों का काफिला चल पड़ता। सूर्योदय के पूर्व गंगा-स्नानकर लोग 'बाबा भोलेनाथ' पर जल चढ़ाते ग्रौर नाश्ता आदि कर टमटम के उस पड़ाव पर आते थे, जहां सारे शहर की टमटमों का जमाव रहता था। कोचवान इतनी देर में घोड़े को चना-किशमिश तथा गुड़ ग्रौर भाग खिलाकर तैयार कर देता था। इस जमघट में पटना के रईसों की जो शालीनता ग्रौर विनम्रता देखने में आती थी, वह अब स्वप्न की बात हो गयी है।

तब टमटम पर पालथी मारकर बैठने का रिवाज था। हर टमटम पर कोचवान सहित तीन सवारी। टमटमों की दौड़ शुरू होती। सड़क के दोनों किनारे हजारों लोग उस दौड़ को देखने के लिए पहले से खड़े रहते थे। क्या नजारा रहता था उस समय।

दस मील की उस दौड़ में कटरा बाजार के तंबोली की दूकान के पास जिसकी टमटम पहले आती, वह उस दिन की दौड़ में अव्वल माना जाता। तंबोली पहले से केवड़े की खुशबू से तर चांदी का बर्क लगा उम्दा पान लगाकर, चांदी के एक खूबसूरत थाल में तैयार रखता। केशर, सुपारी, लौंग-इलाइची एक अलग तश्तरी में रहती। अव्वल आनेवाला टमटमबाज टमटम से उतरते ही पान का थाल संभाल लेता। पीछे-पीछे आनेवाली टमटम वहीं रोक दी जाती। टमटम से उतर-उतरकर लोग पान लेते ग्रौर उस दिन अव्वल आनेवाले टमटमबाज को शाबाशी देते।

अब न तो वह पटना है, न वे लोग हैं!

रुपहली टमटम
और सजा-धजा अश्व
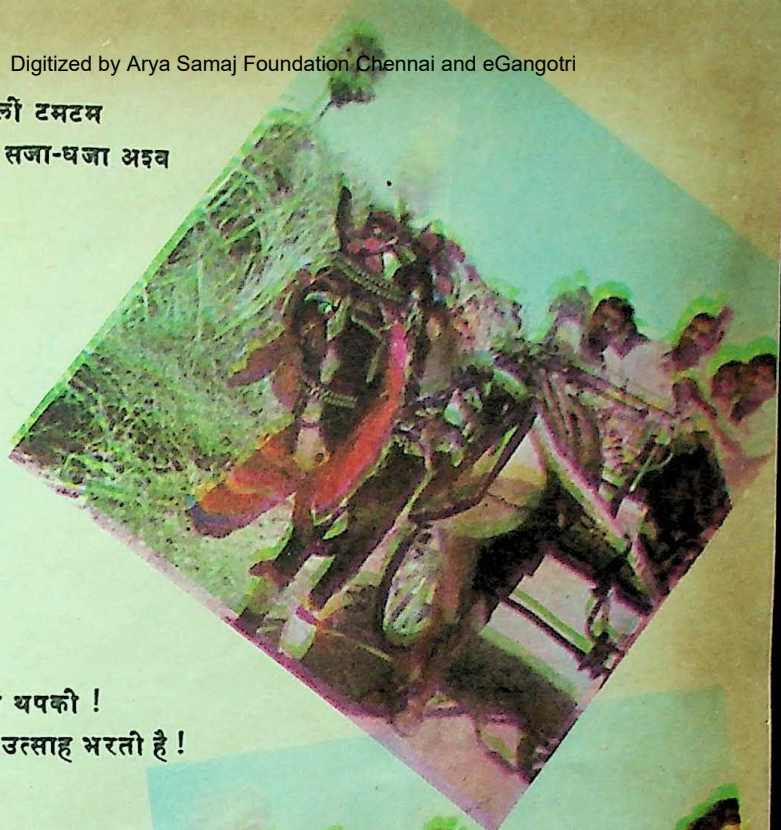
प्यारभरी थपकी !
जो नया उत्साह भरती है !

र न ही वह टमटमबाजी है। -नवमी के दूसरे दिन अगम- के पास नवनिर्मित राजेंद्र के नजदीक आज भी पटना उस टमटमबाजी की याद में टम-दौड़ होती है, जिसे देखकर शेर याद आता है—

में वो अब नहीं है जो आलम था खार का
! क्या हुआ वो जमाना बहार का।

—सिमली-मुरादपुर, पटना सिटी

छाया
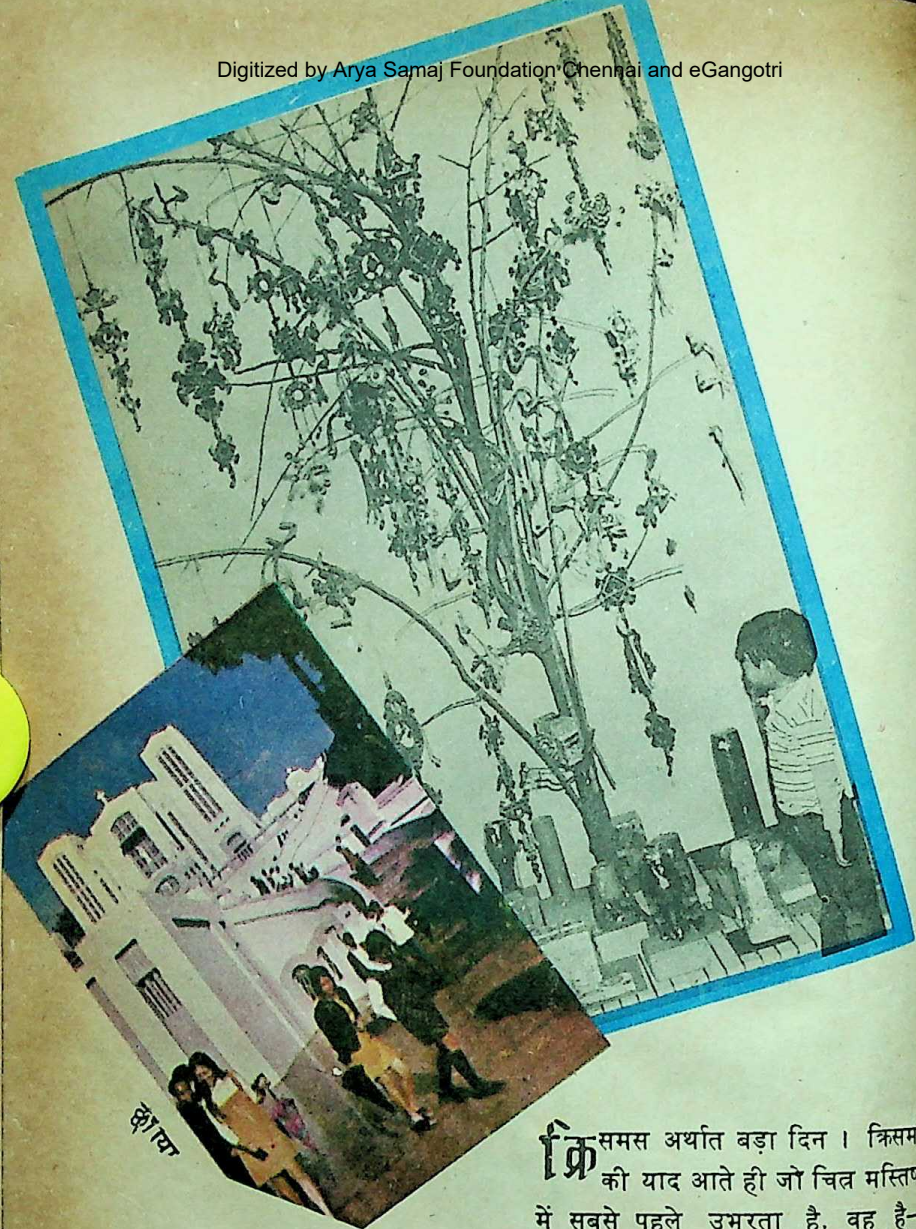
क्रिसमस अर्थात बड़ा दिन । क्रिसमस की याद आते ही जो चित्र मस्तिष्क में सबसे पहले उभरता है, वह है— चर्च, सांता क्लाज, और एक सुंदर त्रिको णात्मक आकार का, रंग-बिरंगे बल्बों से जगमगाता, मध्यम प्रकार का वृक्ष, जिस पर चारों ओर सुंदर रंगीन खिलौने, छोटे बड़े विभिन्न आकार के सितारे, लट्टू

मोम
'होल
पत्तों
सजी
टहनि

दिव
सदा
का
मी
जाने
वस्तु
प्रदेश
साथ

गयी
इसके
ही क

नामक
में हु
पशुओं
यह
मार्गद

दिस

परंपरा : उपहारों से लदे क्रिसमस-वृक्ष की

● प्रतिभा आर्य

मोमबत्तियां, पक्षी, आदि लटक रहे हैं, 'होली' पौधे की टहनियां, सुर्ख बड़े-बड़े पत्तोंवाला पनसटिया फूल, दीवारों पर सजी मिसलटो की सुर्ख बेरियोंवाली टहनियां।

ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक यीशू के जन्म-दिवस पर की गयी यह विशिष्ट सजावट सदा से ही की गयी हो, अथवा इन वस्तुओं का संबंध यीशू के जन्म से रहा हो, ऐसी भी कोई बात नहीं है। युगों से मनाये जानेवाले इस पर्व के आयोजन में ये वस्तुएं जाने-अनजाने, अपने-अपने प्रदेश की विशिष्टता के साथ जुड़ती चली गयीं और इसी का एक अविभाज्य, विशिष्ट अंग बन गयी हैं। अब तो स्थिति यह है कि इसके बिना क्रिसमस की कल्पना करना ही कठिन लगता है।

यीशू का जन्म यरुशलम के बेतलहम नामक एक छोटे-से गांव में एक गौशाला में हुआ था, तब किसने जाना था कि पशुओं का भूसा रखनेवाली नांद में पड़ा यह मासूम बालक एक दिन संसार का मार्गदर्शन करेगा, धार्मिक क्रांति लाएगा और पूरी आस्थाओं एवं विश्वासों में आमूल परिवर्तन कर मसीहा कहलाएगा। जिस वातावरण में यीशू का जन्म हुआ, वह आज भी एक झांकी के रूप में क्रिसमस के अवसर पर प्रस्तुत किया जाता है। आकाश से संदेश लानेवाला देवदूत, गड़रिये एवं चरवाहे, भेड़ें, माता मरियम एवं पिता दाऊद, और तीन महापुरुष, जो

तीन दैवी उपहार लेकर प्रभु के सम्मुख उपस्थित हुए थे। फिर यह क्रिसमस वृक्ष सजाने, 'मिसलटो', 'होली', आदि लगाने की परंपरा कब व कैसे शुरू हुई? यही प्रश्न बार-बार मन में उठता है।

क्रिसमस-पर्व यीशु के जन्म-दिवस से संबंधित होकर भी विभिन्न, रोमन, स्कैंडीनेवियन, जरमन, सेल्टिक एवं अमरीकन लोक-प्रथाओं का सम्मिश्रण बन गया है। विद्वानों का मत है कि ईसा-पूर्व युग की जरमन एवं सेल्टिक प्रथाओं का

समावेश, इस पर्व के आयोजन में हो गया। उस युग की ये जन-जातियां दिसंबर के अंत में शीत ऋतु की समाप्ति एवं सूर्य के उत्तरायण होने के उपलक्ष्य में 'यूल' नामक पर्व मनाती थीं। 'यूल' शब्द एंग्लो-सैक्सन एवं प्राचीन स्कैंडीनेवियन भाषा में मकर संक्रांति अर्थात सूर्य के उत्तरायण के लिए प्रयोग किया जाता है, और आज भी स्काटलैंड एवं उत्तरी इंगलैंड के कुछ भागों में क्रिसमस के लिए 'यूल' शब्द का प्रयोग होता है। इस अवसर पर ट्यूटोनिक जनजातियां इस अवसर पर लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठों का समूह जलाती हैं, जिन्हें 'यूल-लॉग' कहा जाता है। यह प्रथा उत्तरी भारत के पंजाब प्रदेश में लोहड़ी के अवसर पर आग जलाये जानेवाली प्रथा-जैसी ही थी। इन जनजातियों द्वारा ईसाई धर्म स्वीकार करने के साथ ही इस प्रथा का समावेश भी यीशू-जन्मोत्सव के साथ हो गया है।

रोमन और सदाबहार वृक्ष

इतिहास में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि रोमन लोगों का सदाबहार हरे-भरे पौधों के प्रति बहुत अनुराग था। अनेक पर्वों, उत्सवों एवं उल्लास, आनंद के अवसरों पर घर की सजावट हरे पेड़, पौधों व उनकी पत्तियों से की जाती थी। ईसा से चौथी शती पूर्व क्रिसमस वृक्ष की भांति ओक वृक्ष की सजावट का वर्णन भी मिलता है। संभवतः इसी उष्ण-कटिबंधीय ओक वृक्ष की जगह उत्तर के शीत कटिबंधीय प्रदेश में स्प्रूस ने ले ली है। जब चारों ओर बर्फ की सफेद चादर बिछी हो, उस स्थिति में घर में सजा, जगमगाता स्प्रूस वृक्ष मन व आंखों को कितना सुखदाई हो सकता है, इसकी मधुर कल्पना की जा सकती है।

शनि की पूजा

क्रिसमस की सजावट सेटर्नेलिया-दिवस के प्रारंभ में हो जाती है। सेटर्नेलिया

दिवस, वास्तव में रोमन कृषि-देवता 'सेटर्न' की उपासना के रूप में मनाया जाता था। 'सेटर्न' अर्थात शनि। शीत ऋतु की फसल की बुआई के बाद इस पर्व पर सभी निकट संबंधी एकत्र होते और विशाल दावत का आयोजन होता और मित्रों एवं प्रियजन में उपहारों का भी आदान-प्रदान होता था। इन उपहारों में विशेषकर मोम की बनी विभिन्न आकारवाली मोमबत्तियां, पेस्ट्री एवं मिट्टी से बनी विभिन्न सुंदर आकृतियां होती थीं। इस दिन सभी कैदियों को भी रिहा कर दिया जाता और इस दावत में वे भी सम्मिलित होते थे। यह उत्सव १७ दिसंबर को मनाया जाता था। ईसाई धर्म अपनाने पर इसका कृषि-संबंधी महत्त्व तो समाप्त हो गया, परंतु शेष प्रथाएं वैसी ही क्रिसमस से जुड़ गयीं।

परंपरा क्रिसमस-वृक्ष की

क्रिसमस-वृक्ष के रूप में जो वृक्ष घरों, बाजारों, गिरजों, गलियों एवं चौराहों में जगमगाता दिखायी देता है; वह नार्वे में आम पाया जानेवाला स्प्रूस फर जाति का ही एक वृक्ष है। दिसंबर की बरफीली ऋतु में, जबकि अन्य सभी वृक्ष असह्य शीत में अपना रूप खोकर कंकाल मात्र रह जाते हैं, चीड़, फर, जुनीपर, स्प्रूस आदि वृक्ष अपने त्रिकोणात्मक आकार में हरी तिनके-जैसी पत्तियोंवाली टहनियों को झुकाये अत्यंत सुंदर लगते हैं। यद्यपि इस वृक्ष की सजावट की परंपरा की शुरुआत का निश्चित समय ज्ञात नहीं है, परंतु संभवतः वह ट्यूटॉनिक युग ही रहा होगा। यही संभावना है कि जरमनों ने रोमन लोगों का अनुकरण करते हुए अपने उत्सवों एवं पर्वों पर सदाबहार पेड़-पौधों की सजावट की परंपरा प्रारंभ की।

कई शताब्दियों तक जरमन एवं अन्य यूरोपियन विशेषकर स्कैंडीनेवियन अपने विभिन्न पर्वों एवं खुशी के अवसरों पर ओक, चीड़, स्प्रूस, देवदार-जैसे वृक्षों का सजावट के लिए प्रयोग करते थे। स्प्रूस वृक्ष का क्रिसमस के अवसर पर सजावट के लिए प्रयोग करने का उल्लेख सर्व-

प्रथम सत्रहवीं शताब्दी में उपलब्ध होता है, परंतु यह परंपरा के रूप में लोक-प्रचलित नहीं हुआ था और यदाकदा कुछ स्थानों पर ही इसको सजाया जाता था। संभवतः स्प्रूस वृक्ष का त्रिकोणात्मक आकार, सुंदरता की दृष्टि से अधिक आकर्षक होने के कारण ओक से बाजी ले गया। उन्नीसवीं शताब्दी तक पूरे जरमनी में, चाहे निर्धन हों या धनी, सभी लोगों में, इसे सजाने की रीति चल

पड़ी थी। भारत-जैसे गरम उष्ण कटिबंधीय देश में भी, जहां स्प्रूस मिलना कठिन है, लोग इसकी जगह 'थूया', मोरपंखी के पौधे का उपयोग करने लग गये हैं।

बरफीली रात में आया वह अतिथि

इस वृक्ष से संबंधित एक लोककथा प्रचलित है। दिसंबर की बरफीली रात में, जबकि चारों ग्रोर कड़ाके की सरदी पड़ रही थी, एक निर्धन लकड़हारा लकड़ी के बने अपने छोटे से घर में सोने की तैयारी कर रहा था। तभी उसे दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनायी दी। इस बरफीली रात में कौन हो सकता है ? यही सोचते हुए लकड़हारे ने जब दरवाजा खोला तो वह एक नन्हे बालक को ऐसे समय में देखकर चकित रह गया। बालक न केवल सरदी से कांप रहा था, बल्कि उसका मासूम चेहरा भूख व थकावट से सहमा हुआ था। लकड़हारे ने तत्काल उस बालक को घर के ग्रंदर ले लिया। उसकी पत्नी ने बालक को पीने के लिए दूध गरम करके दिया। उसके पुत्र ने अपना बिस्तर उस बालक को दिया ग्रौर वह स्वयं लकड़ी के नंगे फर्श पर ही सो गया।

सुबह एक मधुर परंतु विचित्र संगीत से लकड़हारे की जब नींद खुली तो एक दिव्य संगीत-लहरी चारों ग्रोर गूंज रही थी। तब उसकी दृष्टि उस छोटे अतिथि की ग्रोर गयी तो पाया कि एक दैवी आभा से आलोकित वह बालक मुसकरा रहा है। वास्तव में वह स्वयं नन्हा यीशू था। बालक ने जाते समय बाहर से स्प्रूस की एक टहनी तोड़कर घर के ग्रंदर गाड़ दी ग्रौर यह कहकर चला गया कि लकड़हारे की दयालुता के बदले में यह वृक्ष उसके परिवार में सदा समृद्धि, वैभव एवं सौभाग्य लाएगा। ग्रौर कहते हैं, तभी से स्प्रूस की टहनी सजाने की परंपरा चल पड़ी। स्प्रूस की टहनी सौभाग्य, समृद्धि का सूचक बन गयी।

सजावट क्रिसमस-वृक्ष की

क्रिसमस-वृक्ष की सजावट पर एक विशेष ध्यान रखा जाता है कि उपयोग में आनेवाली वस्तुएं या उपहार उस पर कभी लटकाये नहीं जाते हैं, बल्कि पेड़ के नीचे सुंदर पैकेट में बांधकर रखे जाते हैं। केवल सौंदर्य एवं आनंद प्रदान करनेवाली सजावटी वस्तुएं, खिलौने, रंगीन सितारे, परियां, पक्षी, रंगीन बल्ब, चीड़ के रंगे हुए शंकु, मोमबत्तियां, घंटियां आदि क्रिसमस-वृक्ष पर सजायी जाती हैं।

वृक्षों को घरों के अतिरिक्त गलियों, बाजारों में सजाने का रिवाज वर्षों जरमनी में चलता रहा। सेंट पाल कैथेड्रल एवं सेंट मार्टिन की सीढ़ियों के दो जगमगाते विशाल क्रिसमस-वृक्ष वर्षों तक लंदनवासियों के आकर्षण का केंद्र रहे हैं। १९४७ में नार्वे की राजधानी ग्रोस्लो के निवासियों ने एक विशालकाय क्रिसमस-वृक्ष लंदनवासियों को उपहार में दिया। यह वृक्ष ट्रेफेलगर स्क्वायर में रंग-बिरंगी रोशनी से सजा हुआ एक भव्य दृश्य प्रस्तुत करता रहा। अमरीका में अकसर लोग घर के

अंदर सजाने के बजाय घर के प्रवेश-द्वार पर क्रिसमस-वृक्ष सजाते हैं। जरमनी में गिरजों के साथ-साथ कब्रिस्तान में मृतात्माओं को प्रसन्न करने के लिए क्रिसमस-वृक्ष सजाया जाता रहा है।

दो राजकुमारियों का योगदान

मैकलबरी की राजकुमारी हेलन ने १८४० ई. में पेरिस में सर्वप्रथम क्रिसमस-वृक्ष लगाने की परंपरा प्रारंभ की थी। ५० वर्ष के भीतर पूरे फ्रांस में यह रिवाज पूरी तरह प्रचलित हो गया। ग्रैविल की डायरी में राजकुमारी लीवेन का नाम इस संदर्भ में आता है, जिसने लंदन में इस परंपरा को प्रारंभ किया। परंतु जब तक पेरिस में उसका रिवाज पूरी तरह प्रचलित नहीं हुआ, तब तक यह लंदन में प्रचलित नहीं हो सका।

महारानी विक्टोरिया और राजकुमार अल्बर्ट को विंडसर पैलेस में इसको सबसे पहले लगाया था। उन्नीसवीं शती के क्रिसमस के अवसर का वर्णन करते हुए जरमनी के एक विद्वान ने लिखा है, "फर का जो वृक्ष एक सप्ताह पूर्व खुली हवा में सांस लेते हुए सुगंध बिखरा रहा था, अब घर के अंदर मोमबत्तियों, सुनहरे सेवों, व सुंदर रंगीन खिलौनों से सजा हुआ रोशनी में जगमगा रहा है।"

क्रिसमस के अवसर पर आप यदि जरमनी में हों तो अपने को चीड़ के जंगलों में घूमता अनुभव करेंगे। वास्तव में क्रिसमस-वृक्ष को लेकर जो उल्लास एवं उत्साह दिनों-पूर्व बच्चों में व्याप्त होता है, वही वृद्धों में भी। इसकी तैयारी में पूरा परिवार ही जुट जाता है। महीनों पूर्व इसकी तैयारी शुरू हो जाती है। सेटर्नेलिया दिवस पर जो वृक्ष स्थापित किया जाता है, उसे 'ओल्ड क्रिसमस' तक रखा जाता है। 'ओल्ड क्रिसमस' के बाद इसकी सजावट उतार ली जाती है, व मिसलटो, होली एवं क्रिसमस-वृक्ष को अलाव में जला दिया जाता है। इस अवसर पर परिवार के सदस्य एक दूसरे को याद करते हैं व एक दूसरे को उपहार देते हैं, शुभकामनाएं भेजते हैं। निर्धन व्यक्ति भी प्रियजनों को उपहार अवश्य देता है। उपहार देने की भी परंपरा, संत निकोलस नामक डच संत के साथ जुड़ी हुई है, जिसे बच्चे प्यार से 'सांता क्लॉज' व 'क्रिसमस-फादर' कहते हैं।

आज क्रिसमस का पर्व लगभग पूरे संसार में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। क्रिसमस न केवल एक पर्व है, बल्कि अपने आप में एक दर्शन है, संस्कृति है, जो केवल ईसा के जन्म से ही नहीं, अपितु उससे भी कई अधिक शताब्दियों पुराना है।

—सेंट स्टीफंस कालेज, दिल्ली

सुकर्म कभी खत्म नहीं होता; यह निधि कर्त्ता की आवश्यकता के लिए सुरक्षित रखी रहती है।

—काल्ड्रेयन
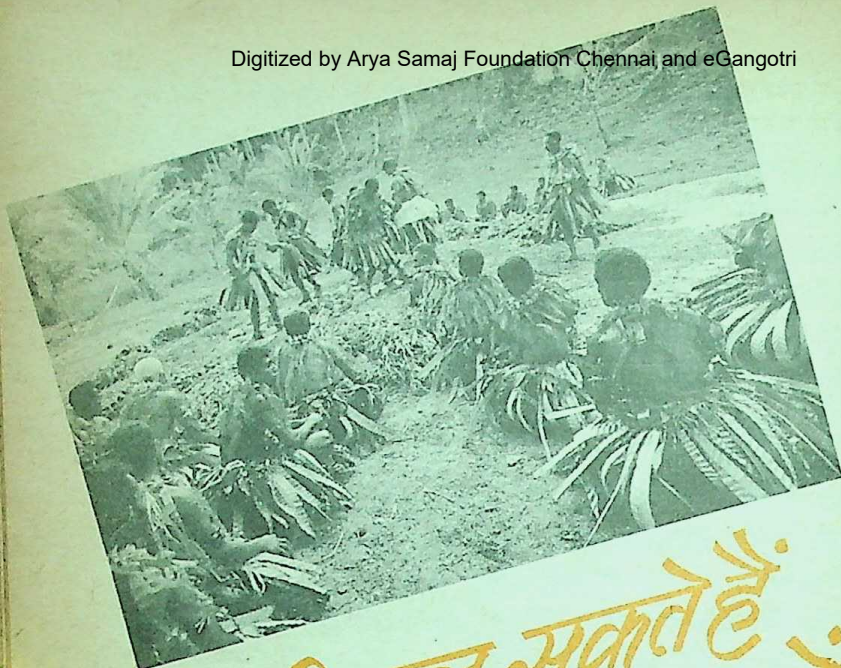
आप भी चल सकते हैं दहकते अंगारों पर

● जिम डोहेर्टी

एक दशक पहले शारदीय नवरात्र के दिन। भारत के सुंदरपुर गांव में काली-पूजा का वृहत आयोजन। पूजा के दौर में भक्तों को अपनी अग्नि-परीक्षा भी देनी थी यानी दहकते अंगारों पर नंगे पांव चलना था। लाल दहकते अंगारों से भरा विशाल कुंड तैयार हो चुका था। उसके किनारे खड़े थे, आत्म-विश्वास से भरे काली के पंद्रह भक्त। निश्चित समय पर पुजारी ने संकेत दिया और भक्तों ने अपने पैर अग्नि-कुंड की ओर बढ़ाये। लेकिन, वे दो-चार कदम ही चल पाये होंगे कि उनके पैर बुरी तरह दग्ध हो गये। वे उलटे पांव भागकर अग्नि-कुंड से बाहर निकल आये।

आखिर क्यों हुआ इस बार ऐसा? पिछले कितने ही दशकों से सुंदरपुर के काली-भक्त इस अग्नि-परीक्षा में खरे उतरते आ रहे थे। लेकिन अब उनके

ऊपर: फिजी द्वीप के अग्नि-नर्तक

पैर झुलसने के जख्मों से भरे थे। लोगों ने यह मानकर तसल्ली कर ली कि इस बार पूजा में कोई कमी रह गयी या त्रुटि हो गयी, जिसकी वजह से काली मां की कृपा नहीं हुई।

दहकते शोलों पर चले हैं सभ्यता के चरण

दहकते अंगारों पर नंगे पैर चलकर अग्नि-परीक्षा देने का चलन दुनिया के कितने ही हिस्सों में सदियों से चला आ रहा है। भारत, स्पेन, बलगारिया और फिजी के अनेक संप्रदायों में यह धार्मिक क्रियाकलापों का एक अंग है। आत्मशुद्धि और व्याधियों के उपचार के तरीके और श्रद्धा के प्रतीक रूप में दहकते अंगारों पर नंगे पैर चलना सदियों से यूनान और दुनिया के कुछ अन्य देशों में देवताओं की पूजा के साथ जुड़ा है। 'प्लिनी दि एलडर' ने लिखा है कि रोम में कतिपय परिवारों के सदस्य दहकते कोयलों पर नंगे पैर चलने का कमाल दिखाते थे और इसके बदले में उन्हें शासकीय करों से मुक्त कर दिया जाता था। मध्यकालीन यूरोप में फ्रांस के फ्लोरेंस नगर के एक साधु ने नंगे पैर अंगारों पर चलने का प्रदर्शन किया था। इसके पुरस्कार-स्वरूप उसे 'सेंट पीटर इगनियस' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

वीणा की धुन पर अग्नि-नृत्य

यूनान में आज भी देखने को मिलता है, नंगे पांव दहकते अंगारों पर चलने का यह करिश्मा। वहां आइया एलेनी ग्राम में हर वर्ष संत कांस्टेंटाइन और संत हेलेन के सम्मान में कई दिन तक चलनेवाले उत्सव का आयोजन होता है। समापन दिवस पर जब दिन डूब जाता है और अंधेरा घिर चुकता है तो अंगारों पर चलने का क्रम आता है। उत्सव का समारोप होती है यह क्रिया।

अंगारों पर चलनेवाले करीब दरजन-भर स्त्री-पुरुष, जिन्हें वहां 'अनास्ते नैराइड्स' कहा जाता है, पहले कई घंटों तक नाचते हैं, तीन तारों की थ्रेस की वीणा की धुनों पर। नाचते-नाचते उन्हें तंद्रा-सी आ जाती है। तब वे अपने हाथों में देवताओं की मूर्तियां उठाकर लाल अंगारों से दहकते लंबे-चौड़े अलाव में कूद पड़ते हैं, एकदम नंगे पांव। हजारों दर्शक देखते रहते हैं और वे भक्त दहकते अंगारों पर दौड़ते हैं, नाचते-थिरकते हैं, चक्कर लगाते हैं। जोश के नशे में गला

अंगारों पर चलनेवाले करीब दरजनभर स्त्री-पुरुष, जिन्हें 'अनास्ते नैराइड्स' कहा जाता है, पहले कई घंटों तक नाचते हैं, तीन तारों की थ्रेस की वीणा की धुनों पर। नाचते-नाचते उन्हें तंद्रा-सी आ जाती है। तब वे अपने हाथों में देवताओं की मूर्तियां उठाकर लाल अंगारों से दहकते लंबे-चौड़े अलाव में कूद पड़ते हैं, एकदम नंगे पांव। हजारों दर्शक देखते रहते हैं और वे भक्त दहकते अंगारों पर दौड़ते नाचते-थिरकते हैं।

फाड़कर चिल्लाते रहते हैं। उस समय तक लगातार जारी रहता है, देवभक्तों का यह अग्नि-नृत्य, जब तक दहकते अंगारे राख के ढेर में तबदील नहीं हो जाते।

अग्नि-परीक्षा का इतिहास

आश्चर्य की बात है कि ये भक्त अपनी अग्नि-परीक्षा से बिलकुल सही-सलामत निकल आते हैं। कहीं छोटा-सा फफोला तक नहीं। है न चमत्कार? बैट्स कालेज के प्रोफेसर लोरिंग डेंटफोर्थ का कहना है कि ये 'अनास्ते नैराइड्स' स्वयं भी ऐसा ही मानते हैं। वे कहते हैं कि संत कांस्तेनताइन की दैवी शक्ति उनकी रक्षा करती है। वे यह भी मानते हैं कि यह शक्ति उन्हें रोगों से अच्छा करती है और उन्हें दूसरों को भी रोगमुक्त करने की क्षमता प्रदान करती है।

शरीर के अग्नि-स्पर्शी कृत्यों में अंगारों पर चलने के अलावा और भी बातें आती हैं। रामकथा में सीता ने अपनी अग्नि-दीक्षा लपटों में प्रवेश करके जहां स्वयं दी थी, वहीं हनुमान की अग्नि-परीक्षा रावण ने उनकी पूंछ में आग लगाकर ली थी और नतीजे में सोने की लंका जलकर खाक हो गयी थी। सुमात्रा में जिन लोगों पर 'हाल' आते हैं, वे अपने मुंह में दहकते कोयले भर लेते हैं। मिस्र और अलजीरिया के कई दरवेश दहकते अंगारे अंगूरों-जैसे निगल जाते हैं। अलजीरिया के फकीर तो अपना शरीर लोहे की दहकती शलाखों से दगवाते भी हैं।

दैवी चमत्कार या मायाजाल

कैसे होता है यह? आश्चर्यजनक कमाल? एक जमाने से तरह-तरह के बयान सामने आते रहे हैं, इस सिलसिले में। कभी-कभी कहा जाता है कि अंगारों पर चलनेवाले मानसिक रूप से तंद्रा की स्थिति में होते हैं, इसलिए दर्द का अहसास उन्हें नहीं होता। लेकिन, कई मामलों में ऐसा नहीं लगता कि शरीर को कोई आघात न पहुंचने का कारण बस यही तंद्रा की स्थिति है। एक मजेदार बात यह भी कही जाती है कि पैर के तलवों पर पसीने की परत बन जाती है जो ताप-रोधक का काम देती है। कुछ लोगों के अनुसार यही काम राख करती है।

कहा जाता है कि फिजी में अंगारों पर चहलकदमी के लिए लावा से बनी जो रंध्रदार रोड़ी काम में आती है, वह ताप की इतनी कमजोर प्रचालक है कि वहां के कबीलों के लिए डर का कोई कारण नहीं।

आग से शरीर के सीधे संपर्क की इन धार्मिक क्रीड़ाओं के बारे में आमतौर पर यही धारणा है कि यह सब धूर्तों का माया-जाल है। और अग्नि-भक्त जब इसे दैवी-चमत्कार कहते हैं तो शंकालुओं की शंका बढ़ जाती है।

सुलगते चमत्कार : पराशक्ति के कमाल

बात चमत्कार की थी, इसलिए विज्ञान बहुत दिन तक उसमें दखलंदाजी से दूर रहा। लेकिन कब तक?

चमत्कार का रहस्य खोजने में लगे वैज्ञानिकों में अग्रगण्य हैं पश्चिमी जर-मनी के विख्यात अणुभौतिकीविद् बयालीस वर्षीय फ्रेडबर्ट कारगर। म्यूनिख स्थित प्लाजमा भौतिकी मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट के एक दल में वे १९७४ में फिजी द्वीपों में गये। वहां वितू लेवू द्वीप के आदिवासी आग पर चलते हैं। कारगर ने इस आयो-जन की फिल्म उतारी।

कारगर ने अंगारों पर चलनेवाले बीस आदिवासियों के तलवों पर एक ऐसा रंग पोत दिया, जो बढ़ते तापमान के साथ रंग बदलता जाता है। कारगर की रंगीन फिल्म में ये आदिवासी चार सेकंड दहकते अंगारों पर चले और सात सेकंड उन पर खड़े रहे। कारगर ने अपने रंग का थोड़ा-सा घोल अंगारों पर डाला। उन पर ६०० डि. फैरनहाइट का रंग आया। लेकिन, न आदिवासियों के तलवे झुलसे और न उन्हें १५० डि. फैरनहाइट से ज्यादा ताप महसूस हुआ। अंगारों पर राख की परत भी नहीं आयी थी कि कुछ तो बचाव हो सके। कारगर ने एक आदिवासी के तलुए से थोड़ी-सी पपड़ी निकालकर अंगारों पर डाली तो वह जलकर कोयला बन गयी।

श्रद्धा की विजय

क्या इतने पवित्र हैं अग्नि-भक्तों के चरण कि आग उनके लिए ठंडी हो जाती है? कारगर का कहना है कि बहुत-सी बातें हो सकती हैं। कोई न कोई अवरोधक

जरतुश्त जिसका विश्वास है कि पवित्र अग्नि पुण्यात्मा के लिए गरम दूध है और पापी के लिए दहकता लावा

शक्ति जरूर काम करती है और इस प्रक्रिया में अग्नि-भक्त के शरीर का भार कम हो जाता है। स्वयं अग्नि-भक्त महसूस करते हैं कि कोई शक्ति उन्हें ऊपर उठाये है। कैसे होता है यह सब! आज तक के भौतिक शास्त्र में कोई समाधान नहीं।

लेकिन इस चमत्कार का रहस्य समझने की क्षमता मनोविज्ञान में है। नृवंश मनोविज्ञान संस्था की पत्रिका 'इथोज' के ग्रीष्म १९८२ अंक में इस सिल-सिले में स्टीवन कैने का शोधपत्र बताता है कि कैसे होता है यह चमत्कार।

स्टीवन कैने ने अपने शोधपत्र में बताया कि यह पदार्थ पर दिमाग के हावी हो जाने का मामला है। कैने मानते हैं ये अग्नि-भक्त विनाशक और आग्नेय प्रक्रि-याओं पर श्रद्धा की विजय के परिचायक हैं। १९७२ से १९७६ तक कैने लगातार इन अग्नि-भक्तों का अध्ययन करते रहे।

ये लोग उन गिरजाघरों में यीशू के साक्षी थे, जिनमें सांप पकड़ना, बोलियां बोलना और भविष्यवाणी करना भगवान की उपस्थिति का प्रमाण माना जाता है।

सम्मोहन

कैने कहते हैं कि शोर और उत्तेजना से भरे इस धार्मिक कृत्य में अग्नि-भक्त हाथों में मशालें लेकर उसकी लौ अपनी हथेलियों, तलुओं और चेहरे से छुलाते हैं, लेकिन उन्हें कोई लकलीफ नहीं होती। वे लोग कहते हैं कि पाक रूह उनकी रक्षा करती है। कृत्य के समय ये लोग तंद्रा-जैसी स्थिति में होते हैं। ऐसी अनुभूति-हीन स्थिति कि गोली का भी पता न चले।

कैने ने अपने प्रयोग में देखा कि सम्मोहन की अवस्था में व्यक्ति को आग के संसर्ग से जलन महसूस नहीं होती। जब दूसरे के द्वारा किया गया सम्मोहन इतना असरकारी हो सकता है तो अग्नि-भक्त का अपना सम्मोहन तो और भी रंग दिखा सकता है। लेकिन शरीर के कोशों को विनाश से रोकने की केंद्रीय स्नायु प्रणाली की क्षमता सीमित है। किसी अग्नि-भक्त ने अब तक अपने शरीर को एक बार में लगातार दस-पंद्रह सेंकंड से अधिक आग के संपर्क में नहीं रखा। यही शरीर के सहने की सीमा है।

जरूरत तैयारी की

अमरीकी सरजन जी. एम. फेइन ने सातवें दशक में आविष्कारक दार्शनिक आर. बर्कमिस्टर के साथ दक्षिण समुद्र के बोरा-बोरा द्वीप में अंगारों पर चलने का आयोजन देखा। वहां फेइन भी अग्नि-भक्त के साथ अग्नि-कुंड में आगे बढ़े। 'सैटरडे रिव्यू' में उन्होंने लिखा है कि पैरों के ऊपर तेज किंतु सही जा सकने-वाली गरमी महसूस हुई और पैर में ठंड लगी। मैं सधे कदमों से बढ़ता गया नीचे देखता हुआ। अंगारे सैंडपेपर-जैसे लग रहे थे और पैरों में झुनझुनी थी, दिमाग सुन्न पड़ गया था। मैं बाहर निकला तो लगा कि सोते से जाग उठा।

खोज जारी है

कारगर अब पता लगा रहे हैं कि कि ऐसा क्यों होता है? कमाल कभी कारगर होता है, कभी नाकाम। अब वे अत्यंत संवेदनशील उपकरण लेकर फिजी जाना चाहते हैं। अग्नि-भक्तों के तलुए में सूक्ष्म इलेक्ट्रानिक उपकरण लगाकर वे पता लगाएंगे कि तलुओं और अंगारों का तापमान किस तरह बदलता है और क्या शरीर के भार में भी कमी होती है? ●

कुलीन वंश में जन्म लेना निस्संदेह अच्छा है, किंतु उसमें शान तो पूर्वजों की ही है।
—प्ल्युटार्क

★

शास्त्र पुराण सुनाने की चीज हैं, और तंत्र हाथों-हाथ करने की चीज है।
—परमहंस रामकृष्ण देव

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

——संपादक

१. ९९,९९९+९,९९९+९९९+९९ कितने के बराबर होता है?— क. १२,०४४, ख. १३,०३२, ग. ११,-१९९, घ. १,११,०९६।

२. हमारे सौरमंडल का कौन-सा ग्रह, अन्य ग्रहों के विपरीत, अपनी धुरी पर घड़ी की सुई की दिशा में (क्लाक-वाइज) घूमता है?

क. मंगल, ख. बुध, ग. बृहस्पति, घ. शुक्र।

३. नक्शे में १ अक्षांश में अनुमानतः कितना फासला माना जाता है?—

क. ६० कि. मी., ख. १११ कि. मी., ग., १८० कि. मी., घ. ३६० कि. मी.

४. ताप्ती नदी का उद्गम कहां है?

५. भारत का प्रथम बहु-उद्देश्यीय कृत्रिम उपग्रह 'इनसैट-१ ए' मुख्यतया ४ प्रयोजनों के लिए छोड़ा गया है। इनमें तीन हैं—दूर-संचार, दूरदर्शन तथा रेडियो-प्रसारण। चौथा क्या है?

६. निम्नलिखित क्या और कहां हैं—क. जॉड्रेल बैंक, ख. फ्लीट स्ट्रीट, ग. वॉल स्ट्रीट, घ. ह्वाइट हाउस?

७. दुनिया में चीते किस देश में सबसे अधिक मौजूद हैं?

८. शुंग राजवंश की (१८४-७२ ई. पू.) की नींव किसने रखी थी?

९. किसी उपग्रह में पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगानेवाली प्रथम महिला कौन हैं?

१०. खाद्य-पदार्थों को डिब्बाबंद करने की प्रक्रिया किसने ईजाद की थी?

११. विगत जुलाई में हुए ग्रैंड प्रिक्स टेनिस टूर्नामेंट में पुरुष-एकल का विजेता कौन है?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

कहानी

मात्र एक

● कुसुम अंसल

सुधा को विदा देते, मैं घर के गेट तक आ गयी थी—कुछ देर तक रुककर वहां भी हम बातें करते रहे और, तब फिर सुधा चली गयी। मैं मुड़ने को थी कि निर्मल को मैंने बहुत तेजी से अपनी ओर आते देखा। उसकी चाल में भागने-जैसी कुछ तीव्रता थी। मेरे मन में अनेक भाव उठने लगे, डर, उत्सुकता, सब कुछ एक साथ एक-एक करके—'कोई बीमार है क्या?' 'कोई अशुभ सूचना है क्या'—निर्मल ने मुझे कंधे से पकड़ा और लगभग घसीटती हुई भीतर ले गयी—

"क्या कर रही थीं दीदी—इससे कैसे दोस्ती हुई तुम्हारी! सड़क पर खुले आम, इतनी सस्ती औरत से गप्पें लगा रही हो, किसी ने देख लिया तो?"

"तो क्या—कैसी बातें कर रही है निर्मल, कौन-सी सदी की? 'सुधा इज ए वैरी फाइन पर्सन', उसकी व्यक्तिगत शालीनता तो मुझे बहुत भाती है—मैं मानती हूं, वह अपने जीवन में कुछ गलत चली है—पर उससे क्या सुधा का व्यक्तित्व आहत हुआ है? मुझे लगता है, सुधा तेरी और सब सहेलियों से अधिक समझदार, संवेदनशील और गंभीर है। हर पल जैसे वास्तविकता उसे एक सोच देती है—और उसे वह ठीक से पकड़ती है।"

"बस-बस रहने दो, उसकी तरफदारी, वह कुछ भी कहे, सती सावित्री नहीं हो सकती, उसके बच्चे हमारे बच्चों की बराबरी नहीं कर सकते, रखैल के बच्चे अच्छे घरों में नहीं ब्याहे जा सकते—मिसेज सेठ तो कह रही थीं कि सुंदर नगर के परिवारों में से तो कोई भी वहां नहीं जाएगा—कोई भी।"

"नहीं निर्मल, यह तो उसकी स्थिति का सही मूल्यांकन नहीं है, विधवा हो जाने के बाद, जब देवर-जेठ सहारा नहीं बने,

एक मकान

तो कोई तो एक हलका-सा संबल, जो उसे मलहोत्रा से मिला, सुधा आज तक क्या उसे किसी सती सावित्री की निष्ठा से कम निभा रही है ?"

निर्मल मेरी दी हुई हर दलील का उत्तर नाराज स्वर में दे रही थी, सिक्के के रुख को उलटकर ही देखने की जिद पकड़े बैठी थी। शायद इसलिए भी कि 'सैर-मंडल' की उसकी सारी सखियां सुधा से नाराज थीं, और सुधा की बेटी की सगाई में आये हुए निमंत्रण को बड़ी निर्ममता से, भारी इल्जाम लगाकर लौटाये दे रही थीं।

असम के 'टी-गार्डन' की नौ साल की लंबी नौकरी के बाद दिल्ली लौटने पर सबसे प्रसन्नता यही थी कि बहुत साल बाद अपने सगे-संबंधियों के निकट रहने को मिलेगा। सुंदर नगर का अच्छा खासा घर, वह भी निर्मल के घर के पास, एक सुखद आश्चर्य-जैसा ही था। पर इतने दिनों के अंतराल में दिल्ली के तौर-तरीके बदले हुए लग रहे थे। इतने कि, कभी मुझे लगता था, मैं कहीं बहुत दूर छुटी रह गयी हूं, और पूरा संसार आगे निकल गया है। मैंने असम में एक अकेलापन जिया था, वहां एक खास तरह की जीवन-व्यवस्था थी, प्रायः सभी के बच्चे होस्टलों में थे, असम में समय के पंख नहीं थे, उसमें तेजी नहीं थी, रफ्तार नहीं थी।

दिल्ली आने पर निर्मल मेरी गाइड-सी बनी, मेरे साथ घर को ठीक-ठाक करने में मदद करने के साथ-साथ, मेरा आधुनिकीकरण कर रही थी।

निर्मल के साथ कॉलोनी के और सब परिवारों से भी परिचय हो रहा था, शाम को प्रायः सभी सहेलियां सैर को निकलतीं। चिड़ियाघर की दीवार से सटी सड़क के किनारे सभी गप्पे मारतीं,

हंसती दो-तीन चक्कर लगा लेतीं। सैर की सैर और पूरे दिन के समाचारों का अच्छा-खासा आलोचनात्मक वर्णन भी हो जाता। सैर-मंडल' में खूब नये-नये वार्तालाप चिंगारियों से जलते-बुझते। उभरकर आती एक उथली मानसिकता, जहां भाव-संवेदना बिल्कुल नहीं थी, किसी भी विषय के प्रति कोई संवेदना नहीं थी, जीवन को वे मात्र सैर-सपाटा समझे बैठी थीं, एक उड़ताऊ नजर से संसार को तौलती हुई।

मार्केट के दूसरी ओर सुधा का घर था। उस पहली बार मैं सुदीप के साथ वहां गयी थी। सुदीप, मलहोत्रा से, अपने व्याख्यान के सिलसिले में एक दो बार मिले थे, "मलहोत्रा का घर है, बेहद खूबसूरत, बड़े ही स्टाइल से रहता है।"

सच, उसका घर बहुत आकर्षक था, न बहुत बड़ा न बहुत छोटा। सुंदर नगर के पुराने से लगनेवाले मकानों से अलग हटकर आधुनिक स्टाइल से बना हुआ, सद्गृहस्थ की सुरुचि का परिचय देता हुआ। भीतर घुसते ही गोल लॉबी थी, जिसमें घुमावदार-सी सीढ़ियां उस विस्तर में कुंडलनी-सी जमाये नीचे के घर को ऊपर के परिवेश से जोड़ रही थी। ड्राइंग-रूम की सज्जा असाधारण और बेशकीमती होने पर भी, कलात्मक थी, पैसे के प्रदर्शन-जैसा नहीं था, जैसा आम मुझे सुंदर नगर की महिलाओं के घर देखने से लगता था। धीरे-धीरे मेहमानों की छोटी-सी भीड़ बन गयी थी, जिसमें कोई भी डूब सकता था, पर मलहोत्रा का व्यक्तित्व तैरकर उसके ऊपर आ रहा था, सुधा अपने किरदार में सबसे व्यवस्थित, स्मार्ट और खूबसूरत अलग-थलग नजर आ रही थी। राधिका, साधारण-सी अनाकर्षक और मात्र चिपकी हुई, पर घर के नौकरों को सबसे अधिक आदेश देती—पता नहीं, कौन-सी भूमिका निभा रही थी!

कुछ महिलाएं सिनेमा की बातें कर रही थीं, और मैं सोच रही थी, ये सिनेमा जो मुझे पहले बहुत पसंद थे—अब अच्छे नहीं लगते! मेरी तंद्रा को झकझोरता एक वार्तालाप उठा था, उस दिन के समाचार-पत्र में एक खबर छपी थी, एक उन्नीस साल की युवती ने अपने कमरे की छत से लटककर आत्महत्या कर ली—समाचार यही बता रहा था कि परीक्षा के भूत से डरकर उसने अपने प्राण त्याग दिये थे—सभी अपना-अपना मत दे रहे

थे, सुधा का उत्तर बड़ा अलग-सा लगा था। मुझे, वह कह रही थी—

"हम लोग भ्रम पाल लेते हैं, अपने जीवन को बड़े बादल की तरह पकड़कर रख लेना चाहते हैं, वह परिवर्तित होता है, हर पल आकार भी बदलता है। यदि वह परिवर्तन या आकार हमारे सोचे नहीं होते हैं, यदि वह बदलकर कुछ कुरूपता अख्तियार करता है तो हम संभावनाओं से डर जाते हैं। और डर भी तो फिर से यातनाओं के विचारों से जोड़ता है—हम सोचने लगते हैं, अब क्या होगा? और अपने-मन मुताबिक उस 'क्या' को हम इतना बड़ा कर लेते हैं कि वह हमें निगलने लगता है। सोच का, विचारों का अंतर है, वही चाहे तो ऊपर उठा दे, चाहे तो डराकर मौत की घाटियों में उतार दे।"

सुधा रुकी नहीं थी, उसका चेहरा भावप्रदीप्त था, वह कहे जा रही थी—

"सबसे बड़ा पाप क्या है! अपने को किसी एक खास दायरे में संकुचित कर लेना, और फिर उसी की पृष्ठभूमि में सोचना। जीवन को दायरों में नहीं बांधना चाहिए, उसे तो सचाई से खोल-कर जीना चाहिए, यह बात दूसरी है कि आप उसे अपने सोचे हुए किसी भी तरीके से जीना चाहें। हर मनुष्य तभी तक अपना जीवन जीने के लिए स्वतंत्र है, जब तक उसकी जीवन-पद्धति किसी को कोई कष्ट नहीं पहुंचाती। हमारा कष्ट यही है कि हम दूसरे के जीवन को अपने विचारों से तौलते हैं— प्रत्येक चरित्र को वैसे ही स्थापित करते हैं, जैसा हम चाहते हैं, उनसे व्यवहार भी तो वैसा करते हैं, जैसा हमारा मन विचार कर पाता है। उस लड़की के साथ भी यही हुआ होगा, संकुचित विचारों ने धर दबोचा होगा, और तभी उसके विचारों का डर उसे मौत के दरवाजे तक पहुंचा आया।"

सुधा खाने के बाद मेरे पास ही आ बैठी थी। हम लोग इधर-उधर की बातें नहीं कर पा रहे थे, अतः अपनी भीतरी चारदिवारी तक ही रुके थे, मैं ही बता रही थी—

"सुधाजी—मैं तो बहुत साल असम में रही हूं, अकेली ही निर्जन वनों की चुप्पी के बीच, इतने अधिक सन्नाटे को जिया है मैंने कि यहां दिल्ली में कोलाहल कभी-कभी मुझे घबराहट से भर देता है। मुझे लगता है, मैं अपने उसी सैनीटोरियम में ठीक थी, प्रकृति जैसे मेरा इलाज कर रही थी।"

सुधा मेरी ओर झुक आयी थी, कह रही थी—"थोड़े दिन तो यह कोलाहल सताएगा तुम्हें, फिर आदत-सी हो जाएगी, और फिर से तुम अपने उसी अकेलेपन में

लौट लोगी, सारा शोर बैक ग्राउंड म्युजिक की तरह बजता रहेगा और तुम्हारे मन में उसका कोई असर नहीं होगा।"

"तो क्या फिर से मुझे वही अकेलापन, खालीपन, वही चुप्पी झेलनी पड़ेगी, जो मैं असम में सहती रही थी?"

"तो क्या तुम अपने अकेलेपन से भागना चाहती हो? नहीं वीना— उससे भागने की सोचना भी नहीं। मैं तो कहती हूं, भाग्यवान हो तुम, प्रकृति के उस सूनेपन के बीच जो अकेलापन, जो मौन तुम जीती रही थीं, वही तो है जो, मनुष्य को अपने भीतर के 'स्व' के निकट ले जाता है। और वह, जो अपने अकेलेपन से रिश्ता जोड़ लेते हैं—अपने आप से सान्निध्य जोड़ लेते हैं—अपने को छू पाते हैं, उनके लिए इस ऊपरी, दिखावे के संसार में बचता भी क्या है? न कोई, कष्ट न कोई प्रसन्नता! तुम अपने अकेलेपन को आत्मसात कर लो वीना! तुम्हें अपने में ही नयापन दिखने लगेगा।"

मैं सोच रही थी, सुधा से पूछ लूं कि, क्या तुमने अपने अकेलेपन को देखा है? पर उसकी सोच मेरे भीतर के बिखरेपन को संगठित कर रही थी।

रात आगे बढ़ रही थी, कुछ मेहमान जा भी रहे थे, पर मेरा अभी उठने का मन नहीं था। कुल मिलाकर सात-आठ अतिथि ही बचे थे। बातों-बातों में एकाएक 'शब्द जोड़ने' का खेल शुरू हुआ, पहले एक व्यक्ति कोई शब्द बोलता है, उसके अर्थ से जुड़ता हुआ, अर्थवान दूसरा शब्द साथ बैठे व्यक्ति पर रुकेगा, उसे भी फिर उसी शब्द से मिलता-जुलता नया शब्द बोलना पड़ेगा, जहां भी कोई चूकेगा, बाजी समाप्त हो जाएगी। मलहोत्रा ने ही आरंभ किया— 'भारत', दूसरे ने कहा—"जनसंख्या", 'बेकारी', 'अराजकता', 'भुखमरी', 'परिवार-नियोजन' ऐसे ही चलता रहा। पर, एक बात जो अखरती थी वह यह, कि हर बार किसी के भी हारने पर मलहोत्रा क्रम तोड़कर खेल नयी तरह से खुद ही आरंभ करता था। सभी ने उसे गृहस्वामी का हक जानकर छोड़ दिया था। मलहोत्रा ने ही आरंभ किया 'पुरुष', 'स्त्री', एक ने कहा 'पत्नी', 'रखैल'। बाजी इस बार सुधा पर रुकी। उसने टालने-जैसा कहा 'बच्चे'। राधिका ने पता नहीं क्यों खूब गहरी निगाहों से उसे देखते हुए कहा, 'इल्लीगल' (अवैध)। इसके बाद कोई कुछ नहीं बोला। वातावरण अचानक भारी होने लगा। सुधा के चेहरे पर जाने कैसा भाव था? वैसा कुछ, जैसा कि एक मछली पानी के बाहर आने पर भी पानी के भीतर होने का एहसास साधे रहे। तभी एक आवाज आयी।

"राधिका, तुम जीतीं भाई। अब तुम ही गेम शुरू करो।" मलहोत्रा बोला था।

"नहीं खेल तो मैं ही शुरू करूंगा—" फिर उसी व्यक्ति ने धीरे-से कहा।

"कुछ भी करो राधिका, गलत हो या सही, मलहोत्रा तुम्हें जीतने नहीं देगा।"

फिर सब उखड़ने लगा था, सभी उठ रहे थे, धन्यवाद देते हुए हम भी बाहर आ गये थे। चलते-चलते सुधा से प्यार से लिपटी थी। उसे देखकर मुझे लगा था, उससे मेरी पट जाएगी। निर्मल की सहेलियों से पायी मानसिक थकान, लग रहा था, जैसे उसे पा लेने से अपने आप उतर रही है। मेरे भीतर बन रहे उस नये छाया-चित्र को तोड़ते हुए सुदीप ने कहा—

"तो, वीना, कैसी लगी तुम्हें आज की यह शाम, यह पार्टी ?"

"बहुत अच्छी सुदीप, खासतौर पर उसकी पत्नी सुधा, बहुत अच्छी लगी। बड़ी देर तक वह मुझसे बातें करती रही, बड़ी गंभीर और समझदार है सुधा—क्या तुमने उससे बात की सुदीप ?"

"तो तुम भी बहक गयीं वीना? और सच क्या है, तुम्हें पता नहीं चला न, सुधा मलहोत्रा की पत्नी नहीं, उसकी मिस्ट्रैस है, रखैल—और मलहोत्रा की पत्नी है राधिका। यह घर वैसे तो सुधा का है, पर मलहोत्रा उसे अपना घर कहकर पार्टियां देता है। कहते हैं, सुधा बहुत जल्दी विधवा हो गयी थी। मां-बाप के और भी बहुत-से बच्चे थे। उन्होंने सुधा का खास ख्याल नहीं किया। ससुराल में देवर-जेठ, उसके हिस्से की सारी जायदाद और बिजनेस के शेयर हड़पकर उस पर मनमानी करते रहे। मलहोत्रा उसके परिवार का ही मित्र था। उसने सुधा की हर तरह से सहायता की, उसका हिस्सा उसे दिलवाया, और तब से ही बिजनैस बहुत बढ़ने लगा, मलहोत्रा अपना काम छोड़कर सुधा की ही फैक्टरी संभालने लगा और अब एक की जगह तीन फैक्टरियां हैं—धन जैसे बरस रहा है। वह शादी-शुदा था—राधिका को उसने छोड़ा नहीं, पर सुधा, परिस्थितियों के हाथों, आज इस स्थिति में आ गयी है।"

मैं चौंकी ही नहीं, हतप्रभ भी थी, जैसे आकाश से धरती पर गिरी हूं, मुझसे फिर कुछ नहीं कहा गया। और मेरी इस चुप्पी को ठीक से जानते हुए सुदीप भी कुछ नहीं बोले थे। मुझे मेरे विचारों के साथ उन्होंने अकेला छोड़ दिया था। सारी बात जान लेने पर भी मेरे मन में सुधा की जगह वैसी ही बनी रही। शायद इसलिए कि मुझे लगा था वह बाहर कम, भीतर के संसार में अधिक रहती है और उन सबसे भिन्न है, जो दूसरों की जिंदगी में झांकते और गलतियां निकालते हैं। निर्मल की सहेलियों का नजरिया इंपोर्टेड वस्तुओं, इधर-उधर के स्कैंडल और चुगलखोरी के सिवा हो भी क्या सकता था? आज तक के सामाजिक या पारिवारिक जीवन ने उन्हें सिखाया ही यही था, और दिया था एक पलायनवादी दृष्टिकोण, जो अपने को, अपने से दूर ले जाता है। अधिकतर हम अपने भीतर न देखकर, बाहर देखते हैं। दूर की वस्तुओं को, सपने में भी नहीं सोचते कि मन के भीतर एक संसार छूटा रह गया है। वही संसार,

जिसे खोजना ही इस जीवन का उद्देश्य था। उस भीतर के संसार को जी लेने से बाहर के संसार के सुख-दुख शरीर पर कोई असर नहीं डालते। सुधा ने उसे पा लिया था—अवश्य, तभी उसमें एक आकर्षण था, अद्भुत, जो मुझे बांध रहा था। यह बात दूसरी है कि मैं उससे बहुत दिनों तक मिल नहीं पायी थी, ग्रौर आज जब वह आयी थी, अपनी बेटी की सगाई का निमंत्रण लेकर, तो मेरे मंत्रमुग्ध परिवेश में न जाने कहां से 'एंट्री' लेकर निर्मल, मेरा सपनीला तिलस्म तोड़ती मुझे डांट रही थी। बड़े-बड़े वाक्य गढ़कर बना रही थी कि 'सैर-मंडल' की बहनों का फैसला है कि सुधा के घर जाना वर्जित है।

घर 'पेंट' कराने के लिए एक दो आदमी लेकर तभी सुदीप भी भीतर आ गये थे। गरमागरम बहस सुनकर वह पेंटरों को बाहर के बरामदे में रंग करने की बात सुझाकर जल्दी से भीतर आये ग्रौर समझदार श्रोता की तरह निर्मल का भाषण सुनने लगे। सुधा के विरोध में उठी दलीलें, सुदीप बड़े दार्शनिक बने सुन रहे थे, मेरा मौन भांपते हुए कह रहे थे—

"हां ठीक ही तो कहती है निर्मल, हम वहां नहीं जायेंगे वीना, आखिर समाज में रहना है कल को अपनी बेटी की शादी भी तो करनी है—"

ग्रौर मैं सोच रही थी, बहन, पति, दलीलें, भावनाविहीन हो जाने पर क्या हो जाते हैं—क्या? मात्र एक मकान। 'सुंदर नगर' कालोनी का एक पुराना-सा एक मकान, जिसकी पुरानी पपड़ी पड़ी उखड़ती दीवारों पर चमकदार रंग की पुताई कर दी गयी है, पर वह भीतर से वैसा ही रह गया है, खोखला, घुन ग्रौर दीमक का खाया हुआ जर्जर।

—एन.-१४८, पंचशील पार्क,
नयी दिल्ली-१७

चरणदासजी अपने समय के चमत्कारिक संत थे। ऐसी मान्यता है कि उन्हें शुकदेव मुनि ने योग की दीक्षा दी थी। कहते हैं, चरणदासजी ने नारिदरशाह के हमले के छह मास पूर्व ही उसकी भविष्यवाणी कर दी थी।

जब नादिरशाह ने उनके चमत्कारों के बारे में सुना तो उसने उन्हें बुलवाया और चमत्कार दिखाने के लिए कहा। इस पर चरणदासजी ने नादिरशाह के ताज की ओर देखा तो वह गिर पड़ा। क्रोधित होकर नादिरशाह ने उन्हें कारागार में डलवा दिया। अगले दिन जब कारागार खोला गया तो वह खाली पाया गया। बाद में पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि चरणदासजी अपने स्थान पर शिष्यों को उपदेश दे रहे हैं।

यह भी कहा जाता है कि चरणदासजी एक ही समय कई स्थानों पर अपने शिष्यों को दिखायी देते थे।

जिंदगी की जीत में यकीन कर

• सुरेश कुमार

अपने अधिकारों की मांग के लिए किसी मिल या कारखाने के गेट पर एकत्रित हुए मजदूर जब अपने मालिक को हड़ताल की चेतावनी देते हैं, तो अक्सर एक नारा सुनायी देता है—

'हर जोर जुल्म की टक्कर में
हड़ताल हमारा नारा है'

उक्त पंक्ति में कभी-कभी हड़ताल के स्थान पर जरूरत के मुताबिक कोई दूसरा शब्द 'फिट' कर दिया जाता है। गैर सत्ताधारी राजनीतिक दलों द्वारा सरकार के विरोध में निकाले जानेवाले जुलूसों या छात्र-आंदोलनों के वक्त भी यह नारा सुनायी दे जाता है। लेकिन कितने लोग जानते हैं कि यह नारा कहां से आया? दरअसल यह एक समूहगान है, जिसे स्व. शैलेन्द्र ने १९४९ में लिखा था। शैलेन्द्र को, जिनका पूरा नाम शंकर शैलेन्द्र था, लोग एक प्रसिद्ध फिल्म गीतकार के रूप में जानते हैं।

'इप्टा' से फिल्मों में

फिल्मों में आने से पहले शैलेन्द्र रेलवे वर्कशॉप में काम करते थे तथा 'इप्टा' (भारतीय जन नाट्य संघ) के सक्रिय सदस्य थे। 'इप्टा' के लिए वे गीत भी लिखा करते थे। सन् ४६ में इनका एक गीत **'मोरी बगिया में आग लगाय गयो रे गोरा परदेसी'** सुनकर राज कपूर ने इनसे भेंट की और कहा—"मैं पृथ्वीराज कपूर का बेटा हूं। 'आग' नाम से एक फिल्म बना रहा हूं। आप मेरी फिल्म में गीत लिखेंगे?"

शैलेन्द्र ने बड़ी विनम्रता के साथ हाथ जोड़ते हुए कहा, "क्षमा करें, मैं फिल्मों के लिए नहीं लिखता।"

राज कपूर ने उनके स्पष्ट नकारात्मक उत्तर को सुनकर भी उनसे कहा—

शैलेन्द्र अपने गीतों में, अपनी कविताओं में आज भी जिंदा हैं। वे जनसाधारण कवि के थे। और, जिसे जनसाधारण ने अपना बना लिया हो, उसे मौत कैसे मिटा सकती है?

"यदि फिल्मों के बारे में आपकी धारणा कभी बदले तो मुझे याद कर लीजिएगा।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद शैलेन्द्र को कुछ रुपयों की आवश्यकता हुई और वे सीधे राज कपूर के दफ्तर जा पहुंचे। राज कपूर से उन्होंने सीधे शब्दों में कहा, "मुझे पांच सौ रुपयों की सख्त जरूरत है, बदले में जो काम आप मुझसे चाहें करा लीजिएगा।"

राज कपूर ने शैलेन्द्र का खुले दिल से स्वागत किया। इस प्रकार शैलेन्द्र ने फिल्म 'बरसात' के लिए दो गीत लिखे। बाद में उन्होंने रेलवे की नौकरी भी छोड़ दी और से फिल्मों में गीत लिखने लगे।

काव्य-यात्रा की शुरुआत

शैलेन्द्र की काव्य-यात्रा १९३८ से शुरू हुई। उनकी प्रारंभिक कविताएं प्रेमपरक हैं, जिनमें किशोर मन की भावुकता, प्रिय के मिलन-विछोह से उत्पन्न सुख और पीड़ा की अनुभूतियों का चित्रण मिलता है।

जिस दिन तुमने बांहों में भर
तन का ताप मिटाया
प्राण कर दिये पुण्य
सफल कर दी मिट्टी की काया
उस दिन ही, प्रिय जनम-जनम की
साथ हो चुकी पूरी

● ● ●

लाख परायों से परिचय है
मेल-मुहब्बत का अभिनय है
जिनके बिन सारा जग सूना
मन के वे मेहमान कहां हैं?

सन् ४६ तक आते-आते कवि के स्वर में परिवर्तन दिखायी देने लगता है, जिसका संकेत निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है--

मुझको जीवन के शत संघर्षों
में ही रत रहकर लड़ना है

यहीं से कवि की विचारधारा में मार्क्सवाद के प्रति झुकाव स्पष्ट नजर आने लगता है——

जिनके सीने में सुइयों-सा
गड़ता है दर्द विवशता का
जिनके घर में घुस बैठा है
अंधा राक्षस परवशता का
जो दुनियाभर का बोझ उठाये
रंजो गम से लड़ते हैं
जो अपनी राहें आप बना
पर्वत की चोटी चढ़ते हैं
कवि उनका है, कविता उनकी

उनके इस काल के प्रायः सभी गीतों में पूंजीवाद के प्रति घृणा का भाव तथा शोषण व अत्याचार के विरुद्ध आक्रोश की भावना व्यक्त हुई है। वे संपूर्ण मानव जाति को दो वर्गों में बंटा हुआ देखते हैं। एक शोषक वर्ग और दूसरा शोषित वर्ग। वे शोषित वर्ग को एक होने के लिए आमंत्रित करते हुए कहते हैं—

झूठे सपनों के छल से निकल
चलती सड़कों पर आ
अपनों से न रह यों दूर-दूर
आ कदम से कदम मिला

उनके सभी गीतों का स्वर आशावादी है। विषम से विषम परिस्थितियों

में भी उनका कवि संघर्ष की प्रेरणा देता है—

तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर
ये गम के और चार दिन
सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएंगे गुजर गुजर गये हजार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी
बहार की नजर

शैलेन्द्र काफी संवेदनशील और यथार्थवादी कवि थे। कार्ल मार्क्स में उनकी बड़ी गहरी आस्था थी।

लेकिन उनका यह संघर्ष देश में प्रेम और शांति की स्थापना के लिए था। वे रक्तरंजित क्रांति के हामी कभी नहीं रहे—

क्रांति के लिए, उठे कदम
क्रांति के लिए जली मशाल
भूख के विरुद्ध भात के लिए
रात के विरुद्ध प्रात के लिए
मेहनती गरीब जाति के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली कसम

इसी गीत में वे आगे कहते हैं—

शांति के लिए उठे कदम
शांति के लिए जली मशाल

शैलेन्द्र बड़े दृढ़निश्चयी और स्वाभिमानी स्वभाव के थे। वे मूलतः एक संवेदन शील कलाकार थे, व्यावसायिकता की पकड़ उनके पास नहीं थी। जब उन्होंने सुप्रसिद्ध कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'मारे गये गुलफाम' पर 'तीसरी कसम' नाम से फिल्म बनाने का फैसला किया तब उनके करीबी दोस्तों ने उन्हें राय दी कि वे फिल्म-निर्माण के चक्कर में न पड़ें। पर वे नहीं माने। जब राज कपूर ने व्यावसायिक दृष्टिकोण से मूल कहानी में कुछ परिवर्तन करने की बात कही, तो वे उन पर भी बिगड़ गये और बोले, "फिल्म मेरी है, मैं जैसी इसे चाहूंगा, वैसी बनेगी।"

फिल्म प्रदर्शित हुई और घाटे में गयी। शैलेन्द्र के ऊपर लाखों रुपये का कर्ज था। फिल्म के 'फ्लॉप' होने के गम के कारण अचानक तबीयत खराब हुई। अस्पताल में दाखिल करा दिये गये और दूसरे दिन १४ दिसम्बर, १९६६ की दोपहर को तीन बजे वे प्राण त्यागकर संसार से चले गये।

शैलेन्द्र अपने गीतों में, अपनी कविताओं में आज भी जिंदा हैं। वे जनसाधारण कवि के थे। और, जिसे जनसाधारण ने अपना बना लिया हो, उसे मौत कैसे मिटा सकती है? उन्हीं के शब्दों में—

हजार भेस धर के मौत आयी तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी,
चली गयी वो हारकर
नयी सुबह के संग सदा मिली
तुझे नयी उमर

—रंजनी प्रकाशन, जी. टी. रोड,
अलीगढ़-२०

अपने विचारों को अपना कारावास न बनाओ।

—शेक्सपीयर

क्या मृतात्माओं से संदेश मिलते हैं?

• कीर्तिस्वरूप रावत

मृतात्माओं से संदेश-प्राप्ति के दावे उतने ही प्राचीन हैं, जितनी कि मानवीय संस्कृति। विश्व के लगभग सभी देशों में ऐसे प्रकरण प्राप्त होते हैं, जिनमें कि किसी व्यक्ति के माध्यम से मृतात्माओं द्वारा संदेश भेजने का उल्लेख मिलता है।

उन व्यक्तियों को, जिनके द्वारा संदेशों की प्राप्ति की जाती है, सामान्यतः 'माध्यम' कहा जाता है। इन व्यक्तियों को दो लोकों—इहलोक व परलोक—की कड़ी के रूप में देखा जाता है। ये व्यक्ति सामान्यतः तंद्रा-अवस्था में, कभी कभी—सामान्य जाग्रत अवस्था में भी, स्वचालित रूप से (ऑटोमैटिकली) जानबूझकर चेतन रूप से नहीं, जैसा कि सामान्य अभिव्यक्ति में हुआ करता है—किसी मृतात्मा के संदेशों को अभिव्यक्ति देने का दावा करते हैं। किन्हीं औषधियों के सेवन, नृत्यों अथवा मंत्रोच्चारण आदि की सहायता से अथवा सीधे ही तंद्रा-अवस्था में आ जाने-वाले माध्यमों का उल्लेख लगभग सभी प्राचीन संस्कृतियों में मिलता है। तंद्रा-अवस्था में आकर माध्यम बननेवाले, जिन्हें सामान्यतः 'शमन' कहा जाता है, मध्य एशिया की संस्कृति का एक अभिन्न-अंग हुआ करते थे और साइबेरिया में भी अभी कुछ समय पूर्व तक ऐसा ही था। लैंग ने अपनी एक पुस्तक में उन्नीसवीं शताब्दी में न्यूजीलैंड में एक माउरी सियांस (अर्थात मृतात्माओं संबंधी 'बैठक') का विवरण दिया है। 'माध्यम' पहले एक अंधेरे कोने में बैठ गया व फिर उसने अपने आपको तंद्रा-अवस्था में पहुंचा दिया। तत्पश्चात समूह के सरदार की आवाज में बोलते हुए उसने सरदार की खोयी हुई वस्तु का पता बता दिया। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरी अमरीका के इंडियंस में प्रचलित इसी प्रकार की बैठकों के विवरण फ्रांसीसी मिशनरियों ने भी प्रस्तुत किये हैं। नृतत्व-शास्त्री इरविंग हलोवैल ने इनके अभी भी प्रचलित होने का उल्लेख किया है। भारत की अनेक आदिम जनजातियों में भी आज तक इस तरह के क्रिया-कलाप प्रचलित हैं।

आदिम संस्कृतियों में ही नहीं, यूनान मिस्र व चीन आदि देशों की प्राचीन संस्कृतियों से भी इस प्रकार के उद्धरण

प्राप्त हुए हैं। अमरीका, ब्रिटेन व यूरोप के आधुनिक समाजों में 'प्रेतेत्विक' बैठकों का बहुत बड़ी संख्या में प्रचलन आज भी है।

चुनौती और उत्तर

अमरीका की एक पत्रिका 'साइंस एंड इनवेंशन' ने अपने जून १९२३ के अंक में यह घोषणा प्रकाशित की कि मृतात्माओं संबंधी विभिन्न प्रकार के सभी साक्ष्य मात्र धोखाधड़ी अथवा आत्म-प्रवंचना ही होते हैं और यदि कोई भी व्यक्ति कोई ऐसा साक्ष्य प्रस्तुत कर देगा, जिसे कि सामान्य वैज्ञानिक विधि से दोहराया न जा सकता हो तो उसे १,००० डालर का पुरस्कार दिया जाएगा। धीरे-धीरे पुरस्कार की राशि ३१,००० डालर तक पहुंच गयी। पत्रिका की ओर से नियुक्त जांच समिति के अध्यक्ष जोसेफ डनिजर थे।

एक बार डनिजर को उनके एक मित्र एक माध्यम की बैठक में ले गये। वे मित्र माध्यम की मृतात्माओं से संदेश-प्राप्ति की क्षमता स्वयं जांच कर चुके थे और स्पष्टतः अत्यंत प्रभावित होकर डनिजर को अपने साथ ले गये थे।

माध्यम के यहां कुछ देर स्वागत-कक्ष में प्रतीक्षा के बाद उन्हें एक हाल में ले जाया गया। सभी अपने-अपने स्थान पर

अपनी हत्या की गवाही देती एक प्रेतात्मा—काल्पनिक चित्र
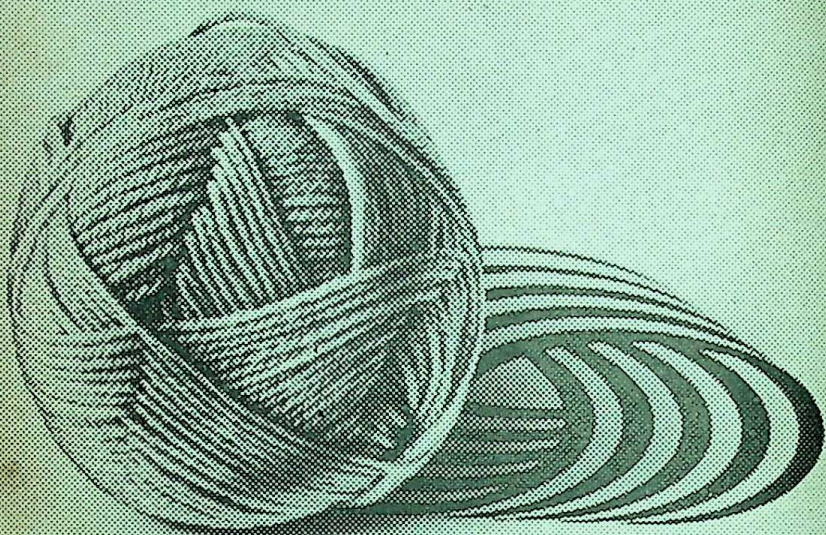
बैठ गये। माध्यम श्रीमती थेल्मा मेसन के प्रवेश पर सभी को एक प्रार्थना-पुस्तिका वितरित की गयी और कुछ देर तक सभी प्रार्थनाएं गाते रहे। सभी से पुनः पुस्तिका एकत्रित करके उन्हें माध्यम के समक्ष रख दिया गया। कुछ देर तक हाल में पूर्ण सन्नाटा रहा। श्रीमती मेसन की आंखें ऊपर की ओर मानो—अदृश्य-शून्य में कहीं टिक गयीं। प्रतीक्षा-आतुर सभी आगंतुक जड़वत बैठे रहे। कुछ देर बाद धीमे-धीमे स्वरों में माध्यम बोली, "अब आप लोग कोई भी प्रश्न पूछ सकते हैं—मैं तो मृतात्माओं से आप लोगों तक संदेश पहुंचाने हेतु केवल एक माध्यम हूं।"

पुनः कुछ देर सन्नाटा छाया रहा। फिर माध्यम ने उपस्थित एक महिला से कहा, "तुम्हें एक मृतात्मा कह रही है कि तुम्हें अब अपनी शल्य-चिकित्सा करा ही लेनी चाहिए। एपेंडिक्स काफी बढ़ गयी है।"

एक अन्य व्यक्ति से कहा गया, "तुम अपनी चांदी बेचने के लिए विचार कर रहे हो, लेकिन तुम्हारे चाचा की मृतात्मा कह रही है, अभी चांदी बेचना मूर्खता होगी। तुम्हें अपने गिरवी रखे मकान की चिंता है, उसे भूल जाओ कुछ दिन—भाव ऊंचे जाएंगे तभी बेचना ठीक होगा।"

कुछ देर पश्चात डनिजर की पुकार हुई। उनकी बहन की मृतात्मा से उन्हें भी अनेक संदेश प्राप्त हुए। उपरोक्त महिला को उनके चिकित्सक ने भी ऑपरेशन करवाने की सलाह दी थी और उपस्थित सज्जन वास्तव में रेहन रखे हुए अपने मकान को पुनः प्राप्त हेतु चांदी बेचने की योजना बना रहे थे।

श्रीमती, एस्टीली रोबर्ट्स, एक विश्व-विख्यात, ब्रिटिश माध्यम हुई हैं। उन्होंने अनेक बड़े-बड़े व्यक्तियों को, जिनमें कई राजाध्यक्ष भी सम्मिलित हैं, कथित मृतात्माओं से प्राप्त संदेश दिये हैं। इंगलैंड की संसद के चैंबर्स तक में आपकी 'बैठकें' आयोजित की गयी है। एल्बर्ट हॉल, क्वींस हाल व लंदन के टाउन हॉल आदि में तो अनेक बार उनके कार्यक्रम हुए हैं। एक बार एक व्यक्तिगत बैठक में श्रीमती एस्टीली राबर्ट्स ने एक युवती से कहा, "तुम्हारे पिताजी मुझे एक नाम बता रहे हैं—फ्लोरेंस ! क्या तुम जानती हो वह कौन है ?"

"हां" युवती ने उत्तर दिया, "मेरी मां का नाम फ्लोरेंस है।"

"संदेश यह है : 'फ्लोरेंस के हृदय में कोई गड़बड़ है। शीघ्र ही वह उभर आएगी और वे बहुत बीमार रहेंगी। लेकिन वे मरेंगी नहीं'।"

युवती जब लौटी तो कुछ दुखी भी थी, कुछ आश्वस्त भी। मृत पिता का संदेश उसके कानों में गूंज रहा था। कुछ समय बाद उसने अपनी बहन को—बिना संदेश का कोई जिक्र किये—श्रीमती राबर्ट्स के पास भेजा। श्रीमती राबर्ट्स को भी यह ज्ञात नहीं था कि यह दूसरी युवती पहली वाली की बहन ही है। फिर भी

इस
जो
वास्त
पीड़ि
बहने
की
वाल
क्या
न्यास

ने

पत्न

कई
के
किय
डिके
रण
ने प्र
की
न्यास
रहे
उपन
कोई
भाग
नाम
में य
अशि
बड़े

दिस

इस युवती को भी वही संदेश प्राप्त हुआ, जो उसकी बहन को दिया गया था। माता वास्तव में कुछ समय तक हृदय रोग से पीड़ित रहीं, फिर स्वस्थ हो गयीं। दो बहनें, एक माता और एक ही संदेश पिता की कथित मृतात्मा से !

चार्ल्स डिकेंस की मृतात्मा और अधूरी कृति

क्या चार्ल्स डिकेंस की मृतात्मा ने उपन्यास के अंतिम अंश पूरे कराये ?

कुछ लोगों की मान्यता यह भी है कई बार लेखकों ने मृत्यु के बाद माध्यमों के द्वारा अपनी अधूरी रचनाओं को पूरी किया है। प्रसिद्ध पाश्चात्य लेखक चार्ल्स डिकेंस से संबंधित इसी तरह के एक प्रकरण का विवरण एक शोधकर्ता फ्लार्नी— ने प्रस्तुत किया है। जिस समय डिकेंस की मृत्यु हुई थी, उस समय वे एक उपन्यास 'टु मिस्ट्री ऑव एड़विनड्रूड' लिख रहे थे। अकस्मात हुई मृत्यु के कारण उपन्यास उस समय अधूरा ही रह गया था। कोई चार वर्ष बाद इस उपन्यास का शेष भाग भी प्रकाशित हुआ। टी. पी. जैम्स नामक एक माध्यम के स्वचालित लेखन में यह अंश पाया गया। जैम्स मात्र एक अशिक्षित मेकेनिक थे। इस अंश में शैली बड़े आश्चर्यजनक रूप से डिकेंस की शैली से मिलती थी। कुछ अंश निस्संदेह सामान्य से थे किंतु अन्य प्रभावशाली रूप से डिकेंस के लेखन के अनुरूप पाये गये। ('स्पिरिच्युलिज्म एंड साइकोलॉजी' लंदन १९१०)

इसी तरह १९१३ के लगभग अमरीका की एक सामान्य-सी पढ़ी लिखी महिला श्रीमती कुर्रान के माध्यम से अपने आपको 'पेशेंस वर्थ' घोषित करते हुए एक कथित मृतात्मा ने अपने अनेक उपन्यास, कविताएं व अन्य प्रकार की साहित्यिक रचनाओं का सृजन किया। जब उनका प्रकाशन हुआ, तब अनेक साहित्यकारों ने इन रचनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की। इन रचनाओं में १७ वीं शताब्दी के इंगलैंड के परिवेश को सविस्तार चित्रित किया गया था, जब कि हजारों मील दूर रहनेवाली श्रीमती कुर्रान ने अपने निवास-स्थान से कभी अधिक दूर तक यात्रा नहीं की थी। विख्यात अन्वेषक डब्ल्यू. एफ. प्रिंस की एक पूरी पुस्तक इसी प्रकरण पर आधारित है। ('द केस ऑव पेशेंस वर्थ' न्यूयॉर्क, १९४५)

क्या विश्वविख्यात उपन्यासकार चार्ल्स डिकेंस की मृतात्मा ने अपने अधूरे उपन्यास के अंतिम अंश पूरे कराये थे ?

क्या जादूगरों के बादशाह हैरी हुडनी ने मृत्यु के बाद अपनी पत्नी को कोई संदेश दिया था ?

हुडनी की योजना

जादूगरों के बादशाह, विश्वविख्यात तमाशेबाज हैरी हुडनी (असली नाम एहरिक बीज) ने अपने जीवन में हजारों डॉलर

मात्र इसलिए खर्च कर दिये कि वह मृतात्माओं से संदेश की प्राप्ति का दावा करनेवाले सभी माध्यमों की पोल खोल सके। लेकिन गहरे कहीं उसके स्वयं के अंतरमन में यह धारणा भी विद्यमान थी कि मृतात्माओं से संदेश-प्राप्ति संभव है।

मृत्यु शैया पर पड़े हुडनी ने अपनी पत्नी को वह संदेश बताया, जो कि वह मृत्यु के उस पार से उसे पुनः किसी प्रामाणिक माध्यम द्वारा प्रेषित करेगा। स्टेज पर जब दोनों पति-पत्नी तमाशे दिखाया करते थे, तब वे एक सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया करते थे। हुडनी ने कहा, वह इसी सांकेतिक भाषा के द्वारा अपना संदेश भेजेगा।

नवंबर १९२८ की एक शाम को ६.२३ पर अमरीका के एक विख्यात माध्यम आर्थर पोर्ड की तंद्रावस्था में उनके नियंत्रक 'फ्लेचर ने घोषणा की,' एक आदमी जो कि अपने आपको हैरी हुडनी बता रहा है, लेकिन जिसका असली नाम एंहरिक वीज है, यहां उपस्थित है और अपनी पत्नी बीट्रिस हुडनी को दस शब्दों की सांकेतिक भाषा का वह संदेश देना चाहता है। यह संकेत हुडनी के संकेत का पूरक होगा और दोनों संकेत मिलकर वह संदेश स्पष्ट करेंगे, जो कि हुडनी और बैस के बीच तय हुआ था।

श्रीमती बैस हुडनी तक यह संदेश पहुंचाया गया। वह बहुत प्रभावित हुई। वह अपने मित्रों के साथ फोर्ड की बैठक में सम्मिलित होने उसके यहां गयी।

बैठक के अंत में हुडनी की ओर से श्रीमती बैस को कहा गया : "कह दो सारे संसार को कि हुडनी अभी भी जिंदा है और इसे वह हजारों बार और सिद्ध करेगा।" घोषणा पत्र जारी किया कि आर्थर पोर्ट के माध्यम से प्राप्त संदेश वही है, जो कि उनके पति ने उन्हें प्रेषित करने का वायदा किया था।

उपरोक्त प्रकरणों से सामान्यतः ऐसा लगना स्वाभाविक ही है कि इनसे मृतात्मा से संदेश-प्राप्ति का तथ्य सिद्ध हो जाता है। किंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। हुडनी से प्राप्त संदेश कदाचित सबसे प्रबल साक्ष्य माना जा सकता था।

लेकिन सत्य यह है कि कुछ समय बाद श्रीमती बैस हुडनी ने अपनी इस घोषणा के विरुद्ध स्वयं ही एक अन्य वक्तव्य जारी करके सारी बात को अप्रमाणिक घोषित कर दिया।

ऐसा सुझाया गया कि संभवतः किसी नर्स ने हुडनी व उनकी पत्नी में हुए वार्त्तालाप को सुन लिया हो।

उपरोक्त वर्णित अन्य प्रकरणों की व्याख्या के लिए भी मृतात्मा से संदेश प्राप्ति को स्वीकारना आवश्यक नहीं है।

—निदेशक, परामनोविज्ञान शोध विभाग
रामभवन, पाली बाजार, ब्यावर

अच्छी आदतों से शक्ति की बचत होती है। अवगुणों से शक्ति की भयंकर बरबादी होती है। —जेम्स एलन

पदार्थ
होने
वैभव
विद्य
झांकी
जबकि
रिक्ष
छोटा
परिच
भी य
उपह
व्यक्ति
पीढ़ि
देखा
होता
इस
दिस

तंत्र-शक्ति का उद्गम और प्रयोग

● डॉ. प्रणव पंड्या

पदार्थ जगत की सबसे छोटी इकाई परमाणु है । देखने में नगण्य किंतु पदार्थ जगत का एक अविच्छिन्न अवयव होने के कारण उसमें प्रकारांतर से प्रकृति वैभव की समस्त क्षमताएं सूक्ष्म रूप में विद्यमान हैं। उसकी एक अकिंचन-सी झांकी अणु-विस्फोट के समय मिलती है, जबकि उसकी तीन चौथाई क्षमता अंतरिक्ष में विलीन हो जाती है और बहुत ही छोटा भाग अपनी विनाश-लीला का परिचय दे पाता है। शुक्राणु के संबंध में भी यही बात है। उसका प्रत्यक्ष कलेवर ही उपहासास्पद है, किंतु जब उसे एक समूचे व्यक्तित्त्व के रूप में पूर्वजों की अनेकानेक पीढ़ियों की विशेषताएं संजोये चलते-फिरते देखा जाता है, तब उसका वैभव प्रकट होता है। परमाणु-शुक्राणु की तरह ही इस समूचे ब्रह्मांड का एक नगण्य-सा प्रतीक प्रतिनिधि है—आत्माणु-जिसे 'पिंड' कहते हैं। उसकी परतें कुरेदी जा सकें तो परमाणु-शुक्राणु-जीवाणु का विश्लेषण करनेवाले उस अजस्र संपदा को देखकर चमत्कृत होते दिखायी देते हैं। उससे भी असंख्यों गुना हतप्रभ वे हो सकते हैं, जो आत्माणु के नन्हें से कलेवर में ब्रह्म और प्रकृति का समूचा वैभव समाविष्ट देखते हैं।

काया प्रकृति क्षेत्र का प्रतिनिधित्त्व करती है, और चेतना परब्रह्म का ! दोनों का जैसा अद्भुत सुयोग संयोग इस मानवी सत्ता में हुआ है, उसे देखते हुए अयमात्मा ब्रह्म-तत्त्वमासि वाले प्रतिपादनों में कोई अत्युक्ति नहीं दीखती। प्रश्न सुषुप्ति और जागृति का है। अपने भीतर व बाहर न जाने कितना वैभव बिखरा पड़ा है। पर वह है सभी सुषुप्त स्थिति में। उसे कुरेदने, उभारने और करतलगत करने की प्रक्रिया पुरुषार्थ कही जाती है। भौतिक क्षेत्र की समस्त दृश्यमान उपलब्धियां मानवी पराक्रम का ही प्रतिफल है।

आग, भाप, तेल, बिजली आदि माध्यमों से प्रकट होनेवाली ऊर्जा, विश्व ब्रह्मांड में तो अनादि काल से थी, पर उससे लाखों वर्षों तक मनुष्य अनजाना रहा। अगणित प्राणियों के लिए तो वे अभी भी अविज्ञात ही हैं। मात्र मनुष्य ने ही गहराई में प्रवेश करके उन्हें खोजा जगाया और अपनाया है। जो करतलगत
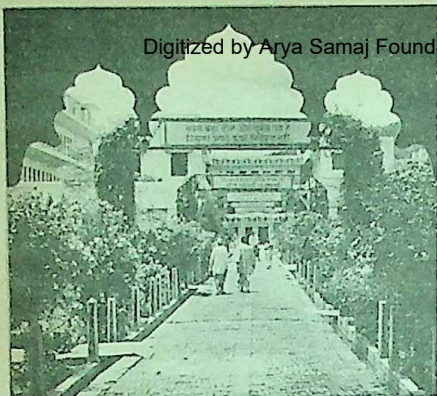
शांति कुंज, हरिद्वार : जहां विज्ञान का आध्यत्म से समन्वय हो रहा है

हुआ है, उसकी तुलना में जो अविज्ञात है, वह असंख्यों गुना है। ठीक यही बात चेतना-क्षेत्र के संबंध में भी लागू होती है।

स्थूल मस्तिष्क की मात्र सात प्रतिशत की ही अभी जानकारी मिली है। शेष तो अभी भी अविज्ञात की परतों में दबा पड़ा है। आत्माणु की समूची सत्ता के संबंध में भी यही बात है। निर्वाह-प्रयोजन में उसकी क्षमता का एक नगण्य-सा अंश प्रयुक्त होता है।

भौतिक क्षेत्र में श्रम, मनोयोग एवं साधनों की सहायता से विविध विधि पराक्रम किये जाते हैं। आत्मिक क्षेत्र में यही कार्य देवत्त्व से घनिष्ठता जोड़नेवाली उपासना-जीवन को पवित्र प्रखर बनानेवाली साधना और उदार आत्मीयता से भरी सेवा-आराधना के त्रिविधि उपचार अपनाकर संपन्न किया जाता है। इस प्रयास को समग्र व्यक्तित्त्व का परिष्कार-प्रखरीकरण भी कह सकते हैं।

देव और दैत्य में अंतर

भौतिक क्षेत्र के सफल लोग संपन्न एवं समर्थ कहे जाते हैं। आत्मिक क्षेत्र के विभूतिवान अपनी कार्य पद्धति के अनुसार देव और दैत्य कहे जाते हैं। देव वे जो भागीरथ, दधीचि, व्यास, चरक आदि की तरह अपनी क्षमताओं को सत्प्रयोजनों में प्रयुक्त करें। दैत्य वे जो हिरण्य कश्यप, वृत्रासुर, रावण, कंस आदि की तरह उसका दुरुपयोग करें। दोनों ही वर्ग के लोग साधना-उपासना-तपस्या द्वारा अपने आत्माणु की प्रसुप्त सामर्थ्य को उभारते और स्वर्ण मणियों की खदान खोदनेवालों की तरह सुसंपन्न बनते हैं।

सत्प्रवृत्तियों के कल्प-वृक्ष

प्रसुप्त को जागृत, मलिन को स्वच्छ बनाने की प्रक्रिया का नाम साधना है। यह दोनों ही स्तर की होती हैं। ऋषि-तत्त्व प्राप्त करने के लिए संचित कुसंस्कारों की—पशु प्रवृत्तियों की जड़ें उखाड़नी पड़ती हैं और झाड़-खंखाड़ों के स्थान पर सुसंस्कारी सत्प्रवृत्तियों के कल्प-वृक्ष लगाने पड़ते हैं। अनपढ़ को सुगढ़ बनाने की प्रक्रिया का नाम साधना है। अपने आपे को कुसंस्कारों से मुक्त और सत्प्रवृत्तियों से मुक्त किया जा सके तो समझना चाहिए कि कायाकल्प हुआ और नर-पशु को नर-नारायण बनने का सुयोग मिला। साधना, देवी देवताओं की मित्र अपनी स्वयं की प्रसुप्त एवं अन-गढ़ क्षमताओं की, की जाती है और यदि

वे सजग प्रखर हो उठें तो सचमुच देवी-देवताओं की तरह वरदान देती हैं।

तंत्र एक प्रक्रिया

प्रसंग तंत्र-विज्ञान एवं साधना का है। यह शरीरगत प्राणविद्युत को अधिकाधिक प्रखर-प्रचंड बनाने की-भौतिक प्रयोजनों में प्रयुक्त किये जाने की प्रक्रिया है। उसके लिए शब्द-शक्ति को प्रमुख ऊर्जा की तरह प्रयुक्त किया जाता है। रॉबॉट (यंत्रमानव) को संचालित करने में प्रायः इसी शक्ति का प्रमुख रूप से योग किया जाता रहा है। भौतिक क्षेत्र में जिस प्रकार भाप, तेल, बिजली आदि की ऊर्जा से विभिन्न यंत्र उपकरण चलाये जाते हैं, उसी प्रकार अध्यात्म-विज्ञान, काम उपकरण की रहस्यमयी शक्तियों को गतिशील करने एवं प्राणी, पदार्थ तथा वातावरण को प्रभावित करने के लिए शब्द-शक्ति का उपयोग करता है। चेतना-क्षेत्र के पदार्थ को प्रभावित करनेवाली यह प्रधान शक्ति है। उसे किस प्रकार परिष्कृत एवं प्रयुक्त किया जाए, यही है मंत्र-विद्या का, इस रहस्य-मयी विद्या का मर्म। इसमें उच्चारण-वाली बैखरी वाणी का कम और श्रवणा-तीत ध्वनियों का उपार्जन एवं प्रयोग अधिक होता है। मौन मानसिक जप की रहस्यमयी विधि में इसी का प्रयोग होता है। सभी जानते हैं कि श्रवणातीत ध्वनियां, 'लेसर' में परिवर्तित होकर किस प्रकार प्रकृति की सर्वोपरि शक्तियों में गिनी जाती है। मंत्र-विद्या में इन्हीं ध्वनि-तरंगों का योग होता है।

शरीर यों बना तो रासायनिक पदार्थों से है, पर उसके अंतराल में प्राणविद्युत ही प्रत्येक छोटे-बड़े अंग अवयव को सामर्थ्य प्रदान करती और गति देती देखी जा सकती है। इस विद्युत को काम संचालन से आगे बढ़ाने और अधिक बड़े प्रयोजनों में प्रयुक्त करने के लिए एक विशेष विद्या है, जिसे तप-तितिक्षा कहते हैं। कापालिक श्मशान सेवन और अघोरी विधि-व्यवस्था अपना कर अपनी मानवी विद्युत का स्वरूप विलक्षण स्तर का बना लेते हैं। वे जीवित भूत-पलीत की तरह रहते, सोचते और ढलते हैं। उनके मंत्र-संकल्प भी वैसे ही स्तर के हो जाते हैं।

संक्षेप में शब्द-मंत्र को शक्ति का कारतूस और साधना-उपचार से उदभूत विशिष्ट प्राण ऊर्जा के समन्वय को बंदूक कहा जा सकता है। दोनों का मिलन जब भी होता है, लक्ष्य-बेध की स्थिति बनती है। एकाकी शब्दोच्चार की मंत्र-विद्या तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक कि साधक ने अपने व्यक्तितत्त्व को तदनुरूप बनानेवाले निर्धारित साधना-उपचारों का सर्वतोभावेन अभ्यासन किया हो।

तंत्र-विद्या का दुरुपयोग

पिछले दिनों तंत्र-विद्या का प्रयोग प्रायः दूसरों को हानि पहुंचाने, प्रतिशोध लेने, आतंकित करने में होता रहा है। इस माध्यम से दबाव डालकर ब्रह्मराक्षस

प्रकृति के लोग अपना स्वार्थ साधन भी करते रहते हैं। इससे इस विद्या की बदनामी भी बहुत हुई है। फिर भी ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए कि उसकी परिधि सीमित, डरावनी या अनैतिक है दुरुपयोग से तो अमृत भी विष हो सकता है। वस्तुतः यह कायगत 'प्राण-ऊर्जा' का ऐसा उन्नयन है, जिससे प्राणी, पदार्थ एवं वातावरण को प्रभावित-परिवर्तित किया जा सकता है। प्रयोक्ता अपने आपको असाधारण क्षमताओं से भरा-पूरा अनुभव कर सकता है। बिजली की ऊर्जा से अनेकानेक प्रयोजन भौतिक क्षेत्र में सिद्ध किये जाते हैं। इसी प्रकार तंत्र-माध्यम से विकसित की गयी कुंडलिनी क्षेत्र की प्राण ऊर्जा के भी उच्चस्तरीय प्रयोग हो सकते हैं। विद्युत ऊर्जा और प्राण प्रखरता में मौलिक अंतर यह है कि बिजली की पहुंच मात्र पदार्थ को ही प्रभावित करने तक है जबकि तंत्र विद्या द्वारा उपार्जित प्राण प्रखरता से प्राणियों की मनुष्य की विचारणा एवं भावना को भी प्रभावित परिवर्तित किया जा सकता है। इतना ही नहीं, यह परावर्तित भी होती है उसके अंश अनुदान से दूसरों को सामान्य से असामान्य बनाया जा सकता है कठिनाईयों से उबारने, प्रसुप्त शक्तियों को जगाने एवं अतिरिक्त प्रखरता प्रदान करने में तंत्रोपार्जित प्राण प्रखरता का उदारत पूर्वक सत्प्रयोजनों एवं सज्जनों के लि वरदान की तरह प्रयोग हो सकना : संभव है।

तंत्र अभ्यास के लिए व्यक्ति विशेष व्यक्तित्व की अंतरंग स्थिति, दि आवश्यकता एवं संभावना को भी प खना पड़ता है। अन्यथा अनुपयु अभ्यास उल्टा भी पड़ सकता है औ अत्युत्साही साधक मर्यादा से बाहर जा अपने लिए संकट भी खड़े कर सकता है यही कारण है कि पात्रता की परीक्षा ए तदनुकूल विद्या को अपनाने के लि किसी अनुभवी की सहायता लेने व प्रतिबंध लगया गया है और उसे इ हेतु गोपनीय रखा गया है।

—निदेशक : ब्रह्म वर्चस् शोध संस्था
शांतिकुंज, हरिद्वा

मित्र पर भूत चढ़ बैठा

मेरा एक मित्र है। उसे एकाएक कुछ ऐसा हुआ कि वह बैठे-बैठे बेहोश हो जात तभी दूसरे शहर में एक मित्र को उसकी हालात का पता चला। वह आ वह तंत्र-मंत्र विद्या जानता था, अतः उसने उसका उपचार किया। उसने भूत को बुलाया, भूत ने उस पर आने का कारण बताया, 'मैं इस मकान में हूं, मुझे मुक्त कराओ।' भूत के बताने के अनुसार मकान में एक जगह पर खुद करायी गयी। खुदाई में आदमी और जानवरों की खोपड़ियां, कीले, कौड़ियां अ अनेक तंत्र-मंत्र संबंधी चीजें निकलीं। तब से मुझे भी भूत-प्रेतों के अस्तित्व पर विश्व करने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

—विनोद मेहरा, फिल्म अभिने

उसकी मजबूरी

● अमरेन्द्र मिश्र

दफ्तर में महंगाई भत्ता लेनेवाले कर्मचारियों की लंबी कतार में खड़ा वह, आखिरी नंबर पर था। उसे थोड़ी राहत मिली थी कि चलो कुछ पैसे हाथ लगेंगे। उसने यह भी सोचा था कि कैशियर की टेबुल से उसका वास्ता सिर्फ महीने की आखिरी तारीख को ही होता है लेकिन ...

कर्मचारी अपने-अपने हिस्से में आये महंगाई-भत्ते की रकम लेकर, खुशी-खुशी अपनी सीटों की ओर बढ़ रहे थे। वह कतार धीरे-धीरे आगे सरक रही थी और ज्यों-ज्यों उसकी बारी निकट आती थी, वह प्रसन्न हुआ जाता था, लेकिन उन कर्मचारियों की ओर वह हिकारतभरी नजरों से देख रहा था, जो कि तनख्वाह के अलावा 'ओवरटाइम' भी लेते थे और हर महीने उनके ओवरटाइम की भी एक निश्चित रकम तय होती थी। वह मन-ही-मन गुस्सा भी करता था कि साले फोकट का 'ओवरटाइम' खाते हैं। काम-वाम कुछ
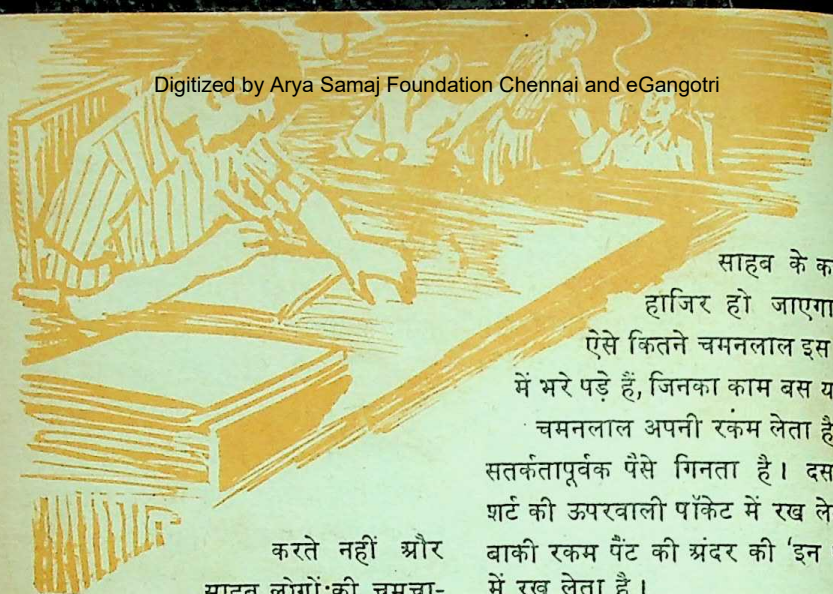
करते नहीं और साहब लोगों की चमचा-गिरी करके कुत्ते की तरह उनके प्रति अपनी वफादारी निभाते हैं। चमनलाल उसी के दफ्तर में क्लर्क है। वह रोज अपने साहब के पास दिन में पांच बार बैठकर उनकी तारीफ के पुल बांधना शुरू करता है। कभी अगर उसका साहब अच्छे कपड़े पहनकर दफ्तर आएगा, तब कपड़ों की प्रशंसा करना शुरू कर देगा। कभी उसका साहब किसी डिनर या लंच पर जाएगा, तब वहां भी तारीफ करेगा, कि उसके साहब की तरह कोई भी वहां जम नहीं रहा था। आदि-आदि। और चमन-लाल अपनी इसी वफादारी का वजीफा पाता है—हर माह, दो सौ रुपये।

दिनभर अपने साहब की प्रशंसा करेगा और शाम चार बजे ओवरटाइम का फार्म अपने हाथ में दबाये, दांत निपोड़े वह साहब के कमरे में हाजिर हो जाएगा और ऐसे कितने चमनलाल इस दफ्तर में भरे पड़े हैं, जिनका काम बस यही है। चमनलाल अपनी रकम लेता है। खूब सतर्कतापूर्वक पैसे गिनता है। दस रुपये शर्ट की ऊपरवाली पॉकेट में रख लेता है बाकी रकम पैंट की अंदर की 'इन पॉकेट' में रख लेता है।

●●

अब वह अपनी सीट पर बैठा-बैठा फाइलों को उलट-पलट रहा है। घड़ी की ओर देखता है—चार बजे हैं। एक घंटा और। लेकिन आज उसका 'मूड' ठीक नहीं। यह जो रकम आज मिली है, वह कैसे खर्च करेगा, यह सोच रहा है। महीने की तनख्वाह तो स्वाति की बूंद की तरह है—चार सौ रुपये। किस प्रकार चार पांच दिनों में ही धीरे-धीरे सरक जाते हैं। उसे पता भी नहीं चलता। मकान का 'रेट', दूधवाले का बकाया, पेपरवाले का बिल, मिंटू की स्कूल-फीस के भुगतान के बाद जो रकम उसकी मुट्ठी में होती है, वह बाकी जरूरतों के लिए बहुत कम होती है। उसी रकम में राशन-पानी के साथ-साथ उसकी बस का पास, छोटे-मोटे कपड़े, मां के लिए दवा और घर आ

मेहमानों की खातिरदारी . . . सब कुछ उसी रकम से चलानी होती है।

आज जब वह घर से दफ्तर के लिए चला था, तब पत्नी ने जरूरी सामान की एक लिस्ट उसके हाथों में थमा दी थी। 'लंच-बॉक्स' थैले में रखते हुए, उसने तुड़ी-मुड़ी परची को जरा गौर से देखा था और पत्नी की ओर मुखातिब होकर पूछा था, "क्या है इसमें ?"

"रास्ते में देख लीजिएगा।" कहकर वह रसोई में घुस गयी थी।

उस लिस्ट में जितनी चीजें थीं, उनमें किसी प्रकार की कोई कटौती असंभव थी। प्रायः उसमें उन्हीं जरूरतमंद चीजों का नाम लिखा था जिसकी खरीद-फरोख्त के बारे में वह अकसर टाल जाता था। महीने की आखिरी तारीख पर लटका देता था। सनु के लिए निप्पल, दूध की बोतल, मां के लिए दवाई, चप्पल, मिंटू के लिए बनियान, वगैरह-वगैरह। सबसे अंत में लिखा था—पैंट पीस। पत्नी ने वह उसके लिए लिखा था, क्योंकि वह प्रायः अपने लिए कोई कपड़ा बनवाने के विषय में टाल जाया करता था।

●●

उसे बड़ा अजीब-सा लगा। पत्नी ने सोचा होगा कि महंगाई-भत्ता कोई बहुत बड़ा भत्ता होगा, जिसमें खासी रकम मिलती होगी, तभी तो उसने लंबी लिस्ट बनायी है। पत्नी के भोलेपन पर वह धीरे से मुसकरा दिया। लेकिन तभी उसे अचानक याद आया कि कुछ लोगों के उधार बाकी हैं, जिनका भुगतान शीघ्र करने में ही अपनी भलाई है, तब फिर जाने उसकी मुसकराहट कहां गायब हो गयी और वह भारी कदमों से धीरे-धीरे दफ्तर की सीढ़ियां उतरने लगा।

. . . नहीं, सिर्फ चमनलाल ही नहीं, ऐसे और भी हैं जो कुछ नहीं करते। दिनभर यहां-वहां, इस कमरे में, उस कमरे में बैठे गप्प मारा करते हैं और वे सब उससे अधिक फायदे में रहते हैं। शुरू में जब उसने 'ज्वाइन' किया था, तब उसके दफ्तर के बड़े-बुजुर्ग या ऐसे लोग, जिनका वर्षों से 'प्रमोशन' नहीं हुआ था, वे उसके काम को देखकर यही कहा करते कि उसे भी अन्य लोगों की तरह काम नहीं करना चाहिए, तब वह उन लोगों को अपना 'शत्रु' माना करता। हंसकर टाल जाता और दिन के १० बजे से ५ बजे तक वह टेबुल पर झुका रहता। उसके कमरे के अन्य कर्मचारी उस पर हंसा करते। कुछ ताज्जुब भी
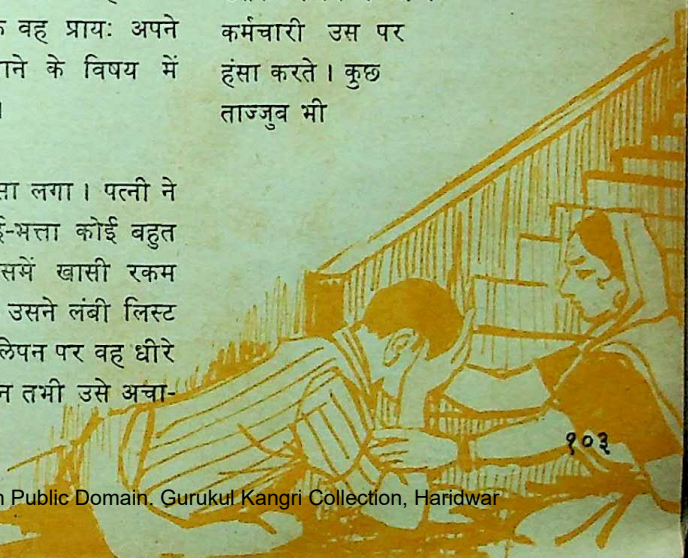
करते कि यह 'नया आदमी' जो आया है, बड़े कमाल का जीव है... ....इतना काम करता है। कुछ उसके प्रति सहानुभूति भी जताते थे। लेकिन वह निर्विकार भाव से यह सब देखभर लेता था।

वह मन लगाकर अपना काम करता था। इससे उसका आफीसर भी खुश रहता था, बल्कि उसके काम के कारण वह खुद को गौरवान्वित महसूस करता था। सिर्फ वर्षभर के अंतराल में ही उसने एक से बढ़कर एक अच्छे कार्य किये— प्रशंसनीय कार्य किये। हालांकि इसके पीछे भी उसका अपना एक स्वार्थ था और वह यह कि शायद उसके काम से खुश होकर उसके उच्चाधिकारी उसका वेतनमान ठीक कर दें, जो कि बहुत थोड़ा है। यानी कि जितना उसका उचित हक है, वह नहीं मिल रहा है...

लेकिन अब पिछले चार वर्षों के दौरान क्या मिला? और उसने अपने पहले ही वर्ष में जो किया, उसके एक से बढ़कर एक अच्छे कार्य के लिए कौन-सी अतिरिक्त राशि उसके वेतन में जोड़ दी गयी कि वह निश्चित हो गया? शर्मा के सेक्शन में ट्रांसफर के बाद उसका ओवर-टाइम भी बंद हो गया, जो कि मिस्टर सत्येन दिया करते थे और अकसर कहा करते थे, "अंगरेजी तथा अन्य भाषाओं की तुलना में तुम्हारा काम ज्यादा बेहतर है, इसलिए जब तक तुम्हारा वेतनमान ठीक नहीं होता या उनकी बराबरी का नहीं हो जाता—तुम्हें ओवरटाइम मिलता रहेगा।" उनकी तरह का शरीफ अफसर अब कहां है कोई? श्री शर्मा को तो रामगोपाल की या महेश की चमचागिरी से ही फुरसत नहीं है। वे काम को महत्त्व नहीं देते। अपने प्रशंसकों को महत्त्व देते हैं। उनके विषय में यह आम चर्चा है कि बी. ए. थर्ड क्लास हैं और जबर्दस्त सिफारिश के बल पर वे इतनी बड़ी पोस्ट पर आये हैं...

●●

अचानक उसे ख्याल आया कि बाजार से कुछ जरूरी चीजें खरीदते हुए घर पहुंचना है। रास्तेभर वह जाने क्या-क्या सोचता रहा। खीजता रहा।

कैसे-कैसे लोग दफ्तरों में भरे पड़े हैं। काम करना तो वे अपने उसूल के खिलाफ मानते हैं। उन्होंने सोच लिया है कि उन्हें काम नहीं करना है। फिर उसे रामगुलाम का एक फारमूला याद हो आया—'पहले ज्वाइन करो। कुछ महीने अफसर की जमकर चमचा-गिरी करो, फिर अफसरों को धीरे-धीरे अपने वश में करो। फिर जी हजूरी करके अपनी तनख्वाह वगैरह ठीक कर-करवा लो और उसके बाद ऐश ही ऐश समझो...'

रामगुलाम तो राम का गुलाम नहीं, अपने साहब का गुलाम है। हर कोई किसी का गुलाम है। यह देश आजाद कहां है? कहां है आजाद? कौन भोग रहा है आजादी? क्या इसे ही आजाद होना कहेंगे कि एक ही दफ्तर में, एक ही सेक्शन

में और एक ही प्रकार का कार्य करने वाले कर्मचारियों के बीच और उसके बीच वेतनमान का अंतर है ? क्या यही आजादी है कि...कि...?? जाने कितने प्रश्न उसके मानस में बवंडर की तरह उठ रहे थे, लेकिन उत्तर कुछ नहीं।

●●

मुहल्ले की कई गलियों को पार करता, वह अब अपने घर जानेवाले रास्ते की ओर मुड़ जाता है। अपनी जींस की पैंट में हाथ डालता है...सिर्फ साठ रुपये। यह महंगाई-भत्ता है। और इस साठ के बदले जाने कितने प्रतिशत महंगाई और बढ़ेगी। वह सोच नहीं पाता कि इन रुपयों से वह क्या खरीदे, क्या नहीं ? या लोगों के उधार चुकाये ? कुछ नहीं सोच पाता। और फिर पत्नी की दी हुई जरूरी चीजों की लिस्ट के अलावा मां के लिए दवा भी बहुत जरूरी है। इतनी जरूरतें हैं और रुपये सिर्फ साठ हैं। उसे कुछ देर के लिए चक्कर-सा आने लगा।

●●

वह घर पहुंचता है। उसकी पत्नी दरवाजे पर प्रतीक्षारत है। उसके दोनों बच्चे भी उसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब वह ऊपर जीने की सीढ़ियां चढ़ने लगता है। चार सीढ़ी चढ़ने के बाद अचानक उसका दिमाग चकरा जाता है और वह मूर्च्छित होकर सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ नीचे गिरता है। उसकी पत्नी तेजी से दौड़ती हुई उसके पास आती है। अचानक नाक से खून बह रहा होता है। तब तक पास-पड़ोस के लोग भी जमा हो जाते हैं और उसे अस्पताल ले चलते हैं। डॉक्टर उसकी चिकित्सा करता है। करीब घंटेभर बाद उसकी चेतना लौट आती है और अपने आस-पास की चीजों को चौकन्ना होकर देखता है। उसे बड़ा ताज्जुब होता है कि वह यहां क्यों है ? वह अपने घर पर क्यों नहीं है ? वह हतप्रभ-सा अपनी पत्नी और दोनों बच्चों को देखता है। डॉक्टर कहता है, "आप चल सकते हैं, तो घर चले जाइए। लेकिन कुछ दिनों तक आपका अधिक बोलना या सोचना मना है।" वह सोचता है—भला इस पर भी किसी का अंकुश चला है कि सोचो मत। बोलो मत। फिर डॉक्टर की ओर मुखातिब होकर

इनके भी क्यां हैं जुदा-जुदा

कहते हैं लोग मौत से बदतर है इंतजार
मेरी तमाम उम्र कटी इंतजार में
—मजाज

क्या देते हम किसी को दुआए-सलामती
अपनी ही जिंदगी का किसे एतबार था!
—सीमाब

किसने भीगी हुई जुल्फों से ये झटका पानी
झूमके आई घटा टूटके बरसा पानी!
—आरजू

कुछ यादगारे-शहरे-सितमगर ही ले चलें
आये हैं इस गली में तो पत्थर ही ले चलें
—नासिरका जमी

कैसे-कैसे गिले याद आये 'खुमार'!
उनके आने से कब्ल, उनके जाने के बाद
—खुमार

किस कदर मुझसे तेरी याद को है हमदर्दी
देखती है मुझे तनहा तो चली आती है
—दाग

कहिए कि अब मैं अपनी हकीकत को क्या करूं
जो सांस ली वो आपकी तस्वीर हो गयी
—मीर

कातिल ने किस सफाई से धोई है आस्तीन
वो जानता नहीं कि लहू बोलता भी है
—सफी

कत्लगाहों की मुझे राह दिखानेवालो
पहले इलजाम है क्या? ये तो बताओ मुझको
—अली अहमद जलीली

पूछता है—"डॉक्टर साहब आपकी फीस कितनी हुई?"

"साठ रुपये!"

वह फिर अपनी जींस की पेंट में हाथ डालता है। साठ रुपये डॉक्टर की हथेली पर रख देता है। फिर वह पत्नी व बच्चों के साथ घर लौट आता है। अब वह एक तरह से निश्चित है कि रास्ते में महंगाई भत्ते की मिली साठ रुपये की राशि के विषय में कुछ सोच नहीं पा रहा था। उसकी पत्नी भी उस परची को भूल गयी है, जिसे उसने उसके दफ्तर जाते वक्त दिया था। वह चाहता है कि पत्नी को बता दे कि महंगाई-भत्ता कोई बहुत बड़ा भत्ता नहीं होता, जिसमें कि बड़ी रकम मिलती हो। उसे साठ रुपये ही मिले थे, जो डॉक्टर ने ले लिये। फिर उसने यह कहना व्यर्थ माना और धीरे-धीरे किचन की तरफ बढ़ने लगा, जहां पत्नी चाय बनाकर उसे बुला रही थी।

—१८।२४।२५, पुराना गोविंदपुरा,
कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

'मेडिटेशन' अर्थात समाधि एक अत्यंत ही दुरूह शारीरिक क्रिया है। वर्षों के अभ्यास और नियंत्रण के परिणाम-स्वरूप ही व्यक्ति अपने मस्तिष्क की शक्तियों को अत्यधिक जाग्रत कर अपनी शारीरिक क्रियाओं को शिथिल करने में कामयाब होता है। यही योग, समाधि या अंतर्ज्ञात मनन (ट्रांसडेंटल मेडिटेशन) की सफलता भी है। सभी अध्यात्म गुरु एक ही उपदेश देते हैं—'अपने अंतर में झांको। तुम्हें अपने सार्थक होने का प्रमाण मिलेगा। स्वयं को पहचानने का अवसर मिलेगा। अपनी आत्मा में झांको और निज की खोज करो।' बस, यही उनका मूलमंत्र है।

ध्यान और जैव-रासायनिक प्रक्रिया

ध्यान, मनन और समाधि की अवस्था में व्यक्ति के मस्तिष्क और शरीर में कई तरह की जैव-रासायनिक प्रक्रियाएं सक्रिय होती हैं, अथवा निष्क्रिय होती हैं। अंतर्ज्ञात मनन के विषय में महर्षि महेश योगी कहते हैं, 'ध्यान को अंतर्मुखी कर इसे विचार के सूक्ष्मतर स्तर तक उस समय तक उतारते चले जाना है, जब तक मन विचार के सूक्ष्मतर अमूर्त रूप से भी परे की स्थिति तक नहीं पहुंच जाता और विचार के स्रोत की खोज नहीं कर लेता। इस प्रकार चेतन मन की शक्तियों का विस्तार होता है। इसके परिणामस्वरूप मनुष्य का संबंध सृजनात्मक बौद्धिकता से

स्वास्थ्य लाभ: ध्यान के लिए

● रणवीर सिंह

ग्रौर अग्रसर होता है ग्रौर ग्रंतिम रूप में यह सृजनात्मक विचार का जनक होता है।'

ग्रंतर्ज्ञात मनन करनेवालों का दावा है कि यह कोई चमत्कार, अलौकिक शक्ति अथवा तंत्र-मंत्र नहीं, अपितु यह तो इन सबसे दूर एक श्रमहीन शारीरिक ग्रौर मानसिक क्रिया है, जो एक साधारण मानव भी करने में सक्षम है। केवल घंटे-भर के दैनिक अभ्यास से मानव प्रसन्न-चित ग्रौर सृजनशील बना रह सकता है।

१९६९ में जब से ग्रंतर्ज्ञात मनन लोकप्रिय हुआ, तब से ही शरीर-विज्ञानी इसकी ग्रोर आकर्षित हुए। अपनी विभिन्न

को पहचान लेता है। ख्याल रहे, इस दौरान आंखें मुंदी रहती हैं, पर मस्तिष्क की आंखें तो जाग्रत रहती हैं। मनन के दौरान मनन में लीन शरीर को समयहीनता, रिक्तता

सभी अध्यात्म गुरु एक ही उपदेश देते हैं—'अपने अंतर में झांको। तुम्हें अपने सार्थक होने का प्रमाण मिलेगा। स्वयं को पहचानने का अवसर मिलेगा। अपनी आत्मा में झांको और निज की खोज करो', बस यही उनका मूलमंत्र है !

मशीनों की सहायता से वे यह जानने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं कि आंखें मूंदकर सुविधाजनक मुद्रा में बैठा व्यक्ति जब मंत्रोचारण करते हुए मनन करता है, तो किस प्रकार उसे शांति व सुख का अनुभव होता है। यह बताया गया कि मनन के दौरान शरीर पूरी तरह जाग्रत रहता है। शरीर पूर्ण विश्रामावस्था में रहते हुए पूरी तरह चेतन होता है। वह चेतन व अव-चेतन दोनों स्थितियों में भी रहता है। वह अपने आसपास के माहौल व वस्तुग्रों

ग्रौर पवित्रता का बोध होता है।

ग्रंतर्ज्ञात मनन के रहस्यों को जानने के लिए अधिकांश खोजकार्य 'न्यूरोफि-जियोलाजिस्ट' अर्थात तंत्रिका-तंत्र विज्ञा-नियों ने ही किया है। इस दिशा में खोज-कार्य न केवल अमरीका, इंगलैंड ग्रौर पश्चिमी जरमनी में हुआ, अपितु भारत में नयी दिल्ली में अखिल भारतीय आयु-र्विज्ञान संस्थान में भी दो विज्ञानियों, डॉ. जी. एस. छिन्ना ग्रौर डॉक्टर बलदेवसिंह, ने १९७५ में किया। वैज्ञानिक जिज्ञासा
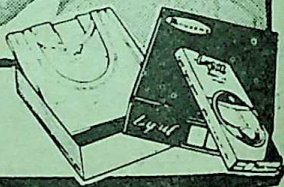
से प्रेरित शोध में संलग्न विज्ञानियों को इस दौरान मननशील शरीर और मस्तिष्क के बारे में अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियां हासिल हुई हैं।

ध्यान के कारण होनेवाले परिवर्तन

अंतर्ज्ञात मनन के दौरान श्वास-क्रिया में शिथिलता आने और इसके परिणाम-स्वरूप मस्तिष्क-क्रियाओं में होनेवाले कुछ परिवर्तनों का सबसे पहले पता लगा। १९७०–७१ में इस पर जब ज्यादा खोज-बीन की गयी, तो मालूम हुआ कि यह परिवर्तन 'हाइपोमैटाबोलिक' है। इस अवस्था में शरीर में उपापचयी क्रियाएं सामान्य से कुछ कम क्रियाशील पायी गयीं। मनन के दौरान मस्तिष्क की वजह से शरीर की अन्य क्रियाओं पर जो असर पड़ता है, उसका अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिकों ने 'इलेक्ट्रो-एंसिफेलोग्राफ' की सहायता ली। इसकी सहायता से विज्ञानी व्यक्ति के मस्तिष्क की अवस्था में चलते हुए, सोते हुए, स्वप्न देखते हुए और ध्यान या समाधि की मुद्राओं में होने पर हो रहे परिवर्तन का सफलतापूर्वक अध्ययन करने में कामयाब हुए हैं।

मानव-मस्तिष्क में करोड़ों उच्चकोटि के न्यूरोन हैं, न्यूरोन से न्यूरोन मिलकर सूचना एक सिरे से उस स्थान तक पहुंचाते हैं, जहां वह विश्लेषित होती है। तत्पश्चात यहां से शरीर के संबंधित अंग को निर्देश भेजा जाता है कि अमुक रूप से काम करो या न करो [illegible] या निष्क्रिय बने रहने का आदेश जारी होता है। मस्तिष्क या स्नायुतंत्र में सूचना-संप्रेषण एक जैव-रासायनिक प्रक्रिया है। न्यूरोन अपने अगले भाग 'एक्सान' से एक विशेष प्रकार का रसायन 'एसिटिल कोलाइन' छोड़ता है। यह रासायनिक द्रव विद्युत आवेशित होता है। जब पहला न्यूरोन अगले न्यूरोन को संदेश देने के लिए किसी उपयुक्त मात्रा में कथित द्रव का स्राव करता है तो अगला न्यूरोन उसी क्षण उपयुक्त मात्रा में आवेशित हो जाता है। इस तरह एक अति उच्च क्षमतावाला जैव-रासायनिक विद्युत संजाल बना रहता है। अंतर्ज्ञात मनन की अवस्था में जब मस्तिष्क शिथिलता की ओर क्रियाशील होता है, तब इस दौरान इसमें जो भी परिवर्तन आते हैं, उन्हें ही वैज्ञानिकों ने ई. ई. जी. अर्थात इलेक्ट्रोएंसिफेलोग्राम पर देखा। अध्ययन के दौरान यह जाना गया कि अंतर्ज्ञात मनन की अवस्था का आरंभ होने और उसके समापन तक मस्तिष्क मुख्यतः चार तरह की जैव-विद्युत प्रक्रिया से होकर गुजरता है। फलस्वरूप ई. ई. जी. पर चार तरह की संदेश-तरंगें अंकित की गयीं—अल्फा, बीटा, थीटा और डेल्टा।

तरंगों के चक्र

मस्तिष्क द्वारा जनित एल्फा तरंगें एक सेकेंड में ८ से १३, बीटा तरंगें १३ से ३०, थीटा तरंगें ५ से ७ और डेल्टा तरंगें ०.५ से ४ चक्र पूरे करती पायी गयीं। इससे
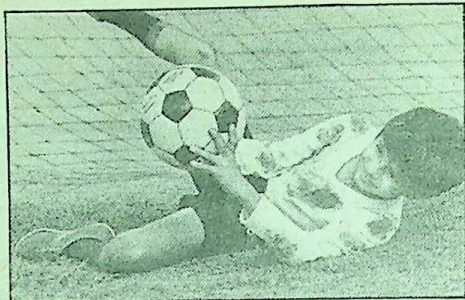
यह निष्कर्ष निकाला गया कि मस्तिष्क द्वारा उत्पन्न जैव-रासायनिक तरंगों की शक्ति और आयाम हर अवस्था में भिन्न होता है। अंतर्ज्ञात मनन के दौरान बहुत से खोजी विज्ञानियों ने इन एल्फा तरंगों को ही अधिक गतिशील पाया। यह गतिविधि मस्तिष्क के केंद्रीय व अग्र भाग में होती देखी गयी। यह भी पाया गया कि मननातीत व्यक्ति की मस्तिष्क व शारीरिक क्रियाओं में शिथिलता आने के बावजूद वह पूरी तरह जागरूक था। अतः अंतर्ज्ञात मनन योगियों का दावा सत्य प्रमाणित हो गया। एल्फा तरंगों के बाद विज्ञानियों ने परीक्षण के लिए आमंत्रित अंतर्ज्ञात मनन योगियों में बीटा तरंगें उत्पन्न होने की स्थिति दर्ज की। बीटा तरंगें भी मस्तिष्क के अग्र भाग की ओर से ही उभरती पायी गयीं। बीटा तरंगों के दौरान योगी को नींद आने का भी पता चला। अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि संभवतः इस अल्पकालीन नींद के परिणामस्वरूप ही यह योगी मननांत में मानसिक रूप से और फिर शारीरिक रूप से स्वस्थ व हलका-फुलका महसूस करता है। पुनः योगियों का दावा सच साबित हुआ था।

कंप्यूटर से तरंगों का विश्लेषण

मनन के दौरान उठनेवाली चारों तरंगों का जब कंप्यूटर पर 'कंप्यूटराइज्ड स्पैक्ट्रल एनेलेसिस' किया गया तो यह प्रमाणित हो गया कि मनन की उत्तरोत्तर अवस्था में मस्तिष्क द्वारा प्रसारित तरंगों की गतिविधि में भी शिथिलता आ रही थी। अर्थात एल्फा तरंगों के बाद बीटा, थीटा और डेल्टा और पुनः एल्फा तरंगें बन रही थीं। मनन के आरंभ और अंत में एल्फा तरंगें सर्वाधिक गतिशील पायी गयीं, पर बीच की गहरे मनन की अवस्था में बीटा और थीटा तरंगें ही क्रियाशील थीं। अनुसंधान के दौरान भारतीय वैज्ञानिकों ने एक महत्त्वपूर्ण बात यह मालूम की कि नौसिखिए अंतर्ज्ञात मनन योगी ही मननावस्था में अल्पावधि की नींद लेते थे। इसके विपरीत धुरंधर योगी पूरी तरह चेतना पर शिथिल पाये गये।

मस्तिष्क का शारीरिक क्रियाओं पर पूर्ण आधिपत्य होने से अंतर्ज्ञात मनन की अवस्था में दिल की धड़कन, रक्तवाहनियों में रक्त-दबाव में कमी व श्वास की दर में कमी अंकित की गयी। इसके परिणामस्वरूप ही शरीर में 'मेटाबोलिक' गतिविधि घट जाती है। इसकी परिणति होती है तनाव से पूर्ण मुक्ति और शरीर व मस्तिष्क की संपूर्ण विश्रांति में।

श्वास-क्रिया शिथिल होते ही शरीर को ऑक्सीजन की पूर्ति घट जाती है। परीक्षण के दौरान यह मात्रा १०० मिलिलिटर रक्त में ११०.४ से घटकर ८ मिलिग्राम पायी गयी। ऑक्सीजन की पूर्ति में कमी होने पर शरीर की मांस-पेशियों में होनेवाली क्रियाओं के कारण ही रक्त में 'लेक्टेट' की मात्रा में वृद्धि होती है। यही सब अंतर्ज्ञात मनन की अवस्था में एक योगी के शरीर में होता है।

—४५५/१९, दुर्गा कालोनी, रोहतक-१

उसे प्रेतात्माओं ने संगीत सिखाया

• डॉ. शिवनंदन कपूर

प्रेतात्माएं केवल सताती ही नहीं, सहायता भी करती हैं। वे धन या वस्तु ही नहीं लुटातीं; साहित्य और संगीत के अर्जन में भी सहायक रही हैं। श्रीमती कुरैन ने उनकी सहायता से अनेक उपन्यास लिखे। एक साथ दो-दो उपन्यासों की रचना की। न केवल इतिहास के विभिन्न युगों को संवारा, अपितु भिन्न-भिन्न भाषाओं तथा शैलियों का चमत्कार दिखाया। आश्चर्य तो यह कि वे उन भाषाओं से पहले अपरिचित थीं।

दांते की 'डिवाइन कामेडी' महीनों तक लुप्त रही। उनके बेटे जेकोपो और पियेरो उसकी तलाश कर हार गये। अगर दांते की प्रेतात्मा सहायता न करती, तो वह पांडुलिपि आज अप्रकाशित ही रह जाती।

मृत संगीतकारों का संपर्क

श्रीमती रोजमेरी ब्राउन को तो मृत-मंडली ने संगीतकार ही बनाकर छोड़ा।

भूत-प्रेतों की आतंकभरी कथाएं तो बहुधा हमें पढ़ने को मिलती रहती हैं, मगर भूत-प्रेतों का साहित्य और संगीत के क्षेत्र में भी इतना योगदान हो सकता है कि वे विश्व-विख्यात प्रतिभाओं को दुनिया के मंच पर प्रस्तुत कर सकते हैं। इस तथ्य पर सहज ही विश्वास नहीं होता, मगर ऐसी कई सत्य घटनाएं हैं, जो हमें विश्वास करने के लिए विवश कर ही देती हैं। कुछ ऐसे ही अप्रतिम प्रसंग..

न जाने कितने मृत-संगीतकारों का इसमें सहयोग रहा। जब आइगौर स्त्राविंस्की अपनी मृत्यु के चौदह महीनों के बाद ब्राउन के जीवन में आविर्भूत हुआ, तो उसने उन्हें पूरी साठ पंक्तियों की संगीत-रचना अभिलेखित करायी। पर उस स्वर्गीय संगीतकार की सहायता से उन्हें कोई आश्चर्य न हुआ। कारण, वह तो २०वां मृत संगीतकार था, जिसने उसकी असाधारण प्रतिभा को उद्दीप्त किया था।

मात्र सात वर्ष की अवस्था से ही रोजमेरी मृत-संगीतकारों के संपर्क में आ गयी थी। एक बार उसने देखा, श्वेत लंबे केशों और काले चोगेवाला एक व्यक्ति अचानक उसके पास प्रकट हुआ। उसने कहा, 'बेटा, मैं एक दिन तुझे प्रसिद्ध संगीतकार बनाऊंगा।' रोजमेरी उस समय न जान पायी कि वह कौन है? दस साल बाद चित्र देखकर उसने उसे पहचान लिया, वह फ्रांज लिस्ज्त था।

भूत गाकर सिखाता

१९६४ से पूर्व संगीत की ओर रोजमेरी का विशेष ध्यान भी न था। सहसा चमत्कार हुआ। उसने मौलिक रचनाएं प्रस्तुत कीं। उनका लिप्यंतरण उसने दूसरी दुनिया में पहुंचे महान संगीतकारों की आत्माओं की सहायता से किया। बिथोवन बाख, शॉपिन, शूबर्त, राखमानिनोव और लिस्ज्त ने अनगिनत उच्च कोटि के 'टुकड़ों' का अभिलेखन कराया था। उनमें शूबर्त का चालीस पृष्ठों का 'सोनाटा' था। शॉपिन द्वारा अभिलेखित तीन टुकड़ों की रचना का तो उसने बिना तैयारी के प्रदर्शन किया। शूबर्त ने बारह गाने तैयार कराये थे। कहा जाता है, शूबर्त उसे स्वयं गाकर सिखाता। संगीतकार बीथोवन और बाख गाते न थे, केवल स्वर-लिपि बोलकर लिखाते। सभी संगीतकारों की प्रेतात्माएं उससे अंगरेजी भाषा में ही बातें करती थीं।

आलोचकों के विचार

श्रीमती रोजमेरी की लिप्यंतरण की प्रतिभा के संबंध में संगीत-आलोचकों के विभिन्न विचार रहे हैं। किंतु एक बात पर सभी सहमत हैं कि उनकी विशिष्ट रचना में स्वर्गीय संगीतकारों की प्रकाशित रचनाओं से समानता है।

मारिस बारबानेल लंदन के "साइकिक न्यूज' के संपादक हैं। उनका विचार है, 'वह एक ऐसी 'माध्यम' है, जो सूक्ष्म और अतींद्रिय-दर्शिका है।"
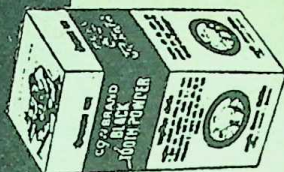
कुछ और संभावनाएं भी प्रस्तुत की गयी हैं। महान संगीतकारों ने कुछ अप्रकाशित रचनाएं छोड़ी हैं, जिन्हें रोजमेरी टेलीपेथी की सहायता से पढ़ने में सफल रही है। कुछ लोगों का विचार है कि वह टेलीपैथी की मदद से अपने आस-पास के लोगों से संगीत-ग्रहण करती है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि श्रीमती रोजमेरी ने बाख की शैली में संगीत-रचना करनेवाले संगीतकारों की संगत कभी नहीं की।

ब्रिटिश संगीतकार रिचार्ड रोडने का कहना है, 'कितने ही लोग तत्काल संगीत-रचना करने में निपुण हैं। किंतु उनकी रचना को नकल या जालसाजी आप तब तक नहीं कह सकते, जब तक कि आपके कान वर्षों संगीत सुनने के अभ्यस्त न रहे हों।'

अलग रिख 'न्यूयार्क' पत्रिका का संगीत-आलोचक है। उसका भी मत दूसरों से कुछ भिन्न रहा है। उसने श्रीमती रोजेलिन का एक निजी रिकार्ड सुना था। उस रिकार्ड में बाख, बिथोवन, शोपिन, देबुसी, लिस्ज्त और शूबर्त के संगीत टुकड़े हैं, जिन्हें रिचार्ड रोडने ने सूक्ष्म तथा गहरी पैठवाला पाया। इस प्रकार मृतों ने एक महिला को विश्व की महान संगीतकार बनाया है।

—३८७, टपाल चाल, खंडवा, (म. प्र.)

भूतनी कार पर सवार हो गयी

पाली हिल पर मेरा बंगला था। एक दिन ड्राइवर ईश्वरसिंह ने बताया कि इस बंगले में कुछ गड़बड़ है। उसने रात के अंधेरे में कुछ अजीबो-गरीब आवाजें सुनीं हैं और एक सुंदर-सी औरत को बंगले में टहलते देखा है। हमने उसकी बात को उसका वहम समझकर टाल दिया, लेकिन कुछ दिन बाद हमारे यहां लेखक अर्जुन देव 'रश्क' ठहरे और उन्होंने भी यही बात बतायी, तो शक हुआ कि जरूर कुछ गड़बड़ हो सकती है। तब तक उस प्रेतात्मा ने हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाया, लेकिन जैसे ही हमारी नयी कार आयी, कार के माध्यम से उसने हमें परेशान करना शुरू कर दिया। कार से रोजाना पेट्रोल गायब होने लगा। तंग आकर हमने कार को बेच दिया।

बाद में पता चला कि वह प्रेतात्मा उस कार के पीछे लग गयी और उसके मालिक को नुकसान पहुंचाने लगी। जिसने कार खरीदी थी, वह दिवालिया हो गया। उसने फिर जिसे बेची, उसका बाप मर गया। उसने भी फिर जिसे बेची, उसके अस्तबल में आग लग गयी, जिससे उसके रेस में दौड़नेवाले घोड़े जलकर राख हो गये। उसने भी वह कार एक तस्कर को बेच दी और कुछ दिनों बाद ही वह कार ३० लाख रुपये के तस्करी के सोने के साथ पकड़ी गयी।

इन घटनाओं से हमारा विश्वास पक्का हो गया कि भूत-प्रेत होते जरूर हैं, और यह कार हमारे बंगले की भूतनी के कारण ही मनहूस हुई है। हम कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहते थे, अतः हमने उस बंगले को भी बेच दिया। —साधना, फिल्म अभिनेत्री

राम ने शबरी भीलनी की कुटिया में जाकर उसके चखे बेर खाये। शबरी खिलाती रही, राम खाते रहे, दोनों एक-दूसरे के स्नेह में सराबोर हो गये। छांट-छांटकर मीठे बेर खिलानेवाली शबरी जल्दी-जल्दी में चख-चखकर देखने लगी कि राम के पास खट्टे बेर न चले जाएं।

राम की सद्भावना : शबरी के बेर

● डॉ. टुमनलाल

स्वतंत्रता के पैंतीस वर्षों के बाद भी हम आदमी और आदमी के बीच की दूरी को समाप्त नहीं कर पाये हैं। अन्य क्षेत्रों में हमारी उपलब्धियां निश्चय ही उल्लेखनीय हैं, किंतु सामाजिक समता की दृष्टि से हम वहीं के वहीं पड़े हैं। आज भी अस्पृश्यता, जात-पांत और ऊंच-नीच की भावना दूर नहीं हुई है।

हम इन रूढ़िगत रीति-रिवाजों और अंध-विश्वासों को अपने प्राचीन संस्कारों से जोड़ते हैं और वेद-पुराण सम्मत बताते हैं, जबकि वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। पुराना इतिहास उठाकर देखिए तो ज्ञात होता है कि न केवल व्यक्ति बल्कि अवतारों ने भी शूद्र और दलित-पतित लोगों को भरपूर प्यार दिया, उनके साथ भोजन किया और उन्हें अपने सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों में सहयोगी बनाया है।

धर्मशास्त्रों में सामाजिक समता

हमारे धर्म-शास्त्रों में सामाजिक समता का सिद्धांत बड़ी दृढ़तापूर्वक प्रतिपादित हुआ है। इनमें भेदभाव, छुआ-छूत, ऊंच-नीच और जात-पांत की भावना को कहीं भी प्रोत्साहन नहीं दिया गया है। हमारा सामाजिक दर्शन तो संसार में सभी सभ्यताओं से आगे है, जहां निर्जीव पदार्थ को भी पर्याप्त सम्मान और प्यार दिया जाता है। जिस सभ्यता में पर्वत को पिता और नदी को मां कहा जाता है, वहां ए

आदमी दूसरे आदमी के स्पर्श मात्र से अपवित्र हो जाए, यह तो केवल निम्न कोटि की मानसिकता की उपज है।

जहां तक वर्ण-व्यवस्था का प्रश्न है, वह तो श्रम-विभाजन है। कर्म का बंटवारा जब हुआ, तब घृणित कामों को उन्हीं लोगों ने अपने हाथ में लिया, जो ज्यादा समझदार या अधिक जिम्मेदार थे। इस प्रकार श्रम-विभाजन के आधार पर लोगों के वर्ग स्थापित हुए, जो कालांतर में जाति और उप-जातियों में बदलते गये, किंतु दुर्भाग्य कि हम वास्तविकता की गहराई को त्यागकर उथले भाग में ही तैरते रहे और कहना न होगा कि डूब भी गये।

यों, महात्मा गांधी के समय से इस दिशा में काफी प्रयास हुए हैं। गांधीजी को इसमें पर्याप्त सफलता भी मिली। स्वतंत्रता के बाद हमारी सरकार ने अस्पृश्यता को अवैधानिक भी करार दे दिया और इसके लिए कानून बनाया गया, किंतु मानवीय संबंधों और भावनात्मक एकता के लिए कानून क्या कर सकता है? जब तक इसमें जन-जन का सहयोग नहीं मिलेगा, तब तक इस दिशा में सफलता की आशा करना व्यर्थ ही है। इस दिशा में हमारे कुछ समाज-सुधारक और राजनेता सक्रिय हैं, किंतु उनकी संख्या बहुत ही कम है और दायरा भी विस्तृत नहीं है। आज हर बुद्धिजीवी को अस्पृश्यता-निवारण के काम में लग जाना चाहिए, तभी हम इसे दूर कर पाने में सफल होंगे।

सुविधाओं का दुरुपयोग

इस बीच एक विडंबना और आयी है। वह यह कि हरिजन आदिवासियों को जब कानूनी संरक्षण मिलने लगा, तो इन सुविधाओं का दुरुपयोग भी होने लगा।

वांछित स्थान पर न पहुंचकर ये सुविधाएं बीच में ही बिखरने लगीं, इससे जहां ये पिछड़े वर्ग आक्रोश में आये, वहीं दूसरे वर्गों के कुछ लोगों को इस बात से क्षोभ हुआ कि जनता के पैसे का एक पक्षीय उपयोग हो रहा है और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े सवर्णों के साथ अन्याय हो रहा है। निश्चय ही यह विसंगति भी ध्यान देने योग्य है। सुविधाएं वांछित स्थान पर पहुंच ही न पायें और दूसरे वर्ग को इससे दुःख हो जाए, तो जो आत्मीय संबंध हम समाज के लोगों के बीच बनाना चाहते
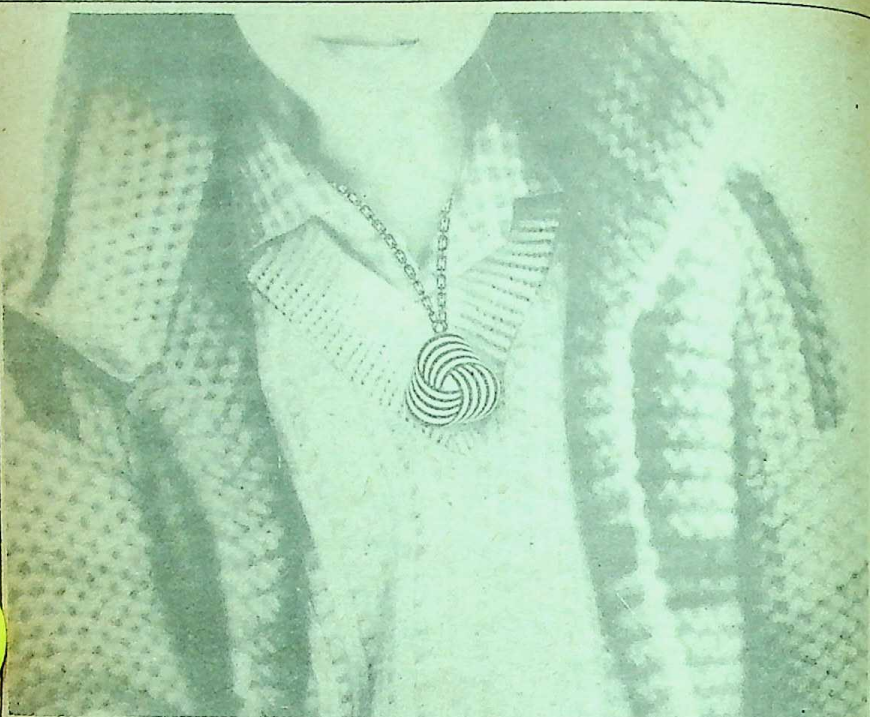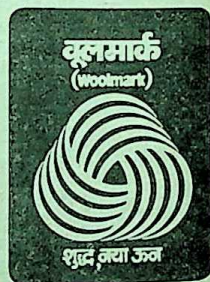
हैं, उसे काफी ठेस पहुंचेगी। यही नहीं बल्कि हमारा उद्देश्य ही डगमगा जाएगा।

संस्कृति-निर्माण में शूद्रों का योगदान

हमारी संस्कृति को शूद्रों या तथाकथित निम्न जातियों ने काफी आगे बढ़ाया है। इतिहास में इन लोगों की भूमिका बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है। यह भी कहा जा सकता है, यदि इस वर्ग के लोग अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाते, तो आदर्श ही चरमराकर टूट जाता या फिर घटना और उनके परिणाम कुछ के कुछ हो जाते।

जो लोग अभी भी यह कहते हैं कि हमारी संस्कृति और इतिहास में जात-पांत और छुआ-छूत का भेद है, वे या तो मूढ़ हैं या उनके दिमाग पर अभी भी अंधविश्वास या रूढ़िवाद का परदा पड़ा हुआ है। राम, कृष्ण, गौतम और गांधी, इस तरह का मूल्यांकन उनका अपमान है। इन महापुरुषों की जीवनियां दलित, पतित और उपेक्षित लोगों के असीम प्यार और सद्भावना से भरी पड़ी हैं। इनकी लीलाएं निम्न वर्ग के लोगों की उपेक्षा कर देने से अधूरी ही नहीं, व्यर्थ हो जाएंगी।

राम ने शबरी भीलनी की कुटिया में जाकर उसके चखे बेर खाये। शबरी खिलाती रही, राम खाते रहे, दोनों एक-दूसरे के स्नेह में सराबोर हो गये। छांट-छांटकर मीठे बेर खिलानेवाली शबरी जल्दी-जल्दी में चख-चखकर देखने लगी कि राम के पास खट्टे बेर न चले जाएं और राम वे जूठे बेर मांग-मांगकर खाने लगे और तब तक मांगते रहे, जब तक शबरी की टोकरियां खाली न हो गयीं।

इसी तरह गंगा के किनारे भाव-विह्वल निषादराज ने श्रद्धा और प्रेम के चरमोत्कर्ष पर पहुंचकर जब राम को उनके पिता की कसम खिलायी, तो भी वे मुसकराते रहे। क्या यह राम के प्रति केवट और शबरी के प्रेम का चरमोत्कर्ष नहीं है? राम क्या व्यर्थ में ही शबरी और निषाद की याद जीवनभर करते रहे?

व्यास के प्रिय पुत्र विदुर दासी-पुत्र थे। विदुर जन्म लेकर मृत्युपर्यंत महाभारत के पात्रों के साथ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। तभी तो अर्जुन और दुर्योधन के राजप्रासाद को छोड़कर कन्हैया ने विदुर के घर जाकर साग-पात प्रेम से खाया था। इसी प्रकार कुबरी-प्रसंग भी कृष्ण के उपेक्षित लोगों के प्रति प्यार का अप्रतिम उदाहरण है।

बुद्ध तो उपेक्षितों के ही भगवान थे। उनका पूरा जीवन निम्न वर्ग के उद्धार में बीता। उनका प्रत्येक कार्य केवल दलित-पतित लोगों को ऊपर उठाने के लिए ही था।

महात्मा गांधी तो हरिजनोद्धार के लिए ही पैदा हुए थे। गीता, महाभारत और धर्मशास्त्रों के अलावा अनेक विषयों के महान ज्ञानी इस महापुरुष ने जात-पात के भेद को मिटाने के लिए क्या नहीं किया।

भगवान महावीर, गुरु नानक आदि

महापुरुषों का उदाहरण लें, तो इन्होंने भी सामाजिक भेदों को मिटाने के लिए अपने जीवनभर कार्य किया। बाबा साहब आम्बेडकर, पं. जवाहरलाल नेहरू, महात्मा तिलक, स्वामी दयानंद, राजा राममोहन राय, सरदार पटेल आदि ने भी समाज के इस कोढ़ को दूर करने के लिए भरसक प्रयास किया। बाबा गुरु घासीदास तो हरिजनों के ही देवता बने।

अछूतोद्धार की मशाल

अछूतोद्धार की यह मशाल अनंत काल से जल रही है। उसके बाद भी हम हजारों वर्षों में भी कुछ नहीं कर पाये। इसका प्रमुख कारण यह है कि हमारे समाज में एक ऐसा भी वर्ग पीढ़ी दर पीढ़ी पनप रहा है, जिसके जीवन का उद्देश्य ही भेदभाव फैलाना और अपनी रोटी सेकना है।

मैं यह दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं कि हमारे वेदशास्त्रों, धर्म-ग्रंथों, गीता, रामायण, महाभारत आदि किसी भी ग्रंथ में जातिगत ऊंच-नीच के भेद का उल्लेख नहीं है। जो ऐसा कहते हैं, वे इन ग्रंथों का अपमान ही करते हैं। बल्कि इन भेदों के विरोध में इन्हीं ग्रंथों में इतना अधिक लिखा गया है कि मैं उदाहरण दूं, तो लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएं।

इतिहास पर हम दृष्टि डालें, तो दास-दासियों, गणिकाओं और सेवकों की अपनी अलग भूमिका मिलेगी। एकलव्य से लेकर पन्ना धाय तक की कहानियां हमारे इतिहास के हीरे-मोती हैं। ये सभी लोग निम्न तबके और तथाकथित निचली जातियों से आये थे। इनके त्याग-बलिदान और संघर्ष पर एक अलग इतिहास ही लिखा जा सकता है।

इसीलिए यही ऐसा समय है, जब हमें समझ लेना चाहिए कि अस्पृश्यता-निवारण के लिए केवल कानून बना देने से कुछ नहीं होगा। कानून से सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में हम असफल रहे हैं।

हम एक ही ईश्वर के अधीन हैं। हमारा देश हमें प्यारा है। हमारे खून में विश्व-बंधुत्व की भावना पूर्वजों की देन के रूप में दौड़ रही है। हमें इस संसार में बहुत कुछ करके दिखाना। एक भाई ऊंचा कहाये और दूसरा नीचा, तो उस घर का तो भगवान ही मालिक है। हम सब एक हैं। मेरी तो यह निश्चित धारणा है कि छूत-अछूत का सिद्धांत हमें पतन की ओर ले जाने का षड्यंत्र है। हमें सावधान हो जाना चाहिए। हम सबकी एक ही जाति है—भारतीयता और हम सबकी एक ही मां है—भारत माता।

८, श्यामला हिल्स, भोपाल

अपने निर्वाह के लिए जो चिंता या प्रपंच नहीं करते, वही सच्चा विश्वासी है। —जुन्नेद

समय की सुव्यवस्था सुव्यवस्थित मन की अचूक औषध है। —पिटमैन

उन
में तन
हिंदू
से अ
आये
था,
बीच
के दो
एवं ध
विषय
एवं स

करते
वैमनस
मित्रत

जीवन
सद्भा
दोनों
अपने
करते
हसन
था।
त्यौहा
उनके
भी बा
सच्चे
सन १

दिसम्

• शम्सुद्दीन

उन दिनों पंजाब में अकसर सांप्रदायिक झगड़े होते तथा कई बार समाज में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। हिंदू और मुसलमान दोनों ही कट्टरता से अपने-अपने धर्म की दुहाई देते और आये दिन उनमें विवाद छिड़ जाया करता था, किंतु ऐसी विषम परिस्थितियों के बीच भी अमृतसर में शर्मा और हसन के दो परिवारों के बीच एकता, सद्भाव एवं धार्मिक सहिष्णुता लोगों में चर्चा का विषय थी। बात यह थी कि सत्यव्रत शर्मा एवं सईद हसन नामक दो बालकों में शालेय

स्वाधीनता के पूर्व का समय––उन दिनों पंजाब में अकसर सांप्रदायिक दंगे हुआ करते थे और समाज में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। फिर भी सांप्रदायिक वैमनस्य की इस आग से अछूते थे, सत्यव्रत शर्मा और सईद हसन ! इन्हीं दो दोस्तों की मित्रता की एक प्रेरणास्पद कहानी।

जीवन से ही बड़ी दोस्ती हो गयी थी।

सद्भाव के आंगन में

दोनों के माता-पिता यद्यपि अपने-अपने धर्मों और रीति-रिवाजों का पालन करते थे, किंतु सत्यव्रत शर्मा और सईद हसन पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वे बराबर एक दूसरे के धार्मिक त्यौहारों और उत्सवों में भाग लेते तथा उनके माता-पिता इसमें किसी प्रकार से भी बाधक सिद्ध नहीं होते थे।

सच्चे देशभक्त

सन १९३९ में जीविका-अर्जन हेतु शर्मा और सईद दोनों नौसेना में भरती हो गये। वहां कार्य करते हुए जब दोनों ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के विद्रोह की बात सुनी, तो इनके अंतः में सुलगती हुई देश-प्रेम की आग फिर भड़क उठी : दोनों नौसेना में कार्य करते हुए भी नेताजी की आजाद हिंद फौज का भी काम करने लगे। इन दिनों सईद हसन साहब चिटगांव में थे तथा सत्यव्रत शर्मा बंबई में। सईद साहब ने नेताजी के विद्रोह से प्रेरणा पाकर वायरलेस कक्ष को उड़ा देने का प्रयास किया और फिर मौका पाकर वहां से

फरार हो गये।

इधर बंबई में शर्माजी के मन में भी विद्रोह की भावना भड़क रही थी। एक बार एक अंगरेज अफसर ने किसी बात पर नाराज होकर शर्माजी को 'यू इंडियन डॉग्ज !' कह दिया। फिर क्या था, शर्माजी इस अपमान को बरदाश्त नहीं कर सके। क्रोध से आग-बबूला हो उन्होंने अंगरेज अफसर को थप्पड़ मार दिया। इस पर शर्माजी को ६० दिनों का 'क्वार्टर गार्ड पनिशमेंट' मिला। सजा की यह अवधि समाप्त होते-होते शर्माजी भी फरार हो गये। इस प्रकार शर्मा और हसन दोनों नौसेना से भाग खड़े हुए और कुछ ही समय में अमृतसर में दोनों फिर जा मिले।

शर्मा और हसन दोनों के खिलाफ गिरफ्तारी के वारंट थे, किंतु ये पकड़ में नहीं आते थे। उन दिनों पंजाब में ध्रुवदेव, इंद्रदेव और वीरदेव-तीनों भाइयों का नाम क्रांतिकारी नेता के रूप में प्रसिद्ध था। इनका मुखिया बलराज उन दिनों पुलिस का सिर-दर्द बना हुआ था। वह ऐसा क्रांतिकारी नेता था, जिसे पुलिस पकड़ ही नहीं पाती थी। दो-एक बार पुलिस ने उसे पकड़ा भी तो उसके पास सम्मोहन का कुछ ऐसा मंत्र था कि उसके द्वारा वह पुलिस को चकमा देकर छूट गया। इन सब क्रांतिकारी नेताओं का शर्मा और हसन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इन्होंने खून से हस्ताक्षर कर क्रांतिकारी बनने का संकल्प किया। १९ अगस्त १९४२ को शर्मा और हसन दोनों भूमिगत हो गये।

फिर तो दोनों के पीछे-पीछे वारंट चलते रहे और ये भागे-भागे फिरते रहे। अमृतसर में जब इन्हें पता चला कि पुलिस इनके पीछे है, तो ये भागकर बनारस हिंदू युनिवर्सिटी पहुंचे। वहां अहमद हसन दानी, जो हसन साहब के साले थे और संस्कृत के स्कॉलर थे, रहते थे। दोनों कुछ दिन वहां रुके, किंतु जब पुलिस को इनका पता चला और वह वहां पहुंची, तो दोनों वहां से भागने की योजना बनाने लगे। गाजीपुर में शर्मा के भाई इंजीनियर थे और दोनों ने सोचा कि उनके पास चला जाए। अहमद हसन भी उनके साथ हो लिये।

पंडित वह जो विद्वान हो

जिस समय अहमद हसन सहित शर्मा और हसन गाजीपुर पहुंचे, वहां बहुत जोर की बारिश हो रही थी। उस दिन शर्माजी के भाई के बच्चे का नामकरण संस्कार भी था। शर्माजी की बुआ श्रीमती मनोरमा देवी शर्मा, जो अमृतसर की महिला आर्य समाज की अध्यक्षा रह चुकी थीं, भी वहां उपस्थित थीं। उस दिन घनघोर वर्षा के कारण पंडितजी नामकरण संस्कार के लिए नहीं आ सके। अब प्रश्न उठा कि नामकरण-संस्कार कौन कराये। बहस हुई और तय हुआ कि जो पंडित है सो कराये। बुआजी ने पूछा, "पंडित कौन है ?" सबने, अपनी-अपनी परिभाषा दी। शर्माजीने कहा, "पंडित वह, जो विद्वान हो।

उस दिन शर्माजी के उस परिवार में सबसे अधिक विद्वान अहमद हसन दानी थे। अतः तय हुआ कि नामकरण-संस्कार उन्हीं के द्वारा कराया जाए। वे पायजामा पहने हुए थे। अतः शर्माजी की भाभी ने उन्हें नयी धोती पहनने को दी ग्रौर उनसे कार्य संपन्न करने के लिए आग्रह किया। अहमद हसन ने कहा कि वे संस्कृत भाषा का ज्ञान अवश्य रखते हैं, किंतु उन्हें संस्कार-विधि का ज्ञान नहीं है। ग्रंत में उनके पास संस्कृत के ग्रंथ लाये गये। उन्होंने उनमें से संस्कार-विधि को पढ़ा ग्रौर हवन कराया। उन्होंने हवन में घी डाला, जो ब्राह्मण-पंडित का कार्य होता है ग्रौर इस प्रकार नामकरण-संस्कार संपन्न कराके बालक का नाम सुनील रखा।

शीघ्र ही पुलिस यहां भी पहुंच गयी। अब शर्मा ग्रौर हसन यहां से भागकर दिल्ली, नैनीताल, बरेली होते हुए किसी तरह श्रीनगर पहुंचे। वहां ये करनसिंह मिल्स के मैनेजिंग डायरेक्टर श्यामजी-मल के यहां रुके। फर्म के मालिक के लड़के का नाम था, जगजीत नारायण सक्सेना। एक दिन अचानक सी. आई. डी. अफसर यहां भी पहुंच गया ग्रौर उसकी पहली टक्कर हसन से ही हुई। अफसर ने सीधा प्रश्न किया, "तुम कौन हो?"

"मैं जगजीत नारायण सक्सेना हूं" हसन ने निर्भीकता से उत्तर दिया ग्रौर सी. आई. डी. अफसर यह कहते हुए कि मैं शर्मा-हसन के धोखे में आपके पास आ गया
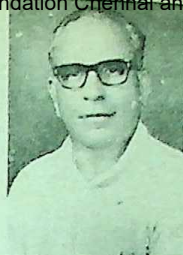
सईद हसन एस. वी. शर्मा

था, वहां से चला गया। इस समय शर्मा कुछ कार्यवश बाहर गये थे। जैसे ही वे लौटे, हसन ने बताया, "सी. आई. डी. हमारे पीछे है ग्रौर अब हम यहां से भाग चलें।"

शर्मा ग्रौर हसन वहां से भागकर कश्मीर होटल के मालिक से मिले ग्रौर उसे विश्वास में लेकर इन्होंने साफ-साफ बता दिया कि यदि हम पकड़ गये, तो गोली से मार दिये जाएंगे। अतः हमें होटल में छिपने के लिए कोई स्थान दे दिया जाए। होटल का मालिक अच्छा आदमी था। वह शर्मा ग्रौर हसन की देशभक्ति से प्रभावित हुआ ग्रौर उनकी मदद की।

फल की पेटियों में छिपना पड़ा

एक दिन एक खान अफगान ट्रक ड्राइवर होटल में आया। वह सेव की पेटियां लेकर कश्मीर से बाहर जाया करता था। होटल-मालिक ने उससे बात की ग्रौर उसकी मदद करने की इच्छा देख शर्मा ग्रौर हसन से उसकी पहचान करायी।

वह भी अच्छा आदमी निकला और उसने शर्मा और हसन से कहा, "मेरे भाई ने सुभाष बोस की मदद की थी, मैं तुम्हारी मदद करूंगा।" उसने सेब की पेटियों के बीच में जगह बनायी और उसमें दोनों को बिठाया। फिर अपनी सीट के पीछे की लकड़ी की दीवाल में एक बड़ा छेद किया, ताकि खतरे के समय वह दोनों को उसमें से आगाह कर सके और रात को वहां से चल पड़ा। आधी रात के बाद वह बारमूला पहुंचा। वहां से आखिरी पुलिस चौकी पार करनी थी। ड्राइवर जब यहां पहुंचा, तो देखा कि पुलिसवाला चेकपोस्ट पर खड़ा है। उसने झट एक दस का नोट निकाला और यह कहते हुए कि मुझे बहुत जल्दी जाना है, पुलिसवाले को दिया और पार हो गया।

इस प्रकार खान अफगान ड्राइवर एकटाबाद स्टेशन पहुंचा। उसने लाहौर के दो टिकट खरीदकर शर्मा और हसन को दिये। दोनों से गले मिला और खुदा हाफिज कहते हुए उनसे अलविदा ली। शर्मा और हसन ने उसे टिकट के पैसे देना चाहे, तो उसने हाथ पकड़ लिया और कहा, "तुम हमारे भाई हो। तुम्हारी मदद करना हमारा फर्ज है।" इस प्रकार तक्षशिला की गाड़ी पकड़कर वे दोनों लाहौर आ गये। यहां पहुंचने पर सईद हसन ने योजना बनायी कि बसना (रायपुर जिला) चला जाए, जहां उनकी मौसी रहती थी। इस प्रकार अंगरेजों की निगाहों से बचने के लिए दोनों बसना आ गये। १७ अगस्त १९४६ को पंडित नेहरू ने घोषणा की कि जितने भी गिरफ्तारी के वारंट हैं, सब रद्द किये जाते हैं। उस दिन सत्यव्रत शर्मा ने अपना असली नाम सत्यव्रत गौतम जाहिर किया, और हसन और शर्मा दोनों मिलकर बसना में रहने लगे।

वे दोनों आज भी एक हैं

शर्मा-हसन की धार्मिक एकता और देशभक्ति की यह बेजोड़ मिसाल केवल दुर्दिनों तक ही सीमित नहीं रही, वरन बसना में आज भी चल रहा 'शर्मा-सईद मेडिकल स्टोर' इस बात का गवाह है कि दोनों आज भी एक हैं। बसना में आकर बसने के बाद दोनों का विवाह हुआ, बच्चे हुए, किंतु पारिवारिक जीवन आरंभ करने के बाद भी दोनों एक ही मकान में साथ-साथ रहे। उनके परिवार के सदस्यों में भी कभी किसी प्रकार का भेदभाव अथवा मन-मुटाव नहीं हुआ। घरेलू दिनचर्या की भी इनकी अपनी कहानी है। कहते हैं, तीन कमरोंवाले जिस मकान में ये बीस बरस तक साथ-साथ रहे, उसके एक कमरे में शर्माजी तथा दूसरे में हसन साहब रहते। शेष तीसरे कमरे में पहले शर्मा-जी का शुद्ध शाकाहारी भोजन बनता। फिर उसे साफ कर वे हसन को सौंप देते, जहां उनका मांसाहारी भोजन बनता। इसी प्रकार शर्माजी प्रत्येक रविवार को आर्य-समाजी पद्धति से हवन करते तथा

मंत्र से सर्पदंश का इलाज

केनेथ एंडरसन—भारत में बसे एक विश्व-विख्यात अंगरेज शिकारी। अपनी एक पुस्तक 'जंगल्स लांग एगो' में उन्होंने श्री नरसिंह नामक एक ऐसे व्यक्ति का जिक्र किया है, जो मंत्र-शक्ति से मीलों दूर मौजूद सर्प-दंश के शिकार व्यक्ति का विष उतार दिया करता था। पहले केनेथ एंडरसन को श्री नरसिंह की मंत्र-शक्ति पर आस्था नहीं थी, पर एक बार जब वे स्वयं सर्प-दंश के शिकार हुए और दवाओं की बजाय मंत्र-शक्ति से स्वस्थ हुए तो उन्हें इस भारतीय विद्या पर विश्वास करना ही पड़ा।

हुआ यों कि एंडरसन एक नागिन को पेटी में बंद कर ही रहे थे कि उसने उन्हें डंस लिया। अनुभवी शिकारी एंडरसन ने नागिन को किसी तरह पेटी में बंद किया और दवा लेने अपनी कार में अस्पताल जा पहुंचे। इसी बीच एंडरसन के परिचितों ने श्री नरसिंह को जवाबी तार कर दिया। अस्पताल से दवा लेकर एंडरसन घर तो लौट आये, पर राह में उनका सिर चकराने लगा। लेकिन कुछ ही देर बाद वे पुनः स्वस्थ हो गये। उन्हें लगा, दवा के कारण ही वे ठीक हुए हैं।

घर पहुंचने पर लोगों ने उन्हें स्वस्थ देखकर कहा कि वे श्री नरसिंह की मंत्र-शक्ति के कारण ही स्वस्थ हुए हैं। एंडरसन हंस पड़े। सोचा, सब बकवास है। पर तभी लोगों ने उन्हें श्री नरसिंह से मिला जवाबी तार दिया। उसमें लिखा था—'डू नाट वरी : पेशेंट क्योरड्, स्नेक डेड'

एंडरसन ने तुरंत सर्प की पेटी खोली! उसमें बंद सर्प को मृत देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। ●

उनकी धर्मपत्नी सनातनी विधि से पूजा-पाठ करती। इसके बाद हसन साहब का परिवार वहीं नमाज पढ़ता। कमरे की आलमारी में जहां एक ओर कुरान शरीफ, होते तो दूसरी ओर हिंदू धार्मिक-ग्रंथ रखे होते।

इस प्रकार शर्मा और हसन दोनों बरसों साथ रहे। पहले इन्होंने मिलकर एक होटल चलाया तथा बाद में मेडिकल स्टोर खोला। बाद में परिवार बड़ा हो जाने के बाद उन्हें घर छोटा लगने लगा, किंतु बसना में ही रहते हुए दोनों अलग-अलग मकान में रहें, यह उन्हें रास नहीं आया। अतः कुछ वर्ष पूर्व से शर्माजी रायपुर में आकर रहने लगे हैं, किंतु दोनों के भाई-चारे के संबंध आज भी बरकरार हैं। शर्माजी कभी सपरिवार बसना जाकर हसन के यहां रुकते हैं, तो कभी हसन के परिवार के लोग रायपुर में आकर शर्माजी के यहां रुकते हैं। दोनों एक-दूसरे के धार्मिक त्यौहारों पर मिलते और साथ-साथ उत्सव मनाते हैं। बसना का 'शर्मा सईद मेडिकल स्टोर' आज भी चल रहा है, जिस पर दोनों का अधिकार है।

—७।१५०, बैजनाथ पारा,
रायपुर—१

दर्द

(१)

पानी के बुलबुलों-सी
उठती हैं, छिटफुट स्मृतियां
इन्हें तोड़ दो
जिंदगी का एक दूसरा नाम
दे दो—उदासी / रात खामोश है
क्या होगा लिखकर कविताएं
रात को मत पुकारो
कविताओं को दर्द बन जाने दो
और बंद कर लो वे सारे दरवाजे
जहां से सर्द बरफीली हवा
तुम्हारे भीतर पहुंचती है
उफ, फिर उठता है धुंआ
फिर होता है दर्द
क्यों होता है !

(२)

आज इंतजार नहीं
खूबसूरत लग रही हैं, मेरी उदास आंखें
मैंने देखा है, दुःख के आइने में अपना चेहरा
मैं आज कोई / गीत गुनगुनाना चाहती हूं
मैं आज
सोये शिशु के होंठ चूमना चाहती हूं
मैं आज
बेवजह मुसकराना चाहती हूं
या क्या पता
मैं आज रात जिंदगी की आखिरी नींद में
डूब जाना चाहती हूं
फिर कौन जागेगा / मैं या मेरा दर्द ?

—पद्माशा

एम. डी. डी. एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

दीप की मैं हर किरण को

देहरी पर मैं नये मणिदीप धर दूं
साजकर नूपुर पधारो तो सही . .
चाहता हूं रोशनी को स्वर मिले
चांदनी से तामसी अंबर खिले
शोर में चिमगादड़ों के गेह हैं
जुगनुओं की भीड़ पर संदेह है
दीप की मैं हर किरण को सूर्य कर दूं
एक पल अपलक निहारो तो सही . .
संकुचित है सत्य कहने में वचन
चल रहा ऐसा अंधेरे का दमन
काव्य ने ओढ़ा अनर्थों का कफन
इसलिए अनिवार्य है मेरा सृजन
प्राण के मैं हर वचन को गीत कर दूं
झोपड़ी का दर सिंगारो तो सही . .
आंधियां तो और भी शैतान हैं
हर नयन के सिंधु में तूफान है
नष्ट-सा चिनगारियों का वंश है
आज शलभों का प्रणय भी दंश है
आंसुओं की आर्द्रता में आग भर दूं
क्रांति के स्वर में पुकारो तो सही . .
आज तिनके-सा हुआ यह देश है
कुछ नपुंसक कह रहे, आवेश है
आंख नीची है, हृदय की, प्यार की
मैं हिमालय के शिखर बारूद धर दूं
देश का आंगन बुहारो तो सही . .

—मधुर शास्त्री

३२३३, कूंचा ताराचंद, दरियागंज,
नयी दिल्ली

कहीं ले चलो दूर

भावनगर के कोलाहल से कहीं ले चलो दूर
महाप्राण का अंकशायिनी यौवन भी भरपूर

शीत हवायें फूल मनोरम देवदार की छाया
नहीं जहां पर छले दुधारी राजनीति की माया
ऐसा मन सुनवाये कोई मधुर नाद संतूर

होवें दिव्य तितलियां सुंदर भ्रमर-गीत नव गाते
भांति-भांति के जहां वन्य पशु-पक्षी हों मदमाते
कुछ से कुछ कर बैठेंगे हम करो नहीं मजबूर

कुंजें हों बांसों के झुरमुट हमें न देखे कोई
थमी-थमी हो झील जहां पर सारी घाटी सोई
दुर्लभ आलिंगन कर देगा तन-मन चकनाचूर

—रामप्रकाश चौधरी

● डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

आदमखोर बाघ की तलाश में
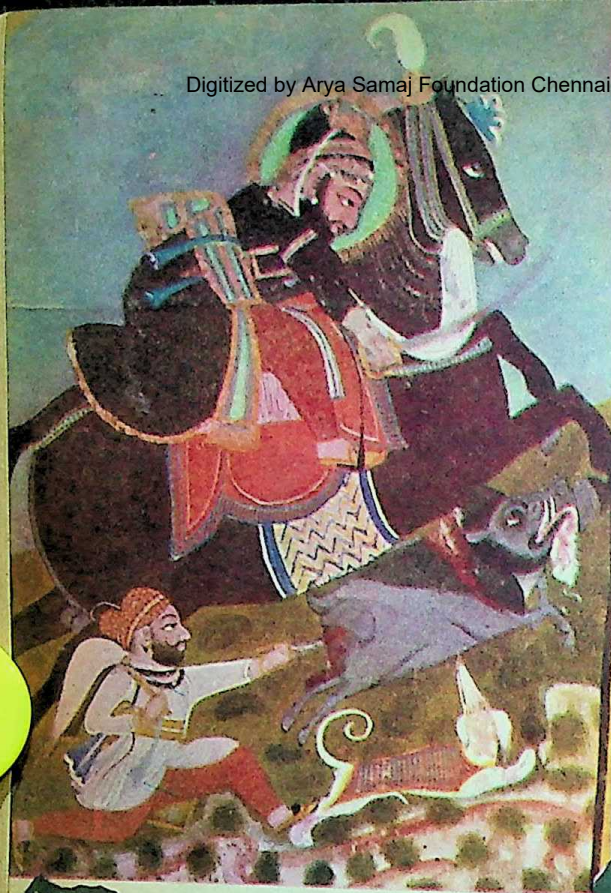
जयपुर से करीब ११२ किलोमीटर दूर एक गांव है—गनवारी। कुछ सालों पहले इस गांव में एक आदमखोर बाघ का बड़ा आतंक फैला था। इस बाघ को मारने के लिए बुलावा पहुंचा मशहूर शिकारी व सेना के कर्नल केसरी सिंह के पास। गांव में पक्की सड़कें न होने के कारण यातायात का अच्छा साधन नहीं था। एकमात्र बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी द्वारा ही वहां पहुंचा जा सकता था। काफी दिक्कतों के बाद जब केसरी सिंह गांव में पहुंचे, तब सांझ ढलने लगी थी, और सांझ ढलते ही गांववालों ने नरभक्षी के डर से अपने दरवाजे बंद करने शुरू कर दिये थे।

शिकार—मनुष्य की आदिम वृत्तियों में से एक। पाषाण युग में गुफाओं में आदिम मनुष्य ने अपने आखेट के अनुभवों को चित्रों में उतारा और यह परंपरा तब से आज तक पुष्पित-पल्लवित होती रही है। विभिन्न शैलियों की चित्रकला में भी आखेट के प्रसंग बड़ी सुंदरता से चित्रित हुए हैं। सामने के पृष्ठ पर प्रकाशित रंगीन एवं श्वेत-श्याम चित्र हमारी चित्रकला के सुंदर उदाहरण हैं। यहां प्रस्तुत हैं—शिकार के दो अद्भुत प्रसंग। इनमें से एक प्रसंग सुविख्यात शिकारी कर्नल केसरीसिंह से संबंधित है...

अगले रोज से ही कर्नल ने उस बाघ के बारे में जानकारियां इकट्ठी करनी शुरू कर दी और गांव के शिकारियों को उन्होंने आस-पास के वन-अंचलों में फैला दिया। कुछ दिनों में ही खबर आयी कि पांच किलोमीटर दूर झेल्ला नामक गांव से आदमखोर एक स्त्री को उठाकर ले गया है। खबर मिलते ही कर्नल तत्काल उस गांव में पहुंचे। पता चला कि अपनी झोपड़ी के किवाड़ बंद करके एक किसान दंपति सो रहा था कि आधी रात को बाघ किवाड़ तोड़कर अंदर घुसा और औरत का गला दबाकर ले गया। कर्नल ने झोपड़ी के आसपास का निरीक्षण किया। जमीन के ऊपर उसे खून के धब्बे नजर आये। बाघ जिस रास्ते से औरत को ले गया था, उस पर उसके पंजों के

निशान भी पड़े थे। उन निशानों के सहारे बाघ की तलाश में कर्नल आगे बढ़े। उसके पीछे मृत-स्त्री का पति व अन्य ग्रामवासी भी हो लिये। दूर जाने पर उन्होंने एक कांटेदार झाड़ी के इर्द-गिर्द कुछ गिद्धों को मंडराते देखा। झाड़ियों में उस औरत का अधखाया शव पड़ा था। जिसके एक पैर में पायजेब देखकर उस किसान ने पहचान लिया कि यह शव उसकी पत्नी का ही है।

कर्नल बाघ की तलाश में आगे बढ़ गयें। लेकिन एक घंटा चलने के बाद भी बाघ की परछाईं तक नजर नहीं आयी। आगे जमीन सख्त और कंकरीली थी, इसलिए बाघ के पंजों के निशान भी मिलने मुश्किल थे। हांका लगाकर बाघ को खुले में लाने की कोशिश भी खत खाली नहीं थी। फिर आदमखोर को तरह मारने में बहुत जोखिम भी गाय या बकरी को चारे के रूप में बां खुद मचान पर बैठकर भी बाघ का इंत करना व्यर्थ था, क्योंकि वह इस चा आनेवाला नहीं था।

शाम को सब निराश होकर लौट आये। किसान की झोपड़ी के दरवाजे को देखकर कर्नल को एक वि कौंधा। बाघ अद्भुत साहसी लगता क्योंकि, किवाड़ तोड़कर घुसने की हि साधारण बाघ नहीं कर सकता इसलिए उन्होंने सोचा कि बाघ को फं के लिए एक और मौका दिया जाए।

अगले रोज कर्नल ने एक बड़

नर-भक्षी बाघ ज

उड़ीसा के करीब ८० किलोमीटर के विस्तृत अंचल में एक बार एक नरभक्षी बाघ ने बेहद आंतक मचा रखा था। उससे निपटने के लिए प्रसिद्ध शिकारी सोमरविल को बुलाया गया।

एक दिन सोमरविल के पास सुबह के वक्त गांव का वृद्ध मुखिया आया और बोला, "साहब ! बाघ को मैंने अपने जाल में फंसा लिया है। तुरंत चलिए।"

सोमरविल को मुखिया की बात अजीब लगी, लेकिन वह तत्काल उसके साथ हो लिया।

बहुत-सी जंगली झाड़ियों से गुजरकर वे एक टीले के पास पहुंचे। मुखिया ने फुसफुसाकर कहा, "वह रहा बाघ।

सोमरविल चौंका। आसपास झाड़-झंखाड़ों के अलावा उसे कुछ भी न नहीं आ रहा था। तभी मुखिया ने एक बड़ी-सी झाड़ी की तरफ इ किया।

लेकिन तब तक देर हो चुकी उनके देखते-देखते पूरी की पूरी भीषण हुंकार के साथ उछली और भा जंगल में ओझल हो गयी। तब समझ में आयी कि जिसे वह झाड़ी रहा था, दरअसल वह बाघ था।

गांव और जंगल के बीचोंबीच एक उपयुक्त जगह पर ६ फुट लंबी और ५ फुट ऊंची एक लकड़ी की खोली तैयार करायी। छत लकड़ी के पट्टों की और उस पर घास-फूस व पुआल आदि बिछाया गया। दरवाजे की जगह खोली में मोटे गोल लट्ठों को थोड़ी-थोड़ी दूरी के अंतर पर लगाया गया।

सांझ ढलने से कुछ पहले ही कर्नल खोली में घुसकर बैठ गये और आदमखोर का इंतजार करने लगे। उन्होंने अपने साथ दोनाली बंदूक और टार्च के अलावा चाय से भरा फ्लास्क भी रख लिया।

धीरे-धीरे रात गहराने लगी। चारों ओर निस्तब्धता का आलम छा गया। जानबूझकर एक आदमखोर बाघ का शिकार बनकर बैठे रहने में कितना रोमांच है, यह उस हालत में खुद को रखे बिना कल्पना करना सहज नहीं। कहीं हलकी-सी आहट होते ही दिल धड़कना शुरू हो जाता। परछाईं-सी कांपते देख अजीब सिहरन-सी छा जाती।

इंतजार करते-करते जागते हुए रात बीत गयी, बाघ नहीं आया। लेकिन फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। सुबह उन्होंने गांव के चारों ओर बाघ के पंजों के निशान की तलाश की, लेकिन कहीं भी नहीं मिला। मतलब यह कि पिछली रात को बाघ गांव के निकट आया ही नहीं।

दूसरे रोज कर्नल फिर खोली में बैठे

झाड़ी बन गया

मुखिया ने बताया कि गरमी के कारण सभी नदी-नाले सूख चुके हैं। केवल यही एक छोटा-सा जलाशय बचा है, जिसमें जंगल के पशु पानी पीने आते हैं। इसे देखकर उसके दिमाग में एक योजना आयी। उसने जंगल के तमाम ढाक के पेड़ों से गिरकर सूख गये चौड़े-चौड़े पत्तों को बिनवाया। जंगली अंजीर के रस से उसने गोंद तैयार की। पत्तों पर अच्छी तरह गोंद मलकर उन्हें फिर उस जलाशय के चारों तरफ करीब ५० मीटर के इलाके में बिछा दिया। और खुद पेड़ पर चढ़कर बाघ के इंतजार में बैठ गया।

आधी रात को वह नरभक्षी पानी पीने आया, तो गोंद लगे पत्ते उसके पैरों से चिपक गये। घबराकर उसने उछल-उछलकर जमीन पर लोट-पोटकर पत्तों को छुड़ाना चाहा, तो पत्ते उसके शरीर के साथ और भी चिपक गये। आंख व मुंह भी पत्तों से ढक गये, जिससे उसे दिखायी देना बंद हो गया। अंधा होकर बाघ इधर-उधर भागने लगा, और यहां आ पहुंचा।

सोमरविल के 'शिकारी जीवन' की यह अनोखी घटना थी। सबसे मजेदार बात यह रही कि इससे बाघ इतना दहशत खा गया था कि उसने भूलकर भी दोबारा उस गांव की ओर रुख नहीं किया।

—डॉ. प्र. मु. अ.

बाघ की इंतजार में। धीरे-धीरे समय का पहिया घूमता जा रहा था और वह चुपचाप एक के बाद एक सिगरेट फूंके जा रहा था। अपनी रेडियम डायलवाली घड़ी पर नजर डाली तो देखा, ग्यारह का समय हो रहा था। तभी अचानक एक तीतर डीहू-डीहू की आवाज के साथ पंख फटफटाता हुआ निकल गया, तो वह और सावधान होकर बैठ गये।

ठीक उसी समय गांव की तरफ से कुत्तों के भौंकने की आवाज आयी। पहले रह-रहकर लेकिन, फिर लगातार भौंकने की आवाज आने लगी। कर्नल दरवाजे के पास जाकर सतर्कता से बाहर चारों ओर देखने लगे। लेकिन चांद की मद्धिम रोशनी में कुछ भी साफ नजर नहीं आया। कुत्ते अब तेज-तेज भौंकने लगे तो वे समझ गये कि बाघ आसपास ही है।

इस तरह अनिश्चय की हालत में कोई आधा घंटा बीत गया। अचानक पास की ही एक कंटीली झाड़ी हिल उठी। अगले क्षण ही एक विकट काली छाया उछली और भयंकर गर्जना के साथ दरवाजे के डंडे के साथ जोर से जा टकरायी। चटाख की आवाज के साथ दरवाजे का एक मोटा डंडा टूटा, तो कर्नल ने तत्काल निशाना लेकर गोली दाग दी। अप्रत्याशित गोली के प्रचंड आघात से छिटककर बाघ एकदम पीछे को जा गिरा और भीषण दहाड़ मारकर शांत हो गया।

कर्नल ने पौ फटने तक का इंतजार किया। जब आकाश में लाली छा गयी तब वह खोली से बाहर निकले, तो देखा, नरभक्षी मुंह के बल गिरा पड़ा था।

—जे-१८८२, चित्तरंजन पार्क
कालकाजी, नयी दिल्ली-१९

संतुष्ट और सुस्त न हो जाऊं

फ्लारेंस (फ्रांस) के मूर्तिकार दोनातेल्लो की कृतियों की अकसर आलोचना होती थी। एक बार उसे कुछ मूर्तियां बनाने को पीसा बुलाया गया। वहां जाकर उसने कुछ मूर्तियां बनायीं। हर ओर उसकी तारीफों के पुल बांधे जाने लगे। उसे और मूर्तियां बनाने का काम सौंपा गया, लेकिन उसने पीसा में आगे काम लेने से इंकार कर दिया।

उसके मित्र ने इसका कारण पूछा तो दोनातेल्लो ने जवाब दिया, "मुझे डर है कि मैं यहां तारीफ सुन-सुनकर इतना संतुष्ट और सुस्त न हो जाऊं कि मेरी कला का विकास रुक जाए। फ्लारेंस में मैं अपने आलोचकों की कृपा से दिन-ब-दिन अपनी कला के विकास में लगा रहा। कृपया मुझे वहीं जाने दो।"

—भैरूंलाल ग

तिमिर-प्रहर्ष

तम में ताको
सूक्ष्म किरण है,
अब तक जो आंखों से देखी
नहीं जा सकी
तम की क्यों ऐसी अवहेला ?
निकष नहीं बन सकती
सीमा
चक्षु-शक्ति की
इन आंखों की शक्ति
बढ़े यदि
तम में भी प्रकाश के कण का
झलमल कंपन दिख
सकता है
भीतर झांको,
बाहर झांको,
तम में ताको--
सूक्ष्म किरण के अनगिन
बंदनवार टंगे हैं
सदा सर्वदा नहीं अपावन होता
तम यह

उस मंदिर के अंधकार में
केलि-कक्ष के
जगमग-जग दीपित प्रकाश से
अधिक ज्योति है
तम में ताको—
सूक्ष्म ज्योति के अनगिन चित्कण
सदा तरंगित रहते
उसमें
अतुल प्रहर्ष तिमिर भी देता
चैत्य पुरुष को—
अंतर्मुख
सात्विक
आत्मन् को

—कुमार विमल
९६, एम. आई जी. एच., लोहियानगर,
पटना—२०

कहानी

बेतालघाट का भूत

• कौशल कुमार माथुर

पहाड़ी के सबसे ऊपरी सिरे पर पहुंच मैंने नीचे झांका, तो पाया कि थोड़ी दूरी पर रास्ता दोराहे की शक्ल में दो शाखाओं में बंट गया था। एक शाखा पहाड़ी के बीच बायीं ओर मुड़कर चीड़ के घने जंगलों में खो गयी थी, और दूसरी सामने एक छोटे-से गांव की ओर, जो तलहटी में कहीं पहाड़ी आंचल में छुपी-सी थी। समझ नहीं आता था कि कौन-सा रास्ता चुना जाए। पक्की सड़क को छोड़ सुबह से करीब आठ मील पैदल चल चुके थे हम लोग, और अपनी मंजिल, बेतालघाट के डाक बंगले, को पहुंचने के लिए शायद, इतना ही और रास्ता तय करना था।

मेरा नौकर जयंती प्रसाद और सामान लादे नेपाली कुली पीछे रह गये थे, यह सोचकर कि शायद किसी कुली को ही सही रास्ता मालूम हो। मैं चीड़ के एक पेड़

बैतालघाट का डाक बंगला भुतहा था, इसलिए लोग उधर जाने से घबराते थे, लेकिन ऐसा नहीं है कि भूत हमेशा लोगों को डराते या सताते ही हों, उन्हें ऐसे लोगों की तलाश भी रहती है, जो उनके दुःख-दर्द को सहानुभूति के साथ सुन-समझ सके। ऐसे ही एक भूत की मार्मिक प्रेम-कहानी . . .

के नीचे बैठकर उनका इंतजार करने लगा। नैनीताल जिले का यह आंतरिक क्षेत्र बहुत ही मनोहारी था।

गांव की बाहरी सरहद की ओर १५-१६ वर्ष की उम्र का एक लड़का ढोर चराकर लौट रहा था। जयंती प्रसाद ने पहले उसी से बेतालघाट के डाक बंगले का रास्ता पूछा। यह देखकर हम बड़े असमंजस में पड़े कि डाक बंगले का नाम सुनते ही लड़के का रंग पीला-सा पड़ गया।

गांव में घुसने पर एक बूढ़ा दिखायी दिया। जब उससे रास्ता पूछा गया, तब वह हमें लौटने की सलाह देने लगा। समझ में नहीं आ रहा था कि मामला क्या है ? मेरे कहने पर जयंती प्रसाद ने बूढ़े से पूछा कि क्या गांव में कोई पढ़ा-लिखा बुजुर्ग आदमी है, तो उसने बताया कि गांव के एक छोर पर अवकाश-प्राप्त सूबेदार रामसिंह रहते हैं।

गांव के एक किनारे सूबेदार साहब का दो मंजिला पक्का घर था। सूबेदार

साहब मकान के सामने ही एक चारपाई पर बैठे कुछ लिख रहे थे। पास जाकर मैंने उनसे पूछा, "क्या आप ही सूबेदार रामसिंह हैं ?"

उन्होंने मेरी ओर कुछ देर घूरकर देखा और सिर हिलाकर कहा, "हां, कहो क्या काम है ?"

"क्या आप बताएंगे कि बेतालघाट डाक बंगले को रास्ता किधर से निकलता है ?" मैंने पूछा।

"कहां से आये हो ?"

"नैनीताल से।"

उन्होंने किसी को दो गिलास चाय लाने को कहा और फिर मुझसे पूछा, "क्या तुम सरदी की छुट्टियों में इस इलाके में घूमने आये हो ? सामान और बाकी साथी किधर हैं ?"

मैंने हंसकर उन्हें उत्तर दिया, "मैं यहां घूमने नहीं, बल्कि सरकारी काम से आया हूं। मैं यहां का नया सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट हूं ?"

सूबेदार साहब कुछ सकुचाते हुए बोले, "अगर आप बुरा न मानें तो मैं सलाह दूंगा कि आप रात बेतालघाट डाक बंगले में न बिता, पास ही के गांव में ठहरें। वहां पटवारी और खंड विकास अधिकारी रहने का कुछ न कुछ अच्छा प्रबंध अवश्य कर देंगे।"

"डाक बंगले में क्या परेशानी है ?"

"बात यह है कि डाक बंगला गांव से दो मील दूर, एकांत में है और अफवाह है कि वह भुतहा है।"

मैं बड़े चक्कर में पड़ गया। अपने साथ तंबू भी नहीं लाया था [illegible] दिसंबर में यहां इतनी ठंड पड़ती थी [illegible] रात को कहीं बाहर सोने का प्रश्न ही [illegible] उठता था। अगर मैं डाक बंगले की [illegible] पास के गांव में ठहरता, तो मुझे [illegible] विकास अधिकारी और पटवारी [illegible] सहायता लेनी पड़ती। अतः मैंने-मन [illegible] मन निश्चय किया कि मैं डाक बंगले [illegible] ठहरूंगा।

शाम के सवा चार बजे डाक [illegible] पर पहुंचा। अंदर कदम रखते ही मुझे [illegible] लगा कि किसी ने मेरे सारे शरीर को [illegible] से झिझोंड़ दिया हो। एक ही छोटा [illegible] कमरा था, जिसकी दीवारों पर वर्षों [illegible] पुताई नहीं हुई थी। कहीं-कहीं पलस्त[illegible] भी उखड़ा हुआ था। बायीं ओर की दी[illegible] से सटी काली पड़ी अंगीठी थी। दायीं [illegible] एक ऊंचा लोहे का वर्णहीन पलंग [illegible] कमरे के बीच ४० वर्ष पूर्व के फैशन [illegible] एक गोल मेज, दो कुरसियां और एक [illegible] आराम कुरसी पड़ी थी। इन सबकी ह[illegible] खस्ता थी। कमरे के पीछे की दीवा[illegible] एक दरवाजा साथ लगे गुसलखाने में खु[illegible] था, और टूटे हुए शीशोंवाला दर[illegible] बाहर खुलता था। कमरे में कोई खि[illegible] नहीं थी। अंधेरा-सा था। सारे वाता[illegible] में अजीब भयावहता और घुटन [illegible]

मुख्य बंगले में मैं बिलकुल अ[illegible] था, हालांकि काफी दूर पीछे बने रसो[illegible]

और साथ लगे हुए क्वार्टरों में मेरे नौकर जयंती प्रसाद और कुलियों ने डेरा डाल रखा था। जैसे-तैसे मैंने कोई नौ बजे रात का खाना खाया। बाहर का दरवाजा बंद कर, लालटेन जली छोड़, रेडियो लगाया और उसको सुनते हुए पलंग पर लेटकर सोने की चेष्टा करने लगा। पर मेरी आंखों की नींद बिलकुल गायब थी।

सहसा मुझे लगा कि कमरे में अब मैं अकेला नहीं हूं। जैसे कोई दूसरा भी घुस आया हो। लेकिन, कौन था वह? चेष्टा कर भी मैं नहीं देख पाया। क्या यह हवा थी या कोई दरवाजा तोड़कर अंदर आने की कोशिश कर रहा था? और वे आवाजें ... क्या वे हवा की सनसनाहट-भरी सीटियों की आवाज थी या कोई नारी कंठ की चीत्कार...!

कुछ भी हो, यह अब स्पष्ट लग रहा था कि मैं किसी बड़े खतरे में फंस गया हूं। मेरे हाथ-पैर कांपने लगे और इतनी ठंड होने पर भी माथे पर पसीना उभर आया।

सारी रात मैं डर के मारे एक पल भी न सो सका। पिछले दिनभर की थकान और रात को आराम न मिलने के कारण बड़ी कमजोरी महसूस हो रही थी। मन तो दिनभर पलंग पर लेटकर आराम करने को था, लेकिन मेरे लिए उस दिन इतना अधिक काम था कि एक बार गांव पहुंचा, तो शाम छह बजे तक दम मारने की भी फुरसत नहीं मिली।

शाम पौने सात बजे जब डाक बंगले लौटा, तब थकान से मेरी बुरी हालत थी। मैं बिस्तर पर लेटते ही सो गया।

नींद खुली तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कमरे की कुरसी पर १८-१९ वर्ष का एक पहाड़ी लड़का बैठा था। वह मुझे जगा देखकर मुसकराया।

"क्या काम है? कितनी देर से यहां बैठे हो?"

"मुझे आपसे कोई काम नहीं है। आप अकेले थे, मैंने सोचा कि थोड़ी देर बात कर आपका जी बहलाऊंगा।"

"यह तो तुमने अच्छा किया। लेकिन, रात को अकेले आने में तुम्हें डर नहीं लगा।"

"मैं पास ही रहता हूं और अकसर डाक बंगले में आता रहता हूं। यहां आने

में डर की तो कोई बात ही नहीं है।''

''क्या तुम्हें बेतालघाट के भूत से भी डर नहीं लगता ?''

उसने हंसकर जवाब दिया, ''नहीं, मुझे किसी से भी डर नहीं लगता। लेकिन आपको भूत से क्यों डर लगता है ? क्या किसी भूत ने आपको सताया है ?''

''नहीं, नहीं, भूत ने मुझे बिलकुल नहीं सताया है, लेकिन यहां का वातावरण बहुत अजीब-सा है।''

''यह तो आप ठीक कहते हैं कि यहां का वातावरण अच्छा नहीं है, पर ऐसा हमेशा नहीं था। एक जमाने में बहुत खुशनुमा था, तभी तो यहां पर चंपा और जीतू की प्रेम-कहानी ने जन्म लिया।''

''चंपा और जीतू की प्रेम-कहानी ?'' मैंने आश्चर्य से पूछा।

''कोई ३५ वर्ष पूर्व इस डाक बंगले का चौकीदार कुंवरसिंह था। वह अपनी इकलौती लड़की चंपा के साथ रहता था। चंपा की उम्र करीब १६ वर्ष थी। वह जितनी सुंदर थी, उतनी ही गुणवती भी। उन्हीं दिनों १८ वर्ष का जीतू बहुत सुंदर, बांका जवान था। उसका अपना गांव काफी दूर था। उसके मां-बाप की मृत्यु हो गयी थी। इसलिए वह अपने नाना-नानी के घर यहीं चला आया था।

''जीतू और चंपा में पहली मुलाकात में ही प्यार हो गया। कुंवरसिंह भी चंपा की शादी जीतू से करने के लिए तैयार था। उसी समय नैनीताल के एक बड़े ठेकेदार ने पास के जंगलों में लकड़ी काटने का ठेका लिया और यह काम देखने के लिए अपने एक पुराने आदमी चरनदास को मैनेजर बनाकर बेतालघाट भेजा। उसे शराब और जुए की बुरी आदत थी। उसने ठेके के रुपयों में से भी गबन किया था।
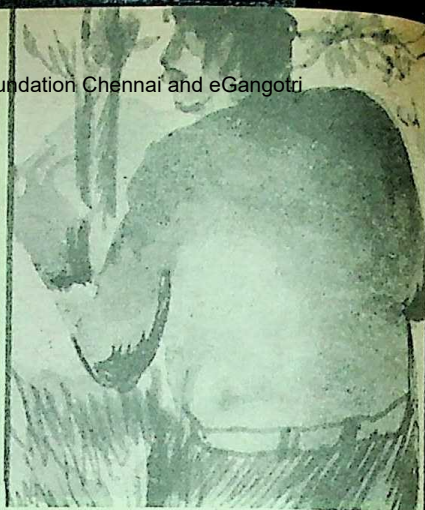
''चरनदास को जब ठेकेदार के आने का समाचार मिला, तब वह बहुत घबराया और अपने बचने के उपाय ढूंढ़ने लगा। ठेकेदार साहब रंगीली तबीयत के आदमी थे। इसलिए चरनदास ने चंपा को अपने बचाव का हथियार बनाना चाहा। इसीलिए चरनदास ने ठेकेदार साहब का डाक बंगले में ठहरने का प्रबंध किया।

''चरनदास को देखते ही ठेकेदार साहब बरस पड़े और तरह-तरह की गालियां निकालने लगे। चरनदास ने उनके पैर पकड़ उन्हें किसी तरह शांत किया। जब ठेकेदार साहब कुछ ठंडे हुए, तब उन्होंने आसपास नजर डालकर देखा कि सचमुच ही यह जगह बड़ी सुंदर है। इतनी सुंदर

जगह में अगर कोई रंगीली शाम मिल जाए तो कैसा हो, यह सोचते हुए वह पलंग पर लेट गये। थोड़ी देर बाद कुंवरसिंह उनके लिए चाय, नमकीन ले आया। शाम होते-होते शराब के दौर पर दौर चलने लगे और चरनदास की लच्छेदार बातें। जब शराब का दौर शुरू हुआ, तब चरनदास ने अपने एक खास आदमी को दो विलायती बोतलें दे समझा-बुझाकर कुंवरसिंह के पास भेजा। आदमी कुंवरसिंह को अलग ले गया और कहा कि उसके काम से खुश होकर ठेकेदार साहब ने उसके लिए दो विलायती शराब की बोतलें भेजी हैं। विलायती शराब की बोतलें देखकर कुंवरसिंह अपने को रोक नहीं सका और दोनों बोतलें पीकर होशहवास खो बैठा।

"साढ़े आठ बजे चरनदास स्वयं रसोईघर में पहुंचा और चंपा से बोला कि ठेकेदार साहब को खाना चाहिए और कुंवरसिंह का कहीं पता नहीं चल रहा है। चंपा ने जब कुंवरसिंह को ढूंढ़ा, तब क्वाटर में बेहोश सोता पाया। उसकी इस हालत को देख चरनदास ने कहा कि खुद ही ठेकेदार साहब को खाना दे आये।

"बेचारी चंपा अपने बाप की नौकरी बचाने के लिए क्या नहीं करती? वह स्वयं ही खाना लेकर बंगले के अंदर जा पहुंची। चंपा को देखकर ठेकेदार साहब की लार टपकने लगी। जब चंपा कमरे से बाहर चली गयी, तब चरनदास ने ठेकेदार साहब से कहा, 'हजूर, मैंने इसके बाप से मिलकर सब बात तय कर ली है।'

"रात के साढ़े नौ बजे रसोईघर बंद कर चंपा सोने के लिए अपने क्वाटर जानेवाली ही थी कि चरनदास ने रसोईघर में आकर कहा कि ठेकेदार साहब को रात को दूध पीने की आदत है, वह एक गिलास उनके कमरे में दे आये।

"चंपा ने ऐसा ही किया। उस समय बंगले के आस-पास और कोई नहीं था। चंपा दूध का गिलास मेज पर रखकर बाहर आने लगी कि चरनदास ने कहा, गिलास ठेकेदार साहब के हाथ में दो। चंपा ने गिलास ठेकेदार साहब को पकड़ाने के लिए आगे बढ़ाया। उन्होंने एक हाथ से गिलास पकड़ा और दूसरे से कसकर उसकी कलाई पकड़ ली। चंपा का दिल बुरी तरह धड़कने लगा और उसके मुंह से एक चीख निकल गयी। सारा जोर लगाकर उसने ठेकेदार साहब के हाथ से अपनी कलाई छुड़ायी और सामने के दरवाजे से निकलने को दौड़ी। लेकिन चरनदास तब तक दरवाजा बंदकर उसके आगे आ खड़ा हुआ था। चंपा को उसने ठेकेदार साहब की ओर ढकेल दिया।

"थकी-मांदी होने पर भी चंपा ने काफी देर तक अपनी लाज बचाने के लिए लड़ाई की और अंततः बेहोश होकर गिर पड़ी।

"बंगले पर एकत्रित चरनदास के आदमियों में एक कन्हैया भी था, उसकी जीतू से मित्रता थी। जब उसने चंपा की चीख सुनी, तब वह बहाना बना चरनदास

के अन्य आदमियों से छुट्टी लेकर तीन मील दूर जीतू के पास पहुंचा। जीतू भागता हुआ डाक बंगले पहुंचा।

"चरनदास को देखते ही जीतू उस पर बाज की तरह झपट पड़ा और उसका गला दबोचने लगा। तभी चरनदास के आदमियों ने पीछे से बड़ी जोर से उसके सिर पर लाठी के वार किये। जीतू जमीन पर गिर गया। उसका सिर फूट गया था और कुछ ही क्षणों में उसके प्राण निकल गये। चरनदास ने जीतू की लाश कोसी नदी में फिकवा दी।

"रात को साढ़े तीन बजे चंपा को जब होश आया, तब वह बेहाल थी। उसके शरीर में हिलने तक की भी ताकत नहीं थी। फिर भी वह लड़खड़ाते कदमों से डाक बंगले के अहाते से निकलकर जीतू के घर का रास्ता लेने वाली ही थी कि तभी कन्हैया ने सामने आकर उसे बताया, मैंने जीतू को खबर दी थी और तम्हें बचाने के लिए वह आया भी था। लेकिन, चरनदास के आदमियों ने उसे मारकर नदी में फेंक दिया है।

"चंपा ने जब यह सुना तो वह उलटे पांव लौट गयी। नदी में कूद पड़ी। मरकर उनका फिर से मिलन हो गया। तब से उनकी आत्माएं यहां आसपास घूमती रहती हैं।"

चंपा और जीतू की प्रेम कहानी सुनाकर लड़का चुप हो गया था। कुछ देर हम यूं ही बैठे रहे। चंपा और जीतू की प्रेम-कहानी ने मेरे हृदय को छू लिया था और ऐसा लगता था कि लड़के द्वारा मुझे स्वप्नलोक में पहुंचा दिया गया है। मैंने विस्मित होकर जब उससे पूछा, "तुमको जीतू-चंपा की प्रेम-कहानी की इतनी प्रामाणिक जानकारी किसने दी?" तो प्रत्युत्तर में मधुर-मुसकान बिखेरते हुए उस लड़के ने कहा, "मैं ही तो वह जीतू हूं", और इस उत्तर के साथ ही वह अदृश्य हो गया।

—बी-६१२, मल्टी स्टोरीड फ्लैट, रामकृष्णपुरम, नयी दिल्ली

भूत ने पलंग से उठाकर पटक दिया

खंडाला में शूटिंग चल रही थी। मुझे रात को वहीं रुकना पड़ा। होटल में रात के बारह बजे होंगे कि मुझे लगा मेरी चादर धीरे-धीरे खिसक रही है। मैंने जागकर देखा तो कहीं कुछ नहीं था। मैं फिर सो गया। थोड़ी देर बाद फिर वही हरकत यानी चादर का खिसकना शुरू हो गया। मैंने कलाम पाक की आयतें पढ़ीं और सो गया। लेकिन थोड़ी देर बाद मेरी चादर फिर खिसकने लगी। तभी धम्म की आवाज हुई, देखा कि मेरा साथी पलंग से नीचे जमीन पर गिरा पड़ा है। उसने बताया कि किसी ने मेरा पलंग उलटकर मुझे गिरा दिया है। बैरे को बुलाया। बैरे ने बताया कि इस कमरे में एक भूत का निवास है, इसीलिए यह कमरा किसी को नहीं दिया जाता। इस कमरे में रहनेवाले के साथ कुछ न कुछ घटता जरूर है। —जगदीप, फिल्म-अभिनेता

उड़ीसा के प्रख्यात संत स्वामी पूर्णानंद सरस्वती समस्त देश में 'उड़िया बाबा' के नाम से विख्यात थे। वे एक सिद्ध पुरुष तथा त्रिकालदर्शी संत थे। स्वर्गीय मां आनंदमयी ने एक बार कहा था, 'पूज्य उड़िया बाबा को अन्नपूर्णा की सिद्धि थी। हमने उनके अनेक चमत्कार देखे हैं।'

उड़िया बाबा जन्मे अवश्य उड़ीसा में थे, परंतु उनका कार्य-क्षेत्र हमेशा उत्तर भारत ही रहा। गंगा तट उन्हें बहुत प्रिय
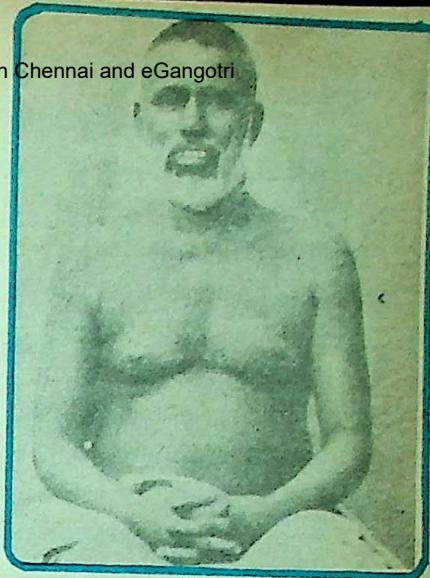
उन्होंने भूत की चुनौती स्वीकार की

• शिवकुमार गोयल

था। वे गढ़मुक्तेश्वर, कर्णवास, अनूपशहर, राजघाट, नरौरा आदि क्षेत्रों में विचरा करते थे। उन्होंने सिद्धियों के बल पर हजारों व्यक्तियों को बीमारियों तथा दुर्व्यसनों से मुक्त कराया था। सैकड़ों लोगों को प्रेत-बाधा से मुक्ति दिलायी थी।

मेरे पिताजी स्व भक्त रामशरण दासजी पर बाबा की असीम कृपा थी। पिताजी ने पूज्य बाबा, मां आनंदमयी तथा श्री हरिबाबा के साथ गंगा के किनारे सैकड़ों मील की यात्रा की थी।

प्रेत से मुक्ति

प्रख्यात संत स्वामी अखंडानंद सरस्वती उड़िया बाबा के अनन्य भक्तों में से एक हैं। वे बीसियों वर्ष बाबा के सान्निध्य में रहे। उन्होंने स्वयं उनके अनेक चमत्कारों की अनुभूति की थी, जिनकी चर्चा उन्होंने निम्न शब्दों में की है—

'एक बार मेरे पितामह ने कुछ भूमि खरीदी। जब हम उसका उपभोग करने लगे, तब कुछ प्रेतों ने उसमें बाधा उपस्थित कर दी। उसी दौरान एक दिन पूज्य उड़िया बाबा ने स्वप्न में मुझे दर्शन दिये और कहा, "अब तुम जमीन को जोत-बो सकते हो, परंतु उसकी पैदावार को अपने काम में न लाकर धर्म के काम में लगाना।" उसके बाद उस जमीन पर कभी प्रेत नहीं आये।

'इससे पहले वृंदावन की घटना है। उस समय मैंने संन्यास नहीं लिया था। रात के समय आश्रम की छत पर लेटा-हुआ था। स्वामी निर्मलदास मेरे साथ थे। हम दोनों ने विचार किया कि एकांत-वास किया जाए। प्रातः चार बजे हम बाबा के पास पहुंचे। वे देखते ही बोले, "शांतनु, तुम दोनों का एकांतवास ठीक नहीं है।" मैं चौंक गया कि क्या महाराजजी ने हमारी बात जान ली है? मैंने मन में सोचा कि यदि ऐसी बात है, तो इसी समय वे मुझे खाने के लिए कुछ दें, तब समझूंगा कि वे मेरे मन की बात जान गये हैं।

'अचानक बाबा ने सेवक को पुकार कर कहा, "भैया, 'शांतनु' को इस समय भूख लगी है। कुछ लाओ तो।" बाबा ने पेड़े तथा केले मुझे दिये। मैं उनके इस चमत्कार के आगे नतमस्तक हो उठा। उड़िया बाबा निर्वाण के बाद भी मुझे स्वप्न में दर्शन देते रहे हैं।'

प्रेत ने उन्हें कुश्ती की चुनौती दी

बाबा ने अनेक प्रेतों का भी उद्धार किया

सिद्ध पुरुष बाबा किशोरी रमन

मेरठ के एक वकील साहब का जवान लड़का असाध्य रोग से एक महीने से बीमार था। बचने की कोई उम्मीद नहीं रही, तब वकील साहब वृंदावन में एक सिद्ध प्रज्ञाचक्षु बाबा के पास पहुंचे और प्रार्थना की कि वह मेरठ चलकर लड़के को एक बार देख लें। बाबा ने लड़के को देखा और इसके बाद बोले कि मुझे अभी इसी रात वृंदावन लौटना है। वह सीढ़ियां उतरने लगे, तब उन्हें खून की दो-तीन उल्टियां हुईं और उनकी हालत खराब हो गयी। वकील सहाब ने कहा कि वह अभी रात में वृंदावन न लौटें, लेकिन वह नहीं माने।

वृंदावन पहुंचकर बाबा की तबियत और खराब हो गयी। वकील साहब बाबा की तबियत खराब होने का जिम्मेदार खुद को मानकर दुःखी थे, पर बाबा ने उन्हें कहा कि वह मेरठ लौट जाएं।

जब वकील सहाब मेरठ पहुंचे, तब उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनका लड़का ठीक हो गया है। बाद में पता चला कि बाबा अगले कुछ दिन बीमार रहे फिर लड़के के ठीक होते ही वे स्वतः ठीक हो गये।

असल में बाबा ने उस लड़के की बीमारी अपने ऊपर ले ली थी जिससे वह लड़का बच गया। योगी और सिद्ध-पुरुष दूसरों के दुःख-दर्द और बीमारियों को अपने ऊपर झेलकर दूसरों का कल्याण करते हैं। ऐसे ही सिद्ध-पुरुष थे वृंदावन के सूरदास बाबा किशोरीरमनजी महाराज तिलपतवाले।

—योगेंद्र पुरी

था। मेरे पिताजी एवं भक्त रामशरण-दास जी ने बताया था कि एक बार बाबा कर्णवास (जिला बुलंदशहर का गंगा तट स्थित स्थल) में विराजे हुए थे। मां आनंदमयी तथा अन्य संत भी उनके साथ थे। जंगल में विचरण करते समय बाबा की भेंट एक उत्पाती प्रेत से हो गयी। प्रेत ने झाड़ी से निकलकर बाबा को चुनौती दी, "बाबा, मैं तुमसे कुश्ती लड़ूंगा।"

"हम साधु हैं, कुश्ती नहीं लड़ते।"

"मैं कुश्ती लड़कर रहूंगा", कहते-कहते प्रेत बाबा पर झपट पड़ा।

बाबा ने मंत्र-शक्ति से उस पर प्रहार किया कि वह बुरी तरह चिल्ला उठा, "बाबा मैं गल रहा हूं, मेरा उद्धार करो।"

बाबा ने कहा, "अभी चलकर गंगाजी में स्नानकर, गंगाजल का पानकर और प्राणियों को न सताने की कसम खा। तेरा उद्धार हो जाएगा।"

दूसरे दिन प्रेत फिर बाबा के पास आया और बोला, "महाराज, गंगा-स्नान तथा किसी को न सताने के संकल्प से मुझे शांति मिली है। अब किसी से मेरा श्राद्ध कराकर मेरा उद्धार कराने की कृपा करें।"

बाबा ने एक गृहस्थ से श्राद्ध कराकर उसका उद्धार कराया।

—द्वारा 'धर्मदूत' पाक्षिक, पिलखुआ

सिद्ध-बाबा जगन्नाथदास

एक बार सारा नवद्वीप बाढ़ से डूब गया। सभी द्वीप छोड़ गये। लेकिन सिद्ध बाबा जगन्नाथदासजी अपने सेवक बिहारी बाबा के साथ वहीं डटे रहे। बिहारी बाबा को ज्वर हो गया। बाबा के एक शिष्य गौरहरिदास बाबा बड़ाल घाट से खिचड़ी पकाकर उन्हें दे जाते। जब जल-प्रकोप और बढ़ा, तो गौरहरि का आना भी संभव न रहा। इधर बिहारीदास बाबा की अवस्था बिगड़ती ही गयी।

श्री प्यारेमोहन गोस्वामी ने कलकत्ते से डॉक्टर बुलवाया। डॉक्टर ने कहा कि हालत बहुत खराब है, रात में ही शरीर छूट जाएगा। इस पर सिद्ध-बाबा बोले, "अच्छा! तो फिर मैं इसकी चिकित्सा करूंगा।" उन्होंने गिरधारी की चरण-तुलसी मंगाकर बिहारीदास बाबा के मुख में डाली और माला ले उनके सिरहाने बैठ गये। बोले, "यहां बैठा हूं, देखूं किसमें ताकत है, जो इसे ले जाए!"

आधा घंटे बाद बिहारी बाबा ने आंखें खोल दीं! सिद्ध-बाबा बोले, "क्यों रे? कहां जा रहा था मुझे छोड़कर? उठ! मैंने बाइस दिन से मुंह भी नहीं धोया, चल उठकर रसोई बना!" और बिहारी बाबा उठ खड़े हुए।

ऐसे थे परदुःख कातर ब्रजवासी चमत्कारी बाबा जगन्नाथ दास।

—रामस्वरूप पाठक

देव हासनानी, जयपुर: सात वर्ष पहले मेरा विवाह हुआ था। दस माह बाद कुछ गलतफहमी के कारण पत्नी सामान आदि लेकर घर छोड़कर चली गयी। उससे मेरा एक लड़का भी है। मैं जब उसे लिवाने गया, तो मुझे मारकर भगा दिया गया और मुझ पर धारा ३६३/५११ का केस लगा दिया गया। मेरी पत्नी न तो तलाक लेना चाहती है और न आना ही चाहती है, बल्कि मुझे परेशान और जेल भेजना चाहती है। बताइए मैं क्या करूं?

यदि आप पत्नी से तलाक नहीं चाहते, तो हिंदू विवाह अधिनियम की धारा ६ के अंतर्गत दांपत्य अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए आवेदन कर सकते हैं।

संस्था का गठन

अवधेशकुमार द्विवेदी, छतरपुर: क्या किसी ऐसी हिंदी संस्था का गठन किया जा सकता है, जिसके माध्यम से नये लेखकों से रचनाएं मंगायी जा सकें और रचनाओं के साथ मंगाये गये प्रवेश-शुल्क की राशि से उन्हें पुरस्कृत किया जा सके।

लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए संस्था का गठन करने पर कोई कानूनी रोक नहीं है। हां, यह जरूर है कि संस्था का संचालन विधिवत हो और उसका पूरा हिसाब रखा जाय।

बड़े भाई ने हिस्सा दबा लिया

क. ख. ग., मौजपुर, दिल्ली: हम तीनों भाइयों ने सात महीने पहले अपनी पैतृक जमीन छियासठ हजार रुपये में बेची थी। जिसमें से मंझले भाई ने अपने हिस्से के बाइस हज़ार रुपये उसी समय प्राप्त कर लिये। मैंने अपना हिस्सा बड़े भाई के कहने में आकर उनके पास ही रहने दिया। अब उन्होंने मेरे और अपने हिस्सों के सारे रुपयों से अपनी पत्नी के नाम एक मकान खरीद लिया है। बताइए, अब मैं बड़े भाई से अपने हिस्से के रुपये कैसे प्राप्त करूं?

आप अपने रुपये की वसूली के लिए न्यायालय में दावा कर सकते हैं। इस दावे में यदि आप चाहें, तो अपना रुपया देने से अदायगी तक के ब्याज की मांग भी कर सकते हैं। न्यायालय में जाने से पूर्व यह उचित रहेगा कि आप एक ज्ञापन अपने बड़े भाई को भेज दें। हो सकता है ज्ञापन जाने से वह रुपया अदा कर दें।

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

सादे कागज पर वसीयत

श्यामकीर्ति सरन, मुरादाबाद : मैं पच्चीस वर्षीय हिंदू युवक हूं। मुझे बचपन में ही एक निःसंतान विधुर सज्जन ने विधिवत गोद ले लिया था। अपनी मृत्यु से पूर्व उन्होंने पांच आदमियों को साक्षी बनाकर एक सादे कागज पर वसीयत लिखकर, अपनी सारी संपत्ति का मुझे वारिस बनाया था। वसीयत में यह भी स्पष्ट उल्लेख था कि मैं वयस्क होने पर उनके प्रोविडेंट फंड की राशि का स्वामी हूंगा। वसीयत उन्होंने अपने रिश्ते के एक भाई को दे दी कि वह उसे मुझे वयस्क हो जाने पर दे दें। कृपया, बताएं कि वसीयत के सादे कागज पर लिखे होने, तथा इस समय मेरी कानूनन स्थिति क्या है ?

आप दत्तक पुत्र हैं। दत्तक पुत्र के रूप में भी आपको अपने पिता की संपत्ति पर अधिकार प्राप्त हो जाता है। वसीयत-नामा किसी विशेष प्रकार के कागज पर लिखा जाना आवश्यक नहीं होता। वसी-यत के लिए केवल दो साक्षी ही पर्याप्त होते हैं, आपके पिताजी ने तो वसीयत पर पांच व्यक्तियों की साक्षी करवायी है। अपने पिताजी की संपत्ति की, जिसमें उनके मालिकों के पास जमा पैसा भी सम्मलित है, मांग कर सकते हैं।

उधार पैसा वापस कैसे लूं

मनोज बुंदेला, उज्जैन : मेरे साले का एक दोस्त है, जो मोटर-सायकिल मैके-निक है। मैंने उसे अपने लिए एक मोटर-सायकिल खरीद देने के लिए बिना किसी लिखा-पढ़ी के नवंबर, १९८० में पांच हजार रुपये दिये थे, लेकिन उसने न तो आज तक मोटर-सायकिल लेकर दी, न रुपये ही वापस दे रहा है। मैंने जो पांच हजार रुपये उसे दिये थे, उसमें से कुछ रुपये एक सहकारी समिति से कर्ज लेकर दिये थे। रुपये अपने साले की पत्नी द्वारा दिलवाये थे। पैसे मांगने पर वह यही कहता है कि जल्दी ही सारा पैसा दे देगा।

रुपया देते समय यदि लिखा-पढ़ी करा ली जाए, तो वह रुपया देने का एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण होता है, और आव-श्यकता पड़ने पर उससे लाभ उठाया जा सकता है। लिखित प्रमाण न होने के कारण आपका रुपया वसूल करने का अधिकार समाप्त नहीं हो जाता। आप अपनी रकम वसूल करने के लिए वाद प्रस्तुत कर सकते हैं। साले की साक्षी तथा सहकारी समिति से रुपया उधार लेने के प्रमाण न्यायालय में प्रस्तुत कर आप अपना पक्ष प्रमाणित कर सकते हैं।

इनाम भी मजदूरी है

नरसिंह राव, पटना : दस वर्ष पूर्व हमारी फैक्टरी में मजदूरों और मालिकों के बीच एक समझौता हुआ था, जिसके अनुसार हर उस कर्मचारी को, जो रोजाना एक खास मात्रा से अधिक उत्पादन करेगा, उसे एक विशेष दर से इनाम दिया जाएगा। क्या इस इनाम की राशि पर मालिकों

को कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के अंतर्गत विशेष अंशदान देना होगा ?

कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम की धारा २ (२२) के अंतर्गत मजदूरी की व्याख्या की गयी है। इनाम भी कर्मचारी को उसकी सेवा के उपलक्ष में दी जानेवाली मजदूरी ही है, और वह आपस के समझौते व शर्तों के आधार पर निर्धारित होती है। अतः यह राशि उक्त मजदूरी की परिभाषा में आएगी और उक्त राशि पर फैक्टरी-मालिक को विशेष अंशदान देना होगा। इस संबंध में दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा आदेश के विरुद्ध प्रथम अपील संख्या ६०, वर्ष १९७२ में दिया गया निर्णय उल्लेखनीय है।

मकान खाली करना होगा ?

सुधीश शर्मा, मेरठ : किराये के मकान में रहते हुए करीब १४ वर्ष हो गये हैं। किराये की रसीद वह हमें देता है। मकान, मकान-मालिक के लड़के के नाम से है। वह हमसे मकान खाली कराने के लिये कह रहा है, वैसे उसके नाम एक और मकान है। क्या वह मकान खाली करा सकता है?

आपको किराये की जो रसीद मिलती है, वह चाहे मकान-मालिक स्वयं देता हो, या उसका अविभावक, इससे आपके अधिकार पर कोई अंतर नहीं पड़ता। किरायेदार से मकान खाली करवाने के लिए ठोस कारणों का होना आवश्यक है। मकान-मालिक किस आधार पर म[illegible] खाली कराना चाहता है, इसका उ[illegible] आपने अपने पत्र में नहीं किया। उ[illegible] प्रदेश में मकान खाली कराने के [illegible] उत्तर प्रदेश शहरी भवन किराये पर [illegible] व खाली कराने संबंधी अधिनियम में [illegible] गये आधारों का होना जरूरी है।

पत्नी के नाम खेत

गुलाबसिंह, फरीदाबाद : मेरी पत्[illegible] नाम सुसराल में खेत है, जिस पर उ[illegible] चाचाजी व उनके लड़के खेती कर[illegible] हैं। पत्नी के माता-पिता की मृत्यु उ[illegible] शादी के पहले ही हो गयी थी, यद्यपि [illegible] ने नाम नहीं डलवाया था, लेकिन बा[illegible] होने के कारण उसका नाम पड़ गया [illegible] क्या मेरी पत्नी का उसके पिता की ज[illegible] पर अधिकार है या नहीं ?

परेशानी कौन पैदा कर रहा [illegible] क्या किसी व्यक्ति ने आपकी पत्नी [illegible] अधिकार को चुनौती दी है। यदि [illegible] तो किसने ?—जैसे, कुछ महत्त्वपूर्ण प्र[illegible] का विवरण आपके पत्र में नहीं है। आ[illegible] पत्नी का नाम संपत्ति के स्वामी के [illegible] में पड़ चुका है। चाचा तथा उनके [illegible] अपना नाम जमीन के साथ किस रू[illegible] जोड़ रहे हैं, तथा पटवारी के पास उ[illegible] क्या विवरण है—यह देखना आव[illegible] है। यदि उन्होंने स्वयं को भूमिदार के [illegible] में प्रदर्शित करा रखा है, तब आपकी [illegible] के अधिकार पर अंतर अवश्य पड़ेगा।

दो कनाडियन कविताएं

तेरे चेहरे का अक्स

तुम हो जैसे
एक द्वार आकाश में जा खुलता हो
तुम्हारी दहलीज पर पहुंचते
एकदम सूनापन दिखता है
तुम्हारी परछाई चटाई तले जा घुसती है
और तुम्हारी सुगंध डाक-बक्स में
हवा में सूर्यास्त की मद्धिम-सी आभास
हमारी दूरी को और गहरा देती है
तुम्हारी छाया की-सी परछाई
शून्य गहराइयों में मंडराती
मानो खोखले शब्द निर्जीव आकार में
झूठे बयान की आवाज उठा
अब मेरे पांव में आ गिरे हों
ये पिचपिचे बेकार शब्द
पुरस्कार हैं बीते गम के
भटकते हुए पीछा करने के बोझ को
अंधेरे की भीति से टिका,
निर्मुक्त, निरुद्वेग
अब मैं इंतजार में हूं
तुम्हारे चेहरे के अक्स की

आर. ए. फोर्ड—कनाडा के सुप्रसिद्ध कवि। बहुभाषाविद फोर्ड ने मौलिक रचनाओं के सृजन के अतिरिक्त रूसी, फ्रांसीसी तथा स्पेनिश भाषाओं की भी अनेक कविताओं का अनुवाद किया है। फोर्ड की कविताएं मर्मस्पर्शी तो होती ही हैं, बहुत कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाती हैं। फोर्ड एक कुशल एवं सफल डिप्लोमेट भी हैं।

यादों के टुकड़े

झूठे वायदों के खंडहर
धोखेबाजी के जाल
दिमाग की तहों से चिपके हुए हैं
सावधानी से उतारना इन्हें
कहीं वेदना की कोई दबी हुई नस
फूट न पड़े।

—आर. ए. फोर्ड

(अनुवाद : शीला गुजराल)

सिद्ध पुरुष
देवरहा बाबा
बिना पेट्रोल के कार चली

● रामचन्द्र भारद्वाज
(संसद-सदस्य)

चमत्कारों के पीछे छिपी हुई ताकत को जानने के लिए मैं बचपन से ही जिज्ञासु रहा हूं, इसलिए जहां मुझे एक ओर विभिन्न प्रकार के चमत्कार प्रदर्शित करनेवाले लोगों के दर्शन हुए, वहीं ऐसे सिद्ध-पुरुषों के दर्शन भी, जिनके सान्निध्य में मन सहज ही पवित्र हो जाता है। ऐसे ही सिद्ध-पुरुष हैं देवरहा बाबा।

१९७८ में होली के अवसर पर मेरे अग्रज श्री चंद्रशेखर शर्मा ने यह सुझाव रखा कि होली में घर रहने के बजाय, वृंदावन चलकर योगीराज देवरहा बाबा के दर्शन किये जाएं। तद्नुसार हम पटना से होलिकादहन के दिन वृंदावन पहुंचे। प्रातः हम यमुना स्नानकर नौका द्वारा उस पार देवरहा बाबा के दर्शन के लिए चले। हम तीन थे—मैं, मेरे अग्रज और वृंदावन के प्रसिद्ध रामायणी इंद्रभूषणजी के सुपुत्र।

देवरहा बाबा पूरे साल जाड़ा-गरमी-बरसात वस्त्रहीन नदी में बने मचान पर या नदी के तट पर बने मचान पर वास करते हैं, जो प्रायः निर्जन स्थान में हुआ करता है—चाहे बाबा प्रयाग में रहें या हरिद्वार में या फिर अपने आश्रम लार रोड में। लार रोड स्टेशन उत्तर-पूर्वी रेलवे के भटनी जंक्शन से ब्रांच लाइन पर है।

उस पार पहुंचकर किनारे-किनारे पैदल चलकर हम बाबा के आश्रम तक गये। मैंने रास्ते में भाई साहब से कहा कि ये नाववाले बाबा के आश्रम तक लोगों को क्यों नहीं ले जाते? कोई ऐसी व्यवस्था रहनी चाहिए, जिससे नाव इस पार से सीधे बाबा के आश्रम के पास उस पार लगे! मैं जब बाबा के आश्रम पहुंचा, तब वहां कोई नौका नहीं थी, मगर जब दर्शन कर लौटा, तब आश्चर्यचकित रह गया यह देखकर कि ठीक बाबा के मचान के पीछे यमुना में एक छोटी-सी उजली खूबसूरत नाव—हंसिनी-सी खड़ी थी। उस पर एक सरदारजी अपनी पुत्री के साथ बैठे थे। नाविक-जैसे हमारी ही प्रतीक्षा में ठहरा हुआ-सा था।

दूसरे किनारे पर पहुंचकर मैंने नाव-वाले से पूछा, "कितने पैसे दूं ?" उसने कहा, "हम पैसे नहीं लेते, बाबा के दर्शन करनेवालों को यमुना पार करा देते हैं।" वह नाव कहां छिपी थी, उस पर बैठे आदमी कहां से आये थे और फिर हमें छोड़कर वह नाव कहां गयी—अब तक मेरे लिए एक रहस्य है।

बीमार भाई को ठीक किया

मेरे अग्रज पटना में सख्त बीमार थे। डॉक्टरों के अनुसार डेढ़ महीने से पहले उनके लिए बिस्तर से उठना संभव नहीं था। अस्पताल में उनके कमरे में मैं चिंता-मग्न बैठा था, उनका पुत्र मुन्ना भी मेरे पीछे खड़ा था। मैं मन ही मन बाबा का स्मरण कर रहा था कि तभी बगलवाले कमरे की खिड़की से किसी ने कहा, "दो-तीन दिन में अच्छे होकर घर चले जाएंगे, मुझे 'मैसेज' मिल गया है, मैं उन्हें देखने भी जाऊंगा।" मैंने जब तक मुड़कर देखा, तब तक खिड़की बंद हो चुकी थी। मैंने समझा उसमें भी कोई मरीज होगा, मगर मुन्ना ने बतलाया कि अस्पताल से लगा जो चर्च है, वे उसके पादरी थे। मैं जरूरी काम से पटना चला गया। तीन दिन बाद लौट-कर अस्पताल पहुंचा, तो मालूम हुआ कि अग्रज अच्छे होकर घर चले गये हैं। घर जाने पर मालूम हुआ कि बाबा को उनकी बीमारी की सूचना मिल चुकी थी और उन्होंने अस्पताल में प्रसाद भिजवा दिया था।

मेरे चाचाजी उमा-शंकर बाबू सीतामढ़ी में प्रथम श्रेणी के अवैतनिक मजिस्ट्रेट थे। उन्होंने मुझे जो आप-बीती सुनाई, वह चम-त्कृत कर देनेवाली है।

देवरहा बाबा

एक बार चाचाजी पूरे परिवार के साथ कार द्वारा लार रोड स्थित बाबा के आश्रम गये। लौटते समय रात गहराने लगी सीवान और छपरा के बीच में कार एकाएक बंद हो गयी। पेट्रोल पूरी तरह चुक गया था।

चाचाजी ने सुन रखा था कि एक बार बाबा कहीं दूर किसी धर्म-सम्मेलन में जा रहे थे। गाड़ी में पेट्रोल कम था और इतनी देर से चले थे कि सम्मेलन में समय पर पहुंचने की आशा बिलकुल नहीं थी। फिर भी बाबा ने ड्राइवर से कहा, "गाड़ी बढ़ाओ, समय पर पहुंचना है", और आश्चर्य यह कि बिना पेट्रोल के चार घंटे की दूरी दो घंटे में तय कर बाबा ठीक समय पर सभा-मंडल में पहुंच गये।

चाचाजी को वही घटना याद आ गयी और उन्होंने गाड़ी की स्टेयरिंग पर बैठे अपने दामाद को कहा, "आप गाड़ी 'स्टार्ट' कीजिए।" उसने कहा, "पिताजी इसमें तेल तो है ही नहीं, फिर गाड़ी चलेगी कैसे ?" चाचाजी ने बड़े विश्वास के साथ आदेश दिया, "बाबा का नाम लेकर गाड़ी स्टार्ट कीजिए।" उन्होंने ऐसा ही किया और गाड़ी सरपट दौड़ने लगी।

—१-ए, सुनहरी बाग रोड, नयी दिल्ली-११

हंसाइयां

पत्नी : बहुत बुरी हूं मैं ! जरा-सी बात पर आपसे नाराज हो गयी और पूरे हफ्ते नहीं बोली। मुझे क्षमा कर दो !

पति : क्षमा गयी भाड़ में। तुम एक हफ्ते और न बोलती, तो मैं तुम्हारी फरमाइशों से बचा रहता और मजे में सौ-पचास और बचा लेता।

"एक रिपोर्ट को लीपा-पोती भी कायदे से नहीं कर सकते ? क्या इतने वर्षों से तुम इस विभाग में घास छीलते रहे हो !"

व्यंग्य-चित्र : ल. अशोक

फिल्म-निर्माता ने अभिनेता बनने को उत्सु[क] एक नवयुवक को तसल्ली देने के लि[ए] कहा, "आप अपना पता नोट करा दें[,] जब किसी बूढ़े अभिनेता की जरूर[त] होगी, आपको बुला लिया जाएगा।"

"पर श्रीमानजी, मैं तो जवान हूं।"

"अभी न ! पर जब तुम्हें बुलाया जाएगा, तब तक तुम बूढ़े हो चुके होगे।"

★

महात्माजी ने प्रवचन के बाद पूछा, "कौन-कौन स्वर्ग जाना चाहता है ?"

सबने हाथ ऊपर उठा दिए, ए[क] श्रोता ने नहीं उठाया। महात्मा ने उस[से] पूछा, "क्या तुम स्वर्ग नहीं जाना चाहते?"

"नहीं, मैं सबके साथ स्वर्ग नहीं जाना चाहता। ये सब चले जाएंगे, तो मैं यहीं पर शांति से रह लूंगा।"

—भैरूंलाल ग[र्ग]

★

"मेरे पति मेरा बहुत कहना मानते हैं[,] कभी बहस तक नहीं करते।"

"लेकिन, कल तो तुम्हारे पति जोर-जोर से कह रहे थे कि तुम्हारी ये बातें मु[झे] अच्छी नहीं लगतीं !"

"हां, दरअसल, उनसे मैंने कहा था कि रहने दो, आज बरतन मैं मांज लूंगी।"

★

एक मासिक पत्रिका के संपादक ने एक लेख[क] को पत्र लिखा, 'हमें अपनी पत्रिका [के] बीस वर्ष पुराने अंक चाहिए। क्या आ[प] देने की कृपा करेंगे ?'

'आपको कैसे पता लगा कि मेरे पास वे अंक हैं?' लेखक ने पत्र लिखकर पूछा।

'आप जो रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजते हैं, उन्हें देखकर।'

★

"आज तो खुश हो जाओ", पति ने घर में घुसते हुए पत्नी से कहा, "मैंने बीस हजार रुपये का जीवन बीमा करा लिया है।"

पत्नी ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा, "इसमें खुश होने की क्या बात है? मुझे तो सच्ची खुशी उस दिन होगी, जिस दिन पैसे मेरे हाथ में आएंगे।"

—रेखा सक्सेना

★

अधिकारी: गुप्ताजी! आप रोज दफ्तर लेट आते हैं! श्रीमती बटाटावाला आप से दूर रहती हैं, फिर भी जल्दी आती हैं।

गुप्ताजी: सर! मैं इस बारे में कुछ करूंगा।

अधिकारी: 'कुछ', मतलब क्या करेंगे?

गुप्ताजी: जी! मैं श्रीमती बटाटावाला से कहूंगा कि वे जल्दी न आया करें!

—रतीलाल शाहीन

★

पत्नी को फोन पर आधे-आधे घंटे तक बात करने की आदत थी। उस दिन भी वह किसी से बात कर रही थी। पति उसके पास ही बैठा था। दस मिनट के बाद रिसिवर रखने पर पति ने अचंभे से पूछा, "आज बड़ी जल्दी बात खत्म हो गयी?"

"जी, दरअसल, रांग नंबर मिल गया था।"

—मनोजकुमार काबरा

हंसिकाएं

बोली

प्यार में मैं तो हार गयी
भाषा न समझे तो
बोली मार गयी

सुलेख

हिंदी के अध्यापक को
बच्चों का लेख सुधारते समय लगा
विधि का लेख भी
काफी खराब था

खटका

उनका देश-विदेश से
सम्मान पाना
पत्नी की आंखों में गड़ता है
भन्नाकर कहती हैं,
"घर में न मिले तो
(सम्मान के लिए)
भटकना ही पड़ता है"

अन्यार्थ

डॉक्टर बेटे को
हर बात में विवाद करते देखकर
उन्होंने कहा,
"डॉक्टरी पढ़कर भी तू तो हमेशा
वकालत ही करता रहा"

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

झगड़ा शांता आप्टे और वी. शांताराम का

● डी. आर. मानके[illegible]

वि-शाल पीपल की छांह में, अस्थायी तौर पर बनाये गये एक शानदार बिस्तर पर, नीचे गले का चमचमाता स्लीपिंग सूट पहने, लेटी शांता आप्टे अखबार के फोटोग्राफरों और रिपोर्टरों का इंतजार कर रही थी, लेकिन वे नहीं आये। उसके पीछे मैंने एक थर्मस और ग्लैक्सो का डिब्बा भी देखा था शायद। लेकिन वह मेरा दृष्टि-भ्रम भी हो सकता था।

पच्चीस-छब्बीस बरस की शांता तरो-ताजा और स्टूडियो-फोटोग्राफ के बेहतरीन मॉडल-जैसी लग रही थी।

तीन दिन से वह इंतजार कर रही थी कि फोटोग्राफर और रिपोर्टर आकर उसका फोटो और इंटरव्यू लें, ताकि देश के अखबारों में 'शांता आमरण-अनशन पर'-जैसी सुर्खियां छपें और उसके मालिक [illegible] दबाव पड़ सके कि वह उसकी मांगें म[illegible] ले। लेकिन अफसोस, कोई संवाददा[illegible] उधर नहीं आया! सारी कोशिश बे[illegible] होती दिखती थी।

शांता का भाग्य शांताराम के हा[illegible] में था। शांताराम ने इस बात का ध्या[illegible] रखा था कि किसी को भी यह पता न [illegible] पाये कि शांता आप्टे ने प्रभात स्टूडि[illegible] के मैदान में क्या नाटक कर रखा है[illegible] शांताराम इस बात से मन ही मन प्रस[illegible] थे कि वह इसे गुप्त रखने में सफल र[illegible] शांताराम आश्वस्त थे कि जब लड़[illegible] को वास्तव में भूख सतायेगी, तो वह [illegible] आप धरती पर आ जाएगी।

शांता आप्टे के 'आमरण-अनशन' [illegible] चौथा दिन था, और वह बेचैन होने [illegible]

अपने समय की प्रसिद्ध अभिनेत्री शांता आप्टे उन दिनों शांताराम के प्रभात स्टूडियो में पांच सौ रुपये प्रतिमाह पर अनुबंधित थी, कुछ ऐसी बात हुई कि शांता शांताराम के खिलाफ भूख-हड़ताल पर बैठ गयी। इस 'बखेड़े' में एक पत्रकार के रूप में श्री मानकेकर ने जो भूमिका निभाही, वह यहां प्रस्तुत है...
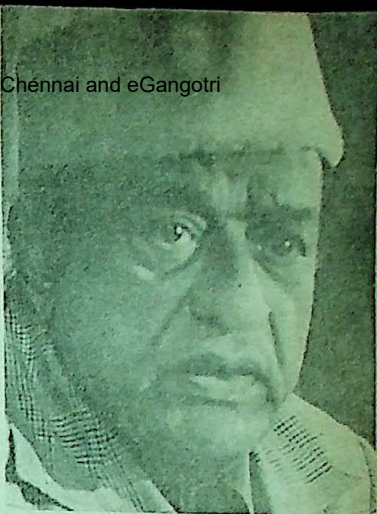
फिल्म निर्माता शांताराम

थी। तभी किसी ने मुझे प्रभात स्टूडियो की इस घटना का समाचार दिया। सुबह आठ बजे ही मैं साइकिल द्वारा प्रभात स्टूडियो के गेट पर पहुंच गया। उन दिनों मैं साइकिल की सवारी ही किया करता था। चौकीदार ने मुझे गेट के भीतर घुसने नहीं दिया। उसने कहा कि उसे किसी को भी भीतर न घुसने देने का हुक्म मिला है।

मैं वापस तीन मील दूर अपने दफ्तर-नुमा घर को लौटा। अपना सबसे बेहतरीन सूट पहना और सर्वाधिक नयी लगनेवाली टैक्सी में बैठ गया। उन दिनों टैक्सी में मीटर नहीं होते थे। और ड्राइवर को समझा दिया कि जब प्रभात स्टूडियो पर खड़ा चौकीदार रुकने के लिए कहे, तब रोकने से पहले वह टैक्सी को कुछ दूर तक आगे बढ़ा ले जाए। जैसा कि अनुमान था, जब हम गेट पर पहुंचे, तब चौकीदार ने चिल्लाकर रुकने को कहा, लेकिन रुकने से पहले हम स्टूडियो के मैदान में लगभग दस गज आगे बढ़ आये थे। चौकीदार गुस्से में था, लेकिन मैंने और ज्यादा गुस्से में होने का नाटक किया। अपना परिचय-पत्र उसे देते हुए कहा कि इसे फौरन अपने मालिक शांताराम को दिखाओ और कहो कि मैं सीधा बंबई से आ रहा हूं। मैंने उससे यह भी कहा कि जब तक तुम अपने मालिक का जवाब लेकर आओ, तब तक मैं यहीं इंतजार करूंगा।

चौकीदार मेरी रौबदार आवाज, सूट और कार से मेरे मनोनुकूल प्रभावित हुआ। डरकर मेरा परिचय-पत्र स्टूडियो के कार्यालय में ले गया।

इसी बीच मैं कार से उतरकर ऊपर, नीचे टहलने लगा। तभी मैंने शांता आप्टे को देखा, जो होंठों पर सुनियोजित मुसकान धारण किये मुझे बुला रही थी। शांता का भाई मेरी तरफ दौड़ा आया और मुझे उसके पास ले गया। उसने मेरे हाथों में एक परचा पकड़ाया, जिसमे मालिक

शांताराम के खिलाफ आरोप लिखे थे।

मैंने शांता से कुछ बातें कीं। परचा ले लेने के बाद, उसके बारे में इंटरव्यू करने के लिए कुछ खास नहीं रह गया था। मेरे लिए यह काफी विवरण-भरी कहानी थी।

वह वास्तव में कुशल अभिनेत्री थी। मुझसे बात करते हुए उसने बड़ी कुशलता से अपने स्वर को भर्रा लिया, आंखों में आंसू भर लायी और बताया कि मालिक उसके प्रति कितना क्रूर और ओछा है।

इसी बीच, चौकीदार मेरी तरफ दौड़ता हुआ आया। उसने मुझे बताया कि मालिक शांताराम ने मुझसे मिलने से मना कर दिया है, और मुझे तुरंत चले जाने को कहा। मेरा काम पूरा हो ही गया था; मैं अपने दफ्तर वापस लौट आया। तब तक ग्यारह बज गये थे और अखबार के सांध्य संस्करण में छपने के लिए समाचार को टेलीप्रिंटर के जरिए तुरंत भेजना था। दोपहर से पहले ही मेरा समाचार टेलीप्रिंटर पर चला गया और बंबई के 'इवनिंग न्यूज' में शांता आप्टे के फोटो के साथ वह काफी विस्तार से छपा।

बंबई के सांध्य समाचार-पत्र पूना में रात आठ बजे पहुंचे। शांताराम समाचार देखकर बौखला उठे। 'इवनिंग न्यूज' में जो कुछ छपा, वह पूरे विवाद में शांता आप्टे का इकतरफा बयान था और फिल्म-स्टार का मुझे दिया गया बयान फिल्म-निर्माता को रक्त-पिपासु पिशाच-जैसा लगा। लेकिन इसमें सारा दोष शांताराम का था। मैं तो दृष्टिकोण जानने के लिए उनके भी पास पहुंचा था, लेकिन उन्होंने मिलने से ही मना कर दिया, इस स्थिति में उनका बयान कैसे प्रकाशित होता।

शांताराम की दलील

रात के लगभग साढ़े आठ बजे शांताराम का फोन आया। पहले तो उन्होंने मुझ पर अपनी नाराजगी प्रकट की, फिर अपनी गलती महसूस करते हुए उन्होंने अपना दृष्टिकोण बताने के लिए मुझे अपने घर पर बुलाया और मुझे लिवा ले जाने के लिए अपनी कार भेजी।

असल बात यह थी कि शांता आप्टे शांताराम की खोज थी और प्रभात स्टूडियो से शायद, पांच सौ रुपये मासिक वेतन पर अनुबंधित थी। शांता को कहीं से पता लगा कि बंबई के फिल्म-स्टारों का वेतन दो हजार रुपये तक है।

शांता के अनुसार, शांताराम न तो उसे अनुबंध से मुक्त कर रहे थे और न बंबई फिल्म-जगत-जैसा वेतन ही दे रहे थे। उसे अभी डेढ़ साल और अनुबंध में रहना था। अतः शांता ने 'दुष्कर' चीज हासिल करने का फैसला किया और नाराजगी दिखाने लगी। जिसके लिए शांताराम ने उसे इस तरह दंडित किया कि उसे किसी फिल्म में भूमिका नहीं दी और रोजाना स्टूडियो आकर हाजिरी-रजिस्टर में दस्तखत करने को मजबूर किया।

निराश होकर, शांता ने मालिक को झुकाने और या तो अधिक वेतन देने या

बंबई जाने देने के लिए मजबूर करने का एकमात्र उपाय सिविल नाफरमानी इस्तेमाल करने का फैसला किया। उसे पूरा यकीन था कि अखबारों के 'दुष्प्रचार' से शांताराम उसे छोड़ने को मजबूर हो जाएंगे। लेकिन जब शांताराम ने उसे हर प्रचार से दूर रखकर स्टूडियो में बंद कर लिया, तब शांता की सारी योजनाएं धरी रह गयीं।

मैंने शांताराम का पूरा बयान ए. पी. आई. सेवा को भेजा। लेकिन तब तक शांता आप्टे के बयान और शांताराम के प्रतिवाद के बीच कम से कम सोलह घंटे का अंतराल आ गया था और इस सीमा तक शांताराम को 'दंड' भुगतना पड़ा। यह एक सबक था सार्वजनिक व्यक्तियों, खासकर राजनीतिज्ञों के लिए कि उन्हें संवाददाता से कोई खबर छिपाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए और यदि उन्होंने ऐसा किया, तो उन्हें इसके लिए पछताना होगा।

बावजूद इसके कि अखबारों में विवाद और प्रतिवाद छप गये थे, शांता आप्टे और शांताराम की समस्या अनसुलझी ही रही। फिल्म-स्टार ने स्टूडियो के प्रवेश-द्वार के पास ही पेड़ के नीचे अपना 'आमरण अनशन' जारी रखा, जो हर आने-जानेवाले के लिए तमाशा और शांताराम की आंखों के लिए किरकिरी बन गया।

आखिरकार, प्रभात स्टूडियो में उपस्थित अवरोध को दूर कराने के लिए मराठी के प्रख्यात साहित्यकार और फिल्म-निर्माता आचार्य पी. के. अत्रे तथा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण लोगों को, मध्यस्थता करने के लिए मनाया गया। आचार्य अत्रे के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि-मंडल शांताराम से मिला।

शांताराम उसकी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने और समस्या को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए इस शर्त पर सहमत हो गये कि शांता आप्टे अपने इस 'बखेड़े' को खत्म करके चुपचाप घर चली जाए। अत्रे यह आश्वासन लेकर शांता आप्टे के पास गये, जो अब सातवें दिन के अनशन पर थी और भूख से ज्यादा अपनी स्थिरता से बेचैन हो उठी थी। शांता आप्टे शांताराम के आश्वासन पर अपना अनशन तोड़ने के लिए इस शर्त पर सहमत हो गयी कि अनशन तुड़वाने के लिए संतरे के रस का गिलास शांताराम अपने

"आप टेलीविजन का मूल्य किश्तों में चुकाएंगे हम भी टेलीविजन किश्तों में देंगे. लीजिए पहली किश्त...।"

हाथों से उसके होठों से लगाये।

अब अत्रे का प्रतिनिधि-मंडल वापस शांताराम के पास गया। शांताराम ने जब शांता की इस शर्त को मानने से मना कर दिया, तब अत्रे को उन्हें यह समझाने की बेहद कोशिश करनी पड़ी कि स्टूडियो के गेट पर ही हो रहे इस बखेड़े से पीछा छुड़ाने का यही सबसे अधिक उपयुक्त और तात्कालिक तरीका है।

अंत में शांताराम राजी हो गये और जैसे ही शांताराम ने मौसमी का गिलास शांता के होठों से लगाया, वैसे ही फिल्म स्टार की आंखें आंसू और भावावेग से चमक उठीं और उसने जल्दी से संतरे का रस गटक लिया।

इसके बाद हमने समझा कि मानवीय गुणों से पूर्ण इस कहानी का सुखद अंत हो गया, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब शांता आप्टे ने मांग की कि शांताराम खुद उसे उठाकर कार में बिठायें। शांताराम गुस्से से बौखला गये। लेकिन शांता आप्टे ने तब तक अपने मखमली बिस्तर से उठने से इंकार कर दिया, जब तक शांताराम उसे न उठायें।

अब अत्रे प्रतिनिधि-मंडल ने शांता की मांग की 'अंतिम रस्म' अदा करने के लिए शांताराम को फिर मनाया।

अपने चेहरे पर क्रोध और घृणा का भाव लिये शांताराम आगे बढ़े और उसे कार तक ले जाने के लिए उठाने को झुके। जैसे ही वह झुके, शांता आप्टे ने शांताराम के गले में बांहें डालकर उनका आलिंगन कर लिया और फूट-फूटकर रो पड़ी। बदले में, शांताराम ने बहुत शायस्तगी के साथ उसे कार में बिठाया।

और तब मुझे यह साफ जाहिर हो गया कि इस घटना में व्यावसायिक विवाद से कहीं अधिक कुछ और बात थी।

—सी-४४, गुलमोहर पार्क,
नयी दिल्ली

प्रसिद्ध लेखक डिडेरो के पास एक नवोदित लेखक पांडुलिपि लेकर गया और बोला, "सर ! मैं चाहता हूं कि प्रकाशन से पूर्व आप इसे देख लें।" दूसरे दिन डिडेरो बोले, "वाह भाई वाह ! तुमने मुझे लक्ष्य बनाकर इस पुस्तक में मेरी खूब खिल्ली उड़ायी है। लेकिन इस से तुम्हें क्या लाभ होगा ?"

"सर ! यह भी प्रचार का एक तरीका है। क्यों कि मैं यह जानता हूं कि आपके विरोधियों की संख्या काफी है, सो पुस्तक खप जाएगी।"

"यह तो वाकई अच्छा तरीका है। अब तुम एक काम और भी करो ! एक आदमी के साथ मेरा धर्म के बाबत तीव्र मतभेद है। अगर तुम पुस्तक उसे समर्पित कर दो, तो वह खुश होकर तुम्हें जरूरत की रकम भी दे देगा ! अब तुम बढ़िया-सा समर्पण लिख डालो। अच्छा तो ठहरो मैं ही लिख देता हूं। आखिर पुस्तक से तुम्हारा और मेरा दोनों का ही प्रचार होगा, न।"... और उन्होंने समर्पण पृष्ठ लिख दिया। —दुर्गाशंकर त्रिवेदी

नयी कृतियां

उपन्यास एवं कथा-संग्रह

संधिकाल की औरत, जकड़न, लेखक—यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र', प्रकाशक—जयश्री प्रकाशन, ४।११५, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली, मूल्य—पंद्रह रुपये।

'संधिकाल की औरत' : सुपरिचित उपन्यासकार श्री यादवेन्द्र शर्मा चंद्र का लघु उपन्यास है, जिसमें उन्होंने चारु लता के माध्यम से दो पीढ़ियों के टकराव में झूलती नारी की मनोव्यथा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। चारु लता एक साहसी युवती है, जो अपने से वय में पांच-सात वर्ष छोटे परिवर्तन से विवाह के लिए पारिवारिक संबंधों को तोड़ देती हैं।

जकड़न : श्री 'चंद्र' की ग्यारह कहानियों का संग्रह है। इनमें 'एक चीखता शहर', 'धापली', 'चींचड़, 'जकड़न', 'स्वयं को निगलते हुए', 'आज की सीता' कहानियां कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

नपुंसक, लेखिका—कृष्णा अग्निहोत्री, प्रकाशक—इन्द्रप्रस्थ प्रकाशक, के-७१, कृष्णनगर, दिल्ली-५१; मूल्य—पंद्रह रुपये।

श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री हिंदी की सुपरिचित लेखिका हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में नारी-मन की व्यथा का झकझोरनेवाला चित्रण किया है। प्रस्तुत संग्रह में उनकी ग्यारह कहानियां संकलित हैं। 'चातकी' में यदि लाड़-प्यार से पाली गयी ऐसी नायिका का चित्रण है, जो विवाह के बाद पति के हठ के कारण मां के साथ मायके नहीं जा सकती, तो 'नपुंसक' में एक ऐसे युवक अभय की विवशता का चित्रण है, जिसे अपने भविष्य के लिए सहपाठिनी मित्र मीना को त्यागकर एक अफसर की बेटी सुषमा को अपनाना पड़ता है। संग्रह की प्राय: सभी कहानियों में आज के जीवन की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य है।

अन्नदा, लेखक—अमरनाथ शुक्ल, प्रकाशक—विद्या प्रकाशन मंदिर, १६८१, दरियागंज, नयी दिल्ली-२, मूल्य—पच्चीस रुपये।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने शोषित एवं पीड़ित अन्नदा की अदम्य जिजीविषा की प्रेरणास्पद कहानी कही है। अन्नदा—एक विधवा, जिसे उसका अपना बेटा 'रांड' कहकर तिरस्कृत करता है—लेकिन वह अपने व्यवहार से न केवल पुत्र वरन अपनी बहू का भी हृदय-परिवर्तन कर देती है। यह एक पठनीय पारिवारिक उपन्यास है।

नेफा : सुन्दरी नेफा, लेखक—वासुदेव वसु, प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन,

विशालक्षी भवन, चौक, वाराणसी-१; मूल्य--बीस रुपये।

देश के उत्तर-पूर्वी सीमांत नेफा की पृष्ठभूमि पर आधारित यह उपन्यास वहां के जन-जीवन एवं संस्कृति का अच्छा चित्रण करता है। बंगला में लिखे इस उपन्यास के अनुवादक हैं--बालकृष्ण गर्ग।

मन-मंजूषा, नेपथ्य-संगीत, लेखिका--आशापूर्णा देवी, अनुवादिका--श्रीमती अलका उपाध्याय, प्रकाशक--भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, मूल्य--क्रमशः पंद्रह रुपये, अठ्ठाईस रुपये।

आशापूर्णा देवी अब हिंदी पाठकों के लिए अपरिचित नहीं। 'मन-मंजूषा' और 'नेपथ्य-संगीत' उनकी दो मूल बंगला कृतियों के हिंदी अनुवाद हैं। 'मन-मंजूषा' में बाल-विधवा शशितारा की कहानी है, जो जीवन के अंतिम चरण में अपने मायके फूलपुर को छोड़कर ससुराल वीरपुर जाती हैं, जहां उसका सौतेला देवर रमेश है। वहां रमेश का साथ बहत्तर वर्षीया शशितारा के मन में जीवन के प्रति एक नयी ललक उत्पन्न करता है।

'नेपथ्य-संगीत' जयंती, उसके पति सोमनाथ, सोमनाथ के मित्र चिन्मय और दो लड़कियां चांदपरी व फूलपरी की कहानी

प्राप्ति-स्वीकार

कविता

तथागत (महाकाव्य)--रचयिता : विजय बहादुर चन्द कौशिक, प्रकाशक : कौशिक कुटीर, गोरखपुर; मूल्य : पैंतीस रुपये।

चारुवाक (कथाकाव्य)--रचयिता : राम खेलावन वर्मा, प्रकाशक : सम्यक् साहित्य-संस्थान, भारत भवन, पड़रा, रीवा (म.प्र.); मूल्य : बीस रुपये।

मरुदेवा भगवई सिद्धा (खंड काव्य)--रचयिता : मुनिश्री विनय कुमार 'आलोक', प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, दिल्ली; मूल्य : चौदह रुपये।

शिवधनुष (खंड काव्य)--रचयिता : चंद्रशेखर, प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, दिल्ली; मूल्य : चौदह रुपये।

इन्द्रजीत (खंडकाव्य)--रचयिता : सुरेन्द्रनाथ, प्रकाशक : लोक-चेतना प्रकाशन, जबलपुर; मूल्य : छह रुपये।

आसमान बहुत दूर है (कविता-संग्रह)--कवयित्री : रमोला रुथलाल, प्रकाशक : रमोला प्रकाशन, द ओल्ड लिटिल इंडिया बिल्डिंग, जमुना क्रिश्चियन कालेज कंपाउंड, इलाहाबाद; मूल्य : पंद्रह रुपये।

ताजमहल रोता है (नवगीत-संग्रह)--रचयिता : शशि भोगलेकर, प्रकाशक : सूर्यप्रभा साहित्य सदन, रतलाम; मूल्य : आठ रुपये पचास पैसे।

स्वप्न और सत्य (कविता-संग्रह)--रचयिता : रघुनाथप्रसाद विकल; प्रकाशक : सुमित्रा प्रकाशन, सुमित्रा भवन, बेलाच-पुर, पटना-१; मूल्य : आठ रुपये।

जीवन-ज्योति (कविता-संग्रह)--रचयिता : भरत मिश्र 'प्राची', प्रकाशक :

है। चिन्मय अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद नन्हीं बेटी को जयंती के पास पालन-पोषण के लिए छोड़ जाता है। दुर्घटना-वश इस बच्ची की मृत्यु हो जाती है, लेकिन जयंती और सोमनाथ यही घोषित करते हैं कि उनकी अपनी बेटी की मृत्यु हुई है। अंत में जब वे चिन्मय के समक्ष इस रहस्य को खोलकर प्रायश्चित करना चाहते हैं, तो वह भी प्रायश्चित स्वरूप यह रहस्य बतलाता है कि वह बच्ची भी उसकी अपनी बेटी नहीं थी। उसे तो वह राह में पड़ी मिली थी और पत्नी के हठ के कारण ही उसे उसका लालन-पालन करना पड़ा था।

इन दोनों उपन्यासों में आशापूर्णाजी ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से मानव-मन की विचित्रता का सफल चित्रण किया है। दोनों उपन्यासों का अनुवाद सहज और प्रभावपूर्ण है।

गाथा शेख चिल्ली की, लेखक--रवीन्द्र वर्मा, प्रकाशक--राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, मूल्य---सोलह रुपये।

प्रस्तुत कृति में लेखक ने शहरों की मध्यवर्गीय युवा-पीढ़ी के जीवन के अंत-र्विरोधों, उसकी विडंबनाओं का व्यंग्यपूर्ण, साथ ही मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

प्रकाशन, ई-२४६।बी, खेतड़ीनगर (राज.); मूल्य--बारह रुपये।

सरदार ऊधमसिंह (खंड काव्य)--रचयिता: मुरलीधर झा, प्रकाशक: मुरलीधर झा, सी-२२, श्यामली. रांची; मूल्य: दस रुपये।

निबंध एवं लेख

अनुभूतियां (लेख एवं निबंध)--लेखक: राकेश कुमार, प्रकाशक: राकेश प्रकाशन, दिल्ली-६; मूल्य: बीस रुपये।

विविध

बन्देमातरम् (व्यंग्य)--संपादक: विवेकी-राय, प्रकाशक: शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर; मूल्य: नौ रुपये सत्तर पैसे।

बोलने की कला--लेखक: डॉ. भानुशंकर मेहता, प्रकाशक: विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; मूल्य: बीस रुपये।

इनकम टैक्स कैसे बचाएं--लेखक: राम निवास लखोटिया, प्रकाशक: आशा पब्लिशिंग हाउस, १-ए, लवलक प्लेस, कलकत्ता; मूल्य: पैंतालीस रुपये।

चित्र बनाने के सौ तरीके--लेखक: के. के. जसवानी, प्रकाशक: आत्माराम एंड संस, दिल्ली, मूल्य: बीस रुपये।

गीता अध्ययन--लेखक: डॉ. कमलकिशोर, प्रकाशक: डॉ. कमलकिशोर, लक्ष्मीगंज, ग्वालियर; मूल्य: पांच रुपये।

परा-मनोविज्ञान और हमारा जीवन--लेखक: डॉ. शांतिलाल छाजेड़ 'ध्रुव', प्रकाशक: श्री दादागुरु प्रकाशन, डी-१५।१०, महेश गार्ड, फोर्ट रोड, इंदौर-६; मूल्य: पंद्रह रुपये।

ज्योतिष एवं तंत्र-मंत्र

प्रश्न मार्ग (तीन खंड), हिंदी अनुवादक—शुकदेव चतुर्वेदी, प्रकाशक—रंजन पब्लिकेशन, १६, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-२; मूल्य—क्रमशः चालीस रुपये पच्चीस रुपये, पच्चासी रुपये।

प्रश्न मार्ग: ज्योतिष-शास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रंथ है। मूल ग्रंथ मलयाली भाषा में लिखा गया था। प्राचीन आचार्यों की परंपरा के अनुसार उसके रचयिता ने कहीं भी अपना नामोल्लेख नहीं किया, केवल अपने जन्म-स्थान की चर्चा कर यही बताया कि वे नम्बूदरि ब्राह्मण थे और ज्योतिष-शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान श्री मंगलश्रेणी निवास के शिष्य थे। कालांतर में 'प्रश्न मार्ग' का संस्कृत में, फिर अंगरेजी में भी अनुवाद हुआ।

प्रथम खंड में १२ अध्याय हैं, जिसमें 'प्रश्न-शास्त्र' के आधारभूत सिद्धांतों का विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में रोग, विभिन्न बाधाओं, विवाह, मेलापक, दांपत्य-प्रेम आदि से संबंधित प्रश्नों का यथार्थ फल कहने की रीति समझायी गयी है। तृतीय खंड में देव-प्रश्न, राज्य-प्रश्न, जय-पराजय, वर्षा, भोजन, यात्रा, खोई हुई वस्तु की प्राप्ति, नष्ट जातक, स्वप्नफल, अष्टक वर्ग-जैसे उपयोगी विषयों का विवेचन है। ज्योतिष-शास्त्र में रुचि रखनेवाले लोगों के लिए ये तीन भागों में उपयोगी हैं। इनका महत्त्व इसी से जाना जा सकता है कि इस उपयोगी ग्रंथ को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की ज्योतिषाचार्य की परीक्षा में पाठ्य-पुस्तक के रूप में शामिल किया गया है।

श्री बटुक भैरव साधना, लेखक—डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी, प्रकाशक—मेघ प्रकाशन एक्स ९।३८, ब्रह्मपुरी, दिल्ली ५३; मूल्य—चालीस रुपये।

'रुद्र' नाम से जिसकी स्तुति की गयी है, तंत्र-शास्त्र में वही भैरव नाम से वर्णित हुआ है। शिव महापुराण में भैरव को शंकर का पूर्ण रूप निरूपित किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में श्री बटुक भैरव की उपासना की संपूर्ण विधि का वर्णन है। पुस्तक दो खंडों में बंटी है—परिचय-खंड और प्रयोग-खंड। परिचय-खंड में श्री भैरव की उत्पति, उनके विधि स्वरूपों, स्तोत्र-पाठ के प्रकारों आदि की चर्चा है। प्रयोग-खंड में श्री भैरव की पूजा, मंत्र साधना, यंत्र-साधना आदि की विस्तृत जानकारी है।

महामृत्युंजय—साधना एवं सिद्धि: लेखक— डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी, प्रकाशक—रंजन प्रकाशन, १६ अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली; मूल्य—चालीस रुपये।

महामृत्युंजय जाप से प्रायः सभी परिचित हैं। 'अनिष्ट, विशेषकर प्राणों पर आ पड़े संकट के निवारण के लिए इस का पाठ अनिवार्य माना जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी ने इस लोकोपयोगी एवं लोकप्रिय मंत्र का विस्तृत परिचय, उसकी साधना विधि दी है।

—राजशेखर

९

ज्योतिष
आपकी परेशानियों का निदान

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए । हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे । हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं । क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे । प्रविष्टि–९ का उत्तर यदि उस अंक में न मिले तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है । आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें । एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे । अगले अंक में प्रतीक्षा न करें ।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए । प्रविष्टि की अंतिम तिथि २० दिसम्बर, '८२ ।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि भेजिए ।

. . . . यहां से काटिए . . . .

९

नाम . . . .

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) . . . . . . महीना . . . . सन . . . .

जन्म-स्थान . . . . जन्म-समय . . . . .

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा . . . .

पता . . . .

आपका एक प्रश्न . . . .

. . . .

. . . . यहां से काटिए . . . .

इस पते को ही काटकर लिफाफे पर चिपकाएं

संपादक (ज्योतिष विभाग–प्रविष्टि–९), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

ज्योतिष समस्या और समाधान

७

'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ--'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान'--का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक सात के लिए हमें काफी संख्या में पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के सुपरिचित ज्योतिषाचार्य पं. परसाई।

नरेशचन्द्र शर्मा, झज्जर (हरियाणा)

प्रश्न : मकान बनने की कब तक संभावना है?

उत्तर : आपका जन्म-चक्र गलत बना है। १० फरवरी को अपराह्न में २ बजकर २७ मिनट पर कुंभ लग्न नहीं होता है।

कैलाशचन्द्र जैन, भिवानी

प्रश्न : पदोन्नति और स्थानांतरण कब तक होगा?

उत्तर : ट्रांसफर सन १९८३ के मध्य में होगा, परंतु आपके रुचि-अनुकूल नहीं रहेगा।

श्रीमती क. ख. ग., मेरठ

प्रश्न : पति छह मास से तलाक लेने की बात कर रहे हैं। क्या मुझे उनसे अलग रहना पड़ेगा?

उत्तर : आपके पति के जन्म-चक्र में सप्तमेश द्वितीय भाव में होने से, उच्च-मंगल द्वादश में, लग्न में शुक्र और द्वादशेश नीचस्थ शनि का मंगल से अन्योन्याश्रित संबंध होने से अन्य स्त्रियों से लगाव रहेगा। आपके अपने चक्र में द्वादश में सप्तमेश सहित चार ग्रह होने से परिवार में क्लेश हमेशा बना रहेगा। समझौता कर लें।

श्रीमती मनीषा शुक्ल, अहमदाबाद

प्रश्न : पुत्री के विवाह का योग कब तक है?

उत्तर : पुत्री का विवाह सन १९८३ में अवश्य हो जाएगा। वर सांवला और मध्यम कद का होगा।

रामावतार शर्मा, सीकर

प्रश्न : पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ कब मिलेगा?

उत्तर : दिसंबर १९८२ से स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार होगा। चतुर्थेश मंगल तृतीयस्थ होने से खान-पान का परहेज तीन वर्ष तक आवश्यक है।

महेशकुमार श्रीवास्तव

प्रश्न : पटवारी हूं। इसमें सफलता की कहां तक आशा है?

उत्तर : अपने ही परिश्रम से जीवन में बहुत उन्नति का योग है। अपना स्वयं का व्यवसाय करने का जुगाड़ करिए, सफलता मिलेगी।

कुमारी वंदना शर्मा, उज्जैन

प्रश्न : मेरा विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : सन १९८४ में, वर्तमान स्नेह-संबंध छोड़ने के एक वर्ष बाद ! आप मंगली हैं, क्रोधी भी।

सुभाषचन्द्र जैन, खिड़किया

प्रश्न : स्वयं का व्यवसाय कब तक होगा ?

उत्तर : मन:शक्ति की घुटन से छुटकारा पाने पर आपके कार्य में सफलता मिलेगी।

पुरुषोत्तम कालिया, जबलपुर

प्रश्न : सर्विस छोड़कर व्यवसाय करूं या सर्विस के लिए विदेश जाऊं ?

उत्तर : विदेश जाने की कोशिश करें, सफलता मिलेगी।

दीपक खन्ना, दिल्ली

प्रश्न : व्यवसाय में स्थिरता व सफलता न मिलने से मन खिन्न है।

उत्तर : व्यवसाय में मनचाही सफलता नवंबर १९८३, से मिलेगी।

ललित मोहन, लखनऊ

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : विवाह छह महीनों में, अन्यथा १९८४ में। विवाहित जीवन सामान्य रहेगा।

कमलेश, दिल्ली

प्रश्न : मैं पूर्णत: मांगलिक हूं अथवा आंशिक?

उत्तर : पूर्ण मंगली हैं। प्रथम से विच्छेद अथवा उसका मरण।

भास्करकुमार चौधरी, औरंगाबाद (बिहार

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : विवाह १९८३ में। दाम्पत्य-जीवन क्लेशमय रहेगा अथवा विच्छेद होगा।

सुनीलकुमार सिन्हा, पटना

प्रश्न : गुरदे में पथरी के कारण स्वास्थ्य खराब रहता है। कब तक ठीक होगा ?

उत्तर : लग्न में मंगल और शुक्र-शनि युति नवम में होने से आयुर्वेदिक इलाज से १९८३ में ठीक हो जाएंगे।

अमिता चन्द्रा, दरभंगा

प्रश्न : क्या मैं भ्राता का सुख प्राप्त कर सकती हूं ?

उत्तर : तीन वर्ष की बालिका लिखने लगे, इसमें आश्चर्य नहीं, परंतु कुण्डली आपादमस्तक गलत है।

श्रीकिशोर शर्मा, मोतिहारी

प्रश्न : स्वास्थ्य के प्रति बेहद चिंतित हूं।

उत्तर : स्वास्थ्य १९८५-८६ में विशेष खराब रहेगा।

उषा सेठ, करौली

प्रश्न : चार साल से बहुत परेशान हूं परेशानी कब तक दूर होगी ?

उत्तर : आपकी जन्मकुंडली गलत है।

अमृतलाल वैष्णव, जैसलमेर

प्रश्न : मुझे किस व्यवसाय में सफलता मिलेगी, वर्तमान परेशानी दूर होगी या नहीं ?

उत्तर : आर्थिक परेशानी क्रमश: आगामी तीन वर्षों में दूर हो जाएगी।

हेमन्तकुमार व्यास, उदयपुर

प्रश्न : राजपत्रित अधिकारी बनने का योग कब तक है ?

उत्तर: सन १९८४ या १९८५ में।

दौलतनारायण माथुर, जयपुर

प्रश्न: बेकार हूं। स्वयं का व्यवसाय कब तक होगा?

उत्तर: अगले तीन वर्षों में।

विनोद शर्मा, नेपाल

प्रश्न: पुत्रियां ही हैं। पुत्र-प्राप्ति की संभावना कब तक है?

उत्तर: पुत्र-प्राप्ति १९८३-८४ में। पत्नी की ग्रह-स्थिति भी किसी पंडित से दिखवा लें।

ईश्वरलाल गु. देसाई, बड़ौदा

प्रश्न: मैंने पढ़ाई शुरू की है। इसका जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: यह पढ़ाई अगले सात वर्षों तक सुख और आनंद देगी।

श्रीमती कुसुम शर्मा, पिलानी

प्रश्न: पदोन्नति या स्थानांतरण की आशा कब तक करूं?

उत्तर: पदोन्नति १९८३ में, पुनः १९८६ में, स्थानांतरण चाहो तो १९८३ में, अन्यथा यथास्थिति।

हरनारायण मिश्र, कानपुर

प्रश्न: वर्तमान पद पर माह में बीस दिन यात्रा पर रहना पड़ता है। ऐसा कब तक चलेगा?

उत्तर: सतत यात्रा-योग तीन वर्ष और चलेगा, परंतु दो-तीन मास में आमदनी बढ़ जाएगी और साधारण पदोन्नति भी १९८३ में ही मिल जाएगी।

कुमारी ए. अग्रवाल, गाजियाबाद

प्रश्न: विवाह कब होगा? वर पदाधिकारी होगा या व्यापारी?

उत्तर: विवाह जुलाई १९८३ तक हो जाएगा, व्यापारी या डॉक्टर वर्ग के व्यक्ति से।

जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव, झांसी

प्रश्न: पदोन्नति कब तक?

उत्तर: नौकरी में पदोन्नति अगले १० महीनों में, अन्य स्त्री से संबंध हों, तो छोड़ दें।

कु. मीता देवा, लखनऊ

प्रश्न: विवाह की बात काफी आगे बढ़ने के बाद टूट जाती है। विवाह कब तक होगा?

उत्तर: मंगल के बीज-मंत्र का जप करें, विवाह सितंबर १९८३ तक अवश्य हो जाएगा।

प्रकाशचंद, गाजीपुर

प्रश्न: शरीर पर सफेद दाग हैं। मुक्ति मिलेगी या नहीं।

उत्तर: चतुर्थ में शनि की राशि में मंगल, अष्टम में शनि-राहु होने से चर्म-विकार सारे जीवन रहेगा। इलाज के चक्कर में टांगों में दर्द मोल लेने का योग है।

एस. के. मिश्र, सागर

प्रश्न: चार साल से बेकार हूं। ऊंची नौकरी या अच्छा व्यवसाय ही करना चाहता हूं।

उत्तर: आसमान में छलांग नहीं लगाना चाहें तो नौकरी पांच महीने में मिल जाएगी, अन्यथा दो वर्ष और प्रतीक्षा करें।

—इलाहाबाद बैंक बिल्डिंग,
तीसरी मंजिल, संसद मार्ग, नयी दिल्ली-१,

इस अंक में हम पाठकों से परिचित करा रहे हैं, आनन्दकुमार गौरव से। इनकी पांचों रच[नाएं] पढ़ने से हमें लगा कि इनकी कविताओं में जीवन की विसंगतियों की अभिव्यक्ति [है।] प्रस्तुत हैं--उनकी पांच कविताओं में से चुनी हुई तीन कविताएं।

—संपा[दक]

घुटन

आग उगलते अभिसारों का
वैभव-दर्पण दमक रहा है
कल का वो शीतल आंचल अब,
अंगारों-सा दहक रहा है
कल कल्पना मधुर यौवन थी
अब कल्पना व्यथा - सागर है
कल तक जीवन-जीवन था
अब विष से भरी हुई गागर है

जीवन के सीने में जीवन
कांटे-जैसा खटक रहा
मात्र सांत्वना ग्राह्य नहीं
भाव-दमन संभाव्य नहीं
सुमन उगालो अभी समय
अभी लुटा मृदु काव्य नहीं
वरन भव्य विस्फोटक हो
उर में जो युग धधक रहा

परिवर्तन

...जिंदगी के बीते पल
...वो चंद आवाजें
...जिन्हें तेज रफ्तारी में
...न सका मैं
...कल्पित तस्वीरें जो
...में सजायी न गयीं
...खामोश सदाएं
...आज भी पीछा करती हैं
...मायूस निगाहों से
...अपनापन छलका था—
...आज खोजता हूं उसे—
...दर्पण में कहीं—
...सांसे रुकी लगती हैं
...की रफ्तार वही है . . .
...इसीलिए
..., मैं नहीं हूं, वो-वो नहीं है—

आभासित मन

मेरे अंकभाल पर लगा वो दाग
अंकुरण था मेरी प्रेम-वेदना का
मैंने जब जब अंगीकार किया
तब-तब चीखे हैं अंगारे
अंतर्ज्वाला और अंतःदर्शी
विरोधी राजनीतिज्ञों से
रोज नये ढंगों से जूझते रहे
अपने ही श्वास घोंटते रहे
जब-जब आभासित मन
हंसा अपनी ही दशा पर
खुद ही से जिस पल घबराया मैं
दर्पण ने जब मुझे निहारा—
तब-तब कांपे हैं अंधियारे

—आनंदकुमार गौरव

III—१०, हाईडिल कॉलोनी मझोला-२०२४१६, मुरादाबाद (उ. प्र.)

आत्मकथ्य

जन्म तिथि—१२ दिसम्बर, सन १९५८, जिला-बिजनौर के ग्राम-भगवानपुर रहनी में।
शिक्षा—स्नातक
संप्रति—प्रथमा बैंक, मुख्य कार्यालय, मुरादाबाद में लिपिक पद पर कार्यरत
कविता क्यों—'हृदय पर अनगिनत घावों के निशान, जो मुझे मेरे ही आदर्शों के प्रतिरूप प्राप्त हैं, मस्तिष्क व हृदय को कंचोटनेवाला अतीत एवं संघर्ष-रत वर्तमान,'; जब लेखनी के माध्यम से हर हृदय व मस्तिष्क तक पहुंचाने का प्रयास करता हूं, तब यही आशा रहती है कि शायद मेरे गीत या कविताएं किसी की प्रेरणा बन सकें!

पवित्र पूजा है पैरों की थिरकन

दक्षिण-भारत की नृत्य-शैली में भरत नाट्यम का प्रमुख स्थान है। श्रीमती कोमला वरधन उसमें अपनी विशिष्टता रखती हैं। श्रीमती वरधन का जन्म मद्रास में हुआ था, लेकिन उनके माता-पिता सिंगापुर में बस गये हैं। पिता डॉक्टर हैं और वे चाहते थे कि उनकी बेटी भी डॉक्टर बने। नृत्य की शिक्षा की ओर उनकी मां ने उन्हें प्रेरित किया। श्री टी० वी० रामैया पिल्लई दक्षिण भारत के विख्यात गुरु हैं और उन्हीं के संरक्षण में कोमला ने नृत्य सीखा। कुछ समय तक वैजयंती माला ने भी श्री पिल्लई से शिक्षा ग्रहण की थी। कोमला सबसे पहले आठ वर्ष की आयु में पूरी तरह निष्णात होकर मंच पर उतरी थीं। बारह वर्ष की अवस्था में उन्होंने सिंगापुर व मलाया में, (जि... पहले मलेरियो कहते थे) अपना ... प्रस्तुत किया। यह नृत्य लगातार तीन ... तक चला।

पहले भरत नाट्यम की अपनी वि... परंपरा थी। यदि तीन घंटे से कम ... नृत्य करता था तो उस पर पत्थर ब... जाते थे। पंद्रह-सोलह तरह की ... शैलियां प्रस्तुत करनी पड़ती थीं। ... के दर्शकों में कला के प्रति इतना ... प्रेम था। अब तो लगभग आधा नृ... प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि ... के पास बहुत समय नहीं है। फिर ... ने इस नृत्य को एकाकी ही नहीं ...

कोमला वरधन—भरत नाट्यम् की अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त नृत्यांगना। कोमला वरधन नृत्यांगना ही नहीं, तमिल की कथा लेखिका भी हैं। यहां प्रस्तुत हैं—उनकी विभिन्न नृत्य-मुद्राओं के कुछ चित्र

बल्कि इसकी परंपरागत शैलियों को भी नष्ट किया। यही हाल कत्थक, कथकलि और कुचपुड़ी नृत्यों के साथ भी हुआ है। कोमला वरधन ने बताया कि इन सब नृत्यों के एक-दूसरे पर प्रभाव पड़े हैं, इसीलिए अब वे क्षेत्रीय से अधिक राष्ट्रीय हो गये हैं। "नृत्य को केवल सीखा भी नहीं जाता, बल्कि उस पर कुशलता हासिल की जाती है। कई बार उस नृत्य के साथ

जाना पड़ता है।" पहले भरत नाट्यम मंदिरों का पूजा-नृत्य था। भरत मुनि ने उसकी सृष्टि की थी। इसमें पैरों की गति और हाथों के हाव-भाव को प्रमुखता दी गयी थी। इन सबका उद्देश्य या तो भगवान की प्रार्थना थी अथवा राजा को प्रसन्न करना होता था। अब यह नृत्य जनता के लिए प्रस्तुत किये जाते हैं और इसमें नये प्रयोगों और नयी संरचनाओं को स्थान मिला है।

कोमला वरधन का कहना है कि मैं अपने नृत्यों के माध्यम से लगातार नये प्रयोग करती आ रही हूं और कुछ न कुछ नयी चीज जनता के सामने प्रस्तुत करना चाहती हूं। मेरे लिए नृत्य की थिरकन पवित्र पूजा ही है।

कोमला वरधन जितनी नृत्य में दक्ष हैं, उतनी ही दक्षता उन्हें फोटोग्राफी और पेंटिंग में भी मिली। पेस्टल कलर से पोट्रेट बनाना, पच्चीस वर्ष की आयु में उन्होंने विख्यात कलाकार वी. आर. राव से सीखा था। तमिल में कहानियां भी लिखती हैं और नये कहानीकारों में उनका स्थान है। श्रीमती वरधन के पति भारत-सरकार के गृहमंत्रालय में अतिरिक्त सचिव हैं। श्रीमती वरधन का पता है—

सी १।८, तिलक लेन, नयी दिल्ली

पश्चात्ताप के बीज यौवन के राग-रंग द्वारा बोये जाते हैं, किंतु उनकी फसल वृद्धावस्था में दुःख-भोग द्वारा काटी जाती है।

—फोल्टन
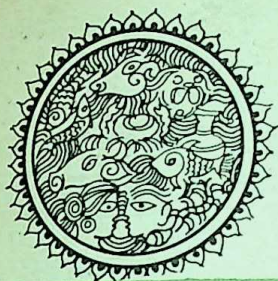
● के. ए. दुबे 'पद्मेश'

ग्रह-स्थिति—शनि तुला में, गुरु वृश्चिक में मंगल मकर में, केतु धनु में, राहु मिथुन में, ६ से शुक्र एवं बुध धनु में, १६ से सूर्य धनु में।

मेष (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो, अ) ४–५ दिसंबर से नये व्यवसाय का योग। पत्नी-पक्ष से सहयोग एवं लाभ। १५–१६ दिसंबर से भाग्योन्नति के कार्यों में सफलता। पराक्रम से अधूरे कार्य सफल होंगे। २७–२८ से राज्य के कार्यों में सफलता।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू, बो) ७–८ दिसंबर से ग्रहों की स्थिति अनुकूल नहीं। अशुभ ग्रहों का विशेष प्रभाव रहेगा। किसी प्रियजन के कारण मानसिक पीड़ा, पर साहस बना रहेगा। १४–१५ दिसंबर से घर-परिवार में विवाद। २५–२६ दिसंबर से ग्रहों की स्थिति में सुधार, प्रतिष्ठा, धन के क्षेत्र में आशातीत सफलता

मिथुन (क, की, कू, के, को, घ, छ, ह) ७–८ दिसंबर से बाहरी कार्यों में परेशानी, की स्थिति में सावधानी रखें। हिस्सेदार के धोखे से बचें। १५–१६ दिसंबर से निजी व्यवसाय में सफलता। यश, ख्याति, प्रतिष्ठा के शुभ अवसर प्राप्त होंगे। २५–२६ से शत्रुओं का पराभव।

कर्क (ही, हू, हे, हो ड, डी, डू, डे, डो) ७–८ दिसंबर से शनि ग्रह के कारण परेशानी। दर्शन, अध्यात्म की ओर रुचि बढ़ेगी। विद्यार्थी वर्ग की विद्या-बुद्धि में उन्नति। १५–१६ से व्यवसायियों को कार्य-बाधा, पीड़ा। २६ दिसंबर से बुद्धिजीवियों के लिए ज्ञान-विज्ञान के कौशल बढ़ेंगे।

पीठ और दीठ

कवि पद्माकर जयपुर नरेश महाराज जयसिंह के दरबार में हो रहे कवि सम्मेलन में पहुंच ही गये। वे एक कोने में जाकर चुपचाप खड़े हो गये। कवि-सम्मेलन होता रहा। जब सब कवि अपनी अपनी कविता सुना चुके तो सहसा महाराज जय सिंह को उनका खयाल आया। उन्होंने पद्माकर से कुछ सुनाने का अनुरोध किया। पद्माकर ऊंची आवाज में बोले—

'बकसि बितंड दीने झुंडन के झुंड रिपुमुंडन की मालिकादयी जो त्रिपुरारी को कहें 'पद्माकर' करोनन के कोष दीने षोडशऊ दीने महादान अधिकारी को गाम दिये धाम दिये अमित आराम दिये अन्न जल दीने जगती की जीवधारी को दाता जयसिंह दोऊ बात तो ना दीन्हीं कहूं

श्रौर इतना कहकर वे चुप हो गये। सारा दरबार फड़क उठा। महाराज जयसिंह बोले, "आज्ञा कीजिए महाराज, कौन सी दो बातें मैं नहीं दे सका। उन्हें भी देने का मैं प्रयास करूंगा।"

पद्माकर मुसकराये श्रौर बोले

'दाता जयसिंह दोऊ बात तो ना दीन्हीं कहूं बैरिन को पीठ और दीठ परनारी को।'

महाराज जयसिंह ने उन्हें तत्काल एक लाख रुपये पुरस्कार में दिये।

—बाला दुबे

सिंह (म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू, टे) ७–८ दिसंबर से पराक्रम से सभी कार्य संपन्न होंगे। धन-लाभ के बार-बार अवसर प्राप्त होंगे। सर्वत्र सम्मान श्रौर ख्याति मिलेगी। १५–१६ दिसंबर से विद्यार्थी वर्ग को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अन्वेषकों, वैज्ञानिकों को शोध, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष में पूर्ण सफलता मिलेगी।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ, पे, पो) आर्थिक मामले में संयम रखें कर्ज की स्थिति न आने दें अपमानजनक अवसरों में जाने से बचें। इस दौरान पेट-पीड़ा संभव। यात्रा से बचें पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें भी संभावित।

तुला (र, रा, रु, रे, रो, त, ती, तू, ते) नये कार्य में व्यवधान आ सकते हैं। आकस्मिक लाभ। शरीर-पीड़ा के योग। अचानक पदोन्नति संभव। रुका हुआ धन प्राप्त होने के भी योग है।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, य, यी, ये) सम्मान, ख्याति के शुभ अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति भी संभव है। धन-लाभ, पराक्रम से कार्य सफल होंगे, भाई एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ़, मे) विभिन्न अवसरों पर जाने का सौभाग्य प्राप्त होगा, सम्मान, कीर्ति, पद-वृद्धि के प्रयास सफल होंगे। नयी व्यावसायिक योजना में धन लगाना पड़ेगा। चारों तरफ हर्ष दायक समाचार मिलेंगे। मानसिक अशांति के निवारण के लिए मछली को

आटे की गोलियां खिलायें।

मकर (भो, ज, जी, जू, जे, जो, ख, खी, ग, गी)
आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगी लेकिन व्यय पर नियंत्रण रखें। षड्यंत्र पर विजय प्राप्त होगी। राज-कार्य में सफलता मिलेगी, पर पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें। व्यावसायिक योजनाओं में सावधानी बरतें।

कुंभ (गू, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द, श्र)
आर्थिक क्षेत्र, प्रतियोगिता, मांगलिक कार्य के प्रयास सफल होंगे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)
काम होते-होते बिगड़ जाएंगे, शरीर-रक्षा पर ध्यान दें। यात्रा में झंझट होगी। शरीर-पीड़ा संभव है। किसी भागीदार के साथ व्यवसाय न करें। विदेश-यात्रा में अड़चनों के योग हैं।

--१८, एम. आई. जी., रतनलाल नगर,
कानपुर-२२

पर्व एवं ग्रहण

३ दिसंबर--चतुर्थी, ११--सफला एकादशी व्रत, १२--प्रदोष, १५--सूर्य-ग्रहण, २६--पुत्रदा एकादशी व्रत, स्मार्त २७--पुत्रदा एकादशी व्रत, वैष्णव २८--प्रदोष, ३०--चंद्र ग्रहण।

सूर्य ग्रहण--१५ दिसंबर १९८२, बुधवार को ज्येष्ठा नक्षत्र में सूर्य-ग्रहण-लगेगा। ग्रहण का मोक्ष मूल नक्षत्र में होगा।

अश्विनी, रेवती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा और मूल - नक्षत्र में जन्मे लोगों को इस ग्रहण का फल अरिष्टकारक है। कुरु क्षेत्र में सूर्य-ग्रहण के अवसर पर स्नान करने का विशेष माहात्मय। भारत के विभिन्न भागों से लाखों यात्री इस तीर्थ के सन्निहित सरोवर में स्नान करने पहुंचते हैं। सूर्य ग्रहण फल--मेष, वृष, सिंह, कन्या और मकर राशिवालों को अशुभ। मिथुन, कर्क, तुला, कुंभ और मीन राशिवालों को शुभ फलदायक है।

चंद्र ग्रहण--३० दिसंबर १९८२, गुरुवार, शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को लगेगा। यह ग्रहण समस्त भारत में दिखायी देगा। इन ग्रहणों का प्रभाव--प्राकृतिक प्रकोप, भीषण सरदी तथा राजनैतिक तूफान भी आ सकता है।

शांति कैसे करें ? जिन राशियों पर ग्रहण के कुप्रभाव हैं उन्हें निम्न मंत्र का जाप करना हितकर होगा।

मंत्र--ॐ नमः सर्वार्थ साधिनी स्वाहाः

अथवा

अपने आराध्य देव के मंत्र का जाप ग्रहण-काल में करें। नियमित रूप से प्रतिदिन १०८ बार जाप भी किया जा सकता है।
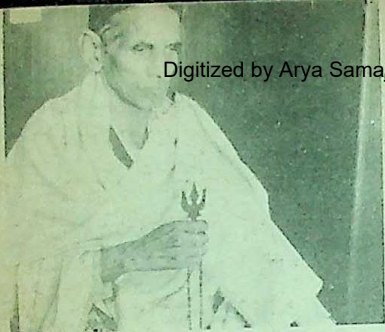
श्मशान साधना के रोमांचक अनुभव

गया के तांत्रिक श्री किशोरीलाल का व्यक्तित्व जितना रहस्यमय और आकर्षित करनेवाला है, उनकी जीवन-कहानी भी उतनी ही रोमांचक है। पिछले दिनों श्री किशोरीलाल 'कादम्बिनी' तंत्र-विशेषांक की प्रसार-संख्या दो लाख से अधिक होने के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भाग लेने गया से नयी दिल्ली आये थे। इस समारोह में उप-राष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला भी उपस्थित थे। समारोह में किशोरीलालजी का सबसे परिचय कराया गया।

कादम्बिनी कार्यालय में हमने उनसे उनकी साधना, उनके अनुभवों के बारे में बातचीत की। उनकी बातें सुनकर लगा कि तांत्रिक जो भी सिद्धि प्राप्त करते हैं, उसके लिए उन्हें काफी कीमत चुकानी पड़ती है।

श्री किशोरीलाल, ७२ वर्ष के हैं, पर उन्हें देखकर उनकी असली आयु का पता नहीं चलता। अपने तांत्रिक जीवन में उन्होंने नेताओं, उच्च पदस्थ अधिकारियों से लेकर अनेक सामान्य जनों की तकलीफों को दूर किया है। 'कादम्बिनी'-कार्यालय में भी उन्हें देखकर कर्मचारियों की भीड़-सी एकत्र हो गयी और हमने देखा कि उन्होंने सामान्य-से सामान्य कर्मचारी की भी, उसके बिना बताये, तकलीफों को सही-सही बताया। उपचार के उपाय भी सुझाये।

किशोरीलालजी ने बोध-गया में 'कादम्बिनी'-संपादक से अपनी भेंट के बारे में बताते हुए कहा कि वे उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ही दिल्ली आये। 'मां' अर्थात काली ने भी उन्हें इसकी अनुमति दी है।

रोमांचक अनुभव

हमने किशोरीलालजी से उनके साधना-अनुभवों के बारे में पूछा। उन्होंने कुछ रोमांचक प्रसंग सुनाये।

किशोरीलालजी ने कहा, "शुरू-शुरू में साधना के दौरान भयभीत करनेवाले दृश्य दिखायी देते थे। गुरु महाराज मुझे साधना-विधि समझाकर दूर हट जाते थे। जब मैंने उनसे इन अनुभवों के बारे में बताया, तब उन्होंने मुझे एक चिमटा दिया और कहा कि साधना-स्थल के आसपास इस चिमटे से घेरा बनाकर उपासना करो। कोई विघ्न नहीं आएगा। मैंने ऐसा ही किया, फलतः भयानक दृश्य तो दिखायी देते रहे, पर कोई विघ्न नहीं आया।"

किशोरीलालजी ने आगे बताया कि वे नदी में साधना कर रहे थे। अचानक उन्हें प्रतीत हुआ, जैसे नदी में बाढ़ आ गयी है। वे घबरा गये। अगले पल उन्हें लगा कि जैसे उनका शरीर, पानी में होने के बावजूद आग से जल रहा है। वे उठने को हुए, पर उठ ना सके। तभी उन्हें कानों में आवाज सुनायी दी, 'हिम्मत रखो। उठे तो पागल हो जाओगे।'

इस आवाज को सुनते ही उनके शरीर में शक्ति का संचार हो गया। इसी तरह एक और रोमांचक अनुभव।

किशोरीलालजी श्मशान-भूमि में साधना कर रहे थे। उनके सामने तीन कपालों में पूजन की ये वस्तुएं थीं—मद्य, मांस और खीर। रात का समय था। श्मशान का एकांत। दूर-दूर तक कहीं कोई नहीं।

सहसा किशोरीलालजी ने देखा, श्वेत साड़ी पहने दो कन्याएं चली आ रही हैं। क्षणभर के लिए वे चौंके। दोनों कन्याएं धीरे-धीरे उनके पास पहुंची। किशोरीलालजी के लिए यह बिलकुल नया अनुभव था। उन्होंने भगवती का स्मरण किया।

उन्होंने बताया, "सहसा मैं चेतना-शून्य हो गया। लगभग बीस मिनट बाद मुझे होश आया तो देखा, कपालों में रखी वस्तुएं कम हो गयी हैं—दो चम्मच मद्य, एक बोटी मांस और दो तीन चम्मच खीर। मैंने उसे प्रसाद समझकर ग्रहण किया और उठ बैठा।"

हमारे कार्यालय में हरयाणा सरकार के एक अधिकारी, जो लेखक भी हैं, मौजूद थे। किशोरीलालजी ने उन्हें अनेक बातें बतायी थीं। यहां तक कि जब वे अधिकारी घर से चले थे, तब उनकी पत्नी किस रंग की साड़ी पहने हुए थीं। वे अधिकारी किशोरीलालजी की इस चमत्कारिक शक्ति से श्रद्धा-विगलित हो उठे थे। हमने किशोरीलालजी से पूछा, "आप इस तरह की बातें कैसे बता देते हैं?"

वे बोले, "जब कोई हमसे बात करता है, तब हम उसके पहले अक्षर को पकड़कर ही उसका भूत-भविष्य और वर्तमान जान लेते हैं।"

किशोरीलालजी अपनी स्थिति से संतुष्ट हैं। वे कहते हैं. "कभी-कभी लोग पूछते हैं कि तांत्रिक हैं तो लखपति क्यों नही बन जाते? पर एक बात बतायें। साधना शुरू करने के पहले ही 'मां' हम पर प्रतिबंध लगा देती है कि हम इस विद्या का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं करेंगे। वे जो भी देंगी, उसी में संतुष्ट होना पड़ेगा।" फिर वे कहते हैं, "तांत्रिक का काम तो बंद ताले की सही ताली तलाश कर उसे खोल देने का ही होता है। मैं भी यही करता हूं।"

किशोरीलालजी का पता है—

—राम सागर तालाब, गया (बिहार)

प्रार्थना से रोग दूर

• विभा वर्मा

प्रार्थना में ऐसी शक्ति है, जो असाध्य से असाध्य रोग का भी निवारण कर सकती है। एक सच्ची घटना ज्यों-की-त्यों इस प्रकार है।

मेरे पिता वकील थे—उन्हें डाइबिटीज का रोग था। एक बार उनकी गरदन के पीछे एक छोटी-सी फुड़िया निकली, जो कि शीघ्र ही बढ़कर एक बड़ा फोड़ा बन गयी। डॉक्टरों ने उसे कारबेकल (विषैला फोड़ा) बताया। उस समय कोई सल्फा ड्रग नहीं थी, और न ही कोई अन्य एंटीबायोटिक दवाइयां थीं। अतः डाइबिटीज के रोगी के लिए ऐसा बड़ा फोड़ा कारबेकल और वह भी गरदन पर अत्यंत घातक था।

डॉक्टरों की सलाह के अनुसार, उन्हें आपरेशन के लिए दूसरे शहर ले जाना आवश्यक था। दूसरे दिन प्रातः ही ले जाने का प्रोग्राम था। कुछ ऐसी भगवत-प्रेरणा हुई कि रात्रि में ही श्री हनुमान-चालीसा का १०० बार पाठ किया जाए। श्री हनुमानजी की मूर्ति (श्री राम-लक्ष्मण को कंधे पर रखे हुए) के आगे दीपक जलाकर मेरी बड़ी बहन ने पाठ आरंभ किया। 'नाशै रोग, हरें सब पीरा-जपत निरंतर हनुमत बीरा' को पढ़ते समय वह आरती लेकर, ध्यान में पिताजी के लिए दे देतीं। पाठ निर्विघ्न समाप्त हुआ।

प्रातः ही मेरे बड़े भाई, पिताजी को लेकर, ट्रेन में बैठ गये। गाड़ी एक स्टेशन चलकर रुकी। अचानक देखा चार छोटे बच्चे बिलकुल वही हनुमान जी की मूर्ति—एक दम वैसी ही—अवश्य ही नयी व फूल मालाओं से सजी हुई लेकर, डिब्बे में चढ़ आये। बच्चे साधारण वर्ग के थे। भाई के मुख से अचानक निकला, "पिताजी यह देखो—श्री हनुमानजी आपके साथ चल रहे हैं—आप अवश्य स्वस्थ हो जाएंगे।" दूसरा स्टेशन आते ही बच्चे नीचे उतरकर अदृश्य हो गये।

फोड़े का बड़ा गहरा आपरेशन हुआ—प्रार्थना बराबर चलती ही रही। लगभग तीन महीने बाद मेरे पिता घर लौटे—पूर्णतया स्वस्थ। यह बताना आवश्यक है कि उन्हीं दिनों हमारे ही शहर में एक अन्य सज्जन को भी पीठ का कारबेकल हुआ था, जिसका ऑपरेशन प्रसिद्ध सर्जन द्वारा हुआ था और इन सज्जन को डाइबिटीज भी नहीं थी, पर वह स्वस्थ न हो सके। अब इसे हनुमानजी का ही पिता को जीवन-दान देना कहा जाए, तो अधिक उपयुक्त होगा। ठीक हो जाने के बाद भी जो डॉक्टर उन्हें देखते—यही कहते कि बड़े आश्चर्य की बात है कि आप बच कैसे गये! मेरे पितृगृह में अभी भी वह मूर्ति पूजा-स्थान में रखी है।

—बी १४५, आवास विकास कॉलोनी
शास्त्री नगर, मेरठ
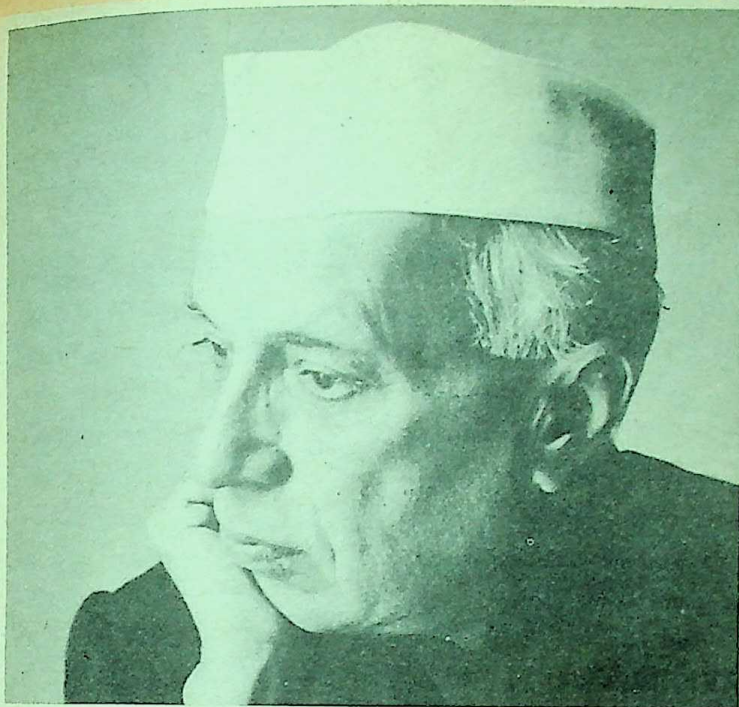
राजस्थान और नेहरू परिवार

● पं. झाबरमल्ल शर्मा

भारत के इतिहास में राजस्थान का विशिष्ट स्थान है। राजस्थान से नेहरू-परिवार का भी घनिष्ठ संबंध रहा है, लेकिन इस तथ्य से बहुत कम लोग परिचित हैं। वयोवृद्ध पत्रकार एवं वरिष्ठ साहित्यकार पं. झाबरमल्ल शर्मा ने अपनी शोधपूर्ण पुस्तक 'राजस्थान और नेहरू-परिवार' में इन्हीं संबंधों का तथ्यात्मक विवरण दिया है। उनकी यह पुस्तक राजस्थान और नेहरू-परिवार के संबंधों पर अभिनव प्रकाश डालती है। प्रस्तुत हैं—इसी पुस्तक के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश—

—संपादक

प्रकाशक : गौरव गाथा संगम वी-६२, हिमालय हाऊस कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली

राजस्थान भारत का हृदय-प्रदेश है। ३,४१,७३२ वर्ग किलोमीटर में विस्तृत, ३१,७०४ ग्रामों और १४५ नगरों तथा कस्बों को अपने अंचल में स्थान देने-वाला यह प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से आज भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है।

राजस्थान की धरती वीर-प्रसू मानी गयी है। यहां के वीरों और वीरांगनाओं के शौर्य और बलिदान की गाथाओं ने सारे भारत को प्रेरणा दी है, किंतु राजस्थान की परंपराएं वीरता और शौर्य तक ही नहीं हैं। इस पुनीत धरती पर अपने प्राण हथेली पर लिये चलनेवाले पृथ्वीराज सांगा, प्रताप और राजसिंह-जैसे नरपुंगव तथा हंसते-हंसते धधकती चिता का आलिंगन करने-वाली पद्मिनी-जैसी सन्नारियां ही नहीं, भक्त शिरोमणि, गिरिधर गोपाल गुण-गायिका मीरा-जैसी साध्वी और अनेक संत भी अवतरित हुए। माघ-जैसे महा-कवि और भारत के घोर अंधकारपूर्ण युग को चमत्कृत करनेवाले सवाई जयसिंह-जैसे ज्योतिषी और वैज्ञानिक तक को इस धरती ने जन्म दियां था।

भारत में स्वाधीनता के सूर्योदय से पूर्व राजपूताना कहे जानेवाले भू-भाग में जयपुर प्रमुख रियासत थी, जिस पर ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी से कछवाहा राज-पूतों का शासन रहा था। अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में जयपुर नगर की स्थापना से पूर्व यह रियासत पुरानी राज-धानी आमेर के नाम से जानी जाती थी

पं० गंगाधर नेहरू—
मोतीलालजी नेहरू के पिताश्री

और जयपुर की तुलना में एक बहुत छ
रजवाड़े की तरह थी। जयपुर को इस
स्वतंत्रता-पूर्व का महत्त्व, विस्तार और
स्वरूप प्रतापी महाराजा सवाई जयसिंह
के समय में मिला था, जो औरंगजेब के
शासनकाल के अंतिम वर्षों में आमेर
गद्दी पर बैठा था।

खेतड़ी राज्य के संस्था
सवाई जयसिंह के पूर्व जयपुर रियासत
शीर्ष उत्तर पश्चिमी भाग, जिसे आज
शेखावाटी प्रदेश कहा जाता है, शेखावतों
अधिकार में था, जो आमेर के राजवंश
ही एक शाखा थे। अठारहवीं सदी के आ
में जब सवाई जयसिंह जयपुर नगर
बसाने का उपक्रम कर रहा था, तब शे
वतों में शार्दूलसिंह बड़ा वीर और प्र
था। उसने कायमखानी नवाब रुहे
से झुंझनूं हस्तगत किया। उसकी एवं
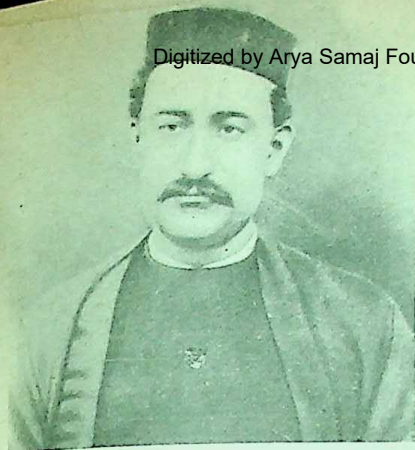
पं० नन्दलाल नेहरू—
मोतीलालजी नेहरू के बड़े भाई
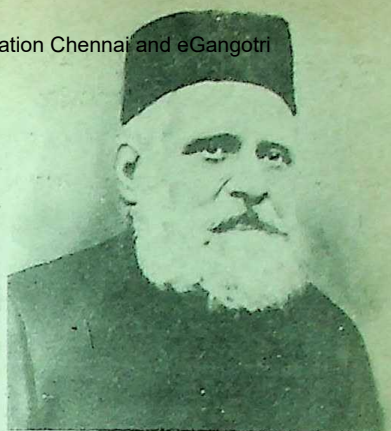
पं० वंशीधर नेहरू
मोतीलालजी नेहरू के अग्रज

शेखावतों की सहायता से सीकर के शिवसिंह ने फतहपुर में भी कायमखानियों के पुराने राज्य को उखाड़ दिया। खेतड़ी संस्थान या चीफशिप की स्थापना करनेवाला शार्दूलसिंह का पौत्र भोपालसिंह था। वह जसरापुर के निर्वाण ठाकुर की पुत्री से विवाह करने के लिए गया था। उसने अपने श्वसुर-गृह से तीन कोस दूर पहाड़ियों से घिरे हरे-भरे स्थान को अपने घोड़ों के चराने के लिए बहुत उपयुक्त समझकर अपने श्वसुर से मांग लिया। यह स्थान खेतसिंह की ढाणी कहलाता था, जहां १७५५ में भोपालसिंह ने वर्तमान खेतड़ी नगर को बसाना आरंभ किया। पहाड़ी पर जो समुद्रतल से २,३३७ फुट ऊंची है, उसने भोपालगढ़ का किला बनवाया और १७५७ में इस नये नगर को बाकायदा अपनी राजधानी बनाकर रहने लगा।

खेतड़ी का क्षेत्र जयपुर रियासत की दो निजामतों (जिलों) में पड़ता था। शेखावटी निजामत का भाग परंपरागत या बपौती का था और तोरावाटी निजामत का इलाका कोटपूतली, ईस्ट इंडिया कंपनी से सीधा जागीर में मिला था।

कठिनाइयों का कुचक्र

इस छोटे से राज्य की राजधानी खेतड़ी जयपुर से लगभग ९० मील उत्तर में पर्वतावली के मध्य एक सुंदर नगरी का दृश्य उपस्थित करती है।

१८४३ के आरंभ में राजा शिवनाथसिंह अकाल ही में काल-कवलित हो गये थे और राजा फतहसिंह की नाबालिगी ने इस छोटे-से राज को पेचीदगियों और कठिनाइयों में डाल दिया था।

बालक राजा एकाग्र चित्त से विद्याध्ययन में लगा था और इसमें संदेह नहीं
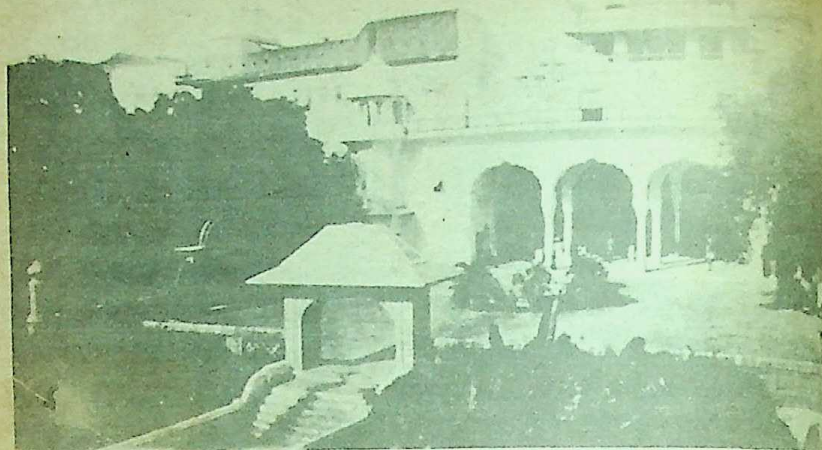
खेतड़ी में पं० नन्दलाल नेहरू का निवास-स्थान-दीवानखाना विवेकानंद स्मृति मंदिर

कि इस समय को देखते हुए उसने अपने आपको सुशिक्षित किया।

अंततोगत्वा, राजा फतहसिंह का परीक्षा-काल समाप्त हुआ और १८ अगस्त, १८६१ को उसे खेतड़ी का पूर्ण शासनाधिकार सौंप दिया गया। २४ अक्तूबर, १८६१ को उसे ब्रिटिश सरकार से भी रोबकार मिल गया, जिसमें कोटपूतली पर उसके अधिकार की संपुष्टि की गयी थी।

राजा फतहसिंह ने पहला काम सचमुच, टामस हेदरली को हटाने का ही किया, जिसे फिर भरतपुर में नौकरी मिल गयी। पारखी फतहसिंह को यह समझने में भी देर न लगी कि बाबू राधाकिशन (राजा के 'सिद्धांतहीन', 'कुचक्री' प्राइवेट सेक्रेटरी) की आंतरिक इच्छा क्या थी और यदि वह पूरी हो जाती, तब वह कितनी बड़ी विपत्ति खड़ी कर देता। राधाकिशन को अंत में प्राइवेट सेक्रेटरी के पद से हाथ धोना पड़ा। उसकी जगह आये आगरा के पंडित नन्दलाल नेहरू, जो आयु में राजा फतहसिंह से कोई दो साल छोटे होंगे।

संयोग और सुयोग

पंडित नन्दलाल का खेतड़ी आना एक संयोग ही था, जो खेतड़ी के राजा फतहसिंह और स्वयं नन्दलाल और उनके परिवार के लिए भी तब बड़ा सुयोग सिद्ध हुआ। युवक राजा फतहसिंह अपनी छोटी-सी आयु में ही तब तक बड़ा कष्टप्रद समय देख चुका था, और उससे दो वर्ष छोटे पंडित नन्दलाल को साथ लेकर उसने जहां खेतड़ी के लिए शासन-सुधार और उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया, वहां १८५७ में स्वाधीनता-संग्राम में विस्थापित और विश्रृंखल नेहरू-परिवार को भी नये सिरे से पुनः संस्थापित होकर अपनी आजीविका

पिलानी में पंडित नेहरू—बायें से श्री घनश्यामदासजी बिड़ला, पं. नेहरू, श्री बसंत कुमार बिड़ला, श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला एवं श्री कृष्णकुमार बिड़ला

के प्रति आश्वस्त होने का अवसर प्रदान किया, जिसका लाभ उठाकर कश्मीरी युवक ने अपने छोटे भाई मोतीलाल को पुत्र के समान पाला-पोसा और सुयोग्य बनाया।

नेहरू-परिवार : दिल्ली से अलविदा

एक लेखक के अनुसार, १८५७ में दिल्ली की प्रायः समूची भारतीय जनसंख्या, जो अनुमानतः डेढ़ लाख होगी, जान बचाने के लिए शहर के दरवाजों से बाहर निकल आयी और कुतुब तथा निजामुद्दीन के मैदानों में भूख-प्यास और कड़ाके की सरदी सहती हुई पड़ी रही। बहुत से लोगों ने दिल्ली को अलविदा कहने में ही भला माना और वे सुरक्षा और आश्रय की खोज में निकल पड़े। इन्हीं लोगों में नेहरू-परिवार भी था, जिसमें उस समय पंडित गंगाधर नेहरू और उनकी पत्नी जिओरानी, दो पुत्र—बंशीधर और नन्दलाल और दो पुत्रियां—पटरानी तथा महारानी थीं। इन लोगों ने आगरे का रास्ता पकड़ा, किंतु वह अधिक दूर नहीं गये होंगे कि अंगरेज सिपाहियों का एक दल उन्हें मिला। उन्हें शक हुआ कि दोनों लड़कियों में से एक किसी अंगरेज की लड़की है, जिसे यह लोग भगाये लिये जा रहे हैं। 'कश्मीरी लोग आमतौर पर बहुत गोरे होतें हैं, इसलिए फिरंगी सैनिकों को यह भ्रम हो गया कि नन्ही लड़की अंगरेज है और बाबा उसे भगाये लिए जा रहे हैं।' ('इंदु से प्रधानमंत्री',—कृष्णा हठीसिंह)

विपत्ति अकेले नहीं आती

जवाहरलाल नेहरू ने भी 'मेरी कहानी' में इस घटना के अपने ब्यौरे में लिखा है कि

'मेरे दोनों चाचा जवान थे और कुछ अंग-रेजी जानते थे। मगर खुशकिस्मती से मेरे चाचा के अंगरेजी-ज्ञान ने मदद की। इतने ही में उधर से एक शख्स गुजरा, जो मेरे चाचा वगैरा को जानता था। उसने उनकी और दूसरों की जान बचायी।'

गंगाधर नेहरू अपने परिवार के साथ सकुशल आगरा पहुंच गये, किंतु इस नये शहर में उनका क्या था? दिल्ली में वह अपनी नौकरी और उसके साथ सब-कुछ छोड़ आये थे। नेहरू-परिवार के लिए वे दिन बड़ी तंगदस्ती और मुसीबत के रहे होंगे। विपत्ति अकेली नहीं आती और १८६१ के आरंभ में ही पंडित गंगाधर नेहरू केवल ३४ साल की भरी जवानी में ही चल बसे, तब यह दुर्दिन अपनी परा-काष्ठा पर पहुंच गये। पिता की मृत्यु के तीन महीने बाद आगरा में ही बंशीधर और नन्दलाल के सबसे छोटे भाई मोतीलाल नेहरू का जन्म हुआ। वह दिन था ६ मई १८६१। विधवा जिओरानी ने अपनी मजबूरी और मुसीबत के बावजूद अपने सबसे छोटे लाल के लिए लाड़-प्यार का सागर ही उड़ेल दिया।

भाग्य ने फिर सीधी करवट ली और बंशीधर तथा नन्दलाल ने अपने पांवों पर खड़े होकर इस डूबते हुए घर को बचा लिया। बंशीधर आगरा की सदर दीवानी अदालत में 'फैसला-नवीस' बन गये। नन्द-लाल नेहरू को आगरा कालेज के प्रिंसि-पल एंडरसन की सहायता से खेतड़ी में अध्यापक की नौकरी मिली थी और खेतड़ी आगरा के कोई निकट नहीं थी, फिर भी माता और छोटे भाई के अतिरिक्त अपनी दोनों बहनों को भी उन्होंने साथ रखा। (बाद में राजा फतहसिंह ने उन्हें प्राइवेट सेक्रेटरी बनाया)

राजा फतहसिंह और दीवान नन्दलाल की जोड़ी खूब बनी और अगले नौ वर्षों तक जबकि राजा फतहसिंह की ३० नवंबर, १८७० को दिल्ली में मृत्यु हुई, इस युवक राजा और युवक दीवान ने ऐसी सूझ-बूझ और योग्यता के साथ रियासत का शासन-प्रबंध चलाया कि बड़े से बड़े अंग-रेज अधिकारियों ने उनकी प्रशंसा की।

* * *

पंडित नन्दलाल जिस नौ वर्ष के बालक अजीतसिंह को राजा फतहसिंह के उत्तराधिकारी के रूप में खेतड़ी की गद्दी पर बैठाकर राजस्थान से विदा हुए थे, वह नन्दलाल के पुत्र-समान छोटे भाई मोतीलाल का समवयस्क था। राजा अजीत-सिंह की जन्मतिथि १६ अक्तूबर, १८६१ है और पंडित मोतीलाल नेहरू का जन्म ६ मई १८६१ को हुआ था। इस प्रकार मोतीलाल, राजा अजीतसिंह से कुल पांच महीने और दस दिन बड़े थे। होश संभा-लने के बाद पंडित मोतीलाल को अपनी जीवन-नौका खेने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। ४२ वर्ष की आयु में पितृ-कल्प भाई नन्दलाल की अकाल मृत्यु ने २५ वर्ष के युवक मोतीलाल के कंधों पर

अपनी विधवा भावज नन्दरानी, उनकी दो पुत्रियों और पांच पुत्रों के भरे-पूरे परिवार के भरण-पोषण का बड़ा भार भी डाल दिया था। इधर राजा अजीतसिंह गद्दी पर बैठकर भी समस्याओं से घिरा था। कोटपूतली के परगने के कारण खेतड़ी की हैसियत ब्रिटिश सरकार के जागीरदार की थी और गद्दी का उत्तराधिकारी गोद लेने की दशा में सरकार ने नजराना लेने का नियम बना दिया था। अत: बालक अजीतसिंह को बीस हजार रुपये का 'मातमी नजराना' तो ब्रिटिश सरकार को ही देना पड़ा और जयपुर के झाड़शाही सिक्के में एक लाख चौवन हजार नौ सौ छियानवे रुपये, उस वार्षिक कर के निर्धारित हुए, जो पिछले उन्नीस सालों से बकाया था। राजा फतहसिंह के समय में यह कर दिया ही नहीं गया था।

जीवन : एक चुनौती

राजा अजीतसिंह और पंडित मोतीलाल नेहरू दोनों ही के सामने भावी जीवन एक चुनौती बनकर खड़ा था। दोनों ही परम मेधावी, साहसी और उद्यमी थे। और, इस चुनौती को उन्होंने बड़े धैर्य और आत्मविश्वासपूर्वक स्वीकार किया।

पंडित मोतीलाल ने अपने दिवंगत भाई नन्दलाल की संतान के संरक्षण का भार बड़ी तत्परता से उठाया और उन्होंने अपने भतीजों तथा भतीजियों को उतनी ही ऊंची शिक्षा देना और जीवन में व्यवस्थित कर देना चाहा, जैसा नन्दलाल ने

पं० मोतीलाल नेहरू

उनके लिए किया था।

राजा अजीतसिंह और पंडित मोतीलाल नेहरू की प्रगाढ़ मैत्री और घनिष्ठता का परिचय हमें १८८९ के उन पत्रों से मिलता है, जो जवाहरलाल के जन्म के पश्चात एक-दूसरे को भेजे गये थे। जवाहरलाल का जन्म १४ नवम्बर १८८९ को हुआ था। मोतीलाल नेहरू को पहले, अपने बचपन में हुई पहली शादी से भी पुत्र-लाभ हो चुका था, किंतु तब जच्चा और बच्चा, दोनों ही की मृत्यु हो गयी थी। पहले विवाह के इस दु:खद अंत के बाद मोतीलाल ने स्वरूपरानी से विवाह किया। आरंभ में स्वरूपरानी का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता था और पहला पुत्र हुआ, वह भी जीवित न रहा। दूसरे पुत्र, जवाहरलाल का जन्म सचमुच नेहरू-परिवार में अत्यंत आनंद का अवसर था। पुत्र-जन्म की यह शुभ-

श्रीमती इंदिरा गांधी
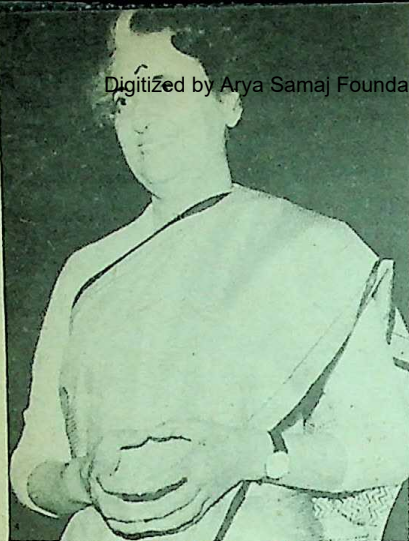
सूचना पंडित मोतीलाल ने पत्र द्वारा राजा अजीतसिंह को दी थी, जिसके उत्तर में उन्होंने ९ दिसंबर १८८९ को पंडित मोतीलाल नेहरू, वकील हाईकोर्ट, इलाहाबाद, को इस प्रकार बधाई दी थी : "प्रिय पंडितजी, आपके दो पत्रों की पहुंच सहर्ष स्वीकारते हुए मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपको पुत्र-लाभ हुआ है। इसके लिए आपको मेरी बधाई। जहां तक (बालक के) जन्म-पत्र का संबंध है, यह आपको कुछ समय बाद भेज दिया जाएगा। आपका हितैषी—अजीतसिंह।

दूध देनेवाला बकरा !

खेतड़ी के साथ पंडित मोतीलाल नेहरू के अभिन्न और घरेलू संबंधों का परिचय देनेवाला एक और पत्र, लेखक के संग्रह में विद्यमान है, जो पंडितजी ने १८ मार्च १९०० को इलाहाबाद में मुंशी जगमोहनलाल को लिखा था। पंडितजी उपरोक्त पत्र में, जो काफी लंबा था, मुंशीजी लिखते हैं : 'आपने जो क्षेम-कुशल के स… चार पूछे, उसके लिए धन्यवाद। … पत्नी और परिवार के अन्य लोग … आनंदपूर्वक हैं। आपने शायद मुझे … बार बताया था कि हिज हाईनेस (रा… अजीतसिंह) ने जवाहरलाल के लिए … घोड़े की बाबत कुछ बातें जाननी … थीं। अब मुझे पता चला है कि आ… मुंशी मुबारकअली (नेहरू-परिवार … खास प्रबंधक और पंडित मोतीलाल … विश्वस्त और सबसे बड़े मुंशी) से … ऐसी बात कही थी, जिससे उन्हें … कि कोई ठीक-ठाक घोड़ा मिल गया … और उसे सधाया जा रहा है। कृ… बतायें कि क्या यह सही है ? जवाहरला… (जो अब ग्यारह साल के हैं) ने जो घु… सवारी सीखी थी, करीब-करीब भूल गु… है और मैं चाहता हूं कि उसके लिए फौ… एक घोड़ा आ जाए। ... आपको नुमाइश … बारे में मेरा टाइप किया हुआ पत्र मि… होगा। इसके आसार तो बहुत अच्छे … मैं जितने लोग जुटा पाया हूं, वे उनसे … ज्यादा चाहते हैं और मैंने महाराज ब… दुर को कलकत्ता भेजा है, ताकि कुछ … वगैरा को तय कर आयें। जहां तक तमा… का सवाल है' फ्रांसीसी भारत को भी ह… दायरे में शामिल किया गया है। … बताया गया है कि हिज हाइनेस के … एक बहुत होशियार बीनकार (प्र… बीनकार मुशरफ खां, जो जयपुर के …

राजा सवाई मानसिंह की मृत्यु के बाद राजा अजीतसिंह के पास रहने लगे थे) भी तैनात हैं। यदि हिज हाइनेस उन्हें कुछ महीनों के लिए पेरिस जाने दें, तो मुझे बड़ी खुशी होगी। कृपया हिज हाइनेस की इजाजत ले लीजिए और माहवारी तनख्वाह के अलावा उसे दूसरे सब खर्चे भी दे दिये जाएंगे।

'जहां तक झूंथा पहलवान (झूंथाराम खेतड़ी का प्रसिद्ध पहलवान था) का संबंध है, मुझे नहीं मालूम कि वह क्या है, लेकिन अगर आप समझते हैं कि वह ठीक है, तो आप उसे भी यहां भेज सकते हैं। अगर उसे नहीं चुना गया, तो उसके इलाहाबाद आने-जाने का खर्च दे दिया जाएगा।

'जो बकरा दूध देता है, वह निश्चय ही कौतूहल का विषय है, पर सवाल यह है कि वह कितने दिन इस तरह दूध देता रह सकता है? हो सकता है, यह पेरिस पहुंचे, उससे पहले ही दूध देना बंद कर दे। अगर आप सच मानते हैं कि ऐसा नहीं होगा, तो आप इसे भी भेज सकते हैं।'

इस प्रकार पुत्र का जन्म-पत्र चाहिए तो खेतड़ी से, उसके लिए घोड़ा चाहिए, तो वह भी खेतड़ी से और पेरिस की नुमाइश के लिए इसका इंतजाम हिंदुस्तान में शायद पंडित मोतीलाल ही कर रहे थे, बीनकार, बाजीगर, दूध दनेवाला बकरा और पहलवान चाहिए तो वह भी खेतड़ी से ही मंगाने की तजबीज करनेवाले पंडित मोतीलाल

खेतड़ी-नरेश राजा अजीतसिंह

नेहरू राजा अजीतसिंह और उनके मंत्रियों से खुला और घरेलू व्यवहार रखते थे।

खेतड़ी में स्वामी विवेकानन्द

१८९१ में स्वामी विवेकानन्दजी और राजा अजीतसिंह की पहली भेंट हुई। स्वामी विवेकानन्दजी के जीवन में राजा अजीतसिंह से संबंध होना बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। खेतड़ी (शेखावाटी) जयपुर का मंडलवर्ती राज्य रहा है। जयपुर ने राजा अजीतसिंह को सिंहासन-च्युत करने का षड़यंत्र रचा और अजीतसिंह, खेतड़ी को जयपुर के प्रभाव से मुक्त कराने के लिए संघर्ष कर रहे थे और चिंतित रहने लगे थे, तब स्वामीजी ने आध्यात्मिक, मानसिक मनोबल बनाये रखने के लिए लिखा था, "इस पृथ्वी पर खेतड़ी नरेश को नीचा दिखाने की किसमें ताकत है, जबकि महा-

माया शक्ति उनके साथ है।"

एक तरफ राजा अजीतसिंह को आध्यात्मिक, मानसिक रूप से उत्साहित करने में स्वामी विवेकानन्द लगे थे, दूसरी ग्रोर उनके चिर-स्नेही, परम मित्र कानून के महापंडित (विधिवेत्ता) पं. मोतीलाल नेहरू ने कानूनी पक्ष का बीड़ा अपने सर उठाया।

जवाहरलाल की पुष्कर-यात्रा

पंडित जवाहरलाल नेहरू १९२९ में अपने पिता पंडित मोतीलाल नेहरू के साथ शायद पहली बार राजस्थान में आये थे। पिता-पुत्र तब पुष्कर गये थे। उस यात्रा का रिकॉर्ड, वहां के एक पंडे की वही में दर्ज है।

पिलानी में पंडित नेहरू

राजस्थान की दो शिक्षण संस्थाग्रों के कार्य ग्रौर प्रगति के प्रति पंडित जवाहरलाल नेहरू की गहरी दिलचस्पी रही। यह विशिष्ट संस्थाएं हैं, पिलानी ग्रौर वनस्थली की, जिनकी देशव्यापी ख्याति है। इन दोनों को ही तीन-तीन बार नेहरूजी का स्वागत करने ग्रौर उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का गौरव मिला था। पिलानी बिड़ला-बंधुग्रों की उदारता से एक शैक्षणिक नगरी बनी है, तो वनस्थली पंडित हीरालाल शास्त्री ग्रौर उनकी पत्नी, श्रीमती रतन शास्त्री की लगन ग्रौर निष्ठा से महिला-शिक्षा के एक आदर्श केंद्र के रूप में विकसित हुई है। अपनी स्थापना से लेकर आज तक ये दोनों ही संस्थाएं राष्ट्रीयता के परिवेश में फूली-फली हैं।

पंडितजी पहली बार ११ फरवरी, १९५० को पिलानी आये थे। पिलानी के निकट जीणी के विष्णु हवाई-अड्डे पर वे वायुयान से पहुंचे थे ग्रौर दस मिनट पहले आ जाने पर भी वे निर्धारित समय—नौ बजे ही—उतरे थे। घनश्यामदास बिड़ला, अन्य सज्जन ग्रौर अध्यापक उनके स्वागतार्थ वहां उपस्थित थे। श्री शुकदेव पांडे के शब्दों में वह देश के एक सर्वोच्च धनाढ्य ग्रौर भारत मां को अपना सर्वस्व समर्पित कर देनेवाले एक अमूल्य रत्न का मिलन था। एक ग्रोर धनवान, बुद्धिमान तथा विशाल उद्योग-धंधों का अधिपति था ग्रौर दूसरी ग्रोर त्याग, तपस्या का प्रतीक व भारतवासियों के हृदय का सम्राट था।

जीणी, पिलानी से पांच मील दूर है ग्रौर यह दूरी मोटर से तय कर जब जवाहरलालजी पिलानी पहुंचे, तब वहां उनके स्वागत के लिए अपार उत्साह था। सारा गांव ध्वजा-पताकाग्रों से सजाया गया था ग्रौर रेतीली सड़कों पर पानी का गहरा छिड़काव किया गया था। जैसा नेहरूजी के आगमन पर सर्वत्र होता था, वहां भी दूर-दूर के गांवों की जनता उनके दर्शनार्थ उमड़ आयी थी। गांव के प्रवेश-द्वार पर नेहरूजी ग्रौर श्री घनश्यामदास बिड़ला घोड़ों पर सवार हो गये ग्रौर अपार भीड़ के जय-जयकार ग्रौर हर्षध्वनि के बीच में से गुजरे।

कार नहीं, जीप पसंद

इस यात्रा में पंडितजी ने सभी स्कूलों का निरीक्षण किया। बिड़ला मांटेसरी स्कूल में नन्हे-मुन्नों की मधुर मुसकान ने उन्हें मोह लिया और उन्होंने भी बच्चों को गोद में उठाकर और उनके छोटे-छोटे हाथों से माला पहनने के लिए सिर झुकाकर उन्हें रिझा दिया। छोटे-छोटे बच्चों से उन्होंने कुछ बातें कीं और एक अन्य प्राइमरी स्कूल 'अर्जुन स्कूल' को भी देखा। यहां से पिलानी के बाजार में निकलते समय वे एक खुली 'डैमरल' कार में बैठे थे, पर उन्हें वह बड़ी गाड़ी नहीं सुहाई और जीप में बैठना चाहा। तब वहां जीप केवल पुलिसवालों के पास थी और वही उनके लिए खाली करायी गयी। जीप में ही वे अत्यंत प्रसन्न-मुद्रा में सारे गांव में घूमे।

पिलानी के छात्र-छात्राओं की सामूहिक ड्रिल और पी. टी. का प्रदर्शन देखकर पंडितजी बड़े प्रभावित हुए और पिलानी के आचार्य श्री शुकदेव पांडे से उन्होंने पूछा कि ऐसा प्रदर्शन करने की सफलता के पीछे क्या तैयारी है? पांडेजी ने तब उन्हें उत्तर दिया था कि केवल इस प्रदर्शन की खातिर ही यह तैयारी नहीं की गयी, पी. टी. और ड्रिल पिलानी के छात्र-छात्राओं के लिए एक नियमित नित्य-कर्म है और इस कारण ऐसे अवसरों पर विशेष तैयारी की जरूरत नहीं पड़ती।

छात्र-छात्राओं को स्वस्थ, चुस्त और

जीवती ही सुरग पूंचगी

खेतड़ी में बालक मोतीलाल को अपने स्तनों का दूध पिलानेवाली धाय थी, लच्छीराम माली की पत्नी। उसने उन्हीं दिनों लड़का जन्मा था और वह स्वस्थ तथा धाय बनने के सर्वथा उपयुक्त समझी गयी थी। खेतड़ी-आगमन के समय बालक मोतीलाल की उम्र सालभर की भी नहीं थी। प्रायः ढाई तीन वर्षों तक इसी धाय के दूध से हृष्ट-पुष्ट मोतीलाल हुए। लच्छीराम के तीन पुत्र थे--खींवा, तुला और हनुमान। उसकी सबसे छोटी पुत्री, भानी बगड़ (झुंझनूं) में विवाही गयी थी।

हनुमान के अनुसार उसकी मां कहा करती थी--'मैं दीवानजी का भाई मोतीलाल की धाय हूं। अर जद राजाजी-रानीजी की सवारी पिरागजी (प्रयाग) पधारी जणा मैं भी सांगे गई थी। ऊं बखत मोतीलाल की जोड़ायत म्हारो सासू जिसो मान करयो थे। मने गाड़ी में बैठाकर सैल कराई थी, मैं तो ज्याणुं जीवती ही सुरग पूंचगी थी।"

१८९१ में राजा अजीतसिंह सपत्नीक पहली बार प्रयाग गये थे। पं. मोतीलाल की धाय भी उनके साथ थी। मोतीलालजी की पत्नी स्वरूप रानी अपने पति को पोषित करनेवाली धाय का सास के समान मान-सम्मान करती थीं।
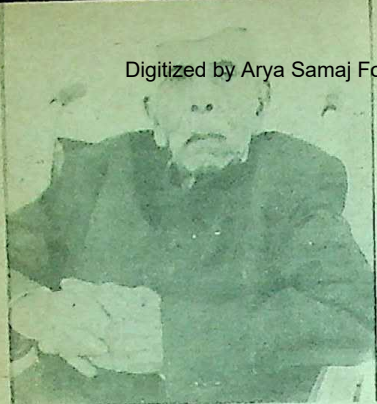
लेखक : पं. झाबरमल्ल शर्मा

फुरतीला देखकर नेहरूजी इतने प्रसन्न थे कि वे खड़े-खड़े ही सारा प्रदर्शन देखते रहे और इसके बाद सार्वजनिक सभा में भाषण करने के लिए गये। बोलने से पहले उन्होंने माइक पर कहा, "क्या आपको मेरी आवाज सुनायी दे रही है?"

इस पर एक ओर से 'नहीं' जवाब मिला तो श्री शुकदेव पांडे ने कहा कि यह गलत है, जब आपका प्रश्न उस ओर तक सुनायी दिया है, तभी तो जवाब दिया है। पंडितजी ने जैसे अनसुनी करते हुए लोगों को आगे बढ़ने का इशारा किया और यह कहना था कि बड़ी हड़बड़ मची और सारी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी।

जनसागर की ऐसी हिलोरें देखकर पंडित जवाहरलाल नेहरू को जैसे बड़ा आनंद आता था। जब उन्होंने पंडितजी को चिल्लाते और लोगों को बैठाने की कोशिश करते देखा, तो वे बोले, "क्यों आप खामखाह तकलीफ करते हैं, आपका गला भले बैठ जाए, ये लोग तो बैठेंगे नहीं।" और, उन्होंने अपना भाषण आरंभ किया। और, जैसे जादू-सा असर हो गया। मा[नो] एकदम शांत और दत्तचित होकर मंत्र मुग्ध से उनका भाषण सुनने लगे। भार[त] के कोटि-कोटि जन के साथ उनका गह[रा] तादात्म्य था। इस जन-समुदाय को ही भारत-माता मानते थे।

भारत-माता कौन

बिड़ला बालिका विद्यापीठ के सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद पंडितजी ने लड़कियों से पूछा भी, "भारत-माता कौन है?"

लड़कियां बेचारी क्या उत्तर दें इस गंभीर प्रश्न का!

पंडितजी ने स्वयं ही कहा, "तुम भारत-माता हो। देश के सभी छोटे-बड़े लोग मिलकर भारत-माता हैं। हमारे पहाड़, नदियां, गांव, शहर, सभी भारत-माता हैं। इनकी सेवा ही भारत-माता की सेवा है।"

तीन साल बाद, १९५३ में पंडितजी दूसरी बार पिलानी आये। उन्हें तब सेंट्रल इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट का शिलान्यास करना था। 'विद्या-विहार' का नया भवन बनकर तैयार हो चुका था और पंडितजी ने इसमें साइंस और इंजीनियरिंग कालेजों की प्रयोगशालाओं को बड़े ध्यानपूर्वक देखा। उनकी साज-सज्जा और उपकरणों को देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए। इंजीनियरिंग कालेज के छात्रों के लिए उन्होंने तब अपना यह संदेश भी टेप-रिकॉर्ड करवाया था।

"तीन वर्ष हुए मैं पिलानी आया था। इस अरसे में इस स्थान पर बड़ा परिवर्तन हुआ है। इसका बड़ा विकास हो गया है। स्पष्ट है कि पिलानी का शिक्षण-केंद्र बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। यह ऐसा स्थान है, जिसमें बड़ी जीवन-शक्ति है और निश्चय ही यह बढ़ेगा। विकास की इन सब प्रवृत्तियों से मैं प्रसन्न हुआ हूं। किंतु अभी इस बात का पता चलना बाकी है कि इन बड़ी इमारतों में किस प्रकार के लड़के-लड़कियों का पालन-पोषण हो रहा है। ऊपर से देखने पर तो वे बिलकुल ठीक लगते हैं, किंतु मेरे लिए उनके ज्ञान की गंभीरता का अनुमान लगाना कठिन है। वैसे इसकी आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि भविष्य इसका निर्णय करेगा। बिड़ला शिक्षण-केंद्र अथवा वस्तुतः कोई भी शिक्षण-केंद्र कसौटी पर तभी कसा जाता है, जब उस केंद्र से निकले हुए लोग राजस्थान या विशाल भारत की सेवा के लिए बाहर निकलें। सेवा में ही हमारे देश का कल्याण निहित है। हमारे लिए सबसे बड़ा काम भारत तथा उसका निर्माण-कार्य है। इसमें हममें से प्रत्येक को अपना हिस्सा अदा करना होगा। जो अपना हिस्सा अदा नहीं करता, वह एक अजीब व्यक्ति होगा। राष्ट्रीय प्रगति के इतिहास में पिलानी का क्या स्थान होगा ? मैं जानता हूं, इसका स्थान अत्यंत महत्त्व का होगा और सच तो यह है कि यह उस ओर प्रयत्नशील है। आपकी उपलब्धियों के कारण निश्चित रूप से भारत जल्दी समृद्ध बनेगा। जयहिंद।"

पिलानी है तो क्या . . . ?

पिलानी की इस दूसरी यात्रा में पंडितजी ने अपनी विनोदप्रियता का भी उस समय बड़ा अच्छा परिचय दिया, जब वे घूमघाम-कर थके हुए भोजन के लिए गये। खाने से पहले रस पीने के अंगरेजी चलन के अनुसार उन्हें रस पीने को दिया गया। परोसगार कई थे और दो-तीन जनों ने बारी-बारी से जाकर पंडितजी को गिलास थमा दिये और वे रस पीते रहे। फिर बिड़ला बंधुओं की हवेली के मैनेजर श्री हरिश्चंद्र गुप्ता मतीरे (तरबूज) का रस लेकर आ पहुंचे, तो पंडितजी ने मुसकराकर कहा,, "भई, पिलानी है तो क्या पिलाओ ही, कुछ खिलाओगे नहीं ? अब तो बड़ी तेज भूख लगी है।"

जब उन्हें कहा गया कि यह पिलानी की विशेष वस्तु है और उन्हें इसे भी चखना चाहिए, तब 'अच्छा भाई', कहकर पंडितजी इसे भी गटागट पी गये और फिर भोजन पर बैठे।

पंडितजी ने मांटेसरी स्कूल में बच्चों की कला-प्रदर्शनी देखी और उसकी बड़ी सराहना की, कालेज के सफल विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित किया, अपने भाषण में उन्होंने कहा कि भारत के भावी राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री उन्हीं की पंक्तियों में से निकलेंगे। गरीबी मिटाने और लोगों को ऊंचा उठाने पर

उन्हें विशेष बल दिया था।

फरवरी, १९६१ में जवाहरलालजी तीसरी और अंतिम बार पिलानी आये। अवसर था—बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट की हीरक जयंती। श्रीमती इंदिरा गांधी भी साथ थीं। विद्यार्थियों के 'गार्ड ऑव ऑनर' का निरीक्षण और बैंड की सलामी लेने के बाद, उन्होंने पूरी टुकड़ी को कार्य-कुशलता के लिए बधाई दी। नव-निर्मित शारदा पीठ या सरस्वती मंदिर में पंडितजी ने काफी समय बिताया। यह अपने प्रकार का एक ही अनुपम मंदिर संसार-प्रसिद्ध खजुराहो की प्रतिकृति है। इसकी बाहरी दीवारें संसार के महान विचारकों, वैज्ञानिकों, अन्वेषकों, साहित्यकारों, भारत के ऋषि-मुनियों, संतो-भक्तों तथा अवतारी पुरुषों की प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। इस प्रकार यह ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के सार्वभौम रूप का उपासना-गृह है।

पिलानी : शिक्षा का महान केंद्र

इस बार भी पंडितजी ने पिलानी की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं का अवलोकन और निरीक्षण किया और इंजीनियरिंग कालेज में एक संदेश रिकार्ड कराकर कहा कि पिलानी में उन्हें जो कुछ देखने को मिला, उसने उन्हें बहुत प्रभावित किया है और पिलानी शीघ्र ही देश में शिक्षा और ज्ञान का एक महान केंद्र बन जाएगा।

पिलानी के सेंट्रल म्यूजियम ने भी, जिसमें प्रदर्शित अधिकांश माडल स्थानीय वर्कशाप में ही बनाये गये थे, पंडितजी को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने शिक्षा केंद्रों के साथ ऐसे अजायबघर रखने के विचार को बड़ा सराहनीय बताया।

बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट के हीरक जयंती समारोह का समारंभ करते हुए नेहरूजी ने कहा कि पिछले सात-आठ सालों में इस स्थान ने अपूर्व उन्नति की है। पिलानी को देखकर उनके सामने उस पुनर्जाग्रित भारत का चित्र आ जाता है, जिसकी जड़ें अपने महान प्राचीनकाल में हैं, किंतु जो आज की तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ने की चेष्टा कर रहा है।

पंडितजी ने कहा कि देश की प्रगति के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है और पिलानी में जो नयी संस्थाएं खड़ी हो रही हैं, उनके द्वारा अच्छी शिक्षा की मजबूत जड़ें जमायी जा रही हैं। यहां के विद्यार्थियों को ऐसी ऊंची शिक्षा प्राप्त करने का जो अवसर मिला है, भारत के अन्य छात्रों को नहीं मिल रहा है।

पिलानी की तरह वनस्थली बालिका विद्यापीठ भी तीन बार पंडित जवाहरलाल नेहरू के आगमन और आशीर्वचनों का लाभ उठा चुकी है। यह भी उल्लेखनीय है कि पंडितजी पहली बार पिलानी गये तब भी भारत के प्रधानमंत्री थे, किंतु १९४५ ई. में जब वे पहली बार वनस्थली आये, तो प्रधानमंत्री तो नहीं, कोटि-कोटि भारतीय जनता के हृदय-सम्राट और

लोकनेता अवश्य थे।

वनस्थली में नेहरूजी

२० अक्तूबर, १९४५ के दिन दिल्ली से रेल में चलकर पंडितजी जयपुर आये थे। २१ अक्तूबर को राज्य के वित्त और शिक्षा मंत्री राजा अमरनाथ अटल के यहां भोजन करने के बाद वे शास्त्रीजी के साथ रात को वनस्थली पहुंचे। कश्मीर के शेख अब्दुल्ला भी उनके साथ थे।

वनस्थली में पंडितजी का कार्यक्रम बड़ी सुंदरता के साथ निभ गया। जो कुछ देखा और सुना, उससे बड़े प्रभावित हुए और सभा में भाषण देने खड़े हुए, तो ऐसे बोले-जैसे वही बोल सकते थे। कहा, 'काश, मैं भी एक छोटी-सी लड़की होता तो मुझे भी वनस्थली में शिक्षा पाने का अवसर मिलता।'

पंडितजी दूसरी बार २ फरवरी, '५८ को वनस्थली आये। श्रीमती इंदिरा गांधी भी साथ थीं और दिल्ली से हवाई जहाज में सीधे वनस्थली ही पहुंचे।

राजस्थान-यात्रा : स्वराज्य-यात्रा

जवाहरलालजी ने १९४५ ई. की अपनी राजस्थान-यात्रा को 'स्वराज्य-यात्रा' बताया था। 'भारत छोड़ो' आंदोलन में बंदी बनकर लंबी जेल-यात्रा के बाद उन्होंने यह यात्रा राजस्थान के पूर्वी 'द्वार' अलवर से आरंभ की थी।

अलवर से जयपुर और वनस्थली की यात्रा के बाद पंडितजी ब्यावर और पाली भी गये। इन दोनों ही स्थानों पर सार्वजनिक सभाओं में उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम में कम्यूनिस्टों की भूमिका की कड़ी आलोचना की थी।

जोधपुर रियासत ने तब बहुत चाहा था कि पंडितजी उसी के मेहमान बनते। मिनिस्टरों में भी उन्हें ठहराने के लिए होड़-सी लग गयी थी। कइयों ने उन्हें चाय पर आमंत्रित किया और वे गये भी। महाराजा उम्मेदसिंह ने तो उनके सम्मान में दावत दी। कालेज और छात्र-संघ के समारोहों में राज्य के शिक्षा-मंत्री और उच्चाधिकारी भी उपस्थित थे। उनके आगमन के उपलक्ष में राज्य ने सार्वजनिक अवकाश की घोषणा भी की थी।

जोधपुर की जनता यह सब देखकर स्तब्ध थी। छह माह पहले ही मारवाड़ लोक परिषद के नेता जेल के सीखचों में बंद थे। अकस्मात ही इस दृश्य-परिवर्तन को लोग आंखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे।

जोधपुर के प्रजा-प्रिय राजा उम्मेदसिंह भी हवा के रुख को पहचान रहे थे। नेहरूजी के दिल्ली-प्रस्थान करने के पूर्व वे स्वयं उस स्थान पर आये, जहां भारत का सर्वप्रिय नेता और भावी प्रधानमंत्री ठहरा हुआ था। विदा करने के पूर्व महाराजा ने अपने हाथ से २५,००० रुपये पंडितजी को 'कमला नेहरू कोश' के लिए भेंट किये।

एक अनजाना पक्ष

राजस्थान के साथ नेहरू-परिवार के प्रगाढ़ संबंधों का एक पक्ष प्रायः अनजाना-सा है, किंतु वही सबसे घनिष्ठ, भावात्मक और

पारिवारिक पक्ष है। राजस्थान की राजधानी जयपुर पं. नेहरू की ससुराल, श्रीमती कमला नेहरू का मायका और इसी नाते प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का ननिहाल है।

एक सदी से भी पहले पं. मोतीलाल अटल का कश्मीरी परिवार मान-सम्मानपूर्वक जयपुर में बसाया गया था। महाराजा रामसिंह ने पं. मोतीलाल को दीवान के उच्च पद पर नियुक्त किया था।

पं. मोतीलाल अटल के तीन पुत्र हुए—किशन लाल, श्यामलाल और जयनाथ। प्यारेलाल पं. किशनलाल अटल के छठे पुत्र थे और उनसे बड़े थे, जवाहरमल, जिनको उन्होंने अपनी धनवान [illegible] को गोद दिया था। फलतः उनका गोत्र अटल से बदलकर कौल हो गया। इन्हीं जवाहरमल की पत्नी राजपति के गर्भ से पहली अगस्त १८९९ को कमला नेहरू का जन्म हुआ। ८ फरवरी, १९१६ की वसंत पंचमी के दिन दिल्ली के अटल हाउस में बड़ी धूमधाम और शान-शौकत के साथ जवाहर और कमला का यह विवाह संपन्न हुआ।

कमला भुवन-मोहिनी कन्या थीं और पं. मोतीलाल ने जब उन्हें जवाहरलाल के लिए चुना, तो एक बड़ी बाधा उपस्थित हुई। यह बाधा थी कि नेहरू-परिवार का गोत्र कौल है और जवाहरमलजी भी अटल से कौल बन गये थे। तो क्या कौल-कौल से विवाह कर लेगा? प्रश्न तो जटिल था, किंतु समाधान बड़ा ही सरल निकल आया। यह तय किया गया कि कमला का कन्यादान जवाहरमलजी नहीं करेंगे, उनके बड़े भाई अर्जुननाथजी करेंगे। बस, अर्जुननाथजी अटल ने ही कन्यादान किया और कमला जवाहरलाल नेहरू की अर्द्धांगिनी बन गयीं।

श्रीमती कमला नेहरू के पिता-पक्ष का अटल-परिवार आज भी जयपुर में स्टेशन रोड पर अटलजी के बाग में रहता है। ●

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. घ, २. घ, ३. ख, ४. सतपुड़ा पर्वत-श्रेणी के मध्य स्थित मुलताई, ५. मौसम संबंधी भविष्यवाणी, ६. क. चीशायर (ब्रिटेन) की वेधशाला, ख. लंदन की एक सड़क, जहां अनेक समाचारपत्रों के कार्यालय हैं, ग. न्यूयार्क स्थित स्टाक एक्सचेंज मार्केट, घ. वाशिंगटन में अमरीकी राष्ट्रपति का राजकीय निवास, ७. भारत (१९७९ की गणना के अनुसार ३०१३), ८. पुष्यमित्र, ९. जूनियर लेफ्टीनेंट (अब लेफ्टीनेंट कर्नल) वेलेंतीना व्लादीमिरोव्ना तेरेश्कोवा (रूसी) ने 'वोस्तोक-६' में, जून १९६३ में, १०. फ्रांस के निकोलस एपर्त ने (१८०९), ११. रमेश कृष्णन (२१ वर्षीय), १२. समुद्री हाथी। ●

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित
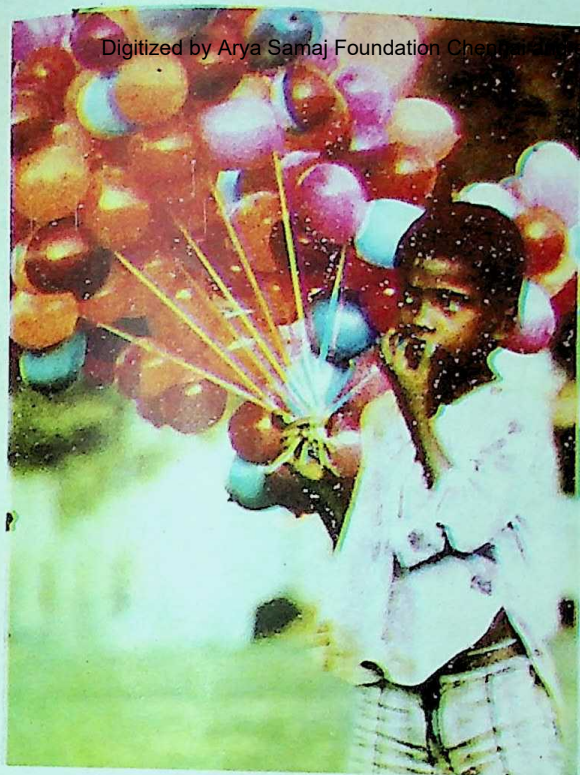
समस्यापूर्ति—४४

रंग किसके लिए

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार—२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार—१५ रुपये
अंतिम तिथि—२० दिसंबर, १९८२

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

तंत्र विशेषांक

गाढ़े फूलों के सुगन्ध एवं उत्कृष्ट स्वाद के लिये.
RATNABRAND
ज़ाफरानी पत्ती
NO 300
No.300
TRADE MARK

शुभकामनाएं

31
5-11-8
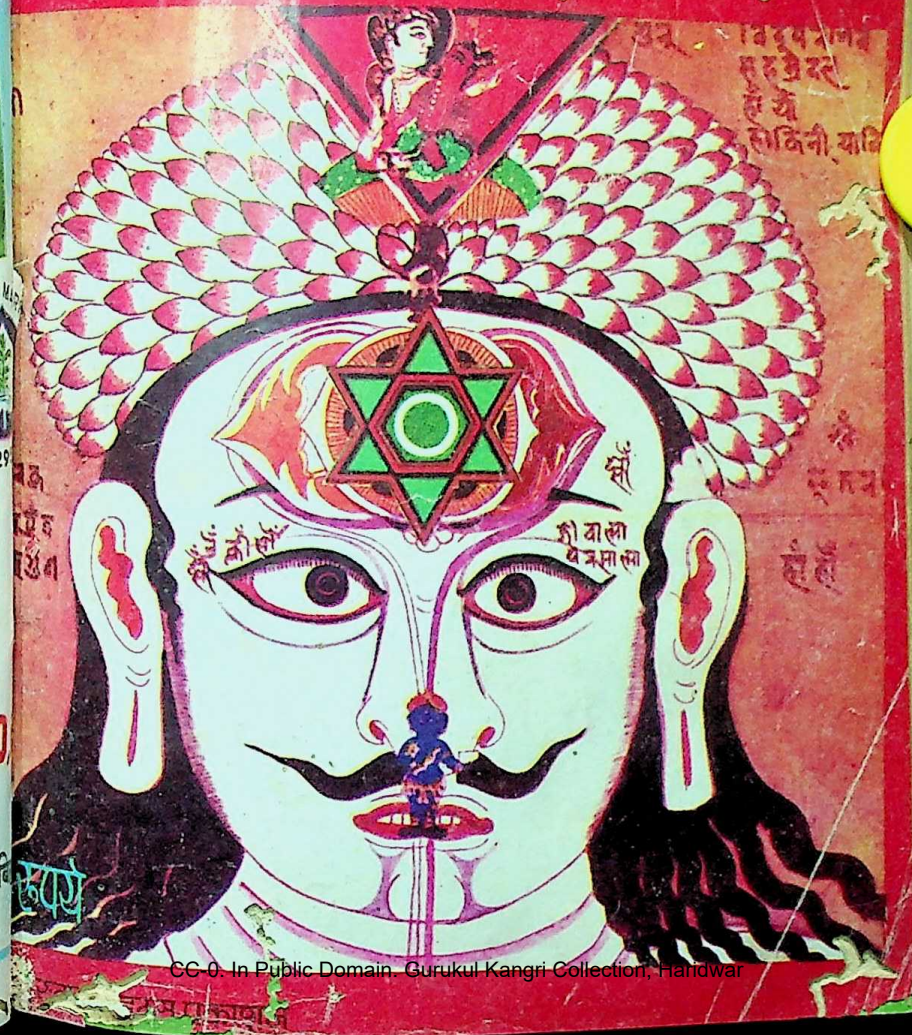
पिछले वर्ष हमने पहला तंत्र-विशेषांक प्रकाशित किया था। एक स्तरीय पत्रिका के लिए यह एक-दम नया प्रयोग था। उसकी आशातीत सफलता के बाद हम इस वर्ष अपने पाठकों को दूसरा तंत्र-विशेषांक भेंट कर रहे हैं। हमारा प्रयत्न रहा है कि तंत्र-अंक में प्रकाशित - प्रत्येक रचना की छानबीन पूरी तरह कर लें। यथासम्भव हमने प्रामाणिक सामग्री यहां प्रस्तुत की है। आशा है हमारे पाठक इस अंक का भी पहले की तरह स्वागत करेंगे।

इस अंक की दो लाख से भी अधिक प्रतियां प्रकाशित की गयी हैं।

अगला दिसम्बर अंक पूरक अंक के रूप में 'तंत्र-विशेषांक : 2' होगा, पाठकों को उसमें भी उपयोगी सामग्री मिलेगी। दीपावली की शुभकामनाएं-

—सम्पादक

घर-गृहस्थी
अपनी देखभ

...खभाल के साथ-साथ ...तो कीजिए.

आपके दिन की असली शुरुआत बच्चों के स्कूल जाने के बाद, और सुबह का नाश्ता समाप्त होने पर होती है।

और तब आप दिन-भर के काम-काज में जुट जाती हैं। घर को साफ़-सुथरा बनाना, सजाना-संवारना, कपड़े धोना, प्रैस करना, खाना बनाना, सीना-पिरोना...बीसीयों काम होते हैं आपके लिए।

इसलिए दिन मे एक कप हॉर्लिक्स लेना अच्छा रहता है।

क्योंकि हॉर्लिक्स लेने का मतलब है हर रोज़ अच्छा स्वास्थ्य।

तभी तो सौ से भी अधिक वर्षों से लाखों लोग हॉर्लिक्स पर भरोसा करते आ रहे हैं।

दुनिया-भर में डाक्टर हॉर्लिक्स को अच्छे स्वास्थ्य का साधन मानते हैं, इसे हर रोज़ लेने की सलाह देते हैं।

और क्यों नहीं!

हॉर्लिक्स में भरपूर गुणों वाले शुद्ध तत्व हैं जिन्हें ऐसी प्रक्रिया से तैयार किया जाता है कि उनके गुण बने रहें और यह आसानी से पच सके।

अपने सारे परिवार के लिए हॉर्लिक्स अपनाइए।

और अपने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए खुद भी हर रोज़ हॉर्लिक्स पीजिए।

HTD-HMM-7537

महान शक्तिदाता

समय के हस्ताक्षर
यह अंक

'कादम्बिनी' का पिछला तंत्र-विशेषांक पाठकों ने बेहद पसंद किया था। अनेक पाठकों ने तो हमें यह भी शिकायत लिखी थी कि उन्हें यह विशेषांक अधिक कीमत देकर खरीदना पड़ा। इस बार हमने तंत्र-विशेषांक की लाखों प्रतियां छापी हैं। यह एक नया कीर्तिमान है।

तंत्र-मंत्र को लेकर समाज में दो तरह की अतिवादी धारणाएं व्याप्त हैं—एक धारणा के अनुसार आधुनिक अंतरिक्ष युग में तंत्र-मंत्र मात्र अंधविश्वास है, तो दूसरी धारणा उसे 'कल्प-वृक्ष' का पर्याय समझ बैठी है। हमने अपनी दृष्टि संतुलित रखी है। पिछले तंत्र-विशेषांक के बाद अनेक सिद्ध पुरुषों, ज्योतिषियों एवं तांत्रिकों से हमारी मुलाकात हुई है। उनके पास कुछ ऐसा अवश्य है, जो अविश्वसनीय तो है, पर आकर्षित करनेवाला भी है।

'ऋषि-लो[...]' 'इंद्र लोक'! '[...] झूला'! पहाड़ी स[...] दायें-बायें खड़े बोर्डों पर [...] लिपि में लिखे ये भारतीय [...] प्रलोभन भी, और आश्वासन भी [...] कष्टपूर्वक नहीं, वरन आधुनिकतम [...] सुविधाओं के साथ तीर्थ-यात्रा का [...] लूटा जा सकता है। ये नाम ऋषि[...] होटलों के हैं।

हमें एकाएक पंद्रह-बीस वर्ष [...] ऋषिकेश की याद आ जाती है। [...] किशोरी-सी उछलती-कूदती गंगा, पहाड़ों पर गुलुबंद से लहराते [...] सड़कों पर पैदल चलते तीर्थ-यात्री [...] जयघोष—'गंगामाई की जय!'

अब गंगा का प्रवाह गंभीर है, [...] की जगह धुएं के बादल हैं और सड़कों [...] हैं—कारें, टैक्सियां, तांगे! ऋषि[...] अब तीर्थ-स्थल कम, पर्यटन-स्थल [...] हो गया है।

●

स्वर्गाश्रम के ठीक पीछे एक [...] आम्रवन है, जो 'भूतनाथ' कहलाता [...] इसी से सटा खड़ा एक पहाड़ है, [...] वृक्षों के बीच गुम पगडंडी! इसी [...] अनुमान से बढ़ते, पहाड़ी चढ़ाई चढ़ते [...] हम जिस जगह पहुंचे, वह था, 'टा[...] बाबा' का आश्रम! आश्रम क्या, [...] की चादरों का एक शेड, जो [...] कैलेंडर-सा पहाड़ी दीवार पर चिपका [...]

प्रख्यात सितारवादक पं. रविशंकर ने अपनी पुस्तक 'माई म्युजिक : माई लाइफ' में एक 'टाट बाबा' का उल्लेख किया है। 'टाट बाबा' ने बंबई में रविशंकर को आत्महत्या करने से बचाया था। वे इच्छानुसार रूप भी बदल सकते थे। चाय के प्रेमी थे और एक बार कलकत्ता के एक भक्त के घर उन्होंने तोते का रूप धरकर चाय पी थी।

तीन दिसंबर, १९७४ के अखबारों में लोगों ने पढ़ा था कि ऋषिकेश में किन्हीं 'टाटवाले बाबा' की गोली मारकर हत्या कर दी गयी।

उस दिन उनके आश्रम में पहुंचकर बहुत-सी जानकारी मिली। पहले तो जानकारी देनेवाले थे शंकरदास--टाटवाले बाबा के शिष्य।

कुटिया में पहुंचकर हमने देखा, टाटवाले बाबा ने पहाड़ को काटकर दो गुफाएं बनायीं थीं—इतनी बड़ी कि उसमें केवल दो-या तीन व्यक्ति झुककर ही खड़े हो सकते हैं।

शंकरदास बंबई के रहनेवाले हैं। सात वर्ष की अवस्था में घर से निकल पड़े ईश्वर की तलाश में। उन्हें गुरु मिले ऋषिकेश में टाटवाले बाबा के रूप में।

पूछा, "हत्या किसने की ? क्यों की ?"

उत्तर मिला, "नारायण, आदमी भले संन्यासी बन जाए, पर यदि उसने क्रोध और ईर्ष्या नहीं त्यागी है, तो उसका आवेश बम बनकर फूटता है। हत्या तो पास में रहनेवाले एक बाबा ने इसी ईर्ष्या के कारण करवायी। एटा से कुछ डाकू बुलवाये थे उसने। एक सुबह बाबा पास के झरने से पानी लेने गये थे। डाकू ने गोली चलाकर उनकी हत्या कर दी।"

"हत्यारे पकड़े नहीं गये ?"

"पकड़े गये, नारायण! वह बाबा भी पकड़ा गया। तीन साल मुकदमा भी चला।

टाटवाले बाबा के आश्रम में : शिष्य शंकरदास

हत्या के शिकार : टाटवाले बाबा

एक दिन जब वे डाकू ताश खेल रहे थे, तब एक डाकू ने गुस्से में आकर गुरुजी के हत्यारे की हत्या कर दी।'

"आप अकेले हैं यहां ?"

"एक साथी था, पर वह भाग गया क्योंकि वह बाबा उसे धमकाता रहता था। मुझे भी धमकाता है।"

"डर नहीं लगता आपको !"

"डर कैसा नारायण ? मौत इसी तरह बदी होगी, तो कहां-कहां भागूंगा।"

"टाटवाले बाबा का कोई चमत्कार ?"

हम यह प्रश्न करते हैं और शंकरदास को पं. रविशंकर के गुरु 'टाट बाबा' के चमत्कार को सुनाते हैं। फिर पूछते हैं, "क्या वे वही टाट बाबा थे ?"

"पता नहीं, नारायण ! बाबा तो कभी बंबई नहीं गये। वे चाय भी नहीं पीते थे। रही चमत्कार की बात, तो क्या बताऊं। बस, इस बियाबान में उनकी कृपा के फलस्वरूप ही पड़ा हूं। कभी किसी बात की कमी नहीं हुई। लगता है, गुरुजी अभी आनेवाले हैं।'

"क्या गुरुजी को अपनी हत्या का पता नहीं चल गया था ?"

"चल गया था, नारायण ! हत्या के दो दिन पूर्व उन्होंने कहा था, "... चलेगी, धमाका होगा,"

"अच्छा, आपने कोई सिद्धि पायी ..."

"नारायण, क्या-क्या मिला है, ... बताने की मुमानियत है।"

शंकरदास से विदा लेकर हम ... पगडंडी पर और ऊपर जाते हैं। ... के किनारे-किनारे बढ़ने पर हमें ... कुटिया दिखायी देती है—झरने के ... पार ऊंचाई पर। एक वयोवृद्ध संन्यासी ... खड़े होते हैं। वे कुटिया के प्रांगण की ... में एक युवती का हाथ बंटा रहे थे शायद ...

गौर वर्ण, चमकीली आंखें, घनी दा... वे विदेशी अधिक लगते हैं। बाद में ... बताते भी हैं कि लोग उन्हें 'अमरी... बाबा' भी कहते थे। बाबा अपना नाम ... बतलाते हैं, "श्री श्री १०८ गोदड़ी बाबा!"

गुदड़ी बाबा स्यालकोट के रहने वाले हैं। बचपन से उन्हें सत्संग का शौक था। चित्रकूट के एक स्वामीजी के शि... बन गये। बाबा का कंठ बेहद मधुर है। वे हमें ज्ञान की बातें बताते हैं। गीता, रामायण, गुरुग्रंथ साहब के पद वे ... सस्वर सुनाते हैं। कहते हैं कि आये हो, ... ज्ञान की बात लिखो :

सुनो तात यह अकथ कहानी
समझत बने न जाय बखानी
ईश्वर अंश जीव अविनाशी
चेतन अमल सहज सुखराशी

गुदड़ी बाबा फिर हमें विस्तार ... अर्थ समझाते हैं। कहते हैं, "ईश्वर ...

नहीं है। जीव ने ही ईश्वर की कल्पना की है।" फिर वे कहते हैं, "ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रतीक हैं, तीन गुणों के! हर व्यक्ति में ये तीन रूप हैं।"

गुदड़ी बाबा की राजनीति में भी दिलचस्पी है। वे गंगा तट पर रहनेवाले साधुओं की भी कड़ी आलोचना करते हैं। वे कहते हैं, साधु का संपत्ति से क्या काम? क्यों ये बड़े-बड़े आश्रम...! आवेश में वे कहते हैं, "धनाढ्य साधु सरकार के पिठ्ठू हैं। साधु को अपनी कोई चीज नहीं बनवानी चाहिए। वह तो सबका मालिक है। राजा क्या मंत्री बनेगा? आई. जी. का क्या डी. एस. पी. बनेगा!"

हम उनसे टाटवाले बाबा के बारे में पूछते हैं। दिवंगत साधू के बारे में उनकी राय अच्छी नहीं है। बातों-बातों में वे कहते हैं, "यदि सबकी भलाई के लिए किसी की हत्या भी करनी पड़े, तो उसमें कोई दोष नहीं।" वे कहते हैं, "बड़े-बड़े अपराधी और तस्कर साधुवेश में यहां छिपे रहते हैं।"

गुदड़ीवाले बाबा हमें अपने चमत्कारों के बारे में बतलाते हैं। दिल्ली में उनके अनेक शिष्य हैं। एक व्यक्ति को कैंसर से बचाने का भी उनका दावा है। पर वे स्वयं कहते हैं, दूसरे को नहीं बचा पाया।

वे हमें एक जरमन संन्यासिनी के बारे में बतलाते हैं, उनके दर्शन के लिए हमें एक और खड़ी चढ़ाई चढ़नी है। वे 'जरमन माई' के नाम से जानी जाती हैं। लक्ष्मण झूले के पौड़ीवाले छोर पर एक 'तेरह मंजला' है—अर्थात तेरह मंजिलों

ईश्वर कहीं नहीं है: गुदड़ी बाबा

का मंदिर। उसी के पास से रास्ता जाता है, गणेश गुफा, जहां वे साधना में लीन हैं। एक गाय, एक कुत्ता—यही उनके साथी हैं। पर जरमन माई से मिलने के लिए चलने से पूर्व हमें एक और महात्मा के बारे में जानकारी मिलती है। ये हैं—मस्तराम बाबा! हमसे तीन-चार लोगों ने उनका जिक्र किया था। मस्तराम बाबा गंगा के तट पर ही रहते हैं—स्थूलकाय देह, लंबी दाढ़ी और विशाल नेत्र, जिनमें मस्ती कम, बाल-सुलभ सहजता अधिक है।

मस्तराम बाबा के पास एक सांवली युवती पंखा झल रही है। एक और साधु मोरछल से हवा कर रहे हैं। बाबा दैनिक 'हिंदुस्तान' पढ़ रहे हैं।

हम बाबा से मंत्र-शक्ति के बारे में कि वे कैसे काम करती हैं, पूछते हैं। वे शून्य में देखते हैं, फिर गंगा की ओर, फिर उत्तर—"यह तो करने से मिलती है।"

लखनऊ में हम बाबा भूतनाथ से भी मिले। पिछले विशेषांक में प्रकाशित तरौली के बालकों और विठूर की गंगा के शव के बारे में भी हमने नयी जानकारी एकत्र की है। यह विशेषांक पिछले वर्ष के अंक से एक कदम आगे है। हमें विश्वास है पाठकों को अधिक जानकारी मिलेगी और ज्ञानलाभ होगा। ●

वर्ष २३ : अंक १
नवम्बर, १९८

कादम्बिनी

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

तंत्र-विशेषांक

स्थायी स्तंभ

मुखपृष्ठ : पी. डी. बोहरा (युवती)

मुखपृष्ठ एवं कुछ रंगीन चित्र : 'तंत्र आर्ट कुमार गैलरी,' ११ सुंदर नगर मार्केट नयी दिल्ली के सौजन्य से

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल

उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह। चित्रकार : सुकुमार चटर्जी। प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये

पं॰ के॰ ए॰ दबे 'पद्मेश'
की चार अनमोल कृतियाँ

हजारों साल पहले
न आज जैसे माइक्रोस्कोप थे, न
टेलीस्कोप, न राँडार थे, न डाइनामाइट,
फिर भी वनवासी भारतीय ऋषियों ने मन्त्र,
यन्त्र और तन्त्र के सहारे अन्तरिक्ष से पाताल तक,
जल, वायु, प्रकाश, नक्षत्र, पशु-पक्षी और जड़ी-बूटियों
के सभी रहस्यों को जानकर मनुष्यता को अजेय,
अमर और अविनाशी होने का ज्ञान-विज्ञान
प्रदान किया था। आयुर्वेद और विज्ञान
की कसौटी पर खरे उतरे, ये विधि-
विधान आपकी पग-पग पर
रक्षा करेंगे।

तन्त्र शक्ति	मूल्य 8-00	यन्त्र शक्ति	मूल्य 10.00
मन्त्र शक्ति	मूल्य 8-00	रत्न और ज्योतिष	मूल्य 10-00

चार पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ

सुबोध पब्लिकेशन्स
2/3 बी अंसारी रोड, नई दिल्ली-110002

आस्था के आयाम

लेफ्टीनेंट की प्रेतात्मा

घुप्प अंधेरी रात। जम्मू-कश्मीर की पहाड़ियों में जंगली पगडंडियां और उस पर भी नवंबर की बर्फीली ठंड। एक भारतीय सैनिक टुकड़ी रास्ता ढूंढ़ती आगे बढ़ती जा रही थी। आगे बढ़ने के लिए नक्शा और वायरलैस द्वारा 'कमांडिंग पोस्ट' से संपर्क का सहारा उनके पास था, फिर भी रास्ता ढूंढ़ पाना मुश्किल हो रहा था। सोचने-विचारने का समय भी नहीं था, क्योंकि सुबह तक पंद्रह मील की दूरी तय करके अग्रिम चौकी पर पहुंचना था, साथ ही दुश्मन के सैनिकों के छिपे होने का खतरा भी।

यह बात सन १९६५ के भारत-पाकिस्तान के युद्ध के समय की है। सैनिक असमंजस में थे, वे करें तो क्या करें? तभी उन्होंने देखा कि पेड़ों के झुरमुट में से निकलकर एक भारतीय लेफ्टीनेंट सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "आगे का रास्ता खतरनाक है। आप लोग इस रास्ते से परिचित नहीं हैं। मैं आप लोगों को रास्ता दिखाता हूं, मेरे पीछे-पीछे चले आइए।"

सैनिक उसके पीछे-पीछे चलने लगे। सैनिकों ने देखा कि लेफ्टीनेंट की कमीज पीठ पर गोली लगने के कारण उतनी जगह पर जली हुई है। लेफ्टीनेंट ने खुद ही बताया कि कल हुई पाकिस्तानी गोली-बारी से उसकी पीठ का हिस्सा जल गया है। फिर बातचीत करते हुए उसने खुद ही कहा कि 'कभी-कभी मृतात्माएं खतरों में पड़े अपने प्रियजन की सहायता करती है।'

इसी तरह की बातों में पंद्रह मील का सफर तय हो गया। जब चौकी सामने स्पष्ट दिखायी देने लगी, तब लेफ्टीनेंट ने चौकी की ओर इशारा करते हुए कहा कि 'अब आप लोग जाइए, मैं चौकी पर नहीं जाऊंगा।' सैनिक आगे बढ़ गये, लेकिन कुछ दूर जाने के बाद सैनिकों ने मुड़कर देखा तो लेफ्टीनेंट को गायब पाया। सैनिकों ने कुछ सोचा और वापस लौटकर चारों तरफ लेफ्टीनेंट को ढूंढ़ा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला।

चौकी पर पहुंचकर सैनिकों ने यह बात कमांडर को बतायी, तो कमांडर को बेहद आश्चर्य हुआ। उसने बताया कि उस लेफ्टीनेंट ने, जिसने उन लोगों को रास्ता दिखाया है, उसकी कल ही पाकिस्तानी गोलाबारी में पीठ पर गोली लगने से मृत्यु हो चुकी है और उसका दाह-संस्कार भी किया जा चुका है। निश्चय ही रास्ता दिखानेवाली लेफ्टीनेंट की प्रेतात्मा ही थी, जिसने संकट में पड़े अपने सैनिकों की सहायता की। ●

काल-चिंतन

● अचानक हाथ लगी एक डायरी:
कहां हो तुम?
बरस बीत गये पाती भी नहीं,
जिंदगी उबास हो रही है,
कितने द्वार खटखटाये ज्योतिषियों के–
अपनी जन्मपत्री को भविष्य की इकाई मानकर हथेलियों में उतार ली है...!
—डायरी पृष्ठ-दर-पृष्ठ बढ़ती जा रही है:
तुम्हारे लगाये सूरजमुखी के पौधों ने फूल दे दिये हैं,
भयाक्रांत हूं पर,
सारे फूल सूर्य की तरफ पीठ किये खिल रहे हैं,
अपनी मां से सुनी तुलसी के बिरवा की कहानी
याद आ रही है,
सूख जाएगा वह तो...!
सूरजमुखी ने दिशा क्यों बदल दी!
बहुत कुछ है कहने को–
हवा पर बंद है,
पसीने से तर-बतर है देह...!
—डायरी के पृष्ठ कोरे रह जाते हैं!

●●

—यह डायरी किसकी है?
—सोचता हूं, किसी संज्ञा का होना जरूरी है क्या?
—क्या यह डायरी हमारी नहीं हो सकती?
—जिंदगी जैसी चल रही है, उसमें शेष तत्व है—प्रतीक्षा! यह डायरी भी प्रतीक्षा का उलाहना है, इसलिए आशाएं शेष हैं।
—शेष आशाओं के सहारे जीना भी सुखद इतिहास के पृष्ठों को जोड़ना है! इतना ही हो सके हमसे तो अगली पीढ़ी को रोशनी मिलेगी!

—रोशनी की तलाश हम उजाले में भी करते आये हैं क्योंकि, हर उजाला हमारी आंखों का सही चश्मा नहीं है।

—आजकल सही पतेवाले पत्र भी जैसे गंतव्य तक नहीं पहुंच पाते, चश्मे के नंबरों ने भी वैसे ही धोखा देना शुरू कर दिया है। रोज कौन चश्मा बदल सकता है! आखिर, उसी गलत नंबर के साथ अपनी आंखों को अभ्यस्त करना पड़ता है !

—यही विवशता तो है, जो इस तरह डायरी लिखने के लिए हमें मजबूर करती है !

●●

—सुना था, एक बियाबान पहाड़ में एक झोपड़ी थी। झोपड़ी में रात को भी रोशनी होती थी। एक पथिक उस रोशनी को देखकर वहां पहुंच गया। 'अतिथि देवोभव'—हमारी संस्कृति है। पथिक को भरपेट भोजन मिला। उसने फिर बताया कि उसे भूख नहीं लगती, वह इलाज के लिए एक वैद्य के यहां जा रहा है! विस्फारित अभ्यागत को अतिथि ने देखा : विनम्र प्रणाम, मनोरथ हों पूर्ण, पर प्रभु इस मार्ग को फिर पावन मत कीजिए !

—अवश अतिथि और कितना विनम्र हो सकता है !

—अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखनेवाले पहेरुए क्या हम अकेले हैं ?

—संस्कृति के नाम पर अंधकार का पोषण होगा तो सूरजमुखी दिशा जरूर बदलेंगे।

—अतिथि-परंपरा पुराने किलों की दीवार बनेगी !

●●

—अब तक बन जाना था उसे, लेकिन पूर्वजों के हमारे संस्कार पवित्र गंगा की तरह अभी भी साथ दे रहे हैं !

—महानदी महापावन गंगा की धारा जिस दिन अवरुद्ध होगी, वही काल-रात्रि का दिन होगा !.

—ऐसे दिन की हमें प्रतीक्षा नहीं है ! . . . करनी भी नहीं चाहिए !

—दिन में चमगादड़ स्वच्छंद घूमने लगें, तो मनुष्यता का गला घुट जाएगा !

●●

—तो आइए, संस्कारों की रक्षा के लिए हम रोशनी का काम करें !

—हमारी आंखें जुगनू बन जाएं और घुप्प अंधेरे को भी उजागर कर दें। इतना प्रकाश

ही काफी है अंधेरे को भगाने के लिए !
—अंधेरा एक चोर है, उसके पांव नहीं होते !
—गुलाब काला हो सकता है, लेकिन न वह रात है, न अंधकार है; वह सुर्ख लाल गुलाब से भी कीमती है !
—ढके हुए ताबूतों में कितने भी गहरे पैबंद लगा दिये जाएं, प्रकाश का पहरुआ वहां भी पसरा मिलेगा !
—हमारे पूर्वजों ने खेतों में कभी कीलें नहीं बोयीं, न हम कीलें बो सकते, सार्थक श्रम की फसल क्यों छोड़ेगा कोई ?
—फसल वही तो होगी, जो बोयी गयी है !
—हम आश्वस्त हैं अपने बीजों पर; मेघ न गहराएं, वे स्वयं पानी पीने लगें मधु-मक्खियों की तरह पूर्णिमा की रात्रि को, खाद्य नकली भी हो, संस्कार इतने गहरे हैं कि बीज अंकुर फोड़ेंगे ही। हमारा श्रम धरती से इतना पानी जरूर निकाल लेगा कि पौधे कुछ तो देकर जाएंगे।
—युगों से हम श्रम के बीज बोते रहे हैं, इसलिए हर युग में निरापद अवरोधों को हम निरस्त्र करते रहे हैं !
—इसी से हम एक टीले पर खड़े हैं !

●●

—बीसवीं सदी किसी लोमड़ी की कटी हुई पूंछ नहीं है, वह उन्नीसवीं सदी के संघर्षों का इतिहास है और इक्कीसवीं सदी का भविष्यफल ! यह भविष्यफल प्रबल गुरु-ग्रह की शुभ छाया के आगमन का संकेत है और व्यतीत हो रही साढ़े साती का अंतिम चरण है।
—इन फलितार्थों के साथ जुड़ा है हमारा संघर्ष !
—सब-कुछ स्वीकारने की मजबूरी आज हो सकती है, किंतु उद्वेलित और आक्रांत बागी-मन मजबूरियों को भविष्य की मुट्ठी में कुचल देगा।
—तब ?
—तब डायरी के पृष्ठ बदल जाएंगे :
—कल ही तो गये थे तुम, आज तुम्हारा पत्र आ गया; तुम्हारा लगाया तुलसी का बिरवा रात में फूलने लगा है; आज से लोगों ने घरों में ताले लगाना बंद कर दिया है; लक्ष्मी सुनहरी गोट ओढ़े मेरे घर आ गयी है; तुम्हारी लक्ष्मी भी यहीं है,

प्रतीक्षा कर रही है तुम्हारे आने की; प्रशासकों के बंगले फूलों से भरे हैं, झरने भी फूट पड़े हैं क्योंकि अब वहां जनता के कुचलनेवाले पैरों की भीड़ नहीं है; जनता अपने अधिकारों से आश्वस्त है; सूरज समय पर आता और जाता है; अंधेरा हम चादर ओढ़कर पाते हैं और . . . !

—डायरी लिखते हुए देह पसीने से तर-बतर नहीं है !

—एक दिन में समूचा महाकाव्य लिख गया है !

—फिर वाल्मीकि और कालिदास आ गये हैं, इतिहास राम का नहीं, जनता का लिखा जा रहा है !

—मृग अब स्वर्ण चमड़े में ही आवृत्त है, स्वर्ण-मृग का धोखा देनेवाला रावण सपना हो गया है . . . !

—जी रहे हैं हम आशाओं के ताजमहल में, व्यर्थ नहीं होंगी यात्राएं, हमारे संकल्प, कर्त्तव्य-निष्ठा और फलित होगी हमारे सामने या फिर हमारी पीढ़ी के लिए !

—अपने पुरखों के वरदान का प्रतिफल हैं हम, हमारी अगली पीढ़ी उस संस्कार से फिर वंचित होगी क्यों ?

—सुनहरी धूप के दिन
बैंगनी शाम
आराम की चादर ओढ़े रात . . .

—अभी-अभी एक ज्योतिषी यही तो बता गया है—भविष्य !

—उसकी भूत-वाणियां सही थीं, आश्वस्त हूं मैं—वह झूठ नहीं बोलेगा, उसका सांकेतिक भविष्य भूत की तरह सत्य होगा। सत्य होगा इसलिए भी क्योंकि वह भी तो जुड़ा है इस बार पूरे भविष्य के साथ।

राजेन्द्र अवस्थी

योगी और तांत्रिक की अपनी मर्यादा है

● पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

योगी और तांत्रिक की अपनी-अपनी मर्यादा और उपयोगिता है। एक शिव का, दूसरा शक्ति का उपासक होता है। परम श्रेय दोनों के समन्वय में मिलता है।

तंत्र, अध्यात्म-विज्ञान की एक शाखा है। इसलिए शाखा में रुचि रखने-वालों को समूचे वृक्ष की आकृति-प्रकृति को भी समझना चाहिए।

यह विश्व जड़ और चेतन की संयुक्त संरचना है। पदार्थ की संरचना, प्रकृति और प्रयोग-विधि को समझने-समझाने में पदार्थ-विज्ञान के सहारे काम चलता है। चेतन की सत्ता की गति और संभावनाओं के संबंध में अभीष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिए अध्यात्म-विज्ञान के अवलंबन से काम चलता है। विज्ञान की दोनों ही धाराएं अपने-अपने क्षेत्र में अत्यंत महत्त्व-पूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। भविष्य में उनकी और प्रगति होने की संभावना है।

भौतिकी के प्रयोग अनुसंधान में अनेकानेक यंत्र-उपकरणों का सहारा लेना पड़ता है। किंतु आत्मिकी के अभीष्ट अगणित उपचार एक ही यंत्र के सहारे कार्यान्वित किये जा सकते हैं। उस यंत्र का नाम है—मानवी काया। इस ढकोसले को यों आमतौर से पेट प्रजनन-निर्वाह से संबंधित आवश्यकताओं को पूरा करने में ही संलग्न देखा जाता है, पर थोड़ी गहराई में उतरकर देखा जाए, तो उसकी दो और भी अदृश्य परतें सामने आती हैं—जिनमें से एक को सूक्ष्म-शरीर और दूसरे को कारण-शरीर कहते हैं।

दृश्यमान स्थूल-शरीर का सूत्र-संचालन हृदय से होता है। काया को निर्वाह-साधन और मल-विसर्जन की आवश्यकता पड़ती है। यह दोनों ही कार्य हृदय द्वारा किये गये रक्ताभिश्रसरण द्वारा संपन्न होते रहते हैं। प्रत्यक्ष जीवनचर्या का गति-चक्र इतने भर से चलता रहता है।

शरीर में स्थित दो ध्रुव

अदृश्य जीवन के सूक्ष्म और कारण शरीरों के रूप में इसी काय कलेवर में दो विशेष केंद्र हैं। एक मस्तिष्क के ऊर्ध्वभाग में, जहां सहस्रार कमल, ब्रह्मरंध्र, आज्ञाचक्र-जैसे महत्त्वपूर्ण अवयवों के केंद्र संस्थान
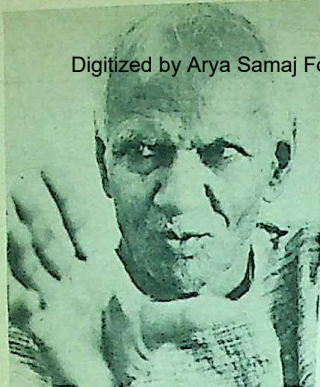
लेखक

आचार्यजी बहु-भाषाविद्, वेदों, उपनिषदों, पुराणों, सूत्रों के भाष्यकार एवं गायत्री महाविज्ञान के प्रवर्तक; 'गायत्री-तपोभूमि,' मथुरा, 'शांति कुंज' एवं 'ब्रह्मवर्चस' संस्थान,' हरिद्वार के माध्यम से अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वय के लिए समर्पित। यह लेख आचार्यजी ने 'कादम्बिनी' के तंत्र विशेषांक के लिए विशेष रूप से लिखा है।

हैं। दूसरा मेरुदंड के अंतिम छोर पर, जिसे मूलाधार, कुंडलिनी एवं प्राण-संस्थान कहते हैं। ऊर्ध्व केंद्र की धरती के उत्तरी ध्रुव से तुलना की गयी है और अधःकेंद्र को दक्षिणी ध्रुव कहा जाता है। उत्तरी ध्रुव-ऊर्ध्व-लोक-स्वर्ग-लोक-देवनिवास है। उसमें दैवी शक्तियां रहती हैं।

अधः-लोक-पाताललोक नाग-लोक है। पुराणों में पृथ्वी, जिसे शेषनाग के फण पर या गाय के सींग पर अवस्थित बताया गया है, उसे अध्यात्म की भाषा में मूलाधार या कुंडलिनी केंद्र कहते हैं। सूक्ष्म शरीर का केंद्र-संस्थान यही है। काया को पृथ्वी माना जाए, तो यह शक्ति-लोक-उसका दक्षिणी ध्रुव कहा जाएगा।

इस प्रकार हृदय-चक्र का स्थूल शरीर का—मस्तिष्क को कारण-शरीर का और प्रजनन-केंद्र मूलाधार को सूक्ष्म-शरीर का सूत्र-संचालन करते हुए देखा जा सकता है। यही तीन लोक हैं—यही तीन देव हैं। इन्हीं में तीनों शरीरों की अदृश्य सत्ता अपनी गतिविधियों का सूत्र-संचालन करती है।

ऊर्ध्व-लोक और अधः-लोक को परस्पर मिलाने और आदान-प्रदान का प्रयोजन जिस उपकरण के माध्यम से होता है, वह मेरुदंड है। स्थूल-शरीर की निर्वाह-गतिविधियों का सामान्य प्राणि निर्वाह जैसी मानकर उसे निरोग रखने भर के लिए आहार-विहार को चरित्र-व्यवहार को उत्कृष्ट बनाये रखने की विधा निर्धारित करके अध्यात्म-विज्ञानियों ने चेतना के अदृश्य क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दिया है और गाड़ी आगे बढ़ा दी है।

दिव्य-लोक और दैत्य-लोक

यह विश्व ब्रह्मांड अनंत शक्तियों का भंडागार है। ये सभी दो के अंतर्गत आती हैं। एक ब्राह्मी, जिसे चेतना-शक्ति कह सकते हैं। इसके साथ संपर्क जोड़ने, आदान-प्रदान का रास्ता खोलने का केंद्र ब्रह्मरंध्र-सहस्रार-मस्तिष्क क्षेत्र का दिव्य लोक है। दूसरी प्रकृति सत्ता है, जिसे दैत्य-क्षेत्र कहते हैं। इसमें गति और शक्ति के दोनों ही प्रचंड प्रवाह विद्यमान हैं। इस शक्तिलोक की अधिष्ठात्री महाकाली कुंडलिनी हैं। जबकि ऊर्ध्व-लोक, ब्रह्मलोक

आचार्यजी की कार्यस्थली : शांति कुंज, हरिद्वार

का अधिपति महाकाल —परब्रह्म-सदाशिव । इन दोनों लोकों के बीच आदान-प्रदान का देवयान मार्ग है, जिसे मेरुदंड कहते हैं। इस प्रकार यह तीनों ही क्षेत्र मानवी सत्ता के अदृश्य क्षेत्र का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। स्थूल हृदय को गति-शीलता, जिस ऊर्जा के सहारे मिलती है, उसे मेरुदंड का अनुदान माना गया है। संक्षेप में पाताल-मूलाधार है एवं भू-लोक मेरुदंड। स्वर्गलोक की मस्तिष्क के साथ संगति बैठती है। इन तीनों का पारस्परिक मिलन करानेवाले प्रयास को त्रिवेणी-संगम कहा गया है और राम-चरितमानस के अनुसार उसका अवगाहन करने पर 'काक' के 'पिक' और 'बक' के 'मराल' होने-जैसा काया-कल्प बन पड़ने का संकेत किया गया है।
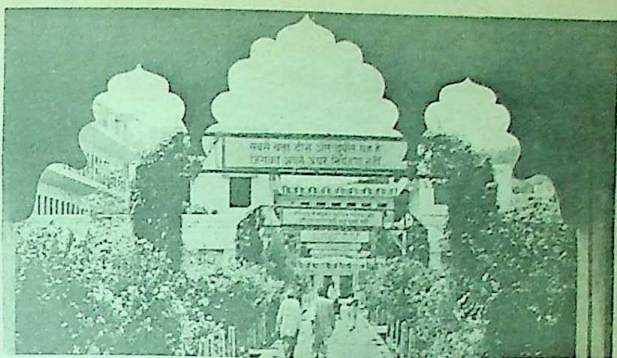
योग : मस्तिष्क-लोक की उपासना

मस्तिष्क-लोक की उपासना करने की प्रक्रिया 'योग' द्वारा संपन्न होती है, और कुंडलिनी क्षेत्र की आराधना के लिए 'तंत्र' का आश्रय लेना पड़ता है। यह दोनों ही अध्यात्म-विज्ञान की दो प्रमुख धाराएं हैं। इन्हें शिव और शक्ति कहा गया है। ये दोनों ही मिलकर पूर्ण बनते हैं एवं ऊर्ध्व नारी-नरेश्वर के रूप में समग्र बनते हैं। योगी ब्रह्मवेत्ता-ब्रह्मपारायण होता है। दिव्यलोक में विचरण करता है, देवोपम बनता है। तांत्रिक शक्ति-उपासक है। वह प्रकृति के अगणित शक्ति स्रोतों के साथ कुंडलिनी केंद्र को जोड़ता और आदान-प्रदान का द्वार खोलता है। इस प्रकार रक्त-मांस का—पेट प्रजनन में निरत-निर्वाह का शकट खींचनेवाला—काय-कलेवर अपने अदृश्य जीवन में सूक्ष्म और कारण शरीरों के माध्यम से प्रकृति तथा ब्रह्म के साथ घनिष्ठता स्थापित करना है तथा उन महान भंडागारों में से अपने लिए अभीष्ट संपदा अर्जित करने में सफल होता है। यही है अध्यात्म-विज्ञान के कार्यक्षेत्र का सार-संक्षेप।

ऋद्धि-सिद्धि क्या है

पदार्थ विज्ञान के माध्यम से प्रकृति क्षेत्र की अनेकानेक ज्ञात और अविज्ञात शक्तियों का उपयोग यंत्र-उपकरणों के माध्यम से किया जाता है। यही समस्त प्रयोजन कुंडलिनी-केंद्र द्वारा तंत्र-विद्या के अनु-सार संपन्न किया जा सकता है। इस

ब्रह्मवर्चस् : जहां विज्ञान का आध्यात्म से समन्वय हो रहा

प्रकार की उपलब्धियों को ऋद्धि-सिद्धि कहते हैं। ऋद्धि वे, जिनमें साधक की आसाधारण विशेषता-क्षमता दृष्टि-गोचर होती है। सिद्धि वे, जिससे दूसरों को अनुग्रहीत किया जाता है। सिद्ध पुरुषों में यह दोनों ही चमत्कारी विशेषताएं पायी जाती हैं। इन सभी विभूतियों की क्षमता इतनी ही सीमित है, जितनी कि प्रकृति क्षेत्र में पायी जाती है। जो कुछ भी एक भौतिकीविद अपने वरिष्ठ यंत्र-उपकरणों के माध्यम से कर सकता है, तांत्रिक की सामर्थ्य भी उतनी ही है। उसे सुविधा इतनी भर है कि अपनी ईश्वरप्रदत्त प्रयोग-शाला का लाभ विना पूंजी लगाये प्राप्त कर सकता है और हलके-फुलके विज्ञान-नगर को मात्र टांगों के पहियों पर लाद कर कहीं से कहीं लिये फिरता है।

सत्ता देवात्मा की

योगी चेतना से संबंद्ध होता है। वह श्रद्धा-प्रज्ञा-निष्ठा की, सुपरचेतन-अचेतन और चेतन क्षेत्र की उत्कृष्ट उपलब्धियां अर्जित करता है। इसलिए उसे विशेषतया आत्मशोधन की संयम साधना का तप-श्चर्या का आश्रय लेना पड़ता है। कषाय-कल्मषों की दीवार गिरने से आत्मा और परमात्मा के मध्यवर्ती आदान-प्रदान का द्वार खुल जाता है। फलतः सामान्य काय-कलेवर के मध्य ऋषि, मनीषी, देवात्म की सत्ता प्रकट होती है। उसे मनुष्य में देवत्त्व का उदय कहा जाता है। महा-मानव, युग पुरुष, अवतार इसी स्तर के होते हैं। वे जीवन्मुक्तों-परमहंसों-जैसा दृष्टिकोण विकसित करके आत्म-साक्षा-त्कार करते और असीम आनंद-उल्लास के स्वर्गलोक में निवास करते हैं। इसके अतिरिक्त परब्रह्म के क्षेत्र में प्रवेश कर सकने की विशेषता अर्जित करने के कारण देवानुग्रह प्राप्त करने के अधिकारी भी बनते हैं।

योगी और तांत्रिक की अपनी-अपनी मर्यादा और उपयोगिता है। एक ज्ञान का, दूसरा शक्ति का उपासक होता है किंतु परम श्रेय की प्राप्ति तभी होती है जबकि दोनों का समन्वय हो सके। भौतिक समर्थता और आत्मिक प्रखरता के एकीकरण से ही समग्रता प्राप्त होती है। इसीलिए अध्यात्म-विज्ञान में योग और तंत्र को समान महत्त्व दिया जाता है।

—शांति कुंज, हरिद्वार

आई. एस. जौहर अस्पताल में, अमिताभ बच्चन को देखने गये तो लोगों ने उनसे पूछना शुरू कर दिया : क्या वे अमिताभ के लिए प्रार्थना कर रहे हैं ? अब उसके ठीक होने पर यह पूछ रहे हैं : क्या उन्होंने ही अमिताभ को बचाया है . . . ?

अब हर आदमी एक ही सवाल मुझसे पूछ रहा है कि क्या वास्तव में मैंने उसे बचाया है? मेरा उत्तर एक ही रहता है कि 'मुझे नहीं मालूम लेकिन, इतना जरूर है कि मैं ३१ जुलाई को प्रातः अमिताभ को बंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में देखने गया था। और नीचे 'रिस्पैशनिस्ट' के पास एक छोटा-सी पर्ची पर यह लिखकर कि 'चिंता की कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा,' छोड़ आया था और उसे यह निर्देश दे आया था कि

आकाशीबाबा ने अमिताभ बच्चन को बचाया?

• आई. एस. जौहर

एक संवाद-समिति ने मेरे बारे में समाचार प्रकाशित किया था कि मैं अमिताभ बच्चन के दुर्घटनाग्रस्त होकर बंबई आने पर तुरंत अस्पताल में उसे देखने गया था। उसके बाद से ही लगातार-कई लोग मुझसे पूछते रहे हैं, 'क्या मैं अमिताभ के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएं कर रहा हूं?' 'क्या वह जीवित रहेगा?' 'यदि स्वस्थ हो भी गया, तो क्या वह फिर फिल्मों में काम करने लायक रहेगा?'

बहुत से लोगों ने व्यंग्य भी किये कि मैं उसे स्वस्थ कर सकने में असमर्थ हूं। और जब डॉक्टरों ने अमिताभ को खतरे से बाहर घोषित कर दिया, तब मुझे धन्यवाद के बहुत से पत्र मिले।

उसे जया भादुड़ी के पास पहुंचा दें।

अगले दिन जब एक पत्रकार ने मुझसे यह सवाल किया कि क्या मेरी प्रार्थना अमिताभ को बचा पाएगी, तब मैंने उत्तर दिया, 'अवश्य, लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि उसके बचाने का मैं दावा करूं !'

भारत में लाखों लोग और भी हैं, जिन्होंने अमिताभ को बचाने के लिए प्रार्थनाएं की हों। जिन्हें मेरी तरह चमत्कारिक शक्तियां प्राप्त हों, उन्होंने भी उसके लिए प्रार्थनाएं की हों। यह भी हो सकता है कि यह अमिताभ के अपने अच्छे कर्मों का ही परिणाम हो।

अमिताभ एक ऋषि हैं

आज की बीसवीं सदी में जिन लोगों को मैं ऋषि मानता हूं, उनमें सबसे प्रमुख एडिसन, आइंस्टाइन, डॉ. खुराना, डॉ. क्रिश्चियन बरनार्ड-जैसे कई वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने अपनी वैज्ञानिक खोजों से लाखों लोगों का जीवन आरामदायक बनाया है। दूसरी श्रेणी के ऋषियों में मैं चित्रकारों, संगीतकारों, लेखकों और मिशलैंगा मोजार्ट, रविशंकर, शेक्सपियर, कालिदास, गालिब, दिलीप कुमार और अमिताभ बच्चन-जैसे कलाकारों को गिनता हूं, क्योंकि इन्होंने लाखों लोगों का मनोरंजन करके, उनका मन बहलाया है। तीसरी श्रेणी में मैं उन आध्यात्मिक गुरुओं को गिनता हूं, जो साधारणतः धनवानों को ही शांति-दान करते हैं। अमिताभ क्योंकि स्वयं एक ऋषि है, इसलिए उ[illegible] स्वस्थ होने में उसका भी प्रयास शामिल है।

यदि मेरी प्रार्थना ने उसको जीव[illegible] दान दिया है, तो बहुत ही अच्छा है। बहुत से लोग मुझसे उन महत्त्वपूर्ण लो[illegible] का नाम जानना चाहते हैं, जिन्हें [illegible] अपनी प्रार्थना से ठीक किया है। मु[illegible] जब कोई ऐसी बात पूछता है, तब [illegible] ऐसा लगता है कि जैसे कोई मुझसे [illegible] प्राप्त चमत्कारिक शक्ति के 'सर्टिफि[illegible] मांग रहा हो। लेकिन मैं किसी प्र[illegible] का कोई 'सर्टिफिकेट' नहीं चाहता, क्योंकि मैं भगवान के द्वारा दी हुई च[illegible] त्कारिक शक्ति से अपने लिए कुछ [illegible] प्राप्त नहीं करना चाहता। बल्कि मैं अ[illegible] पास से हजारों रुपये खर्च करके लोगों को उनके पत्रों का जवाब देता हूं तथा उन्हें आकाशी बाबा की फोटो और लि[illegible] निशुल्क भेजता हूं।

कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि मेरे [illegible] इलाज के लिए मंत्री लोग क्यों नहीं आते। उनके लिए मेरा सीधा-सा जवाब है कि [illegible] उनकी सहायता नहीं करता, बल्कि उ[illegible] द्वारा सताये गये लोगों की सहायता करता [illegible]

क्योंकि हमारे देश में लोग केवल [illegible] बड़े नामों से ही प्रभावित होते हैं, [illegible] उनकी संतुष्टि के लिए मैं बताना चा[illegible] हूं कि लगभग सारे बड़े-बड़े फिल्म-[illegible] नेताओं ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से [illegible] सामने अपनी समस्याएं रखी हैं। मुझे [illegible] क्रिश्चियन बरनार्ड, जो हृदय-प्रत्या[illegible]

रोपण के माने हुए विशेषज्ञ हैं, की सेवा करके विशेष रूप से प्रसन्नता प्राप्त हुई। उनके हाथ में गठिया रोग हो गया था, ईसाई-धर्म के तमाम धर्म-गुरुओं ने इसे उन पर ईश्वर का कोप माना था। क्योंकि, उन्होंने ईश्वर द्वारा बनाये गये जीवन और मृत्यु के मामलों में दखल दिया था। लेकिन इस बात में कोई तथ्य नहीं है। यदि ईश्वर वैज्ञानिकों द्वारा जीवन को विकसित करने में उनका कोई सहयोग न चाहता होता, तो सभी वैज्ञानिक खोजें करने में असफल रहते। हाल ही में मुझे एक ऐसे व्यक्ति ने, जो मेरा और डॉ. बरनार्ड का भी मित्र था, मुझे डॉ. बरनार्ड के बंबई आगमन पर उनसे मिलवाया। मैंने उन्हें बताया कि मैं उनके हाथों की तकलीफ को जरूर ठीक करूंगा, क्योंकि वे एक ऋषि हैं। मैंने उनके हाथ पकड़कर भगवान से उनके स्वस्थ होने की प्रार्थना की। कुछ समय बीतने पर डॉ. बरनार्ड बंबई केवल इसलिए आये कि उनको मुझे धन्यवाद देना था, क्योंकि उनके हाथों की तकलीफ लगभग ठीक हो चुकी थी।

कई लोग जानना चाहते हैं कि मैं केवल लोगों को अच्छा करने की चमत्कारी शक्ति तक ही अपने को सीमित क्यों नहीं रखता, मैं क्यों धर्म के नये सिद्धांतों के विषय में अपने विचारों को अखबारों में छपवाता रहता हूं? इसके उत्तर में मैं यही कहना चाहता हूं कि अधिकतर बीमारियां हमारे मस्तिष्क से उपजती हैं और
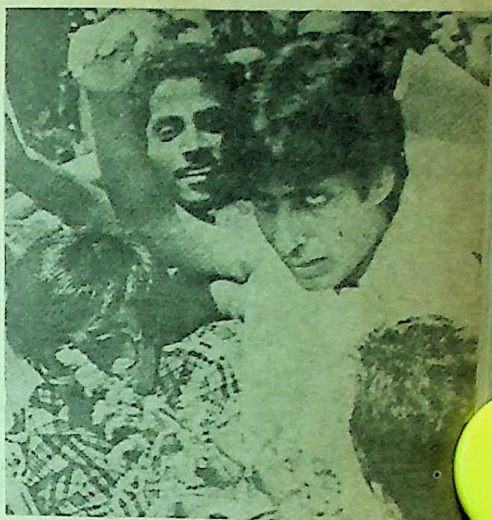
अस्पताल से छुट्टी : अपने प्रशंसकों का अभिवादन करते हुए अमिताभ बच्चन

हमारे मस्तिष्क को हमारे धर्म के मठाधीशों ने विकृत उपदेशों द्वारा भ्रमित कर रखा है। ऐसे में मेरा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि प्राचीन धर्म में संशोधन करके आधुनिक युग के अनुरूप लोगों के सामने उसकी व्याख्या करूं। मेरे पास प्रति दिन सैकड़ों लोगों के पत्र आते हैं। उन्हें मैं आकाशीबाबा का एक चित्र भेजता हूं। इन सब कार्यों में मेरा प्रतिमास पांच हजार रु. खर्च हो जाता है। यदि वे कृपालु पाठक, जो मुझसे आकाशीबाबा का चित्र चाहते हैं, यदि मेरे नाम से पांच रुपये का पोस्टल आर्डर भेजेंगे, तो मुझे सुविधा होगी।

—२३, लोटस कोर्ट रिक्लेमेशन,
चर्च गेट, बंबई

बाबा भूतनाथ चमत्कार भैरव यंत्र का

• राजेन्द्र अवस्

बाबा एक लंबी यात्रा के बाद लखनऊ वापस आये थे। जगह-जगह घूमने के कारण वे कुछ थके हुए भी थे। उनके निजी सचिव विजय बाबू ने बताया कि 'बाबा सबका दुःख-दर्द अपने ऊपर झेल लेते हैं और बाद में परेशान होते हैं।'

विजय बाबू के साथ लखनऊ स्थित उनके आश्रम के सारे गलियारे मैंने देखे। आश्रम पहले से ज्यादा बन चुका है, लेकिन निर्माण का काम अभी भी च रहा है। आश्रम के बन जाने से लख शहर महानगर के बाद यहां तक तरह फैल गया है। आठ-दस व पहले मैंने देखा था, महानगर और आ के बीच बिलकुल खुली हुई जमीन थी। इस सड़क पर विशेष यात्रियों के

ऊपर : भैरवजी से एक महिला का उपचार करते हुए बाबा भूतनाथ

का यदि कोई कारण था, तो केवल कुकरैल नाला। कहा जाता है कि यदि किसी पागल कुत्ते ने काट लिया हो, तो सप्ताह में दो बार कुकरैल नाले में नहाने से वह आदमी अच्छा हो जाता है। आज भी वहां लोग जाते हैं।

भूतनाथ आश्रम

कुकरैल नाले के बाद ही बाबा भूतनाथ का आश्रम है। आश्रम में कामाख्या देवी का मंदिर है और मंदिर के भीतर काली, दुर्गा, भैरव, हनुमान, गणेश, शिव सभी देवताओं को अलग-अलग प्रतिष्ठित किया गया है। बीच के घेरे में छोटा-सा झोपड़ीनुमा मठ बनाया गया है, जिसमें काली और दुर्गा एक-साथ दोनों की मूर्तियां हैं। इसी के ऊपर नीम का वृक्ष है। विजय बाबू ने बताया कि भूत-प्रेत की बाधाएं बाबाजी इसी वृक्ष के नीचे खड़े होकर दूर किया करते हैं। फल यह हुआ है कि वह वृक्ष भी सिद्ध हो गया है। यदि कोई उसकी टहनी से दातून करे, तो तुरंत बीमार पड़ जाता है। विशिष्ट अतिथियों और असाध्य रोगियों से बाबा इसी मठ में मिलते हैं। उनके दाहिने हाथ की ओर दुर्गा की मूर्त्ति है। उनका कहना है कि शुद्ध शाक्त तांत्रिक हूं। इसलिए काली की जगह दुर्गा की पूजा किया करता हूं।

पिछले अंक में हम बाबा भूतनाथ के बारे में बता चुके हैं कि किस तरह भंडारीदास नाम का एक व्यक्ति सिलीगुड़ी में पैदा हुआ था और गौहाटी के कामरूप कामाख्या मंदिर में सिद्धि प्राप्तकर भूतनाथ बना। अब बाबा भूतनाथ की प्रसिद्धि पूरे देश में फैल गयी है। उनका जन्म १ जनवरी विक्रम संवत १९५६ में हुआ था। चौरासी वर्ष की आयु में भी वह उतने ही तरोताजा और स्वस्थ हैं, जितना मैंने उन्हें आज से पंद्रह वर्ष पहले देखा था।

मृत्यु की घोषणा फिर जीवन-दान

वह पूरा दिन बाबा ने लगभग हमारे साथ बिताया। पहले तो हमने पिछले वर्ष जो घटनाएं देखी थीं, उनके बारे में पूछा। पता लगा कि वह लड़का, जिसकी 'किडनी' खराब थी, अब बिलकुल ठीक है। बाबा ने दिल्ली में जो कुछ किया था, उसके बाद बाबा ने अपने विशिष्ट पत्थर द्वारा उसके नितंब से पानी निकाला फिर भैरवजी

बाबा भूतनाथ सिद्ध तांत्रिक ही नहीं, समाज-सेवक भी हैं। उन्होंने न जाने कितने व्यक्तियों को प्रेत-बाधा से मुक्त किया है। यही नहीं, उनकी कृपा से नीम का एक वृक्ष तक सिद्ध हो गया है। . . . भूतनाथ आश्रम में 'कादम्बिनी' के संपादक का एक दिन

(वह लकड़ी जिसे वह हमेशा हाथ में रखते हैं) से उसे दबाया। इससे उसे शक्ति मिली, और वह पंद्रह-बीस दिन में ठीक हो गया। डॉक्टरी जांच के बाद पता लगा कि उसकी दोनों 'किडनियां' अब ठीक हैं। लेकिन जैसा बाबा ने कहा था, उसके घर के पास का एक बूढ़ा मर गया।

प्रेतनी का शिकार बूढ़ा

हमने उस बूढ़े के बारे में भी पूछा, जो पिछले वर्ष दिल्ली में बुरी तरह हिल रहा था। बाबाजी ने बताया कि वह दिल्ली में जमना पार में ही रहता है और उसे जाकर देखा जा सकता है। उसे एक प्रेत ने दबोच लिया था। उसे शरीर में लकवा लग गया था। प्रेत उसके दो लड़कों को मारने के बाद उसे छोड़ना चाहता था। बाबा ने अपनी भैरवजी लकड़ी के बल पर पेशाव के जरिए इस आदमी को स्वस्थ किया।

जादुई पत्थर

हमने बाबा भूतनाथ से पूछा कि पिछले एक वर्ष में आपने कितने महत्त्वपूर्ण रोगियों को ठीक किया है। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने बताया, 'बहुत होंगे।'

हम यहां पांच-सात मामले जरूर प्रस्तुत करना चहेंगे। लखनऊ में एक आई. ए. एस. आफीसर हैं––श्री जे. पी. पांडे। वे लखनऊ विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर भी रह चुके हैं। श्री पांडे का लड़का सुरेन्द्र डॉक्टर है। और उनकी बहू सुषमा भी डॉक्टर है। पांडे को 'टिटनस' हो गया था। गला बंद हो जाता था। यह ब्रेन हैमरेज की शुरुआत थी। सभी डॉक्टर जवाब दे चुके थे। यहां तक कि कुछ विदेशी डॉक्टर भी कह चुके थे कि इसका इलाज संभव नहीं है। श्री पांडे अकसर चिल्लाया करते थे, 'कोई ले जा रहा है। पकड़ रहा है।'

बाबा ने बताया कि 'मैंने जादुई पत्थर गले में लगाया। फिर देवी का स्मरण कर दो फूल निकालकर दिये। पांच-सात मिनट मैंने तंत्र-क्रिया की और श्री पांडे स्वस्थ हो गये। वह आज भी लखनऊ में रहते हैं और कोई भी जाकर पूछ सकता है।

लखनऊ में एक इंजीनियर हैं—श्री श्रीवास्तव। उनके मित्र की एक लड़की है, नाम है—रंजना। वह असाध्य रोग से पीड़ित थी और बोल भी नहीं सकती थी। कई सालों से वह बीमार थी। असल में उसे प्रेत ने पकड़ लिया था। बाबा भूतनाथ ने अपनी भैरव लकड़ी से ही उसका इलाज किया। इलाज किया नीम के नीचे के विशेष साधना-मठ में। कुछ दिन इलाज करना पड़ा। अब लड़की पूरी तरह स्वस्थ है, और बड़े मजे से बोलती है।

फारुख अब्दुल्ला के साथ

पच्चीस जुलाई, १९८२ की बात है, बाबा भूतनाथ कश्मीर गये थे। डॉ. शेख फारुख अब्दुल्ला (वर्तमान मुख्यमंत्री) ने उन्हें अपने घर में बुलाया था। बाबा भूतनाथ ने तभी शेख अब्दुल्ला की मृत्यु की बात बता दी थी और कह दिया था कि शेख फारुख मुख्यमंत्री बनेंगे। उन्होंने तभी यह

भी बता दिया कि कुछ समय बाद धारा–३७० अलग हो जाएगी और जम्मू-कश्मीर की स्थिति भारत के अन्य राज्यों की तरह हो जाएगी। कश्मीर में ही बाबा भूतनाथ ने श्री धर्मवीर वत्रा को देखते ही बताया था कि उनके यहां किसी की मृत्यु होनेवाली है। श्री वत्रा बहुत परेशान हो गये। असल में एक नौजवान लड़के की मृत्यु लगभग निश्चित थी। बाबा ने उस युवा लड़के को तो बचा लिया, लेकिन उसके बदले में वत्रा के बहनोई का दिल्ली में निधन हो गया। वह साठ वर्ष का था। बाबा भूतनाथ का कहना है कि एक तांत्रिक को अपनी सीमा के भीतर ही काम करना चाहिए। एक की मृत्यु रोकने के लिए किसी और को तो मारना ही पड़ेगा। ऐसा न करने से तंत्र-शक्ति क्षीण होती है।
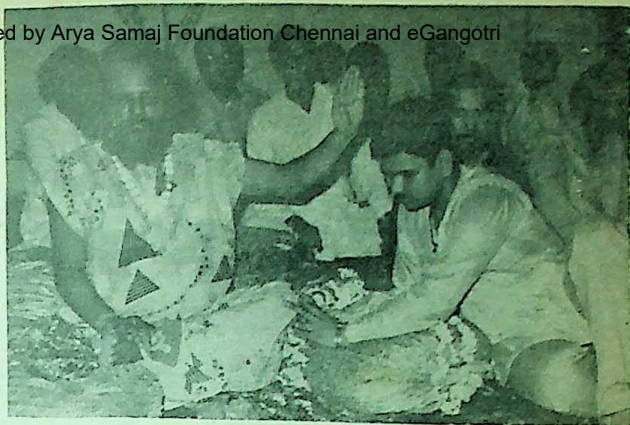
उत्तराधिकारी बटुकनाथ को आशीर्वाद देते हुए बाबा भूतनाथ

मजेदार किस्सा है, मैसूर के एक लड़के का, जो कॉलेज में पढ़ता था। उस पर एक परी सवार हो गयी थी। इसलिए वह लड़का लड़कियों की तरह शरमाया करता था और फिर अचानक ही बेहोश हो जाया करता था। बाबा ने उसका इलाज किया और अब वह लड़का पूरी तरह ठीक है।

किस्सा जलगांव का

बच्चों के एक स्कूल में बाबा का भाषण था। वहीं मिले प्रसिद्ध समाज-सेवी और राजनीतिक श्री काजीभाई। उनकी लड़की मीनाक्षी कई वर्षों से असाध्य रोग से ग्रसित थी। बाबा ने उस लड़की को श्री मीठा भाई बरियानी के यहां बुलवाया। सैकड़ों लोग वहां हाजिर थे। बाबा ने लड़की के मुंह में एक नली डाली और सांस से खींचा। तब उसके मुंह से लाल और नीले रंग का एक पदार्थ निकला। शरीर के भीतर कोई गांठ हो गयी थी। शायद वह कैंसर था। उसके बाद गांठ निकल गयी और वह लड़की ठीक हो गयी।

लखनऊ का एक दिलचस्प किस्सा है। जानी उर्फ राजू की बहन की शादी देवरिया में हुई है। वह असाध्य रोग से पीड़ित थी। इसीलिए उसे दिन में सौ-डेढ़ सौ बार दौरे आते हैं। वह दिनभर लेटी रहती थी। बाबा ने उसे आग के सामने लिटाया और फिर अपनी तांत्रिक

सूफी और मुस्लि
धर्मावलंबियों
सम्मेलन
बाबा भूतना
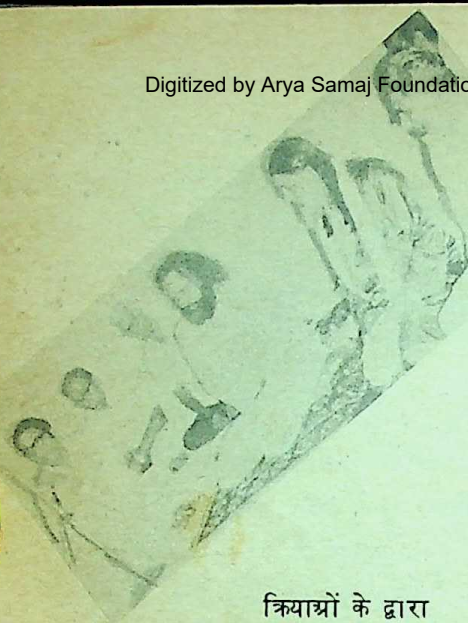
क्रियाओं के द्वारा उसे बिलकुल ठीक कर दिया। अब वह देवरिया में अपने पति के साथ रहती है।

किडनी का इलाज

दिल्ली में कपड़े के एक व्यापारी हैं, मक्खनलाल नौरंग। करौलबाग में उनकी बहुत बड़ी दूकान है। उनके लड़के हरीश नौरंग की दोनों किडनी खराब हो गयी थीं। वह चल भी नहीं सकता था। विदेशों में भी उसने इलाज कराया। कहीं ठीक नहीं हुआ। उसे दो बार लखनऊ में बाबा भूतनाथ के आश्रम में आना पड़ा। बाबा ने मां का नाम लेकर उसके शरीर पर भभूत लगायी। तीन बार भस्म खिलायी। हरीश नौरंग अब बिलकुल ठीक है। बाबा का कहना है कि मुझे अपनी तांत्रिक सिद्धियों का पूरा प्रयोग इस मामले में करना पड़ा।

सब मां का प्रताप है

बंबई के दौलत भाई वालिया बहुत दुःखी थे, क्योंकि उनका लड़का पुरुषत्व से वंचित था। बाबा ने कई तांत्रिक क्रियाओं और प्रयोगों के द्वारा उसे ठीक ही नहीं कर दिया, बल्कि अब उसने विवाह कर लिया है और उसके एक लड़का भी है। हमने पूछा, "यह सब आपने कैसे किया?"

बाबा ने बताया, "मैं नहीं जानता सब मां का प्रताप है।" उन्होंने यह भी बताया कि उनके लखनऊ आश्रम में भीमसेन मेहता नाम के एक आदमी रहते थे। उनके लड़के को प्रेत-बाधा हो गयी थी। वह एक साथ तीन बीमारियों का शिकार हो गया था—टिटनिस, फिट और ब्रेन हैमरेज। होली के दिन होली खेलने के बहाने बाबा ने उस लड़के को आश्रम में बुलवाया। वहां उसे धूनी पर लिटाया, फिर बाबा को उस प्रेत के साथ बहुत भिड़ना पड़ा। अंत में वह लड़का ठीक हो गया। अब वह अपनी फैक्टरी चलाता है।

तुलसीदास को प्रेत मिला था

इस तरह के कई उदाहरण इस प्रमाण के लिए पर्याप्त हैं कि बाबा भूतनाथ में तांत्रिक शक्तियां हैं। हमने स्वयं उनके कई चमत्कार देखे हैं। मां दुर्गा और कामाख्या के उपासक होते हुए भी वे सब धर्मों में समान रूप से विश्वास करते हैं। उस दिन

लंबी बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि पुनर्जन्म होता है और आकस्मिक मृत्यु से मरे हुए लोग अपनी आयु पूरी होने तक भूत-योनि में रहते हैं। तुलसीदास ने भी प्रेत के दर्शन किये थे। कुत्ते के रूप में वह प्रेत तुलसीदास को मिला था। और उसी ने यह बताया था कि हनुमान के इष्ट से ही तुलसीदास को राम के दर्शन प्राप्त हो सकते हैं।

भूत-प्रेत अचानक किसी भी व्यक्ति पर हमला कर सकते हैं। लेकिन पचास वर्ष की आयु के बाद ये अधिक दुःख देने लगते हैं। बाबा ने एक उदाहरण दिया कि उत्तर प्रदेश सेतु निगम के जनरल मैनेजर श्री एन. सी. सक्सेना ने उनसे पूछा था कि भूत कैसा होता है! बाबा ने मुसकराकर कहा था, "पता लग जाएगा।" दूसरे दिन वे फैजाबाद से आ रहे थे, तब रास्ते में उन्होंने देखा कि कोई चीज ताड़ के बराबर लंबी होकर सीधी खड़ी है और फिर छोटी हो जाती है। यह बार-बार होता रहा। मुश्किल से वे भूतनाथ-आश्रम तक आ सके। बाबा ने तब हंसकर श्री सक्सेना से कहा था, "भूत ऐसा होता है।"

कठोर साधना का मार्ग

तांत्रिक के लिए कठोर साधना आवश्यक है। आसानी से तांत्रिक नहीं बना जा सकता। मांस और मदिरा का प्रयोग उसके लिए वर्जित है। पूरी साधना के लिए तैंतीस वर्ष जरूरी हैं। वाममार्गी तांत्रिकों को नौ हिरणों की बलि देनी पड़ती है। अब बकरे बलि में दिये जाते हैं। जो वाममार्गी तांत्रिक नहीं हैं, वे शाकाहारी होते हैं। उन्हें जायफल और नारियल,
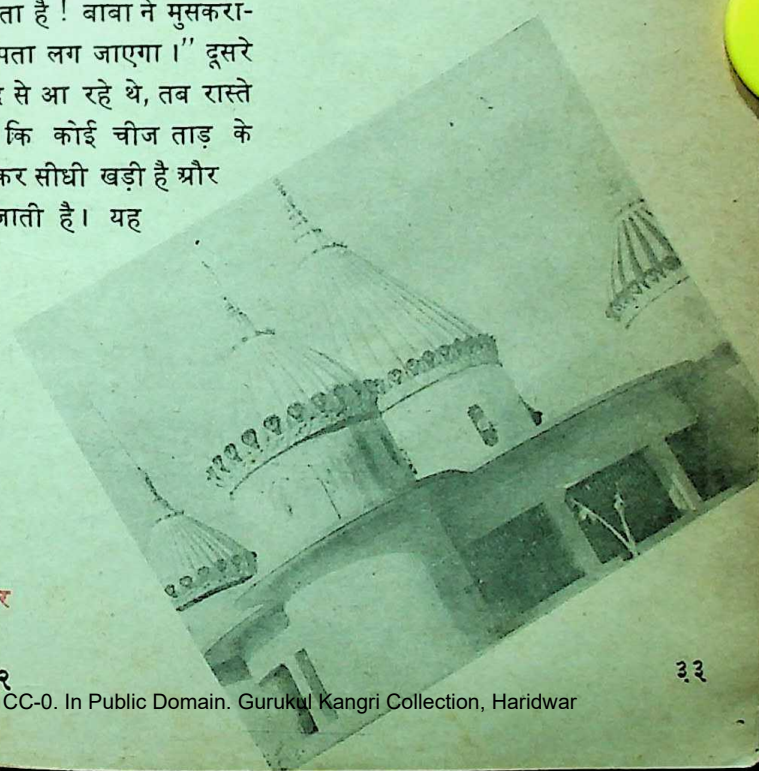
लखनऊ में बाबा भूतनाथ का आश्रम : कामाख्या मंदिर

केला, कूष्मांड, पेठा इत्यादि की बलि देनी होती है। एक ज्योति जलायी जाती है और फिर साधना के लिए बैठा जाता है। साधना के समय कई रंग दिखायी देते हैं। ध्यान करने पर पता चल जाता है कि देश और समाज में क्या होनेवाला है। तांत्रिक को स्वार्थी नहीं होना चाहिए। बल्कि समाज के लिए अपना अस्तित्व उसे समाप्त कर देना चाहिए। बाबा भूतनाथ ने बताया कि 'हम केवल उसी आदमी को अचानक चांटा मारते हैं, जिसके भीतर प्रेत-बाधा होती है। अचानक चांटा मारने से शरीर के भीतर कंपन होती है और भीतर की चीज भाग जाती है।'

बकुली या खंखाड़ मारकर भी आग पर धूनी देने से अथवा जड़ी से या प्राणायाम से बहुत से रोगों का निदान किया जा सकता है। बाबा भूतनाथ ने अपने आश्रम के छोटे-से बगीचे में जड़ी-बूटियो के बहुत-से पौधे लगा रखे हैं। कई रोगियो का उन्होंने मिट्टी से भी इलाज किया है। अपने ही यहां उन्होंने ऐसी एक जगह बनायी है—गले तक उस आदमी को वह मिट्टी में बंद कर देते हैं। फिर कुछ क्रियाओं द्वारा कुछ दिनों में वह आदमी ठीक हो जाता है। गोबर के लेप का भी उन्होंने प्रयोग किया है। मैग्नेट लगाकर भी भीतरी रोग देखे जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि भूत-प्रेत-बाधाओंवाले लोगों को तो पांच-सात मिनट में ही ठीक किया जा सकता है। अंदर के कई रोग १०-५ मिनट में ठीक होते हैं और कुछ रोगों के लिए दो महीने लग जाते हैं। जहां चीर-फाड़ की जरूरत होती है, हम उन्हें आशीर्वाद देकर अस्पताल भेज देते हैं।

लकड़ियां सांप बन जाती हैं

कामरूप के जंगलों में कई तरह की लकड़ियां मिलती हैं। वहां से बाबा भूतनाथ कुछ लकड़ियां उठाकर लाये। उनका कहना है कि ये लकड़ियां जब मैं चाहता हूं मेरे हाथों में आकर सांप बन जाती हैं। उनकी एक लकड़ी को सांप बनते हुए हमने स्वयं देखा है और प्रसिद्ध कवि श्री गोपाल चतुर्वेदी ने भी देखा है। बाबा इन सांपों का उपयोग केवल इलाज के लिए करते हैं।

बाबा भूतनाथ समाजसेवा के बहुत से काम कर रहे हैं। बिहार में दो डिग्री कॉलेज चलाने का उन्हें श्रेय प्राप्त है। आगे अस्पताल और कॉलेज बनाने की भी उनकी योजना है। अपने उत्तराधिकारी के रूप में उन्होंने राकेश नाम के एक लड़के को स्वीकार कर लिया है। बहुत मुश्किल से राकेश के पिता वह लड़का देने को तैयार हुए थे। वह पटना का है और इस समय दून स्कूल देहरादून में आठवीं क्लास में पढ़ता है। बाबा उसे भरपूर शिक्षा देने के बाद, तांत्रिक प्रयोगों में उसे सिद्ध करेंगे। उसका नाम उन्होंने बटुकनाथ रखा है।

बाबा भूतनाथ के आश्रम कानपुर, पटना और बंबई में भी हैं, लेकिन जो आश्रम लखनऊ में है, वह अपने ढंग का अलग है। उनके दो मुख्य सेवक हैं : श्री विजय बाबू और श्री तिवारी। विजय बाबू को लकवा मार गया था, जब से बाबा ने उन्हें ठीक किया, वे आश्रम में रह रहे हैं। ●

सूक्ष्म शरीर की यात्रा के अलौकिक अनुभव

● रेखा अग्रवाल
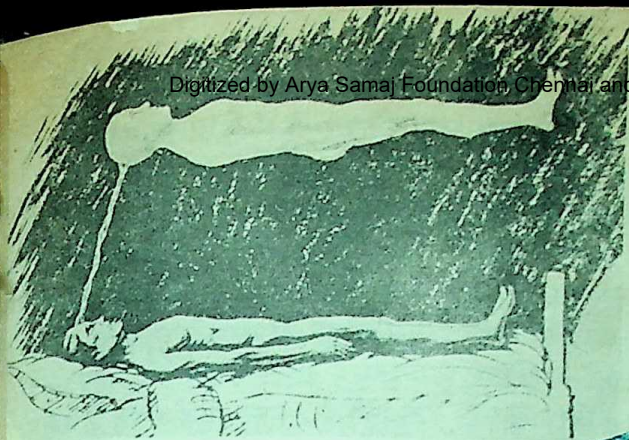
आधुनिक चिकित्सा-पद्धति का एक विशाल अस्पताल ! गहन देख-रेख कक्ष में दाखिल थी दिल की बीमार, अधेड़ उम्र की एक महिला। अपने साथ घटी इस घटना का वर्णन उसने इस प्रकार किया, "यही कोई सालभर पहले की बात है, मैं अस्पताल में भरती थी। एकाएक मेरी छाती में असहनीय पीड़ा होने लगी। मैंने नर्स को बुलाने के लिए पलंग के साथ लगा बटन दबा दिया। मेरे लिए सीधा लेट पाना दूभर हो रहा था, मैंने करवट बदली। किंतु करवट बदलते ही अचानक मेरा श्वास रुक गया, दिल की धड़कन भी कुछ क्षण में बंद हो गयी।

"तभी मुझे लगा कि मैं—मानों तैरती चली जा रही हूं। क्षणभर में पलंग से नीचे फर्श पर उतर आयी। आश्चर्य की बात यह थी कि पलंग की रेलिंग भी मेरे रास्ते में बाधक सिद्ध नहीं हुई। फर्श पर पहुंचते ही मैं ऊपर उठने लगी और अंततः ट्यूब-लाइट के समीप स्थित हो गयी। नीचे का दृश्य मुझे स्पष्ट दिखायी दे रहा था। मेरी देह पलंग पर ही पड़ी थी। एक नर्स मुझे मुंह से कृत्रिम श्वास देने में एकजुट होकर लगी थी। डॉक्टर हृदय की मालिश कर रहा था। तभी एक नर्स बोली, 'ओह ! बिचारी चल बसी।' किंतु डॉक्टर और नर्स मेरे हृदय और हाथ-पैर की मालिश लगातार

ऊपर का चित्र : नीचे पार्थिव शरीर तथा ऊपर उड़ता हुआ सूक्ष्म शरीर

करते ही चले जा रहे थे। कुछ ही क्षणों में एक बड़ी-सी मशीन पलंग के पास लायी गयी। मशीन से मेरे शरीर को शॉक दिया जाने लगा। उससे मेरा समूचा शरीर हिलने लगा, हड्डियां चटक गयीं, वह आवाज भी मैं स्पष्ट सुन रही थी। तभी मेरे मन में विचार उठा, 'ये डॉक्टर और नर्स मेरे शरीर की मालिश करने में क्यों लगे हैं, कुछ भी तो नहीं हुआ है मुझे, बिलकुल ठीक हूं मैं! और वास्तव में, कुछ क्षणों बाद मैं ठीक हो गयी।"

ऐसा ही एक संस्मरण है एक नवयुवक का जिसने मृत्यु को काफी करीब से देखा, "दूर-दूर तक फैली थी सर्पीली काली सड़क। तेज गति से मेरी गाड़ी दौड़ती चली जा रही थी। साथ में, मेरा दोस्त बैठा था, जिसे मैं घर पहुंचाने जा रहा था। एकाएक सड़क दो भागों में विभाजित होती दिखायी दी। बहुत चाहने पर भी मैं स्टीअरिंग नहीं संभाल पाया और गाड़ियां टकरा गयीं। मुझे एक भयानक चीख सुनायी दी और ऐसा लगा, जैसे कि मैं ऊपर की ओर हवा में तैरता चला जा रहा हूं। क्षणभर में ही मैं पांच फुट की ऊंचाई पर पहुंच गया। देखता हूं कि--मेरी गाड़ी तहस-नहस हो गयी है। मेरा दोस्त, आह! बेहोश पड़ा है, लोगों का जमघट लगा है। लोग मेरे दोस्त को बाहर निकालने की कोशिश में लगे हैं। मेरे शरीर की दुर्गति बनी हुई है, टांगें कुचल गयी हैं, शरीर से खून बह रहा है। और यह सब मैं स्पष्ट देख रहा था।"

पार्थिव शरीर तथा उसकी सूक्ष्म दृष्टि

कितने रहस्यपूर्ण हैं ये संस्मरण। संभवतः आप संदेह भी कर रहे होंगे। किंतु ऐसे अनेक रहस्यमय संस्मरण-शोधकर्ताओं के सम्मुख आये हैं, जिनमें किसी व्यक्ति ने अपने ही शरीर पर शल्य-क्रिया होते देखी है, दुर्घटना में शरीर को लहूलुहान स्थिति में देखा है एक प्रेक्षक के रूप में। और ये संस्मरण बहुत से ऐसे व्यक्तियों के भी हैं, जिन पर किंचितमात्र के लिए भी संशय नहीं किया जा सकता। प्रसिद्ध लेखक अर्नेस्ट हैमिंग्वे इसके एक प्रमुख उदाहरण हैं।

अनुभवों का आधार : सूक्ष्म शरीर

तांत्रिकों के अनुसार मानव शरीर के दो रूप हैं—भौतिक शरीर एवं सूक्ष्म शरीर। सूक्ष्म शरीर अभौतिक होते हुए भी वस्तुतः भौतिक शरीर का स्वरूप है। सामान्यतः जागृत अवस्था में भौतिक एवं सूक्ष्म शरीर, दोनों संपूर्ण ऐक्य में रहते हैं और वे एक दूसरे में मिले होते हैं।

किंतु बहुत-सी परिस्थितियों में सूक्ष्म शरीर और भौतिक शरीर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। तब सूक्ष्म शरीर के द्वारा सहज ही भौतिक शरीर को देखा जा सकता है। यह ही नहीं, सूक्ष्म शरीर स्वयं ही लौकिक एवं पारलौकिक मंडल में यात्रा भी कर सकता है और इस यात्रा में कोई भौतिक वस्तु उसके लिए बाधक सिद्ध नहीं होती। अलग होने के बाद भी सूक्ष्म शरीर, भौतिक शरीर से एक महीन सूत्र द्वारा संबंध बनाये रखता है। किंतु व्यक्ति की मृत्यु होने पर यह संबंध टूट जाता है और सूक्ष्म शरीर पूरी तरह स्वच्छंद हो जाता है।

सूक्ष्म शरीर की यात्रा की चरम सीमा, परम सुख एवं आनंद की प्राप्ति है। इस लौकिक संसार से परे एक पारलौकिक मंडल है, जो अद्भुत प्रकाश से उद्दीप्त है। इसी पारलौकिक मंडल तक पहुंच पाना सूक्ष्म शरीर की यात्रा का उद्देश्य है . . .

कैसे करें सूक्ष्म शरीर की यात्रा

इस विद्या को सीखने के लिए सर्वप्रथम आप सभी प्रकार के नकारात्मक भावों—भय, बुरे विचार, हिचकिचाहट, संदेह, निराशा, कुंठा, घबराहट आदि को पूरी तरह त्याग दें। मन में अटूट विश्वास कर लें कि सूक्ष्म शरीर है और वह भौतिक देह से अलग हो सकता है।

सूक्ष्म शरीर की यात्रा सीखने के लिए अनेक तरीके हैं। एक विधि के अनुसार आप आरामपूर्वक सीधा लेट जाएं, आंख बंद कर लें तथा कल्पना करें कि आपकी भौतिक देह बिस्तर पर पड़ी है और

पलंग के छोर से आप उसे उस अवस्था में देख रहे हैं। यह विधि दृष्टांकन और एकाग्रता पर आधारित है। जब आप पूर्ण रूप से एकाग्रता प्राप्त कर लेंगे, तब स्वयं ही आपको यह एहसास होगा कि आप अपनी भौतिक देह से निकलकर पलंग के उस किनारे पर पहुंच गये हैं, जहां कि आपने कल्पना की थी कि आप खड़े थे। अब आप सहज ही हवा में तैर सकेंगे।

दूसरी विधि के अनुसार पहली विधि के समान आप लेट जाएं और अपना ध्यान पांव के एक अंगूठे पर तब तक केंद्रित करें,जब तक कि उसमें सिहरन पैदा नहीं होती। फिर दूसरी टांग के अंगूठे पर ध्यान केंद्रित करें, जिससे उसमें भी सिहरन पैदा हो जाए। इस तरह जब तक कि दोनों टांगों में सिहरन पैदा नहीं हो जाती, ध्यान बनाये रखिए। धीरे-धीरे आप टखनों, घुटनों, कूल्हों, पेट, छाती, बांहों, गरदन और सिर में सिहरन का अनुभव करेंगे। जब तक कि समूचा शरीर झुनझुनाने न लगे, ध्यान बनाये रखें। एकाएक आभास होगा कि आप तैर रहे हैं। अब आपने सूक्ष्म शरीर को अलग करने की विद्या सीख ली है।

सूक्ष्म शरीर की यात्रा क्यों ?

सूक्ष्म शरीर की यात्रा की चरम सीमा, परम सुख एवं आनंद की प्राप्ति है। धार्मिक आस्था है कि इस लौकिक संसार से परे एक पारलौकिक मंडल है, जो अद्भुत प्रकाश से उद्दीप्त है। सामान्यतः हम इसके दर्शन नहीं कर पाते, पर वह रचनात्मक क्षमता से परिपूर्ण है। इसी पारलौकिक मंडल तक पहुंच पाना सूक्ष्म शरीर की यात्रा का उद्देश्य है। भौतिक स्तर पर यह कंपनयुक्त तरंगों के जाल के समान है, जो सारे ब्रह्मांड में फैला हुआ है। इस जाल के द्वारा ही सारा ब्रह्मांड जुड़ा हुआ है और ब्रह्मांड में घटी प्रत्येक घटना चाहे वह विचार, शब्द, अथवा छोटी-छोटी क्रिया ही क्यों न हो, इस जाल में उलझ जाती है और उस पर हमेशा के लिए अंकित हो जाती है।

मनुष्य भी इस जाल का एक अंग है और उसके शरीर में पूर्वनिर्मित कुछ ऐसे केंद्र हैं, जिनमें तांत्रिक क्रिया की उत्पत्ति एवं विकास संभव है। पारलौकिक मंडल से संपर्क जोड़ने में इन्हीं केंद्रों का प्रयोग किया जाता है। सूक्ष्म शरीर के समान ये केंद्र भी अदृश्य हैं। प्रत्येक केंद्र स्पंदन जाल का बना है और हिंदू तंत्र ज्ञान में इन्हें चक्र की संज्ञा दी गयी है। शरीर में बहुत से चक्र हैं और अंतिम, सबसे उच्च चक्र मस्तिष्क में स्थित है। वस्तुतः सूक्ष्म यात्रा का उद्देश्य इस परम चक्र तक पहुंचना ही है।

दानवों की दा[illegible]

जहां परम चक्र पा लेने पर परम सुख और आनंद मिलता है, वहीं सूक्ष्म शरीर-यात्रा के निम्न स्तर पर अत्यधिक वेदना भी संभव है। कभी-कभी तो यह आकस्मिक घटना के रूप में घट जाती है, किंतु [illegible]

तंत्र-विज्ञान के अध्ययनकर्त्ता जान-बूझकर इसका अनुभव करते हैं, जिससे उनकी आत्मशक्ति को संघर्ष द्वारा बल मिले।

इसी सिद्धांत पर आधारित है तिब्बत की वह तंत्र-रीति, जिसमें दक्ष तांत्रिक प्रकृति की विभिन्न शक्तियों को अपने ही शरीर पर भोग करने के लिए आमंत्रित करते हैं। इस रीति को तिब्बती भाषा में 'चोद' के नाम से जाना जाता है। यह एक अत्यंत ही भयानक रीति है, जिसमें वह व्यक्ति पूर्णत: चेतना में होता है। यह रीति रात्रि के पहर में अकेले में श्मशान घाट अथवा कब्रिस्तान में की जाती है। वह व्यक्ति दानवों को आमंत्रित करने के लिए एक विशेष नाच और मंत्र का जाप करता है। निमंत्रण स्वीकार कर कुछ ही क्षणों में उसे पिशाच और दानव घेर लेते हैं। उन्हीं में से एक पिशाचिनी विकराल रूप धारणकर उसके सूक्ष्म शरीर पर टूट पड़ती है। तलवार के वार से वह उसके सूक्ष्म शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देती है। भयानक आवाज होती है और . . . और फिर सारे दानव उस शरीर की बोटी-बोटी चबा डालते हैं और उसका सारा रक्त पी जाते हैं। वह व्यक्ति अपने सूक्ष्म शरीर की यह दुर्गति होते देख सारी क्रिया का साहस से सामना करता है। थोड़े ही समय में दानव वापस लौट जाते हैं और सूक्ष्म शरीर फिर से जुड़ जाता है। इस क्रिया से उस व्यक्ति का आत्मबल कई गुना बढ़ जाता है।

एक आधुनिक विख्यात तांत्रिक विक्टर न्यूबर्ग ने भी कुछ ऐसे ही अनुभवों का वर्णन अपने संस्मरणों में किया है। वे लिखते हैं--'एकबार सूक्ष्म शरीर की यात्रा के दौरान अचानक मुझे यह एहसास हुआ कि मैं भंवर में फंस गया हूं। मैं उसमें चक्कर काटने लगा और तभी मेरा सामना अनजाने पिशाचों से हुआ। उन्होंने मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और विवश हो मुझे भौतिक देह में वापस लौटना पड़ा। बड़ी मुश्किल से मैंने अपने आपको अपनी भौतिक देह के अनुरूप बनाया।'

सूक्ष्म शरीर की यात्रा के ये अनुभव साधारण व्यक्ति के लिए अविश्वसनीय ही प्रतीत होंगे। लेकिन दूसरी ओर आधुनिक वैज्ञानिक भी इन अद्भुत घटनाओं को समझने में प्रयत्नशील हैं। डॉ. रेमाण्ड मुंडी जूनियर अपने उन रोगियों के अनुभव जुटाने में लगे हैं, जिन्होंने मृत्यु को बहुत करीब से देखा है, जिनके हृदय की धड़कन एवं श्वास-क्रिया एक बार सचमुच बंद हो गयी थी।

—१८/१०, सी. पी. डब्ल्यू. डी. फ्लैट्स,
साकेत, नयी दिल्ली-११००१७

हमारी सबसे बड़ी शान कभी न गिरने में नहीं है, अपितु जब हम गिरें, हर बार उठने में है।
—कन्फ्युशस
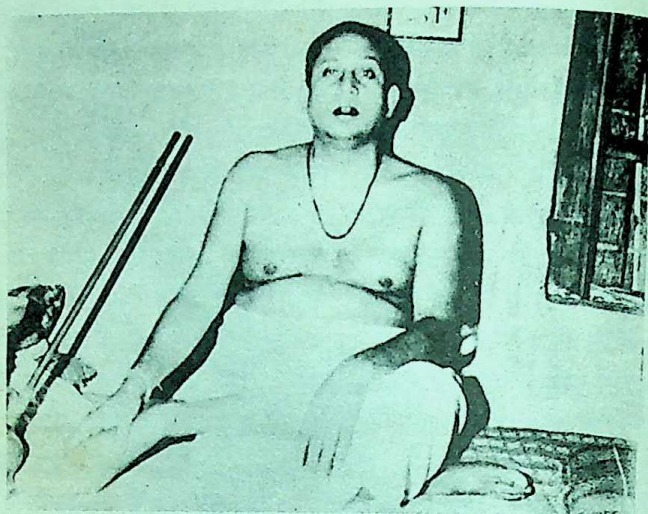
रहस्यमय श्मशान साधना

● एस. सहाय

एस. सहाय एक वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रख्यात दैनिक पत्र स्टेट्समैन (दिल्ली) के संपादक हैं। उनके अनुसार : "भूत-प्रेतों—जैसी अशरीरी आत्माओं से न तो मैं कभी मिला हूं और न मैंने उनकी उपस्थिति ही कभी अनुभव की है, हालांकि मैं जिस मकान में आजकल रहता हूं, वहीं, मेरे परिवार के सदस्यों ने ऐसी आत्माओं को देखने की बात कही है। फिर भी 'कादम्बिनी' के पाठकों के लाभ के लिए मैं औघड़ भगवान राम के संबंध में उनके शिष्य के अनुभव प्रस्तुत कर रहा हूं।... मेरे संबंध में बाबा भगवान राम ने मेरे एक संबंधी से कहा है, 'इस व्यक्ति का न तो कोई देव-प्रतिमा है और न कोई मंदिर। उसके लिए तो उसका अवतार ही ब्रह्मांड है।' और, उन्होंने मेरे साथ उसी स्तर पर व्यवहार किया है। फिर भी उन्होंने और लोगों को एक नये ढंग की चेतना दी है।"

मैंने अपने गुरु-भाई दर्शी साधुजी (अघोरेश्वर महाप्रभु के शिष्य) से पूछा, "क्या आप भी कभी पूजन-साधना में सम्मिलित हुए हैं ? यदि सम्मिलित हुए हैं, तब अपना अनुभव सुनाने की कृपा करें।"

दर्शीजी ने कहा, "जहां तक स्मरण है, कह रहा हूं। बहुत कुछ याद नहीं है। जिस साधना-पूजन का वर्णन करने जा रहा हूं, उसे श्रद्धालु भक्तों को बतलाने के लिए, गुरुदेव की स्वीकृति प्राप्त कर चुका हूं।"

फिर दर्शीजी ने कहना शुरू किया और बोलते ही चले गये। सोचा, फक्कड़ साधु के कथन में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। जितना लिख सका, लिख डाला और जो छूट गया, उसका लिखना असंभव है। दर्शीजी के मुख से सुने श्मशान-पूजा और साधना के रहस्यमय दृश्यों का वर्णन, उन्हीं के शब्दों में नीचे अंकित है :

एक दिन गोधूलि वेला में मैं गुरुदेव अघोरेश्वर के साथ श्मशान की ओर जा रहा था। मन-मस्तिष्क श्मशान-देवता की पूजा की उत्सुकता में केंद्रित था। श्मशान-देवता के पूजन के निमित्त बहुत से द्रव्यों-पदार्थों को एक झोले में रखकर और उसे हाथ में लटकाये मैं, गुरुदेव के साथ नदी तट पर स्थित श्मशान की ओर बढ़ा चला जा रहा था। अकस्मात पीछे मुड़कर गुरुदेव ने तरुण तापस संभव साधक को, त्वरित गति से आते देखा। गुरुदेव ने उनसे कहा, "किस कदर पसीने से तर-बतर और इतनी शीघ्रता से तुम चले आ रहे हो ?"

उसने प्रणिपात कर उत्तर दिया— "जीवन अंधकारमय है। जीवन-जंगल का बड़ा ही बीहड़ मार्ग था। तीन-तीन नारी-नदियां पद्मवत पार करनी पड़ीं और सांसारिक तथा भौतिक ताप, तरुणाई, निष्ठुरतापूर्वक तपा रही थी। दादा ! क्या यह बात सही है कि यदि औघड़ का ब्रह्मांड तपने लगता है, तब घनघोर वर्षा होने लगती है ? जनश्रुति है कि यदि औघड़ लोग खुले बदन धूप में बैठ जाएं, तब दिनभर की तपन के बाद ब्रह्मांड खौल (तप) जाता है, जिसके फलस्वरूप इतनी घमासान वर्षा होती है कि वह वर्णनातीत है। आज जब मैंने एक औघड़ को वैसे ही एक टीले पर दिगंबर अवस्था में बैठा देखा, तब भयाक्रांत हो गया, क्योंकि साथ ही साथ मैंने यह भी देखा कि उनकी साधना के परिणामस्वरूप पश्चिमी आकाश

एक क्षण के लिए श्मशान में बिखरे पड़े कपाल मुंडों से अट्टहास की तरह आवाजें सुनायी पड़ीं। धीरे-धीरे इन कपाल मुंडों से समधुर एवं ललित कंठों से पंक्ति बद्ध और छंद-बद्ध ताल-लय सहित, संगीत के मनोहर स्वर गुंजित हो उठे . . .

में बादल के टुकड़े उठने लगे थे। अतः इस भय से कि गंभीर वर्षा होने पर नदी-नालों को लांघकर आना दुष्कर हो जाएगा, मैं वेग से चला आ रहा हूं।"

यही वार्तालाप करते हुए, नदियों को पार करते हुए हम लोग अभी यंत्र-मंडल के प्रवेश-द्वार पर पहुंच ही रहे थे कि आकाश चारों ओर से मेघाच्छादित हो गया। काले-काले मेघों के कारण सर्वत्र गहन एवं घटाटोप अंधकार फैल गया। मेघों के पारस्परिक टकराव, तड़-तड़ाहट और गर्जनों के बीच नभमंडल में दामिनी दमकने लगी। तत्काल ही मूसला-धार वर्षा होने लगी।

इसी बीच संभव साधक बोल उठा, "देखो दादा! मैं कह रहा था न कि जहां औघड़ का ब्रह्मांड तपा, तहां वृष्टि चरम सीमा, पराकाष्ठा को भी पार करने लगती है, नदियों को उद्वेलित कर देती है। वही हुआ। अब सूखी लकड़ियों का मिलना भी दुर्लभ है।"

गुरुदेव अघोरेश्वर ठठाकर हंसे और बोले, "घबराओ मत। अग्नि-तत्त्व और वायु-तत्त्व के मिश्रण से अभी आकाश से बादल फटेगा। नदियों के जल-स्तर में उतार आ जाएगा। सन्निकट ही मील-भर पर एक ग्राम है, जहां मेरा एक भक्त गोहन रहता है। उसके यहां पूजन की सामग्रियां हैं। धीरे-धीरे जाकर उन्हें ले आओ। गोहन को भी बुलाते आओ।"

उसी क्षण कड़ककर बिजली चमकी, वायु वेग से चलने लगी। देखते ही देखते बादल आकाश से लुप्त हो गये। आकाश स्वच्छ हुआ। ऐसा लगा, मानो तारागण यंत्र-वेदी को निहारने लगे। संभव भक्त धीरे-धीरे छातीभर नदी के पानी को लांघकर उस ग्राम में पहुंचा और गोहन उपासक के यहां पहले से तैयार कर रखी हुई सामग्रियां तथा उसे साथ लेकर समय से श्मशान में उपस्थित हो गया।

चतुर्दिक अंधकार हो गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि रात्रि में आकाश से तारागण झांककर सुकृति का पूजन देख रहे हैं। पूजा के लिए समिधा, कनैल, गुलाब और ओड़हुल के फूल, मद, मीन इत्यादि एकत्रितकर हमने गुरुवर अघोरेश्वर के विमल चक्षु के दर्शन किये।

संभव साधक कहने लगा, "अहा! माता-पिता के लाड़ले पुत्र के रूप में भी मैंने इतने करुणापूर्ण चक्षु कभी नहीं देखे। देवी के ध्यान और दर्शन में भी मैंने करुणा से ओत-प्रोत ऐसे चक्षु नहीं देखे।" कहते-कहते और सोचते-ही-सोचते संभव साधक अपने आप में केंद्रस्थ होकर समाधि में स्थित हो गया। मेरी और गोहन की भी वही स्थिति हो गयी।

जमीन से तीन फुट ऊंचा उठकर पद्मासन में अवस्थित देखकर, संभव साधक विस्मय-विमूढ़ हो उठा। दोनों साधकों ने, पिंड में स्थित प्राण को आहुति देने के बाद, बाह्य अग्नि को भी पांच-पांच बार आहुति दी। उन्होंने प्रज्वलित अग्नि से उत्पन्न प्रकाश-पुंज के मध्य अपने गुरु अघोरेश्वर को प्राण में आहुति देते देखा।

अधिक वर्षा होने के फलस्वरूप नदी पार करने में अपरिहार्य रूप से अत्यधिक समय लगने के कारण, भैरवी-भवानी विलंब से पहुंच पायीं।

पिंड में प्राणमयी मां के पूजन का दृश्य बड़ा ही रहस्यमय और विचित्र था, जिसे देखकर तरुण तापस साधक के चित्त में स्वभावतः जिज्ञासाएं उत्पन्न हुईं। इसके पश्चात तत्काल ही अघोरेश्वर की देह से ज्योतिपुंज निकलने लगे, जिनमें मेरी, संभव साधक और गोहन की हू-ब-हू अंगुष्ठ प्रमाण मूर्तियां दिखायी पड़ने लगीं। इन्हें दृष्टिगोचर कर हम सभी साधक चकित हो उठे।

आगे हम लोगों ने देखा कि पृथ्वी से तीन फुट से भी अधिक ऊंचाई में आकाश में उठकर, अघोरेश्वर पात्र-धारिणी दो देवियों के साथ, अग्नि-कुंड की लपलपाती दीप-शिखाओं के बीच, पद्मासन में अवस्थित हो गये। तत्पश्चात मेरी, तरुण तापस संभव साधक तथा गोहन की अंगुष्ठ प्रमाण मूर्तियों ने उनके समक्ष कर-बद्ध प्रणिपात कर, अघोरेश्वर की गणियों का स्तवन-प्रारंभ किया। तदनंतर ऐसा प्रतीत हुआ कि आकाश में एक भीषण विस्फोट हुआ हो। चारों दिशाएं कंपायमान हो उठीं। श्मशान में स्थित पीपल वृक्ष के हरे पत्तों पर अग्नि-कुंड की ज्वाला और प्रकाश पुंज के प्रतिबिंब दीपावली के दीपदान की छटा को भी लज्जित कर रहे थे। शुभ्र एवं धवल वस्त्र सरीखे नदी के जल-प्रवाह के फेन उबाल खाकर, प्रज्वलित अग्नि को आच्छादित करने, शमित करने की चेष्टा कर रहे थे।

अनायास ही **'ॐ मां क्रीं, ॐ मां क्रीं'** की ध्वनि मुखरित होने लगी। इतने ही में एक क्षण के लिए श्मशान में बिखरे पड़े कपाल-मुंडों से अट्टहास की तरह भयंकर आवाजें सुनायी पड़ीं।

धीरे-धीरे इन कपाल-मुंडों से सुमधुर एवं ललित कंठों से पंक्ति-बद्ध और छंद-बद्ध, ताल-लय सहित, संगीत के मनोहर स्वर गुंजित हो उठे, जिससे पूरा वृत्त-चित्र और वातावरण अपूर्व रूप से स्वप्निल, मोहक और आकर्षक हो उठा। सहसा औघड़-अघोरेश्वर का दाहिना हाथ आकाश की ओर उठा। पीपल-वृक्ष में एक बार जोरों का कंपन हुआ। सरिता का जल-तरंग शांत हो गया और उसका जल-प्रवाह अपने निश्चित मार्ग पर बहने लगा। अभय पाकर, विस्मित साधक निश्चित सामान्य स्थिति में आये। मेरी

तरुण तापस संभव साधक और गोहन की अंगुष्ठाकार मूर्त्तियां अघोरेश्वर की देह में प्रविष्ट हो गयीं। साथ ही साथ, पात्र-धारिणी दोनों देवियां भैरवी की देह में विलीन हो गयीं।

इन सब अलौकिक दृश्यों के पटाक्षेप होते ही, संभव साधक ने कहा, "दादा! मैंने यह सब क्या देखा है? क्या यही कपालेश्वर का विहंगम रूप है? दादा अघोरेश्वर! जिस प्रकार आपने ऐसी अविस्मरणीय पूजा संपन्न कर, श्मशान में साक्षात दिव्य दर्शन देकर और अपना वास्तविक रूप दिखलाकर हमें इस बार कृतकृत्य किया है, क्या ऐसी ही कृपा-दृष्टि फिर होगी?"

अघोरेश्वर बोले, "अरे, नहीं रे! यह विकट उपासना उन्हीं व्यक्तियों द्वारा की जाती है, जिन्होंने इंद्रियों का निग्रह कर चित्त को निर्वासनिक बना लिया है। ऐसे साधकों की उपासना से ही, ऐसा प्रकट दर्शन मिलता है। श्मशान देवता महाकाल जिस क्षण प्राणरहित देह की आहुति लेते हैं, वह एक क्षण एक-एक कल्प की तरह आनंददायक है। वर्षों पूजन-उपासना करते रहो, मनोवांछित फल नहीं प्राप्त हो पाता है-जैसे कि अवर्षण हो गया हो। इसीलिए कहा गया है कि गुरु के सान्निध्य में मंत्र जाग्रत होता है, देवता चेतते हैं, इंद्रियां निग्रहीत होती हैं। . . .

"मुर्गा बांग दे रहा है। तीन बज रहा है। अब चलो, हम लोग अपनी-अपनी वह दिनचर्या संपन्न करें, जिसका समय और काल समझ पड़ रहा है। क्योंकि अब शीघ्र ही नगर-वासी, आसपास के जनपद के लोग, शवों को लेकर महाकाल-रूपी अग्नि में हवन करने के निमित्त आना आरंभ करेंगे। अब यहां रहना उचित नहीं प्रतीत होता है। श्मशान की वेदी को जल में विसर्जित कर दो। यंत्रवत देवी है, इन्हें उलटकर बालू से ढक दो। फिर बैसाख माह की कृष्ण चतुर्दशी को हम लोग कपालेश्वर के इस गौरवपूर्ण पूजन के निमित उपस्थित होंगे।

"इस पृथ्वी पर देव तुल्य प्राणियों का उपकार एक महान यज्ञ है। चलो, जिस प्रकार हम लोग अपने प्राण के प्रति श्रद्धा रखते हैं, उसी प्रकार आनंद के साथ इस पुनीत यज्ञ में संलग्न हो जाएं।"

मेरी, तरुण तापस संभव साधक और भक्त गोहन की आंखें क्षणभर के लिये मुंदी रहीं, जिसके कारण हम लोग अघोरेश्वर की उस काल की रहस्यमय गतिविधि से अनभिज्ञ रहे। हमें नहीं ज्ञात हो सका कि कौन किधर गया। हां, संभव (सौगत) साधक ने क्षणभर अघोरेश्वर को इतने वेग से जाते देखा था कि उनके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वे ऊपर ऊपर ही तीव्र गति से आंखों से ओझल हो गये।

—२१, तुगलक रोड,
नयी दिल्ली
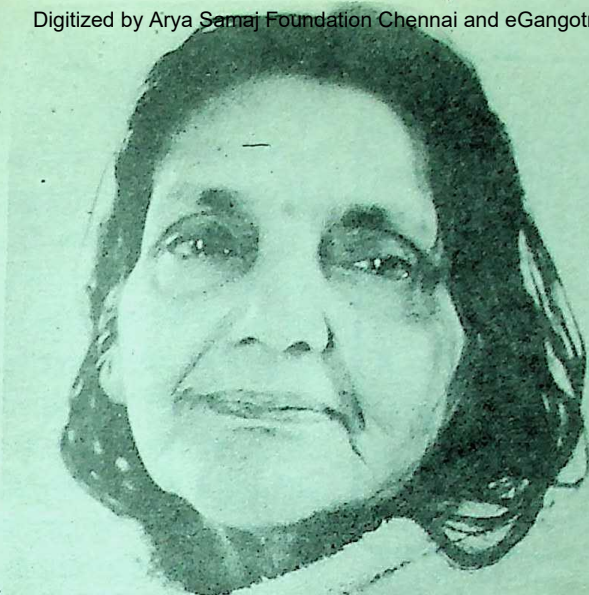
विदा आनंदमयी मां

डॉ. रामकुमार करौली

मां आनंदमयी का हाल ही में स्वर्गवास हुआ। उनके साथ मेरा काफी दिन संपर्क रहा। उनके आश्रम के कई मरीजों को देखने के लिए और वैसे भी। मेरे जीवन में उनके बारे में काफी अनुभव हैं, उनमें से निम्न मुझे बार-बार याद आता है।

उन्होंने एक बार मुझे अपने प्रिय संत श्री हरी बाबा के हृदय-रोग का उपचार करने के लिए कहा। ये महात्मा बहुत ही उच्च कोटि के थे। उनका निरीक्षण करते समय या उनके पास बैठते समय मुझे बड़ी शांति अनुभव होती थी। ईश्वर कृपा से वे हृदय-रोग से स्वस्थ हो गये। दो साल बाद उन्हें रक्त-चाप के कारण गुर्दे का रोग हो गया। यह आमतौर पर सब जानते हैं कि गुर्दे का रोग बड़ा असाध्य होता है। मेरे काफी उपचार करने पर भी उनका रोग बढ़ता ही गया। बाबा हर समय

तभी मांजी की गाड़ी आकर रुकी। मैंने कहा, "बाबा गये मां जी! वे बोलीं, मैं बाबा से बात करना चाहती हूं। तुम लोग सब बाहर चले जाओ।" उन्होंने बाबा के कमरे में जाकर दरवाजा अंदर से बंद कर दिया। एक वैज्ञानिक के नाते मुझे बड़ा अजीब-सा लगा कि ये बाबा से कैसे बात करेंगी। खैर . . .

'श्रीराम जयराम जय-जय राम' जपा करते थे। उन दिनों, दिल्ली की सिविल लाइंस में ही कहीं ठहरे थे। मैं उन्हें रोज देखने जाता था।

एक दिन मेरे पास फोन आया कि बाबा बेहोश हैं। उनकी नाड़ी नहीं मिल रही है, व उनकी सांस की गति भी अवरुद्ध है। मैं बड़ी तेजी से गाड़ी चलाता पहुंचा, तब देखा कि बाबा बेहोश हैं। हालांकि उनके होंठ धीरे-धीरे 'श्रीराम जयराम जय-जय राम' बोलने की तरह चल रहे थे। उनकी 'पल्स' और 'ब्लड प्रेसर' गायब था, पर एक मिनट में या थोड़ी देर बाद सांस आया था। उनकी आंख की पुतली काफी फैल चुकी थी। ऐसी अवस्था में रोगी साधारणतया आधे घंटे से अधिक जीवित नहीं रहता। मैंने उनको काफी देर मशीन द्वारा सांस दी और कई इंजेक्शन लगाये। एक घंटे तक कोई लाभ न होने की वजह से, मैंने सब लोगों को कह दिया कि बाबा अब जा रहे हैं। बाबा का हृदय करीब-करीब रुकने ही वाला था। वहां और भक्तों के अलावा दिल्ली हाईकोर्ट के एक भू. पू. जज भी उपस्थित थे। उनके भक्तों ने उन्हें यमुनाजी ले जाने का इंतजाम कर लिया। अंत्येष्टि क्रिया की जगह भी तय कर ली गयी।

बाबा का प्राणांत

मैंने सोचा कि मां जी को फोन कर देना

चमत्कारिक शक्ति की प्रतीक मां आनंदमयी ने अपने मनुष्य देह के अंतिम क्षणों तक भक्तों को आश्चर्य में डाले रखा। मृत्यु से ५ महीने पूर्व अप्रैल के महीने में ही मां आनंदमयी ने भोजन त्याग दिया था। एक बार उनके भक्तों ने खिलाने की चेष्टा भी की, पर उन्होंने उसे उल्टी के रूप में बाहर फेंक दिया। फिर जुलाई से उन्होंने पानी लेना भी बंद कर दिया था। मृत्यु को वरण करने से

निर्मला सुंदरी से

पूर्व उन्होंने इच्छा प्रकट की कि उन्हें देहरादून आश्रम में ले जाया जाए, वहीं उनकी मृत्यु २७ अगस्त, १९८२ को लगभग आठ बजे हुई। मृत्यु भी उसी जगह हुई, जहां उनके पति श्री भोलानाथ की मृत्यु १९३८ में हुई थी। जिस कमरे में पति की मृत्यु हुई थी, ठीक उसके ऊपर वाले कमरे में आनंदमयी ने देह-त्याग

उचित होगा। मैंने उनको फोन किया, तब वे बोलीं, "मैं अभी आती हूं, तब तक सब लोगों से कहो कि हनुमान चालीसा का पाठ करें।" मैंने मन में सोचा जब तक ये कालकाजी से सिविल लाइंस तक आयेंगी, तब तक बाबा जा चुके होंगे।

करीब आधा घंटे बाद बाबा के हृदय की गति बंद हो गयी। 'कार्डियो मसाज' और 'पेस मेकर' से भी हृदय नहीं चला। मैंने सब मशीन वगैरह हटा लीं, और सबसे कहा, "बाबा गये।"

बाहर हनुमान चालीसा का पाठ हो रहा था, तभी मांजी की गाड़ी आकर रुकी। मैंने कहा, "बाबा तो गये मां जी।"

वे बोलीं, "मैं बाबा से बात करना चाहती हूं। तुम लोग सब बाहर चले जाओ।"

वह फिर से जी उठे

उन्होंने बाबा के कमरे में जाकर दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। एक वैज्ञानिक के

नाते मुझे बड़ा अजीब-सा लगा कि ये बाबा से कैसे बात करेंगी? खैर मैं इंतजार करता रहा कि मांजी की इजाजत लेकर घर जाऊं। मैं बैठे-बैठे थक गया, उधर मां ने ४५ मिनट बाद दरवाजा खोला। वह हंस रही थीं। मैं आगे बढ़ा, तब बोलीं, "बाबा ने हमारा आग्रह मान लिया है, बाबा अभी शरीर नहीं छोड़ेगा!"

मैं कुछ घबरा-सा गया कि मांजी

मां आनंदमयी

किया। ३० अप्रैल, १८९६ को मां आनंदमयी का जन्म त्रिपुरा के खेरा गांव में हुआ था। पिता बिपिन बिहारी भट्टाचार्य के घर में आनंदमयी के जन्म से तीन वर्ष पहले एक बालक का जन्म हुआ था। जन्म होते ही पिता घर से निकल गये थे। बालक की मृत्यु के ठीक तीन वर्ष बाद वे पुनः घर आये, और इन चमत्कारिक पुत्री को जन्म दिया।

मां आनंदमयी का बचपन का नाम निर्मला सुंदरी देवी था, १३ वर्ष की अवस्था में सुंदरी का विवाह श्री रमणीमोहन से हुआ, जो बाद में भोलानाथ के नाम से जाने गये। मोक्षदा सुंदरी देवी की कोख से जन्मी पुत्री का नाम आनंदमयी, ढाका में एक दिन श्री ज्योतिषाचंद्र राय ने रखा था। मां आनंदमयी हरिद्वार में (कनखल) में समाधिस्थ हैं। २६ अगस्त ८२ को उन्हें प्रधानमंत्री के सामने समाधि दी गयी। —भगवती

को क्या हो गया है। और मैं अंदर घुसा मैंने देखा कि बाबा उसी तख्त पर तकिया के सहारे लेटे हंस रहे हैं। उनका 'ब्लड प्रेसर', 'पल्स', श्वास की गति, और हृदय की आवाज सब ठीक थे। मेरे चेहरे पर घबराहट देखकर मां जी बोलीं, "तू घबरा मत, बाबा ने इच्छा बदल दी।"

चार महीने की अवधि

दो दिन बाद मैं बाबा को कालकाजी स्थित मां आनंदमयी आश्रम में ले गया, वहां बाबा चलते-फिरते रहे। मैं उन्हें एक दिन छोड़कर देखता था। चार महीने बाद बाबा बोले, "मैं बनारस जाना चाहता हूं।" मैंने मना कर दिया, अगले दिन मांजी ने मुझे बुलाया और कहा, "बाबा को बनारस जाने दो।" उन्होंने चार महीने के लिए ही मांजी का कहना माना था, वरना बाबा यहीं शरीर छोड़ देते। उनकी आज्ञानुसार बाबा एक डॉक्टर के साथ बनारस चले गये। उसी दिन, रात को दो बजे मेरे पास बनारस से ट्रंक काल आया कि बाबा ने काशी पहुंचने के कुछ समय बाद शरीर छोड़ दिया।

इस घटना का मेरे पास कोई वैज्ञानिक स्पष्टीकरण (सोल्यूशन) नहीं है। मैं आज तक नहीं जानता यह कैसे हुआ!

सब नारायण करता है

मांजी मुझे बहुत प्यार करती थीं, पहले दिन तो मैं ऐसे ही उत्सुकतावश उनके दर्शन को गया। उन्होंने मुझे आगे बुलाकर बिठाया। उनसे बात करते हुए मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने मुझे आश्रम के रोगग्रस्त व्यक्तियों की देखभाल करने को कहा। वे रोगियों के स्वास्थ्य के बारे में संकेत देती रहीं। एक दिन रोगी की हालत बताने को मैं उनके कमरे में गया, तब वहां एक व्यापारी बैठा था, जो मुझे भी जानता था। मेरे थोड़ा स्पष्ट वक्ता होने के नाते मैंने उनसे कहा कि मांजी करीब तीन सौ आदमी बाहर धूप में बैठे हैं, और ये सज्जन आपके कमरे में बैठे हैं। ये क्या इसीलिए हैं?

मांजी बोलीं, "तू ठीक कहता है। यह आदमी चोर है। यह मेरे पास इस लिए आता है कि मेरे आशीर्वाद से इसका व्यापार बढ़ेगा, वह तो कुछ होनेवाला नहीं, लेकिन हां, यह दुष्ट इस लालच से मेरे पास बैठकर भगवान का नाम लेता तो है। इससे इसका कुछ तो आध्यात्मिक भला होता है। जो बाहर बैठे हैं, और श्रद्धावान हैं, बैठकर कीर्तन कर रहे हैं, उन्हें इसका लाभ कहीं ज्यादा मिलेगा। मेरे पास आने से कुछ नहीं होता, सब नारायण करता है।"

इसी प्रकार एक बार और जब मैं मिलने उनके पास गया, तब बहुत लोग बैठे थे, जिनको मैं जानता था फिर अपनी आदत से मजबूर होकर मैंने कहा, "मां जी! आपके इतने भक्त बैठे हैं, आप तो आध्यात्मिक महात्मा हैं, इनमें से बहुतों को मैं भी जानता हूं। आपने इन्हें कभी मांस, मछली, मुर्गे व शराब इस्तेमाल न करने

को क्यों नहीं कहा ?"

मां जी बोली, "देख, ये सब भिन्न-भिन्न इच्छाओं को लेकर मेरे पास आते हैं। मुझसे आध्यात्मिक बात बहुत कम लोग करते हैं, जो आध्यात्मिक बात करता है, उसे मैं कहती हूं कि इन सब वस्तुओं का इस्तेमाल निषिद्ध है। बाकी लोग सब इधर-उधर की बातकर चले जाते हैं, उनसे मैं आध्यात्मिक बात नहीं करती और न कुछ करने को कहती हूं।"

मां जी को एलर्जी

एक बार मांजी को बड़ी जोर की 'एलर्जी' हो गयी। सारा शरीर फूल गया। बहुत खुजली होती थी। मैंने उनसे दवा खाने को कहा, तब उन्होंने मना कर दिया। सोचते-सोचते मेरे दिमाग में एक बात आयी और उनसे कहा, "मांजी आपकी खुशामद ये लोग मोटी-मोटी फूलों की माला लाकर करते हैं, इन्हें आप स्पर्श न करें।" उन्होंने मेरा कहा मानकर अपने शिष्य को मालाएं ले जाने को कहा। ऐसा करने से उनकी दो दिन में ही 'एलर्जी' ठीक हो गयी।

एकबार एक सिख सज्जन जिनका नाम सरदार दातार सिंह था, मेरे पास गुर्दे की बीमारी के इलाज के लिए अस्पताल में दाखिल हुए। गुर्दे काफी खराब थे, मुझे उनके बचने की अधिक आशा न थी, हालांकि उनके हृदय-रोग पर हम काबू पा सके थे। वह मां के भक्त थे, वह उन्हें देखने को अस्पताल पहुंचीं। मिलने पर दूसरे दिन से उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा, और दो हफ्ते में ही वे ठीक होकर अस्पताल से डिसचार्ज हुए। मुझे पता चला कि उसके बाद कई साल तक वे जीवित रहे।

—९, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नयी दिल्ली

मैकेनिक की आत्मा

लकड़ी के कारखाने में चलती हुई मशीन एकाएक बंद हो गयी। कारखाने के मालिक मेरे मित्र हरीश धींगड़ा ने पाया कि मशीन में कोई गंभीर खराबी आ गयी है, जिसे कोई इस मशीन का कुशल मैकेनिक ही ठीक कर सकता है। उस समय कारखाने का कोई अपना मैकेनिक था नहीं, क्योंकि जो मैकेनिक था, उसकी कुछ महीनों पहले मृत्यु हो चुकी थी। सभी सोच ही रहे थे कि क्या किया जाए, तभी कारखाने का एक साधारण-सा मजदूर आगे बढ़ा और एक कुशल मैकेनिक की तरह मशीन ठीक करने लगा। उसने देखते-देखते ही मशीन ठीककर चालू करा दी। सभी आश्चर्यचकित उस मजदूर को देख रहे थे, तभी वह बहोश होकर गिर पड़ा। होश में आने पर जब उससे पूछा गया कि तुमने मशीन कैसे ठीक की, तो उसका एक ही जवाब था कि 'वह इस बारे में कुछ भी नहीं जानता।' स्पष्ट है कि उस मजदूर के अंदर मृत-मैकेनिक की आत्मा ने प्रवेश कर मशीन को ठीक किया। वह मजदूर आज भी उसी कारखाने में मजदूर है।

—श्रीगोपाल पंजाबी, अध्यक्ष, रिसर्च इंस्टीट्यूट फार लाइफ आफ्टर लाइफ, बंबई

वे टेलिफोन पर इलाज करते हैं

● रजनी माथुर

"दादाजी से मिलने चलना है क्या?" सुप्रसिद्ध पत्रकार खुशवन्त सिंह ने जब मुझसे पूछा, तब लगा एक कशिश अचानक—जैसे दादाजी की ओर खींच रही है। दादाजी उन दिनों सागर एपार्टमेंट्स में ठहरे हुए थे। जैसे ही हम उनसे मिलने पहुंचे, नीचे नजर आये उनके प्रमुख शिष्य प्रसिद्ध अभिनेता अभि भट्टाचार्य जो हमें ऊपर ले गये।

कमरे में उनके पास जाने पर कुछ अजीब-सा सुकून-जैसे मिल रहा था, उनके द्वारा सिर पर आशीर्वाद देने से बहुत ही शांति लग रही थी, और तमाम कपड़ों में एक मोहक खुशबू समा रही थी, बाद में पता चला कि वह दादाजी का 'एरोमा' है।

दादाजी फिर पूजा-स्थल की ओर ले गये और उन्होंने एक सादा कागज लेकर मेरे सिर पर रगड़ा। रगड़ते समय उन्होंने कहा, "तुम्हारे अंदर जो महानाम छिपा है, वह इस कागज पर उभर आयेगा।"

कुछ ही क्षणों में लाल रंग से नाम उभरा, तब उन्होंने बताया, "यह महानाम तुम्हें किसी भी उलझन से मुक्ति दिलायेगा।"

दादाजी कोई साधु-संन्यासी या कोई बाबा आदि नहीं हैं, वह तो एक गृहस्थ हैं, जिनके घर में पत्नी व एक लड़का व लड़की है, उनका असली नाम श्री अमीय रॉय चौधरी हैं, वह कलकत्ता के रहने-वाले हैं। देखने में वह ५० वर्ष से ऊपर तनिक भी नहीं लगते, लेकनि हैं ७६ साल के। उनकी उंगलियों से एक विशेष प्रकार का रस टपकता है। जब भी किसी को हाथ लगाते हैं, उनकी वह खुशबू कई दिनों तक कपड़ों में विद्यमान रहती है। वह भगवान को श्री श्री सत्यनारायण कहते हैं। वैसे पूजा के विषय में दादाजी का कहना है कि पूजा कौन किसकी करे, भगवान हमारे अंदर ही है। फिर भी वे 'श्री श्री सत्यनारायण की पूजा' करते हैं।

इस पूजा में कई हैरतअंगेज बातें होती हैं। मसलन, दादाजी पूजा से पहले कमरे का निरीक्षण करवाते हैं। फिर सत्यनारायण की तस्वीर रखकर उसके

उन्होंने एक सादा कागज लेकर मेरे सिर पर रगड़ा। और कहा, "तुम्हारे अंदर जो महा-नाम छिपा है, वह इस कागज पर उभर आयेगा"

आगे एक कटोरी में गोले का पानी रखते हैं और एक में सादा पानी। सब खिड़की दरवाजे केवल मुख्य-द्वार को छोड़कर बंद कर दिये जाते हैं, फिर दादाजी आंख बंद करके ध्यान करके बाहर जाते हैं, और बाहर से दरवाजा बंदकर चल देते हैं। अंदर पूजा कर रहे लोग अचानक पाते हैं कि फर्श पर खुशबूदार पानी बह रहा है और कोकोनेट पानी भी सख्त गोला बन गया है। सब उसी का प्रसाद लेते हैं। दादाजी फिर कमरे में आकर आशीर्वाद देते हैं।

टेलीफोन पर इलाज

उनके शिष्य श्री अभि भट्टाचार्य ने उनके जीवन की एक विचित्र घटना का जिक्र करते हुए बताया, "दादाजी के बात करने में ही बहुत शक्ति है, एक ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन से एक अधिकारी आया और दादाजी के दर्शन करके अमरीका चला गया। अचानक एक रोज अमरीका से उसका टेलीफोन आया कि उसे दूसरा दिल का दौरा पड़ा है और उसे ऑपरेशन थियेटर ले जाया जा रहा हैं, वह दादाजी का आशीर्वाद चाहता है। दादाजी ने इतनी दूर बैठकर भारत से ही उसका इलाज किया। दादाजी ने रोगी के टेलीफोन के पास एक साफ बरतन में जल रखवाया। टेलीफोन पर बातचीत के दौरान ही उस जल से सुगंध आने लगी। इस जल से ही उसे आराम हो गया।

वहां के कई वैज्ञानिक विद्वानों ने कई तरह के यंत्र लगाये, कंप्यूटर टैस्ट हुआ कि दादाजी इलाज कैसे करेंगे, लेकिन साहब सब देखते रह गये और वह आदमी ठीक हो गया।

—६४१, डबल स्टोरी फ्लैट,
न्यू राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली-६०

संप्रदाय जिसमें राजाओं का प्रवेश वर्जित है

पेरिस के 'बिब्लियोद्क्यू द् आरसेनल' में एक पुस्तक है, जिसमें पारलौकिक शक्तियों से जादुई कृपा प्राप्त करने के लिए विभिन्न साधनाएं सुझायी गयी हैं। यूरोप में एक संप्रदाय है, जो इस पुस्तक में वर्णित साधनाएं करता है। इस संप्रदाय में राजा या राजकुमारों का प्रवेश वर्जित है। पुस्तक के लेखक अब्रामेलिन के अनुसार पुस्तक पढ़ कर कोई भी व्यक्ति जादुई शक्ति प्राप्त कर सकता है।

अब्रामेलिन के अनुसार, साधना की अवधि समाप्त होने पर साधक जान सकता है कि उसकी पूजा सफल हुई या असफल। यदि उसकी पूजा सफल हुई तो फरिश्ते एक सुंदर आकृति धारण कर उसे सच्चा जादू सिखायेंगे और आजीवन उसके साथ रहेंगे।

डाकिनियों के चमत्कार

● श्याम मनोहर व्यास

दक्षिणी राजस्थान में कोटड़ा-खैर-वाड़ा तहसील तथा डूंगरपुर जिला आदिवासी बहुल क्षेत्र हैं। यहां बड़ी-बूढ़ी औरतों में कई जीवित डाइनें होती हैं, जो किसी का भी अनिष्ट करने की सामर्थ्य रखती हैं।

मेरे एक मित्र श्री कल्याणमल माली ने एक घटना सुनायी जो इस प्रकार है। एक बार वह अपने एक संबंधी के साथ पलासिया गांव से ओगणा गांव की ओर ब्याज वसूली के लिए जा रहे थे। रास्ते में एक खेत के पास आम के पेड़ के नीचे एक बूढ़ी आदिवासी औरत बैठी थी। उसके बारे में कहा जाता था कि यह प्रसिद्ध डाइन है! गांवों में अकसर ऐसी औरतों को 'मासीजी' कहा जाता है।

मेरे मित्र ने उससे कहा, "मासीजी, हम तुम्हारा कोई करतब देखना चाहते हैं।"

उस बुढ़िया ने हंसकर कहा, "अच्छा, तो देखो करतब।" यह कहकर उसने अपनी बांस की बड़ी टोकरी भूमि पर उल्टी कर दी! तदंनतर वह मन में कुछ अस्पष्ट स्वर से बोलने लगी! थोड़ी देर पश्चात उसने टोकरी हटायी, तब उसके नीचे एक बछड़े का फड़फड़ाता कलेजा था! पास के खेत में चर रहा एक बछड़ा तड़प-कर गिर पड़ा था!

दोनों ने बुढ़िया से कहा, "मासीजी, यह पाप मत करो! निर्दोष बछड़े को फिर से जिंदा कर दो!"

इस पर बुढ़िया ने टोकरी वापस उस कलेजे पर ढक दी! थोड़ी देर पश्चात टोकरी उठायी तो कलेजा गायब था और उधर खेत में वह बछड़ा जो अचेत पड़ा, अचानक उठ गया!

जादू से बच्चा मरा

ऐसी एक दूसरी सत्य घटना है! मेरा ननिहाल चित्तौड़गढ़ जिले के बेगूं गांव में है! लगभग ३०—३५ वर्ष पुरानी बात है! यह घटना मुझे मेरे मामा श्री उदय-राम गुरुजी ने सुनायी थी। बेगूं के पास भींचारे गांव है। उस गांव में एक कुम्हार जाति की बूढ़ी महिला डाइन थी! एक
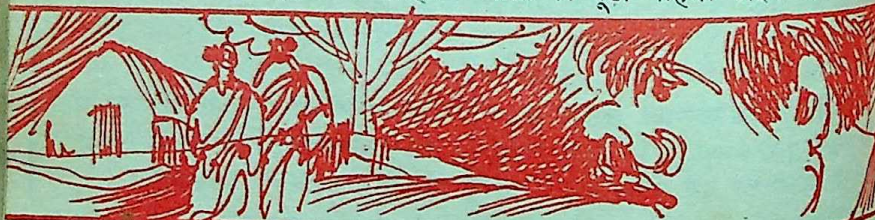
बार वहां के जमीदार के छोटे बच्चे का नामकरण संस्कार किया गया।

शाम को जमीदार ने जाति-बंधुओं को दावत दी। जमीदार बुढ़िया डाइन को बुलाना भूल गया! वह नाराज हो गयी। उसकी कुपित नजर से जमीदार के पुत्र को रात्रि के आठ बजे अचानक खून की उल्टी हुई और उसकी मृत्यु हो गयी! बालक को प्रथा के अनुसार दफना दिया गया। जमीदार के घर में कोहराम मच गया!

बच्चा जी उठा!

ऐसे शोकपूर्ण वातावरण में एक जानकार ने राय दी, "यह सत्य है कि बालक की मृत्यु का कारण वह बुढ़िया कुम्हारिन ही है! यह भी सच है कि वह शव-साधना भी करती है! आज आधी रात्रि को वह जरूर मरघट पर जाकर बच्चे का शव निकालेगी और तंत्र-बल पर उसे जीवित करेगी; फिर उसको पुन: मारकर उसके रक्त से देवी का अभिषेक करेगी। यदि चार आदमी साहस बटोरकर वहां जाएं और जब वह बच्चों को जीवित करे, तब उस बुढ़िया की चोटी पकड़ लें, तभी हम बच्चा जीवित वापस पा सकेंगे!"

आखिर साहस बटोरकर जमीदार चार मजबूत दिलवाले आदमी लेकर मरघट पर गया और वे सब एक पेड़ की ओट में छिप गये। अर्ध रात्रि को वह बुढ़िया आयी। उसने कब्र खोदकर बालक का शव बाहर निकाला और उसे मंत्र-पूरित पानी से नहलाया एवं उस पर सिंदूर, कुंकुम आदि लगाया। तदनंतर उसने अस्पष्ट स्वर से कुछ मंत्र बोले। थोड़ी देर में वह बालक उठ बैठा। उसी समय चारों व्यक्ति पेड़ की ओट से बाहर निकले और लपककर एक ने बालक को उठा लिया! तीन व्यक्तियों ने बुढ़िया को पकड़ लिया।

"अच्छा तो देखो करतब!" यह कहकर उसने अपनी बांस की बड़ी टोकरी भूमि पर उल्टी कर दी। तदनंतर वह मन में कुछ अस्पष्ट स्वर से बोलने लगी . . .

—प्रधानाचार्य, राजकीय सैकंडरी विद्यालय, भानदा, जिला—उदयपुर (राजस्थान)

तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत, आत्माओं की शक्ति आदि के बारे में हमारे आदिवासी आज भी विश्वास करते हैं। उनमें इन बातों के प्रति मान्यता परंपरागत रूप में आयी है। फिर भी तंत्र-मंत्र की अलौकिक शक्ति से सिद्ध व्यक्ति को वे बहुत आदर देते हैं। आदिवासियों की मान्यता है कि वह उन्हें हर मुसीबत से बचा सकता है। इसी कारण छोटी-छोटी तकलीफों के लिए झाड़-फूंक कराने भी वे उसके पास पहुंच जाते हैं।

● गंधर्व सेन

झाड़फूंक की विधियां

झाड़-फूंक का काम तीन तरह से किया जाता है। पहला पंखा हिलाकर, दूसरा काल उड़द के दानों से और तीसरा एक विशेष प्रकार की घास—'चिर्रा' द्वारा। पंखा हिलाकर जब ओझा झाड़फूंक करता है, तब बीच-बीच में कोदो (एक प्रकार का अनाज) के दानों को घुमाता जाता है और उन्हें एक सूप में डाल देता है। वह मंत्र भी पढ़ता है। कुछ देर बाद वह आग में घी या गुड़ डालकर होम देता है।

आत्मा जब आती है, तब सूप लेकर बैठे हुए ओझा के शिष्य को झटका लगता है और वह हिलने लगता है। ओझा भी इस मौके पर झूमने लगता है। यदि वे झटका न खाय और आत्मा न आये, तब समझ लिया जाता है कि रोगी को कोई प्राकृतिक कष्ट है। यदि किसी आत्मा का प्रभाव होता है, तब बातचीत के दौरान पता लग जाता है कि उसे क्या चाहिए। आमतौर पर वह बलि लेकर मान जाती है। यदि कोई दुष्ट आत्मा होती है, तब उसके लिए ओझा को अपने तेज मंत्रों और देवताओं की शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है।

खतरनाक डाकिनियां

आदिवासियों में सबसे खतरनाक होती हैं डाइन या डाकिनियां। ये डाकिनियां वे महिलाएं होती हैं, जिनके कोई संतान नहीं होती। वे संतान-प्राप्ति के लिए तरह-तरह के टोने-टोटके सीखती हैं और फिर धीरे-धीरे मंत्रों को सिद्ध करने लगती हैं। उनकी अपनी कोई संतान न होने से वे दूसरों के बच्चों को बुरी निगाह से देखती हैं। उन पर जादू करती हैं।

डाकिनियां मंत्र सिद्ध करने के लिए आधी रात के समय श्मशान में बलि देकर प्रेत या देव की स्तुति करती हैं। वे पैरों में झाड़ बांधकर कपड़े उतार देती हैं।
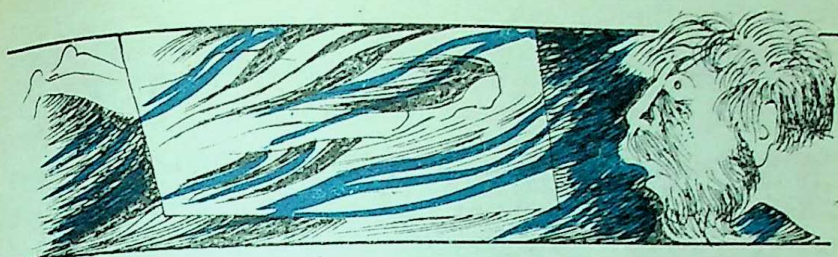
आत्मा जब आती है, तब सूप लेकर बैठे हुए ओझा के शिष्य को झटका लगता है और वह हिलने लगता है। ओझा भी इस मौके पर झूमने लगता है।

सिर के बाल खोल देती हैं और फिर खूब नाचती हैं। मंत्र जब सिद्ध हो जाता है, तब उसकी परीक्षा किसी पेड़ या कुत्ते-बिल्ली -जैसे जानवरों पर की जाती हैं।

मूठ का मंत्र

मिट्टी के एक छोटे-से बरतन में दीपक जलाकर, उसमें सिंदूर आदि लगाकर मंत्रों से उसे शक्तिशाली बनाया जाता है। फिर मूठ को शत्रु का नाम-पता बताया जाता है। दरअसल उस बरतन में उस देव या प्रेत की आत्मा होती है, जो हत्या करने जाता है।

मूठ अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुंचती है। वहां शत्रु का नाम लेकर तीन बार आवाज लगाती है। शत्रु ने उत्तर दिया, तब मूठ का असर उस पर हो जाता है। कई बार ऐसा भी होता है कि जिसके पास मूठ आती है, वह भी मंत्र-तंत्र में गुणी होता है। वह उस देव पर अपने मंत्र का प्रभाव डालकर उसे वापस भेजता है कि 'जाओ और भेजनेवाले को मार दो।' यह बहुत खतरनाक होता है और मूठ मारनेवाला पहला व्यक्ति उल्टी मुसीबत में फंस जाता है। कुछ लोग मूठ को जाते देखकर रास्ते में ही रोक लेते हैं। उसे मंत्रों द्वारा रोककर उससे पूछ लेते हैं कि वह कहां जा रही है। फिर उसे समझाते हैं कि वहां न जाए। बदले में उसे प्रसन्न करने के लिए वे बलि भी देते हैं। इस तरह मूठ वापस चली जाती है। ●

कमरे को हिला डाला भूतों ने

कलकत्ते के एक वातानुकूलित कमरे में बैठी कुछ लोगों से बातचीत कर रहे थी। मैंने देखा खिड़की और दरवाजे जोर-जोर से अपने-आप हिलने लगे। बाद में जब पूछताछ की, तब मुझे बताया गया कि इस घर में एक भूत का डेरा है, जो कभी-कभी इसी तरह के छोटे-मोटे उत्पात करता रहता है।

—शर्मिला टैगोर, फिल्म अभिनेत्री

पत्थर अब तैरता है पहले उड़ता भी था

● युधिष्ठिर राज

"यह देख रहे हो, यह ध्रुव टीला है," कार से उतरते हुए बिठूर थानाध्यक्ष श्री जी. बी. तिवारी ने कहा, "कहते हैं ध्रुव ने यहीं पर आकर तपस्या की थी और यह काल तब का है, जब धरती पर भगीरथ गंगा भी नहीं लाये थे।"

हम लोग भीगते हुए, एक पगडंडी और नाले के बहाव को पार करते हुए, एक दुर्गम रास्ते से एक ऊंचे से टीले पर गये। टीले के ठीक ऊपर एक मंदिर था।

तांत्रिक मगरमच्छ

बिठूर काफी समय तक मराठों की 'स्टेट' रही है और यह आश्रम, मंदिर व क्षेत्र आज भी मराठों के अधीनस्थ है। उसके मुख्य पुजारी ६५ वर्षीय श्री लक्ष्मणराव मोघे हैं। वहां पहुंचने पर मोघे साहब ने बताया कि यह मंदिर चार सौ वर्ष से भी पुराना है। ध्रुव की ऐसी दुर्लभ प्रतिमा शायद ही कहीं हो। मोघे साहब से हम लोगों ने आने का प्रयोजन बताया कि हम वह पत्थर देखने आये हैं, जो पानी में तैरता है। उन्होंने कहा, "यह जो दूसरी कगार है, उसमें संकट मोचन मंदिर के पुजारी गणेश ब्रह्मचारी के पास है, वैसे एक दुर्लभ तांत्रिक मगरमच्छ मेरे पास भी है।"

तांत्रिक मगरमच्छ देखने की जिज्ञासा ने हमें एक दुर्गंधपूर्ण कोठरी में जाने को वाध्य किया। मोघे साहब ने बताया कि लकड़ी का यह तांत्रिक मगरमच्छ १८५७ से पूर्व का है। हमारा देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। कहते हैं

ऊपर का चित्र : तैरनेवाला पत्थर

पश्चिम बंगाल से एक तांत्रिक को तात्या-टोपे ने बुलवाकर यहीं पर तांत्रिक अनुष्ठान कराया था। उसमें इस तांत्रिक मगरमच्छ का प्रयोग किया गया था।

हमारे अभियान दल में आर्डनेंस फेक्टरी के शंकर दयाल द्विवेदी, बिठूर के थानाध्यक्ष जी. वी. तिवारी तथा प्रख्यात ज्योतिर्विद के. ए. दुबे 'पद्मेश' थे।

तैरनेवाला पत्थर

तिवारीजी के अनुरोध करने पर संकट मोचन मंदिर का पुजारी वह पत्थर ले आये। तिवारीजी ने उस पत्थर को गंगा नदी से जुड़े एक छोटे से जलाशय में फेंक कर देखा, "आश्चर्य! यह तो तैर रहा है।"

८८ वर्षीय गणेश ब्रह्मचारी ने १३ वर्ष की आयु में ही संन्यास ले लिया था। २८ वर्ष की आयु में गंगा के किनारे आकर बस गये, और तब से अब तक यहीं पर हैं। उनका कहना है, "यहां पर हमारे आने से पहले एक संन्यासी रहा करते थे। मैंने स्वयं देखा है, शाम को नंगे पांव उफनाती नदी के उस पार जाया करते थे और देर रात तक लौटते थे। एक दिन कौतूहलवश मैंने देखा, कि वह एक बड़ा-सा पत्थर गंगा में डाल रहे हैं और उस पर खड़े होकर तीव्र गति से उफनाती नदी में चले आ रहे हैं। देर रात तक आये, तब मैं सो चुका था। सुबह उस पत्थर को उठाकर उस पर बैठकर गंगा के उस पार जाना चाहता था। लेकिन मेरा पहलवानी शरीर भी उस पत्थर को न उठा सका। एक रात वह जब उधर से लौट कर आये, तब तक मैं जागता रहा। उनके आने पर उनके हाथ-पैर दबाने लगा। उन्होंने कहा, "अरे गणेश, अभी तक तू सोया नहीं, क्या चाहता है?"

गणेश ब्रह्मचारी

पुजारी हमारे अनुरोध पर वह पत्थर ले आये और जब हमने उसे जलाशय में फेंका, तब हम सब चकित रह गये . . .

क्यों तैरता है पत्थर?

"महाराज!" मैंने डरते-डरते कहा, "आप इतने बूढ़े हैं, फिर भी उस पत्थर को उठाकर नदी में फेंक देते हैं, और वह तैरता रहता है, लेकिन हमारा पहलवानी शरीर उसे टस से मस नहीं कर पाता, इसका रहस्य क्या है?"

"गणेश, तूने मेरी बड़ी सेवा की है।

सुन. लंका पर चढ़ाई करने के लिए रामेश्वरम में राम ने एक पुल का निर्माण कराया था। समुद्र में पत्थर तैरते रहे और राम की पूरी सेना इस पार से उस पार चली गयी । आखिर वह पत्थर कौन-से थे ? तुलसीदास ने तो इतना मान लिया कि उन पत्थरों पर राम-राम लिख दिया था, और वे तैरते रहे, जबकि सत्य यह है कि एक-एक पाषाण शिला पर मुनियों ने हजारों वर्ष तप किया, तप के कारण पत्थर की मूल शक्ति, गुरुत्वाकर्षण शक्ति की परिधि से बाहर हो गयी । ऐसे सारे पत्थरों को राम ने देश के विभिन्न स्थलों से मंगाकर रामेश्वरम सेतु-निर्माण में प्रयोग किया। ऐसा ही यह एक पत्थर है। हमारे गुरु परम-पूज्य नैमिश्य महाराज ने आजीवन इस शिला-खंड पर साधना की । यह पत्थर उनके काल में उड़ता भी था। मुझ में उतनी सामर्थ्य नहीं रही, अब यह केवल नदी में तैरता है। जा बेटा गणेश, थक गया होगा, सो जा।"

जब मैं सुबह सोकर उठा, तब उस विशाल शिला-खंड में से एक छोटा-सा पत्थर मेरी चारपाई पर पड़ा मिला, यह वही पत्थर है। —७८/२, लेबर कलोनी, गोबिंद नगर, कानपुर

नाचती हुई प्रेतात्माएं

होली का त्यौहार था। मैं दो मित्रों के साथ रात का आखिरी शो देखकर सिनेमाघर से लौट रहा था ।चेंबूर नाका से चेंबूर कालोनी (बंबई) तक की पक्की सड़क को छोड़कर मैंने जल्दी घर पहुंचने के लिए कच्चा और छोटा रास्ता चुना, जो श्मशान घाट के पास से गुजरता था। इस रास्ते पर चलते ही श्मशान घाट से कोई दो सौ मीटर दूर हमने देखा कि वहां एक लंबा-चौड़ा मंच सजा हुआ है और खूब रोशनी हो रही है। मंच पर कोई दर्जनभर युवतियां नाच-गा रही हैं। हमने कुछ देर रुककर उनका नाच-गाना देखा, ऐसा लगा कि ये युवतियां मंच की बहुत ही सधी हुई कलाकार हैं।

तभी मुझे एकाएक ख्याल आया कि श्मशान घाट पर तो बिजली है ही नहीं। जब यह बात मैंने मित्रों को बतायी, तो वे भी चौंके और हम तत्काल लौट लिये।

—प्रस्तुति : कृष्णकांत

वह रोज दवा लेने आता और सौ रुपये का नोट दे जाता। डॉक्टर बहुत प्रसन्न थे। लेकिन . . .

जब प्रेत ने डॉक्टर को पटका

• पी. सिद्धार्थ

प्रेत-योनि को स्वीकार करने-वालों में केवल अंध-विश्वासी जन ही नहीं, बड़े-बड़े दिग्गज विद्वान भी सम्मिलित हैं। विश्व-साहित्य में न जाने कितने मिथकीय प्रसंग प्रेत-योनि की चर्चा से संबद्ध हैं। काल्पनिक घटनाओं के बिंदु में कहीं-न-कहीं सत्य का अंश अवश्य रहता है।

प्रेत चूंकि कामरूप और इच्छाचारी होते हैं, इसलिए वे कभी भी, कहीं भी पहुंच जाते हैं। एक उपद्रवी प्रवृति के छद्मवेशी प्रेत की सत्यानुभूति इस प्रकार है—

डॉ. दयाल ने उन दिनों कानपुर में नयी-नयी प्रैक्टिस चालू की थी। वे नगर के दक्षिणी सिरे पर स्थित अविकसित क्षेत्र नौबस्ता में रहते थे। घर के पास ही क्लीनिक खोल रखी थी और नाम-मात्र की आमदनी से किसी तरह गाड़ी चला रहे थे। इन्हीं दिनों एक संध्या को एक व्यक्ति उनकी दूकान पर आया और बोला, "डॉक्टर साहब, मेरी बीवी बीमार है, आप चल कर देख लें। मैं आपकी फीस यहीं दिये देता हूं।" और उसने १०० रु. का नया नोट डॉक्टर के सामने रख दिया।

डॉक्टर दयाल क्षणेक हतप्रभ रह गये—'सौ रुपये! इस तरह के मरीज आने लगें, तब फिर क्या! डॉक्टरी पढ़ना सफल हो जाय।' "चलो," कहकर मेडिसिन बाक्स वे लेकर उसकेसाथ चल पड़े।

तब वह क्षेत्र निपट सुनसान था। दूर-दूर पर एकाध मकान दीखते थे। वह व्यक्ति डॉक्टर को तीन-चार मकानों के बाद एक अधबने मकान के बरामदे में ले गया और कुंडी खटकायी। अगले क्षण एक युवती ने दरवाजा खोला। गजब की सुंदर थी वह। बीमारी का कोई लक्षण नहीं। आंखों में न जाने कैसा अतृप्ति और आकर्षण का भाव था।

मर्मभेदी मुसकान

भीतर पहुंचकर डॉक्टर बोले—"क्या

डॉ. दयाल

तकलीफ है तुम्हें ?"

उस युवती ने हलकी-सी अंगड़ाई ली और मर्मभेदी मुसकान में कहने लगी—'जी, बदन में दर्द रहता है, कुछ अच्छा नहीं लगता; थकान मालूम होती है . . ."

डॉक्टर ने अनुमान किया, "शायद यह पहली बार गर्भवती हुई है, इसीलिए बेचैनी है।' बोले, "खैर ठीक हो जाएगा, कोई चिंता की बात नहीं है। दवा दिये जा रहा हूं, तीन बार पीना, ४-४ घंटे पर। कल शाम को फिर खबर कर देना।" और अटैची से किसी टॉनिक की शीशी निकालकर उस व्यक्ति को देकर डॉक्टर वापस चले आये।

अगले दिन शाम को वह व्यक्ति फिर आया और कहने लगा, "आपकी दवा से काफी आराम है; वही दे दीजिए।" और १०० रु. का नोट मेज पर रख दिया।

प्रसन्न-मन से डॉक्टर ने नोट रख लिया और उसे एक शीशी टॉनिक देकर बोले, "इसे लगातार कुछ दिन पिलाओ. ठीक हो जाएंगी।"

उसके बाद नित्य यही होने लगा। वह व्यक्ति रोज आता और डॉक्टर दयाल को १०० रु. देकर दवा ले जाता था। कभी-कभी उन्हें अपने साथ ले जाता और पत्नी की नाड़ी दिखाकर कुछ पूछता और संतुष्ट होकर उन्हें सड़क तक छोड़ जाता था। लगभग २२ दिन यह क्रम च[ला]

उन दिनों डॉक्टर दयाल की [पत्नी] गर्भवती थीं। पहला अवसर था, इस[लिए] दंपति के मन में भावी शिशु के प्रति जि[ज्ञासा] स्वाभाविक थी। डॉक्टर ने सुना कि [...] मंदिर में कोई ज्योतिषीजी आये हैं, [...] उनके पास गये और अपनी कुंडली दि[खाते] हुए कहा, "कुछ बताइए ?"

ज्योतिषी का रहस्योद्घा[टन]

ज्योतिषी ने कुंडली देखने के [बाद] कहा, "आजकल तुम प्रेत-बाधा से [...] हो। जिसे तुम संपदा समझ रहे हो, [...] तुम्हारे सर्वनाश का जाल है। एक [...] तुमको रोज १०० रु. देता है; तुम उस[की] स्त्री का इलाज करते हो। यह सब छल [...] है। उस प्रेत-प्रेमी ने तुम्हारी पत्नी का गर्भ निर्जीव कर दिया है। उसके माया-जाल [से] बचो; नहीं तो सपरिवार नष्ट हो जाओगे।"

"अरे!" डॉक्टर दयाल को ल[गा] कि किसी ने सिर पर हथौड़ा मार दि[या] है। आतंक की छाया ने उन्हें मलिन [कर] दिया। ज्योतिषी को प्रणाम कर के [...] लौट आये।

शाम को जब वे अपनी क्लीनिक [में] बैठे थे; फिर वही व्यक्ति आया और १[००] रु. देकर बोला, "डॉक्टर साहब! [...] आप मेरे साथ चलिए।"

डॉक्टर का मन भय और क्रोध से [...] ग्रस्त हो गया.' कहीं ऐसा तो नहीं है [...] ईर्ष्या के कारण किसी ने उस ज्योतिषी [...] मुझे आतंकित कराने की चाल [...]
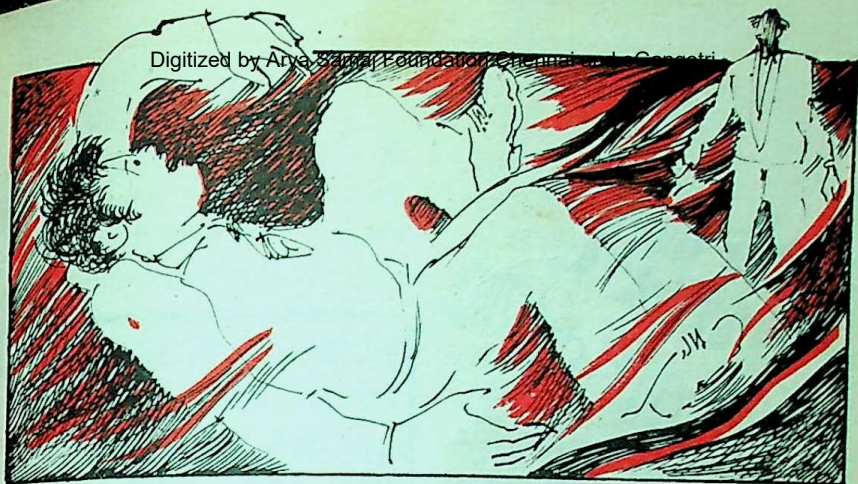
हो!' एक लंबी सांस छोड़कर, जैसे ऊहा-पोह से छुट्टी पाकर, डॉक्टर ने अटैची उठायी और दोनों चल पड़े।

और खेल खत्म हुआ

आधा रास्ता पार कर चुकने पर नहर की पटरी मिली। अचानक आगे चल रहा वह व्यक्ति घूमकर खड़ा हो गया। उसकी मुद्रा अस्वाभाविक रूप से हिंसक हो उठी थी। उसने गरजकर डॉक्टर से कहा, "क्यों, तुम मेरा रहस्य जानना चाहते हो? ज्योतिषी के पास गये थे? लो, बुलाओ उसको! आकर बचाये तुम्हारे बच्चे को!" और एक बारगी डॉक्टर को अपनी ऊंचाई तक उठाकर नहर में फेंक दिया।

रात देर तक जब डॉक्टर घर नहीं पहुंचे, तब उनकी पत्नी ने डॉक्टर के एक मित्र से कहा, "जाकर देखो तो, क्यों नहीं आये?"

मित्र को क्लीनिक पर पता चला कि डॉक्टर एक आदमी के साथ रोज बाहर नौबस्ता जाते थे। आज भी वहीं गये है।

मित्र ने नौबस्ता का रास्ता पकड़ा। चांदनी रात थी। नहर की पटरी पर उन्होंने किसी के कराहने की आवाज सुनी। पास जाकर देखा तो वह डॉक्टर दयाल थे। मित्र किसी तरह उन्हें घर ले आये। उसी रात डॉक्टर की पत्नी का गर्भपात हो गया। और दूसरे दिन सवेरे इस सारे प्रकरण का जो उपसंहार दीख पड़ा, वह कल्पनातीत था। घर का वह सारा सामान (कपड़े, फर्नीचर और बर्तन) जो १०० रु. रोज की आमदनी से खरीदा गया था; गायब था। उसका कोई चिह्न तक नहीं दीख पड़ता था!

कई दिनों तक डॉक्टर दयाल की मनःस्थिति वेदनाक्रांत रही। बाद में कुछ स्वस्थ होने पर एक दिन वे फिर उस आदमी से मिलने के लिए नौबस्ता गये। लेकिन आश्चर्य, कि जहां वे पंद्रह-बीस बार जा चुके थे। वह स्थान, वह मकान डॉक्टर खोज ही नहीं पाये।

—'ज्योतिष योग', रतनलाल नगर, कानपुर

• प्रो. के. ए. दुबे पद्मेश

> श्री यंत्र जहां भी रहता है, दुःख-दारिद्र्य को दूर कर, संपदा और वैभव का विस्तार करता है। यही कारण है कि इसे यंत्र-राज की संज्ञा से अभिहित किया गया है। . . .

श्री यंत्र उस महाशक्ति का प्रतीक है, जो वैभव-संपदा की अधिष्ठात्री, लक्ष्मी के रूप में विख्यात है। यंत्र-शास्त्र में, श्रीयंत्र के निर्माण हेतु आधार भूमि के रूप में स्वर्ण-पत्र, रजत-पत्र, ताम्र-पत्र अथवा भोज-पत्र को प्रयुक्त करने का निर्देश प्राप्त होता है। अंतिम विकल्प के रूप में भूमि को भी मान्यता दी गयी है; किंतु वह स्थान पूर्णतया स्वच्छ, शुद्ध, सुरक्षित और एकांत होना आवश्यक है। भूमि पर यंत्र की रचना करने के पूर्व, उसे लीपकर लाल रंग की मिट्टी (सुर्खी या रंगी हुई बालू) बिछाने का नियम है। कोष्ठकों की पूर्ति के लिए रंगे हुए चावल भरे जाते हैं।

विकल्प रूप में चित्र की भी पूजा की जा सकती है। प्राण-प्रतिष्ठा और नियमित जप-विधान की पूर्ति से यह चित्र भी प्रभावशाली हो जाएगा।

साधना-काल

कार्तिक अथवा माघ के महीने में इस यंत्र की साधना विशेष फलदायक रहती है, वैसे वैशाख, जेठ और अगहन में भी इसका पूजन किया जा सकता है। तिथियों में साधना के लिए भी द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, द्वादशी, त्रयोदशी और पूर्णिमा तथा दिनों में बुध, बृहस्पति और शुक्र को शुभ माना जाता है। नाक्षत्रिक विचार से रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा-भाद्रा, उत्तरा-फाल्गुनी तथा रेवती को साधना के लिए शुभ कहा गया है। सामान्य रूप में, चैत्र तथा कुआर की नव-रात्रि के पूरे नौ दिन और कार्तिक में धनतेरस से लेकर शुक्ल द्वितीया तक का समय, प्रत्येक स्थिति में, श्रीयंत्र की साधना हेतु शुभ रहता है।

साधना की सरलतम विधि

सर्वप्रथम किसी शुभ मुहूर्त में श्रीयंत्र की रचना करें। फिर प्राण-प्रतिष्ठा कराकर अपने पूजागृह या साधना-स्थल में स्थापित कर लें। देव प्रतिमा की भांति, नित्य प्रति इस यंत्र की नियमित पूजा करें।

पूजा के समय इस मंत्र को पढ़ते हुए यंत्र की वंदना करें :

दिव्या परां सुधवलारुण चक्रयातां,
मूलादिबिंदु परिपूर्ण कलात्म रूपाम्।
स्थित्यात्मिकां शरधनुः सृणि पाशहस्तां,
श्रीचक्रतां परिणतां सततं नमामि।।

यंत्र को प्रणाम करने के पश्चात इसकी अधिष्ठात्री देवी महात्रिपुरसुंदरी का ध्यान करते हुए निम्न श्लोक के अनुसार उनकी उपस्थिति की कल्पना करें :

बालार्कयुत तैंजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं,
नाना लंकृति राजमानवपुषं बालेन्दु युक् शेखरम्।
हस्तैरिक्षु धनुः सृणिं सुरशरं पाशं मुदा विभ्रतीम,
श्री चक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधार भूतां भजे।।

देवी के ध्यानोपरांत, श्रीयंत्र को पुष्प, अक्षत, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पण करें। पूजा समाप्त होने पर रुद्राक्ष, मूंगा अथवा लाल चंदन की माला को प्रणाम कर माथे से लगायें और देवी लक्ष्मी को स्मरण करते हुए, निम्नलिखित मंत्र (श्रीयंत्र-साधना का मूलमंत्र) जपना प्रारंभ कर दें :

'ह्रीं क ए ल ह्रीं,
ह स क ह ल ह्रीं,
स क ल ह्रीं।'

इस मंत्र का प्रत्येक अक्षर 'बीज' है, जो अपने में एक संपूर्ण मंत्र अथवा स्तोत्र का प्रभाव संजोये हुए है। अतः इसका उच्चारण बहुत ही शुद्ध, स्पष्ट और मंद मधुर स्वर में करना चाहिए। स्वर इतना धीमा हो कि उसे कोई सुन-समझ न सके। इसीलिए साधना-स्थल को एकांत में रखने का निर्देश किया गया है। जप के समय प्रत्येक अक्षर पर थोड़ा-थोड़ा विराम भी देते रहें। एक माला (१०८ दाने) जप पूरा हो जाने पर सुमेरु को माथे से लगायें और पुनः उलटी दिशा में माला को घुमाकर जप प्रारंभ कर दें। इसी प्रकार यथासंभव अधिकतम संख्या में जप करते रहें। जप पूरा हो जाने पर माला को माथे से लगाकर पुनः यंत्र को प्रणाम करें और परिक्रमा कर साधना-स्थल से बाहर आ जाएं।

स्मरण रहे कि जप के समय घी का दीपक यंत्र के पास जलता रहे। साधक का मुख पूर्व की ओर हो और यंत्र उसके सामने किसी चौकी पर स्थापित हो। ●

'मंत्र महार्णव'–जैसे ग्रंथ में बगलामुखी-तंत्र को समस्त कामनाओं का पूरक बताया गया है। इसके माध्यम से कोई भी कार्य सहज संभव हो जाता है...

● पं. कृष्णावतार

देवी बगलामुखी के इस तंत्र का प्रभाव विशेष रूप से शत्रु-दमन के कार्य में दृष्टिगत होता है। वाद-विवाद, प्रतिरोध, मामला-मुकदमा, शत्रुकृत उपद्रव, तांत्रिक षट्कर्म, अभिचारकृत्य (उच्चाटन, स्तंभन और मारण आदि)-जैसी समस्याओं के निराकरण में बगलामुखी तंत्र की सफलता असंदिग्ध रहती है।

सर्वप्रथम किसी शुभ मुहूर्त (पंडित से पूछकर) में सोने, चांदी या तांबे के पत्तर पर बगलामुखी यंत्र की रचना करें। यंत्र यथा-संभव उभरे हुए रेखांकन में हो। यंत्र तैयार हो जाने पर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा एवं पूजा करनी चाहिए।

यंत्र की साधना विधि

प्राण-प्रतिष्ठा के उपरांत यंत्र को अपने पूजा-गृह या घर के किसी एकांत पवित्र स्थान में लकड़ी के पीढ़े पर पीले वस्त्र का आसन बिछाकर स्थापित करना चाहिए। देवी बगलामुखी का चित्र भी यंत्र के साथ स्थापित कर लें। यंत्र-स्थापना के बाद, नित्य स्नान के पश्चात उसकी पूजा तथा मंत्र-जप करें।

जप के समय सबसे पहले बगलामुखी देवी का विनियोग करना चाहिए। इसके लिए दायें हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए उसे चित्र और यंत्र के सम्मुख छोड़ने का नियम है:

'ॐ अस्य श्रीबगलामुखी महाविद्या मन्त्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुपछंदः, बगलामुखी महाविद्या देवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।'

इसके पश्चात ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास करके देवी का ध्यान करें। ध्यान-मंत्र इस प्रकार है

तलवार, जो म्यान से आधी बाहर निकली हुई है।

पीने का प्याला, जो किसी सींग को खोखला कर बनाया गया है।

और, प्रार्थना की मुद्रा में, धवल वस्त्र पहने, एक वृत्त में खड़े स्त्री-पुरुष! सबके ओठों पर एक ही प्रश्न—'क्या यही शांति है?', 'क्या यही शांति है?', 'क्या यही शांति है?' शांति की तलाश में व्याकुल ये लोग हैं—ड्रुइड, ।

प्रचलित हो गयी। ड्रुइड वृक्षों की पूजा किया करते थे, विशेषकर ओक वृक्ष की। यह भी कहा जाता है कि वे सिद्धि प्राप्ति के लिए नर-बलि भी दिया करते थे। यह भी हो सकता है वे रक्तपान या रक्त-स्नान भी करते हों। ड्रुइड लोगों के बारे में अध्ययन करनेवाले शोधकर्त्ताओं का ख्याल है कि आधुनिक ड्रुइड लोगों की साधना में म्यान से आधी निकली तलवार, सींग का प्याला आदि इसी आदिम वृत्ति के सूचक हैं।

वे कफन पहनकर पूजा करते हैं

● डी. इन्द्र

एक समय था, जब दो हजार वर्षों की परंपरा और इतिहासवाले ड्रुइड लोगों के बारे में बहुत अधिक जानकारी प्राप्त न थी, फलतः वे अनेक प्रकार की किंवदंतियों का केंद्र बन गये। कुछ के लिए यदि वे मायावी संप्रदाय के थे, तो कुछ उनका संबंध फारस के मागियों और भारत के योगियों से जोड़ते थे।

ड्रुइड मूलतः गॉल और इंगलैंड के निवासी थे। रोमन सभ्यता के आगमन के पूर्व इन प्रदेशों में उनकी तूती बोला करती थी। प्राप्त विवरणों के अनुसार ड्रुइड अपनी साधना घने जंगलों के बीच किया करते थे। शायद यही कारण है कि उनके संबंध में तरह-तरह की किंवदंतियां

किसी समय ड्रुइड लोगों का प्रभाव अवश्य व्यापक रहा होगा, लेकिन रोमन-आक्रमणों ने उन्हें नष्ट प्रायः कर दिया। यों, आदिम संस्कृतियों के प्रति रोमनों का रुख उदारता का रहा, पर ड्रुइड-संस्कृति को नष्ट करनेवालों में उनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। ऐसा क्यों? शोधकर्त्ताओं का ख्याल है कि रोमनों को ड्रुइड लोगों की नर बलि-प्रथा उनके रहस्यमय तांत्रिक विधान आतंक कारी प्रतीत हुए होंगे और भय के कारण ही उन्होंने ड्रुइड लोगों को नष्ट करना

वह एक विचित्र संप्रदाय था। उसके इस संप्रदाय के साधक हर बृस्पतिवार की रात को मिलते थे। संप्रदाय की सदस्यता पाने के इच्छुक व्यक्ति को अपने शरीर के किसी अंग पर एक घाव बनवाना पड़ता था—जहां घाव भरने के बाद एक निशान बन जाता था। उसे संप्रदाय में प्रवेश की योग्यता के रूप में स्वीकार किया जाता था

ठीक समझा।

भारतीय योगियों से संबंध

प्रथम ईस्वी में अलेक्जेंड्रिया के विद्वानों ने ड्रुइड संस्कृति का अध्ययन किया। इस संस्कृति का कोई लिखित साहित्य नहीं था। वह मौखिक परंपरा में ही जीवित थी। इन विद्वानों को ड्रुइड लोगों के पूजा विधानों और भारतीय योगियोंकी साधना में आश्चर्यजनक समानता दिखायी दी। इन लोगों की पूजा तांत्रिकों के अनुष्ठानों से काफी मेल खाती थी। इस साम्य को देखकर कुछ विद्वानों ने इस बात का भी पता लगाना चाहा कि क्या भारतीय तांत्रिकों का ड्रुइड लोगों से कोई संबंध और संपर्क था। चूंकि कोई लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं था, इसीलिए किसी निष्कर्ष पर न पहुंचा जा सका।

सत्रहवीं शताब्दी में ड्रुइड लोगों की संस्कृति में तेजी से रुचि उत्पन्न हुई और जॉन ऑब्रे नामक एक लेखक ने अपनी पुस्तक 'ब्रीफ लाइव्ज' में उनके बारे में काफी जानकारी दी।

आब्रे का विश्वास था कि स्टोनहेंज नामक स्थानों के मूल निर्माता ये ड्रुइड लोग ही थे। वे जादू-टोना जानते थे और अपने विरोधियों को परास्त करने के लिए ऐसा इंद्रजाल फैलाते थे कि उनकी सारी चेतना शून्य हो जाया करती थी। इसी-लिए ड्रुइड लोगों को 'मायावी' भी कहा गया है।

तंत्र-मंत्र से आक्रमण का सामना

ड्रुइड लोगों की मौखिक परंपरा में एक घटना का उल्लेख मिलता है। उसके अनुसार ड्रुइड लोगों ने रोमन आक्रमणों का सामना करने के लिए तंत्र-मंत्र का सहारा लिया। प्रारंभ में वे इक्का-दुक्का सैनिकों को आतंकित करने में सफल भी हुए लेकिन रोमनों की प्रबल सैन्य शक्ति के कारण उनकी एक न चली।

अठारहवीं शती में विलियम स्टुकेले ने यह मत प्रतिपादित किया कि ड्रुइड 'ओल्ड टेस्टामेंट' में उल्लिखित पितृसत्तात्मक परंपरा को शुद्ध रूप में जीवित रखे हुए हैं। उन्हें सूर्य-पूजा में विश्वास रखने वाले हेलीओरकाइट धर्म का संवाहक भी माना गया।

आज भी इंगलैंड में ड्रुइड संप्रदाय के अनुयायी हैं। ये दो शाखाओं में बंटे हुए हैं—एक 'ड्रुइड ऑर्डर' कहलाती है और दूसरी 'आर्डर ऑव कार्ड्स, ओवेट्स एंड ड्रुइड्स'। इसमें से दूसरी शाखा के लोग तंत्र-मंत्र जैसे विधानों पर ज्यादा विश्वास रखते हैं।

हर गुरुवार की रात

पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान मोरक्को में एक विचित्र संप्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ, जो खाड़ी पार अंदालुसिया में फैल गया और छिपे-छिपे अन्य अरब नगर-केंद्रों में भी पनपता, बढ़ता रहा। इसके अनुयायियों में अरब-यहूदी और ईसाई जिज्ञासु ही नहीं, ज्ञान की तलाश में भटकनेवाले अन्य लोग भी थे। इस संप्रदायको 'दो सिगा' के नाम से पुकारा जाता था। ऐसा लगता था, जैसे इस संप्रदाय की पूजा-विधि की रूप जादू-टोने और तंत्र-मंत्र का था।

इस संप्रदाय के साधक हर बृहस्पतिवार की रात को मिलते थे। संप्रदाय की सदस्यता पाने के इच्छुक व्यक्ति को अपने शरीर के किसी अंग पर एक घाव बनवाना पड़ता था—जहां घाव भरने के बाद एक निशान बन जाता था——उसे संप्रदाय में प्रवेश की योग्यता के रूप में स्वीकार किया जाता था।

संप्रदाय के भक्तों का मानना था कि एक वृत्त में या उसके आसपास नृत्य करके वे जादुई शक्तियों को जाग्रत कर सकते थे।

उस संप्रदाय का महंत ही भक्तों का सर्वगुरु माना जाता था। वह कभी-कभी ही उनके सामने प्रकट होता था। इनमें स्त्रियां भी होती थीं। घाव बनाने के लिए एक मंत्र-सिद्ध, पवित्र चाकू का प्रयोग किया जाता था। उसे अल धामे या रक्ताक्षर के नाम से पुकारा जाता था।

'दो सिंघा' संप्रदाय के एक अनुयायी ने एक बार अपनी आपबीती पूजा-विधि का शब्द चित्र कुछ इस तरह खींचा था——

'हम एक रात ऐसे स्थान पर इकट्ठा हुए, जहां से दो रास्ते एक दूसरे को काटते थे। आज्ञानुसार शिष्य अपने साथ मुरगा लेकर आता था। नये दिन के प्रतीक के रूप में मुरगे की बलि दी जाती थी। हर व्यक्ति के हाथों में एक लाठी होती थी। वे सिर पर कांसें में मढ़े बकरी के सींग लगाये होते थे। इन सींगों को शक्ति और अदम्य उन्मत्तता का प्रतीक माना जाता था।'

इस सम्मिलित पूजा को 'जबात'

कहा जाता था। हर व्यक्ति शरीर पर सिर्फ एक धवल वस्त्र लपेटकर आता था, वही जिसमें लिपटकर मौत के बाद भी हर पार्थिव शरीर को जाना होता है अंतिम यात्रा पर।

'हम बारह लोग एक वृत्त या चक्र बनाकर खड़े हो गये! छोटे नगाड़े धीमी आवाज में बज रहे थे। सफेद कपड़ों में लिपटे दो दरवेश जोर-जोर से कुछ बोल रहे थे—हमें उसे दोहराना होता था! इसके बाद सिर को कपड़े से आवृत्त कर हम नाचने लगे। नगाड़ों की गति के साथ-साथ नृत्य की गति भी तेज, और तेज होती गयी, फिर एक चीत्कार सुनायी दी, यह हमारे लिए रुकने का संकेत था। संप्रदाय का महंत एकाएक प्रकट हो गया था। हमने झुककर अपने गुरु के प्रति आज्ञाकारिता की शपथ ली। फिर छोटे मंत्रसिद्ध चाकू से मुरगे की बलि दी गयी। फिर महंत ने हममें से हरेक की बांह पर छोटा-सा घाव बना दिया। इसके बाद नृत्य फिर शुरू हो गया।'

एक अन्य स्रोत से पता चलता है कि मोरक्को के अतलस पर्वतमाला में बसे बरबर लोगों में इसी तरह की एक पूजन-विधि आज भी प्रचलित है। उसमें बरबर लोग आग जलाकर उसके चारों ओर नृत्य करते हैं। हर आदमी के हाथ में एक लाठी होती है, जिसे 'बकरी' कहा जाता है। इसके बाद नृत्य करनेवाले लोग संप्रदाय प्रमुख के प्रति भक्तिभाव की शपथ लेते हैं। हर भक्त अपने पूर्व धर्म को, माता-पिता को अपने हर पूर्व संबंध को त्याज्य घोषित करता है और तब गुरु उन्हें बताता है कि वे 'मुक्ति' तक कैसे पहुंच सकते हैं। उनके इस धर्मगुरु की उम्र दो सौ वर्ष मानी जाती है। उसके नाम का अर्थ ही होता है दो शताब्दियों का स्वामी। बरबर लोग मानते हैं कि उनका गुरु आधे जीवन को प्रकट रूप से धरती पर जीता है और उसके बाद आत्मिक रूप से उसका अशरीरी तत्व कहीं न कहीं विद्यमान रहता है।

इस विचित्र पंथ और मध्य युगीय यूरोपीय स्त्री ओझाओं के चमत्कारपूर्ण कारनामों के बीच एक परंपरागत संबंध दिखायी देता है। इस बात की पूरी संभावना है कि दो सिंघा संप्रदाय और लोक आस्थाओं के विभिन्न रूपों का सम्मिलन ही बाद के अनेक संप्रदायों की पूजा विधियों में मुखर हुआ। १३२४ में आयरलैंड में लेडी किटलर को चुड़ैल मानकर उस पर मुकदमा चलाया गया। उस पर आरोप था कि वह रोबिन नामक इथियोपियाई देव के समक्ष लाल मुरगे की बलि देती थी। अपना यह बलि-कर्म वह सदा ही एक चौराहे पर संपन्न करती थी। ●

> **सुंदरता चलती है तो साथ ही देखनेवाली आंख, सुननेवाले कान और अनुभव करनेवाले हृदय चलते हैं।**
>
> —योननागोर्ची

आदमी जो काला नाग बन गया

• हरिमोहन शर्मा

यह सच्ची कहानी असम के एक बैंक-कर्मचारी जे. रामसिंह की है, जिसे एक काले नाग ने क्या काटा, वह खुद ही नाग बन गया है। वह अब किसी को काट ले, तो वह आदमी फौरन मर जाएगा।

रामसिंह को नाग ने उस समय काटा, जब वह असम के एक जंगल से होता हुआ अपने घर आ रहा था। उस समय, नाग प्रेम-मग्न था। कहते हैं कि ऐसे वक्त कोई नाग को देख ले, तो वह देखने वाले को जिंदा नहीं छोड़ता। और, यही हुआ। नाग रामसिंह को देखते ही उस पर झपटा, और उसे काटकर वापस लौट गया।

जब लोगों ने उसे देखा, तब वह मरा हुआ लग रहा था। उसके अंतिम-संस्कार की तैयारियां होने लगीं। नाग के जहर की वजह से उसका सारा शरीर नीला पड़ गया था, और सांस बंद थी।

और सचमुच ऐसा होने लगा। जब वह बाहर जाता, न जाने कहां-कहां से सांप उसके पास चले आते, और वह अपने जहरीले दांतों से सहलाने लगते। मजे की बात यह कि इन सांपों को देखकर रामसिंह को कोई डर न लगता। वह, कुछ परेशान-सा होकर, अपनी भाषा में उनसे सिर्फ इतना ही कहता--"अब जाओ, यारो! मुझे देख लिया, मुझसे मिल लिये। बस, बहुत हुआ।" सांप, उसकी यह बात सुनकर, फौरन वापस चले जाते।

और वह जिंदा हो गया

एक जादूगर ने उसे देखकर कहा कि वह मरा नहीं है, और कोशिश करके उसे बचाया जा सकता है। उसने रामसिंह की 'लाश' को बिलकुल नंगा कर दिया, और उसके सिर पर उस्तरा फिरवाकर, उस पर मिट्टी पोत दी। इसके बाद, उसने 'मृत' रामसिंह को एक नदी में ऐसी जगह खड़ा कर दिया, जहां कमर तक पानी था।

रामसिंह को नदी में, उसी जगह, छह दिनों तक खड़ा रखा गया। सातवें दिन, उसने आंखें खोलीं। उसे जीवित देखकर उसके घर वाले और मित्रगण बहुत प्रसन्न हुए। रामसिंह जादूगर के जलोपचार से बच तो गया, पर उसे स्वस्थ होने में बहुत समय लगा।

नयी जिंदगी पाने के बाद, वह एकदम जड़-सा हो गया। घंटों न जाने कहां,
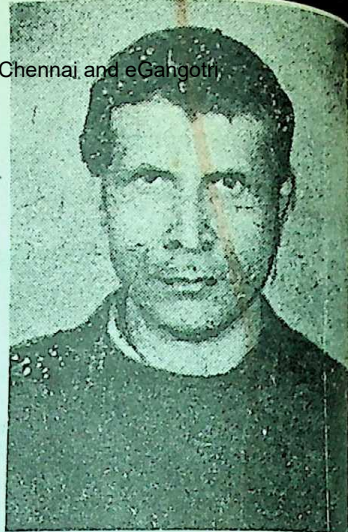
सर्प-मानव : रामसिंह

किसे तकता रहता। जब-तब उल्टि[यां] करने लगता। नाग का जहर अभी त[क] अपना असर दिखा रहा था।

रात को सोता, तब भी उसे चैन न मिलता। बुरे-बुरे सपने दिखायी देते। कभी-कभी, इन डरावने सपनों को देखक[र] वह चिल्लाने लगता। उठता, तो पा[ता] उसे टैंप्रेचर है। बेचैनी भी महसूस होती और कमजोरी भी।

नाग-गंध जो शरीर में बस गयी

जो डॉक्टर उसका इलाज कर रहे [थे] उनका कहना था कि बदन में बाकी [रह] गये जहर की वजह से उसकी गिल्टि[यां] सूज गयी हैं, जिन्हें स्वस्थ होने में का[फी] समय लगेगा।

डॉक्टरों के इलाज से मगर उसे को[ई] फायदा नहीं हुआ। फायदा हुआ, प्रा[कृ]तिक-चिकित्सा से। एक प्राकृतिक चि[कि]त्सक ने उसका इलाज कर, उसे इस का[बि]

कर दिया कि वह उठ-बैठ सके। इससे पहले तो वह सारा दिन लेटा ही रहता था।

उन दिनों, पश्चिम बंगाल के मुख्य-मुख्यमंत्री थे, डॉक्टर विधानचंद्र रॉय, जिनकी गिनती देश के अग्रणी डॉक्टरों में होती थी। रामसिंह को उन्हें दिखाया गया। उन्होंने उसकी जांच-पड़ताल करके कहा, "नाग का काफी जहर अभी तक इसके शरीर में मौजूद है। यह एक चमत्कार ही है कि यह आदमी अभी तक जीवित है।"

डॉक्टर राय ने रामसिंह के बारे में एक ओर अजीबोगरीब बात बतायी, जो उनसे पहले, रामसिंह का इलाज करने-वाले किसी डॉक्टर ने नहीं बतायी थी। उन्होंने बताया—"रामसिंह के खून में अभी तक नाग की गंध (मनिहारा सर्पेंट) कायम है, जिसकी वजह से कोई सांप उसके पास होगा, वह उस तक खिंचा चला आयेगा।"

वह सांपों के लिए चुंबक है

ओर, सचमुच ऐसा होने लगा। जब वह बाहर जाता, न जाने कहां-कहां से सांप उसके पास चले आते, ओर उसे अपने जहरीले दांतों से सहलाने लगते। मजे की बात यह कि इन सांपों को देखकर रामसिंह को कोई डर न लगता। वह, कुछ परेशान-सा होकर, अपनी भाषा में उनसे सिर्फ इतना ही कहता—"अब जाओ, यारो! मुझे देख लिया, मुझसे मिल लिये। बस, बहुत हुआ।" सांप, उसकी यह बात सुनकर, फौरन वापस चले जाते।

आदमी मर जाएगा, इसके काटने से

डॉक्टर राय ने उसकी जांच-पड़ताल करके यह भी कहा था कि यदि गलती से भी उसने किसी को काट लिया, तो वह आदमी फौरन मर जाएगा, उसी प्रकार जिस प्रकार नाग जिसे काटता है, वह फौरन मर जाता है।

डॉक्टरों के कथनानुसार, उसके बच्चों में जहर का कोई अंश नहीं है, फिर भी लोग उसकी दोनों सुंदर ओर अविवाहित लड़कियों से शादी करने में बहुत कतराते हैं, जिससे वह बहुत चिंतित रहता है।

अजगर से मुठभेड़

रामसिंह एक बार एक अजगर की वजह से मरते-मरते बचा। हुआ यह कि वह हाल ही में जुते एक खेत को पार कर रहा था कि एक बड़ा ओर डरावना अजगर, न जाने कहां से निकलकर, उस पर झपटा। अजगर ने उसे कोबरा समझ लिया था, इसलिए वह उसे हराने की कोशिश कर रहा था, खाने की नहीं। अजगर इतना भारी था कि उसके भार के आगे, रामसिंह को उठना भी मुश्किल लग रहा था। उसकी खुशकिस्मती से वह मोटा ओर भारी होने की वजह से ज्यादा फुर्तीला नहीं था, इसलिए किसी तरह रामसिंह अपनी जान बचाकर भागने में सफल हो सका।

इस खौफनाक मुठभेड़ की याद, आज भी रामसिंह को कंपा देती है।

—बीसेगांव, पत्रालय कर्जत, जिला रायगढ़, महाराष्ट्र-४१०२०१

हमारे पूर्वज सोना बनाना जानते थे

● डॉ. प्रमोद कुमार दीक्षित
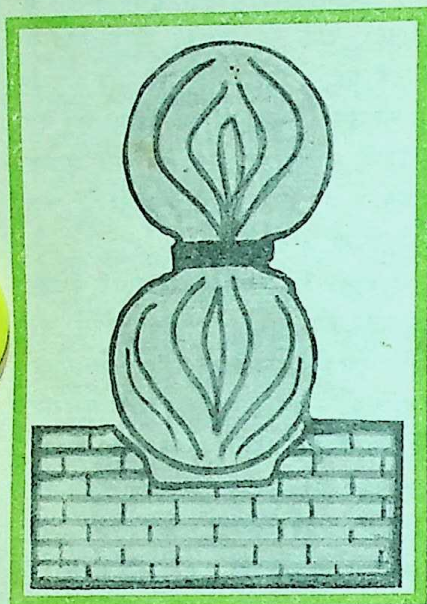
आज जब हम किस्से-कहानियों में पारस पत्थर का वर्णन पढ़ते हैं तो विश्वास नहीं होता। विज्ञान की थोड़ी बहुत जानकारी रखनेवाला व्यक्ति यह बात तो जानता ही है कि सोना और लोहा दोनों ही तत्व हैं। जब तक कृत्रिम रेडियोधर्मिता की खोज नहीं हुई थी और वैज्ञानिक एक तत्व पर कुछ विशेष कणों की बौछार करके दूसरा तत्व बनाना नहीं जानते थे तब तक लोहे से सोना बनाने की बात तो सोची ही नहीं जा सकती थी।

लोहे से सोना बनाइए

लोहे के परमाणु में २६ इलैक्ट्रॉन एक नाभिक के चारों ओर घूमते रहते हैं। नाभिक में २६ प्रोटॉन और ३० न्यूट्रॉन होते हैं। सोने के परमाणु में ७९ इलैक्ट्रॉन होते हैं, नाभिक में ७९ प्रोटॉन और ११८ न्यूट्रॉन होते हैं। अर्थात लोहे से सोना बनाने के लिए ५३ इलैक्ट्रॉन ५३ प्रोटॉन और ८८ न्यूटॉन चाहिए। इतने कण लोहे के परमाणु में जोड़ना, लोहे के चने चबाने से भी अधिक दुष्कर कार्य है। अतः पारस पत्थर आज भी रहस्य बना हुआ है। परंतु पारा ऐसी धातु है जिसमें सोने से केवल एक इलेक्ट्रॉन, एक प्रोटॉन व ३ न्यूट्रॉन

अनेक शताब्दियों से मनुष्य उस पारस पत्थर की तलाश में है, जिसके छूते ही लोहा, सोना बन जाता है। रसायन-वैज्ञानिकों ने भी इस संदर्भ में सफल प्रयोग किये हैं मगर हमारे पूर्वज, सदियों से सोना बनाना जानते थे। पढ़िए शुद्ध सोना बनाने की कुछ बहुमूल्य विधियां . . .

अधिक हैं। यही कारण है कि इस तत्व से सोना बनाने की विधा पर लगातार शोध होता रहा।

स्वर्ण बनाने में दक्ष हमारे पूर्वज

सोलहवीं शताब्दी के बाद पारे से सोना बनाने की विधा पर ग्रंथ लिखा गया 'स्वर्णतंत्र'। आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय ने अपनी पुस्तक 'हिंदू कैमिस्ट्री' में उक्त ग्रंथ से कुछ उद्धरण दिये हैं। 'सुवर्णतंत्र' या 'स्वर्णतंत्र' की प्रतियां रमना काली-मठ, ढाका और वाराणसी में सुरक्षित हैं। इस ग्रंथ को पढ़कर आचार्य राय और स्वामी सत्यप्रकाशजी ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्राचीन भारत में स्वर्ण निर्माण विद्या अत्यंत विकसित हो चुकी थी।

लक्षवेधी रसायन से सोना

राम और शिव के संवादों के माध्यम से स्वर्ण तंत्र के सिद्धांतों का प्रस्तुतीकरण इस ग्रंथ में किया गया है। तैलकंद एक विशेष प्रकार का कंद होता है जिसके पत्ते कमल के समान होते हैं। कंद प्रस्वेदनशील होता है और द्रव की बूंदें इससे निरंतर टपकती रहती हैं। पानी में यह तेल चादर
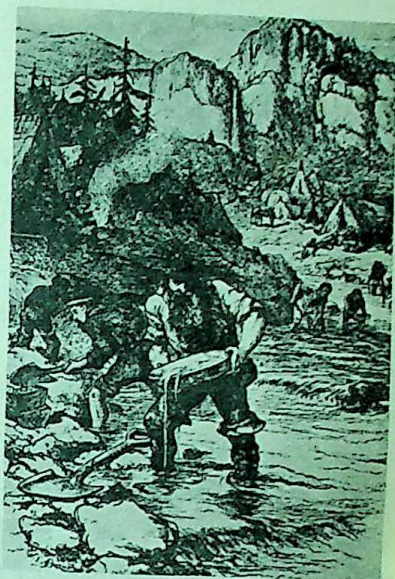
के समान फैल जाता है। इस तेल की गंध और गुणों से आकर्षित भयंकर विषधर कंद की छाया में रहते हैं।

इस कंद में विलायक शक्ति अद्भुत होती है। सुई से अगर इसमें छिद्र करने का प्रयास किया जाए तो सुई कंद में घुल जाती है—

तत्परीक्षा विधानार्थं कंदे सूचीम् प्रवेशयेत्
सूचीद्रावः क्षणात् पुत्र तत्कंदंतु समाहरेत्।

इस कंद को तीन बार शुद्ध पारे के साथ खरल में पीसा जाने के बाद कंद का आसव उसमें मिलाकर मूपा (क्रूसिबिल) में रखकर बांस के कोयलों की आग में तप्त किया जाता है। इस प्रकार बना हुआ द्रव लक्षवेधी कहलाता है। इसका एक भाग पारे के एक लाख भाग को सोना बना

सकता है। लक्षवेधी द्रव के औषधि गुण भी अद्‌भुत होते हैं।

सोना : साधारण धातुओं से

यही नहीं, अन्य साधारण धातुओं को सोने में बदलने के लिए सर्ववेधी द्रव बनाया जा सकता है। हरताल या 'ऑर्पिमेंट' को कंद तैल के साथ मिलाकर उसका ऊर्ध्व-पातज गुण समाप्त कर दिया जाता है। इस मिश्रण को ताम्र के साथ मिलाने पर, स्वर्ण और रांगे के साथ मिलाने पर रजत बन जाती है।

वज्र मूषा (हीरे के या कार्बोरेंडम के क्रूसिबिल) में यदि पारा और लौह सूची द्राव (एक अम्ल) लेकर तपाया जाए तो जो मिश्रण मिलेगा वह किसी धातु को स्वर्ण बना सकता है।

डमरू यंत्र

भैरवानंद योगी द्वारा रचित 'धातु क्रिया' नामक ग्रंथ इसी काल में प्रकाश में आया। इस ग्रंथ में 'डमरू यंत्र' (चित्र १) द्वारा सोना बनाने की विधि का वर्णन है। डमरू यंत्र में मिट्टी की हांडी के मुंह पर दूसरी हांडी को उलटकर रखते हैं व बीच की दराज को कपड़े और मिट्टी से बंद कर देते हैं। इस यंत्र में शुद्ध पारा रखकर तेल के साथ मिलाकर दो प्रहर तक गर्म किया जाता है। अपने आप ठंडा होने दिया जाता है फिर समान मात्रा में सीसा मिलाकर तेज आंच पर तपाया जाता है। इस प्रकार से सोना बनाया जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारत में स्वर्ण तंत्र का विकास हो चुका था। प्राचीन भारत के इस उज्ज्वल पक्ष की ओर अधिक खोज वांछित है।

—रसायन विभाग, जनता स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बकेवर, इटावा

आत्मा का परकाया प्रवेश

गया : दाह-संस्कार होनेवाला ही था कि वह जीवित हो उठा। जब कुछ सप्ताह बाद वह ठीक हो गया, तब उसने बताया कि वह ब्राह्मण है, अतः वह निम्न जाति के मां-बाप के यहां का खाना नहीं खाएगा। उसके लिए पड़ोस की ब्राह्मण महिला से खाना बनवाया गया। वह ब्राह्मण महिला जब दूसरे गांव गयी तो पता चला कि इस गांव का एक ब्राह्मण लड़का उसी समय मरा था जबकि जसवीर गंभीर रूप से बीमार था। जसवीर को मृतक ब्राह्मण लड़के के गांव ले जाया गया जहां वह पहले कभी नहीं गया था। उसने वहां की हर चीज को पहचान लिया। यह एक मात्र ऐसा मामला है जब मृतात्मा ने तत्काल दूसरे के मृत्यु शरीर में प्रवेश कर लिया। वैसे पुनर्जन्म में प्रायः पांच साल का अंतर रहता है।

—शयोगे

विलक्षण योगी: चावलों पर लिखा है भविष्य सबका

• संजय खाती

पिछले वर्ष ३० मई को अनायस ही एक विलक्षण अनुभव का भोक्ता बनने का अवसर प्राप्त हो गया। एक परिचित श्री घुघतियालजी की प्रेरणा से सुरईखेत (जि. अल्मोड़ा) की धूनी में बैसी (एक प्रकार का बाईस दिनों का कठोर व्रत) में बैठे उस अलौकिक सिद्ध पुरुष से मिलने के लिए एक छोटी-सी यात्रा की। संकरी-सी धूनी महिलाओं-पुरुषों से खचाखच भरी थी। सामने बैठे थे 'वे'—शरीर पर मात्र एक गेरुआ धोती, उम्र कोई तीस-पैंतीस, व्रत के कारण बढ़ आयी दाढ़ी और राख से लिपटा बलिष्ठ शरीर। मोटे-मोटे रुद्राक्षों की कई मालाएं गले में झूल रही थीं। आंखें गांजे की दम से रक्ताभ हो उठी थीं।

सामने थाली पर चावलों का ढेर लगा है। उससे एक मुठ्ठी चावल उठाते हैं, हवा में उछालकर चंद दाने हथेली पर रोक लेते हैं। मुठ्ठी खोलकर उन चावलों में जैसे सभी कुछ साफ इबारत-सा पढ़ लेते हैं . . . !

"वह सामने आ जाए जिसका लड़का बचपन से भाग गया है . . . कोई पता नहीं चलता . . ." उन्होंने पुकारकर कहा है। दोबारा, ताकि सब कोई सुन लें।

जवाब में धीरे-से भीड़ के बीच से उठती है एक वृद्धा। बरसों पहले चले गये एकमात्र पुत्र की व्यथा जैसे उम्र को और भी बढ़ा गयी है। उस वेदना ने चेहरे पर झुर्रियों का जाल रच दिया है। वाणी कांपती हुई। हाथ जोड़ती सामने आ बैठती है।

"कब से गायब है लड़का?" सही अवधि पूछते हैं वे—आत्मीयता से।

"बचपन से . . ." स्वर का जैसे यत्न से दबाये रुदन ने अतिक्रमण कर लिया है।

"चिठ्ठी-पत्री तो नहीं आती?"

"ना . . .।"

कुछ सोचते हैं। चावलों में खोये पुत्र को जैसे, ढूंढ़ लेते हैं।
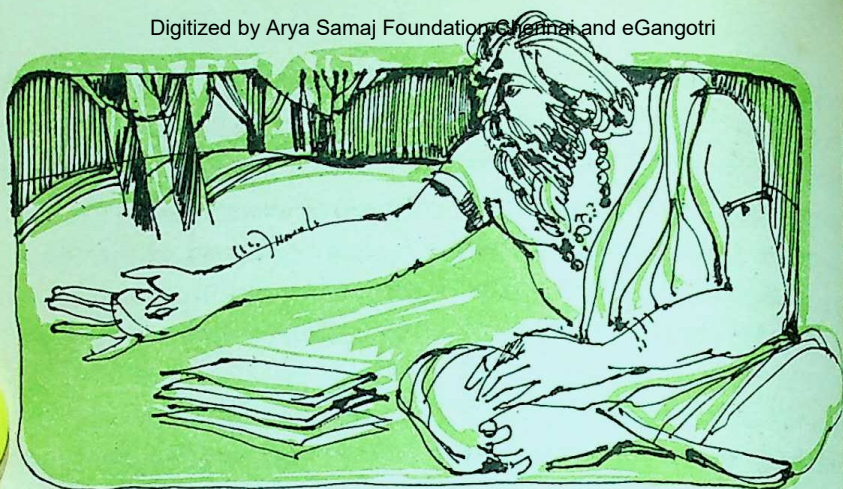
"तेरा लड़का दिल्ली में है। नौकरी कर रहा है . . . वहीं से लड़के आजकल घर आये हुए हैं। उनके हाथ ये चावल भेज दे, उसे। एक महीने के अंदर लौट आयेगा तेरा लड़का . . ."

"कैसे भेजूंगी? वे नहीं बताते . . ." वृद्धा का कांपता स्वर है। गांव के लड़के कुछ भी बताने से इंकार करते हैं।

"ठीक है तो चिठ्ठी भेज दे . . ." वे अविलंब उसे सांत्वना देते हैं, "उसे चिठ्ठी लिख . . . उसका पता है . . . दरियागंज . . ." उन्होंने भभूत का टीका लगाकर उसे आश्वस्त कर दिया है।

चावल में सिमट आये जीवन-प्रसंग

यह तो प्रारंभ है। फिर तो जैसे समस्याओं की एक अनवरत शृंखला जुड़ती जाती है, हमारे सामने। उस भीड़ से उन्होंने एक लड़की को बुला लिया है अब। उसे मायके का छल है। वे जैसे उस रोग की जड़ को स्पष्ट देख रहे हैं। जब वह केवल छह-सात साल की होगी तब उसकी मां के मर जाने पर उसके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया था। एक रात विमाता और क्रूर पिता ने उसे मार-पीटकर घर से बाहर धकेल दिया था। उस रात वह अबोध लड़की श्मशान पर सोई रही रात-भर। अनजाने ही वहां से वह आत्मा उसके साथ चली आयी। एक और लड़की को छल है। आत्मा के हावी होने के पीछे मानव की अंतरात्मा का सहम जाना या कमजोर हो जाना है। सामान्य अवस्था में वह उस पर अपना प्रभाव नहीं जमा पाती इसलिए कभी निर्जन में या ऐसी ही जगहों पर अकस्मात आहटसे या गिर जाने अथवा ठोकर लग जाने से, चौंक पड़ने पर, वह आदमी पर अपना प्रभाव जमा पाने में सफल हो जाती है। उस लड़की को जब वह तीसरी में पढ़ा करती थी एक लड़की ने धक्का दे दिया था। उन्होंने यह बता दिया कि उस लड़की का नाम

जीवन के रहस्यों को साफ-साफ देखने के लिए एक पारदर्शी दृष्टि चाहिए। मुट्ठी में पड़े चावलों में लाखों जिंदगियों की कहानी गूढ़ ग्रंथ के खुले पन्नों-सी जिनके समक्ष फहरा जाती है, चावलों के सहारे जीवन के जाने-अनजाने प्रसंगों से जो साक्षात्कार करते हैं, एक ऐसे ही सिद्ध पुरुष की विस्मय-गाथा . . .

बिलक्षण योगी

शांति था। केवल चावलों के सहारे उस अनूठे सिद्ध ने जीवन के न जाने कितने जाने-अनजाने प्रसंगों को खुली किताब-सा पढ़कर हमको अवाक कर दिया। यह बात नहीं कि हम वैज्ञानिक तर्कों को परे रखकर मात्र भावनाओं में बह जाने को तैयार थे। लेकिन, मेरे एक मित्र को यह बताकर कि उनसे पूर्व उनके एक भाई जन्म के बाद ही चल बसे थे, मुझे निश्चय ही अपनी अलौकिक सामर्थ्य से अभिभूत कर दिया।

विभिन्न समस्याओं का निदान

बीच-बीच में लोगों का क्रम तोड़कर आगे बढ़ आना उनको कुपित कर जाता। तब वे रुष्ट होकर लोगों को वहां से चले जाने की आज्ञा देने लगते और 'पूछ' बंद करने का निर्णय सुनाने लगते। लेकिन क्या मजाल कि उनके आशुतोष स्वभाव को समझने वाला एक भी आदमी वहां से हिलता। उस क्रोध में वे अपनी उपलब्धियां बताने लगते। लोगों ने उनकी परीक्षा लेने के लिए जानवरों पर भी चावल उठाये। चावलों के सहारे अपना प्रश्न पूछने के लिए प्रश्नकर्त्ता को मुठ्ठीभर चावल लेकर अपना प्रश्न सच्चे मन से स्मरण करना होता है। यही पूछ है। उन अपवित्र चावलों को देखते ही वे सारी शरारत समझ गये। उन लोगों को उन्होंने कठोर दंड दिये हैं—वे बताते हैं। पिछले दिनों उन्होंने एक पूछ के दौरान उस जादू को जाहिर कर दिया जिसे पुरुष पर उसी की स्त्री ने किया था। तब वह स्त्री दरांती लेकर धूनी के दरवाजे तक चली आयी थी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार उन्होंने राख की एक फूंक से उसे अवश कर दिया और लौटने पर मजबूर कर दिया। एक पागल लड़का भी रस्सियों से जकड़कर वहां लाया गया। जब वह लौटा तब वह उस सुदीर्घ कैद से आजाद हो चुका था। उन अलौकिक प्रसंगों पर सहसा विश्वास

नहीं होता यदि उस भारी भीड़ से उठकर एक आदमी ने अपनी आपबीती न सुना डाली होती कि कैसे उन्होंने उसका दस साल से चला आ रहा एक असाध्य रोग केवल सात दिनों में समाप्त कर डाला। "मैं चलते हुए कांपता था। पानी में जाना तो मेरे लिए मौत थी . . . " उसने कहा, "और आज मैं अपनी गूल बनाकर पैदल चला आ रहा हूं . . .।"

एक वहीं नहीं हमारे सामने कई लोग आते हैं। एक वृद्धा का प्रवासी पुत्र उसी दिन शाम को लौट आया है। दूसरे की सात साल से बांझ गाय सहसा गाभिन हो गयी। न जाने कितने असाध्य रोगियों को उन्होंने ठीक कर दिया अपने चावलों और भभूत के सहारे। उन बाईस दिनों में रोज दो-दो सौ लोगों का तांता लगा रहता। बोलते-बोलते थक जाते लेकिन किसी को निराश नहीं करते। लोग पहाड़ों की दुर्गम दूरियां पैदल पारकर उनकी शरण में आते और कई-कई दिनों तक अपनी बारी की प्रतीक्षा में वही धूनी के किसी किनारे पड़े रहते।

जीवन के विभिन्न रंगों का उद्घाटन

एक लड़के का भाई बहुत दिनों से घर नहीं लौटा। उसके इस कथन को उन्होंने फौरन काट दिया कि वह महाराष्ट्र में नियुक्त है। उन्होंने बताया कि उसकी बदली अब असम हो गयी है। एक और युवक का भाई भी अठ्ठाइस साल से लापता है। वे बताते हैं कि वह पूना है और तब कुछ ऐसी परिस्थितियां पैदा हो गयी थीं कि उसे विवश होकर घर त्यागना पड़ा। पेंशन, स्थानांतरण, पदोन्नति और परीक्षा-फल के असंख्य सवालों का जवाब वे दे रहे थे। इम्तहान निपटाकर सशंकित चित्त से प्रतीक्षा कर रहे स्कूली छात्रों की एक अच्छी भीड़ भी वहां जमा थी। उन चंद घंटों में जीवन के न जाने कितने अन-जाने रंग हमारे सामने उद्घाटित हो गये। इच्छा हुई कि बाइसों दिन शाम से सवेरे वहीं बैठे रहें। मानव-जीवन का वह विस्तृत दर्शन और कहां संभव हो सकता था? आम आदमी के दुख-क्लेशों की वह महागाथा गहरे तक मथ डालती। यहां सुखी है कौन? सभी तो अपने अंदर एक नासूर पाले जी रहे हैं। बाद में उन्होंने कहा था, "बहुत दुःख हैं यहां लोगों को . . . खासकर जादू, छल और अन्य भूत बाधाएं। गाय, भैंस, औरतों और घरों पर जादू करनेवालों से तीव्र घृणा है, उनको। लोगों के अतीत, बर्तमान और भविष्य को खुली किताब-सा बांच लेते थे, वे। उनके जीवन के रहस्यमय और लज्जा-स्पद अंधियारों की ओर संकेत मात्र कर देते। किसी को आहत नहीं करते थे। जब कभी उनको विवश होकर बात और साफ करनी पड़ती तब मानव जीवन के अभेद्य अंधकारों से जैसे परदा उठ जाता।

आंसूभरी जीवन-गाथा

मुठ्ठी में पड़े चावलों में लाखों जिंदगियों की कहानियां उनके सामने किसी गूढ़-

ग्रंथ के खुले पन्नों-सी फहराने लगतीं। मानव जीवन की गहराईयों में सहज ही झांक लेने में समर्थ हैं—पी. डीकर देव फुलारा। लेकिन उनकी अपनी जीवन-गाथा भी क्या उन असंख्य लोगों से कम दुःखद रही है?

सिगनल कोर की तरफ से हाकी के अच्छे खिलाड़ी रहे हैं वे। उनकी पत्नी सन,'७५ से ही शुक्रवार का व्रत किया करती थी। उन्होंने बताया, "मैं हमेशा उसके व्रतों का उल्लंघन किया करता था। सन '७६ में मेरी संतान होने वाली थी। तब छह मास ही में ही उसका गर्भपात हो गया...। उसके बाद सन '७७ में फिर संतान होने वाली थी। उन्हीं दिनों आसाम स्टेडियम में खेलते हुए मेरा हाथ टूट गया। वहां इलाज चला और प्लास्टर चढ़ाकर छुट्टी दे दी गयी। मैं घर आया और दो महीने घर रहा। तब पत्नी को दस माह पूरे हो चले थे। छुट्टी खत्म हो गयी और मैं रानीखेत मिलिटरी अस्पताल में रिपोर्ट देने गया। वहां दस दिन एडमिट रहा। तब वहां इलाज न हो पाने के कारण लखनऊ जाने का आदेश मिल गया। २ जनवरी को मुझे घर जाना था और १ जनवरी को घर से आदमी आया कि पत्नी को प्रसव नहीं हो पा रहा है।.... छुट्टी चाही लेकिन मिली नहीं। विवश होकर २ तारीख को घर आया और पत्नी को भी लखनऊ ले गया। वहां मिलिटरी अस्पताल में उसे भरती किया। चार दिन बाद उसका ऑपरेशन हुआ। उसे तो बचा लिया गया लेकिन बच्चा बच नहीं पाया ... एक समय वह भी था जब मेरा हाथ प्लास्टर में जकड़ा गले पर बंधा था ... मृत बच्चा मेरे सामने पड़ा था ... उस समय उसे दफनाने के लिये कोई आदमी नहीं मिला ... तब मैंने बड़े धैर्य से काम लिया। उस बच्चे के लिए पांच रुपये का कफन लिया और उसे लेकर पीपराघाट श्मशान पहुंचा। एक ही हाथ से गड्डा खोदा और बच्चे को दफन किया ... लौटा तो पत्नी को होश आगया था। पूछा—"बच्चा कैसा है?" मैंने उसे बताया कि "बच्चा बिल्कुल सही है और जब वह ठीक हो जाएगी तब उसे उसके पास ले जाऊंगा...।"

असह्य दुःख की उस मनस्थिति में कुछ ही दिनों बाद उन्हें एक स्त्री ने स्वप्न में दर्शन दिये। उसने ही उन्हें व्रत लेने को कहा और विधि बतलायी। लगभग दो साल बाद ध्यान में बैठे हुए अनुभव हुआ कि कोई स्त्री सामने खड़ी है। देवी ही तो थी! साथ में एक महिमावान पुरुष थे। "पहचाना इन्हें?" "ये सेम बाबा हैं!" देवी ने कहा। सेम उनके कुलदेवता हैं। तब से वे तीन लाख पूछों पर विचार कर चुके हैं।

—जी-४४, श्रीनिवासपुरी, नयी दिल्ली

जिन्होंने शासन करने का स्वाद चखा, उन्हें वह स्वादिष्ट लगा; पर इस मधु में जहर है। —इब्न-उल-वर्दी

मृतात्माओं के आवाहन का खेल खतरनाक है

● आनन्दस्वरूप भटनागर

मृतात्माओं का प्लेनचिट या आटोमेटिक राइटिंग के माध्यम से आवाहन खतरनाक खेल है। मैं एक बार बस बाल-बाल बच ही गया, इस खतरे से।

२५ जनवरी, १९७२ की अंधेरी सर्द रात थी। मैं रामपुर में एक अपरिचित शिक्षित-शिष्ट परिवार में ठहरा हुआ था। परिवार से सिर्फ पत्र-घनिष्ठता थी। घर की छोटी-छोटी लड़कियां जिद्द करने लगीं कि आज क्यों न प्लेनचिट चलायी जाए? उन लोगों ने प्लेनचिट पर मेरा एक लेख पढ़ रखा था। प्लेनचिट पर दुष्ट आत्माओं के आ जाने से कभी-कभी खतरों की संभावना हो जाने से मैंने सावधान किया, लेकिन उन्हें जिद्द और धुन सवार थी। मैं भी राजी हो गया।

स्टोव—देवता आ गये

प्लेनचिट पर किस मृतात्मा को बुलाया जाए कुछ समझ में नहीं आ रहा था? हिंद-पाक युद्ध होकर चुका था। कुछ प्रमुख सैनिकों के नाम अखबारों में आते रहते थे कि अमुक अफसर अपने जलयान के साथ जलसमाधि लेकर शहीद हो गया। बारी-बारी से सब को बुलाया परंतु कोई नहीं आया। प्लेनचिट नहीं चली। सभी निराश होने लगे। तभी एक विचार सूझा। उन दिनों एक मृतात्मा स्टोव-देवता के नाम से बहुत मशहूर थी और स्टोव पर संकेतों द्वारा वह बहुत-सी जिज्ञासाएं लोगों की, शांत किया करती थी। निश्चय किया गया कि क्यों न उसी को बुलाएं? प्लेनचिट फिर भी नहीं चली, लेकिन पास में खड़ा २८ वर्षीय घरेलू नौकर यकायक दो-तीन फुट ऊंचा उछल गया। फिर वह डाइनिंग रूम में नीचे जमीन पर बैठकर हाथ-पैर मारने लगा और झूमने लगा। आखें उसकी चढ़ी-चढ़ी लाल हो गयीं। पूछने पर उसने बताया—"मैं स्टोव-देवता हूं।" हम लोग इसके लिए तैयार नहीं थे। बच्चे भी डरने लगे। घर में मैं ही अकेला मर्द था। गृहस्वामी शहर से बाहर थे। रात के अंधेरे में सिविल लाइंस में अलग-थलग-सा वह बंगला था। मुश्किल से उन स्टोव-देवता को वापस भेजा। लेकिन सच तो यह है कि डर मैं भी गया था। रात बिस्तर पर बैठे-बैठे भगवान का नाम लेकर गुजारनी पड़ी।
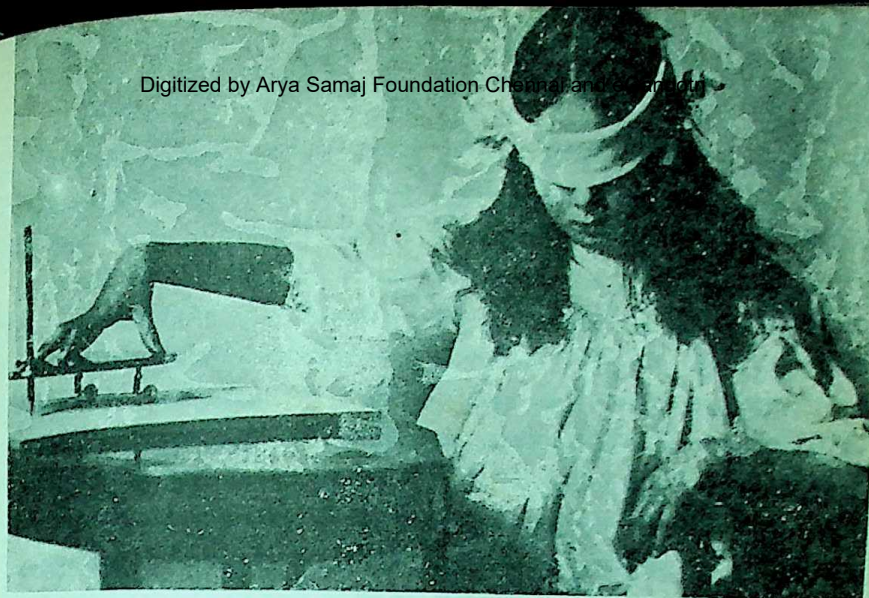
पिता के स्थान पर अश्लील आत्मा

अमरीका की रूथ टोरेंस का एक अनुभव बहुत विचित्र और डरावना है। उसने कहीं पढ़ रखा था कि मृतात्माओं से संपर्क कर हम उनकी आध्यात्मिक प्रगति में सहायक हो सकते हैं। बस रूथ ने अपने पिता की आत्मा से आटोमेटिक राइटिंग के माध्यम से संपर्क साधने का प्रयास शुरू किया। आटोमेटिक राइटिंग में कलम, कागज लेकर बैठ जाते हैं, आत्मा का आवाहन करते हैं और फिर वह मृतात्मा आपकी कलम से या टाइपराइटर से संदेश लिखती चली जाती है। रूथ की कलम से भी धाराप्रवाह संदेश आने लगे। रूथ बहुत खुश हुई। पिता से सपर्क बन चुका था। कम से कम यही वह सोचती थी, उस वक्त। बहुत ऊंचे आध्यात्मिक, तत्वदर्शन की बातें लिखकर आने लगीं।

इस रवैये में अकस्मात एक बदलाव आ गया जिससे रूथ को ऐसा झटका लगा कि जैसे पैर तले किसी ने जमीन ही खिसका दी हो। अब वह भाषा आने लगी जिसमें गंदगी, अश्लीलता; अपमान और मार डालने की धमकियां भरी होती थीं। रूथ के शब्दों में, "मुझे अभी भी इस मृतात्मा से भय बिलकुल नहीं लगा। बस क्रोध और निराशा ने अब मन में स्थान ले लिया था। पहले तो मुझे बहुत बुरी तरह धक्का लगा, भारी उलझन में पड़ गयी। पेंसिल मैंने रख दी और अपने विचारों को संयत करने लगी।" फिर मैंने कसकर उसे एक भाषण पिलाया—'मैंने आटोमेटिक राइटिंग पर अपना वक्त इतने नीच चरित्र के व्यक्ति की बकवास सुनने के लिए बरबाद नहीं किया है। आप समझते हैं कि इस गंदी भाषा के साथ आप मेरे साथ चलते रहेंगे? मैं सिर्फ अपने पिता से संदेश सुनना चाहती हूं या किसी ऊंची दिव्य आत्मा से

संपर्क करना चाहती हूं। बार-बार मैंने फटकार और आज्ञा देने की आवाज में कहा कि आप जाइए और किसी ऊंची पवित्र आत्मा को भेजिए।'

दुष्टात्मा का उपद्रव

रूथ टोरेंस ने अब दृढ़संकल्प के साथ लिखना बिलकुल बंद कर दिया। सोचा कि चलो पाप कटा। लेकिन उसने रूथ के शरीर में तरह-तरह की अनुभूतियां भरनी शुरू कर दीं। उसे लगता कि उसका शरीर ठोस से अब द्रव होकर तपने लगा है, सिकुड़ता जा रहा है, दिमाग उड़ा जा रहा है, अंदर से सड़ांध उठ रही है। इसी किस्म की दूसरी बेहूदी अनुभूतियां उठती रहीं। उसी समय उस दुष्टात्मा ने आवाज भी निकालने में सफलता प्राप्त कर ली। अब लिखना तो बंद हो गया था। लेकिन वह चाहता था कि उसकी बात सुनी जाए। रूथ ने निश्चय किया यदि वह दुष्टात्मा हठ और जिद कर सकती है तो वह भी उससे कहीं अधिक हठ कर सकती है। अब दिन और रात उसकी आवाजें सुनायी देने लगीं। वह कुछ न कुछ बकबक करता रहता। रूथ ने निश्चय किया कि देखें कब तक तंग करता है? कभी तो अपने आप हारकर वह भाग ही जाएगा। वह पूरे जोर के साथ आज्ञा की आवाज में कहती—'भाग जाओ, भाग जाओ।'

रूथ टोरेंस का उसने सोना हराम कर दिया था। वह अपमानपूर्ण भद्दी भाषा तरीने की तरह बोलता ही रहता, गंदे प्रस्ताव करता रहता। उसका गुस्सा इसलिए और भी भड़क जाता कि वह जो चाहे बकबक करता रहे, रूथ का मनोबल उससे बिलकुल नहीं गिरता।

रूथ टोरेंस ने निश्चय किया कि अब किसी ऐसे व्यक्ति से जो दुष्ट आत्माओं से छुटकारा दिलाने की जानकारी रखता हो, इस जंजाल से मुक्ति के लिए सहायता व मार्ग दर्शन लेना चाहिए।

दुष्टात्मा और क्रूर हो गयी

रूथ टोरेंस ने हेरोल्ड शेरमैन को लिखकर मिलने के लिए वक्त मांगा। ग्यारह दिन बाद वह हवाईजहाज से मिलने के लिए लिटिल रॉक गयी। लेकिन उस प्रेतात्मा को जब पता लगा कि उसका पत्ता काटने की तैयारी हो रही है, तब उसने नयी-नयी आफतें ढाना शुरू कर दीं। उसने हर मुमकिन कोशिश की कि रूथ टोरेंस को तोड़कर रख दिया जाए, वह कमजोर हो जाए, उसका मनोबल टूट जाए और उसका दिमाग कमजोर पड़ जाए। अब वह और कमीनेपन पर, और दुष्टता पर तुल गया। उसने अपनी शारीरिक उपस्थिति भी प्रकट करने का प्रयास किया। वह यौन-आक्रमण भी करने का प्रयास करने लगा।

वह प्रेत कुछ समय के लिए शांत हो जाता, जाहिर करता कि अब वह चला गया है। लेकिन जब रूथ गहरी नींद में सो जाती तब वह फिर आक्रमण करता। क्रोध तो उसे इस बातसे भी आता था कि

रूथ उससे डरी क्यों नहीं है ? इसीलिए वह अब कमीनी से कमीनी हरकतों पर तुल गया।

वास्तव में इस प्रेत का इरादा यह था कि वह रूथ को तन और मन दोनों से कमजोर कर डाले और फिर शरीर में प्रवेश कर काबू कर बैठे। रूथ की विद्रोही इच्छाशक्ति इसे कभी स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। हेरोल्ड शेरमैन की सहायता और मार्गदर्शन से जैसे-तैसे इस

'अशरीरी आत्माओं का एक रहस्यमय लोक है और इन आत्माओं से बातचीत करना आदमी की एक आदिम आकांक्षा रही है। 'प्लेनचिट, 'ऑटोमेटिक राइटिंग तथा ऐसी ही अन्य विधायें इस जिज्ञासा के प्रति मनुष्य के आकर्षण को जताती हैं। 'प्लेनचिट' तथा 'ऑटोमेटिक राइटिंग के द्वारा आत्माओं से संवाद तथा दुष्टात्माओं के अमानवीय आतंक किस तरह प्रश्नकर्ता को परेशान करते हैं, कुछ रोमांचक प्रसंग।

दुष्ट प्रेत से छुटकारा मिला। जब रूथ इस पराशक्ति संपन्न सहायक से मिल कर वापस आयी तब अंगारों की तरह धधकती एक आंखों का जोड़ा उसे घूरता हुआ दिखाई देता। उन नजरों में एक लाचारी और अविश्वास टपकता था-जैसे वे कहती हों—'सचमुच ही आपका मतलब था कि मैं चला जाऊं, मैंने तो विश्वास ही नहीं किया था।' धीरे-धीरे वह सब खत्म हो गया और २ अगस्त, १९६८ से अब कोई निशान बाकी नहीं रहा।

नर्क की एक नयी रूह

ऐसी ही एक और घटना है, जिसमें प्लेनचिट चलाने के कारण एक दुष्ट प्रेत आत्मा एक महिला के पीछे पड़ गयी और उसे तंग कर मारा। यह दुःखद घटना ऐरिजोना की जेन ऐवरेट के साथ घटी। ऐवरेट अपनी दो बेटियों के साथ अमरीका से इंगलैंड गयी थी। वहां छोटी बेटी का एक लड़के से घनिष्ट प्रेम हो गया। अमरीका से वापस आने के

कुछ दिन बाद ही पता लगा कि वह एक दुर्घटना का शिकार हो गया है। बेटी को बहुत भारी धक्का लगा। उसके मृत प्रेमी मेक्स रीड से उन लोगों ने प्लेनचिट पर संपर्क किया। लगा, वह आ गया है। प्लेनचिट चलने लगी। लेकिन कुछ समय में ही इतनी बेतुकी और भद्दी बातें लिखी जाने लगीं कि उसके मेक्स रीड होने पर संदेह होने लगा। उसने लिखा मैं तुम्हारी बेटियों को चाहता हूं; जेनी

तुम यहां आ जाओ। फिर जेन ऐवरेट आटोमेटिक राइटिंग से लिखना शुरू कर दिया। पहला ही वाक्य किसी नये लेख में आया कि मैं नर्क से बिल्कुल एक नयी रूह आयी हूं। जेनी को बहुत डर लगा।

हवा में उठते हाथ

एक विचित्र बात हुई। जिस वस्तु पर भी जेनी और उसकी बेटियां अंगुलियां रखतीं वे सिकनी शुरू हो जातीं। इस प्रकार ऐशट्रे, प्लेटें, चाकू, फॉर्क आदि ऐसे चलने लगतीं कि जैसे कोई शक्ति उन्हें चला रही है। जेनी और उसकी बेटियों के हाथ हवा में उठ जाते जैसे कोई शक्ति उन्हें उठा रही हो। छोटी लड़की के हाथ और बाहें सोते-सोते अपने आप ऊपर हवा में खड़े हो जाते।

एक रात को जब जेन ऐवरेट आटोमेटिक राइटिंग से अपनी बेटियों के सवालों के जवाब पूछती जा रही थी तब उसे हलकी-सी आवाज भी सुनायी देनी शुरू हुई। पहले तो वह समझी कि शायद उसका भ्रम है। लेकिन आवाज और स्पष्ट होनी शुरु हुई। जेन को लगा कि वह पागल हो जाएगी। एक शाम जेन अपने पति को कार द्वारा सिनेमा ले जा रही थी। जेंन की जीभ अपने ही आप चलने लगी और आगे के नीचे के दांतों को जोर से दबाने लगी। लगा कि जैसे अपने बस में कुछ नहीं है। एक रात की बात है कि इस दुष्ट आत्मा ने रातभर सोने नहीं दिया। जेनी को बहुत शक्तिशाली यौन उत्तेजना भड़कती हुई महसूस होती और वह बिलकुल असहाय महसूस करती।

अदृश्य काम संदेश

एक रविवार को प्रातः ५ बजे आखें खुलीं तो उस वक्त भी जेन का शरीर वामना से उत्तेजित था। वह तेजी से कभी बायें, कभी दायें ढुलक रही थी। लगता था जैसे कोई जबरदस्ती कर रहा है। दिखायी बस कोई नहीं देता था। बाद में पता लगा कि इन्क्यूबस नाम की कुछ दुष्ट रूहें होती हैं, जो पृथ्वीलोक की स्त्रियों के साथ सहवास किया करती हैं।

शुरू-शुरू में वे लोग जब प्लेनचिट चलाते थे, तब उस पर आने वाले संदेश सेक्स चर्चा से धीरे-धीरे भरते गये। जेन ने ऐतराज भी किया।

बाद में हेरोल्ड शेरमैन के मार्ग-दर्शन व सहायता से ही इस दुष्ट प्रेतात्मा से धीरे-धीरे पिंड छूटा।

सच! मृतात्माओं के आवाहन का खेल बहुत खतरनाक है।

—सी-८६, डी. डी. ए. फ्लैट्स, साकेत ऐवेन्यू, नयी दिल्ली-११००१७

> **जिसमें सोचने की शक्ति खत्म हो गयी है, समझ लीजिए, वह व्यक्ति बरबाद हो चुका है।**
>
> —सुकरात
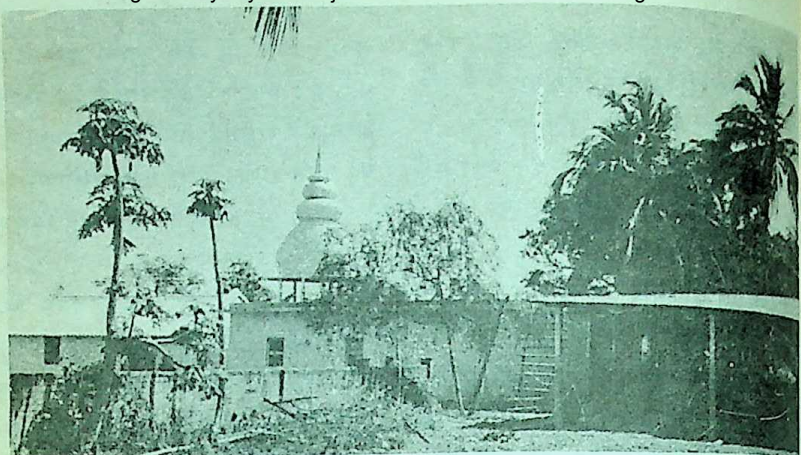
ठाकुरबाड़ी : कामदेवपुर

● प्रभाकर माचवे

मैं अपने आपको बुद्धिवादी समझता हूं। सहसा चमत्कारों पर विश्वास नहीं करता। विज्ञान भी पढ़ा हूं। उसकी सीमाएं भी जानता हूं। पर किसी-किसी स्थान का, और वहां के किसी व्यक्ति का जादू चमत्कारिक होता है। उसका कोई कारण नहीं दे सकता। वह अतर्क्य लीला होती है। मुझे ऐसे ही एक नये स्थान का बंगाल के गुह्य समाजों की खोज में, हाल में, पता लगा। हावड़ा रेलवे स्टेशन से पांच किलोमीटर सड़क से सियालदाह पहुंचे। वहां से बारासात रेलवे स्टेशन २३ किलोमीटर पर है। वहां से बारा-सात बसस्टैंड एक किलोमीटर रिक्शा से या पैदल जाएं। कल्याणी एक्सप्रेस बस सर्विस से वहां से दस किलोमीटर पर काम-देवपुर बस स्टॉप है। वहां से एक किलो-मीटर पर ठाकुरबाड़ी है। दूसरा रास्ता, बाबूघाट से कामदेवपुर बस-स्टाप (कल्याणी एक्सप्रेस से) पैंतालीस मिनट से एक घंटे में पहुंचा जा सकता है।

मैं ऐसे ही वहां पहुंचा। बहुत सवेरे से भक्तों और रोगियों की 'क्यू' लग जाती हैं। हर मंगलवार और शनिवार को सवेरे ८ बजे से नाम लिख लिये जाते हैं। टिकट दिये जाते हैं। साढ़े दस बजे वहां 'बाबा' भीतर पहुंच जाते हैं। एक छोटा-सा कमरा है, जहां एक दीवार है। उसके जाकर लोग मत्था टेकते हैं। अपना नाम और उम्र बताना काफी है। भीतर से हिंदी, बांग्ला, अंगरेजी में जवाब आपके मन में जो भी बात है, वह कह दी जाती है। दो मिनट में रोग का इलाज बता दिया जाता है। यह क्रम दोपहर तक चलता है। बीच में आधा घंटा के लिए बाबा बाहर आते हैं। कोई उनसे

ठाकुर बाड़ी
जहां मंगल और शनि को असाध्य रोग अच्छे होते हैं

फकीर बाबा : सूर्य कुमार सेती

बोलता नहीं। मैं गया उस दिन, छह सौ आदमी आये थे। कभी-कभी भीड़ बेकाबू हो जाती है।

असाध्य रोगों का इलाज

फरवरी के अंतिम सप्ताह से मार्च के अंतिम सप्ताह तक (फाल्गुन १५ से २१ तक) वहां मेला लग जाता है। गोराचांद पीर का मजार भक्तों के दर्शनों के लिए खुला कर दिया जाता है। वह फूलों से सजाया जाता है। पीरमंगल गाने गाये जाते हैं। जात्रा नाटक खेले जाते हैं। कविगान रात-रात भर चलता है। प्रसिद्ध संगीतकार वहां पहुंचते हैं। अब तो सुचित्रा सेन ने वहां एक अच्छी खासी पक्की वास्तु बांध दी है। वह असाध्य रक्त कैंसर से पीड़ित थीं। अमरीका और दुनियाभर इलाज करा आयी। अच्छी नहीं हुई। यहां आकर फकीरबाबा ने उसे जिला दिया। उसने अपनी मोटर वहीं छोड़ दी। उस मंदिर के पास में एक अमृत-कुंड, एक 'पुकूर' (पुष्कर) है। वहां भक्त हाथ-पैर धोते हैं।

मैं भीतर गया तब मुझे वहां कोई नहीं जानता था। एकदम अपरिचित स्थान। नाम पूछा। मैंने बताया—"प्रभाकर।" "उम्र?" "पैंसठ।" मैं कुछ कहूं उससे पहले भीतर से हिंदुस्तानी में गुरु-गंभीर आवाज आयी—"तू क्यों फिक्र करता है? हजार में एक नाम होता है, ऐसा तू लिखनेवाला है। तुझे क्या चिंता है?" मैं कुछ और कहूं उससे पहले और एक आवाज—"तुझे विदेश जाने की बात पूछनी है! अगले साल जाएगा।" फिर मैं कुछ कहूं उसके पहले भीतर की छिपी शक्ति ने मेरे मन की बात ताड़ ली—"तुझे अपनी बीवी के हृदय की बीमारी की फिक्र है। दिल की बीमारी नहीं है वह, सिर्फ दिमाग का वहम है। एक बार यहां ले आ, ठीक कर दूंगा!" इसके बाद मैं अपनी पत्नी

को लेकर वहां जा नहीं सका। पर जो मामूली पुड़िया मैं वहां से ले आया, उससे मेरा पैरों का 'अर्थराइटिस' ठीक हो गया।

शाप के कारण मृत्यु

२३, मई १६१५ को जनमे सूर्यकुमार मैती बहुत साधारण से दिखनेवाले व्यक्ति हैं। रविवार, रोहिणी नक्षत्र में नौ ज्येष्ठ बंगाली संवत १३२२ को जनमे प्रियानाथ मैती और मंदोदरी की पांचवी संतान ग्वाले का धंधा करनेवाले साधारण आदमी थे। बचपन से संन्यासी वृत्ति के, गणित में होशियार, इस कृषि-परिवार में जनमे व्यक्ति के पिता आयुर्वेद के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। उसे बचपन से ही पिता से दवाइयां मुफ्त बांटने का शौक था। इस ग्वाले का कलकत्ते बाजार में खासा दूध का व्यवसाय था। सूर्यकुमार के पड़ौसी उसके बढ़ते व्यवसाय से ईर्ष्यालु हो गये। उन्होंने उसे जेल में १८ दिन के लिए रख दिया। छूटकर आया और सूर्यकुमार ने कहा, "मुझे झूठे इलजाम पर, जिसने जेल में डाला, उसका नाश हो।" सचमुच वह पूरा कुनबा मर गया।

गड़ा धन मिला

सूर्यकुमार ने कुछ धान के खेत खरीदे। उसके घर के पास एक खजूर के पेड़ के नीचे गोराचांद पीर की समाधि थी। पीर हजरत अब्बास अली रजाई १३१६ ईस्वी में अपने बीस अनुयायियों के साथ चौबीस परगना छोड़कर देउला या देवालय आये, जहां राजा चंद्रकेतु का राज था। वह और देखने में ऊंचा, गोरा सुंदर था। रानी कमलादेवी ने उसका नाम 'गोराचांद' रखा। जीवन के अंतिम दिनों में वह अकानंद-बकानंद नामक राक्षसों से जूझने में जुटा था, जो मनुष्य को खाते थे। अस्सी बरस की उम्र में पीर गोराचांद २४ फरवरी १३७३ (१२ फाल्गुन ७८० बंगाली वर्ष) में समाधि प्राप्त कर गये। हारोआ, बारागोधुर के जंगल में उस पीर के शिष्य किनू घोष और कानू घोष ने उन्हें दफना दिया। उसी पीर के मजार पर सूर्यकुमार मैती रोज दूध का एक लोटा चढ़ाया करता था। एक दिन चांदनी रात में पीर ने उसे दर्शन दिये और कहा, "मैं गोराचांद पीर हूं। मेरा तुम्हारे लिए एक आदेश है।" "मैं गरीब आदमी हूं। आपकी क्या इच्छा पूरी कर सकता हूं।"

एक छोटा-सा कमरा है, जहां एक दीवार है। उसमें जाकर लोग माथा टेकते हैं। अपना नाम और उम्र बताना काफी है। भीतर से हिंदी, बांग्ला, अंगरेजी में जवाब क्या, आपके मन में जो भी बात है, वह कह दी जाती है। दो मिनट में रोग का इलाज बता दिया जाता है। यह क्रम दोपहर तक चलता है। बीच में आधा घंटा के लिए बाबा बाहर जाते हैं। कोई उनसे बोलता नहीं। मैं गया उस दिन छह सौ आदमी आये थे। कभी-कभी भीड़ बेकाबू हो जाती है . . .
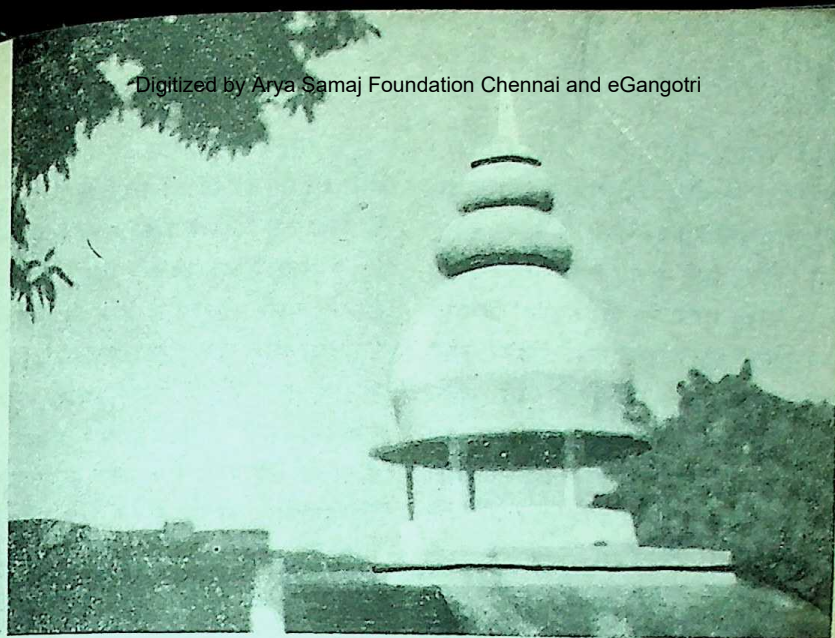
गोराचंद पीर आश्रम

"मुझ पर भरोसा रख। मैं सदा तुम्हारे साथ रहूंगा।"

"मैं हिंदू हूं।"

"कोई फिक्र नहीं। इस्लाम का पीर ही हिंदू का नारायण है।"

"मुझे क्या करना होगा?"

"पैसे मत मांग। तेरा गये जनम का कमाया पैसा वहां सामने गड़ा है"।

सूर्यकुमार एक गैती लेकर दूसरे दिन खेत में पहुंचा। एक पीतल के हंडे में सोने की अशर्फियां ही अशर्फियां, दिनार ही दिनार! सूर्यकुमार ने सोचा कि पीर मेरी परीक्षा ले रहा है। उसने उस धनराशि को मिट्टी में गाड़ दिया। फिर पिता के पास आकर सो गया। (ठाकुरबाड़ी इतिहास: सौम्येन्द्रनाथ मुखोपाध्याय; दासगुप्त एंड कं., १९७४, पृ. १७–१८)

शेर को पेड़ से बांधा

सूर्यकुमार ने दूध का धंधा छोड़ दिया। उसका पुत्र मर गया। एक शेर इस बीच में उस कामदेवपुर गांव में लोगों को तंग करने लगा। वह सूर्यकुमार की गोशाला में आकर सोने लगा। गांव में आतंक। सूर्यकुमार पीर से जाकर हाथ जोड़कर बोला, "इस शेर का कुछ कीजिए।" आम के पेड़ से शेर बंधा हुआ मिला। पेड़ के आस-पास एक निशान जमीन पर खिंचा हुआ। शेर दहाड़े और रोये। फिर पीर के कहने पर रात को उस शेर को छोड़ दिया। वह लौटकर नहीं आया। पीर ने कहा, "नयी ईंटों से मजार बनवा दो।" बना दी गयी। अपने हाथों से सूर्यकुमार ने मजार बनायी। पीर ने बताया कि एक खास वक्त और जगह पर जब सूर्य-

कुमार उस पर बैठेगा, पीर उसमें आएगा। अब पीर ने कहा, मैं तुम्हारी जबान पर एक खत लिखता हूं—अब से रोगी को तू जो कहेगा, उसी से वह अच्छा हो जाएगा।

बारह बरस तक सूर्यकुमार हविष्यान्न पर जीता रहा। उसने साधना की। उसने प्रेम, करुणा, आनंद, अपवित्रता और शांति की विशेष ध्यान-प्रार्थनाएं कीं। अब लोगों तक खबर पहुंच गयी कि सूर्यकुमार में फकीर बाबा मंगल और शनि को आते हैं और असाध्य रोग अच्छे करते हैं। वहां एक फूस की झोंपड़ी बन गयी। साधारण औषधियां दी जाने लगीं। पहले तो चोरी और खोयी चीजों का पता बताते थे। अब वह बंद कर दिया गया है। पर पागलपन, कैंसर, अस्थमा (जीर्ण खांसी), पीठ का दर्द, कोढ़ आदि की दवा वहां दी जाती है। हजारों लोग वहां सारे भारत से खिंचे आते हैं। बिजयसिंह नाहर, हेमंत मुखर्जी, सुखेन दास, कुमार गंधर्व वहां जा चुके हैं।

इस सीधी-सादी जगह का एक अत्यंत साधारण, सहज आदमी। सूर्यकुमार मैती हिंदू है। शालिग्राम, राधाकृष्ण की पूजा करता है। अन्य समय उसमें कोई चमत्कार नहीं। केवल शनि-मंगल के दिन अमुक समय पर, अमुक स्थान पर उ... ऐसी अद्भुत शक्ति आ जाती है कि दीव... के पीछे वह बैठा मन की बात ताड़ ले... है। तड़ातड़ रोगों की औषधियों के नि... सुझाते चला जाता है। है न चमत्कार... "बांगला पीर साहित्येर कथा" डॉ. गि...न्द्रनाथ दास की, शहीद लाइब्रेरी, बा...सात से छपी (१९७६ में) पुस्तक... पीरों के पद दिये हैं। कई अद्भुत स... रहस्यवादी सूफी पद हैं। पीर और फक... बाबा के कई चमत्कार इन कथा-गीतों... वर्णित हैं। उस स्थान पर जाकर ब... शांति मिली।

विश्वास और श्रद्धा विचित्र च... हैं। प्रो. गोकाक को सत्य साईं बाबा... भक्त बना दिया। डॉ. कृष्णन भौतिक-विज्ञानवेत्ता थे, पर परम भक्त थे। विज्ञा... की श्रद्धा से शत्रुता नहीं है। कामदेव... जाकर मुझे लगा कि सारा बंगाल नास्ति... संशयात्मा और 'सिनिकल' नहीं... इसमें भी कहीं हृदय है, जिसमें स... स्पंदित है। इस मिट्टी में अभी भी रा... कृष्ण, विवेकानन्द और अरविन्द प... हो सकते हैं।

—३६ ए, शेक्सपीअर सर...
कलकत्ता-...

हाथ के आरंभ में अंगूठे के नीचे आत्मतीर्थ, अंत में अंगुलियों के ऊपर परम... तीर्थ, उत्तर भाग में कनिष्ठा से कुछ नीचे देवतीर्थ और दक्षिण भाग में तर्जनी औ... अंगुष्ठ के मध्य पितृतीर्थ का निवास माना गया है। हाथ के मूल में ब्रह्मा, मध्य... विष्णु और अग्रभाग में शिव का वास बताया गया है।
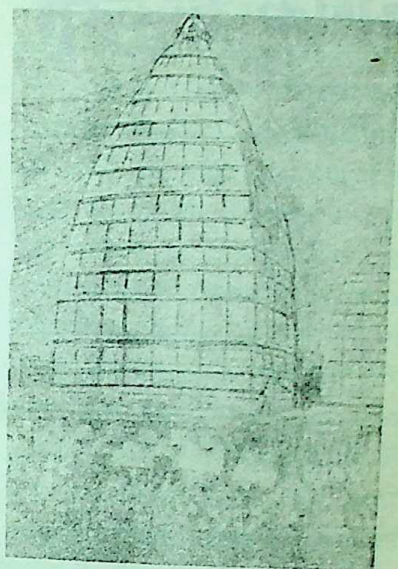
यहां का कंकर-कंकर शंकर है

वैद्यनाथ, कलकत्ता और दिल्ली के रेलवे मेन लाइन पर स्थित जसीडीह जंक्शन से दो मील दूर है। युगों से इस तीर्थधाम की ओर श्रद्धालु तीर्थयात्री वैद्यनाथ बाबा की पूजा और उपासना करने के लिए आते रहे हैं।

वैद्यनाथ स्थित ज्योतिर्लिंग की महत्ता तंत्रशास्त्र में शिव और पार्वती के संवाद में सिद्ध हुई है। कैलाश पर्वत पर पार्वती देवी भगवान शंकर से पूछती हैं कि प्राणियों की सकल कामनाओं को पूर्ण करनेवाला ज्योतिर्लिंग कहां है? भगवान शंकर पार्वती को उत्तर में कहते हैं—

पूर्वसागर गामिन्या गंगाया दक्षिणे तटे
हरितकी वने दिव्ये दुःसंचारे भयावहे
अद्या विवर्त्तते देवी वैद्यनाथो :
पूरयण सकलान् कामान महेश्वरः
सदा चिन्तामणि शिव यथा

● मठपति कृपाकांत झा

पूर्व सागर गामिनी गंगा के दक्षिण तट पर हरितकी (हर्रे का वन) दुःसंचार भयावह बियावान जंगल है, वहां अभी भी वैद्यनाथ महेश्वर हैं। सारी कामनाओं को पूरा करते हुए अभी भी चितामणि के समान हैं।

हर कंकर में शंकर

यहां का कंकर-कंकर शंकर है। यहां

ऊपर: बाबा वैद्यनाथ का मंदिर

के वन, पर्वत, भूखंड में भैरव विराजमान हैं। यहां के नंदन-कानन में बेलवृक्ष, पीपल वटवृक्ष शिव की आराधना में खड़े हैं। इस पावन धाम की धरती कितनी अनोखी, कितनी सुंदर है, सोंधी-सोंधी मिट्टी में युग-युग से जलती हुई तप की अग्नि है। सिद्धों, नाथों, योगियों की साधना की अखंड-ज्योति समय-समय पर इस धाम में जली है। ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों के तप और साधना से यह तीर्थ भक्त और भगवान का संगम-स्थल बन गया है।

सती की चिताभूमि

तांत्रिक और पौराणिक साक्ष्य के आधार पर ५१ शक्तियों में और शक्ति-पीठों में हार्दपीठाधीश्वरी इसी तीर्थ में विराजती हैं। पद्मपुराण के पातालखंड में एक श्लोक है—

'हार्दपीठस्य, सदृश्योनास्ति भूमंडले'

ऐसा हृदयपीठ समस्त भूमंडल में कहीं नहीं है। यहां दक्षराज-प्रजापति की पुत्री सती का हृदय गिरा था। सती का दाह स्थान होने के कारण इसे चिताभूमि कहते हैं।

नाथों, सिद्धों की सिद्धभूमि

५१ शक्तिपीठों को तंत्रपीठ माना गया है। वैद्यनाथ धाम भी ५१ तंत्रपीठों में से प्रधान पीठ है। नाथ संप्रदाय के योगी बाबा गोरखनाथ ने ५१ शक्तिपीठों में शक्ति की पूजा, उपासना की पद्धति तैयार की थी। तंत्रशास्त्रों में सिद्धों के साहित्य में यह उल्लेख मिलता है कि ५१ शक्ति-पीठों में ५२ भैरव और ५२ द्वारपालों की नियुक्ति उन्होंने की थी। द्वारपाल को वीर नाम से पुकारा जाता है।

५१ शक्तिपीठों के रक्षक भैरव और वीर हैं। बाबा वैद्यनाथ मंदिर के रक्षक भैरव और वीर हैं। प्राचीन युग में बाबा गोरखनाथ ही सभी शक्तिपीठों की देख-भाल किया करते थे। इस शक्तिपीठ में गोरखनाथजी ने देवी की उपासना-प्रथा चलायी थी।

गोरखनाथ संप्रदाय के योगी और सिद्ध इस हृदयपीठ में आये और वर्षों तक तप करके अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त किया। आज भी नाथ बाड़ी नामक स्थान इस मंदिर के निकट स्थित है। इस स्थान से प्राचीन मुर्दों की हड्डियां और खोपड़ियां भी मिली हैं। कहते हैं, वैद्यनाथ मंदिर के चारों ओर अनेक स्थानों वन-खंडों, गुफाओं, कंदराओं में सिद्धों, नाथों, योगियों की भूमि थी। कहा जाता है कि आदियुग में मछंदरनाथ की भी यही तपोभूमि थी।

आत्मस्वरूप-ज्योतिर्लिंग

त्रेता युग में लंकापति रावण ने कैलाश पर्वत पर तपस्या कर भगवान शंकर से वरदान-रूप में आत्म-स्वरूप ज्योति-र्लिंग को पाकर अपने लंका-साम्राज्य में स्थापित करने की ठानी थी, किंतु वह आत्म-स्वरूप ज्योतिर्लिंग को लंका नहीं ले जा सका। लंका प्रस्थान करते समय शिवजी स्वयं माया का दृश्य दिखाकर इसी चिता-भूमि में स्थित हो गये, प्राणियों की काम-नाओं को पूर्ण करने के लिए।

यहां का कंकर-शंकर है। यहां के वन, पर्वत, भूखंड में भैरव विराजमान हैं। यहां के नंदन-कानन में वृक्ष, पीपल वटवृक्ष शिव की आराधना में खड़े हैं। इस पावन धाम की धरती कितनी अनोखी, कितनी सुंदर है, सोंधी-सोंधी मिट्टी में युग-युग से जलती हुई तप की अग्नि है। सिद्धों, नाथों, योगियों की साधना की अखंड-ज्योति समय-समय पर इस धाम में जली है। ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों के तप और साधना से यह तीर्थ भक्त और भगवान का संगम-स्थल बन गया है।

'शिव रहस्य' में लिखा है कि सर्व प्रथम अश्विनीकुमार '(देवों के वैद्य) ने भवरोगहर में 'स्नान-कामना ज्योतिर्लिंग की पूजा की थी। अश्विनीकुमार को बाबा वैद्यनाथ ने आयुर्वेद की चिकित्सा का ज्ञान कराया। बाबा ने अश्विनीकुमार को रोगों से मुक्ति दिलायी और उनकी कामनाओं को पूर्ण किया, इसलिए वे वैद्यनाथ कहलाये।

मिथिलांचल की कथा में जनकपुर के राजा राजर्षि जनक द्वारा वैद्यनाथ महादेव की उपासना का उल्लेख मिलता है।

अपने साम्राज्य विस्तार की यात्रा में महाबली भीम पूर्व वाहिनी गंगा के किनारे बसे तीर्थों में आये और पूजा-आराधना की। वे गंगा किनारे बसे जाघीरा ऋषि के आश्रम (सुलतानगंज) में गंगा की उपासना कर गंगाजल लेते हुए पांव-पैदल कामना धाम की ओर आये थे और बाबा वैद्यनाथ की पूजा की थी तथा वे भी दिग्विजय की कामना प्राप्त करते हुए गये।

आद्यगुरु शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में शिव मंदिर की स्थापना की थी और सनातन पूजा पद्धति को विकसित किया था। भारत-यात्रा के दौरान आद्यगुरु शंकराचार्य इस क्षेत्र में आये और अपने श्लोक में यहां के ज्योतिर्लिंग की महत्ता प्रकट की—

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिका निधाने सदा बसन्त -गिरिजा समेतम्
सुरासुरांधित पादपद्म श्री वैद्यनाथं तमहं नमामि।

दक्षिण भारत के ऐतिहासिक विवरण में यह चर्चा आयी है कि चोलवंश के सम्राट राजेन्द्र चोल ने बंगाल पर चढ़ाई की थी तथा विजय प्राप्त की थी। बिहार, बंगाल के गंगा किनारे बसे भू-भागों को अपने आधिपत्य में कर लिया था और वहां के कई राजाओं को हराकर गंगा नदी के तट तक जा पहुंचा था।

बंगाल-विजय के पश्चात् राजेन्द्र चोल ने (गंगईकोंड) की उपाधि ली थी। चोल राज्य के समय बंगाल प्रांत का एक भाग वैद्यनाथ धाम में पड़ता था। चोल राजा अपनी विजय की खुशी में गंगा किनारे बसे तीर्थों से गंगाजल लेकर इस धाम में आये तथा उन्होंने एक निश्चित स्थान पर वैद्यनाथ की पूजा, आराधना की। वैद्यनाथ

धाम में एक चोल पहाड़ी भी है।

काव्यपूजित बाबा वैद्यनाथ

मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति की शिवभक्ति तो सर्वविदित है। वे मिथिलांचल से अनेक बार बाबा वैद्यनाथ की पूजा करने आये थे। उनके एक गीत में बाबा वैद्यनाथ का गुणानुवाद हुआ है—

जगतविदित वैद्यनाथ सकल गुण आगर
सेतो हैं प्रभु त्रिभुवन नाथ, दयाकर सागर हे
हे अंग भस्म शिरगंग गले बिच विषधर हैं

मध्ययुग में महान संत महाकवि तुलसीदास इस पावनधाम में आये थे। उनकी विनय पत्रिका की इन पंक्तियों में भावांजलि प्रस्फुटित हुई है—

इच्छित फल बिनु शिव अवराधे
लहं न कोटि जोग जप साधे

बंगला साहित्य के मूर्धन्य महाकवि कीर्तिवास, जिन्होंने बंगला रामायण रची थी भी इस पावनधाम में आये ग्रौर बाबा का आशीर्वाद लेकर गये थे।

महाकवि जयदेव, स्वामी हरिदास श्रीकृष्णचैतन्य (चैतन्यमहाप्रभु) अपने तीर्थाटन के समय इस पावन भूमि में आये ग्रौर वहां पर बसे लोगों को कृष्ण भक्ति की ग्रोर झुकाया। तभी चैतन्य प्रभु के आश्रम-स्थल (बंगाल के नवद्वीप) वैद्यनाथ धाम की कीर्त्तन परंपरा [illegible] हुई है।

महापुरुषों की प्रेरणा-स्[illegible]

इस पावन धाम में बंगाल के ता[illegible] पीठ के महान साधक बामाखेपा आये [illegible] बहुत दिनों तक श्मशानी-महेश्वर की [illegible] भूमि में साधना की। उनकी गायी प[illegible] वलियां यहां के कीर्तन-भजनों में आज [illegible] गायी जाती हैं।

शैव संस्कृति की पुण्य स्[illegible]

वैद्यनाथ धाम की पावन धरती [illegible] क्षेत्र के साथ-साथ शैव संस्कृति का पु[illegible] स्थल भी है। वर्षों पूर्व यहां शैव संस्[illegible] की प्रत्यक्षमूर्ति बम-बम ब्रह्मचारी [illegible] आविर्भाव हुआ था। तत्कालीन समय [illegible] इस वन्य प्रदेश में उन्होंने गंगाजल, बेल[illegible] पत्र से वैद्यनाथ भक्ति की ग्रोर यहां [illegible] मानवों को भी प्रवृत्त किया शैवा[illegible] पूजा पद्धति विकसित की। श्रावण [illegible] में विल्वपूजा. विल्व-महायज्ञ उन[illegible] देन हैं।

—श्री अर्जुन निवास करामत संगीता[illegible]
विलासी टाउन, वैद्यनाथधाम, देव[illegible]
जिला संथाल परगना (बिहा[illegible]

अपराधी से कहा गया कि वह बढ़कर सामने खड़ी प्रतिमा का चुंबन करे! कांसे [illegible] बनी प्रतिमा बहुत बड़े आकार-प्रकार की थी। जैसे ही 'अपराधी' घोषित व्यक्ति [illegible] प्रतिमा को छुआ—उसमें बने दरवाजे खुल गये। उसमें सब तरफ छोटे-बड़े छुरे लगे [illegible] उसी समय वह व्यक्ति झटके के साथ मूर्ति के अंदर गिर गया। दरवाजे बंद हो ग[illegible] और, थोड़ी देर बाद उसका नाम-निशान भी नहीं रहा। अपराधियों को दंड देने [illegible] यह विधि थी—'होली वेम' नामक गुहा संप्रदाय की, जो टोने-टोटके पर विश्व[illegible] रखता था।

—डी.[illegible]

औषधि विज्ञान की दुनिया: भूत-प्रेतों का अस्तित्व!

● डॉ. सतीश मलिक

यह भूत-बाधा है या रोग

रामदेवी, दिल्ली: मेरा पुत्र ३० वर्ष का है। उसने प्रेम-विवाह किया है। वह दो 'मिनी' बसों का मालिक भी है। घर में आजकल कलह बनी हुई है। वह कुछ महीनों से रोज शाम को शराब पीता है। आजकल उसकी सिर्फ एक ही रट है कि उसके मृत पिता की आत्मा दिखायी देती है, और उसे अपने पास बुलाती है। कभी वह कहता है कि खिड़की से भूत आ रहा है। कभी स्वप्न में भी इसी तरह बड़बड़ाता है। डॉक्टर साहब, वह मेरा इकलौता पुत्र है, मैंने कई सयानों व झाड़-फूंकवालों को दिखाया, परंतु व्यर्थ। इसके पिता भी अत्यधिक शराब पीने के कारण, जिगर के रोग से स्वर्गवासी हुए थे, तब यह १५ वर्ष का था। आजकल यह कई बार अपने पिता की तरह ही बोलता है। क्या यह भूत-बाधा है या कोई रोग?

आपके पति जब स्वर्गवासी हुए, तब यह १५ वर्ष का था। उनकी इसके मन पर एक गहरी छाप पड़ी है। इसी वजह से यह अपने पिता के कदमों का अनुसरण कर रहा है। देखा गया है कि यदि पिता शराब का आदी हो, तो पुत्र को भी यह लत लग जाती है। अधिक पैसा, कारोबार से ज्यादा थकान, पियक्कड़ दोस्त व घर में कलह भी, शराब पीने के कारण हो सकते हैं। अत: जहां तक संभव हो इन कारणों को हटायें। शराब के कारण आपके पुत्र को भ्रम (हैल्यूशिनेशन) हो रहे हैं। जैसे ही शराब छूटेगी, उसको भूत दिखना भी बंद हो जाएगा। आप उस पर निगरानी रखें क्योंकि ऐसी स्थिति में वह खिड़की से कूद कर आत्महत्या कर सकता है। आप समस्या को मनोवैज्ञानिक ढंग से देखें तथा शीघ्र ही मनोचिकित्सक से संपर्क करें।

इस स्तंभ के लिए अपनी समस्याएं भेजते हुए पाठक कृपया अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में पूरा परिचय, जिसमें आयु, पद, आय एवं पते का भी उल्लेख हो, अवश्य भेजें। इस विवरण के अभाव में समस्याओं का समुचित निराकरण संभव न होगा।
—संपादक

पीर की मजार का असर

क. ख. ग., मेरठ : मेरा १२ वर्ष का पुत्र करीब ४ महीनों से दौरों से पीड़ित है। दौरे के समय वह पहले बोलना बंदकर आंखें मूंद लेता है, फिर किसी बड़े आदमी की तरह बोलता है। हम उसे मौलवी के पास ले गये, तो उसने बताया कि स्कूल से लौटते समय किसी पीर की मजार पर उसने पेशाब कर दिया है। जिससे उसका भूत बच्चे पर आ गया। भूत की शांति के लिए जगह-जगह चढ़ावा व तंत्र-मंत्र करके हम थक गये हैं। तीन महीने से वह स्कूल नहीं जा रहा, कहीं उसे स्कूल से ही न निकाल दिया जाए। बड़ा पुत्र पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहता है। यह भी पढ़ता तो अच्छा था, परंतु नंबर कम लाता रहा है।

आपका पुत्र वास्तव में एक जाने-माने मानसिक रोग मृगि (हिस्टीरिया पसेसन) से पीड़ित है। आप उसके स्कूल में जाकर पता लगायें कि बीमार पड़ने से पूर्व वह किसी कारणवश या किसी विषय में कमजोर या किसी अध्यापक के भय के कारण तनाव में तो नहीं था। ऐसा भी हो सकता है कि आप लोगों ने उसके ऊपर अच्छे नंबर लाने के लिए बहुत जोर दिया हो, और वह पढ़ाई से कतराता हो। आमतौर पर इस उम्र में बच्चों की समस्या स्कूल की पढ़ाई से संबंधित होती है। इलाज के तौर पर आप उसकी हर बात मानने से इनकार कर दीजिए। साथ ही न तो उससे [illegible] नहीं चढ़ावे चढ़ायें। उपचार के लिए [illegible] मनोचिकित्सक के पास ले जाएं। स्कूल में जितनी जल्दी भेजें, उतना ही अच्छा है। हां, उसके मन पर अच्छे नंबर लाने का तनाव कतई न डालें। उसके सामने बड़े भाई की अधिक प्रशंसा भी न करें। ऐसा लगता है कि उसने ऐसी ही बीमारी से ग्रसित कोई रोगी देखा है, या सुना है।

दिल पर कब्जा

अ. बस. स., हिसार : मेरी ३९ वर्षीय [illegible] किसी जादू-टोने की शिकार हो गयी है। घटना इस प्रकार है—मेरी मां बहन [illegible] कालेज में दाखिला दिलाने के लिए अपने पड़ोसी को साथ ले गयी थी। मेरे पिता का १५ वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया। रास्ते में पड़ोसी ने रिक्शा रोककर पानी पिया व मां को भी पिलाया। मेरी [illegible] कहती है कि उसने पानी में कुछ मि[illegible] दिया। क्योंकि, उसके बाद मां का मन अपने काबू में नहीं रहा। वह कहती है 'मेरे दिल पर उसने काबू कर लिया है' वह न चाहने पर भी उसी के बारे में सोचती [illegible] टकटकी लगाकर उसकी राह देखती रहती हैं। साथ ही, बाद में वह अपनी मानसिक स्थिति पर खीजकर पछताती भी हैं। [illegible] बार वह खुदको मारती-पीटती, बालों [illegible] नोचती व कपड़े फाड़ डालती है। [illegible] हैं कि पड़ोसी ने उससे चुनौती के रू[illegible]

कहा था कि 'तुम मेरे इशारों पर नाचोगी।

डॉक्टर साहब, मेरी मां ने बहुत दुःख देखा है; पहले तो पिताजी और मां की आपस में बनती न थी। फिर वह विधवा हो गयी। दिन-रात सिलाई-कढ़ाई का काम कर उन्होंने हमें पाल-पोसकर बड़ा किया। दूर एक गांव में किसी स्त्री को 'माता' की चौकी आती है। उससे वह कुछ फूल लायी हैं, उन फूलों से छुये पानी को वह पी रही हैं। बताइए, मैं क्या करूं ?

मुझे आपसे तथा आपकी माताजी से पूर्ण सहानुभूति है। आपकी मां का जीवन कभी सुखी नहीं रहा। अचेतन मन में दबी हुई इच्छाएं जब मौका पाकर सामने आती हैं, तब ऐसी ही मानसिक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। चूंकि हमारा समाज व उनकी अंतर्चेतना ऐसी इच्छाओं की पूर्ति नहीं होने देती। जितनी ही यह इच्छा प्रबल होकर बाहर आती है, उतना ही चेतन मन से उन्हें लड़ना व दबाना पड़ता है। इसी कारण वह अपने को मारती हैं।

हो सकता है कि उस पड़ौसी ने डराकर या सुझावों द्वारा ऐसा कहा हो। परंतु जब तक आपकी मां स्वयं भी ऐसा नहीं चाहतीं, वह कुछ नहीं कर सकता था। वैसे भी, पड़ौसी या आपकी माताजी को दोषी ठहराने से कोई लाभ नहीं।

चूंकि आपकी माताजी को 'माता' पर दृढ़ विश्वास है। ऐसी स्थिति में मनोबल की बहुत आवश्यकता है। आप उन्हें ऐसे काम से मत रोकें, जिससे उनका मनोबल बढ़ता हो। आप उन्हें मनोचिकित्सक को दिखाएं। ●

सम्मोहन (हिप्नोटिज्म) अत्यंत प्राचीन विद्या है, जिससे यूनान, मिस्र और पर्सिया के निवासी परिचित थे, लेकिन अट्ठारहवीं सदी में वियाना के डॉक्टर फ्रेंज ऐंटोन मेस्मर ने इसका चिकित्सा के क्षेत्र में उपयोग कर, इसे वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। फलतः इसे उनके नाम पर 'मिस्मरेज्म' के नाम से जाना गया। अंगरेज डॉक्टर जेम्स ब्रेड ने उन्नीसवीं शताब्दी में इसे 'हिप्नोटिज्म' और 'हिप्नोसिस' नाम दिया। इस पर गंभीर रूप से अध्ययन हुआ और 'हिप्नोथैरेपी' का विकास हुआ, जिसे १९५० में ब्रिटिश और अमरीकी मेडीकल एसोशिएशनों ने चिकित्सा के क्षेत्र में उपयोग में लाये जाने के लिए विधिवत मान्यता दे दी। आज 'हिप्नोथैरेपी' से विविध प्रकार के भय (फोबिया), सिरदर्द (माइग्रेन), अनिद्रा रोग, वात रोग, दमा, अवसाद, यौन-संबंधी अक्षमताएं, समलिंगी मैथुन, धूम्रपान, शराब और मादक द्रवों के सेवन की आदतों के छुड़ाने आदि में सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। हिप्नोटिक एंस्थेसिया का उपयोग केवल दांतों के उपचार में ही नहीं बल्कि बड़े-बड़े ऑपरेशन में चिकित्सकों द्वारा किया जाता है। इतना ही नहीं इसका उपयोग अमरीकी सैन्य गुप्तचरी संस्था द्वारा गुप्तचरों पर भी किया जाता है।

वैसे जो मुझ पर गुजरी है, वह कि
पर भी गुजर सकती है, ऐसा न
कहा जा सकता। बहुत सारे वैज्ञानि
चिंतनवाले इसे कथा मानेंगे। मैं भी य
मानता था। पर, इस घटना के बाद मे
विज्ञान-बुद्धि पानी भर रही है।

सन १९८० की बात है।
एक मित्र ने बताया कि जन्माष्ट
पर स्वामी कृष्णानंद के शिष्य स्वा
दिव्यानंद मथुरा आते हैं। उनके बारे

अलकनंदा क अघोरी जो शव खाता है!

● कमलेश शुक

तमाम बातें भी बतायीं। अलौकिक घ
नाएं सुनकर मैं प्रभावित हुआ और म
ही मन जन्माष्टमी के मौके पर मथु
जाने की ठान ली। मैं गया, लेकिन दुर्भा
से वहां उनसे भेंट नहीं हुई।

उसी नवम्बर में चाचाजी की का
तबियत खराब हुई। जांघ का फो
निकला था। चार महीने तक अस्पता
में रहकर ऊब चुका था। उनकी तबि

में सुधार हुआ । मुझे भागम-भाग का भूत अपने वश में किये था । अतः टिकट कटाकर अलकनंदा की ओर चल दिया । इधर जाने का मन 'लिविंग विद द हिमालयन मास्टर्स' पढ़कर हुआ था (यह महाग्रंथ अमरीका से प्रकाशित हुआ था, जिसे स्वामी राम ने लिखा है।)

अलकनंदा पहुंचने के बाद पांच दिन तक यूं ही घूमता रहा । कोई ऐसा नहीं मिला, जो मेरे कुछ काम का होता । अधिकतर कुछ भिखारी मिले, जो कुछ रुपये भोजन या फिर कंबल आदि की मांग करते थे । छठवें दिन यानी ६ अप्रैल, दिन वृहस्पतिवार को घूमते-घूमते काफी दूर निकल गया। शाम होने को थी। ठंडी हवाएं चलने लगी थीं । मैंने अपना कंबल शरीर से लपेटा लिया और मफलर कानों में कसकर बांध लिया। लौटने को हुआ, तभी आवाज सुनायी दी। लगा, किसी ने मेरे घर का नाम--'कल्लू' कहकर पुकारा है । मैं हड़बड़ाया कि यहां कौन हो सकता है, जो मेरा यह नाम जानता है। मैंने चलने को कदम उठाया, तभी बादल गरजने-जैसी आवाज आयी, 'क्या इधर-उधर ताकता है । इधर चला आ ।' मैं दायीं तरफ घूमा । आवाज उधर से ही आ रही थी और ढलान उतरकर करीब बीस कदम चला, देखा एक शिलानुमा ऊंचे आसन पर एक बेहद गंदे काले कंबल में लिपटी गेहुवें रंग की गंदी-सी औरत बैठी है, तभी अचानक सड़े-गले कुत्ते की लाश से आनेवाली बदबू का एक भभका अंदर घुसता चला गया ।

"अच्छा ब्राह्मण का छोरा है, तू नाक में रूमाल लगा ले । न हो तो मैं दूं ।" मुझे उसकी यह बात बहुत खराब लगी और मैंने गुस्से में कहा, "कैसे बात की जाती है, यह भी नहीं आता है, क्या ?"

"चुप्प . . . तुझे क्या बोलने की तमीज है । अच्छा, तेरे कालेज में नाम लिखा लूं पी. पी. एन. कालेज में, जहां तू पढ़ाता

इस समय दाई मां डरावनी नहीं लग रही थीं । सड़ी लाश-जैसी बदबू भी नहीं आ रही थी । हां, गुफा के आसपास हड्डियों के ढांचे आदि पड़े थे । मेरी आंखें खुलते ही दाई मां बोली-- "डरपोक कहीं का..."

है । सिखाएगा मुझे तमीज मूर्ख . . .। मैं हक्का-बक्का । यह इसे कैसे पता चला ? तभी वह अपने कंबल से एक स्याह सांप निकालकर बाहर फेंकती बोली, "जा, ठंड में बर्फ हो जाएगा, कंबल की गरमी तुझे अच्छी नहीं लगती, पापी कहीं के ।"

इतना कहकर वह मुसकरायी, फिर अचानक शेर की दहाड़ हुई । लेकिन, नजर उठायी तो देखा कि एक सियार (शृंगाल) खड़ा है। वही दहाड़ (शेर-

जैसी) की आवाज निकाल रहा है। मुझे आश्चर्य होने के साथ भय भी लगा। उसने सियार की ओर घूरा फिर बोली, "जा, सुन लिया . . ." सियार खड़ा रहा। वह चिल्लाकर बोली, "भाग यहां से . . . तेरी बात सुन ली है मैंने।"

इस भिखारिनी-जैसी गंदी तांत्रिक महिला ने मुझे और अचरज में डाल दिया, जब वह भी बिलकुल उसी तरह दहाड़ी-जैसे कुछ देर पहले सियार दहाड़ा था। दहाड़ सुनकर सियार चला गया।

मैं लगातार ईश्वर का स्मरण कर रहा था कि आज प्राण बचा ले। मन में आया कि चला था किसी दिव्यानंद-जैसे संत से मिलने, मिल गया इससे। वह बोली, "दिव्यानंदजी से क्यों मिलना चाहता है?"

"क्या दिव्यानंदजी यहीं हैं," न जाने कैसे मेरे मुंह से निकल गया।

वह दहाड़ी, "जो मना करूंगी, वही करेगा तू। दिव्यानंद से मिलेगा . . ." फिर कुछ आसमान की ओर देखकर बुदबुदाने लगी-जैसे लोग फोन पर अपने किसी प्रिय से बात करते हैं। फिर मुझसे बोली, "जा, बाबा का संदेश आया है, अभी चला जा। इसी रास्ते पर छह मील है यहां से। एक ऊंची पहाड़ी के पास पहुंच जाना, तो दायीं ओर मुड़कर एक गुफा दिखेगी। वहीं होंगे।"

मैं उठा और चलने लगा, तभी बोली "रास्ते में कोई मिले तो डांटकर कह देना कि 'दाई मां' से कह दूंगा।"

"तो आप दाई मां हैं," इतना कहकर मैं उनके चरणस्पर्श हेतु झुका। अभी पैरों पर हाथ जा भी नहीं पाये थे, तभी दाई मां ने एक तमाचा मेरे गाल पर जड़ दिया। बोलीं, "जा, खुश रह", मैं अजीब आशीष लिये बाबा दिव्यानंद से मिलने चल दिया।

रास्ता खराब होने लगा था अंधेरा काफी बढ़ गया था। ठंड भी पूरे रंग पर आ गयी थी। कई जगह कुछ सांपों ने बड़ी तेजी से रास्ता काटा, पर मैं 'दाई मां से कह दूंगा' का जाप कर रहा था। अचानक इतना थक गया था कि लौटने का मन हो आया और सोचा थोड़ा आराम कर लूं, तो लौट चलूं। मैं बैठना ही चाहता था कि तभी एक तेज प्रकाश हुआ। दूधिया प्रकाश। उस प्रकाश से सारा क्षेत्र जगमग हो उठा। वह प्रकाश गायब हुआ तो नीला प्रकाश हुआ। इससे डर पैदा हुआ। तभी खूनी लाल प्रकाश हुआ। ऐसा लगा कि सारी वनस्पतियां, सारा क्षेत्र सब कुछ खून में डूबा है।

फिर मैंने कुछ नहीं देखा। आंख खुली तो एक गुफा के सामने पड़ा था। बदन पर बनियान और अंडर-वियर थी। दाई मां मुंह पर पानी डाल रही थी। इस सामने एक दिव्यरूप संत बैठे थे। इस समय दाई मां डरावनी नहीं लग रही थीं। सड़ी लाश-जैसी बदबू भी नहीं आ रही थी। हां, गुफा के आसपास हड्डियों के ढांचे आदि पड़े थे। मेरी आंखें खुलते ही दाई मां

बोली, "डरपोक कहीं का"। मैं उठकर बैठ गया। बाबा मुसकराये और मेरे जान-पहचान के संतों के बारे में पूछते रहे।

फिर बोले, "विष्णु सहस्रनाम सुनाओ।" मैं रटे श्लोकों को बांचने लगा। बाबा ने आंखें बंद कर लीं और दाई मां बैठी-बैठी मुसकराती रहीं। मैंने यह बंद ही किया था कि दाई मां ने और कुछ सुनाने का इशारा किया। मैं ने राम-रक्षा स्तोत्र सुनाया। यह समाप्त करने के बाद अचानक मन में न जाने क्या आया, मैंने बाबा के चरण छू लिये। अभी हाथ पैरों में लगे थे कि लगा, चेतना लुप्त हो गयी है। सारे शरीर में हजारों वोल्ट बिजली प्रवाहित हो रही है। शरीर निष्क्रिय होता चला गया। अचानक मुझे लगा कि मैं अपने शरीर से बाहर खड़ा हूं। मेरा मृत शरीर पड़ा है और मैं उड़ रहा हूं। बरफीले पहाड़ों के ऊपर उड़ता चला जा रहा हूं। वातावरण एक अजीब खुशबू, मीठी संगीत-लहरियों में डूबा है।

पता नहीं कितनी देर तक यही स्थिति रही। होश आया तो दाई मां कह रही थीं, "बहुत जिद्दी है। मूर्ख तो है ही। मैंने मना किया था, बल्कि जब इसने मेरे पैर छुए तो मैंने एक तमाचा भी मारा था, फिर भी वही किया"। फिर वे मुझसे बोलीं, "आज तू दो बार मरा है। इस बार तो भस्म ही हो जाता। बाबा ने कृपा की।"

तभी बाबा ने कहा, "जिद्दी नहीं है, बचन का पक्का है। मथुरा गया था। वहां जब मैं नहीं मिला, तो कहा था कि चाहे जितना छिपो, मिलूंगा जरूर। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में। वही किया, मिलने यहां तक चला आया।" फिर दाई मां से बोले, "भूखा है, इसे प्रसाद खिलाओ और वापस भेजो।"

एक मिनट भी नहीं लगा था। दाई मां एक शव उठा लायी थीं। ऐसा शव जिसकी गरदन और पैर गायब थे। बस, गले के नीचे से कमर तक का हिस्सा था। मुरदे में जबर्दस्त दुर्गंध आ रही थी। दाई मां ने कहा, "भोग लगाइए।" देखते-देखते ही बाबा ने मुरदे का पेट मुक्का मार-कर फाड़ डाला और मांस का एक लोथड़ा निकाल लिया। दाई मां ने मुक्का मार-कर शव की छाती तोड़ी और एक लोथड़ा निकालकर खाने लगीं। दोनों बड़े स्वाद से खा रहे थे।

मैं चुप बैठा था। बड़ी उबकाई-सी आ रही थी। बदबू के मारे बैठा नहीं जा रहा था। मेरा ब्राह्मणत्व जाग गया था। उसके अलावा मैंने आज तक ऐसा कुछ खाया भी नहीं था। बाबा दूसरा लोथड़ा निकालते हुए बोले, "अरे, तू क्यों बैठा है? हमारे साथ ही खा ले।"

थोड़ी देर चुप रहे फिर बोले, "खा खा, देर नहीं कर। अगर जरा भी संकोच किया तो भूखे रहना पड़ेगा। ये (दाई मां) अभी साफ कर देंगी।"

न मैं कुछ बोला और न ही कुछ

छुआ, पर दाई मां बिना बोले-चाले खाने में जुटी थी। मैं सोच रहा था कि कहां फंस गया। बाबा भी दाई मां के साथी हैं, संन्यासी नहीं, औघड़ हैं। अगर, खिलाना था तो लखनऊ की गिलौरी खिलाते। मथुरा के पेड़े खिलाते।

बाबा ने मुसकराकर देखा। मेरी तरफ बोले, "तू ठीक सोच रहा है, कल्लू। संन्यासी वही हैं, जो बिल्ली की तरह मलाई खाते हैं, दूध पीते हैं सांपों की तरह। तुम सबको ठगते हैं। फिर कोठियां बनवाते हैं . . . अच्छा, ले खा!" बाबा ने गोश्त का लोथड़ा मेरे हाथ पर रख दिया। मैंने अपना मुंह घुमा लिया। जब मैंने मुंह घुमाया था, तब तक उस गोश्त से सड़ांध बदबू आ रही थी। लेकिन फिर गिलौरी-जैसी खुशबू आयी। मैंने सर घुमाया तो मेरे हाथ में गिलौरियां रखी थीं। बाबा मुसकराकर बोले, "अब तो खा ले।"

मैंने खाना शुरू किया। आज तक कई बार खा चुका हूं, पर आज का स्वाद 'गूंगे का गुड़'-जैसी स्थिति का द्योतक था। मैं उसे लिखकर नहीं स्पष्ट कर सकता और न अनुभव करा सकता हूं।

दिव्यानंदजी बोले, "पांव छूना है, ले छू। और, जा!"

मैंने पांव छुए। अबकी बार कुछ नहीं हुआ। फिर बोले, "अपने को संभाल, थोड़ी जिम्मेदारी समझ। सीधे गांव न जाना। हैलट जा। वार्ड नं. २६—बेड नं. १२ में तेरे चाचा मिलेंगे। उनके जहरीला फोड़ा है। उनका बुलावा आ गया है। तेरे पिता की भी दरख्वास्त . . ."

तभी दाई मां चिल्लायी, "बाबा, आगे कुछ मत बताओ। यह सहन नहीं कर पायेगा।"

बाबा ने हंसकर आंखें बंद कर लीं। मैं पहली बात समझ गया, लेकिन दूसरी बात . . .

दिव्यानंदजी से आशीष लेकर मैं दाई मां के साथ चल पड़ा। कुछ ही मिनट लगे थे अपने आवास आने में। जाते-जाते दाई मां कह गयी थीं कि अगली रामनवमी को अयोध्या में बाबा राम मंगलदास के आश्रम के पास मिलेंगी।

मैं कानपुर आया। अस्पताल गया। चाचाजी भरती थे। उनके फोड़े का आपरेशन हुआ था। बायप्सी टेस्ट में कैंसर का फोड़ा बताया गया था। और, दिव्यानंदजी की भविष्यवाणी १२ अप्रैल, ८१ को सत्य हो गयी। चाचाजी का इंतकाल हो गया। चाचाजी का क्रियाकर्म हुआ। १३ दिन निपटी। उसी दिन पिताजी की तबियत कुछ खराब हुई। फिर खराब होती चली गयी। २८ अप्रैल को पिताजी भी दिवंगत हो गये।

आज जब भी याद आती है, तब वह बदबू, खुशबू, हवा में उड़ना, रोशनी, मुरदे का गोश्त—सारा कुछ एक सपना लगता है, पर जब भविष्यवाणी के प्रति सोचता हूं तो वह सपना नहीं लगता है, सच्चाई लगती है।

—ग्रा. पो. —खंभौली, जिला-उन्नाव

था।
ताप
बीच
बलि
होते
टाइप
साधा
मुराई
पर द
अपना
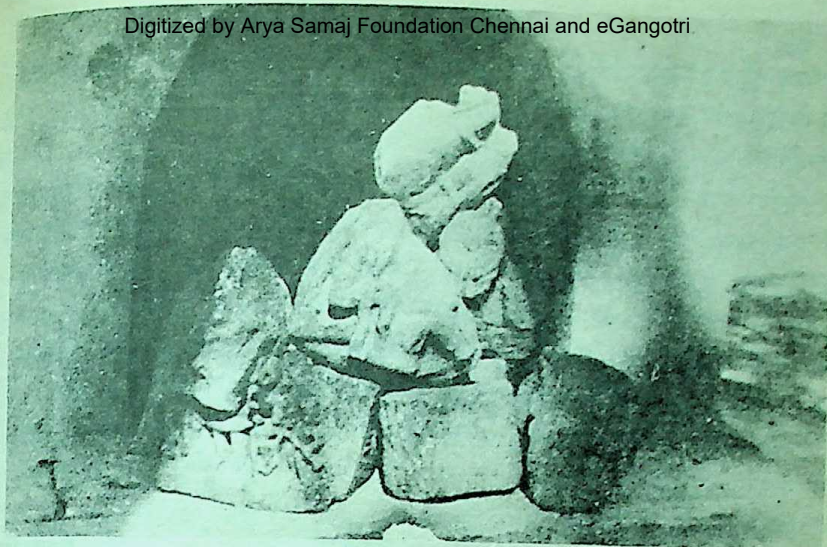
हवा में उड़ती भूतों की पल्टन

• एस. लाल

अगहन का महीना था और कृष्ण-पक्ष की रात। पहला पहर चल रहा था। एक जगह चार आदमी बैठे अलाव ताप रहे थे। सभी युवक—२५ से ३५ के बीच थे। शरीर से भी लंबे-तड़ंगे और बलिष्ठ। एक सज्जन नागरिक प्रतीत होते थे—सुकुलजी। दूसरे सज्जन फौजी टाइप के थे—हीरा सिंह। बाकी दोनों साधारण देहाती किसान थे—महाबीर मुराई और बिंदा दास।

महाबीर मुराई ने हथेली की तंबाकू पर दो-तीन फटाके लगाने के बाद जब अपना वाक्य पूरा किया, तो हीरासिंह बोले, "सुकुलजी, सुना तो मैंने भी है कि एक बार महाराज साहब ने भीट की खुदाई करायी थी। मगर उसमें इतनी डरावनी चीजें निकलीं कि पंडित की राय से उन्होंने उसी दिन वह गड्ढा भरवा दिया था।"

"अच्छा ! क्या निकला था, उसमें ?" सुकुलजी को अचरज हुआ।

तब तक महाबीर बोल उठे, "मैं बताता हूं जीजा, परसन काका-जैसे कई बुजुर्ग बताते हैं कि उस खुदाई में पालथी

ऊपर का चित्र : इसी स्थान पर खुदाई हुई थी, जहां बाद में गांववालों ने देवी का मंडप बना दिया

मारकर बैठे हुए एक आदमी का समूचा कंकाल निकला था और उसके आस-पास पूजा के बर्तन, हथियार वगैरह।

बिंदा दास ने भी अपनी जानकारी दी, "मुकुलजी, मेरे बाबा बताया करते थे कि यह भीट पहले राजमहल था। पांडव परिवार के किसी राजा ने इसे बसाया था। तब इसका नाम पांडु पुरी था, जो बाद में पांडुरी होते-होते पड़री बन गया। बाद में, यहां भारशिव जाति का कोई राजा हुआ था। उसी राजा के महल का खंडहर आज भीट-जैसा दीख रहा है। इस भीट में खजाना होने की बात मैंने और भी कई पुराने लोगों से सुनी है।"

महावीर फिर कहने लगे, "जीजा, मेरा तो विचार है कि एक दफे इस भीट की खुदाई की जाए। अगर कुछ मिलता है तो ठीक है, नहीं तो तमाशा ही सही।"

"मगर यह भी तो सोचो, दस बीघे के भीट में पता नहीं खजाना कहां पड़ा है! क्या तुम पूरा भीट खोद डालोगे?"

"पूरा भीट खोदने की क्या जरूरत है? हम ठीक वही जगह खोदेंगे, जहां खजाना गड़ा हुआ है।"

"उसका पता कैसे लगेगा?"

"एक बाबा को लाऊंगा। वह कजली बनाते हैं। उससे गड़ा हुआ धन दिखायी देता है। बड़े करामाती बाबा हैं। जलालपुर धई के पास रहते हैं। मैं गया था, तो बोले, 'ऊंट की हड्डी ले आओ, तब कजली बनायी जा सकती है।"

"ऊंट की हड्डी! कहां मिलेगी?"

"मिलेगी क्यों नहीं? हड्डी तो मैं ले भी आया हूं।"

"कहां से लाये?" सुकुलजी ने पूछा।

दीन शाह गौरा के पास पंद्रह दिन पहले एक ऊंट मरा है। वहीं से ले आया। और हड्डी मैं बाबा को दे भी आया हूं। मंगल की रात वह कजली बना चुके होंगे। जब कहो, उन्हें बुला लाऊं।"

"ठीक है, कल ही बाबा को ले आओ।"

दूधिया चांदनी ... सौ गज के फासले पर सफेद घोड़े और उनकी पीठ पर बैठे सैनिक-ठीक---राजपूत सैनिकों-सा वेश ...वे सब एक रफ्तार से, एक सीध में उड़े चले आ रहे थे... उनका न आदि था, न अंत...

"मैं उन्हें लेकर परसों आ जाऊंगा। उसी रात खुदाई की जाए; क्योंकि इतवार रहेगा। ऐसे काम इतवार-मंगल की रात में ही किये जाते हैं।"

"मगर खोदेगा कौन?"

"हम चार जने हैं ही, चार और बुला लेंगे---छोटू भाई, शिवराम गड़रिया आदि।"

●●

तीसरे दिन इतवार था। शाम को

सात बजे हीरा सिंह के घर में दो बच्चे बुलाये गये। बाबा को लेकर महाबीर पहले ही आ गये थे। बाबा ने बच्चों की हथेली में कजली लगाकर उसमें ध्यान से देखने को कहा। काफी देर तक गौर करने पर भी बच्चों को भीट या खजाने की झलक नहीं मिली। पता नहीं, वे क्या ऊटपटांग बताते रहे। तब एक छोटी लड़की लायी गयी। कजली लगाने के बाद उसने बताया, "...एक भीटा है...नीम का पेड़ है, दक्खिन में बीस हाथ पर एक गड्ढ़ा है, उसमें तमाम बर्तन भरे हैं।"

इतना काफी था। महाबीर घंटे-भर में पांच लंबे-तड़ंगे जवान ले आये। सब के सब पूरी तैयारी से आये थे—बेलचा, फावड़ा, खंता, रस्सा, कुल्हाड़ी और टोकरों से लैस। ठीक नौ बजे, वे नौ के नौ लोग खुदाई अभियान पर निकल पड़े।

पूर्व दिशा में उदित चंद्रमा आकाश की ओर अग्रसर हो चुका था। बाबा ने नीम के पेड़ से दूरी नापकर उस जगह का निश्चय किया, जहां के लिए लड़की ने संकेत दिया था। उन्होंने एक वर्तुलाकार रेखा खींचते हुए, कोई मंत्र पढ़कर चुटकी मारी और कहा, "चलाओ!"

महाबीर ने 'जय बजरंगबली' कहकर अपनी पूरी शक्ति से भीट की खोपड़ी पर फावड़े का प्रहार कर दिया—'झम्!'

फिर क्या था, छहों सूरमा जुट गये और ताबड़तोड़ फावड़े चलाते हुए, भीट के भीतर प्रवेश का मार्ग बनाने लगे। बाबाजी नीम के पेड़ तले और सुकुलजी तथा हीरा सिंह अंगौछा बिछाकर गड्ढ़े के पास बैठे थे। तीन घंटे की खुदाई के बाद दस हाथ गहरा गड्ढा तैयार हो गया। लगभग एक बज चुका था। चंद्रमा ने ऊंचे चढ़कर चारों ओर दूधिया चांदनी फैला रखी थी। सहसा खोदनेवाले चौंके। अब उनके फावड़े किसी पत्थर या धातु से टकरा रहे थे—'ठन्न! ठन्न!'

महाबीर ने कहा, "लो, मिल गया। सभी और दुगुने उत्साह से फावड़े चलाने लगे। लेकिन व्यर्थ। अब एक मुट्ठी भी मिट्टी नहीं निकल रही थी; फावड़े उसी तरह ठन्न-ठन्न बज रहे थे।

थोड़ी दूर पर एक पुरवा था। आठ-दस घरों की बस्ती। अहीर और चमार उसमें रहते थे। रात के सन्नाटे में आवाज दूर तक फैलती जा रही थी। उन लोगों को भीट पर हो रही खुदाई की भनक

मिली, तो वहीं से चिल्लाये, "अरे, को आय हो ? उहां का खोदत हौ ?"

खुदाई कर रहे लोगों को शंका हुई, कि अगर कोई आ पहुंचा, तो भेद खुल जायेगा। तब तक हीरा सिंह ने खड़े होकर अपने फौजी टोन में ललकार दिया— ". . . कौन ऐ साला ! बाग जाओ, नई तो अम फैर कर देगा।"

'फैर' का नाम सुनते ही अहीरों की घिग्घी बंध गयी और वे चुपचाप रजाइयों में दुबक रहे।

खुदाई फिर शुरू हुई; लेकिन चट्टान ज्यों की त्यों थी। फावड़े उसमें एक दरार भी नहीं कर पा रहे थे। तब महावीर ने राय दी, "शायद, यह लोहे का तवा है, जो खजाने के मुंह पर जमाया हुआ है। किनारे-किनारे थोड़ी गोलाई और बढ़ाओ; फिर खंता लगा कर हुमासो।"

दस मिनट में यह भी हो गया, लेकिन जैसे ही महावीर ने परिधि की ओर लीवर की तरह खन्ता धंसाकर हुमासने का प्रयास किया, बाहर बड़े जोर से भगदड़-जैसी आवाज सुनायी पड़ी। लगा कि कोई बहुत बड़ी भीड़ या जानवरों का झुंड दौड़ रहा है। आवाज तेज थी और डरावनी भी; जैसे बादल गरज रहे हों।

सुकुलजी और हीरा सिंह उठकर खड़े हो गये। गड्ढेवाले लोग भी बाहर निकल आये। आवाज अब भी ज्यों की त्यों थी। इधर-उधर देखा, तो दक्षिण की ओर एक फर्लांग की दूरी पर घुड़सवार पल्टन-जैसी दीख पड़ी। वह पच्छिम से पूरब की ओर भागी चली जा रही थी। सुकुलजी ने साथियों से पूछा, "ये लोग कौन हैं जी !" सभी चुपचाप खड़े, एकटक उसी पल्टन को देख रहे थे; कोई कुछ नहीं बोला।

"अरे, बंजारे होंगे, यार ! चलो, अपना काम देखो," हीरा सिंह ने उनकी उपेक्षा करते हुए फिर खुदाई की ओर सबका ध्यान खींचा।

लेकिन जैसे ही शिवराम और महावीर गड्ढे की ओर बढ़े, आवाज तेज हो जाने के साथ-साथ पल्टन और निकट दीखने लगी।

दूधिया चांदनी के प्रकाश में भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं थी। सौ गज के फासले पर ऊंचे-पूरे सफेद घोड़े और उनकी पीठ पर बैठे सैनिक साफ दीख रहे थे। सिर पर पगड़ी, अचकन और चुस्त पैजामा। ढाल-तलवार से लैस। ठीक राजपूत सैनिकों-सा वेश। वे सब एक रफ्तार से, एक-सीध में उड़े चले जा रहे थे। पल्टन का न आदि था, न अंत। यह दृश्य जितना विस्मयकारी था, उतना ही रोमांचक भी।

हीरासिंह ने कहा, "हो न हो, ये साले डकैत हैं; कहीं से डाका डालकर भाग रहे हैं।"

"हां भाई, बेकार देर हो रही है। चलो, अपना काम देखो," कहते हुए महावीर ने शिवराम का हाथ पकड़ा, और गड्ढे में उतरने के लिए कदम बढ़ाये।

राजा से रंक बनानेवाला पत्थर

• पाकीजा हबीब

नीलम एक ऐसा कीमती रत्न (पत्थर) है, जो परेशानियों से तंग आये लोगों की जिंदगी में दोबारा नयी रोशनी लाता है। ऐसा माना जाता है कि इसे पहननेवाले की पांच देवियां या फरिश्ते सुरक्षा करते हैं।

इसे संस्कृत में नीला, अंगरेजी में सैफायर, फारसी और अरबी में याकूत व अरजक कहते हैं। हिंदू और मुसलमान-- दोनों के धर्मग्रंथों में इस रत्न की महिमा

वर्णित है। यूनानी लोग इसे अपने देवी-देवताओं को भेंट चढ़ाया करते थे।

यह पांच प्रकार का होता है--गोरनो, संगृत, वरनाड़ी, पारस्वृत, रजकेतु।

गोरनो : आकार में छोटा और तौल में भारी होता है। इसके पहनने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

संगृत : यह हमेशा चमकता है। इसके पहनने से दौलत और मुहब्बत बढ़ती है।

वरनाड़ी : इसे सूरज के सामने रखने से नीले रंग की किरणें निकलती हैं। इसके पहनने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

पारस्वृत : इससे सुनहरी, रुपहली और बिल्लौरी किरणें प्रस्फुटित होती हैं। पहनने से प्रसिद्धि मिलती है।

रजकेतु : इसे बरतन में रखने से इसकी चमक के कारण बरतन नीला दिखायी देता है। इसके उपयोग से संतान की उन्नति होती है।

इन पांचों के अतिरिक्त एक महानील और इंद्र नील नामक नीलम भी होता है। नीलम को बहुत सख्त पत्थर बताया जाता है, जिसे हीरे से ही काटा जा सकता है।

रंगों की दृष्टि से इसे चार वर्गों में बांटा गया है। वैसे इसका रंग नीला होता है, लेकिन इसके नीले रंग में अन्य

चार विभिन्न प्रकार के रंग भी झलकते हैं। (१) **ब्राह्मण** : यह सफेदी लिये हुए नीला रत्न होता है। (२) **क्षत्रिय** : यह सुर्ख रंग झलकता हुआ नीलम होता है। (३) **वैश्य** : यह जर्दी माइल नीलम होता है। (४) **शूद्र** : यह काले या स्याह रंग की झलकवाला नीलम होता है।

रचना नीलम की

नीलम की रचना के विषय में विशेषज्ञों का कहना है कि जिस प्रकार चार तत्वों— मिट्टी, पानी, हवा और आग ने मिलकर आदमी की रचना की है, उसी प्रकार धरती के अंदर इन चारों भौतिक तत्वों की रचना प्रक्रिया से नीलम बनता है। नीलम के चारों तत्वों में से किसी एक के अधिक हो जाने से इसके रंग-ढंग पर प्रभाव पड़ता है। इस दृष्टि से भी इसके चार प्रकार बताये जाते हैं। (**एक**) जिस नीलम में मिट्टी का तत्व ज्यादा होता है, वह जर्द रंग का नीलम होता है। (**दो**) अग्नि तत्व अधिक होने से नीलम सुर्ख रंग का हो जाता है। (**तीन**) पानी तत्व अधिक हो जाने से इसका रंग सफेदी माइल नीला और शफ्फाफ होता है। (चौथा) अगर नीलम बहुत समय तक खदान में बंद रहे तो इसका रंग लाजवर्दी हो जाता है।

तरीका नीलम की पहचान का

नीलम खरीदते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि वह विशुद्ध हो, क्योंकि प्रायः बिल्लौर या कांच के नीलम भी बनाये व बेचे जाते हैं, और उनमें ऐसी चालाकी से रंग भरे जाते हैं कि असली और नकली में फर्क कर पाना मुश्किल होता है।

नीलम की पहचान यह है कि उसे साफ और स्वच्छ पानी में मोचने से पकड़ लें तो पानी में नीलम के रंगदार और बे-रंग भाग अलग-अलग दिखायी देते हैं। जिस नीलम का रंग एक-सा होगा, उसका पानी भी वैसा ही दिखायी देगा।

अवगुण भी होते हैं नीलम में

नीलम में यदि झाइयां, दूधिया रंग के दाग-धब्बे, सफेद शीशे-जैसी धारियां, रंग का एक जगह केंद्रित हो जाना, रेशम-जैसे धब्बे, खरौंच, दरारें आदि इसके अवगुण हैं, जिन्हें पहली ही नजर में देखा जा सकता है। जिस नीलम का रंग लाल हो, उसमें जरूर रेशमी अव-गुण होंगे। अगर नीलम हरे रंग का है, तो उसमें दूधिया रंग की रेखा अवश्य दिखायी देगी। अवगुण परीक्षा के बाद रंग की पहचान करनी चाहिए कि वह हलका है या शोख और गहरा।

जिन छह अशुभ नीलमों के प्रयोग को वर्जित किया गया है, वे हैं—

१. अबरक : इसके ऊपर के भाग में बादल की-सी चमक होती । इससे उम्र और धन की हानि होती है।

२. तराश : इसमें टूटेपन का निशान होता। इसके प्रयोग से जंगली पशुओं से हानि होने का भय रहता है।

३ चित्रक : यह उपर्युक्त रंगों से किसी भिन्न रंग का होता है। इसके पहनने से पूरा राष्ट्र बरबाद हो जाता है।

हिंदू-शास्त्रों में नीलम पहनने के लिए निम्नांकित खास समय निश्चित हैं—

जाति-विशेष	दिन	राशि	कार्य
ब्राह्मण	बृहस्पति शुक्रवार	कर्क, वृश्चिक, मीन	दान, पुण्य और पूजा पाठ करना
क्षत्रिय	मंगलवार रविवार	सिंह तुला, धनु	अदालती कार्य, शिकार, साहसिक कार्य
वैश्य	सोमवार बुधवार	मेष, मिथुन, कुंभ	व्यापार, हिसाब-किताब अदालती कार्य, फौजी काम-काज आदि।
शूद्र	रविवार मंगलवार	कन्या, वृष, मकर	अदालती काम-काज, घोड़े- हाथियों की हाजिरी व लड़ाई, नौकरों को अपने हाथों काम सिखाना आदि

इनके अतिरिक्त रविवार और मंगलवार के दिन मकर, कुंभ, वृश्चिक, मेष आदि राशिवाले इसे पहन सकते हैं।

४. मृत ग्रह : इसका रंग मटियाला होता है। इसके पहनने से कई प्रकार के रोग लग जाते हैं।

५. अश्म ग्रह : यह आकार में पत्थर सरीखा नजर आता है। इसके पहनने से मृत्यु-भय बना रहता है।

६. रुक्ष : इसमें सफेद चीनी की तरह के दाग होते हैं। इसके पहनने से देश छोड़ना पड़ सकता है।

चमत्कारी होता है नीलम

यूनानी हकीमों ने नीलम के पहनने के कई चमत्कार दर्शाये हैं। यह तबीयत में खुशी पैदा करके दिलो-दिमाग को पुष्ट करता है। महामारी और दम उखड़ने की स्थिति में लाभ पहुंचाता है। जहर के प्रभाव को दूर करता है। खून साफ करता है। इसका सुर्मा लगाने से नेत्र-ज्योति बढ़ती है। बुखारवाले रोगी के सीने पर नीलम रखने से बुखार की तेजी कम हो जाती है। नक्सीर के रोगी के माथे पर नीलम रखने से खून का बहना एकदम रुक जाता है।

यही एक ऐसा पत्थर है, जो यदि रास आ जाए, तो राजा बना देता है, और रास न आये तो राजा से रंक बना देता है। इसीलिए इसके प्रयोग में अत्याधिक सावधानी बरती जानी चाहिए।

—१५८, शाह नत्थन, मेरठ

टक्कर एक टोटके से
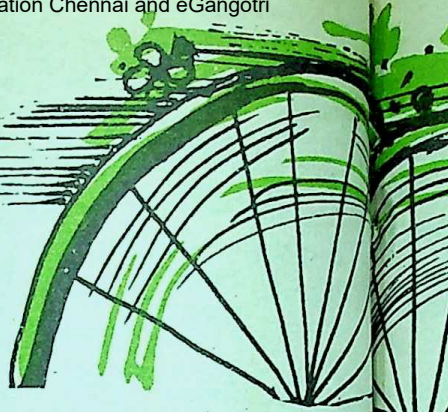
• शत्रुघ्नलाल शुक्ल

वे मेरी बेकारी के दिन थे। न नौकरी, न धंधा। खाना, पढ़ना और घूमना, इसी में समय बीत रहा था। फिर नयी उम्र—तीस वर्ष का सींकिया युवक।

एक दिन मेरे ग्रामवासी दो मित्रों—श्रीदत्त और शिवाकांत ने प्रस्ताव किया, "चलो, दीवाली में चित्रकूट चलें, बड़ा मजा आएगा। सायकिलों से चलें, तो खर्चे में भी कमी रहेगी।"

दो दिन बाद कार्तिक कृष्ण १४ को प्रातः ६ बजे हम तीनों मित्र यात्रा पर निकल पड़े। कुछ मील चलने पर मुख्य सड़क मिली—ग्रांड ट्रंक रोड। यह कानपुर की ओर से आकर फतेहपुर होती हुई इलाहाबाद की ओर चली गयी थी।

उन दिनों ट्रकों, बसों की यह भीड़ नहीं थी। सड़क पर सन्नाटा था। दोपहर होने के कारण जानवर भी नहीं थे। कदाचित कहीं एक-आध बैलगाड़ी मिल जाती थी, बस। फतेहपुर नगर आ गया। उसके मुख्य चौराहे से लगभग आधा मील पहले एक अद्भुत दृश्य दीख पड़ा—बीच सड़क पर मिट्टी का घड़ा फोड़कर उसकी गिट्टियां बिछायी गयी थीं। उनके ऊपर लाल फूल रखे थे। काफी बड़ा दौना था। एक लाल कपड़ा पड़ा हुआ था। पास ही कंड़े की आग भी बुझी हुई (राख) ढेर-जैसी लगी थी। सिंदूर और कुछ खाद्य-सामग्री छितरी पड़ी थी। काली चम-चमाती सड़क पर दोपहर की धूप में, वह लाल सामग्री एक प्रकार की वीभत्सता-उत्पन्न कर रही थी। लगता था, कोई काला सांप मरा पड़ा है, उसका फन कुचल दिया गया है और उसी का लाल-लाल रुधिर आस-पास की धरती को रंग रहा है।

बातचीत और अलमस्ती में डूबा मैं, सामने के उस दृश्य को देखकर भी नहीं देख पाया। वह सामान दो फुट के व्यास में चक्राकार बिखरा हुआ था। संयोग ही कहूंगा कि मेरी सायकिल ठीक उसके ऊपर से निकली और मेरे साथी, जो

बीच ... फोड़ ... बिछ ... लाल ... कपड़

दायें-ब ... नितांत ... रौंदती ... उनकी ... देखा, ... मस्तिष ... क्षण ... निकल ... कोई भ ... को मा ... से इत ... कोई ग ... कर ग ... पु

बीच सड़क पर मिट्टी का घड़ा फोड़कर उसकी गिट्टियां बिछायी गयी थीं। उनके ऊपर लाल फूल रखे हुए थे। एक लाल कपड़ा भी पड़ा हुआ था . . .

दायें-बायें चल रहे थे, उसके स्पर्श से नितांत अछूते रहे। जब गिट्टियों को रौंदती हुई मेरी सायकिल आगे बढ़ी, तब उनकी कड़कड़ाहट से मैं चौंका। नीचे देखा, तो उपरोक्त दृश्य एक बारगी मन-मस्तिष्क में परावर्तित हो गया। अगले क्षण सायकिल उसे पार करके आगे निकल गयी। यद्यपि, इससे मेरे मन में कोई भय, भ्रम नहीं उठा। मैं ऐमी बातों को मानता ही नहीं था। फिर भी श्रीदत्त से इतना अवश्य कहा, "यार, देखो तो कोई गंवार औरत बीच सड़क पर टोटका कर गयी है।"

पुरोहित टाइप का शिवकांत बोल उठा, "लेकिन उसे कुचलकर तुमने अच्छा नहीं किया।

●●

सांय आठ बजे हम बांदा पहुंचे। ८२ मील चल चुके थे। एक धर्मशाला में ठहरे। भोजन किया और लेटकर बातें करने लगे। थकान के बावजूद हम लगभग साढ़े दस बजे तक जागते रहे। बाद में बत्ती बुझाकर सो गये।

यहां तक घटना का पूर्वार्द्ध था; अब उतरारार्ध सुनिए——

दूसरे दिन प्रातः ५ बजे मैं जागा। नित्य-कर्म के लिए चला, तो पैरों की धमक से कानों में झांझ बजने का-सा अनुभव हुआ। हर कदम पर वही झनन-झनन। मैं व्याकुल हो उठा। लगता था, मस्तिष्क का समस्त स्नायुमंडल तन गया है। न जाने कैसी बेचैनी महसूस हो रही थी। शरीर एकदम निस्तेज था। थकान तनिक भी नहीं; किंतु शक्ति भी नहीं; जैसे रातो-रात किसी ने चूस लिया हो। मैंने शरीर

लेखक

को कई झटके दिये, तेजी से चला भी; पर झनझनाहट और अशक्तता ज्यों की त्यों थीं; बल्कि और बढ़ गयी। किसी तरह नित्य-कर्म से निपटकर श्रीदत्त को बताया तो लगा कि मैं अपनी आवाज भी नहीं सुन रहा हूं। चारों ओर सन्नाटा है। धर्मशाला का भीड़-भरा वातावरण मुझे नीरव-सा प्रतीत हो रहा था। श्रीदत्त ने क्या कहा, मैं नहीं सुन पाया। शिवाकांत की बात भी नहीं सुनायी पड़ी। अपना स्वर भी कानों में नहीं जा रहा था। मैं घबरा गया--एकाएक यह क्या हो गया! रातभर में ही यह कैसा परिवर्तन!

निश्चित हो गया कि मैं अपनी श्रवण शक्ति गवां बैठा हूं। और यह दुख:द परिवर्तन मेरे दुर्भाग्य का प्रारंभ है। मैं रोने लगा। लेकिन रोने से क्या होता? साथी लोग आगे की तैयारी कर रहे थे। झख मारकर मैं भी उनके साथ चला, अब चित्रकूट की यात्रा पर मैं नहीं, मेरा जीवित शव जा रहा था। मैं सर्वांश बधिर हो गया था। इस आकस्मिक परिवर्तन ने, बधिरता के इस प्रचंड प्रहार ने मुझे मुमुक्ष कर दिया। किस प्रकार चित्रकूट पहुंचा और लौटा, यह बताना व्यर्थ है।

तब से आज तक मैंने कोई ध्वनि नहीं सुनी। मेरे लिए स्वर का अस्तित्व है ही नहीं। सब कुछ मूक है—शून्य। संसार मेरी निगाह में गूंगा है, मनुष्य पशु-पक्षी और वाद्य-यंत्र सब वाणी रहित।

बधिरता के इस अभिशाप ने मुझे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आक्रांत और परास्त किया है—घर-परिवार, पड़ोस, संबंधी, नौकरी, यात्रा, सभा-गोष्ठी और खेत-खलिहान में। सर्वत्र मैं निरा अकेला हूं---एकाकी।

इस दुर्घटना के बाद चार बच्चे घर में जन्मे। चारों हैं, पर मैं उनका स्वर नहीं सुन पाया। वे मुझसे बार-बार अपनी बात कहते हैं; पर मैं समझ नहीं पाता। कभी वे क्षुब्ध, खिन्न और निराश हो उठते हैं। दांपत्य-जीवन में भी ऐसी ही स्थिति आती रही हैं। किंतु न जाने कौन-सी अज्ञात-अलौकिक शक्ति मेरे मन प्राण में है कि संसार से सर्वथा बहिष्कृत, तिरस्कृत होकर भी, उससे नितांत असंपृक्त रहते हुए भी, मैं साहित्य के प्रति समर्पित रहा। यह उसी का परिणाम है कि २६ वर्षों से मैं बराबर लिख रहा हूं। श्रवण-शक्ति भले ही मर गयी, पर कल्पना नहीं मरी। प्रकाशकों के पास मुझे कभी जाना नहीं पड़ा। पर उन्होंने मेरी पुस्तकें बराबर प्रकाशित की हैं।

अब शरीर शिथिल हो गया है। आंखें भी कमजोर हो गयी हैं। चश्मा लगाता हूं। सुनने के नाम पर सबका मुंह निहारता हूं। या तो कोई अपनी बात संकेत से कहे; या लिखकर बताये; तभी मैं उसे ग्रहण करता हूं। लेकिन लिखने का उत्साह

अब भी है।

लेकिन, अरे ओ बहरे लेखक ! कहां बहका जा रहा है। मूल विषय छोड़कर आत्मकथा का ढोल पीट रहा है? अरे अभागे ! यह क्यों नहीं बताता, कि तेरे इस लेख के शीर्षक की सार्थकता क्या है?

इस लेख की विषय वस्तु है——टोटका। मुझे ऐसे पाखंडों का विश्वास कभी नहीं रहा। पर घटना के बारह वर्ष बाद कानपुर में एक बार एक पंडितजी से भेंट हुई। मुझे निपट बहरा जानकर उन्होंने एक क्षण कुछ सोचा, फिर गंभीर स्वर में बोले, "इसका इलाज नहीं है, क्योंकि यह कोई रोग बीमारी नहीं है। यह तो कोई भौतिक-बाधा है, जिसने अचानक कहीं आपको ग्रस लिया है। प्रचंड शक्ति है। शायद, कोई देवता ही इसका निवारण कर सके, इससे मुक्ति असंभव है।

मेरे मस्तिष्क में फतेहपुर रोड पर बिखरा हुआ टोटका और उसे पार कर जाने का दृश्य बिजली की तरह कौंध गया लेकिन मैंने उनसे कुछ कहा नहीं। चुपचाप उठकर चला आया। बाद में कई लोगों ने उस प्रसंग को सुनकर कहा, "यह तो उसी टोटके का प्रभाव है...।"

अब सोचता हूं——क्या, सचमुच वह टोटका किसी अभिचार कर्म का तांत्रिक प्रयोग था? क्या उसी ने मुझे एकाएक रातभर में ही, बहरा कर दिया है? क्या यह पंगुता, यह विकृति उसी टोटके से टक्कर कर लेने का 'सुफल' है?

प्रकाश नहीं निर्मल

मथुरा जिले के छत्ता कस्बे का प्रकाश जब साढ़े चार वर्ष का था, तब वह यह कहने लगा कि वह प्रकाश नहीं, निर्मल है, और वह पास के कस्बे कोसी कलां का रहनेवाला है। उसे उसके 'असली' घर ले चला जाए। घरवालों ने जांच-पड़ताल की, तो पता चला कि प्रकाश के जन्म से १६ महीने पहले कोसी कलां के दस वर्षीय निर्मल की अप्रैल, १९५० में मौत हो गयी थी। मरते समय निर्मल ने छत्ता कस्बे की ओर संकेत करते हुए कहा था कि वह इधर अपनी मां के पास जा रहा है। प्रकाश को जब कोसी कलां ले जाया गया, तब उसने अपने पूर्व-जन्म के सभी रिश्तेदारों, स्थानों और चीजों को पहचान कर बता दिया।

नेपाल
राजवंश
इतिहास के प्रामाणि
साक्षी

जहां मंदिरों का जमघट है!

● नंदनंदन सनाढ्य

काशी के कंकर-कंकर में शंकर हैं, उसी तरह काठमांडू में हर चार कदम पर देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं, जिन्हें कोई न कोई भक्त मुंह-अंधेरे सुबह पूज जाता है। काठमांडू के हर नागरिक के भाल पर पशुपति का चंदन या अपने घर से बाहर निकलते ही पहले मंदिर से लगाया गया कुमकुम दिखायी देता है। भारी ट्रैफिकवाले क्षेत्र में सड़क के बीच गाय को भारी असुविधा के बावजूद कोई व्यक्ति हटाने का दुस्साहस नहीं करता। इसके विपरीत कोई भक्त आकर उसकी पूंछ को अपने सिर से छुआकर गौ-माता को प्रणाम करता दिखायी दे जाएगा। यहां के विभिन्न धर्मावलंबी पूर्ण सहिष्णुता और शांत मन से मिलजुलकर प्रेम रहते हैं। अनेक ऐसे पर्व-त्योहार हैं, जि शाक्त, शैव और वैष्णव बिना किसी भे भाव के संयुक्त रूप से मनाते हैं।

काठमांडू के प्राचीन गौरवमय इति हास, कला, वास्तुकला, काष्ठकला, ललि कला, धर्म और संस्कृति को जानने लिए यहां के हनुमान ढोका क्षेत्र को देख आवश्यक है। हनुमान ढोका नेपाल संस्कृति व इतिहास का सबसे बड़ा प्रामाणिक साक्ष्य है। हर शासक ने

शिव-
पारवती
मंदिर

हनुमान ढोका क्षेत्र, बाहर का विस्तृत क्षेत्र है, जिसमें करीब तीस मंदिर व सराय हैं। आज अनेक मंदिरों के नीचे भाग में दुकानें बन गयीं हैं और सराय रिहायश के काम आ रही हैं।

तीन प्रमुख दरबार

काठमांडू में इस समय तीन प्रमुख दरबार हैं। एक है, नारायण हेटी दरबार, जहां वर्तमान नरेश रहते हैं। दूसरा है, सिंह दरबार, जहां पर नेपाल सरकार (श्री सरकार) का सचिवालय है, और तीसरा प्राचीनतम है, हनुमान ढोका, जहां आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व तक काठमांडू के

क्षेत्र में अवश्य ही मंदिर बनवाया या सराय व धर्मशाला के साथ मंदिर बनवाकर उसे सार्वजनिक स्थल के रूप में जनता को दे दिया।

हनुमान ढोका दरबार (महल) के द्वार (ढोका) पर हनुमानजी की विशाल मूर्त्ति है, इसी से इस क्षेत्र और इस मोहल्ले का नाम हनुमान ढोका दरबार पड़ा। हनुमान ढोका दरबार-महल के भीतर का भाग कहलाता है, और

महाविष्णु
मंदिर

देगुतलेजु मंदिर

शासक रहते थे, तथा वहीं उनका सचिवालय भी था। करीब सौ वर्ष पूर्व नेपाल नरेश श्री सुरेन्द्र वीर विक्रम शाह ने नारायण हेटी दरबार का निर्माण करवाया और तभी से नेपाल के राजा हनुमान ढोका दरबार छोड़कर नारायण हेटी दरबार में रहने लगे। करीब सौ वर्ष पूर्व ही चंद्र शमशेर के प्रधानमंत्रीत्व काल में सचिवालय के रूप में सिंह दरबार का निर्माण हुआ।

काष्ठ शिल्प की दृष्टि से इस क्षेत्र में बनी लकड़ी की खिड़कियां, झरोखे, खंभे, मेहराब अपने आप में अलग हैं। खिड़की, झरोखों में लकड़ी की सूक्ष्म कटाई में जहां सौंदर्य पक्ष उभारा गया है, वहीं उसकी मजबूती का भी पूरा ध्यान रखा गया है। काष्ठ-शिल्प में काम को रत्यात्मक शृंगार के रूप में उकेरकर जहां जीवन में काम के उद्दाम प्रभाव की ईमानदारी से अ[illegible] व्यक्त की गयी है, वहीं भय, वी[illegible] रस के रूप में डरावने भैरव की मूर्ति[illegible] बनी हुई हैं। हनुमान ढोका क्षेत्र में म[illegible] का मेला-सा लगा हुआ है। इस क्षे[illegible] कुछ प्रमुख मंदिर इस प्रकार हैं—

शिव-पार्वती मंदिर : काठमांडू घा[illegible] यह मंदिर बेहद लोकप्रिय है। इसे [illegible] रण बहादुर शाह के काल में बहादुर[illegible] ने बनवाया था। दो सीढ़ीनुमा चबूत[illegible] निर्मित इस मंदिर के चबूतरे की बायीं [illegible] नेपाली भाषा में एक शिला-पट्ट लगा[illegible] है। इसे काठमांडू का प्राचीनतम शिला[illegible] कहते हैं। यह चबूतरा लक्ष्मी न[illegible] (सन १६२०–४१) के काल में नृत्य-[illegible]

नेपाल के प्राचीन गौरवम[illegible] इतिहास, कला और संस्कृति [illegible] जानने का सबसे बड़ा [illegible] प्रामाणिक साक्ष्य है—काठम[illegible] का हनुमान ढोका क्षेत्र य[illegible] वह क्षेत्र जहां मंदिरों [illegible] जमघट है।

के कार्यक्रम के लिए बनाया गया था, [illegible] पर बाद में यह मंदिर बनवाया गया[illegible]

नेपाली शैली में निर्मित यह [illegible] ष्कोणीय मंदिर बरबस दर्शकों को [illegible] ओर आकर्षित करता है।

मंजु देवल : नौ सीढ़ीनुमा चबूतरे पर इस त्रि-छतीय शिव मंदिर को सन १६६० में राजा भूपेन्द्र मल्ल (१६८७-१७००) की माता और भूपालेन्द्र मल्ल की विधवा पत्नी ने बनवाया था। इस मंदिर की लकड़ी की छत पर रति-क्रिया के चित्र उकेरे गये हैं। मंदिर के मध्य में शिव-लिंग स्थापित है। छत के मध्य भाग से सीधी ऊपर की ओर उठी शिरा भी इस मंदिर की विशेषता है। इस शिरा का मूलाधार बौद्ध-स्तूप शैली का है। शिव मंदिर पर बौद्ध-शैली की शिरा कम ही देखने को मिलती है। यहां कामदेव का भी मंदिर है, पर उसकी मूर्ति नदारद है।

सिंह सत्तल : यह तिमंजिला भवन मूल रूप में एक सराय रहा होगा। कालांतर में इसमें एक मूर्त्ति स्थापित कर इसे मंदिर की गरिमा दे दी गयी। कहा जाता है कि काष्ठ मंडप के निर्माण से बची लकड़ी से इस भवन का निर्माण किया गया था। इसमें उपलब्ध गरुण नारायण की मूर्त्ति बहुत बाद में रखी गयी है। सन १८६३ में सुब्बा नारायण शर्मा सत्मी अपना मकान बनवा रहे थे। नींव की खुदाई में उन्हें गरुण की एक प्रतिमा प्राप्त हुई, जिसे यहां प्रतिस्थापित कर दिया गया। सिंह सत्तल के बाहर की तरफ़ दो सिंह की प्रतिमाओं के कारण ही इस मंदिर को सिंह सत्तल नाम दिया गया है। इस भवन के निर्माणकर्त्ता का कहीं उल्लेख नहीं है।

महाविष्णु मंदिर : दो छतवाला यह मंदिर

मंजुदेवल मंदिर

चार सीढ़ीनुमा चबूतरे पर बना है। छत को सहारा देनेवाले खंभे, दरवाजे बिलकुल साधारण हैं, परंतु मंदिर का शिखर अद्वितीय है। इसमें स्वर्ण-कलश के ऊपर स्वर्ण छतरी निर्मित की गयी है। सन १९३४ के भूकंप से इस मंदिर को बहुत नुकसान पहुंचा और सुरक्षा की दृष्टि से यहां की सोने की महाविष्णु की मूर्त्ति को हनुमान ढोका दरबार के अंदर नसल चौक में स्थापित किया गया। मूर्त्ति हटाते समय नीचे एक सोने का ताबीज मिला, जिस पर बाहर की ओर राजा जगज्जय मल्ल (सन १७२२-३६) का नाम अंकित था। अन्य ऐतिहासिक अभिलेखों से इस बात का संकेत मिलता है कि राजा जगज्जय मल्ल ने अपने पुत्र
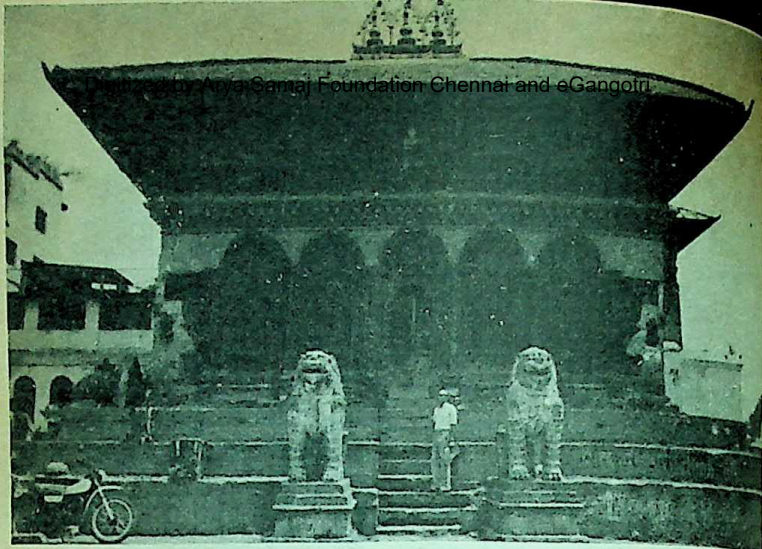
द्वार पर सिंह की प्रतिमाओंवाला मंदिर : सिंह सत्तल

राजेन्द्र मल्ल की यादगार में कोत के निकट एक मंदिर बनवाया था। भूकंप के बाद की गयी मरम्मत से इस मंदिर की वह भव्यता नहीं आ पायी, जो मूल में थी।

देगुतलेजु मंदिर : इस उत्कृष्टतम मंदिर को मूलतः शिवसिंह मल्ल (१५७८-१६२०) ने बनवाया था। उसके बाद काठमांडू के मल्ल वंश और शाह वंश के राजाओं ने इसकी गरिमा में वृद्धि की। यह मंदिर लगभग तीस मीटर ऊंचा है, जो तलेजु के विशाल मंदिर से थोड़ा ही छोटा है। तलेजु और देगुतलेजु शाक्त संप्रदाय की एक ही देवी के विभिन्न नाम हैं।

यह मंदिर नेपाल के आम मंदिरों से कुछ अलग है। नीचे के हिस्से में रिहायशी मकान हैं। जमीन से ऊंचे उठे हुए एक दालान से मंदिर का भाग शुरू होता है। मुख्य मंदिर उस दालान से शुरू हो[ता] तीन छत का है।

इस मंदिर में काफी कीमती सजा[वट] है। उत्तर के दरवाजे पर चांदी का पत्त[र] चढ़ा हुआ है। इसे राजा गीर्वाण यु[द्ध] विक्रम शाह ने सन १८१५ में भेंट चढ़ा[या] था। छत को सहारा देनेवाले खंभों [पर] शिव-पार्वती की प्रतिमाएं बनी हुई [हैं।] छतों के एक कोने से दूसरे कोने तक ह[वा] से बजनेवाली छोटी-छोटी घंटियों [की] कतारें हैं। मंदिर के ऊपर बाहर [की] ओर पांच सुंदर मीनारें हैं। चारों को[नों] पर चार, तथा छत के बीच की चो[टी] पर एक सुदीर्घ लंबी मीनार।

हर वर्ष अप्रैल-मई में नेवार जाति [के] लोग बहुत बड़ी संख्या में दीवाली पू[जा] के लिए इस मंदिर में आते हैं।

—भारतीय दूतावास, काठमांडू, ने[पाल]

ओम की मंत्र सत्ता और शिव

● प० जगदीश शर्मा

शिव सर्व शक्तिमान देवता हैं। उन्हें आदिदेव भी कहा गया है। यद्यपि उन्हें संहार का देवता माना गया है, तथापि उनका कल्याणकारी रूप ही सबको ग्राह्य है। अन्य देवी-देवताओं के चित्र की तुलना में शिव के चित्र को ध्यान से देखने पर उनकी महत्ता स्पष्ट हो जाती है।

संसार को अभीप्सित वैभव प्रदान करनेवाले शिव स्वयं मात्र बाघंबर लपेटे हिमशिला पर बैठे हैं। शिव दयालु हैं, निस्पृह हैं, त्यागी हैं, वीतरागी हैं। शिव शीघ्र प्रसन्न भी होते हैं। उनकी पूजा में भी विशेष बखेड़ा नहीं। अक्षत, चंदन, धूप, दीप आदि से पूजा कर उनकी प्रतिमा या चित्र के समक्ष बैठकर मंत्र जाप करने मात्र से वे प्रसन्न हो जाते हैं। निम्नलिखित मंत्रों में से किसी का भी, कभी भी जप प्रारंभ किया जा सकता है।

- **नमः शिवाय**
- **ओ ऽ म् नमः शिवाय**
- **ह्रौं ओऽम नमः शिवाय ह्रौं**
- **ओऽम ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय**
- **ओऽम नमो भगवते दक्षिणा मूर्तये मह्मं मेधा प्रयच्छ स्वाहा**
- **इं क्षं मं औं अं**
- **प्रौं ह्रीं ठः**
- **ओऽम नमो नीलकण्ठाय**
- **ऊर्ध्व फट्**
- **ओऽम तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नोरुद्र प्रचोदयात्**
- **ओऽम जूं सः (जिसके लिए जाप किया जा रहा है, उसका नाम) पालय-पालय सः जूं ओऽम्**

इस अंतिम मंत्र को बेहद प्रभावशाली माना गया है। इसे लघु मृत्युंजय मंत्र कहते हैं। असाध्य रोगी के कल्याणार्थ इसका जप किया जाता है।

शिव को मृत्युंजय भी कहा जाता है। एक पुराण-कथा के अनुसार विष्णु ने शिव की कृपा प्राप्त करने के लिए सहस्र कमलों से उनकी पूजा शुरू की। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि पूजा पूर्ण हुए बिना वे आसन से नहीं उठेंगे। लेकिन

अंतिम संख्या का कमल कम होने से वे परेशान हो गये। फिर उन्होंने इसका समाधान अपने 'कमल नयन पुंडरीकाक्ष' नाम के द्वारा ढूंढ़ निकाला। उन्होंने बाण की नोक से नेत्र-कमल निकालकर शिव को अर्पित कर पूजा पूरी की। प्रसन्न होकर शिव ने नेत्र-दान, चक्र-दान के अतिरिक्त असुरों के प्रहार से अमरत्व प्राप्त करने के लिए उन्हें महामृत्युंजय मंत्र भी प्रदान किया। बाद में विष्णु ने देवताओं को यही मंत्र बतलाया।

यजुर्वेद संहिता में यह मंत्र इस प्रकार है—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगंन्धि पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्

मृत्युंजय जप को रोगनाशक और शांतिदायक माना गया है। ऐसी मान्यता है कि मृत्युंजय जप से रोग-शैया पर पड़ा रोगी भी शीघ्र रोगमुक्त हो जाता है। रोग या अनिष्ट की आशंका होने पर इस मंत्र का जप स्वयं भी किया जा सकता है।

मंत्र—**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।**

विधि—महामृत्युंजय यंत्र का चित्र लगाकर इस मंत्र का सवा लाख जाप ४५ दिन में कर लें। रोगी को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा। पूरी निष्ठा एवं पवित्रता से मंत्र का जाप किया जाए।

मंत्रों में अपार शक्ति होती है। उनके विधिपूर्वक जप से अभीष्ट को प्राप्त किया जा सकता है।

अपने देश में मंत्र-जप की परम्परा पुरातन है। यों, मंत्र-शब्द का व्यवहार व्यापक अर्थों में किया जाता रहा है। वेदों की ऋचाओं के छंदों को, देवी-देवताओं की स्तुतियों, यज्ञादि के लिए रचे गये पदों, शब्द-प्रतीकों आदि को भी मंत्र कहा जाता है, लेकिन तंत्र-शास्त्र में किसी देवता या शक्ति की अभिव्यक्ति करने वाले अक्षर, पद या पद-समूह को ही मंत्र की संज्ञा दी गयी है।

तंत्र साधना-सार के अनुसार 'शब्द (वैखरी अर्थात स्थूल ध्वनि) चित्त शक्ति के स्थूल काय हैं', जो साधक को नाना प्रकार की सिद्धियां देते हैं। इस समस्त सृष्टि के मूल में परमात्मा शब्द है। जैसे विशाल ब्रह्मांड शब्द-शक्तियों के रूप में उद्‌बुद्ध हो रहा है, उसी प्रकार यह स्थूल छोटे-छोटे पिंडों में भी प्रकट हो रहा है। शब्द के इस सूक्ष्म रूप के साथ साधक जब विश्वव्यापी रूप की चेतना ले आता है तब वह मंत्र को क्रियाशील बना सकता है। ईश्वर (अपर शिव) की यह रचनात्मक शक्ति ही समस्त विचारों का उत्स है। विभिन्न देवता शिव की विभिन्न शक्तियों के ही रूप हैं। मंत्रों द्वारा इन देवताओं को जाग्रत किया जा सकता है। प्राण तोषणी के अनुसार, 'मंत्र-साधक जो भी चाहता है, वह उसे अवश्य प्राप्त होता है।'

—बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली

● करणीदान सेठिया

इसलाम में कुरान मंत्र-उपासना का आदेश नहीं देता, केवल अल्लाह से दुआ मांगने के सिवा किसी मंत्र का रूप कुरान की आयत नहीं है। फिर भी नाथ-संप्रदाय के शाबर-मंत्रों की तरह मुसलिम-तंत्र में भी शाबर-मंत्रों की बहुलता है। इनमें महम्मदा पीर की आन ली जाती है और बिस्मिल्लाह के नाम की आन के साथ-साथ कुरान की आयत या शाबरी विधि से संयोजन कर मंत्र का गठन कर लिया जाता है।

ऐसा देखने में आता है कि मुसलमानी मंत्र इस काल में बहुत सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। ब्राह्मण तंत्र में यक्षिणी साधना-विधि मिलती है, उसी तरह इनमें परी और पीरों की साधना का विधान आता है। इनके तंत्रों में ८४ पुतलियों का वर्णन भी आता है। ये प्रेत-बाधा निवारण आदि में अकसर काम में ली जाती हैं, और बहुत ही कारगर साबित होती हैं।

जिन्न व परी हटाने का मंत्र

मंत्र : रब्बे इन्नी मगलूबुन फंतक्षीर

विधि : एक मोरपंख लें। उसे लोबान की आग में आधा जला दें। जलाते समय 'बिस्मिल्लाहररहमान नीर रहीम' का जाप करते रहें। इस अधजले मोरपंख को एक पूरे मोरपंख के मोरछल (चंवर) में खोंस दें। मोरछल की जड़ में काली घोड़ी के पूंछ के बाल से तीन हकीक, एक मरगज, एक लहसुनिया छेदकर पिरो दें और उसे मोरछल की जड़ में बांध दें। फिर लोबान का धूप करें। सामने सात लौंग रखें। लोबान जलाने के बाद आग में फिटकरी का टुकड़ा छोड़ दें। अब जिस पर जिन्न, पीर या खब्बीस की सवारी आयी हुई हो, उसे सामने बैठायें और उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए १८ बार झाड़ दें। फिर इसी मंत्र से सातों लौंग फूंककर एक तो उस व्यक्ति को खिला दें, बाकी छह किचरकर तावीज में भरकर बांह में बांध दें। सवारी निश्चित हट जाएगी। अगर सवारी अधिक भयंकर व तेज हो तो उन लौंगों को जलाकर उसकी सुगंध उस व्यक्ति को सुंघायें तो सवारी जलकर भस्म हो जाएगी।

—द्वारा सेठिया ब्रदर्स, ९ आरमेनियन स्ट्रीट कलकत्ता-१

कौन है वह?

● कर्त्तारसिंह दुग्गल

बाबा नानक से किसी ने पूछा, "चमत्कार क्या है ?"

गुरु नानक बोले, "इंसान स्वयं सबसे बड़ा चमत्कार है।"

सचमुच मनुष्य का जन्म, उसका बढ़ना, फलना-फूलना, उसकी उपलब्धियां —इनसे बढ़कर चमत्कार क्या हो सकता है ?

मैं जब अपनी जिंदगी पर नजर डालता हूं, तब कदम-कदम पर मुझे चमत्कार दिखायी देते हैं। ऐसी-ऐसी घटनाएं, जिनके बारे में सोचकर मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। गूंगे का गुड़ —यह बातें की नहीं जातीं।

तो भी !

पाकिस्तान बन रहा था। उन दिनों मैं लाहौर रेडियो-स्टेशन पर एक कार्यक्रम अधिकारी था। एक दिन बैठे-बैठे मुझे ध्यान आया कि जब पाकिस्तान बन जाएगा और जैसा प्रतीत हो रहा था कि, यदि लाहौर भारत से छिन गया तो पूर्वी पंजाब के पास कोई रेडियो-स्टेशन नहीं होगा। मैंने तुरंत सरदार स्वर्णसिंह को टेलीफोन किया। वे अविभाजित पंजाब में एक मंत्री थे। उन्होंने कहा कि मैं उनसे किसी समय मिल लूं। मैंने गाड़ी ली और झट उनके यहां पहुंच गया। मेरी बात सरदार स्वर्णसिंह को जंच गयी। उन्होंने मुझसे सरदार पटेल के नाम एक चिट्ठी 'ड्राफ्ट' करने के लिए कहा। सरदार पटेल दिल्ली में उन दिनों कामचलाऊ सरकार के सूचना और प्रसारण विभाग के मंत्री थे।

दफ्तर लौटकर मैंने चिट्ठी 'ड्राफ्ट' की, टाइप करवायी और सरदार स्वर्णसिंह की कोठी पर ले गया। वह चिट्ठी उसी दिन सरदार पटेल को भेज दी गयी।

फिर भारत आजाद हुआ। पाकिस्तान बना। जैसी हमें आशंका थी, लाहौर हमारे हाथ से जाता रहा। हम लोग इधर आ गये। विभाजन के दिनों में हुए सांप्रदायिक दंगों और दिल्ली रेडियो स्टेशन की जिम्मेदारियों में डूबा हुआ मैं इस बात को भूल गया था कि कभी मैंने पूर्वी पंजाब

उस दिन बंगला साहब, गुरुद्वारे के बाहर जब मैं पहुंचा, तब मेरी आंखों में आंसू छलक आये। गुरुद्वारे के बाहर, सीढ़ियों पर ही सिर झुक गया। अपने बेसहारों के सहारे के सामने जैसे मैं गिर ही तो गया। मुझे याद है, जिस जगह उस दिन मैंने माथा टेका था, वह जगह गीली हो गयी थी . . .

के लिए रेडियो-स्टेशन स्थापित करने की रेडियो तजवीज भी रखी थी। उन दिनों दिल्ली स्टेशन पर मैं शरणार्थियों के लिए कार्यक्रम तैयार करनेवाले विभाग की देखरेख कर रहा था। मुझे सिर खुजलाने की फुरसत नहीं होती थी। दिन रात, अपने काम में व्यस्त रहता था।

लाहौर से तबदील होकर आये हमें कुछ दिन ही हुए थे कि एक दिन सुबह प्रोग्राम-मीटिंग में एक साथी अफसर से मैंने पूछा, कि 'फलां अधिकारी कुछ दिनों से नजर नहीं आ रहा है।' उसने मेरी ओर हैरान होकर देखा और कहा, "तुम्हें मालूम नहीं, उसे तो पिछले सप्ताह जालंधर भेज दिया गया है, ताकि पूर्वी पंजाब के लिए नया रेडियो स्टेशन स्थापित करे।"

मैंने सुना और जैसे कोई बम फटा हो, मेरे चेहरे का रंग बुझ गया। वह अफसर जिसे जालंधर भेजा गया, हर तरह से मुझसे जूनियर था। और फिर मैंने तो उस रेडियो-स्टेशन की कल्पना की थी। सरदार स्वर्णसिंह की ओर से, मेरी ड्राफ्ट की हुई चिट्ठी का ही परिणाम था कि बंटवारे के तुरंत बाद जालंधर रेडियो स्टेशन को स्थापित करने का फैसला किया गया। और अब, जबकि रेडियो स्टेशन खुलने का समय आया, तब किसी दूसरे अफसर को उस काम के लिए तैनात कर दिया गया था!

मुझे जैसे चारों कपड़े आग लग गयी। यह कैसा आजाद भारत था? इस आजाद देश में क्या इस तरह के ही फैसले हुआ करेंगे?

ज्यों-ज्यों मैं सोचता, मुझे और बुरा-बुरा लगता। अपने काम पर रह-रहकर तरस आता। बेघरबार शरणार्थी आगे-पीछे भी कोई नहीं था, जिसके सामने जाकर अपना दुखड़ा रोऊं? जिसके पास जाकर इंसाफ मांगू। यह अन्याय था, घोर अन्याय।

उस सारे दिन मैं परेशान रहा। उस सारी रात जैसे मैं भट्टी में भुनता रहा। मुझे चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखायी देता। बार-बार मुझे इस बात का ख्याल आता कि मुझसे अन्याय किया गया था। एक ही दफ्तर में काम करते हुए, मुझसे यह बात छिपायी गयी थी। जाने से पहले वह अफसर मुझसे मिलने तक नहीं आया था। और, अपने कार्यालय में मैं पंजाबी का विशेषज्ञ माना जाता था।

लेखक

आखिर यह अन्याय मुझसे क्यों किया गया ? मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

अगली सुबह अपने नित्य के नियमानुसार मैं दफ्तर जाने से पहले गुरुद्वारा बंगला साहब माथा टेकने के लिए गया। बचपन से मैं ऐसा करता चला आ रहा था; सुबह पहला काम ईश्वर की शरण !

उस दिन बंगला साहब गुरुद्वारे के बाहर जब मैं पहुंचा, तब मेरी आंखों में आंसू छलक आये। गुरुद्वारे के बाहर, सीढ़ियों पर ही मेरा सिर झुक गया। अपने बेसहारों के सहारे के सामने-जैसे मैं गिर ही तो गया। मुझे याद है, जिस जगह उस दिन मैंने माथा टेका था, वह जगह गीली हो गयी थी।

कुछ देर बाद मैं अपने दफ्तर पहुंचा। मुश्किल से अपनी कुरसी पर बैठा ही था कि हमारे डायरेक्टर जनरल का चपरासी आया और सैल्यूट मारकर कहने लगा, 'जनाब को डी. जी. याद कर रहे हैं।'

तुरंत मैं महानिदेशक के पास गया। डायरेक्टर जनरल का यूं किसी अफसर को बुला भेजना बिना मतलब के नहीं होता।

डी. जी. के कमरे में मैंने कदम रखा ही था कि वह कहने लगे, "दुग्गल, यह फैसला किया गया है कि तुम्हें जालंधर रेडियो स्टेशन चालू करने के लिए भेजा जाए। जिस अफसर को पिछले म... इस काम के लिए तैनात किया गया ... यूं लगता है कि उससे यह काम नहीं ... सकेगा। तुम्हें कल सुबह ही जाना होगा...

"तुम्हें जालंधर ले जाने के ... एक हवाई जहाज चार्टर कर लिया ... है! आजकल रेलगाड़ी पर भरोसा ... किया जा सकता...।"

मैंने सुना और जैसे अपने कानों ... विश्वास न आ रहा हो।

इस तरह की अनेक घटनाएं ... जीवन में घटी हैं, जिन्हें मेरे भीतर ... सूझ-बूझ वाले, पढ़े-लिखे व्यक्ति के ... मान सकना कभी-कभी कठिन होता ...

एक साहित्यकार के रूप में मुझे प्रायः यूं लगता है कि जो कुछ ... लिखता हूं—जैसे वह सब कुछ पहले लिखा जा चुका है। मैं केवल उसे उगल ... होता हूं। मेरे भीतर 'कंप्यूटर' की 'मैमोरी' में यह सब कुछ जमा पड़ा है। मैं ... फिर से अंकित कर रहा होता हूं ... बस।

कई बार यूं भी हुआ है कि मुझे किसी ... विषय पर लिखने के लिए कहा ... जिसके बारे में मैं सोचता था, मैं बिलकुल कोरा हूं। लेकिन जब लिखने बैठा, तब ... एकाएक अपनी आंखों पर विश्वास ... हो पाता। एक सांस मेरी कलम ... लगती। कई बार कोई बात बनती ... नहीं आती। मुझे यूं लगता है जैसे किसी कमजोर नजरवाले से दूर दीवार ...

अलौकिक शक्ति का अनुभव हुआ है

• गुलाबदास ब्रोकर

अस्तित्ववाद के कई प्रकार हैं। वह सार्त्र के पहले भी था, बाद में भी रहा। जहां तक लोक-प्रचलन का प्रश्न है, सार्त्र ही अधिक जाना गया, पढ़ा गया। सार्त्र के अस्तित्ववाद में विकल्पवाली बात बिलकुल मान्य है मुझे—जो दो रास्ते हों तो एक ही चुना जा सकता है और उस निर्णय से ही मनुष्य का समस्त जीवन संचालित होता है। किंतु अस्तित्व पहले आया और आत्मतत्व बाद में। 'एक्सिजटेंस प्रिसीडस एसेंस' मुझे ठीक नहीं लगता। मेरा जीवन, मेरी पढ़ाई, मेरी विचार-शक्ति—सब इसे मानने से इंकार करते हैं।

सत्ता ऊपर हो तो उसे नीचे से जानना कठिन है। जो ऊपर जाएंगे, वह ही उसे जान सकेंगे। मैं नीचे रहता हूं—सामान्य हूं। मेरे भीतर अच्छी और बुरी दो शक्तियां हैं, जो अपनी-अपनी ओर मुझे खींचती हैं। उस अच्छी शक्ति की सफलता होने पर मैं अपने भीतर उत्साह और ऊर्जा का अनुभव करता हूं। इस अच्छी शक्ति की सत्ता को ही मैं संचालक-शक्ति पाता हूं। मोहनदास-जैसा साधारण युवक इसी शक्ति से गांधी बना और नोआखाली के रक्तपात में अपने बूढ़े हाथों में एक लकड़ी लेकर गया, मौत और हिंसा पर निर्भीक हंसता रहा। बुद्ध और महावीर राजसुख—वैभव, ऐश्वर्य, सुंदरियां और अनेक विषय-सुख छोड़कर भिखारी बन गये—इसी शक्ति से, जिसे मैंने अच्छी शक्ति कहा। मेरे-जैसा सामान्य आदमी इतना ही कह सकता है कि हम सबको किसी-न-किसी रूप में इस शक्ति का अनुभव होता है। **—३९७, विवेकानंद रोड, विले पारले (पश्चिम) बम्बई-४०००५६**

लिखा हुआ कुछ पढ़ा न जा रहा हो। मैं बार-बार उसे निहारता हूं। अपना भीतर टटोलता हूं। अपनी सोच पर जोर डालता हूं। एक बार, दो बार, तीन बार—और फिर वह बात उसी तरह कही जाती है-जैसे उसे लिखा जाना चाहिए था।

कई बार यूं भी हुआ है कि मुझसे स्वयं अपनी लिखी कहानियां पहचानी नहीं जातीं। कई बार अपनी पुरानी रचनाओं को पढ़ते हुए मुझे यकीन नहीं आता कि वे मेरी कलम से निकली हैं। सब कुछ नया-नया लगता है। बयान नया। ख्याल नया और मैं अपने-आपको पूछता हूं—'कौन लिखता रहा है ये सब कुछ?'

सचमुच कौन है वह?

—पी-७, हौजखास, नयी दिल्ली

कोदंडपाणि ने मुक्ति दी ब्रह्मराक्षस को

• रतनलाल जोशी

बात कुछ पुरानी है, किंतु मेरी स्मृति के देशकाल पर उसकी छाप वैसी ही नवीन है, जैसी १७ अक्तूबर, १९४९ की रात को थी। राजाजी से मिलने के लिए मैं मद्रास गया था। राजाजी उस समय 'रामायण' लिखने में व्यस्त थे। भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित रामकथा-साहित्य का संक्षिप्त ब्यौरा मैंने उनके पास भेजा था और उसी समय मेरा एक लेख भी 'कल्कि' में छपा था, जिसमें मैंने स्वनामधन्य श्रीनिवास शास्त्री के रामायण-व्याख्यानों—'लेक्चर्स ऑन द् 'रामायण'—पर टिप्पणी करने की 'धृष्टता' की थी। मेरे लेख का आशय था कि रामायण को तर्क की कसौटी पर कसना उसके ध्येय-तत्व को अस्वीकार करना है, जो उसकी मूल प्राणस्फूर्ति है। राजाजी (स्व. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी) को मेरा यह निष्कर्ष पसंद आया था। रामचरित पर काफी देर तक वार्तालाप के बाद राजाजी के अनुगामी सहृदय पत्रकार स्वामीनाथनजी ने प्रस्ताव रखा कि 'मैं कल मदुरांतकम जा रहा हूं, वहां रामोत्सव-सप्ताह चल रहा है। आप भी चलिए, तीर्थ-यात्रा के साथ-साथ रामायण पर विद्वानों के प्रवचन सुनने का भी लाभ मिलेगा।'

जब हम मदुरांकतम पहुंचे, तब वहां वर्षा हो रही थी, किंतु फिर भी हजारों तीर्थ-यात्रियों का अनिरुद्ध तांता राम-मंदिर में दर्शनार्थ उमड़ा पड़ रहा था। हम लोग एक मित्र के विश्राम-गृह में ठहरा दिये गये, जिसे कभी-कभी ही 'मानव-सहवास' का सौभाग्य मिलता था। लोगों का खयाल था कि उसमें कोई ब्रह्म-मानव-राक्षस रहता है।

बारिश कुछ थमी, तो हम लोग दर्शन के लिए चल पड़े। रोग, दारिद्र्य, अन्याय-अनीति के निवारणार्थ आबाल-वृद्ध नर-नारी मदुरांतकम के कोदंडपाणि राम की शरण आये थे। दुःख के विविध रूपों के इस क्रूर सम्मेलन को देखकर मेरा अंतकरण कोदंडपाणि के संबोधन में द्रवित हो उठा—"हे धनुर्धारी राम 'प्रान जाइं बरु बचनु न जाई' कीर्तिवान राम, क्या आप अपनी वह प्रतिज्ञा भूल गये, जो सीता के सम्मुख आपने एक बार दोहरायी थी—

भीषण बादल-गर्जना हो रही थी। आसमान पर बारिश से ज्यादा बिजलियों का आतंक था। हम लोग अपने निवास से कोई पचास-साठ गज ही दूर गये होंगे कि रौद्र-गर्जन के साथ बिजली चमकी, प्रचंड प्रकाश और घोर वज्रपात से हमारे आंख-कान कुछ देर के लिए तो काष्ठवत् जड़ हो गये . . .

"क्षत्रियैर्धार्यते चापो
नार्तशब्दो भवेदिति"

(क्षत्रिय इसीलिए धनुष धारण करते हैं कि कहीं आर्त शब्द न सुनायी पड़े)।

भीड़ को चीरते हुए हम लोग भी कोदंडपाणि राम की मूर्ति के सम्मुख पहुंचे। देखकर आंखें ठगी-सी रह गयीं—अपने संपूर्ण शौर्य में ऊर्जस्वित व्रती राम अभयपाणि की आकृति! सारा वातावरण राममय था—एक मंडली जहां राम के बीजमंत्र **'रां रामाय नमः'** का सस्वर पाठ कर रही थी, वहां दूसरी मंडली राम के तारक मंत्र **'श्रीराम, जय राम, जय जय राम'** का गद्गद् कंठ से उच्चारण कर रही थी।

भक्त-भगवान संबंध की कहानी

परिक्रमा के बाद स्वामीनाथनजी ने हमें वह शिलालेख दिखलाया, जिसमें एक अंग्रेज कलेक्टर कर्नल प्लेस और मदुरांतकम कोदंडपाणि राम के भक्त-भगवान-संबंध की कहानी खुदी हुई थी। यह शिला-कथा ब्रिटिश सरकार के पुरातत्व-संग्रह में आज भी पढ़ी जा सकती है। मंदिर के कथावाचक के शब्दों में यह कहानी इस प्रकार है—

एक बार मदुरांतकम में ऐसी भीषण वर्षा हुई कि मंदिर से लगी झील ने तूफानी समुद्र का रूप धारण कर लिया। बरसात रुक नहीं रही थी और झील के तटबंधों के टूटने का खतरा बढ़ रहा था। आस-पास के गांवों के लोग घबराकर कलक्टर कर्नल प्लेस के पास पहुंचे। कलक्टर स्वयं चिंताग्रस्त था कि उस क्षेत्र के सैकड़ों मकानों, मवेशियों और फसल से लदे खेतों को कैसे बचाया जाए? सबको निरुपाय देख कलक्टर के बूढ़े हेड क्लर्क ने साहस करके कहा, 'हुजूर, मदुरांतकम का राममंदिर बरसों से जीर्णशीर्ण है, धन की तंगी का बहाना लेकर, इसकी मरम्मत को लगातार टाला जा रहा है। अपनी तीस बरस की नौकरी में मुझे बार-बार स्वप्न आते रहे हैं कि कोदंड महाप्रभु मदुरांतकम छोड़कर अन्यत्र जाना चाहते हैं। मेरी तो ऐसी धारणा है कि यदि कलक्टर साहब मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प भगवान के सामने करें, तो कोदंडपाणि इस महाभय से हम सबको उबार लेंगे।'

कलक्टर की कौंसिल ने बूढ़े हेड-क्लर्क राघवन की इस युक्ति को ध्यान से सुना, किंतु कोई कुछ बोला नहीं।

बारिश और तेज हो गयी। आंधी

नेझील की स्थिति भयानक कर दी। संस्कृत-ज्ञाता और धार्मिक प्रवृति के कर्नल प्लेस थे। लोग उनके संकल्पशक्ति के भी कायल थे। छत्री हाथ में लेकर कुछ कर्मचारियों के साथ वे कमरे से बाहर निकल पड़े। आंधी और वर्षा के थपेड़ों से जूझते हुए वे झील की सबसे ऊंची टेकरी पर जाकर खड़े हो गये। अपने चारों ओर नजर दौड़ायी, तो उनका दिल कांप उठा—ऊपर से बादल फट पड़ा था और नीचे झील क्रुद्ध कालसर्प की भांति, सहस्त्रों फन ताने विकराल फुत्कार कर रही थी! "क्या करें!" कर्नल ने अपने साथियों को संबोधित किया। किंतु कोई क्या उत्तर देता—वहां तो उपाय-पंगुता, देहपंगुता तक पहुंच चुकी थी।

राम का अंगरेज भक्त

कर्नल प्लेस ने छत्री फेंक दी और मंदिर की ओर घुटने टेककर, वे जमीन पर झुक गये। करबद्ध अंजलि को ऊपर उठाकर कांपते कंठ से बोले, "हे कोदंडधारी राम, आज आप ही हम सबके अंतिम शरण्य हैं। हे समुद्र पर सेतु बांधनेवाले श्रीरामचंद्र, आज आप इस झील को थाम लीजिए मैं आपके मंदिर के पुनर्निमाण का संकल्प लेता हूं। हे भवभयहारी रघुवंशनाथम्, हमारे भय का निवारण कीजिए—रक्षा कीजिए प्रभो. . .।"

कर्नल प्लेस की प्रार्थना आर्तनाद में परिणत होने लगी। बारिश की एक तेज झड़ी के साथ आकाश में चार-पांच बिजलियां कौंधी। पागलों की भांति कर्नल प्लेस चिल्लाये, "आ गये देखो वे कोदंडपाणि प्रभु आ गये! पाहिमाम प्रभो पाहिमाम"—कहते-कहते कर्नल प्लेस अचेत होकर गिर पड़े। उनके साथियों ने उन्हें बंगले में लाकर लिटाया। तीन घंटे बाद जब वे स्वस्थ हुए और आंखें खोलीं तब यह सुनकर उनकी आंखें कृतज्ञता से डबडबा आयीं कि बारिश बंद हो गयी है और झील के फटने का खतरा टल गया है।

अपने संकल्पनुसार कलक्टर ने मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया और उसके संरक्षण एवं नियमित पूजा-अर्चना के वार्षिक खर्च की भी उन्होंने सरकार से सदैव के लिए व्यवस्था करवा दी।

चमत्कार कथा पर तर्क-वितर्क

रात को जब हम अपने निवास पर आये तो इस चमत्कार-कथा पर सहचर-मंडली में तर्क-वितर्क छिड़ गया। प्रोफेसर पार्थसारथीजी ने कहा कि यह सब मनोभ्रम के सिवाय और कुछ नहीं है। वास्तव में कर्नल प्लेस के मानस-तंतु इतने आक्रांत थे कि उन्हें यथार्थ के बजाय दिवास्वप्न में ही परित्राण मिल सकता था। इस पर स्वामीनाथनजी ने प्रश्न किया, "मगर प्रोफेसर, झील फटने से कैसे बच गयी?" पार्थसारथी सव्यंग्य बोले, "कहां फटने जा रही थी झील! भावी अशुभ के भय से बस कर्नल साहब की बुद्धि के बांध जरूर टूट गये थे।"

श्रद्धा-अश्रद्धा की इसी परिचर्चा के बीच हम लोगों को गहरी नींद आ गयी। किंतु थोड़ी देर ही सोये होंगे कि किसी ने बाहर से दरवाजा खटखटाया। पार्थसारथीजी उठे और टार्च जलाकर दरवाजा खोला। देखा, तो एक बलिष्ठ आदमी पुलिस-वरदी में बाहर खड़ा है और उसके साथ तीन सिपाही और हैं। वर्दीधारी पुलिस ने कहा, "कमिश्नर साहब ने आपको बुलाने के लिए हमें भेजा है। कीर्तन शुरू हो गया है, सब आप लोगों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। एकदम चल दीजिए।" फिर अपनी टार्च जलाकर उन लोगों ने ऐसी हड़बड़ी में हम लोगों को बाहर सड़क पर निकाला कि जैसे हम लोगों ने कोई भयंकर जुर्म किया हो।

मुक्ति ब्रह्मराक्षस की

भीषण बादल-गर्जना हो रही थी। आसमान पर बारिश से ज्यादा बिजलियों का आतंक था ! हम लोग अपने निवास से कोई पचास-साठ गज ही दूर गये होंगे कि रौद्र गर्जन के साथ बिजली कड़की और हमारे निवास के आंगन में खड़े पेड़ पर ऐसी तीव्रता से गिरी कि ज्वाला की लहरें आकाश छूने लगीं। प्रचंड प्रकाश और घोर वज्रपात से हमारे आंख-कान कुछ देर के लिए तो काष्ठवत् जड़ हो गये।

कृतज्ञता-विह्वल मानस के साथ जब हम सब मंदिर पहुंचे, तब दूर से देखते ही कमिश्नर साहब बोले, "अरे, नींद खराब करके इस समय यहां क्यों आ गये ?"

उन्हें आश्चर्यचकित देख हम लोगों ने अपने पक्ष का प्रसंग उनको बताया। कोदंडपाणि को प्रणाम करने के बाद वे बोले, "यह सब हमारे मदुरांतकम के परमेश्वर की महिमा है। अशुभ-निवारण के ऐसे साक्षात्कार यहां आये दिन होते ही रहते हैं ! न मैंने आपको बुलाने के लिए किसी को भेजा था और न आधी रात को यहां कभी कीर्तन ही होता है ! पुलिस-वेश में कोदंडपाणि स्वयं आपको विपत्ति से बचाने के लिए आये थे। मदुरांतकम के राम 'एरीकातरामन' (झील के संरक्षक राम) की कीर्ति में विख्यात हैं, किंतु, भगवान की विभूति, करुणा-दया, क्या एक जड़ झील के संरक्षण तक ही सीमित है ? ईश्वर के ईश्वरत्व का विस्तार तो सीमातीत है !"

कमिश्नर साहब के साथ जब हम लोग अपने निवास के निकट आये, तब वह ईंट-मिट्टी का खस्ता मकान क्षारशेष-सा बिखरा पड़ा था। कमिश्नर ने मानो राहत की सांस ली, बोले, "लोगों में यह भय प्रचलित था कि इस मकान में एक ब्रह्मराक्षस सांप की योनि में रहता है। आज बिजली इसी सांप पर गिरी है। चलिए, अच्छा ही हुआ, भगवान कोदंडपाणि की कृपा आप लोगों पर बरसी तो सत्संग के पुण्य से उस ब्रह्मराक्षस को भी सर्प-योनि से मुक्ति मिल गयी।"

--१२, फिरोज गांधी मार्ग, लाजपतनगर-३, नयी दिल्ली-११००२४

उनकी पत्नी प्रेत बनकर रहती थी

● भगवती शरण सिंह

मानव जगत के ऊपर एक तो क्या, अनेक विलक्षण संसार या जगत हो सकते हैं। खोज जारी है, पर अभी तक किसी भी ऐसे जगत का पता नहीं चला है, जिसमें वैसे ही जीवधारी रहते हों या, रह सकते हों, जैसे कि इस पृथ्वी पर रहते हैं। अभी तक जो मालूम है, उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि ऐसा दूसरा जगत नहीं है।

यक्षों की पूजा

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि यक्ष और प्रेत मनुष्येतर शक्तियां हैं और उन्हें हमारे जगत-जैसे निवास की आवश्यकता नहीं है, तो वे कहां रहते हैं? यक्ष और प्रेतों के बारे में जो जानकारी मनुष्य की अभी तक है, वह उन्हें किसी दूसरे जगत का निवासी नहीं बताती। हम पहले यक्षों की ही बात लें।

यक्ष शब्द ऋग्वेद और अथर्ववेद में बहुत बार आया है। अतिमानव, भूत, प्रेत कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। अप-देवता या अर्ध-देवता के रूप में भी उसका उल्लेख हुआ है। कुबेर के धन के रक्षकों के रूप में भी भारतीय प्राचीन साहित्य में यक्ष

पौड़ी में जो अब सरकारी मुख्य अतिथि-गृह है, कभी उसमें वहां के कमिश्नर रहते सें। वह धर्म से इस्लाम के अनुयायी थे। वहां रहते हुए उनकी पत्नी का देहांत हो गया था। उसके बाद ऐसी जनश्रुति फैली कि उनकी पत्नी प्रेत बनकर उसी घर में रहती है . . .

चित्रित किये गये हैं। ये पिशाच के रूप में भी वर्णित हुए हैं। कुबेर के संदर्भ से यह देव-योनि के लोग माने गये हैं। ये लोग मनुष्यों के मुकाबले शरीर से बड़े और दीर्घजीवी थे और एक समय इसकी पूजा कश्मीर से कन्याकुमारी तक होती थी।

प्रेत : अर्थ सदा बुरा न था

इसी प्रकार प्रेत शब्द भी शत्पथ ब्राह्मण और वृहदारण्यक उपनिषद् में अच्छे अर्थों में ही प्रयुक्त हुआ है। यह दिवंगत मनुष्य के लिए आया है। भूत, प्रेत या पिशाच के अर्थों में इस शब्द का प्रयोग भी वाद का है। महाभारत में भी इसी अर्थ में इस शब्द का प्रयोग हुआ है। कहने का तात्पर्य यह कि यक्ष हो अथवा प्रेत, आरंभ में दोनों ही शब्द न तो बुरे अर्थ में लिये गये और न बुरा कर्म करनेवालों के लिए प्रयुक्त हुए। पौराणिक काल में जैसे वहुत से वैदिक देवों की अप्रतिष्ठा हुई, उसी प्रकार ये शब्द और इनसे अभिप्रेत जीव भी दुष्ट प्रकृति के हो गये।

यक्षों की मूर्तियां भी मिलती हैं, पर ये सभी वैदिक युग की बाद की अवधारणाओं पर आधारित हैं। वेदों में यक्ष और प्रेत शब्द ही तो आये हैं, पर इनकी पूजा का कोई विधान नहीं। बौद्ध-धर्म में, जो जन साधारण में भी खूब प्रचलित हुआ, यक्ष को स्थान मिला। उनका ऐसा विश्वास था कि यक्ष बुद्ध के उपासक थे।

पौराणिक काल में वेद-विरोधी जिन सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव हुआ, उनमें तांत्रिक भी थे। तंत्र हमारा आम्नाय तो है, पर अवैदिक आम्नाय है। बाद को चलकर तंत्रों के संबंध में, कुछ पाश्चात्य विद्वानों और संस्कृत न जाननेवालों के कारण, वहुत-सी भ्रांत धारणाएं भी बनीं। पूजा में पंचमकार को स्थान देकर कई प्रकार के दुराचार फैले। भैरवी-चक्र आदि बड़ी ही भयानक क्रियाओं का आविष्कार हुआ। यह सब होते हुए भी इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि तंत्रों में बहुत ही गंभीर दार्शनिक विचारों और योग गम्य अनुभूतियों की भी चर्चा भरी पड़ी है। तंत्र आज तो हमारे धार्मिक जीवन में पूर्ण रूप से व्याप्त हो गया है।

किसी प्रेत से मुलाकात नहीं

जहां तक अपने अनुभव की बात है, मुझे न तो किसी यक्ष, भूत-प्रेत अथवा पिशाच से भेंट हुई और न मैं उनमें विश्वास ही करता हूं। केवल एक उदाहरण काफी होगा।

गढ़वाल कमिश्नरी का मुख्यालय

पौड़ी है। पौड़ी में जो अब सरकारी मुख्य अतिथि-गृह है, कभी उसमें वहां के कमिश्नर रहते थे। वह धर्म से इस्लाम के अनुयायी थे। वहां रहते हुए उसकी पत्नी का देहांत हो गया था। उसके बाद ऐसी जनश्रुति फैली कि उनकी पत्नी प्रेत बनकर उसी घर में रहती हैं और जो वहां ठहरता है, उसको अकसर दिखायी पड़ती हैं। एक बार वहां ठहरे अधिकारी ने अपने को ज्वराक्रांत पाया और उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि उन्होंने उनको देखा और उनकी बीमारी का कारण वही थीं। वह तत्काल उसे छोड़कर चले गये।

संयोगवश जब मैं उत्तर-प्रदेश के पर्वतीय विभाग का कमिश्नर और सचिव था, तब दौरे पर पौड़ी गया। मेरे ठहरने का भी प्रबंध वहीं हुआ। वही एक मात्र अतिथि-निवास था। उसमें तीन कमरे थे; जो ठहरने और सोने के काम आ सकते थे। एक कमरे में वहां के तत्कालीन कमिश्नर श्री वाधवानी रह रहे थे। दूसरे में दौरे पर आये हुए भारत सरकार के एक अधिकारी ठहरे थे। तीसरे में मैं ठहराया गया।

रात्रि को भोजन करते समय जिस प्रकार बहुत-सी बातें उठ पड़ती हैं। प्रसंगवश यह बात भी कही गयी : श्री वाधवानी जी ने इस जनश्रुति के कई किस्से सुनाये। खाना समाप्त होने के बाद हम लोग अपने-अपने कमरों में विश्राम करने चले गये और जब मैं रोशनी बुझाकर सोने का उपक्रम करने लगा, तब मुझे ये बातें याद आयी। मैंने सोचा कि जिस कमरे में श्री वाधवानी ठहरे हैं, अगर उस कमरे में प्रेत-बाधा होती तो या तो वह अपने अनुभव सुनाते अन्यथा छोड़कर अन्यत्र चले गये होते। जो भारत-सरकार के अधिकारी थे, वे भी कई दिनों से ठहरे हुए थे। मैंने सोचा, अगर उन्हें प्रेत-बाधा हुई हो तो वे भी छोड़कर चले गये होते। निदान मैंने यह कल्पना कर ली कि जो कमरा बचा हुआ था और जिसमें मैं ठहराया गया था, वही प्रेत-बाधा संतप्त कमरा था। सोचते-सोचते ही सो गया होऊंगा, क्योंकि अभी भी मुझे अच्छी नींद आ ही जाती है। सोने के शायद कुछ ही देर बाद मुझे कुछ पैरों की आहट मालूम हुई। जिधर से आने की आवाज आ रही थी, उधर ही ध्यान जमा लिया। रोशनी का बटन दूर था, अतः उठकर उसे जलाने की इच्छा नहीं हुई। मुझे ऐसा लगा, यह पग-ध्वनि उन्हीं की है और अब शीघ्र ही किसी न किसी रूप में उनकी प्रेतात्मा के दर्शन होंगे अथवा उसका कोई प्रभाव पड़ेगा। पर मेरे साथ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। मैं फिर कब सो गया, यह भी नहीं मालूम।

बाद को पता चला कि वह पग-ध्वनि वहां के चौकीदार की थी, जो कमरों के दरवाजों के बंद होने की जांच-पड़ताल, करना चाह रहा था।

—बी-२२ सेक्टर ए, महानगर, लखनऊ-२२६००६

तांत्रिक ने उनकी जान ले ली

• राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह

राह तो मेरी बता दी खिज्र ने
ऊंट का लेकिन किराया कौन दे?

अकबर इलाहाबादी ने बड़े रोचक ढंग पर इस शेर में इस्लाम के इस विचार की चर्चा की है कि फरिश्तों यानी ईश्वर-दूतों में खिज्र नाम के एक फरिश्ता हैं, जिनका काम पथ-हारों को राह दिखाना, मार्ग-प्रदर्शन करना है। खासकर, अरब के रेगिस्तानी इलाकों में जहां रात के वक्त ऊंट हांकनेवाले अक्सर अपनी राह भूल बैठते हैं।

ऐसा एक अनुभव मुझे स्वयं हुआ था, पर न तो वह अरब का रेगिस्तान था, न मुझे यही मालूम कि राह दिखाने वाले खिज्र थे या कोई और, इसी लोक की कोई प्रेतात्मा।

बात आज से काफी पहले की है जब मेरी उम्र तीस के करीब रही होगी। रात का वक्त था। मैं घर पर सवारी भेजने के लिए पूर्व-सूचना दिये बगैर रात की एक ट्रेन से स्टेशन पर उतरा और अपने गांव के लिए—जवानी का जोश!—पैदल ही चल पड़ा। गांव के लोग आठ बजते-बजते सो जाते हैं, सो चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। मैं सुनसान ग्रामीणी रास्ते से आगे बढ़ता जा रहा था। तभी एक ऐसी जगह आ पहुंचा जहां से कई रास्ते, कई दिशाओं में जाते थे। मुझे सहसा दिग्-भ्रम हो गया और मैं बीच रास्ते पर खड़ा होकर यह सोचने लगा कि इनमें कौन-सा वह रास्ता है, जो मेरे गांव को जाता है। मैं असमंजस में था तभी सहसा मेरी दृष्टि एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी, जिसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी तथा वह हाथ के इशारे से मुझे यह बता रहा था कि मुझे किस ओर जाना चाहिए। मैंने उसी रास्ते को पकड़ा और सीधे अपने घर पहुंच गया।

मैं नहीं समझता कि वह खिज्र थे,

पर वह अवश्य कोई ऐसी प्रेतात्मा थी, जो पर-सेवा के द्वारा प्रेत-योनि से मुक्ति चाहती थी, अर्थात उसे यह विश्वास था कि —**'पर हित ही जिनके मन मांही,**
तिन कंह कछु दुर्लभ जग नाहीं ।'

पर इस लोक की अधिकांश प्रेतात्माएं ऐसा नहीं सोचतीं तथा तरह-तरह से लोगों को तंग किया करती हैं। एक बार ऐसी ही एक प्रेतात्मा ने अपने एक ग्रामीण मित्र के घर पर ठहरे हुए मुझे पीठ की ओर से आकर इतने जोर से दबाया कि मैं बेचैन हो उठा, तभी मैंने गायत्री मंत्र का जप आरंभ कर दिया और उसने फौरन मुझे छोड़ दिया। यह इस बात का प्रमाण था कि मंत्रों में कितनी शक्ति होती है और इन मंत्रों में 'अघोर' यानी तांत्रिक मंत्रों की शक्ति सर्वोपरि कही गयी है। चूंकि इन मंत्रों की सृष्टि, कहते हैं कि, स्वयं शंकर भगवान ने की और ये सभी 'महानिर्वाण तंत्र' नामक पुस्तक में संग्रहीत हैं । 'महिम्नस्तोत्र' की 'अघोरान्नापरो मंत्रः' उक्ति प्रसिद्ध है। पर इन मंत्रों की शक्ति का वाममार्गी तांत्रिक अकसर दुरुपयोग कर बैठते हैं, जिसकी एक मिसाल प्रस्तुत है—

बात मेरे लड़कपन की है। मेरे एक दूर के चाचा थे, काफी मालदार, जिन्हें विरासत में ननिहाल से संपत्ति—एक बड़ी-सी जमींदारी—मिलनी थी, पर लंबी जिंदगी थी उनके नाना की। वे बूढ़े हो चले, पर मरने का नाम ही नहीं

मैं नहीं समझता कि वह खिज्र थे, पर वह अवश्य कोई ऐसी प्रेतात्मा थी, जो पर-सेवा द्वारा प्रेत-योनि से अपनी मुक्ति चाहती थी। अर्थात उसे यह विश्वास था कि 'परहित ही जिनके मन मांही, तिन कंह कछु दुर्लभ जग नाहीं ।'

ले रहे थे, अब संपत्ति मिले कैसे? अंत में हारकर इन्होंने काशी से एक तांत्रिक बुलाया और आश्विन के नवरात्र में उन्हें मारने की क्रिया आरंभ हुई। आटे से उस तांत्रिक ने एक मनुष्य की रूप-रेखा तैयार की और प्रतिदिन विधिवत् मंत्र के द्वारा एक-एक अंग का छेदन शुरू किया। दशमी के दिन सिरछेदन हुआ। और, उसी दिन पटने में, विजया दशमी के अवसर पर, मेरे उपर्युक्त चाचा के नाना अच्छे वस्त्र धारण कर, गुलाब का इत्र लगा, मुंह में पान की गिलौरियां रख, अपनी घोड़ागाड़ी पर सवार हो सैर को निकले। दुर्भाग्य की बात! घोड़े यकायक बिगड़ उठे और गाड़ी को लिये हुए वे एक नाले में जा गिरे। उनकी तत्काल मृत्यु हो गयी।

—बी-२, महरानी बाग,
नयी दिल्ली-६५

अमृतपान: सबसे बड़ा आनंदोत्सव!

● डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

मेरी अस्तित्ववाद पर उतनी ही आस्था है, जितनी वर्चस्वशील वीर्यवान कार्यों की थी। उन्होंने अत्यंत उदात्त अमोघ निर्घोष किया था कि—"**तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।**"

अर्थात संसार की हर वस्तु को डट-कर भोगो, पर उसके गुलाम न बनो। आज तुम्हारे सामने सुंदर सुस्वादु पदार्थ परोस दिये जाएं, तो उनका पूर्ण आस्वाद लो, रसमय हो जाओ, पर कल उसी थाली में सूखे चने परोस दिये जाएं और नमक तक न हो, तब भी उसी ठाट से फंकी लगाओ, इसका ध्यान भी न रहे कि दोनों में क्या अंतर था। अपनी इसी अलमस्ती में हमारे पूर्वजों ने मृत्यु को भी नितांत सहज बना दिया था—**त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनं। उर्वासंकमिव बंधना-न्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।**

ऋषि कहते हैं, जैसे ककड़ी या फूट पक जाने पर डंठल से अपने आप अलग हो जाती है, किसान को उसे तोड़ना नहीं पड़ता है, वह तो उस पके-पकाये फल को सहज भाव से उठा लाता है, उसी प्रकार जीवन के बंधनों से मृत्यु हमें मुक्त कर दे, पर अमृत से नहीं, क्योंकि वही तो जीवन का सार है। यह अमृत का पान ही तो हमारा सबसे बड़ा आनंदोत्सव है। परम-विदुषी मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य को इसी बात पर तो निरुत्तर किया था कि—**येनाहं नामृतास्याम किमहं तेन कुर्याम्।**

जिस सारी धन-दौलत को पाकर मुझे जीवन का अमृत न मिले, उसे लेकर मैं क्या करूंगी?

सबसे बड़ी रहस्यमय सत्ता तो अपना मन है। मैं किसी ऐसे इलहाम का कायल नहीं, जो मुझे सत्य के साक्षात्कार हेतु किसी छलावा में भटकाये। एक सूफी संत ने कहा है कि जैसे शरीर और कपड़ों के बीच कोई नहीं है, पर कपड़ा शरीर के नंगेपन को नहीं देख पाता, उसी प्रकार जीव और आत्मा के बीच में कोई नहीं है, पर जीव सदैव आत्मस्वरूप नहीं हो पाता। जवानी की धड़कन ही वृद्धावस्था में जिज्ञासा बन जाती है। मन की अतल गहराइयों में डुबकी लगाकर, उन मोतियों की खोज में अवश्य हूं, जिनमें जीवन संघर्ष की आब अंत तक बनी रहे। सुनते हैं, पूर्णा-हुति का यह आत्मानंद सरभंग ऋषि को सुलभ हो गया था।

—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिंदी-भवन,
महात्मा गांधी मार्ग,
लखनऊ-२२६००१
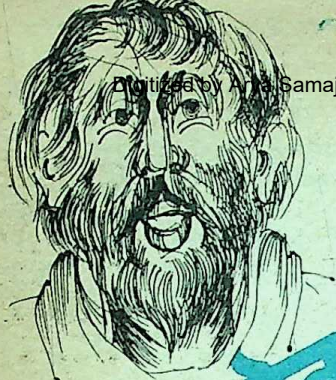
भूत-प्रेत और परी हमने देखे हैं

• डॉ. भगवतीशरण मिश्र

सितंबर का अंत अथवा अक्तूबर का आरंभ था। हवा में हलकी खुश्की आरंभ हो गयी थी। आश्विन-नवरात्रि के दिन समीप आ रहे थे। ग्रोम काली बाबा और मैं बंगले के सामने की अमराई में बैठे बातें कर रहे थे। मैंने बाबा से अपनी पुरानी प्रार्थना दोहरायी, "बाबा, अबकी नवरात्रि में तो मुझे ज्ञान-दान दे ही दीजिए।"

"आप इतने व्यग्र क्यों हो रहे हैं? किसी-न-किसी को तो मुझे अपनी विद्या एक दिन देनी ही है। आप ही को दे दूंगा।"

"कहते तो आप बहुत दिनों से आ रहे हैं। पर मेरा विचार है कि इस नवरात्रि में आप मुझे अवश्य ही अपनी विद्या प्रदान कर दें।" मैंने अनुरोध किया।

नवरात्रि आरंभ हुई, तो नाना ने मुझे एक मंत्र दिया। बताया कि नित्य सुबह चार बजे १०८ बार इसका जप होना चाहिए। नवरात्रि में मैं स्वयं दुर्गा की उपासना किया करता हूं। कलश-स्थापनकर दुर्गा सरस्वती का पाठ करता हूं। नवरात्रि के नौ दिनों तक अखंड दीप जलता है।

इस नवरात्रि में भी अपने शयन-कक्ष के एक किनारे मैंने पूजा-स्थान बनाया। सदा की तरह कलश-स्थापन किया। दुर्गा सप्तशती का पाठ आरंभ हुआ और साथ-ही-साथ बाबा द्वारा बताये गये मंत्र का जप भी।

बाबा ने मंत्र देने के पूर्व यह बताया था कि आवश्यक नहीं कि पूरी नवरात्रि मंत्र का जप करना पड़े। अगर जप के दौरान ही दर्शन हो गये, तो सिद्धि प्राप्त हो जाएगी।

पूजा का समय चार बजे ही आरंभ हो जाता था। पहले दिन ही बाबा से मैंने इस समस्या के संबंध में बात की थी। उन्होंने कहा कि प्रबंध हो जाएगा। दो बाल्टियां मेरे स्नानगृह में रखवा दीं। दरवाजा बंद किया गया, तो दोनों बाल्टियां पानी से भरी थीं...

बाबा के कहने के अनुसार मैं नित्य चार बजे सुबह, सप्तशती के पाठ के पूर्व १०८ बार मंत्र का जाप करने लगा। उन दिनों मैं लाल वस्त्र धारण करता था और लाल रंग में रंगी एक धोती ही मेरा परिधान होती थी। दिन और रात वैसी ही धोती पहनकर मैं रहा करता था। पूजा के दौरान एक कठिनाई यह भी उपस्थित हुई कि सुबह चार बजे स्नान के लिए जल नहीं मिलता था। नगर-पालिका के पानी के नल पांच बजे के लगभग खुलते थे और पूजा का समय चार बजे ही आरंभ हो जाता था। पहले दिन ही बाबा से मैंने इस समस्या के संबंध में बात की। उन्होंने कहा, "प्रबंध हो जाएगा।" दो बाल्टियां मेरे स्नानगृह में रखवा दीं। दरवाजा बंद किया गया। और, एक मिनट के बाद ही खोला गया, तो दोनों बाल्टियां पानी से भरी थीं। यह पानी निश्चय ही नदी का था, क्योंकि वह सफेद था, जैसा कि मुजफ्फरपुर नगर के पास ही बहनेवाली गंडक नदी का पानी है। यहां यह बात ध्यान देने की है कि बाल्टियां नल के नीचे नहीं रखी गयी थीं, बल्कि स्नानगृह के बीच में रखी गयी थीं। वैसे भी जैसा कि बताया गया, पानी पांच बजे आता था, अतः नल के नीचे रखने पर भी बाल्टियों के भरने का कोई प्रश्न नहीं था। इस प्रकार चार दिनों तक मैंने इसी प्रकार के पानी से स्नान किया। बाल्टियों के भरने में इतना ही समय लगता था, जितना दरवाजे के बंद करने और खोलने में।

स्नान के लिए इस प्रकार पानी मिलने

की घटना पर, मेरे आश्चर्यचकित होने की कोई बात नहीं थी, क्योंकि ऐसी घटनाएं तो मेरे साथ लगातार घटती ही आ रही थीं। लेकिन नवरात्रि के पांचवे दिन मेरे साथ जो घटना घटी, वह तब तक की घटनाओं में सबसे अधिक विस्मयकारी थी। उस दिन मैं एक दूसरे कमरे में सोया हुआ था। पूजा के दिनों, अपने शयनागार का प्रयोग मैं शयन-कक्ष के रूप में नहीं करता था। इन दिनों घर में परिवार का कोई अन्य सदस्य भी नहीं था। बाबा ने बताया था कि सीखते समय घर को खाली रखना ही उचित है। दूसरे कमरे का दरवाजा खुला ही हुआ था। बाबा उन दिनों मेरे ड्राइंग-रूम में सोने लगे थे। ड्राइंग-रूम से आंगन होकर मेरे कमरे तक रास्ता आता था।

रात्रि के कोई तीन बजे होंगे कि मुझे किसी ने नींद से जगाया। मैं अपनी लाल धोती, पहने ही सोया हुआ था। आंख मलते उठा, तो देखा कि बाबा खड़े हैं। इतनी सुबह उन्हें अपने शयन-कक्ष में पाकर आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुझे पूजा-कक्ष में चलने का इशारा किया। हम दोनों वहां गये। घर में शांति व्याप्त थीं। कलश के ऊपर का अखंड दीप धीरे-धीरे जल रहा था। बाबा ने कमरे का दरवाजा भीतर से बंद कर दिया। एक तरफ वे खड़े हो गये और उनके सामने थोड़ा हटकर मैं खड़ा हो गया। मुझे लगा कि कोई आश्चर्यजनक घटना घटनेवाली है। इसी समय कमरे के अंदर बंद दरवाजे के पास कोई लाल-सी चीज चमकी। मुझे लगा कि बाबा जिन कई परियों का नाम लेते हैं, उनमें से ही कोई प्रकट होनेवाली है। किंतु दूसरे ही क्षण वहां १८-१६ वर्ष का एक हृष्ट-पुष्ट युवक उपस्थित हो गया। एकरंग (लाल रंग का एक कपड़ा) के एक टुकड़े को उसने संन्यासियों की तरह कमर से कंधे तक बांध रखा था। यही चीज लाल रूप में पहले चमकी थी। इस व्यक्ति के एक हाथ में अगरबत्ती का एक मोटा गुच्छा था और दूसरे हाथ में एक भरा हुआ कमंडल।

इस आकस्मिक घटना से मैं अवाक् रह गया। कमरे में जहां पहले हम दो आदमी थे, वहां तीन हो गये। कमरा भरा-भरा लगने लगा। मैंने इस व्यक्ति को गौर से देखा, क्योंकि इसके पूर्व मैंने बहुत सारी कहानियां पढ़ रखी थीं, कि भूत-प्रेत के पैर जमीन पर नहीं पड़ते अथवा वे उल्टे होते हैं या यह भी कि वे सामने से तो भरे-भरे मालूम होते हैं, किंतु पीठ की ओर से, वे खाली होते हैं। मैंने देखा कि उसके पैर आम आदमियों की तरह ही जमीन से सटे थे। वह पूरी तरह स्वस्थ था। उसके गले में रुद्राक्ष का एक दाना धागे से गुथा हुआ पड़ा था। मुझे आज भी याद है कि वह धागा कुछ-कुछ गंदा था। इसके बाद मैंने उसके सिर के केशों की ओर ध्यान दिया। वे रूखे और उल्टे संवारे हुए थे। मुझे लगा कि वे कुछ निर्जीव
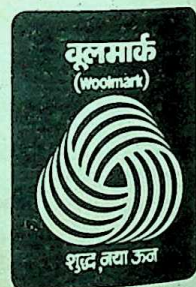
से हैं। स्पष्ट [illegible] है कि उसके पूरे शरीर में केवल केशों में ही मुझे कुछ विचित्रता लगी वर्ना वह सामान्य व्यक्ति की तरह ही हाड़-मांस का पुतला था। उसे देखते ही ग्रोम काली बाबा ने झुककर अपने दोनों हाथ जोड़ लिये थे।

थोड़ी देर के बाद ही वह व्यक्ति अपनी जगह से आगे बढ़ा। वह पूजा-स्थान तक गया, जहां कलश था ग्रौर उसके ऊपर दीप जल रहा था। इस बीच मैंने उसके पीछे के भाग का भी अवलोकन कर लिया, जो पूरी तरह सामान्य था। उसने हाथ के कमंडल ग्रौर अगरबत्ती के गुच्छे को पूजा-स्थान के पास रखा ग्रौर वहां से लौटकर ठीक उसी स्थान पर खड़ा हो गया जहां प्रकट हुआ था। इस बीच हम तीनों में कोई संवाद नहीं हुआ। न तो बाबा कुछ बोले, न वह व्यक्ति, न मेरे मुंह से कोई आवाज निकली। हम दोनों हाथ जोड़े खड़े रहे। वह मुड़ा ग्रौर बंद दरवाजे की ग्रोर कदम बढ़ाये ग्रौर इसके पूर्व कि वह दरवाजे तक पहुंचता, गायब हो गया।

उसके गायब होने के पश्चात कुछ [illegible] तक मैं स्तब्ध खड़ा रहा। इसके बाद दरवाजा खोलकर ग्रोम काली बाबा ग्रौर मैं बरामदे में आये। मैंने बाबा से पूछा—"क्या हुआ ?"

बाबा ने कहा, "आपको सिद्धि हो गयी।"

मैंने कहा, "मुझे कुछ मालूम तो पड़ता नहीं।"

उन्होंने कहा, "धीरे-धीरे मालूम पड़ेगा। रास्ते में कभी कोई आवाज सुनायी पड़ेगी। अकेले में कभी कोई प्रकट होगा।" किंतु मैं पाठकों की सुविधा के लिए बताऊं कि ऐसा कभी कुछ हुआ नहीं।

बाबा से मेरे संबंध धीरे-धीरे बिगड़ते रहे। कुछ समय के बाद मुजफ्फरपुर नगर से मेरा स्थानांतरण हो गया ग्रौर उनसे मेरा संबंधविच्छेद-सा हो गया। वे खैर अभी भी जिंदा हैं ग्रौर उनसे यदाकदा भेंट होती रहती है।

दर्शन के पश्चात् बाबा ने बताया था कि वह व्यक्ति, उनके प्रमुख इष्टों में एक, रामनाथ बाबा था, जिसकी सिद्धि उन्होंने उत्तर-प्रदेश के एक नगर में की थी।

—संयुक्त निदेशक, राजभाषा,
रेल-भवन, नयी दिल्ली

आस्कर वाइल्ड तुम्हे जेल जाना पड़ेगा

"पांच वर्ष के भीतर तुम्हारी सारी प्रसिद्धि धूल में मिल जायेगी, तुम्हें जेल जाना पड़ेगा और वह भी जन्म भूमि से दूर-विदेश में मृत्यु होगी।" प्रसिद्ध साहित्यकार आस्कर वाइल्ड का हाथ देखते हुए हस्तरेखा सम्राट कीरो ने कहा।

तीन वर्ष पश्चात ही आस्कर वाइल्ड घोर दुराचरण के आरोप में बंदी बना लिया गया। मुकदमा चला और अपराध प्रमाणित होने पर कठोर कारावास की सजा का दंड उन्हें मिला। सजा की अवधि समाप्त होने पर वह फ्रांस भाग गये। फ्रांस में पश्चाताप और ग्लानि की पीड़ा से व्याकुल होकर ही एक अपरिचित, तिरस्कृत व्यक्ति की मौत, घोर विपन्नता की स्थिति में मृत्यु हुई। —अनामिका

भविष्यवाणियां जो सच निकलीं

विदेशी भविष्य-वक्ता कहते हैं :

- **एक और गांधी पैदा होनेवाला है**
- **पड़ौसी देश भारत में विलय होंगे**
- **१९९८ में प्रलय, फिर नया युग**

• मधु मिश्रा

भविष्य के अदृश्य रहस्यमय संसार में झांकना, मनुष्य की आदिम जिज्ञासा रही है और शताब्दियां गवाह हैं कि हर काल, हर समय में कुछ प्रतिभाएं ऐसी रही हैं, जिन्होंने अपनी भविष्य-दृष्टा चेतना के द्वारा प्रारब्ध से लेकर भविष्य तक से साक्षात्कार किया है, चीनी, हिंदू, रोम, यूनानी, मिस्र, अरबी तथा विश्व की अनेक सभ्यताएं इन प्राहृभूत भविष्यवाणियों से अटी पड़ी हैं। विश्व-विख्यात कुछ प्रमुख भविष्यवेत्ताओं की कालजयी भविष्यवाणियां हमारी आगत इतिहास-यात्रा को किस मोड़ पर जाना है, उसकी ओर संकेत करती हैं।

भविष्य-दृष्टा महिला : जीन डिक्सन

आज की शताब्दि की एक अमूल्य धरोहर जो अपनी भविष्यवाणियों के कारण विश्व विख्यात हैं और आज भी हमारे बीच विद्यमान हैं वह हैं, अमरीका की जीन डिक्सन। ध्यानावस्थित मुद्रा में भविष्य से साक्षात्कार कर, उन्हें शब्दों में व्यक्त कर देने में सक्षम श्रीमती डिक्सन ने सन १९४४ में अमरीकन राष्ट्रपति श्री फ्रेंकलिन रुजवेल्ट के मृत्यु की भविष्य[वाणी] एक वर्ष पूर्व ही कर दी थी, जो कि अ[क्षरशः] सत्य सिद्ध हुई। यही नहीं वाइस प्रे[सीडेंट] ट्रूमेन को, वे राष्ट्रपति होंगे, यह सू[चना] देकर, स्तब्ध कर दिया था, और [यह] भविष्यवाणी भी सच निकली।

तीस जनवरी, १९४८ को श्री[मती] डिक्सन अमरीका में अपने कुछ मित्रों [से] बात कर रही थीं, उन्होंने कहा, "ल[गता] है, अभी-अभी गांधीजी की भारत में ह[त्या] कर दी गयी है" और वस्तुतः आने[वाले] चंद लम्हों में सारे विश्व में यह सूचना [फैल] गयी थी कि गांधीजी की हत्या कर [दी] गयी।

२२ नवंबर, १९६३ को राष्ट्र[पति] कैनेडी की हत्या होगी और हत्यारे का [नाम] 'ओ' से शुरू तथा 'डी' अक्षर पर समा[प्त] होगा, यह चौंका देनेवाली भविष्यवाणी [भी] श्रीमती डिक्सन ने बहुत पहले कर [दी] थी, जो कि बाद में सत्य निकली। [इस] चमत्कारिक प्रतिभा ने आनेवाली तारी[खों] पर भी अपनी भविष्यवाणियां टांकी [हैं] जो इस प्रकार हैं—

(१) भारत के एक ग्रामीण परिवार [में] एक और गांधी पैदा होनेवाला है।

(२) चीन की बढ़ती हुई संप्रभुता [रूस] और अमरीका को मिलकर चीन से ल[ड़ने] के लिए बाध्य करेंगी।

(३) चीन अणु-युद्ध की बजाय कीटा[णु] युद्ध करेगा, जिसमें असंख्य लोग [मारे] जाएंगे।

(४) भारत आध्यात्मिक, भौतिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में विश्व में अग्रणी होगा।

भविष्य की तीसरी आंख

इस युग का एक महान भविष्य-दृष्टा है —पीटर हरकौस। पीटर हरकौस अतींद्रीय चेतना की वह तीसरी आंख है, जो अशरीरी भविष्य का एक्सरे करने में अब तक सर्वाधिक सक्षम रही है। वैज्ञानिक उसके मस्तिष्क पर अनुसंधान कर रहे हैं कि आखिर उसके दिमाग में ऐसी खूबी क्या है? जो रहस्य दुनिया की बड़ी-बड़ी गुप्तचर संस्थाएं नहीं सुलझा पातीं, उसे पलक झपकते ही सुलझा देना पीटर हरकौस का चमत्कार है। उसकी भविष्यवाणियों से घबराकर, जरमनी ने उसे तथा उसके साथियों को जेल में डाल दिया। यह बात विश्व-युद्ध के दौरान की है। पीटर ने अपने साथियों से कहा कि हम ५ जून, १९४० को मुक्त हो जाएंगे। और सच! ४ जून को मित्र सेनाओं ने जरमन पर आक्रमण किया और ५ जून, १९४० को पीटर अपने साथियों सहित मुक्त हो गया। १९५० में इंगलैंड के राजमहल से चुरायी गयीं 'स्कोन मणि' का रहस्य स्कॉटलैंड यार्ड तथा ब्रिटिश सी. आई. डी. भी सुलझाने में असफल रही, तो पीटर की ही मदद ली गयी और उसने लोहे की डंडी (जिससे राजमहल का दरवाजा तोड़ा गया था) को देखते ही अपराधियों के नाम तथा हुलिए बता दिये, जो बिलकुल सच निकले।

पीटर हरकौस की भविष्य के प्रति कुछ महत्त्वपूर्ण घोषणाएं इस प्रकार हैं—

(१) अमरीका के लिए चीन हमेशा एक समस्या बना रहेगा।

(२) अमरीका तथा रूस मिलकर चीन से लड़ेंगे, परंतु चीन प्रबल विरोधी के रूप में सामने आएगा।

(३) यह युद्ध १९९९ तक समाप्त होगा।

(४) भारत का आध्यात्म विश्व पर पुनः छाएगा।

(५) भारत के चारों ओर जो छोटे-छोटे राष्ट्र हैं, वे स्वेच्छा से भारत में विलय करेंगे।

ब्लड-प्रेशर और अस्थमा का युग

अगला विश्व-युद्ध विषैली रासायनिक गैसों से लड़ा जाएगा, और विश्व के ९५% लोग ब्लड-प्रेशर, अस्थमा से त्रस्त होंगे और करोड़ों लोग अपाहिज की जिंदगी जिएंगे यह घोषणा की है विश्व के अग्रणी पादरी भविष्य-वक्ता 'पियो' ने। यह वही पियो है, जिन्होंने मुसोलिनी के पतन, तथा 'लीग ऑव नेशंस' की स्थापना की भविष्यवाणी कर इतिहास की मुट्ठी में अपनी भविष्यवाणी का तोहफा थमा दिया था। अमरीका का राष्ट्रपति बदनामी के कारण अपना पद छोड़ेगा यह बात भी पियो ने ही कही थी। निक्सन का वाटरगेट कांड पाठक याद करें।

आनेवाले समय हेतु पियो की कुछ महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणियां

(१) चीन धीरे-धीरे बहुत अधिक शक्ति-

शाली हो जाएगा और इसके नाम से सारी दुनिया भय खाएगी।

(२) अरबों और इजराइल का तनाव बराबर बना रहेगा और अंतत: अरब को ही हानि उठानी पड़ेगी।

(३) सन १९९८ में प्रलय होगी तथा उसके बाद एक नया युग प्रारंभ होगा—

(४) विश्वयुद्ध के बाद भारत संसार की एक प्रमुख हस्ती होगी और लोग उसकी बात मानने को बाध्य होंगे।

बाइबिल की पंक्ति में सिमट आया भविष्य

कनाडा के पर्वतीय अंचल हायलैंड में रह रहीं, भविष्यदर्शी महिला माल्वा डी का भविष्य में झांकनें का अपना ही अंदाज है। माल्वा डी के पास जो व्यक्ति, अपना भविष्य जानना चाहता है, वह बाइबिल की एक पंक्ति अपनी लिखावट में लिखकर उनके पास पहुंचाता है और उसे पढ़कर माल्वा संबंधित व्यक्ति के बारे में भविष्यवाणी कर देती हैं। रामचरितमानस की रामशलाका द्वारा फलित जानने-जैसी ही कुछ विधि है, माल्वा डी की।

माल्वा डी ने कानूनी ढंग से रजिस्टर्ड कराकर कैनेडी को उनकी मृत्यु-भविष्यवाणी २२ नवंबर, १९६३ बता दी थी। चर्चिल की मृत्यु तिथि ३ अगस्त, १९६४ उन्होंने बहुत समय पहले ही बता दी थी। माल्वा डी की भविष्य संबंधी रोमांचक घोषणाएं कुछ इस प्रकार हैं—

(१) विश्व-युद्ध की संभावना १९८४ के आसपास है।

(२) आने वाले समय में अंतरिक्ष यात्राओं में बहुत कम धन खर्च होगा और बहुत कम खर्चे में लोग एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक जा सकेंगे।

भविष्य पुरुष : कीरो

ज्योतिष और भविष्यवाणियों की चर्चा हो और कीरो का उल्लेख न हो यह बड़ा अस्वाभाविक-सा लगता है। वर्तमान ज्योतिष जगत और विशेषकर हस्त-रेखा विज्ञान का आधार स्तंभ है—कीरो। उसके जीवन की ८० प्रतिशत भविष्यवाणियां बिलकुल सही निकलीं और अपने जीवनकाल में ही कीरो विश्वविख्यात भविष्यवक्ता बन गया। स्कॉटलैंड यार्ड के जासूसी भरे, हैरतअंगेज कारनामे विश्व-विख्यात हैं। मगर एक बार ऐसा भी हुआ था कि स्कॉटलैंड यार्ड के मुख्यालय के सामने एक गुमनाम बूढ़े की लाश, एक रहस्यमय गुत्थी के रूप में पड़ी, गुप्तचर अधिकारियों को चुनौती दे रही थी और रहस्य-सूत्र अधिकारियों की पकड़ में आ ही नहीं रहा था, यह चमत्कार कीरो का ही था कि उन्होंने दस मिनट वृद्ध के शव का परीक्षण करने के बाद अपराधी का अता-पता बता दिया था। इस घटना ने ही कीरो को रातोंरात विश्व-विख्यात व्यक्तित्व बना दिया। कीरो ने भारत-विभाजन की भविष्यवाणी बहुत समय पहले ही कर दी थी।

—१६१९/३६, उल्धनपुर, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३१

पिछले वर्ष के तंत्र अंक में आपने पढ़ा था कि बिठूर में पाया गया शव सुरक्षित है। इस बार भी हमारे प्रतिनिधि वहां गये और शव को सुरक्षित पाया . . .

हां! बिठूर का शव अब भी सुरक्षित है!

● नन्दकिशोर झांझरि

पिछली बार जब हम लोग बिठूर गये थे, तब शव साड़ी से ढका हुआ था। इस बार भी शव साड़ी से ही ढका हुआ था। शव में मात्र चेहरा दिख रहा था।

स्मरणीय है कि विगत नवंबर १९८१ के अंक में 'शव जो तीन साल से रखा है, विज्ञान जहां पराजित है' नामक शीर्षक से इस आश्चर्यजनक घटना को देश के सामने रखा गया था। आज एक वर्ष के अंतराल के बाद भी शव वहां सुरक्षित है। कई मेडिकल छात्र भी गये और ऐसे लोग भी गये, जिनका विज्ञान से नजदीक का संबंध है। वे भी इस घटना से हतप्रभ हैं। २५ अक्तूबर १९७८ को गंगा... नामक महिला की मृत्यु हो गयी थी। ... वर्ष से भी अधिक समय हो रहा है, ... भी यह शव उसी तरह बिठूर में सुरक्षित है। उसमें अब तक किसी प्रकार ... बदबू नहीं आ रही है। गंगा के ... स्वामी ओम स्वामी (जिनका असली ना... सरजूप्रसाद मिश्रा है) ने आज तक ... साधना-बल पर सुरक्षित रखा हुआ है।

विज्ञान के लिए चुनौती

प्रोफेसर रमेश चन्द्र मिश्र बी. एन. ... डी. कालेज, कानपुर में भौतिक शास्त्र ... प्रोफेसर हैं। उनका कहना है कि बिना किसी 'केमिकल' के शव सुरक्षित रहे, ... विज्ञान के लिए चुनौती है।

पं. अयोध्या प्रसाद

प्रत्यक्षदर्शी योगेश तिवारी का कहना है—"शव को मैंने कल ही देखा था, बिलकुल ठीक है।"

शव तो गंगा का ही है . . .

श्रीमती महेश्वरीदेवी, जिनकी आयु लगभग ७५ वर्ष की है, उनका कहना है, "जब गंगा जिंदा थी, तब से हम उसे जानते हैं। बड़ी नेक औरत थी, पूजा-पाठ भी करती रहती थी। मैंने भी कुछ दिन पूर्व शव को देखा है, न जाने किस जादू से सरजू ने शव सुरक्षित रखा है।"

शव में बदबू नहीं है

पंडित अयोध्याप्रसाद व्यवसाय से पंडा हैं। ब्रह्मव्रत-बिठूर का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व है। वहां के प्रमुख पंडों में से वे एक हैं। उनका कहना है-"शव गंगा का ही है, यह तो निश्चित है, उसमें बदबू नहीं आ रही है, यह एक आश्चर्य है।" थानाध्यक्ष श्री जे. वी. तिवारी ने पूछा, "अयोध्याप्रसादजी, गंगा के शव से आपके धंधे पर असर तो नहीं पड़ा?"

—"नहीं हुजूर, तब से तो धंधा और बढ़ गया है।"

८५ वर्षीय श्रीमती शिव दुलारी का कहना है—"शव के पास जाने से क्या लाभ है, हम लोगों के संस्कार ऐसे नहीं हैं, तुम लोग तो पढ़े-लिखे लगते हो।" झांझरियाजी की ओर इशारा करते हुए कहा—

श्रीमती महेश्वरीदेवी

रमेश
चन्द्र
मिश्र

"शव रखा हो और बदबू न आये, ऐसा कैसे? न जाने किसका शव है?"

साथ में बैठी श्रीमती तुलसी बाई का कहना है, "ऐसी बात नहीं है, शव तो गंगा का ही है। अरे वह तो देवी थी, पुज रही है। तुम्हें काहे को जलन हो रही है।"

पुलिस अधिकारी क्या कहते हैं?

बिठूर पुलिस-स्टेशन के इंचार्ज श्री जे. वी. तिवारी का कहना है, "जो शव पहले रखा हुआ था, यह शव तो निश्चित रूप से वही है। यह बात ठीक है कि उसमें किसी प्रकार की दुर्गंध नहीं आती है। उसका धार्मिक महत्त्व बढ़ गया है, इस कारण हस्तक्षेप करना भी उचित नहीं है। आये दिन आई. ए. एस. एवं आई. पी. एस. अधिकारी शव देखने आते रहते हैं।"

स्वामीजी ने बताया, "गंगा से मेरा विवाह जरूर हुआ था। १२ मई, १९२६ को उससे मेरा विवाह हुआ। १४ अगस्त, १९३० को मैंने उसे मां मान लिया और उस दिन से आज तक गंगा-जल दूध पर जीवित हूं। महात्मा गांधी कस्तूरबा को भी मां माना था, हो सकता है कि तुम यह भी न जानते हो कि पत्नी और मां में अंतर होता है। गंगा मेरी पत्नी नहीं हो सकती है, लेकिन मां तो हो सकती है। और आज भी वह मेरी मां है। गंगा ने सारा जीवन मेरी सुरक्षा की, आज भी मेरी सुरक्षा करती है। बीच में कुछ लोगों ने चाहा, इस शव को यहां से हटवा दें, चोरी करवा दें, मुझे किसी दुर्घटना का शिकार बना दें। इसका पूर्वाभास गंगा मुझे करा देती थी, जिससे शव मैं अब तक सुरक्षित हैं। न जाने कहां-कहां से लोग आते हैं और मेरी गंगा से मन्नत मांगते हैं, उनका काम तो हमारी गंगा करती है, और कीर्ति और सम्मान हमें मिलता है। कई ऐसी आश्चर्यजनक घटनाएं देवी ने करा दीं और हमें पुजवा दिया।"

चलते-चलते हमने कहा—"राजजी, आप गंगा का मंदिर क्यों नहीं बनवाते हैं?"

अवधूत उखड़ गया—"हम कौन होते हैं, मंदिर बनवानेवाले, गंगा चाहेगी तो खुद बनवा लेगी।"

—७/४०, तिलकनगर, का...

अपनी स्मरण-शक्ति की हर ... शिकायत करता है; अपनी निर्णय- बुद्धि की कोई नहीं।

डॉ. पी. डी. निगम, एम. बी. बी. एस., एम. डी., देश के जाने-माने हृदय-रोग विशेषज्ञों में से हैं। आजकल आप डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में हृदय-रोग से संबंधित अत्याधुनिक उपकरणों के इंचार्ज हैं। जिन मशीनों से वे हृदय-रोग को काबू कर रहे हैं, वे मशीनें अभी भारत के अन्य अस्पतालों में नहीं पहुंची हैं; चिकित्सा अधीक्षक डॉ. मजूमदार की सहायता से 'नान इन्वेजिव कार्डियक डॉयग्निस्टिक सेंटर' की स्थापना हुई थी, इसी के कार्यों की आप देख-भाल कर रहे हैं। हाल ही में आपको राष्ट्रपति का फिजिशियन नियुक्त किया गया है . . .

हृदय रोगों का इलाज राजधानी में नये उपकरण

• डॉ. सरोजनी प्रीतम

आज के इस युग में दवा, हवा, पानी और खान-पान सबमें खोट मिलावट और दूषण का प्रकोप है। किस-किस से कब तक बचें ! जीवन में भी इतना अधिक तनाव है कि हर समय एक मन्नाहट-सी चेहरों पर दिखायी देती है। हरेक वस्तु का सीधा प्रभाव दिल पर पड़ता है और दिनों-दिन दिल के रोग इतने बढ़ गये हैं कि दिल के वे दिलचस्प किस्से, वह दिल लगाना और दिल टूटने का अफसाना पुराना होने लगा है। सिर्फ प्रेम-रोग के ही लोग दिल के मरीज होते तो उनका मर्ज समझ में आ जाता।

बिना सूचना दिये नहीं आती

नये-नये और अजीब से हृदय रोग बढ़ रहे हैं। छाती में दर्द होते ही (विशेष रूप से बायीं ओर) व्यक्ति का चेहरा हार्ट अटैक के आतंक से पीला पड़ जाता है। ऐसे में दिल की बढ़ती हुई बीमारियां, उनके लक्षण और तत्काल उपचार की जानकारी बहुत जरूरी है। हार्ट अटैक तो है ही ऐसी बला कि अच्छा भला व्यक्ति बैठे बिठाये चल देता है। लेकिन दिल के

विशेषज्ञ डॉक्टरों से पूछिए, तो वे आपको बताएंगे कि दिल की बीमारी भी बिना सूचना दिये नहीं आती। यह अनेकानेक लक्षणों में प्रकट होती रहती है और जब हर कोई इस ओर से आंखें मूंदकर परवाह ही नहीं करता, तो यह उसे आकर दबोच लेती है। प्रायः छाती में दर्द उठते ही उसे अपच और गैस बनने आदि की प्रक्रिया से जोड़कर हर कोई अपना उपचार करना आरंभ कर देता है। दिल की बीमारियां भी तरह-तरह की हैं।

ब्लू बेबी—बच्चों में जन्म से ही हृदय की खराबियां (मॉल फॉर्मेशन) शुरू हो जाती हैं, ऐसे बच्चों का शारीरिक विकास नहीं हो पाता। इन्हें 'ब्लू बेबी' व 'पिंक बेबी' कहते हैं। ऐसे बच्चों की हार्ट सर्जरी यदि समय पर न हो, तो उनका जीना अभिशाप हो जाता है। वे न तो भली प्रकार सांस ले पाते हैं, और न ही औरों की तरह हंस-बोल सकते हैं।

रिह्यूमेटिक हार्ट डिजीज—इसमें हृदय के वाल्व सिकुड़ जाते हैं। प्रायः इसके लक्षण होते हैं . . . सांस फूलना, दिल का तेज धड़कना, काम करने की क्षमता का न होना, जिगर का बढ़ जाना या शरीर पर सूजन-सी आ जाना।

एंजाइना तथा हार्ट अटैक—छाती का दर्द या तो कारोनरी आर्टरी की वजह से होता है या मांस-पेशियां (Muscles) मोटी हो जाने की वजह से होता है। यह दर्द

एम–मोड–टू डाइमेंश... टाइम ईको-कार्डियो...

छाती के बायीं ओर होता हुआ बायीं ओर की बांह में भी होने लगता है। संतुलि... आहार और कम कैलरीज लेने से हृ... रोगों के प्रहार से बचा जा सकता... विशेष रूप से जिन्हें डायबिटीज हो, ... प्रेशर की बीमारी हो, उनके लिए आ... पर नियंत्रण बहुत जरूरी है। रक्त-... से ग्रस्त लोगों को नमक का प्रयोग ... कर देना चाहिए।

वांशिक भी ...

हार्ट अटैक का संबंध वांशिक भी ... है यानी यह रोग पीढ़ियों तक चलता ... अतः यदि वंश में अन्य लोगों को हार्ट ... हो चुके हों, तो इस ओर विशेष ... सावधान रहना चाहिए। सिगरेट ...

रोग के निदान में व्यस्त डॉक्टर

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तो है ही हृदय के रोग से ग्रस्त लोगों के लिए यह जानलेवा सिद्ध हुआ है। अतः सिगरेट से बचें। खाना खाने के बाद प्रायः मिठाई खाने, आइस्क्रीम आदि लेने की आदत छोड़ दें। हृदय-रोग के लिए तनाव की स्थितियों से बचना तथा अपने आपको रिलैक्सड रखने की कोशिश करनी चाहिए। अनेकानेक योगासन भी आपको हृदय रोग से बचा सकते हैं। वे लोग जो मद्य-पान करने के आदी हैं, मद्यपान करते समय विशेष रूप से ध्यान दें कि उन्हें डायबिटीज तो नहीं, कोलेस्ट्रॉल भी बढ़ा हुआ तो नहीं। यूरिक एसिड न भी हो तो भी वे शराब (अल्कोहल) का कम से कम प्रयोग करें। मद्यपान करनेवालों को नियमित चेकअप अत्यावश्यक है।

आनेवाला शिकार नहीं हो!

महिलाओं में विशेष रूप से हृदय-रोग की यों तो कम शिकायत होती थी, किंतु आजकल उनमें भी यह रोग बढ़ने लगा है। वे एक पीढ़ी का निर्माण करती हैं। अतः वे महिलाएं जिनका विवाह देर से होता है तथा पैंतीस वर्ष के बाद गर्भवती होती हैं, इस ओर विशेष ध्यान दें। उनके लिए मैरिज काउंसलिंग बहुत जरूरी है। गर्भावस्था में पांचवे, छठे मास में चेक-अप कराना आवश्यक है, ताकि आनेवाला बालक किसी नये रोग का शिकार न हो जाए। इलाज के लिए अब ज्यादा इंतजार करने की जरूरत नहीं। डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल में 'नॉन इन्वेजिव कार्डिया डायग्नोस्टिक सेंटर' में इन सब रोगों का तत्काल विश्लेषण करने की विशेष व्यवस्था की गयी है। इस सेंटर के इंचार्ज हैं डॉ. पी. डी. निगम, जो कि लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज में एसोसियेट प्रोफेसर भी हैं।

सही उपचार की दिशा

डॉ. निगम हृदय-रोग के रोगियों की बढ़ती तकलीफें देखकर उनके तत्काल समाधान के लिए हमेशा आतुर रहे। अब तक जो विश्लेषण किये जाते थे, वे अत्यंत तकलीफदेह होते थे। रोगी के शरीर में सुइयों द्वारा तथा अन्य यंत्रों द्वारा प्रयोग (टेस्ट) किये जाते थे तथा अनेक बार इसी प्रक्रिया

धमनियों में खोजबीन

टेस्टिंग ने इस क्षेत्र में कमाल कर दिखाया है। इस ई. सी. जी. मशीन से परीक्षण करते समय रोगी से चलना, दौड़ना, कूदना आदि करवाया जाता है। (नार्मल ई. सी. जी. प्रायः हृदय में दर्द उठने के समय की जाती है)।

ट्रेडमिल ई. सी. जी. उन व्यक्तियों के लिए लाभदायक है, जिन्हें छाती में दर्द

में रोग, मरीज को भी अपने साथ समेट लेता था।

विश्व में नित नये प्रयोग व खोजबीन होती रही तथा डॉ. निगम की खोजपूर्ण दृष्टि ने डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में इन उपकरणों को लाने का प्रबंध किया। यहां अब ऐसी मशीनें उपलब्ध हैं, जो कि रोग का सही विश्लेषण करके मिनटों में ही सही उपचार की दिशा दे सकती हैं।

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफी (ई. सी. जी) से प्रायः प्रत्येक दिल का रोगी परिचित है। प्रायः हृदय में सही मात्रा में खून न पहुंचने पर जोरों से दर्द उठता है तथा दिल की धड़कन तेज हो जाती है। ई. सी. जी. के साथ **ट्रेडमिल ई. सी. जी.**

तो होता है, किंतु उनका ई. सी. जी. नार्मल होता है। ट्रेडमिल में कुछ ऐसे प्रबंध हैं, जिनमें रोगी के तेज चलने से उसमें उसके दिल की धड़कन, रक्त-चाप रिकार्ड होता रहता है तथा पूरी जानकारी देता है कि ऐसे व्यक्ति को कितनी देर कैसी कसरत करनी चाहिए। विशेष सेवा के रूप में जिन्हें हार्ट अटैक हो चुका हो या जिनके हार्ट का ऑपरेशन हो चुका हो, उन्हें उनकी क्षमताओं से परिचित करवाता है। तथा वे अब उस क्षेत्र में कार्य करें अथवा नहीं— का निर्णय भी दे देता है।

वैक्टरकार्डियोग्राफी द्वारा अब हृदय के वाल्व में खराबी आ जाने का एकदम निरीक्षण कर लेना संभव है। अब इ... डालकर घंटों विश्लेषण करके तथा रो...

की ... नहीं ... का ... होल्टर ... ई. स... को ... किया ... शेष ... क्या ... लाख ... हुआ, ... विभि... बैठते ... बदला ... यह ... मानित...

की जान को खतरे में डालने की जरूरत नहीं। इस मशीन द्वारा हृदय में छेद होने का भी शीघ्र निरीक्षण किया जा सकता है।

होल्टर मानिटरिंग का जादुई नुस्खा

ई. सी. जी. द्वारा हृदय की गतिविधियों को केवल तीस सेकंड के लिए ही रिकार्ड किया जाता है लेकिन चौबीस घंटे में से शेष ८६,३७० सेकंड बेचारे दिल की क्या दशा हुई और वह जो इस बीच एक लाख बार धड़का, उस धड़कन का क्या हुआ, इस ओर भी ध्यान देना जरूरी है। विभिन्न कार्य करते समय, सोते, उठते, बैठते भागते हुए दिल की धड़कन में क्या बदलाव आया हृदय रोगी के वारे में यह जानकारी भी आवश्यक है। होल्टर मानिटरिंग द्वारा हृदय की इन सारी जानकारियों को लिया जा सकता है। २४, ४८ और ७२ घंटे तक टेप रिकॉर्डर को रोगी पर पट्टी द्वारा फिट किया जाता है, फिर हृदय की उन सारी आवाजों को, जो खाते, पीते, सोते, दौड़ते व सहवास करते होती हैं, को भी मापा जाता है। रोगी को एक डायरी रखने के लिए भी कहा जाता है, जिसमें यदि विशेष कार्य करते समय उसे किसी प्रकार की तकलीफ हो तो नोट करने को कहा जाता है। कंम्प्यूटर द्वारा इस टेप की पूरी जानकारी मिनटों में ही मिल जाती है। इसमें दिल की धड़कनें बढ़ने व कम होने का भी रिकार्ड हो जाता है। हृदय-रोग को (कार्डियक डायग्रोज) समझने में इस मशीन द्वारा बहुत मदद मिलती है।

इलैक्ट्रोकार्डियोग्राम : दिल की धड़कनों का सूचक
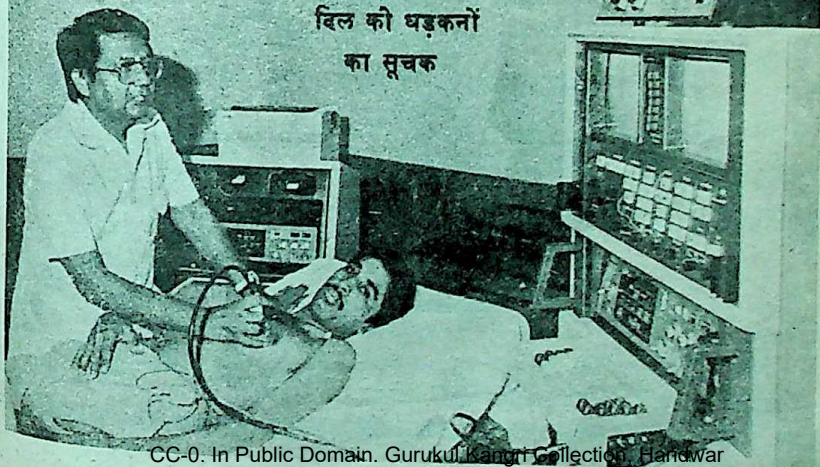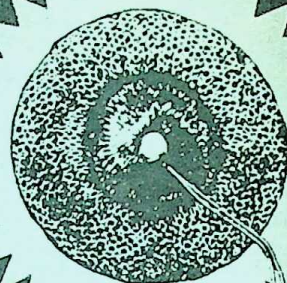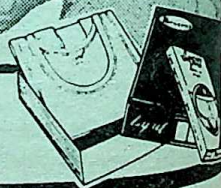
मंत्रः उनकी प्रयोग-विधि

● पं. कृष्ण अवतार दुबे

ऐसा अनेक आस्तिक व्यक्तियों ने पढ़ा होगा कि **'मंत्राधीनं च दैवतम्'** अर्थात देवता मंत्रों के आधीन होते हैं। लेकिन ऐसा क्यों है? 'देवता तो मंत्रमय ही हैं।' **'मंत्रा एव तु देवता:'** (मेरु-तंत्र)। साधकों के कार्यों के लिए देवता भिन्न-भिन्न रूप धारण करते हैं, परंतु उनका मूलस्वरूप मंत्र ही है। मंत्र ध्वनिरूप है, तथा भिन्न-भिन्न ध्वनि भिन्न-भिन्न शक्तिरूप है। यहां पर कुछ चमत्कारी मंत्र और उनकी प्रयोग-विधि दी जा रही है। मंत्र का जाप पूरे विधान से किया जाना चाहिए। एक समय में एक ही मंत्र का जाप करना चाहिए। शुभ मुहूर्त में किया गया मंत्र-जाप निश्चित रूप से लाभदायी होता है। मंत्र-जाप के समय पवित्रता नितांत आवश्यक है। पूरी निष्ठा एवं पवित्रता के साथ जाप करने पर ही लाभ मिल सकता है।

आर्थिक समस्याओं के निदान हेतु

महाभारत में एक उक्ति है—**'अर्थस्य पुरुषोदासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्'**, अर्थात, 'पुरुष अर्थ का दास है, अर्थ किसी का दास नहीं है।' द्वापर का यह वाक्य आज भी अकाट्य है। अत: अर्थ प्राप्ति के लिए महालक्ष्मी के चित्र के समक्ष दीप जलाकर प्रात:काल १०८ वार इस मंत्र का जाप करें—

तस्य या परमा शक्तिर्ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः ।
सर्वावस्थां गता देवी स्वात्मभूतानपायिनी ।
अहंता ब्रह्मणस्तस्य साहमस्मि सनातनी ॥

(लक्ष्मी-तंत्र २।११, १२)

भगवती त्रिपुर सुंदरी या श्रीयंत्र का चित्र लगाकर प्रात:काल निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार ४५ दिन तक जाप करें। देवि या यंत्र पर लाल पुष्प चढ़ायें। श्रीयंत्र-समृद्धि का यंत्र कहा जाता है और उसकी देवि है—भगवती त्रिपुर सुंदरी। इनकी आराधना करनेवाला व्यक्ति निर्धन नहीं रह सकता—

माता मानं मेयं विन्दुत्रयभिन्नबीजरुपाणि ।
धामत्रयपीठत्रयशक्तित्रयभेदभावितान्यपि च ॥
तेषु क्रमेण लिंगत्रितयं तद्वच्च मातृकात्रितयम् ।

इत्थं त्रितयपुरी या तुरीय पीठादिभेदिनी विद्या ॥
इति कामकला विद्या देवी चक्रक्रमात्मिका सेयम् ।
विदिता येन स मुक्तो भवति महात्रिपुरसुन्दरीरूपः ॥
(कामकला विलास)

भगवान राम के चित्र के सम्मुख दीप जलाकर निम्नलिखित मंत्र का ४५ दिनों में १०,००८ बार जाप करें——

आपदाम् अपहर्तारम् दातारम् सर्व संपदाम्।
लोकाभिरामम् श्रीरामम् भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

लक्ष्मीजी के चित्र के सम्मुख प्रतिदिन प्रातः दीप एवं प्रारंभिक पूजन के पश्चात १०८ बार मंत्र का जाप १०८ दिन तक करें——

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्र सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

स्वास्थ्य लाभ हेतु

अमावस्या के तीसरे दिन से प्रातः स्नान कर निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें। नियमित रूप से जप करने से व्यक्ति निरोगी हो सकता है—

ॐ नमो परमात्मने पारब्रह्म मम शरीरे पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा ॥

संतान प्राप्ति हेतु

भगवान कृष्ण के बालरूप का चित्र अपने कक्ष में लगा लें। प्रातःकाल १०८ बार मंत्र का पाठ एक वर्ष तक लगातार करें। पति-पत्नी दोनों में से कोई एक अथवा चाहें तो दोनों ही इसका जाप कर सकते हैं।

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगता ॥

विवाह हेतु

पार्वती के चित्र के सामने दीपक जलाकर कन्या स्वयं ११ माला का जाप ९० दिनों तक नियमित करे——

हे गौरि शंकरार्द्धांगि यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम् ॥

मनचाहे जीवन साथी के लिए

प्रेमी-प्रेमिका दोनों में से कोई एक अथवा दोनों ही निम्नलिखित मंत्र का जाप कर सकते हैं। जो जाप कर रहा हो अपने प्रेमी या प्रेमिका का चित्र लगाकर उसके सम्मुख दीप जलाकर एक लाख मंत्र का जाप करें——

ॐ ह्रां ग जूं सः (नाम) मे वश्य वश्य स्वाहा।

रुके हुए कार्यों को पूरा करने के लिए

प्रातः काल विष्णु के चित्र के सम्मुख दीप जलाकर १०८ बार निम्नलिखित मंत्र का जाप करें। नियमित रूप से भी किया जा सकता है, नहीं तो प्रत्येक वर्ष में लगातार ४५ दिन तक अवश्य किया जाए—

ॐ भूरिदा भूरि देहिनो, मा दभ्रंभूर्या भर, भूरि घेदिन्द्र दित्ससि।

ॐ भूरिदाह्यसि श्रुतःपुरुजा शूर वृत्रहन्। आ नो भजस्व राधसि॥ (ऋग्वेद ४।३२।२०–२१)

मंगलवार का व्रत करें। मध्य रात्रि में पर्वत लिए हनुमानजी के चित्र के सम्मुख निम्नलिखित मंत्र का बारह हजार जाप करें। तत्पश्चात हवन सामग्री (धान, दही, दूध, घृत का मिश्रण) से १२०० आहुतियां दें। यदि साहस पूर्वक ४५ मंगलवार तक ऐसा किया जा सके, तब हनुमानजी के दर्शन भी संभव हैं। पहले मंगलवार से ही बाधाएं समाप्त हो जायेंगी। साधना में पवित्रता अनिवार्य है। फलतः मादक वस्तुओं का उपयोग तथा काम-वासना से दूर रहें। अन्यथा नुकसान हो सकता है—

ह्रौं ह् स्फ्रें ह्ल्क्रें ह्स्त्रों ह्स्ल्फ्रे ह् स्ख्रें ह् सौं हनुमते नमः॥

प्रातः काल इस मंत्र का १००८ बार जाप करना।

ऐं सच्चिदेकं ब्रह्म ह्रीं सच्चिदेकं ब्रह्म श्रीं सच्चिदेकं ब्रह्म॥

उत्तम शिक्षा हेतु

प्रातः काल स्नान करके सरस्वती के चित्र पर श्वेत पुष्प अर्पित कर निम्नलिखित मंत्रों में किसी एक मंत्र का जाप १०८ बार करने पर उत्तम शिक्षा प्राप्त होगी तथा बाधाएं दूर होगी।

अध्यात्ममधिदैवच्च देवानां सम्यगीश्वरी। प्रत्यगास्ते ववंती या सा मां पातु सरस्वती॥

अथवा

यां विदित्वाखिलं बन्धं निर्मथ्याखिलर्वलना। योगी याति परं स्थानं सा मां पातु सरस्वती॥

आकस्मिक परेशानियों से मुक्ति के लिए

भगवान कृष्ण के चित्र के सम्मुख दीप जलाकर प्रतिदिन इस मंत्र का १००८ बार जाप करने पर लाभ मिल सकता है। आपत्ति के समय जाप करने पर आपत्ति से मुक्ति मिल सकती है—

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनबल्लभाय स्वाहा।

प्रातः काल स्नान करने के पश्चात १००८ बार मंत्र का जाप करने से लाभ मिलेगा। ४५ दिन या उससे अधिक दिन तक कर सकते हैं।

आद्यायै विद्महे परमेश्वर्यै धीमहि। तन्नः काली प्रचोदयात्॥ (महानिर्वाण तंत्र ५।६) ●

रेत निकालिए, उसके नीचे पानी मिलेगा

● भीष्म नारायण सिंह
(संसदीय एवं केंद्रीय आवास निर्माण-मंत्री)

मैं आस्तिक व्यक्ति हूं और मुझे ईश्वर पर पूरा विश्वास है। शायद इसी का कारण है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मुझे किसी तरह की परेशानी का अनुभव नहीं हुआ। सन १९६२ में पलामू (बिहार) के हुसैनाबाद निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा का मैं सदस्य चुना गया था। उसके बाद मेरा निर्वाचन क्षेत्र अचानक बदल दिया गया और लेसलीगंज रख दिया गया। इसकी सूचना मुझे तब मिली, जब मेरे पास समय नहीं था। यह सन १९६७ की बात है, तब जनता में कांग्रेस के खिलाफ एक बड़ी हवा थी। लेसलीगंज मेरे लिए एकदम नया क्षेत्र था। मुझे लगा कि इस नयी जगह में भी कोई ऐसी शक्ति है, जो मुझे प्रेरित कर रही है—"तुम सचाई में चलते रहे हो। तुम्हारी जीत होगी।" भगवती का पूरा विश्वास था। मुझे एक दिन ऐसा महसूस हुआ कि सामने एक प्रकाश-सा दिखायी दे रहा है। और तब मेरे मन के भीतर से आवाज आयी, "बिना आशा के कार्य करो, फल अवश्य मिलेगा।"

कर्मण्ये वाधिकारस्ते—

आश्चर्य कि उस हवा में भी २१,००० मतों से मुझे विजय मिली। तीन बार मैं विधान सभा का चुनाव लड़ चुका हूं और आज तक कभी नहीं हारा। इसे मैं बालाजी भगवान की कृपा मानता हूं। जब मेरा क्षेत्र बदला था, तब मैं एकदम विचलित हो गया था। वह मां की प्रेरणा थी कि मैंने अपने भीतर एक शक्ति का अनुभव किया। मैं धर्म-निरपेक्षता में विश्वास करता हूं। लेकिन धर्म-निरपेक्षता का मतलब 'एंटी-रिलीजन' नहीं है। अपनी पार्टी की नीतियों में और श्रीमती गांधी में मेरी पूरी आस्था है। उससे बड़ी आस्था एक विलक्षण ईश्वरीय सत्ता में है। इसका दूसरी बार परिणाम मुझे १९७६ में देखने को मिला। तब मुझे राज्य सभा का सदस्य चुना गया था। मैंने स्वप्न में भी इसकी कल्पना नहीं की थी और न मैं प्रत्याशी ही था। मैं बिहार सरकार में मंत्री भी था और चाहता था कि पलामू की जनता और बिहार की सेवा करूं। तब भी मां का एक प्रकाश-पुंज ही था, जिसने मुझे प्रेरणा दी। मैं आत्मिक शक्ति में विश्वास करता हूं। १९७७ में कांग्रेस हार गयी थी। यदि मेरा विश्वास डगमगा जाता, तब मैं विपक्ष में भी जा सकता था। मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के लिए विचलित होना बड़ी बात नहीं थी। यहां भी मां की ही कृपा थी कि उसने मुझे विचलित नहीं होने दिया।

मेरा जन्म स्थान है—उदयगढ़, बिहार! मेरे पिता और मेरा पूरा परिवार आस्तिक रहा है। शायद इसीलिए मुझे लगता है कि रेत निकालिए तब भी उसके नीचे पानी मिलेगा।

—१, तीन मूर्ति मार्ग, नयी दिल्ली

श्मशान ही साधना का उपयुक्त स्था

● डॉ. वैकुंठनाथ ठाकुर

समस्त विश्व के सभी चर-अचर, जड़-चेतन पशु कहलाते हैं, क्योंकि ये माया के पाश से बद्ध हैं। बंधन ही दुःख है, मुक्ति ही सुख है। इस मुक्ति के दो उपाय हैं। एकाग्र होकर मनन के द्वारा ऐसी युक्ति निकाली जाए जिससे इस पाश से त्राण हो, अथवा पाश से छुटकारा पाने के लिए तरह-तरह की क्रियाएं, चेष्टाएं की जाएं, उनमें से भले ही अनेक असफल हो जाएं, पर अंत में एक सफल भी होगी।

भारतीय चिंतकों ने भी इस संसार से छुटकारे के लिए दोनों मार्गों का अनुसंधान, आविष्कार, प्रणयन किया। मनन, चिंतन, ज्ञान-मार्ग को मंत्र-मार्ग कह सकते हैं तथा क्रिया, कर्म-मार्ग को तंत्र। धातु मन धातु से त्र प्रत्यय करने पर मंत्र बनता है और तन धातु से त्र प्रत्यय करने पर तंत्र।

तंत्र-शास्त्र और अथर्ववेद

कहा जा सकता है कि मनन सैद्धांतिक दर्शनात्मक या विज्ञानात्मक पक्ष है और तंत्र व्यावहारिक, प्रायोगिक, कलात्मक। तन का अर्थ है फैलाव। जैसे मन और मति की प्रयोग-शाला तन है, उसी भांति

साधना का उपयुक्त स्थान : श्मशान तंत्र-शास्त्र में श्मशान अनेक साधनों का उपयुक्त स्थान माना गया है। जितनी निष्ठा से श्मशान में मध्य-रात्रि में जप या ध्यान किया जा सकता है, उतनी निष्ठा से अन्यत्र नहीं। कोई बराबर या प्रायः श्मशान में रहे, तो उसके हृदय में वैराग्य की भावना का अनायास तथा सबल विकास होना सहज है . . .

मंत्र की प्रयोगशाला तंत्र। वैसे तंत्र के मत से शक्ति ही मंत्र है—

'मननात् सर्वभावानाम, त्राणात् संसार-सागरात्

अर्थात मंत्र दो धातुओं से बना है—मन और त्रा। जो मनन करने से त्राण करे, संसार के पाश से वा सागर से, उसे मनन कहते हैं। कालिकागम के अनुसार—जो तंत्र और मंत्र से समन्वित विपुल अर्थों का प्रसार करे तथा भवभय से त्राण करे, उसे तंत्र कहते हैं।

तंत्र-शास्त्र को ही आगम-मार्ग कहते हैं और वेद-मार्ग को निगम-मार्ग। आगम बहुत कुछ प्रातिभ या स्वतः-स्फूर्त ज्ञान है, और निगम तर्क तथा मनन, चिंतन, ध्यान से उद्बोधित। ऋक्, यजुः, साम जिन्हें त्रयी कहते हैं, निगम-प्रधान हैं और अथर्ववेद आगम-प्रधान। रुद्रयामल तंत्र में अनेक ऐसे श्लोक हैं, जिनसे यह प्रकट होता है कि तंत्र-शास्त्र और अथर्ववेद में घनिष्ठ संबंध है—'अथर्ववेद तंत्रस्था कुंडली परदेवता' रुद्रयामल (पृष्ठ—१४०) में अथर्ववेद को तंत्र ग्रंथ ही बताया गया है। आरंभ में वेदोक्त मंत्रों का यज्ञादि में प्रयोग तथा उससे संबद्ध विधियों का जो विस्तार हुआ, उसे तंत्र नाम दिया गया। अथर्व-वेद के जिन कार्यों में आज्य अर्थात् घी की प्रधानता होती है, उसे आज्य-तंत्र कहते हैं, और जिनमें चरु, पुरोडाश आदि वस्तुओं की, उन्हें पाक-तंत्र। एक ऋग्वैदिक व्याकरण का नाम भी 'ऋक्-तंत्र व्याकरण' है। इससे स्पष्ट है कि तंत्र भी वैदिक मार्ग की एक शाखा है, वेद विरुद्ध नहीं। यह मार्ग संहिता से ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् तक पहुंचते-पहुंचते एक स्वतंत्र पथ बन गया।

हिंदू-शास्त्र चार कोटियों में विभाजित किये गये हैं (१) श्रुति, (२) स्मृति, (३) पुराण तथा (४) तंत्र। कुलार्णव-तंत्र के अनुसार सत्य-युग के लिए श्रुति, त्रेता के लिए स्मृति, द्वापर के लिए पुराण तथा कल-युग के लिए तंत्र ही सर्वाधिक उपयोगी

लेखक

मार्ग है। स्थूलतः प्रथम तीन को निवृत्ति मार्ग और अंतिम को प्रवृत्ति मार्ग कहते हैं। प्रथम में साधना के दक्षिण-पंथ की प्रधानता है— दूसरे में वाम-पंथ की। तंत्र-ग्रंथ प्रायः शिव और पार्वती के कथ-नोपकथन के रूप में मिलते हैं। अथर्ववेद में रुद्र का विकास ऋग्वेद की अपेक्षा अधिक प्रस्फुटित हुआ है। इस वेद में रुद्र एक महान भिषक वैद्यनाथ के रूप में चित्रित हैं। भूत-पिशाच आदि के निवा-रणार्थ उनका स्मरण किया जाता है। कुत्ते उनके सहचर हैं, अर्थात शिव की पूजा की जिन भावनाओं को आगम तथा तंत्र ग्रंथों ने विकसित किया है, वे मूल रूप में वेदों में, विशेषतः अथर्ववेद में विद्यमान हैं।

देवी-उपासना से सिद्धि

यह विश्वास है कि जब तक वैदिक रीति से साधनारूपी वृक्ष में फूल उगेंगे, तब तक तांत्रिक पद्धति से उसमें फल लगने लगेंगे। वैदिक परंपरा में शूद्रों और स्त्रियों की उपेक्षा है, किंतु तंत्र परंपरा में उनका भी उन्मुक्त अधिकार है।

मानव-मानव में कोई भेद नहीं। सामान्यजन जिसे अकुलीन कहते हैं, वह तंत्राचार में कुलीन माना जाता है। कुल कौल, कौलाचार आदि पारिभाषिक शब्दों से यह ध्वनि निकलती है कि तांत्रिक साधकों की एक अपनी कुल-परंपरा है, जिसके अनुसार—

कुलार्णव-तंत्र (पृष्ठ ७६—७९।) दक्षिण या वाम समग्र तंत्राचार में देवी या काली की पूजा का विधान है। देवी की उपासना से तांत्रिक साधक को सिद्धि मिलती है। तांत्रिकों के अनुसार मंत्र में बहुत बड़ी शक्ति है। अथर्ववेद के भी मंत्रों में इस प्रकार की शक्ति की कल्पना की गयी है। इसी प्रकार तंत्राचार में पंचमकार की पूजा विहित है। कुलार्णव-तंत्र में लिखा है—**मद्यं मांसं च, मीनं च मुद्रा मैथुन-मेव च। मकार पंचकम् देवी देवता प्रीति-कारणम्।।** तंत्राचार में मैथुनस्थ स्त्री-पुरुष शक्ति तथा शिव के प्रतीक बन जाते हैं। वस्तुस्थिति यह है कि प्रत्येक पुरुष में स्त्री-तत्व है और प्रत्येक स्त्री में पुरु-षत्व। शिव में शक्ति है, शक्ति में शिव है। शिव और शक्ति, पुंसत्व और स्त्री तत्व का मिलन ही अद्वैत है। परंतु पुरु-षत्व और स्त्री तत्व विरोधी भी हैं और पूरक भी। साधक विरोध का शमन दो तरह से कर सकता है, स्त्री-तत्व का निरोध करके अथवा साहचर्य करके। मैथुन के संबंध में यह प्रश्न आता है कि वासना से वासना को वश में कैसे किया जा सकता है? तांत्रिकों का तर्क है कि जिस विष से प्राणी मरते हैं, उसी के प्रयोग से विष-तत्वज्ञ विष का निराकरण करता है— **'विषस्य विषमौषधम्।'** छांदोग्य ५-८ में द्युलोक, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषा रूप अग्नि में उपस्थरूप समिधा के दान की चर्चा है, जिसमें दोनों के प्रेमालाप, परस्पर अनुकूलन, कामोद्दीपन को धूम,
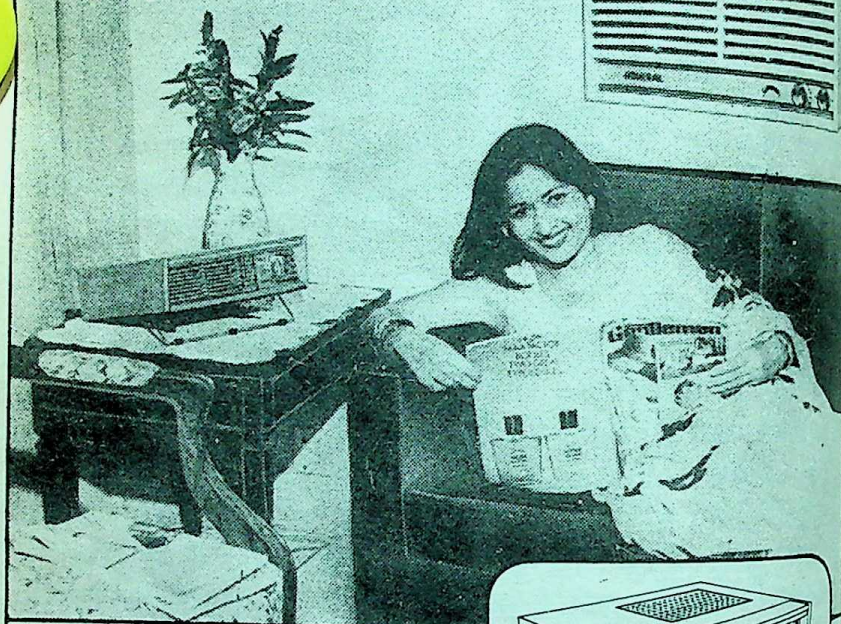
योनि को अर्चि (आंच, शिखा), उपस्थ के अंतःप्रवेशन को अंगार और उससे उत्पन्न अभिनंद (आनंद) को स्फुलिंग बताया गया है। इस अग्नि में देव लोग रेतस का हवन करते हैं, इस आहुति से गर्भ रहता है।

साधना का उपयुक्त स्थान : श्मशान

तंत्र-शास्त्र में श्मशान अनेक साधनों का उपयुक्ततम स्थान माना गया है। जितनी निष्ठा से श्मशान में मध्य-रात्रि में जप या ध्यान किया जा सकता है, उतनी निष्ठा से अन्यत्र नहीं। कोई बराबर या प्रायः श्मशान में रहे, तो उसके हृदय में वैराग्य की भावना का अनायास तथा सबल विकास होना सहज है।

कुलार्णव-तंत्र में निम्नलिखित आठ पक्ष बताये गये हैं (पृ.—१२३)—**घृणा लज्जा, भयं, शोको, जुगुप्सा चेति पंचमम्। कुलं, शीलं, तथा जातिरष्टो पाशाः प्रकीर्तिताः॥**

इस प्रकार तंत्र-शास्त्र ने जाति प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाकर क्रांति का सूत्रपात किया। इसने हिंदुत्त्व के अंचल में रहते हुए भी हिंदुत्त्व की रुढ़ियों के विरुद्ध शंखनाद किया। परंतु यह भी सही है कि इसलिए इसकी ओर प्रायः निम्न वर्ग के लोग आकृष्ट हुए, तथाकथित उच्च जातीय नहीं।

ध्वनियों पर तंत्र-साधना

तंत्र या आगम मार्ग में ध्वनियों का भी बड़ा सूक्ष्म विवेचन है। परमेश्वर की तीन शक्तियां हैं—चित शक्ति 'अ', इच्छा शक्ति 'इ', उन्मेष या ज्ञान शक्ति 'उ'। ये क्रमशः परा, पराऽपरा तथा अपरा कही जाती हैं। यही त्रिकोण है। अ के क्षोभ से आ—आनंद, इ के क्षोभ से ई—ईशान तथा उ के क्षोभ से ऊ—ऊर्मि या ऊनता तीन और शक्तियां उत्पन्न होती हैं। ये षड्देवता हैं। इनके परस्पर संघट्ट से क्रिया शक्ति आविर्भूत होती है, जिससे द्वादश शक्तियों का विकास होता है। ये ही द्वादश योगिनियां कहलाती हैं। इस प्रकार शब्दब्रह्म में भी तंत्रागम की एक मान्यता है।

नासिका के दक्षिण तथा वाम रंध्र से चलनेवाली सांसों का भी तंत्र में विचार किया जाता है, ये क्रमशः सूर्य तथा चंद्र नाड़ियां कही जाती हैं। शिव स्वरोदय में इस पर विस्तार से विचार है। सिद्धि के लिए इन पर भी नियंत्रण करना पड़ता है। यह योग के अंग, प्राणायाम में विचारणीय होता है।

इस प्रकार मंत्र या निगम मार्ग से भिन्न तथा उसके समानांतर तंत्र या आगम मार्ग का भी भारतीय संस्कृति और साधना में अत्यंत व्यापक तथा गंभीर अवदान है। इस दिशा में विशाल वाङ्मय का अभी संकेत भी नहीं हो पा रहा है। गुह्य संप्रदाय इसे उसी भांति गुह्य, श्रुतिमात्र विषय रखता जा रहा है, जिस प्रकार कभी निगममार्ग था। इस कारण इसमें कुछ असामाजिकता भी आ गयी है। अनुसंधान-प्रेमी विद्वज्जन का ध्यान इस दिशा में जाना चाहिए।

—निदेशक,
बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना

बोध गया में एक तांत्रिक से भेंट

कुछ समय पहले विहार के स्वा[...] मंत्री श्री ललितेश्वर प्रसाद साही के [...] मैं बोध गया गया था। आयोजन [...] साहित्यिक सभा का था। एक दुबला-पत[...] -सा आदमी जिसका एक दांत ब[...] निकला था, मुझे वहां दिखायी दि[...] पता चला कि वह तांत्रिक है—ना[...] किशोरी लाल! आठ दस वर्ष की आयु [...] ही अपने घर से निकलकर भाग गये [...] यहां-वहां भटकते रहे और तेईस वर्षों [...] साधना के बाद उन्हें देवी की सिद्धि मि[...] तांत्रिक किशोरी लाल ने तत्काल कुछ [...] मुझे बतायीं और कुछ चीजें करके दिखा[...] निश्चय ही वे विलक्षण थीं। किशोरीला[...] जी ने बताया कि वे कई मंत्रियों से मि[...] हैं और उन्हें रास्ता दिखाते हैं। —[...]

पता :— तांत्रिक किशोरी लाल [...] गया, बिहार
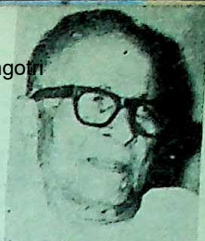
आस्था का संकेत

● वियोगी हरि

'अस्तित्ववाद' से संबंधित प्रश्न ग्रोई नया नहीं। इसका 'अस्तित्व' सदा रहा है और आगे भी रहेगा। 'अस्ति' और 'नास्ति' का द्वंद्व तर्कों ने सुलझाने का प्रयत्न किया, पर वह उसके काबू में नहीं आया। तर्क बड़ी हिम्मत से बढ़ता है अमुक विचार को काट देने के लिए, और स्वयं कट जाता है। 'अस्तित्ववाद' न जाने कब से अचल खड़ा है 'अनस्तित्ववाद' के सामने। उसका दावा है कि 'नास्ति' के गर्भ में वह अर्थात् 'अस्तित्व' निहित है और उसी की बदौलत 'नास्तित्व' जीवित है। 'मैं हूं' इस सत्य से कौन इनकार करेगा? तर्क 'मैं हूं' की अनंतता को छूने को दौड़ता है, पर टकराकर पीछे लौट आता है। आस्था संकेत करती है कि सीमित ज्ञान से परे भी कुछ है, भले ही वह अज्ञात हो। उस 'कुछ' में परिणत और विलय हो जाने के लिए 'मैं' अधीर हो जाता है। 'मैं' वही है, जो सीमित से परे है। अद्वैत वेदांत ने 'सः अहम्' की ओर संकेत किया और 'अस्तित्ववाद' का उत्तर उस संकेत में मिलता है।

कबीर, नानक, दादू आदि संतों ने मुझे अस्तित्व का घाट देखने की कुछ प्रेरणा दी है, पर वहां तक पैर नहीं बढ़ा सका। संपूर्ण उत्तर तो उक्त प्रश्न का वही दे सकता है, जिसने महर्षि रमण के शब्दों में 'मैं' का प्रत्यक्ष अनुभव किया हो। 'अस्तित्ववाद' पर अपने अनुभूत विचार देने का और उस पर कुछ कहने का मैं अपने को अधिकारी नहीं मानता हूं।

—एफ १३।२, माडल टाउन, दिल्ली
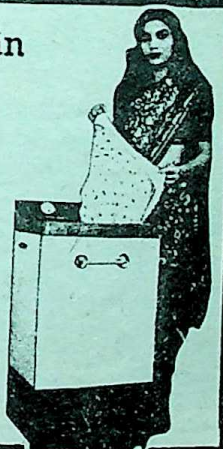
HINDON
हिन्डन के कपड़ों में
बात बन जाये कही भी...
कभी भी
DCM
TEXTILES

जिन्न से भेंट

भूत-प्रेतों से वैसे तो मेरा कभी आमना-सामना नहीं हुआ, लेकिन एक-दो बार ऐसा जरूर लगा कि इनका अस्तित्व है। छात्र-जीवन की बात है। एक बार मैं एक वीरान मस्जिद के पास से गुजर रहा था तो उस मस्जिद में कुछ लोगों के आने-जाने की आवाजें मुझे सुनायी दीं। यह चांदनी खिली रात थी और मैं अकेला ही था। इसलिए तेजी से चला जा रहा था।

मैंने मस्जिद में झांककर देखा, तो पाया कि आंगन में आदमियों का एक समूह बैठा हुआ है। सभी सफेद कपड़े पहने हुए हैं और कुल्हड़ों में दूध पी रहे हैं। वे लोग आपस में बातचीत और हंसी-मजाक कर रहे थे।

मैं इस बात को भूल ही चला था कि कुछ दिनों बाद लोगों ने बताया कि इस मस्जिद में जिन्नों ने अपना डेरा डाल रखा है, तो मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। लोगों ने जिन्नों के बारे में बताया कि जिन्न सफेद चीजों के बेहद शौकीन होते हैं—वे सफेद कपड़े ही पहनते हैं, दूध पीते हैं और मिठाइयां खाते हैं। जिन्न अकसर वीरान मस्जिदों को ही पसंद करते हैं, जहां वे या तो रात को या फिर ठीक दोपहरी को, जबकि आस-पास कोई नहीं होता, नमाज पढ़ने आते हैं। अब मैं अपने पाठकों के ऊपर ही छोड़ता हूं कि वे इस घटना से जो भी अर्थ लगाना चाहें, लगाएं।

—विश्वबंधु गुप्त

५, टालस्टाय मार्ग नयी दिल्ली

बात शायद सन १९३६ या १९३७ की है। तब मैं लगमग १२ वर्ष का था। सिनेमा का दूसरा शो देखकर रात को लगमग १ बजे घर लौट रहा था। सरदी की रात थी। अकेला होने और सुनसान सड़क होने के कारण मैं बहुत जल्दी-जल्दी चल रहा था। मेरा घर एक अंधेरी गली में था, जिसमें म्युनिस्पेलिटी की एक लालटेन जल रही थी। जैसे ही मैं तेजी से गली की ओर मुड़ा, एक बुढ़िया से टकरा गया। बुढ़िया ने नाराजगी के स्वर में कहा, "मुझसे क्यों टकराता है, तुझे तो अभी बहुत जीना है!"

मृत्यु से मुलाकात

—नीरज

सरदी की रात अकेली यह बुढ़िया और उस पर उसका यह वाक्य—'तुझे तो अभी बहुत जीना है'। इस सबने मेरे मन में एक भय-सा उत्पन कर दिया। मैंने बुढ़िया की तरफ देखा।

किसी बूढ़ी स्त्री का इतना भयानक चेहरा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैं वहीं चुपचाप खड़ा हो गया और बुढ़िया को गली में जाती हुई देखने लगा। थोड़ी दूर चलकर बुढ़िया ने एक घर में प्रवेश किया। बुढ़िया के प्रवेश करते ही उस घर से लोगों के रोने का समवेत स्वर सुनायी पड़ा। मैं भी घर के अंदर गया। वहां डॉक्टर बैठा हुआ था और लोग छदम्मी-लाल के शव को खाट से जमीन पर ले रहे थे। मगर बुढ़िया का कहीं पता न था।

—४७-मेरिस रोड, अलीगढ़-२०२००१

परमतत्व से साक्षात्कार का आनंद

● प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद

मनुष्य अनादिकाल से इन्द्रियातीत तत्त्वों की सत्ता को स्वीकार करता आया है। यह तत्त्व इंद्रियातीत होते हुए भी अनुभवगम्य है, अर्थात् मनुष्य की अनुभूति की पकड़ में आ जाता है।

जहां तक मेरी अपनी अनुभूति और आस्था की बात है, मैं इंद्रियातीत तत्त्व की सत्ता को स्वीकार करता हूं और मुझे बचपन से ही इसके नाना रूपों में नाना प्रकार के अनुभव होते आये हैं। लेकिन जहां तक यक्ष, प्रेत या ऐसी उन अन्य योनियों की बात है, जिन्हें आध्यात्मिक साधना की दृष्टि से इंद्रियातीत जगत का तत्त्व मानते हुए भी निम्नतर स्तर का माना गया है, उनसे मेरा कभी साक्षात्कार नहीं हुआ। इसे एक संयोग मानें या क्या कहें, यह कहना तो मेरे लिए कठिन है, परंतु इससे इंद्रियातीत तत्त्व की सत्ता के प्रति मेरे मन में रंचमात्र भी संदेह नहीं है क्योंकि मुझे इंद्रियातीत तत्त्व की प्रथम अनुभूति के काल से अब तक निरंतर ऐसा लगता रहा है कि मेरा अस्तित्व जितना वास्तविक है, उससे अधिक वास्तविक उस परम तत्त्व का अस्तित्व है।

परम तत्त्व से मेरे साक्षात्कार की कथा सहज और स्वाभाविक होते हुए भी किसी अर्थ में विशिष्ट है। मेरे दादाजी श्रीमद्भागवत-महापुराण (हिंदी अनुवाद) का नियमित रूप से पाठ करने वाले थे। उन्होंने मेरे अक्षर-ज्ञान का प्रारंभ वर्णमाला से नहीं, बल्कि इस ग्रंथ के पाठ से कराया। सायंकाल में पाठ करते समय वे नियमित रूप से मुझे अप
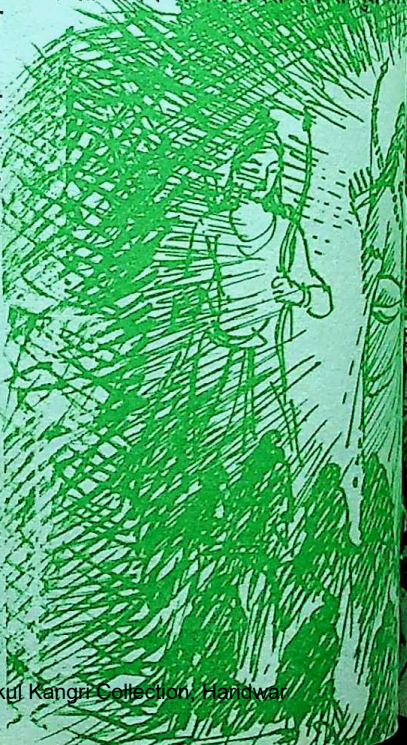
लगता था कि सारी सभा जुड़ी हुई है और श्रीराम के व्यक्तित्व के प्रकाश की तीव्र किरण निकल रही है। उस तीव्र प्रकाश में आंखें खुलती ही नहीं थी और जब खुलती थीं तब भरत को तापस वेश में अयोध्या में देखता था...

पास बैठा लेते थे और अपने साथ-साथ मुझे भी पुस्तक को पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही महीनों में मैं धीरे-धीरे पढ़ सकने लायक हो गया। फिर वर्णमाला का भी ज्ञान हो गया। लेकिन यह अवांतर बात है।

मूल बात यह है कि श्रीमद्-भागवत महापुराण के नियमित पाठ ने मेरे मन में उस परम तत्त्व के प्रति एक जादू के-जैसा आकर्षण उत्पन्न कर दिया, जिसका वर्णन श्रीकृष्ण के रूप में महापुराणकार ने किया और जिसकी लीलाओं से श्रीमद्-भागवत आद्यंत भरा पड़ा है। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि पाठशाला से आने के बाद मेरा अधिक से अधिक समय श्रीमद्भागवत के ही बार-बार पढ़ने में बीतता था।

लीला-पुरुष का महारास

गरमी के दिन थे। मैं उस रोज श्रीमद्-भागवत् का दसम् स्कंध पढ़ते-पढ़ते सो गया था। महानिशीथ के समय मुझे ऐसा लगा कि चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश है और लीला-पुरुष अपनी महारास की लीलाओं में निमग्न हैं। आंखें खोले नहीं खुलती थीं और ऐसा लगता था कि प्रकाश इतना तीव्र है कि इसमें आंख खोलना संभव नहीं है। सबेरा हो जाने पर भी मुझे ऐसा लगता रहा कि मैं इस जगत में नहीं हूं, बल्कि उसी महारास के जगत में हूं। तीन दिनों तक ऐसी ही स्थिति बनी रही और धीरे-धीरे मेरी अवस्था सामान्य हुई।

कई वर्षों बाद जब मैंने महाकवि तुलसीदास के श्रीरामचरितमानस का पारायण आरंभ किया, तब राम वन-गमन और भरत के अयोध्या वापस आने का अयोध्या कांड के अंत में जो प्रसंग है, और

प्रकाशक | लेखक ध्यान दें

हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशनार्थ सरकार से सहयोग

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय प्रकाशकों के सहयोग से लोकप्रिय पुस्तकों के मौलिक लेखन, अनुवाद तथा प्रकाशन की एक योजना कार्यान्वित कर रहा है जिसका उद्देश्य मानविकी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और आयुर्विज्ञान इत्यादि के अपेक्षित क्षेत्रों में ज्ञान-विज्ञान का प्रसार करना है। लोकप्रिय शैली में लिखी गई कम कीमत की विभिन्न विषयों की पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित करने के लिए प्रकाशकों को प्रोत्साहित किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत, मौलिक एवं अनूदित पुस्तकें प्रकाशित करने के प्रस्ताव स्वीकार किए जाते हैं। हिन्दी में लिखी गई मौलिक पुस्तकों को अधिमान्यता दी जाएगी। ऐसी पुस्तकों में चाहे वे मौलिक हों या अनूदित, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य है।

योजना के अन्तर्गत प्रकाशकों को पुस्तक की कम से कम ३००० प्रतियां प्रकाशित करनी होंगी। मुद्रण-आदेश की एक-तिहाई प्रतियां, निदेशालय द्वारा २५% सामान्य व्यापारिक कमीशन काट कर खरीद ली जाएंगी। इस खरीद से प्रकाशकों को कुल ३००० प्रतियां प्रकाशित करने पर, मोटे तौर पर अपनी लागत की ५० से ६० प्रतिशत वसूली हो जाती है। इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों का मूल्य निदेशालय द्वारा निर्धारित सूत्र के अनुरूप निर्धारित किया जाएगा।

योजना की अधिक जानकारी के लिए कृपया,

उप निदेशक (प्रकाशन)

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

(शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

पश्चिमी खण्ड-७, राम कृष्ण पुरम,

नई दिल्ली - ११००२२ को लिखें।

डी.ए.वी.पी. ५११(१६१)/८२

जिसका कवि ने अद्‌भुत ढंग से वर्णन किया है, उसे पढ़ते समय पुनः मेरी वैसी ही स्थिति हो गयी। लगता था कि सारी सभा जुड़ी हुई है और श्रीराम के व्यक्तित्व से प्रकाश की तीव्र किरण निकल रही हैं। उस तीव्र प्रकाश में आंखें खुलती ही नहीं थीं और जब खुलती थीं, तब भरत को तापस वेश में अयोध्या में देखता था। कई दिनों तक ऐसी ही दशा बनी रही और तब धीरे-धीरे सामान्य स्थिति आयी।

अनेक वर्षों के बाद जब श्रीरामकृष्ण परमहंस से संबंधित लीलाभूत को पढ़ा, तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी। ऐसा लगता था कि परमहंस की दिव्य मूर्ति से अखण्ड प्रकाश विकीर्ण हो रहा है और उसके तीव्र प्रकाश में प्रकाश के अतिरिक्त और कुछ भी भासित नहीं हो रहा है। कई दिनों तक ऐसी ही स्थिति बनी रही।

परमतत्व की उपस्थिति का आभास

भय का अस्तित्व मैं मानता हूं। परंतु कभी भूत, प्रेत, यक्ष आदि किसी ऐसी योनि के संपर्क में आने का मुझे अवसर नहीं मिला। यद्यपि अनेक बार मैं एकांत, बीहड़ और निर्जन स्थानों में अकेला घूमता रहा हूं, परंतु वैसे स्थानों पर भी मुझे भूत-प्रेत या किसी ऐसी योनि के होने का आभास कभी नहीं लगा। हां, ऐसे स्थानों पर भी मुझे निरंतर उस परम तत्त्व की उपस्थिति का सदैव अहसास होता था जिसे भिन्न-भिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा गया है।

लेखक

योनियां विकास की सोपान

विभिन्न योनियों के अस्तित्व के संबंध में मेरी धारणा है कि ये विकास के विभिन्न सोपान हैं। उपनिषद् में पांच कोशों का वर्णन किया गया है। अन्नमय-कोश, प्राण-मय कोश, मनोमय-कोश, विज्ञानमय-कोश और आनंदमय - कोश। अन्नमय -कोश नितांत भौतिक या जड़ है, जिसमें प्राण स्पंदनहीन है। उससे उच्च स्वर है प्राणमय-कोश, जहां प्राण का स्पंदन प्राप्त होता है। परंतु प्राण स्पंदनशील होते हुए भी सहज भाव से चाहे कुछ कर ले, परंतु इस स्तर पर मन का विकास नहीं होता। लेकिन जब विकास की दृष्टि से विज्ञानमय कोश की स्थिति आती है, तब मन की संकल्प-विकल्प की, संग्रह और त्याग की तथा किसी प्रकार से उचित-अनुचित के विवेक के विभिन्न रूपों की शक्ति विकसित होती है। सामान्य तौर पर मनुष्य के विकास का ही ये सोपान हैं।

यह भी अंतिम अवस्था नहीं है। अंतिम अवस्था विशुद्ध चैतन्य है। विशुद्ध चैतन्य की अवस्था प्राप्त होने पर ही आनंदमय लोक की अनुभूति प्राप्त होती है। विशुद्ध चेतना की अवस्था जड़ता की अवस्था नहीं है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। ●

इस लोक की वैज्ञानिक एवं बौद्धिक शक्तियों से परे एक पारलौकिक शक्ति भी होती है, जिसकी झलक संतों, सिद्धों एवं अन्य प्रकार के साधकों के कार्य-कलापों में कभी-कभी मिल जाती है। सौभाग्यवश मैंने ऐसे महात्माओं के दर्शन किये हैं, जिनमें परोपकार की चमत्कारिक शक्ति रही है, किंतु यह कहना कठिन है कि यह शक्ति उनकी संपूर्ण तात्विक-साधना का

उन्होंने पति की आयु पत्नी को दे दी

● डॉ. श्यामनंदन किशोर

प्रतिफल है या कोई तांत्रिक या मांत्रिक अनुष्ठान। जहां तक मैं समझता हूं, यह संपूर्ण आध्यात्मिक शक्ति का समाहार है।

दाता कंबलशाह उर्फ दाता राजेन्द्र प्रसाद का थोड़ा उल्लेख 'कादम्बिनी' के प्रसिद्ध तंत्र-मंत्र विशेषांक में कर चुका हूं। यहां उससे अलग कुछ घटनाओं का उल्लेख करता हूं।

पत्नी का वार्षिक श्रा...

मेरे विवाह की तारीख ठीक होने को थी मेरी मां बहुत बीमार थी। उन्हें मृत्यु से पहले अपनी अंतिम संतान का विवाह देखने की इच्छा थी। परिवार का कहना था कि ऐसी विषम स्थिति में, जब कि मां की हालत अब-तब की है, विवाह की धूमधाम क्या हो? लड़की के पिताजी से दाता साहब का बहुत ही गहरा संबंध था। भी तब कभी-कभी मजार पर जाता था।

एक दिन जब मैं पहुंचा, तब उन्होंने कहा, "क्या तुम अपने पिताजी को ला सकते हो? मैं मिलना चाहता हूं।" मेरे पिताजी अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के थे। दूसरे दिन सुबह मेरे साथ वहां पहुंचे। वे उन्हें अपने गुरु के मजार के पास ले गये और कुछ बातें कीं। हम लोग लौट आये। पिताजी प्रसन्न दीखे, किंतु पूछने पर भी उन्होंने वार्ता का विवरण नहीं बतलाया। रात मेरे परिवार में एक अद्भुत घटना घटी। मेरी मां जो भयंकर जलोदर के कारण बिस्तर से नीचे नहीं उतर सकती थी, वह सबके उठने से पहले, पहले की तरह आंगन में बैठकर मुंह धोती पायी गयी। सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये।

मां हांफ रही थी। बोली, "मुझे कुछ ताकत मालूम हुई तो बाथरूम खुद चली गयी।" जब हाथ धोकर मैं बिस्तर पर आया तो उसने कुछ नमकीन और ... की इच्छा व्यक्त की। अकेले में उन्होंने मुझसे कहा, "बेटा, दातासाहब क्या ...

हैं ? क्या सिर घुटाये, मौंह मुड़ाये रहते हैं ? क्या हाथ में एक लाठी लिये कंबल ओढ़े रहते हैं ?" मैंने हामी भरी । वह बोली, "कल रात वे मेरे सपने में आये थे और मुझे उन्होंने अपने हाथों से कुछ पिलाया । सुबह से मुझे ताकत मालूम हो रही है।" जब यह विवरण पिताजी को मिला, तब वे बहुत प्रसन्न हुए। मेरे विवाह में मां ने अच्छी तरह भाग लिया, लेकिन छह महीने बाद अचानक स्वर्गवास हो गया। तब पिताजी ने बतलाया कि दाता ने मुझे बुलाकर कहा था कि 'क्या तुम अपनी

उस रात मेरे परिवार में एक अद्भुत घटना घटी । मेरी मां जो भयंकर जलोदर के कारण बिस्तर से नीचे नहीं उतर सकती थी; वह सबके उठने से पहले; पहले की तरह आंगन में बैठकर मुंह धोती पायी गयी । यह चमत्कार दाता साहब का ही था ।

पत्नी को अपनी कुछ आयु दे सकते हो ? वह तो दो-तीन दिनों की मेहमान हैं।' पिताजी ने कहा, "मैं केवल उन्हें सधवा मरते देखना चाहता हूं। आप बड़ी खुशी से हम दोनों की आयु की ऐसी व्यवस्था कर दें।" दाता ने कहा था, "मैं खुदा से दुआ मागूंगा कि छह महीने तुम्हारी पत्नी और जी ले, बहू की सेवा ले ले और तुम अपनी पत्नी का वार्षिक श्राद्ध करके जाना ।" पिताजी का स्वर्गवास मां के वार्षिक श्राद्ध के कुछ ही दिनों बाद अचानक हुआ।

दाता साहब किसी का असाध्य रोग मामूली चीजों से विभूति देकर ठीक कर देते थे । जो मुंह से निकल गया, वही दवा हैं, मसलन 'लीची का पत्ता पीसकर ७ दिनों तक खा लो' और ऐसा करने से दमे का रोगी ठीक हो जाता था । नीम की पत्ती पीसकर चढ़ाने और वहीं पड़े रहने से कुष्ट रोग अच्छा हो जाता था । ऐसी घटनाओं को तांत्रिक-मांत्रिक चमत्कार कहा जाए या अलौकिक शक्तियों का प्रभाव ?

लेखक

जिला देवरिया उत्तर प्रदेश में एक स्थान है—'राजापाकड़' वहां एक सोखा बाबा रहते हैं। वे गृहस्थ सिद्ध हैं। उनके देवी-भक्त पिता कहते थे, 'इस स्थान पर विश्व की बड़ी-बड़ी हस्तियां आएंगी।' कहते हैं, पिता के देहांत के बाद १५ वर्ष के उनके पुत्र पं. चंद्रिका मिश्र ने देखा कि उजले हाथियों पर चढ़ी अनेक दुर्गा माताएं चारों ओर से उन्हें घेरे हैं, और सबके हाथ में दीये हैं। वे घबराकर उसी वृक्ष के पास मूर्च्छित हो गये। जब अच्छे हुए, तब वे पेड़ की जड़ पर बैठने के बाद जो कहते, वह सत्य होता। जो मुंह से निकलता, वही घटित हो जाता।

—अनिकेत, मुजफ्फरपुर-२

बाबा ने मेरे संशय का अनुमान लगा लिया। बोले, " 'मां' का आदेश टालो मत!" . . .

• निशा चतुर्वेदी

मैं लखनऊ में शशिभूषण डिग्री कालेज में अंग्रेजी की व्याख्याता थी। कुछ अपने परिवार के पूज्य जनों के कहने पर आई. ए. एस. तथा एलाइड सर्विसेज-परीक्षा का फार्म भी भर दिया था। कालेज के पास श्री एस. एन. शुक्ल, आई. पी. एम., का मकान था। उनकी पत्नी से मेरा परिचय मित्रता में बदल चुका था। एक दिन, श्रीमती शुक्ल ने बताया कि लखनऊ स्थित गोलागंज महल्ले में एक परम सिद्ध महापुरुष आये हुए हैं।

कुछ उत्सुकता, कुछ संशय की मनोस्थिति में एक दिन मैं बाबा भूतनाथ के दर्शन को चल दी। सैकड़ों महिला एवं पुरुष प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं भी कतार में खड़ी हो गयी। अचानक एक आवाज गूंजी, "कोई हैदराबाद से आयी हैं दर्शन को?"

मैंने उन सज्जन से पूछा, "मेरा घर न्यू हैदराबाद, लखनऊ में है। बाबा मुझे बुलाते हैं क्या?" उत्तर मिला, "आप भाग्यशाली हैं, आपको बाबा याद करते हैं।"

बहुत ही सहमे हृदय से आगे बढ़कर 'बाबा' के कमरे तक पहुंची। हाथ में लिये हुए दो गुड़हल के लाल फूल मुरझा-से रहे थे। दो केले भी हाथ में पसीज रहे थे। दर्शन मिला, एक महापुरुष का। "छोटे चौबेजी, कैसी हो?" कहकर बाबा मुसकराये, और फिर बोले, "तुम्हारा कंपटीशन अक्तूबर में आता है, निकल जाओगी। पर तुम्हारी अपनी इच्छा का काम या कार्यक्षेत्र नहीं मिलेगा।" मैं भौचक, विस्मय में, और उधर बाबा मंद-मंद मुसकराते रहे।

एक दिन शुक्लजी के निवास-स्थान पर बाबा आमंत्रित थे। कोई यज्ञ, हवन आदि का आयोजन था। मुझे भी बुलाया था। आयोजन सफल रहा। बाहर बड़ी भीड़ थी। बाबा ने १ किलोग्राम मिठाई का डिब्बा मुझे पकड़ाकर कहा, "बेटी, प्रसाद बांटो।" मैं झिझकी, कुछ असमंजस में पड़ी। अटपटा-सा लगा कि ३००-३५० लोगों की भीड़ और मात्र एक किलोग्राम मिष्ठान्न। बाबा ने मेरे संशय का अनुमान लगा लिया। बोले, "मां का आदेश टालो मत। जब स्वयं साक्षात अन्नपूर्णा प्रसाद बांटेंगी तो चिंता कैसी?" फिर जो मुझे अनुभव हुआ, वह अलौकिक और अद्भुत था। मैं बाबा के कमरे की चौखट पर खड़ी एक-एक मिठाई बांट रही थी और लोगों का तांता लगा था। पर मिठाई का डिब्बा था कि भरा का भरा! ऐसा चमत्कार मैंने जीवन में प्रथम बार देखा था।

डी—१।२१०, विनय मार्ग चाणक्यपुरी नयी दिल्ली

ज्योतिष
आपकी परेशानियों का निदान

८

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि—८ का उत्तर यदि उस अंक में न मिले तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए। प्रविष्टि की अंतिम तिथि २० नवम्बर, '८२।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि भेजिए।
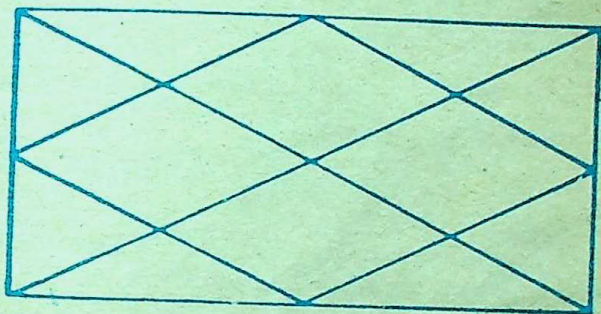
. . . . यहां से काटिए . . . .

८

नाम . . . .

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) . . . . . महीना . . . सन . . . .

जन्म-स्थान . . . . जन्म-समय . . . . .

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा . . . .

पता . . . .

आपका एक प्रश्न . . . .

. . . .

. . . . यहां से काटिए . . . .

इस पते को ही काटकर लिफाफे पर चिपकाएं

. . . .

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—८), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८—२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली:—११०००१

दिवाली की सज-धज
बहुरंगी रचना, विविध नमूने!
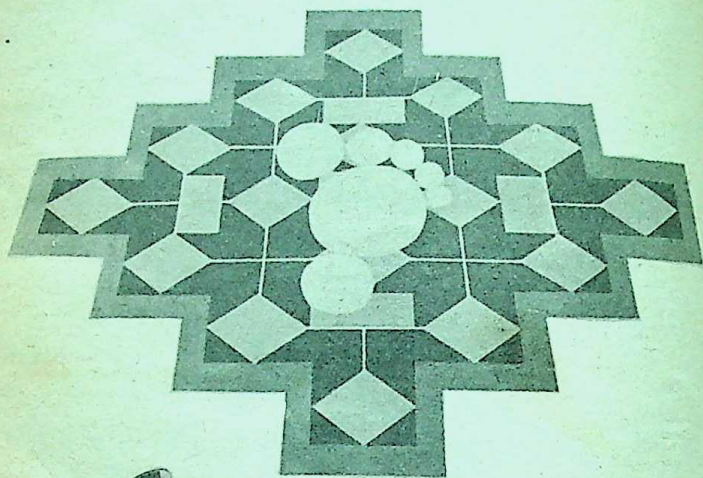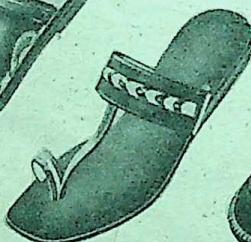
ज्योतिष समस्या और समाधान

६

'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ—'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान'—का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक छह के लिए हमें काफी संख्या में पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, दिल्ली के सुपरिचित ज्योतिषाचार्य आचार्य कृष्णकुमार गुप्ता।

कुंदनलाल जैन, कोटा

प्रश्न : कई बार भयंकर 'एक्सीडेंट' हो चुके हैं। ठीक समय कब आएगा।

उत्तर : जून १९८१ से गुरु की महादशा में शनि और मंगल से दृष्ट नीच के शुक्र की अंतर्दशा चल रही है, जो द्वितीय और नवम-भावों का स्वामी है। १७ अक्तूबर, ८२ के पश्चात आपके कष्ट कम होने लगेंगे तथा समय भी ठीक आएगा।

महेशकुमार शर्मा, हैदराबाद

प्रश्न : मेरे लिए कौन-सा व्यवसाय लाभप्रद रहेगा व कब से?

उत्तर : इस समय आपको शुक्र महादशा में दशम भावगत शनि के साथ स्थित चंद्रमा की अंतर्दशा चल रही है। इसमें शीघ्र ही वर्तमान कार्य से संबंधित शुभ परिवर्तन होगा। साज-सज्जा से संबंधित धातु का कोई कार्य करें तथा चित्त में एकाग्रता रखें।

राजकुमार शर्मा, हुगली (प. बंगाल)

प्रश्न : क्या निकट भविष्य में मेरा पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा?

उत्तर : शनि की साढ़ेसाती के प्रकोप के कारण वर्तमान समय सुखमय नहीं है। ६ अक्तूबर '८२ से शनि तुला राशि में प्रविष्ट हो गया है। अब पारिवारिक जीवन सुखमय होगा, क्योंकि द्वितीय एवं सप्तम स्थानाधिपति मंगल बृहस्पति से पूर्ण रूपेण दृष्ट है।

सुमेरमल माथुर, फलौदी

प्रश्न : मेरी पदोन्नति कब होगी?

उत्तर : विंशोत्तरी दशा के अनुसार भाग्यस्थानागत केतु में भाग्येश बुध की अंतर्दशा होते हुए भी पदोन्नति प्राप्त नहीं

मसूड़ों को मज़बूत बनाइये दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये
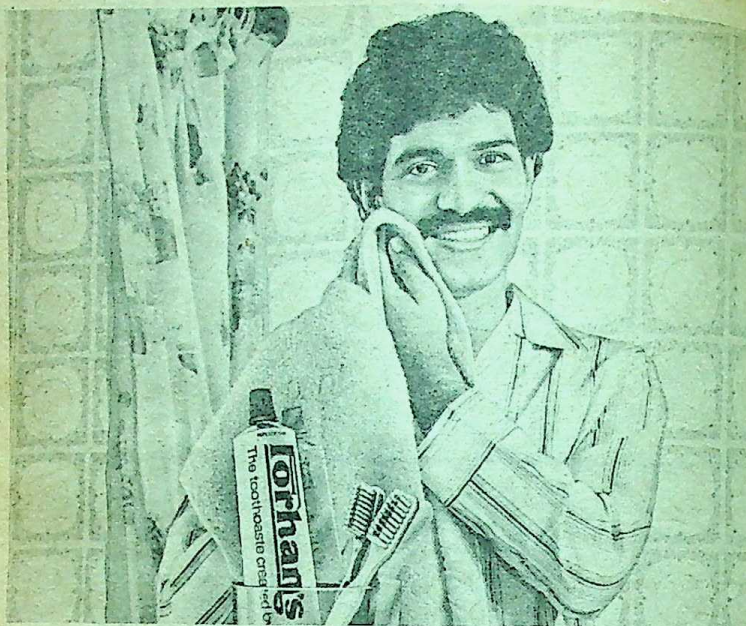
सिर्फ़ फोरहॅन्स में ही मसूड़ों को मज़बूत बनाने वाला विशेष ऐस्ट्रिंजेंट है

इसका अनोखा स्वाद ही इसके असर का सबूत है!

फोरहॅन्स का ऐस्ट्रिंजेंट मसूड़ों की विशेष तौर से देखभाल करता है. सूजन रोक कर ऐस्ट्रिंजेंट कमजोर और मुलायम मसूड़ों को संकुचित करके उन्हें स्वस्थ बनाता है. आपके दाँतों को लम्बी जिन्दगी और मजबूत आधार स्वस्थ मसूड़े ही दे सकते हैं. यहाँ तक कि मजबूत दाँतों को भी स्वस्थ मसूड़ों की जरूरत होती है. इसीलिये आपको चाहिये फोरहॅन्स-ऐस्ट्रिंजेंट वाला अनोखा टूथपेस्ट.

फोरहॅन्स पर भरोसा रखिये

ये दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है

288 F 172 HIN

हो रही है, क्योंकि गोचरानुसार राशीश बृहस्पति चंद्र लग्न से अष्टम स्थान में है। २४, नवंबर ८२ के पश्चात बृहस्पति के वृश्चिक राशिगत होने पर ही शुभ समय प्रारंभ होगा।

के. पी. शर्मा, नेपाल

प्रश्न : नौकरी, आर्थिक स्थिति, उपयुक्त पेशा और विदेश-यात्रा के संबंध में जानना चाहता हूं।

उत्तर : इस समय आपको बृहस्पति द्वारा दृष्ट राहु में भाग्येश चंद्रमा की अंतर्दशा चल रही है। विदेश-यात्रा तो निश्चित होगी, परंतु स्थायी रूप से नहीं। १२ फरवरी '८४ से बृहस्पति महादशा प्रारंभ होने पर आपको हर प्रकार की वृद्धि मिलेगी।

सुरेशकुमार श्रीवास्तव, फैजाबाद

प्रश्न : क्या मेरे पुत्र होगा तथा जीवित रहेगा ?

उत्तर : पंचम स्थान में नीच राशि स्थित शुक्र नीच भंग के पश्चात भी शनि तथा मंगल दो पाप ग्रहों से दृष्ट है। अतः वह पुत्र के लिए विशेष रूप से अशुभ है। हीरा धारण कर शुक्र को बलवान करें, तभी पुत्र-प्राप्ति की संभावना होगी।

डॉ. धर्मचंद्र जैन, राजकोट

प्रश्न : निकट भविष्य में मुझे कोई अन्य उच्चपद मिलने व स्थानांतरण की संभावना है ?

उत्तर : आपकी जन्मपत्री के अनुसार शुक्र-महादशा में तृतीय स्थानागत शनि की अंतर्दशा, ६ सितंबर '८३ तक रहेगी। इसके बाद ही स्थानांतरण व पदोन्नति की आशा रखें।

मोहनलाल, गुना

प्रश्न : मकान-निर्माण कब होगा ?

उत्तर : इस समय आपको शुक्र महादशा में दशम स्थान स्थित सुखेश शनि की अंतर्दशा चल रही है। सुख-स्थान शनि द्वारा पूर्ण रूपेण दृष्ट है। इसी दशा में आपके मकान का निर्माण होगा।

शुभा मिश्र, रायपुर

प्रश्न : दमा रोग कब और कैसे ठीक होगा ?

उत्तर : आपकी जन्म-पत्री के अनुसार द्वितीयेश व सप्तमेश मंगल से दृष्ट बृहस्पति शनि के साथ स्थित हैं। अतः बृहस्पति को अधिक बलवान करने के लिए पुखराज पहनें, तभी रोग ठीक होने की संभावना होगी।

कुमारी मनीशा मिश्र, इलाहाबाद

प्रश्न : नेत्र-रोग से पीड़ित हूं। कब तक ठीक होगा ? कोई उपाय बतायें।

उत्तर : छठे स्थान में मंगल के साथ स्थित द्वितीयेश चंद्रमा शनि से दृष्ट है। नीच के सूर्य का नीच भंग भी नहीं होता है, अतः अगर मोती पहनें और सूर्य-स्तोत्र-मंत्र द्वारा सूर्य-पूजा करें, तब नेत्र-रोग दूर होगा।

तरौली में बृजेन्द्र [illegible] घर—फूस की झोंप[illegible] की जगह पक्का म[illegible]
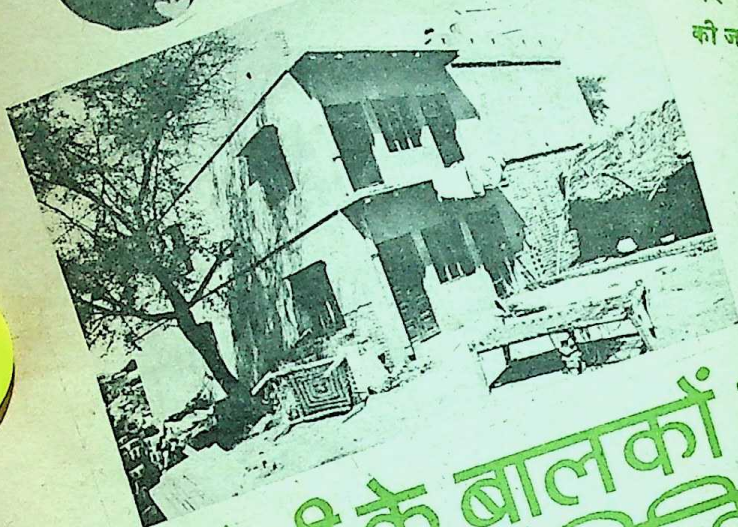
तरौली के बालकों में अब भी सिद्धि है

● वि. प्र[illegible]

दिल्ली-मथुरा मार्ग पर, मथुरा से २० किलोमीटर दूर एक गांव अकबरपुर, जहां से छह-सात किलोमीटर पक्की सड़क पर है तरौली। अकबरपुर से तांगे द्वारा वहां पहुंचा जा सकता है।

हम भी तांगे द्वारा तरौली पहुंचे थे। एक तांगेवाले ने आठ रुपये मांगे, पर दूसरा फी सवारी रुपये पर ही जाने को तैयार हो गया।

तरौली अच्छा-खासा गांव है। फू[illegible] की झोंपड़ियों के बीच कच्चे-पक्के मका[illegible] चमत्कारी बालक बृजेन्द्र का घर पू[illegible] की जरूरत नहीं गांववाले आप को देख[illegible] ही आपके कुछ पूछे बिना ही, उ[illegible] घर की ओर जानेवाले रास्ते को ब[illegible] देते हैं।

कई गलियों को पारकर हम बृज[illegible] के घर पहुंचते हैं। लोग बताते हैं, प[illegible] वहां कभी फूस की झोंपड़ी थी, पर हमें व[illegible] एक दुमंजला पक्का मकान नजर आ[illegible] है। एक गांववाला कहता है, 'ये मका[illegible] आपने ही बनवाया है।'

तालाब, जिसमें नाग-नथैया होगी

घर का पक्का दुआर
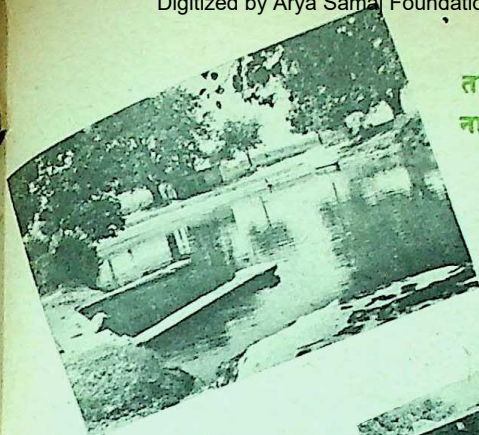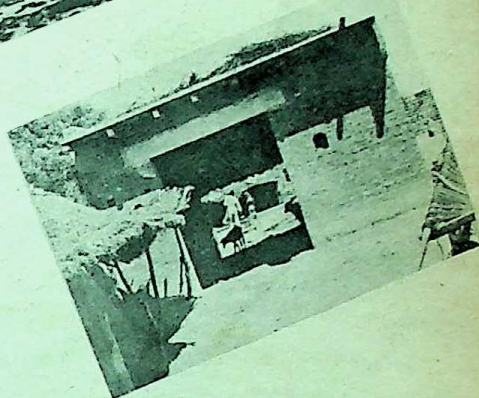
तरौली से लौटते वक्त तांगेवाले ने भी ऐसा ही कुछ कहा था, 'आप लोगों ने बनवाया।' 'आप लोगों ने मोटर साइकिल दी', 'बंदूक दिलवायी ठाकुर को।'

ठाकुर अर्थात बृजेन्द्र के पिता दुर्गाप्रसाद ठाकुर। श्री ठाकुर से हम दिल्ली में एक वर्ष पूर्व मिल चुके हैं। आवाज देने पर बृजेन्द्र की बड़ी बहन शांता आती है, गोद में एक नन्हे शिशु को लिये।

उससे पता चलता है, ठाकुर तो मोटर साइकिल पर मथुरा गये हैं और बृजेन्द्र अपने भाई के साथ स्कूल। इसी बीच बृजेन्द्र की मां भी आ जाती हैं। वे हमें घर का फोटो खींचने से मना करती हैं।

बृजेन्द्र से मिलने हम स्कूल की ओर जाते हैं।

पिछले वर्ष तंत्र-विशेषांक में पाठकों ने तरौली के चमत्कारी बालक बृजेन्द्र के संबंध में प्रसिद्ध हृदय-रोग विशेषज्ञ डॉ. रामकुमार करौली का लेख पढ़ा था। उसे पढ़कर अनेक पाठक तरौली में इस बालक से मिले थे। इस एक वर्ष में बृजेन्द्र के संबंध में हमें और भी नयी जानकारी मिली। इन सबकी सत्यता की जांच करने के लिए हमारे एक विशेष प्रतिनिधि ने एक फोटोग्राफर के साथ तरौली की यात्रा कर वहां कई लोगों से भी भेंट की। इसी सिलसिले में डॉ. रामकुमार करौली से भी संपर्क किया गया। प्रस्तुत है—विवरण का सार।

—संपादक

पक्का स्कूल। आहाते में कुरसियों पर बैठे, कुछ शिक्षक। एक कक्षा में पतली-सी छड़ी लिये दंड देते एक शिक्षक।

हम अपनी यात्रा का उद्देश्य बतलाते हैं। शिक्षक आपस में एक दूसरे को देखकर मुसकराते हैं, फिर बृजेन्द्र के चमत्कार के किस्से सुनाते हैं।

चमत्कार के किस्से

—एक बार गांव के एक लड़के को सपने में सांप दिखायी देते थे। उसका पिता उसे लेकर बृजेन्द्र के पास गया। बृजेन्द्र ने दूर से ही उनके आने का कारण बता दिया। यह भी कहा कि अब सांप नहीं दिखायी देंगे। वाकई, उस बच्चे को फिर सांप नहीं दिखायी दिये।

—एक शिक्षक के साले निःसंतान थे। बृजेन्द्र के पास गये। बृजेन्द्र ने कहा, 'संतान हो जाएगी।' सचमुच उनके संतान हुई, पर पत्नी जाती रही।

—स्कूल के पास एक तालाब है—एक मंदिर भी। बृजेन्द्र ने घोषणा की कि वह स्वामी-तालाब में कूदेगा और नाग नाथेगा। फिर मर जाएगा। ऐसा कुछ नहीं हुआ।

गांव में बृजेन्द्र के बारे में यदि एक आश्चर्य-मिश्रित श्रद्धा है, तो उसके पिता के प्रति दबा आक्रोश !

—ठाकुर खूब फायदा कमा रहा है। पक्का मकान बनवा लिया।

—ठाकुर अब लालची हो गया है।

यही आरोप हमने दिल्ली में भी कई जिम्मेदार लोगों से सुना है। उनकी शिकायत थी कि बृजेन्द्र के पिता ने अब लो[गों] से पैसा लेना शुरू कर दिया है।

डॉ. रामकुमार करौली ने ही [हमें] बृजेन्द्र से मिलवाया था। वे भी बृजेन्द्र [के] पिता के व्यवहार से खिन्न नजर आ[ए।] बोले, "इसमें कोई शक नहीं कि बृजे[न्द्र] के पास कोई सिद्धि है। वह अभी [भी] कभी-कभी सच बातें बताता है। क[भी] कभी, इसलिए कि जब बृजेन्द्र अकेले [में] होता है, तब वह अतीत की बातें तो बि[ल]कुल सही-सही बताता है। वर्तमान भी ब[ता] देता है। आनेवाले छह महीनों के बारे [में] भी उसकी बात सच निकलती है। श[ायद] उसकी 'रेंज' छह महीनों की ही है। पर इधर ठाकुर, बृजेन्द्र का पिता, लो[गों] से पैसे लेने लगा है।" (गांव में यही [बात] बात एक शिक्षक ने व्यंग्यपूर्वक क[ही] थी—'अजी ठाकुर पैसा थोड़े लेते हैं, पैसा तो साहब, आप देते हैं। ठाकुर [का] क्या कसूर।' और हंसी) पहले वह [पैसा] नहीं लेता था। और लोग भी नकद [के] बजाय उसे चीज दिया करते थे—[जैसे] बृजेन्द्र के लिए खिलौने, साइकिल, व[स्त्र]। पर जब लोगों के काम बनने लगे [तो] उन्होंने नकद भी देना शुरू कर दि[या]। इससे ठाकुर की आर्थिक स्थिति भी [ठीक] ठीक हुई।"

पैसे का [...]

"लेकिन इसका एक गलत असर भी हु[आ।] ठाकुर ने पैसा लेकर बृजेन्द्र से उ[सकी] इच्छा के विपरीत बातें कहलवानी [...]

कीं। खासकर ऐसी बातें, जिनसे पैसा देनेवाला खुश हो जाए। बृजेन्द्र का एक छोटा भाई भी है। वह भी चमत्कारी है। वह भी लोगों को अतीत की बातें बताता है।

"बृजेन्द्र और उसके भाई के बारे में 'कादम्बिनी' में जो कुछ छपा, उससे प्रभावित होकर ही लोग तरौली पहुंचे। मैं चाहूंगा कि बृजेन्द्र और उसके भाई से मिलने के लिए जानेवाले लोग अकेले में ही दोनों भाइयों से अपनी बात कहें।

"एक बात यह भी तय है कि यदि बृजेन्द्र और उसके भाई को धन कमाने का माध्यम बना लिया गया, तब उनकी सारी शक्ति खत्म हो जाएगी। बृजेन्द्र के बारे में तो यह बात अभी ही कही जा सकती है, क्योंकि पिता के दबाव के कारण जब उसे अपनी इच्छा के विपरीत कहना पड़ता है, तब उसकी बातें झूठ निकलती हैं।"

डॉ. करौली की राय

डॉ. करौली ने हमें बृजेन्द्र के पिता द्वारा दोनों भाइयों पर दबाव डालने के दो तीन प्रसंग भी बताये। उन्होंने कहा, "श्री नारायण राव को आप जानते होंगे। उच्च पदाधिकारी हैं। १४ कमरों का बंगला छोड़कर एक छोटे से फ्लैट में रहते हैं। आध्यात्मिक वृत्ति के हैं। एक बार उनके घर बृजेन्द्र अपने पिता के साथ ठहरा था। वहां एक व्यापारी ने उसके पिता को हजारों रुपयों की नकद राशि देकर कुछ पूछना चाहा। बृजेन्द्र उस समय कुछ बताने की मनःस्थिति में नहीं था, इसलिए उसने इनकार किया। इस पर उसका पिता नाराज हो उठा। उसने बृजेन्द्र से दुर्व्यवहार किया। श्री नारायण राव को यह सब देखकर बेहद चोट पहुंची। उन्होंने बृजेन्द्र के पिता और उस व्यापारी को घर से बाहर भेज दिया। बाद में बृजेन्द्र उनके पास एक मास तक रहा। श्री नारायण राव कहते हैं कि बृजेन्द्र अपने पिता के ऐसे व्यवहार से कभी-कभी बेहद बेहद दुःखी हो उठता है।"

यद्यपि गांव में हमें किसी ने ठाकुर के ऐसे व्यवहार की जानकारी नहीं दी, पर उनकी बातों से यह जरूर स्पष्ट था कि दोनों भाइयों की यह चमत्कारिक प्रतिभा धनोपार्जन का साधन बन गयी है।

डॉ. करौली कहते हैं, "पहले अकबरपुर से तरौली तक कच्चा रास्ता था। पर अब पक्की सड़क बन गयी है। उत्तर प्रदेश के अनेक मंत्री व सरकारी अधिकारी भी बृजेन्द्र से मिलने आ चुके हैं। बृजेन्द्र को उसका पिता लखनऊ भी ले गया था। अब तो एक बड़े औद्योगिक घराने ने बृजेन्द्र की सुविधा के लिए वृंदावन में एक कार की भी व्यवस्था कर रखी है। ठाकुर का स्वभाव भी बदल गया है। पहले वह विनम्र था, अब कुछ अक्खड़ हो गया है।"

वे एक बार फिर कहते हैं, "इन बालकों में सिद्धि जरूर है, पर यदि लोग उससे मिलने जाएं तो अकेले में ही बात करने का आग्रह करें। तभी कुछ लाभ मिल सकता है। अन्यथा पिता के दबाव के कारण बृजेन्द्र या उसके भाई द्वारा गलत बात बताने का पूरा अंदेशा रहेगा।" ●

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **अभिराम**—क. नया, ख. सुंदर, ग. स्वादिष्ट, घ. अनुकूल।

२. **पराकाष्ठा**—क. घेरा, ख. दूरी, ग. मर्यादा, घ. चरम सीमा।

३. **परवत्ता**—क. विवशता, ख. कायरता, ग. दूसरे की अधीनता, घ. आधिपत्य।

४. **जगती**—क. माता, ख. जागनेवाली, ग. पृथ्वी, घ. गोद।

५. **फलाढ्य**—क. फल की कामना करनेवाला, ख. फल देनेवाला, ग. परिणाम सहित, घ. फलों से भरपूर।

६. **द्विगुणित**—क. विस्तृत, ख. कई बार, ग. दुगुना बढ़ा हुआ, घ. दोबारा।

७. **निखिल**—क. बिना खिला, ख. संपूर्ण, ग. थोड़ा, घ. प्रसिद्ध।

८. **पुत्तलिका**—क. मशाल, ख. वर्ती, ग. पुतली, घ. दासी।

९. **कालजयी**—क. काले रंग का, ख. कालिज से संबंधित, ग. जिसने काल को जीत लिया हो, घ. अस्थिर।

१०. **परिगृहीत**—क. विवाहित, ख. ग्रहण किया हुआ, ग. गोद लिया हुआ, घ. छोड़ा हुआ।

११. **केशाकेशि**—क. बड़े-बड़े बाल रखना, ख. कशमकश, ग. बाल संवारना, घ. एक-दूसरे के बाल खींचकर लड़ना।

१२. **निरत**—क. दूर, ख. उदासीन, ग. किसी काम में लगा हुआ घ. फेंका हुआ।

उत्तर

१. ख. सुंदर, मनोहर, रुचिकर। यह दृश्य अत्यंत **अभिराम** है।

२. घ. चरम सीमा, हद। उसने धृष्टता की **पराकाष्ठा** कर दी।

३. ग. दूसरे की अधीनता, पराधीनता। **परवत्ता** में मानव का विकास असंभव है।

४. ग. पृथ्वी, धरती। जगती पर नाना प्रकार के जीव-जंतुओं का वास है।

५. घ. फलों से भरपूर। फलाढ्य वृक्षों से ही बाग की शोभा होती है।

६. ग. दुगुना बढ़ा हुआ। स्वच्छ

से सौंदर्य द्विगुणित हो जाता है।

७. ख. संपूर्ण, समस्त, पूरा। **निखिल** विश्व में शांति की कल्पना मरीचिका प्रतीत होती है।

८. ग. पुतली, गुड़िया। गृहिणी को मात्र **पुत्तलिका** समझना भूल है।

९. ग. जिसने काल को जीत लिया हो, अमर। कालिदास का साहित्य **कालजयी** है।

१०. ख. ग्रहण किया हुआ, अपनाया हुआ, स्वीकृत। कभी-कभी शताब्दियों से **परिगृहीत** जीवन-पद्धति को बदलना आवश्यक हो जाता है।

११. घ. एक-दूसरे के बाल खींचकर लड़ना, झोंटा-झोंटी। जरा-सी बात पर पड़ोसिनों में **केशाकेशि** हो गयी।

१२. ग. किसी काम में लगा हुआ, संलग्न, अनुरक्त। वह वर्षों से कला में **निरत** है।

पारिभाषिक शब्द

एकनालिजमेंट = पावती/प्राप्ति-सूचना
बेसिक पे = मूल वेतन
स्केल ऑव पे = मूल वेतन-मान
केरियर = वृत्ति
कॉलिंग = व्यवसाय/आजीविका
प्रोफेशन = पेशा
ऐक्सीलरेटर = त्वरक
ओर = अयस्क/कच्ची धातु
स्मेल्टिंग = प्रद्रावण/गलाना
वेल्डिंग = झलाई

समस्या-पूर्ति–४१

मेरुदंड

प्रथम पुरस्कार

पंगु व्यवस्था के चरण
आज हैं खंड-खंड
चाहिए देश को अचल
हिमालय-सा मेरुदंड

–एस. सी. जैन 'पागल'
बुढ़ार सैंट्रल स्टोर्स, धन पुरी, शहडोल (म.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

नैतिकता विकलांग हुई
आदर्श हो गया खंड-खंड
नर-दानव ने तोड़ दिया
मानवता का अब मेरुदंड

–जगदीश प्रसाद सिंह
—क्वार्टर नं. ६२१, जी. डी. एल. डब्ल्यू. वाराणसी, २२१००४

● प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'

ग्रह-स्थिति : शनि-गुरु तुला में, केतु-मंगल धनु में, राहु मिथुन में, २५ से गुरु वृश्चिक में, १३ से शुक्र वृश्चिक में, १७ से सूर्य वृश्चिक में, १७ से बुध वृश्चिक में।

मेष (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो, अ)

१ से १३ नवंबर के मध्य रोजी-रोटी में वृद्धि, नयी नौकरी, व्यापार तथा मांगलिक कार्य की दिशा में किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी। पत्नी से सुख एवं सहयोग मिलेगा। १३ से २६ के मध्य व्यय विशेष होगा। संतान के कारण मानसिक क्लेश की स्थिति आ सकती है।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू, बो)

दीपावली के पश्चात उन्नति के द्वार खुलेंगे, रुके हुए कार्य प्रगति की ओर अग्रसर होंगे। नवीन नौकरी एवं व्यापार की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। आर्थिक प्रगति भी होगी। पत्नी तथा उसके परिवार जनों से सहयोग मिलेगा। आर्थिक मामले में भी सफलता मिलेगी। २ से १६ के मध्य आर्थिक उलझनें, झगड़ा, शारीरिक, मानसिक पीड़ा, व्यावसायिक, पारिवारिक तनाव की स्थिति से बचने के प्रयास करें।

मिथुन (क, की, कू, को, घ, छ, ह)

१ से १२ नवंबर के मध्य बनायी गयी योजना को साकार रूप देने, संतान की उन्नति, विवाह, शिक्षा, व्यवसाय आदि के संबंध में चल रहे प्रयास सफल होंगे। शोध-कार्य, लेखन, तंत्र-प्रयोग, शिल्प, कलात्मक, संगीत आदि की दिशा में यदि कोई प्रयोग कर रहे हैं, तो आशातीत सफलता मिलेगी। १३ से २७ के मध्य संतान के कारण परेशानी, योजना में व्यवधान, मानसिक क्लेश। अस्वस्थता, दुर्घटना, अर्थ-हानि, विरोध, विवाद आदि

स्थिति से बचें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, ड, डी, डू, डे, डो)

२ से १६ के मध्य तथा २० से २६ के मध्य सुख के साधनों में वृद्धि होगी। आर्थिक दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। प्रियजन-मिलन, परिचय-क्षेत्र में भी वृद्धि। संतान के कारण उलझनें आ सकती हैं। राजनीतिक लाभ भी मिल सकता है। १७ से १९ तथा २७ से ३० के मध्य स्वास्थ्य एवं अर्थ-हानि के प्रति विशेष सावधान रहें।

सिंह (म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू, टे)

२ से १० तथा १९ से २४ के मध्य भौतिक सुख के साथ ही साथ मानसिक सुख-शांति के अवसर प्राप्त होंगे। प्रियजन-मिलन, नारी-मित्र से भेंट, संतान तथा पत्नी के संबंध में सुखद समाचार। आर्थिक एवं कीर्ति की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। व्यवसाय की दिशा में उन्नतिकारी प्रयास भी सफल होंगे। शोधपूर्ण कार्य, प्रतियोगिता की दिशा में आश्चर्यजनक सफलता। तंत्र, ज्योतिष, धर्म में

पर्व एवं त्यौहार

१—नवंबर—शरद पूर्णिमा, ४—गणेश चतुर्थी व्रत, ८—राधाष्टमी, ११—रम्भा एकादशी व्रत, १३—शनि प्रदोष, १५—दीपावली, १६—अन्नकूट, १७—यमद्वितीया (भैयादूज), १९—गणेश चतुर्थी, २४—दुर्गाष्टमी, २५—अक्षय नवमी, २७—प्रबोधिनी एकादशी व्रत, २८—प्रदोष।

राशियां और प्रभाव—२५ से गुरु वृश्चिक राशि पर जाएगा, जिससे धनु विशेष प्रभावित होगी। वैसे तो शनि के कारण वृष, मीन, वृश्चिक, कन्या, तुला, राशियां विशेष रूप से प्रभावित होंगी। ऐसी स्थिति में इन राशियों के व्यक्तियों को आर्थिक मामलों में 'रिस्क' नहीं लेनी चाहिए और न ही विवाद, झगड़े की स्थिति में पड़ें। संतान के कारण पीड़ा, पारिवारिक तनाव के प्रति भी सतर्क रहना आवश्यक होगा। वृश्चिक में गुरु के प्रवेश के कारण भावों में बाजार में तेजी की लहर आएगी। व्यापारी को तो लाभ मिलेगा, उपभोक्ता कष्ट झेलेगा।

शांति कैसे करें:

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

प्रातः काल १०८ बार जाप करें। २९,००० बार जाप जितने भी दिनों में कर सकें, करें। गुरु के कुप्रभाव से मुक्ति मिल जाएगी।

रुचि रखनेवालों को किये गये प्रयोग में सफलता मिलेगी।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो)

१ से १३ के मध्य आर्थिक मामले में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। नौकरी में भी आंशिक लाभ मिल सकता है। १७ से २४ के मध्य किसी नारी-मित्र, भाई-बहन के कारण लाभ मिलने की भी संभावना बनती है। चतुर्थ भाव में केतु मंगल की युति के कारण मानसिक क्लेश, सुख के साधनों में व्यवधान, विवाद, पारिवारिक कलह की स्थिति का भी सामना करना पड़ सकता है।

तुला (र, रा, रु, रे, रो, त, ती, तू, ते)

२ से १२ तथा १८ से २४ के मध्य किये गये प्रयास आशाजनक होंगे। ससुराल से सहयोग एवं सुख मिलेगा। रोजी-रोटी के साधन की दिशा में चल रहे प्रयास भी सफल होंगे। यात्रा भी सुखद एवं लाभप्रद होगी। अचानक लाभ, रुका हुआ धन भी मिल सकता है। प्रेयसी व प्रियजन से मिलन की भी संभावना बनती है। १३ से १६ के मध्य स्वास्थ्य एवं संतान के प्रति सतर्क रहें। यात्रा में भी सावधानी रखें।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, नो, य, यी, चे)

१३ से २६ के मध्य किये गये प्रयास सफल हो सकते हैं। आर्थिक मामलों में तथा प्रतिष्ठा आदि के प्रयास सफल होंगे। सामान्यतः इस माह में संयम एवं धैर्य

साक्षात्कार कृष्णअवतार का पद्मेश से

कृ. अ. : आपने ज्योतिष में ऐसी महारात हासिल की है कि आज हर आदमी आपसे मिलने के लिए आतुर है। रहस्य क्या है?

प. : अपने मन के भीतर झांककर देखिए। आत्म विश्वास और लक्ष्य के प्रति निष्ठा कभी धोखा नहीं देता।

कृ. अ. : आपने आज तक कितनी भविष्य-वाणियां कीं?

प. : ढाई-तीन सौ ऐसी भविष्यवाणियां हैं, जो अक्षरशः सत्य हुईं और जिन पर मुझे गर्व है।

कृ. अ. : सुना है, आप तांत्रिक भी हैं कई असाध्य रोग से ग्रस्त रोगियों को आपने कैसे खड़ा कर दिया।

प. : इसकी एक लंबी कहानी है। जिंदगी का हारा हुआ बैल हिमालय की कंदरा में चला गया। भूख-प्यास से पीड़ित होकर भी साधना की। गुरु मिले स्वामी कृष्णा-नंद। उनके चरण पकड़ लिये। अरे कृष्ण अवतार, तुम भी 'पद्मेश' के चरण पकड़ लो। मुक्ति मिल जाएगी।

कृ. अ. : तंत्र के लिए कोई खास समय?

प. : जब तंत्र-विद्या में बच्चा था, तब घड़ी-घड़ी देखा करता था, अब घड़ी मुझे देखा करती है।

कृ. अ. : तांत्रिक और ज्योतिषी अक्खड़ स्वभाव के होते हैं। इसलिए हे कृष्णावतार पद्मेशजी सीधे जवाबों के लिए क्षमा मांगते हैं।

अधिक रखें। धन के मामले में 'रिस्क' न लें। संतान के कारण परेशानी मिल सकती है। संतान के विवाह के संबंध में चल रहे प्रयास में २५ नवंबर के पश्चात सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता, शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयास भी फलीभूत होंगे। शनिवार का व्रत लाभ देगा।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ़, भे)

१ से १३ के मध्य आर्थिक योजना को साकार रूप देने, संतान की उन्नति, विवाह, नौकरी, शिक्षा आदि की दिशा में भी आशातीत परिणाम होंगे। यात्रा सुखद एवं लाभप्रद होगी। पुरस्कार, उपहार आदि भी मिल सकते हैं। १४ नवंबर से २९ तक का समय व्यवधान-कारी है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा भी संभव। पारिवारिक व्यावसायिक उलझनों की आशंका हो सकती है।

मकर (भो, ज, जी, जू, जे, जो, ख, खी, ग, गी)

२ से १० तथा १५ से २६ के मध्य शासन, अधिकारी, मालिक, व्यवसाय से लाभ मिल सकता हैं। आर्थिक एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी लाभ मिलेगा। भौतिक उपलब्धि होने के बावजूद भी मन में अशांति रहेगी। सुख में न्यूनता एवं व्यव-धान की स्थिति। अपनों से ही पीड़ा मिलेगी। भावुकता एवं क्रोध पर अवश्य नियंत्रण रखें, खासतौर पर महिलाएं। आर्थिक मामले में 'रिस्क' न लें।

कुंभ (गू, गे, गो, स, सी, सु, से, सो, श्र, द)

१ से १७ तथा १६ से २४ के मध्य कीर्त्ति, प्रतिष्ठा, पुरस्कार, उपहार, पद, धन आदि की प्राप्ति के प्रयास सफल होंगे। पारिवारिक सुख शांति में वृद्धि होगी। पत्नी के कारण अवश्य ही कुछ मानसिक क्लेश की स्थिति आ सकती है। बेरोजगारों को प्रयास करने पर रोजगार मिल सकता है। नवीन कार्य, शोध-कार्य, लेखन, सिद्धि आदि की दिशा में भी सफलता मिलेगी।

प्रो. पद्मेश

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)

१७ से २८ के मध्य उन्नति की दिशा में सफलता मिलेगी। अधिकारियों, राज-नेता, पिता, प्रियजन से संबंधों में प्रगाढ़ता होगी। संबंधों का लाभ भी मिलेगा। यात्रा भी सुखद एवं लाभदायी होगी। संपत्ति, उपहार, पुरस्कार आदि की दिशा में भी लाभ मिलेगा। राजनीतिक लाभ भी मिल सकता है। विदेश-यात्रा का प्रयास भी अंतिम सप्ताह में सफल हो सकता है। १ से १३ तक मानसिक क्लेश, पारिवारिक, व्यवसायिक उलझनों एवं शारीरिक, आर्थिक, मानसिक क्लेश का समय। संयम एवं धैर्य ही संबल हैं।

—१८, एम. आई. जी., रतनलाल नगर, कानपुर-२२

ज्योतिष : भविष्य-वाणियां
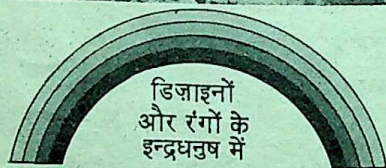
राजीव गांधी और तुला का शनि

ज्योतिष वेदांग हैं। और अंगों में वह वेद का नेत्र हैं। नेत्र का कार्य है दर्शन कराके आगे ले जाना, वस्तुस्थिति से मस्तिष्क को परचित करा देना। ठीक यही ज्योतिष का कार्य है।

मृत्यु की भविष्यवाणी करना ही गलत है। मेरा विश्वास है कि मृत्यु का निश्चित समय, निश्चित तिथि बताना भी असंभव-सा है।

अनेक बड़े समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में मेरी भविष्यवाणियां प्रकाशित हुई हैं। उनमें लगभग ८०% सत्य भी घटित हुई हैं, जैसे—

तंत्र-विशेषांक के लिए हमने देश के कुछ प्रमुख ज्योतिषियों से कुछ प्रश्न पूछे थे। हमने उनसे उनकी कुछ ऐसी पिछली भविष्यवाणियों की भी प्रमाण-सहित जानकारी मांगी थी, जो सत्य सिद्ध हुई हों। यहां प्रस्तुत हैं—कुछ ज्योतिषियों के उत्तर। जिन ज्योतिषियों ने अपनी पिछली भविष्यवाणियों की सत्यता के प्रमाण स्वरूप अखबार की कतरनें आदि भेजी हैं, उनका यहां उल्लेख है; लेकिन, जिन ज्योतिषियों ने ऐसा कोई प्रमाण नहीं भेजा, उनकी भविष्यवाणियों की हमने चर्चा नहीं की। —संपादक

- सितंबर में केंद्रीय मंत्रिमंडल में आमूल चूल परिवर्तन होंगे।
  ('कादम्बिनी' सितंबर ८२)
- राजीव गांधी उत्तर प्रदेश से सांसद होंगे।
  (साप्ताहिक 'हिंदुस्तान' १९ अप्रैल, ८१)

कुछ संभावित घटनाएं

- भारत में १९८३-१९८४ के बीच मध्यावधि चुनाव की संभावना।
- राजीव गांधी के लिए तुला का शनि महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। ६ अक्तूबर, ८२ से १४ सितंबर, १९८४ के बीच मध्यावधि चुनाव के पूर्व वे पार्टी में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करेंगे तथा मंत्रि-

रैलिफ़ैन
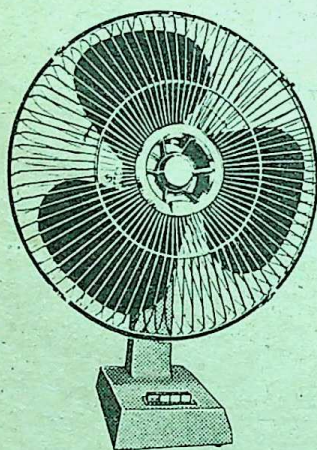
दिखने में सुंदर.
चलने में बढ़िया.
हर पसंद के लिए सर्वोत्तम.

सभा के सदस्य होंगे।

- आगामी लोकसभा में ६० प्रतिशत से भी अधिक नये चेहरे होंगे।
- श्री अटलबिहारी वाजपेयी अपनी आयु के ६१वें वर्ष में पुनः सत्ता में आएंगे।
- श्रीमती इंदिरा गांधी के लिए १९ नवंबर' ८२ से २३ दिसंबर' ८४ तक का समय महत्त्वपूर्ण होगा, वे कुछ ऐसा कार्य करेंगी, जो इतिहास बन जाएगा।
- मध्यप्रदेश, आंध्र, गुजरात, महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकेंगे।

—प्रो. के. ए. दुबे पद्मेश

पाक प्रेसीडेंट का जीवन खतरे में

तंत्र-मंत्र और ज्योतिष के प्रति मेरी बचपन से रुचि रही है, वयस्क होने पर मुझे अनेक विपत्तियों का शिकार होना पड़ा। इन्हीं दिनों मां काली ने मुझ पर कृपा की और मैंने ज्योतिष आदि का अध्ययन शुरू किया। ज्योतिष-शास्त्र एक पूर्ण विज्ञान है तथा सही जन्म तिथि एवं अन्य जानकारी मिलने पर सही-सही भविष्यवाणियां की जा सकती हैं। जहां तक मृत्यु के संबंध में भविष्यवाणी करने का सवाल है, मेरा ख्याल है, कोई भी समझदार ज्योतिषी इस तरह की भविष्यवाणी नहीं करेगा।

मैंने अनेक भविष्यवाणियां की हैं। लगभग ८० प्रतिशत भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध हुई हैं। मैंने मंत्र-शक्ति की सहायता से भी कुछ लोगों की सहायता की है। कैसे? यह स्पष्ट कर पाना कठिन है।

कुछ भविष्यवाणियां

- इस्रायल की चतुर्मुखी प्रगति होगी, लेकिन अमरीका के साथ उसके संबंध बहुत खराब हो जाएंगे।
- चीन में अर्थ-व्यवस्था बुरी तरह बिगड़ेगी। नेतृत्व में आये दिन परिवर्तन होता रहेगा। भारत के साथ उसके सबंध मैत्रीपूर्ण, लेकिन दिखावटी होंगे।
- पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक का पद, जीवन कुछ खतरे में रहेगा।

● शांतिभूषण चक्रवर्ती
जी-१२३९, चितरंजन पार्क, नयी दिल्ली

मुस्लिम राष्ट्रों के लिए घातक समय

मैं ज्योतिष का अध्ययन - अनुसंधान १९६८ से कर रहा हूं।
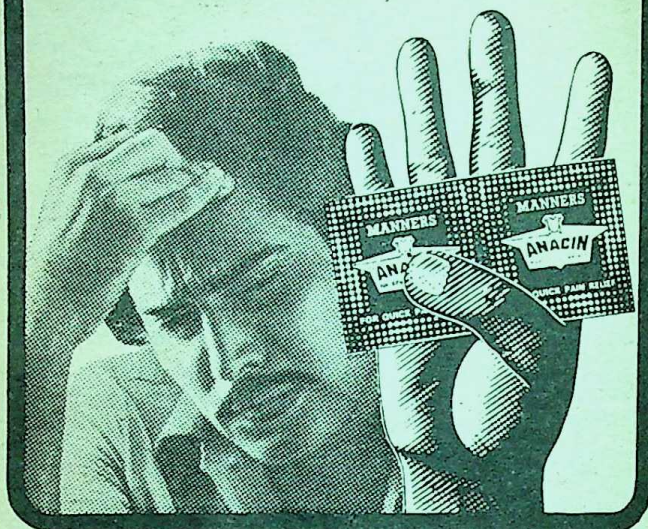
एक करोल्हा बाबा ने मेरे जीवन के प्रति अद्‌भुत भविष्यवाणियां की थीं, जिनमें एक मेरे ज्योतिषी बनने की भी थी। मैं ज्योतिष शास्त्र के अनुसार लोगों के जन्म-चक्र का अध्ययन कर भविष्य-वाणियां करता हूं, साथ ही संभावित अनिष्ट का निराकरण भी। 'जैमिनी सूत्रम्' के अनुसार प्रथम पाद से जातक की और द्वितीय पाद से उसके माता-पिता की मृत्यु की भविष्यवाणी की जा सकती है। पर इस तरह की भविष्यवाणी न करने का विधान है। जातक को केवल 'कठिन काल' कहकर ईश्वर की आराधना की सलाह दी जाती है।

कुछ नयी भविष्यवाणियां

० अमरीकी राष्ट्रपति रीगन के लिए सन १९८३ सर्वाधिक कठिन काल होगा। शत्रु-वृद्धि एवं रोग से विशेष भय होगा।

० पाकिस्तान में शीघ्र आम चुनाव होंगे। क्योंकि उसके पूर्व कन्या का शनि अवरोधक था।

० श्री हेमवती नंदन बहुगुणा को १९८३, में संगठनात्मक कार्यों के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

० श्री विद्याचरण शुक्ल एवं डॉ. शंकर दयाल शर्मा १९८३ में केंद्रीय मंत्रि परिषद के सदस्य होंगे अथवा उन्हें समकक्ष पद प्राप्त होगा।

० श्री राजीव गांधी १९८३ में मंत्रिमंडल में प्रवेश करेंगे। उनकी जन्म-पत्रिका में संगठन की अपेक्षा, प्रशासन एवं व्यवस्था में प्रमुख होने का योग है।

० दिसंबर १९८३ के पूर्व भारत के अल्पकालिक युद्ध के योग हैं, जिसमें भारतीय सेना की विजय होगी। मुसलिम राष्ट्रों के लिए ६ अक्तूबर १९८२ से १४ दिसंबर' ८४ तक का समय सर्वाधिक घातक होगा।

—शिवप्रसाद पाठक
१२/४, सुभाषनगर, गोविन्दपुरा भोपाल

भारत-पाक युद्ध की आशंका

ज्योतिष शास्त्र एक संपूर्ण विज्ञान है। उसमें शोध की आवश्यकता है। वह ज्योतिष पथ-प्रदर्शक के रूप में सहायक होता है। वह बुरे समय का संबल है। यों नियति को तो विधाता भी नहीं टाल सकता, हां, घटनाक्रम की स्थिति में परिवर्तन संभव है। यदि जन्म-पत्रिका पूर्णतः सही बनी हुई है, तो भविष्यवाणी करना कोई कठिन बात नहीं है।

नयी भविष्यवाणियां

० श्री राजीव गांधी महत्त्पूर्ण पद प्राप्त करने में सफल होंगे। उनके लिए ६ अक्तूबर' ८२ से उत्तम समय प्रारंभ हो गया है। १४ दिसंबर' ८४ के मध्य तक वे केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य होंगे। आगामी लोक-

सभा चुनाव के बाद वे प्रधान मंत्री होंगे।

० बिहार के मुख्यमंत्री डॉक्टर जगन्नाथ मिश्र अभी बिहार में ही रहेंगे। बाद में वे केंद्रीय मंत्रिमंडल में ले लिए जाएंगे।

० चौधरी चरण सिंह के लिए १९८३ का वर्ष घातक वर्ष होगा। उन्हें पद, प्रतिष्ठा, एवं स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

० १९८३ में भारत-पाक युद्ध की संभावना है।

—पं. विनोद मिश्र

११९/४४४, श्याम भवन, दर्शनपुरवा, कानपुर-२२

अनिष्ट टाला जा सकता है

ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञान मुझे अपने दादाजी श्री कलीरामजी से विरासत में मिला है। वे रतलाम राज्य के महामंत्री और प्रख्यात ज्योतिषी थे। अध्ययन के उपरांत पंद्रह-सोलह वर्ष पूर्व मुझमें भविष्य-कथन का आत्म-विश्वास जागा और मैंने लोगों को परामर्श देना शुरू किया।

ज्योतिष-शास्त्र निःसंदेह एक प्रामाणिक विषय है, लेकिन उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत तपस्या करने की आवश्यकता होती है। कुछ सत्य कड़वे होते हैं और ज्योतिषी को उनकी भविष्यवाणी मनन एवं धैर्यपूर्वक करनी चाहिए। कुछ घटनाएं टाली नहीं जा सकतीं—जैसे मृत्यु, उसे कोई टाल नहीं सकता। शिक्षा, पदोन्नति, विवाह संबंधित भविष्यवाणियों में यदि अनिष्ट की आशंका अनुभव होती है, तब ज्योतिषी कुछ उपाय सुझा सकता है—जैसे यदि जन्म-चक्र से ज्ञात हो कि बालक बुद्धिमान नहीं है, तो, उसकी उचित शिक्षा के लिए उपाय खोजे जा सकते हैं।

मैंने पैतृक संपत्ति, विवाह, भारी दुर्घटनाओं के बारे में जो भविष्यवाणियां की थीं, वे सत्य सिद्ध हुईं।

(अपनी भविष्यवाणियों के बारे में श्री गुप्ता ने कोई प्रमाण नहीं भेजा है।)

—आचार्य कृष्णकुमार गुप्ता

१९/२०, शक्तिनगर, दिल्ली

अगले वर्ष आश्चर्यजनक परिवर्तन

अपने हस्तरेखा ज्ञान को मैं श्रीमती इंदिरा गांधी की देन कह सकती हूं। पति १९४२ से राजनीति में सक्रिय हैं। कई बार जेल जा चुके हैं। आपातकाल लगते ही वे पुनः बंदी बना लिये गये थे। जमानत पर रिहा हुए तो मीसा ने आ दबाया। अब वे फरार और हम बे-आधार।

मेरे पति को हाथ दिखाने का भी

हिमालय के प्रख्यात योगी श्री १०८ स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती महाराज ने योग द्वारा अपने ग्रन्थों में आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के साक्षात्कार के अनेक साधन बतलाये हैं।

१. बहिरंग योग :
यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार का संपूर्ण, सचित्र विवरण जिस में ३०० आसन, ७० प्रकार के प्राणायाम हैं।

२. आत्म विज्ञान :
पंचकोशों द्वारा आत्मसाक्षात्कार के अनेक सुगम साधनों का वर्णन।

३. ब्रह्म विज्ञान :
परमात्मा और प्रकृति के विषय में नवीनतम खोज। प्रकृति की ३२ अवस्थाओं का वर्णन—आर्ट पेपर पर रंगीन चित्रों सहित।

४. निर्गुण ब्रह्म :
आत्मा और परमात्मा के विषय में सगुण और निर्गुणता का सरल विवेचन।

५. प्राण विज्ञान :
७० प्रकार के प्राणों द्वारा आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार।

६. दिव्य ज्योति विज्ञान :
१५४ प्रकार की ज्योतियों द्वारा आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार।

७. हिमालय का योगी :
प्रथम खंड :
स्वामीजी के जीवन की अलौकिक घटनायें और अनुभूतियाँ।

८. हिमालय का योगी :
द्वितीय खंड :
स्वामीजी महाराज की योग प्रचारार्थ विदेश की तीन यात्राओं का विशद वर्णन और अनुभूतियाँ।

९. व्याख्यान माला :
खंड १-२-३ : पूज्य श्री महाराजजी द्वारा समय समय पर दिये गये विद्वत्तापूर्ण आध्यात्मिक प्रवचन।

१०. दिव्य शब्द-विज्ञान
इस ग्रन्थ में शब्दों के द्वारा आत्मा-परमात्मा की अनूभूति का विज्ञान बताया गया है।

सभी पुस्तकें अंग्रजी एवं हिन्दी में उपलब्ध हैं।

प्राप्ति स्थान :

१) योग निकेतन
३०A/७८ पंजाबी बाग
नई दिल्ली-११००२६

२) योग निकेतन ट्रस्ट
मुनी की रेती
डा० शिवानन्द नगर
(ऋषिकेश)-२४९१९२
जि० टिहरी गढ़वाल (उ०प्र०)

ट्रेडिंग इंजीनियर्स, (इन्टरनैशनल) प्रा० लिमिटेड, नई दिल्ली के सौजन्य से

शौक है। एक बार फरार हुए तो एक पामिस्ट को हाथ दिखाने पहुंच गये। उन्होंने हाथ देखकर कहा, "कभी भी पुनः पकड़े जा सकते हो। बरबादी और बढ़ जाएगी। तुम्हारी धर्मपत्नी को मैं हस्त-रेखा की विद्या सिखा सकता हूं। चाहें तो वह इसको जीविका का साधन बना लें, बहुत धन उपार्जित करेंगी"। बस, हमने उनकी शिष्यता ग्रहण कर ली।

यदि हम कहें कि हमारे द्वारा बतायी गयी कठिनतम राजनीतिक भविष्य-वाणियां भी ९० प्रतिशत ठीक निकली हैं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। जन-साधारण के बारे में बतायी गयी भविष्य-वाणियां तो पांच-सात प्रतिशत ही गलत होती हैं।

(श्रीमती रवि मोहन का कहना है कि उन्होंने श्री मोरारजी देसाई, श्री विद्याचरण शुक्ल, पं. कमलापति त्रिपाठी, श्री चंद्रशेखर को कई बात बतायीं थी, जो सच निकलीं, लेकिन उन्होंने कोई प्रमाण नहीं भेजा।)

कुछ भविष्यवाणियां :

० श्री चंद्रशेखर १९८२ की चतुर्थ तिमाही से १९८३ की प्रथम तिमाही तक पुनः देश की राजनीति के सिरमौर बन जाएंगे।

० इसी अवधि में श्रीमती मेनका गांधी भी लोकसभा की सदस्य बन जाएंगी, किंतु सितंबर १९८२ के आसपास उनको अपने किसी निकट, महत्त्वपूर्ण संबंधी का शोक वहन करना पड़ेगा।

० श्रीमती राजमाता विजय राजे सिंधिया भी अपने राजनीतिक जीवन का उत्कर्ष इसी काल में देखेंगी।

० देश में संसद-प्रणाली को कोई खतरा नहीं है। देश १९८२ की चतुर्थ तिमाही से लेकर १९८३ की प्रथम तिमाही तक आश्चर्यजनक राजनीतिक परिवर्तन देखेगा।

—श्रीमती रवि मोहन
२५५, थापर नगर, मेरठ

श्रीमती भंडारनायके पुनः सत्ता में आएंगी

ज्योतिष - शास्त्र, एक पूर्णतः प्रामाणिक शास्त्र है। ज्योतिषी असंभव कार्य और मृत्यु के बारे में सत्य भविष्यवाणी कर सकता है। जहां तक मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है, मेरा भविष्य-दर्शन का माध्यम ज्योतिष की अपेक्षा पराशक्ति —पूर्वाभास आदेश और विचित्र अनुभूति-प्रमुख है। अतएव मेरे लिए निश्चित रूप से यह कहना संभव नहीं है कि गत दस वर्षों में अनेक व्यक्तियों के जो असंभव कार्य हुए हैं और संकट टले हैं, उन सबका कारण ज्योतिष है अथवा गुरु और इष्ट देव की असीम कृपा।

कुछ भविष्यवाणियां

० विश्वयुद्ध की संभावना प्रबल होगी।

मृत्यु के संबंध में बहुत सी ... बताया जा सकता है। इस संदर्भ में यह है कि कुछ कुंडलियां ऐसी अवश्य होती हैं जिनमें हम ज्योतिष के द्वारा मृत्यु के खतरे की बात अवश्य बता सकते हैं, किंतु उपचार प्राप्त होने पर वह खतरा टल भी सकता है। हां, यदि अरिष्ट योग प्रबल हों तो उपचार से भी कुछ नहीं हो सकता। वह बात जिस पर प्रयोग किया जा सके और उनसे कोई निष्कर्ष निकाला जा सके तथा भौतिक शास्त्र की तरह कारण और प्रभाव जोड़ा जा सके तो वह वैज्ञानिक है। अगर वैज्ञानिक आधार का तात्पर्य यही है तो ज्योतिष-शास्त्र एक विज्ञान है।

प्रयोग के अस्तित्व के विषय में मुझे यही कहना है कि इसमें कुछ प्राचीन सिद्धांतों को परिवर्तित कर वर्तमान के साथ उन्हें जोड़ना होगा। युगानुकूल देश-काल वातावरण के अनुसार। तभी भविष्य-वाणियां गणित की भांति यथार्थ सिद्ध होंगी।

जरमनी के वाल्टर काच ने ३,००० संगीतकारों और उनकी कुंडली का एक ग्राफ बनाया। इस ग्राफ से यह निष्कर्ष निकलता है कि—वृष राशि में लग्न। चंद्र। सूर्य में संगीत की सलाहियत सबसे ज्यादा होती है। ज्योतिष में इस प्रकार के अनुसंधान की बड़ी आवश्यकता है।

—डॉ. आचार्य कुसुम
३१४३, सेक्टर ३७-डी, चंडीगढ़

अपने सरदर्द के लिए मैंने क्या-क्या नहीं किया, पर बात बनी सिर्फ़ इस एक से !

शक्तिशाली. सुरक्षित.
सिर्फ़ एक काफ़ी है.

HTB-RPL-7798

बिजली का इस्तेमाल करने वालों हेतु

कुछ करने योग्य बातें

(१) वायरिंग, परिवर्धन या परिवर्तन सहित विद्युतीय कार्य केवल लाइसेंसशुदा वायरिंग काण्ट्रेक्टर्स को ही सौंपें।

(२) सर्वोत्तम किस्म की सामग्रियों व स्टैण्डर्ड गृहोपयोगी विद्युत उपस्करों को ही इस्तेमाल करें।

(३) बिजली का प्रयोग सदैव अपने मंजूरशुदा लोड के अंदर ही सीमित रखें। आपकी सर्विस लाइनें केवल इतने ही लोड के लिए डिजाइण्ड हैं।

(४) अधिक लोड लाइनों को स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त कर सकता है तथा वायरिंग आदि को असुरक्षित बना सकता है। एक्सीडेण्टल बिजली के झटकों से बचने के लिए प्लग्स, प्वाइंट्स व उपस्करों की समुचित आर्थिंग सुनिश्चितता कर लें।

(५) जब जरूरत न हो अपने मकान, फैक्ट्री या कार्यालय में बत्तियों, पंखों, कूलरों व हीटरों आदि को बंद कर दें।

(६) बिजली के झटके के शिकार व्यक्तियों के लिए तत्काल मेडिकल सहायता प्राप्त करें।

कृपया

न करने योग्य

(१) किसी नंगे बिजली के तार को स्पर्श न करें।

(२) ओवर हेड सप्लाई मेन्स के दायरे में बच्चों को पतंग उड़ाने की अनुमति न दें।

(३) गीले-कपड़ों को सुखाने के लिए बिजली के खम्भों व तार का इस्तेमाल न करें।

(४) मवेशियों तथा पालतू जानवरों को बांधने के लिए सप्लाई मेन्स के स्टे वायर व सपोर्ट का इस्तेमाल न करें।

(५) बिजली के तारों व उपस्करों के निकट ज्वलनशील सामग्रियां न रखें।

(६) घर के आर्थिंग वायर को काटिए नहीं क्योंकि यह एक अनिवार्य सुरक्षा साधन है।

(७) किसी भी वजह से सप्लाई खम्भों पर न चढ़ें।

बिजली सर्वाधिक आज्ञाकारी सेवक है किन्तु खतरनाक स्वामी भी हो सकती है : इसे समुचित नियंत्रण में रखें।

दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान

दिनांक : १४-१०-८२ सं. ३ (२)/८२/पीआर(३३७४)

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से श्री गौरीशंकर राजहंस द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित।
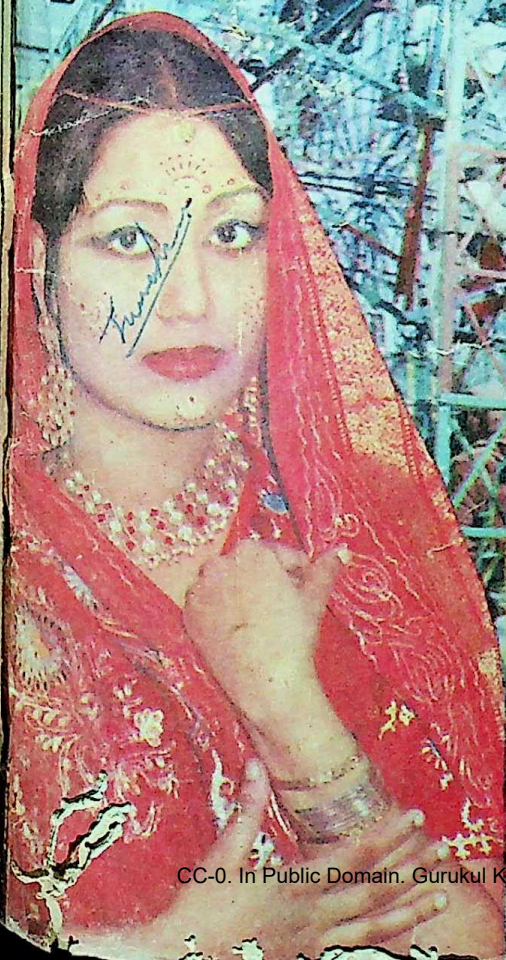
भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
अक्तूबर १९८२
३ रुपये
हिन्दुस्तान टाइम्स
प्रकाशन

रसोईघर में बिजली की बचत के
कमखर्चीले उपाय
बजाज सुझाए
आज ही खरीदें
बजाज ही खरीद
bajaj
जहां बिजली की बरबादी की सबसे ज्यादा संभावना है, वहीं बजाज बिजली की बचत के साधन आप को देता है जी हाँ, आपके रसोईघर में। बजाज के स्टोव, टोस्टर, मिक्सर, कुकर आदि, आपकी मेहनत भी बचाते हैं। सबके सब आई.एस.आई. के मानदंडों के अनुसार बने यानी क्वालिटी की गारंटी। और फिर देशभर में फैले ३५०० विक्रेताओं के जरिए तत्पर सेवा भी आपको मिलती है; ये बात अलग है कि आपको उसकी जरूरत ही न पड़े।
प्रेशर कुकर, मिक्सर, ओवन, इस्त्री, पंखे, वाटर-फिल्टर, गैस स्टोव, टोस्टर, वाटर हीटर

अगला नवम्बर अंक

तंत्र विशेषांक

पृष्ठ २३२ : मूल्य मात्र ३ रु.

हर उम्र

आपका सहारा.

माता-पिता के लिए...बच्चों के लिए...दादी और नानी के लिए...
हॉर्लिक्स सभी के लिए लाभकारी है। क्योंकि हॉर्लिक्स लेने का मतलब है हर रोज़ अच्छा स्वास्थ्य।

तभी तो सौ से भी अधिक वर्षों से लाखों लोग हॉर्लिक्स पर भरोसा करते आ रहे हैं।

दुनिया-भर में डाक्टर हॉर्लिक्स को अच्छे स्वास्थ्य का साधन मानते हैं, इसे हर रोज़ लेने की सलाह देते हैं।

और क्यों नहीं।

हॉर्लिक्स में भरपूर गुणों वाले शुद्ध तत्व हैं जिन्हें ऐसी प्रक्रिया से तैयार किया जाता है कि उनके गुण बने रहें और यह आसानी से पच सके।

अपने सारे परिवार के लिए हॉर्लिक्स अपनाइए।

आप इसके स्वास्थ्यदायक गुणों पर पूरा भरोसा कर सकते हैं।

महान शक्तिदाता

HTD-HMM-7535
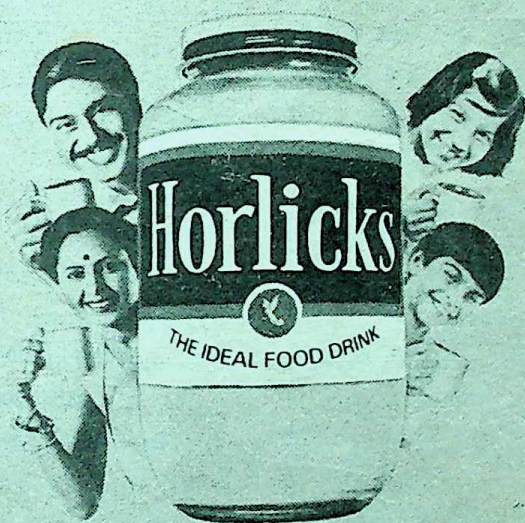
● ज्ञानेंदु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।
—संपादक

१. **मनोयोग**—क, कुशलता, ख. तरकीब, ग. सिद्धि, घ. मन को एकाग्र कर किसी कार्य में लगाना।

२. **परितृप्ति**—क. भारी प्यास, ख. पूर्ण संतुष्टि, ग. खूब तपा हुआ, घ. अरुचि।

३. **पाशव**—क. पिछड़ा हुआ, ख. पशु संबंधी, ग. बासी, घ. मांस।

४. **सहचर**—क. यात्री, ख. साथी, ग. विश्वासी, घ. प्रयास करनेवाला।

५. **नवोत्कर्ष**—क. प्रसिद्धि, ख. नया उत्थान, ग. चहल-पहल, घ. समारोह।

६. **प्रहर**—क. चोट, ख. पहरेदार, ग. दिन का आठवां भाग, घ. हारना।

७. **वक्र**—क. ऐंठू, ख. टेढ़ा, ग. खट्टा, घ. झूठा।

८. **रंगभूमि**—क. लड़ाई का मैदान, ख. महल का भीतरी भाग, ग. वह स्थान जहां नाटक, मनोरंजन आदि होता है, घ. सभा-स्थल।

९. **अधुनातन**—क. नया, ख. आधुनिक, ग. प्रचलित, घ. घिसापिटा।

१०. **अंतस**—क. अंतिम, ख. हृदय, ग. अंदरूनी, घ. घनिष्ठ।

११. **इतर**—क. अन्य, ख. हीन, ग. इधर, घ. इत्र।

उत्तर

१. घ. मन को एकाग्र कर किसी कार्य में लगाना। उसने बड़े **मनोयोग** से साहित्य-सेवा की है।

२. ख. पूर्ण संतुष्टि। सुस्वाद भोजन से सभी की **परितृप्ति** हुई।

३. ख. पशु-संबंधी, पाशविक, जानवरों-जैसा। मानव को **पाशव** वृत्तियां ग्रहण नहीं करना चाहिए।

४. ख. साथी, साथ चलनेवाला (मित्र, पति, सेवक आदि)। योग्य जीवन-**सहचर** पाकर वह धन्य हुई। (स्त्री-सहचरी)

५. ख. नया उत्थान, नवोन्नति। संयम एवं कठोर प्रयास से ही समाज का **नवोत्कर्ष** होता है।

६. ग. दिन का आठवां भाग, याम, पहर। यह रात्रि का अंतिम **प्रहर** है।

७. ख. टेढ़ा, तिरछा। **वक्र** गति सदैव हानिकारक होती है।

८. ग. वह स्थान जहां नाटक, मनोरंजन आदि होता है। यह पाठशाला है, रंगभूमि नहीं। (**रंगशाला**—नाटकघर)

९. ख. आधुनिक, आजकल का। कृषि एवं उद्योगों में **अधुनातन** उपायों का अवलंब लेना हितकर है।

१०. ख. हृदय, अंतरतम। उसकी व्यथा **अंतस** को झकझोरनेवाली है।

११. क. अन्य, भिन्न, ख. हीन। **इतर** जाति मानकर किसी की उपेक्षा करना अनुचित है।

पारिभाषिक शब्द

सबमिटेड—प्रस्तुत।
शो काज़ नोटिस—कारण बताओ नोटिस।
विध रिट्रास्पेक्टिव इफेक्ट—पूर्वव्याप्ति सहित।
रिमेन इन फोर्स—लागू रहना।
क्वोटेड बिलो—नीचे उद्धृत।
रेफर्ड टु अबव—उपरिनिर्दिष्ट।
प्रोस ऐंड कांस—पक्ष-विपक्ष।
पोस्ट स्क्रिप्ट (पी. एस.)—पुनश्च। पश्चलेख।
रिसोर्सेज—संसाधन।

समस्या पूर्ति—४०

इंतजार

प्रथम पुरस्कार

जीवन की ठहरी नैया को
एक नाविक का है इंतजार,
जो कहे थामकर बांह प्रिये
है जाना दूर क्षितिज के पार

—मीना वर्मा 'शील'
द्वारा डॉ. टी. एन. वर्मा
बी. वी. कॉलेज पटना-८०००१४

द्वितीय पुरस्कार

नीलांबर के नीचे प्रकृति का अनुपम यह शृंगार है
पर्वत-टीलों की बाहों में जल का एक विस्तार है
जलपांखी से नील झील में निकल पड़ीं कुछ नाव मगर
कुछ को अब भी जाने किनका तट पर ही इंतजार है

—विनोद कुमार उइके 'दीप'
ए. ए. आई. डब्ल्यू. आयुध निर्माणी
अंबाझरी नागपुर—२१

कुछ कर दिखाने की चाह

बचपन में वे हमेशा बीमार रहा करते, फिर भी सदैव सोचा करते थे—'मुझे जीवित रहना है। दुनिया में कुछ कर दिखाना है।' और सचमुच, गरीब परिवार में जन्मे वे जब इस संसार से विदा हुए, तब अपने पीछे करोड़ों की संपत्ति सार्वजनिक कल्याण के लिए छोड़ गये। उनका नाम था—फ्रैंक ब्युरे पेयर।

आस्ट्रेलिया के एक साधारण से कस्बे में एक गरीब परिवार में जन्मे फ्रेंक हमेशा बीमार रहा करते थे, पर इस बीमारी के बावजूद वे सदा आगे बढ़ने का संकल्प दोहराया करते। एक दिन फ्रैंक कस्बे के किशोरों के लिए आयोजित तैराकी प्रतियोगिता देखने गये। प्रतियोगिता में विजयी लोगों का जब खूब सम्मान किया गया, तब फ्रैंक के मन में भी सम्मान अर्जित करने की आकांक्षा जागी और उन्होंने तैराकी का अभ्यास शुरू कर दिया। एक दिन वे अपने देश के प्रतिनिधि के रूप में ओलंपिक प्रतियोगिता में शामिल भी हुए। लेकिन दुर्योग! फ्रैंक फिर बीमार पड़ गये। तैराकी का अभ्यास छूटता गया। पर एक दिन फ्रैंक को एक डूबते व्यक्ति के प्राण बचाने के लिए फिर जल में छलांग लगानी पड़ी। फ्रैंक ने स्वयं रोगी होते हुए किसी की जान बचायी थी, इसलिए उन्हें पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कार की राशि से फ्रैंक ने टायरों की मरम्मत की एक दूकान खोली और कुछ वर्षों बाद टायर बनाने का एक छोटा-सा कारखाना खोल लिया। धीरे-धीरे वे एक प्रमुख उद्योगपति बन गये। अब उनकी उदारता और बढ़ गयी। एक बार वे पुनः बीमार पड़े। जब उनके उपचार की व्यवस्था की जाने लगी, तब उन्होंने कहा, 'मेरे उपचार में लगनेवाला पैसा उन लोगों को दे दिया जाए, जिन्हें उपचार की आवश्यकता है।'

त्याग की पराकाष्ठा

कृष्णन केरल के प्रसिद्ध कलाकार थे, सहृदय और परोपकारी। यहां तक कि आग में घिरे दो मुसलिम बालकों को बचाने के प्रयत्न में उनके प्राण तक चले गये।

कृष्णन के पड़ोस में एक मुसलिम परिवार रहता था। एक दिन अचानक उनके घर में आग लग गयी और परिवार

के दो बच्चे उसमें फंस गये। उनकी चीख सुनकर कृष्णन स्वयं को न रोक सके। वे आग में कूद पड़े। कृष्णन बच्चों को तो सुरक्षित निकाल लाये, पर वे स्वयं इतना जल गये कि डॉक्टरों के सारे प्रयत्न भी, उन्हें बचा न सके।

कृष्णन के परिवार की सहायता के लिए कालीकट के एक समाचार-पत्र ने अपील प्रकाशित की। सहायतार्थ प्राप्त धनराशि लेकर समाचार-पत्र संचालक जब कृष्णन की पत्नी के पास पहुंचे, तब उन्होंने स्वयं उस धनराशि को लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि इस धनराशि से उनके पड़ोसी का अग्नि में ध्वस्त घर पुनः बनवा दिया जाए। वे परिश्रम कर आजीविका चला लेंगी।

'आज' का महत्त्व

जॉन रस्किन की मेज पर पत्थर का एक टुकड़ा सदैव रखा रहता था। उस पर अंकित था एक शब्द—'आज'।

एक दिन एक मित्र ने जॉन रस्किन से पूछा कि इसका अर्थ क्या है?

जॉन रस्किन ने उत्तर दिया—'मेरे हाथ से कहीं वर्तमान यों ही न निकल जाए, इसीलिए मैं यह पत्थर, जिस पर 'आज' शब्द अंकित है, अपने पास रखता हूं। इस शब्द को देखकर मुझे सदा यह याद रहता है कि क्षण-क्षण कीमती है। मेरा एक क्षण भी बेकार न जाए, इसलिए मैं यह पत्थर सदा अपने सामने रखता हूं।'

वचनवीथी

अच्छा सम्मान पाने की राह यह है कि तुम जो प्रतीत होने की कामना करते हो, वैसा बनने का प्रयत्न करो।

—सुकरात

ज्ञान का स्थान मस्तिष्क में है, सम्यक ज्ञान का हृदय में। यदि हमारी भावना सही नहीं है, तो हमारे निर्णय अवश्य गलत होंगे।

—हैजलिट

सहानुभूति वह सार्वभौमिक भाषा है, जिसे पशु भी समझ लेते हैं और उसका सम्मान करते हैं।

—जेम्स एलन

जब तुम्हें अवसर मिले, तब अपने से अधिक अच्छों का साथ करो; यही ठीक और वास्तविक गर्व है।

—चेस्टरफील्ड

सच्चा साहस और शराफत सदा साथ रहते हैं। सबसे वीर लोग सबसे अधिक क्षमाशील व झगड़ों से बचने के लिए प्रयासशील होते हैं।

—थैकरे

संकट में साहसी होना, आधी सफलता प्राप्त कर लेना है।

—प्लाउटस

नये धार्मिक केंद्र

'कादम्बिनी' के सितंबर अंक में श्री सजेन्द्र अवस्थी का लेख, 'नये धार्मिक केंद्र मानसिक रोग फैला रहे हैं', नयी जानकारी से पूर्ण था। सचमुच, यदि नये धार्मिक केंद्रों की गतिविधियों की जांच की जाए तो जो तथ्य हाथ आएंगे, वे न केवल चौंकानेवाले, वरन उपयोगी भी होंगे। उपयोगी इस अर्थ में कि इन तथ्यों से लोगों की आंखें खुल जाएंगी और वे स्वयं को उनके जाल से बचा सकेंगे।

—सुरेशकुमार सिंह, पटना

'नये धार्मिक केंद्र मानसिक रोग फैला रहे हैं' लेख पढ़ने से पाठकों के मन में अवश्य जागृति आयी होगी। इसका अनुभव तो मैं भी कर रहा हूं। यदि शोध किया जाए तो ऐसे और अनेक धार्मिक केंद्र मिलेंगे। मैं लेखक से अनुरोध करूंगा कि वे अन्य केंद्रों के संबंध में भी 'कादम्बिनी' में विस्तृत जानकारी प्रकाशित करें।

—राजकिशोर गोस्वामी, दतिया

सितंबर अंक में 'प्रेम के पंचामृत' शीर्षक लेख अच्छा लगा। इस लेख में वर्णित प्रेम के पांच प्रमाण, प्रेम की परिभाषा भी कहे जा सकते हैं।

—मंजु भाटिया, वृंदावन

उपन्यास विशेषांक

जब से अगस्त अंक का विज्ञापन पढ़ा, बड़ी बेकली हो रही थी। पांच उपन्यास हैं, इसलिए सोचा, इस बार कम से कम पांच सौ पृष्ठों की 'कादम्बिनी' मिलेगी। बुक स्टॉल पर अंक को हमेशा-जैसा पाया तो बड़ी निराशा हुई। किंतु जब पढ़ना शुरू किया, तब पढ़ता ही चला गया। बेहतर लेखकों के बेहतर उपन्यासों की बेहतर प्रस्तुति के लिए हार्दिक बधाई।

वनटांगिया मजदूरों की स्थिति प्रजातंत्र के माथे पर कलंक है। न जाने दीपक-तले का यह अंधेरा कब मिटेगा?

—रामेश्वर सिंह सोलंकी, इंदौर

उपन्यास विशेषांक में 'हरा तोता' का अंत—'और जब आप लोगों के लिए मेरी इच्छा बहुत ज्यादा असहनीय हो जाएगी, तब वीणा बजा लिया करूंगी'—मर्मस्पर्शी था।

'एक मंत्री की मौत' में अंत में जब सिगनको तान्या से कहता है—'तुम देवी हो। शुद्ध आत्मा हो। अकेली फांसी पर चढ़ सकती हो। मैं खूनी, डाकू, पर इस लड़की के साथ मरूंगा तो मुझे लगेगा कि जैसे मैं एक अबोध बच्चा हूं—'तो शहीदों के प्रति आम आदमी की श्रद्धा शत-शत-मुखों से ध्वनित होती लगती है, और मानस पटल पर फिल्म 'शहीद' का वह दृश्य उभरने लगता है, जब डाकू नाहर

सिंह बना प्राणदंड प्राप्त पात्र अंतिम समय में 'शहीद भगतसिंह' से मिलने की इच्छा व्यक्त करता है और कहता है, 'यार भगतसिंह, आज तक किसी भले आदमी से हाथ नहीं मिलाया' और भगतसिंह द्वारा उसके बंधे हाथों को छूते ही वह जल्लाद की ओर मुखातिब होकर कहता है, 'चल, अब ले चल।'

—मनोरंजन सहाय, जयपुर

'कादम्बिनी' के उपन्यास-विशेषांक की प्रशंसा में हमें इन पाठकों के पत्र भी प्राप्त हुए हैं—

जगदीश शारंगपुरे, जुझारदेव; सुभाषचंद्र गुप्त मेरठ; रामप्यारे, शाहजहांपुर, रवीन्द्रकुमार रंजन, दरभंगा; लक्ष्मीप्रसाद भट्ट, गौचर (चमोली); सुनीलकुमार पुण्डारे, अलीगढ़; त्रिभुवन नारायणसिंह; बरेली; अनिल अग्रवाल, गोरखपुर; इश्तियाक अहमद खान, शाजापुर; जयपाल सिंह खूड़ी बड़ी, (सीकर); रंजनकुमार शर्मा, नालंदा; बनवारीसिंह, जौनपुर; पवनकुमार पारीक दरीबा; विनोदकुमार तिवारी, फैजाबाद; राजकुमार थराईत, चांपा; सतीश उपाध्याय, मनेन्द्रगढ़ (सरगुजा); गोपाल अधिकारी विराटनगर (नेपाल); कंचनकुमार माथुर, जोधपुर; रमेशकुमार गुप्ता, परसुडिह (जमशेदपुर); राजेश भारती, मेरठ; अनिलकुमार राय, समस्तीपुर।

खलनायक बुरा आदमी नहीं

उपन्यास विशेषांक की सभी रचनाएं अच्छी थीं। 'खलनायक बुरा आदमी नहीं होता' लेख प्रभावशाली रहा। यह बात बिल्कुल सही है कि खलनायक अकसर अपने पात्र से भटके हुए ही पाये जाते हैं। हिंदी फिल्मों में उन स्थितियों का चित्रण ही नहीं होता, जो व्यक्ति को खलनायक बना देती हैं। यही हिंदी फिल्मों की सबसे बड़ी कमजोरी है। हिंदी फिल्मों में नायक को अत्यधिक अच्छा व खलनायक को अत्यधिक बुरा दिखाया जाता है। वैसे भी वर्तमान की फिल्में अस्वाभाविकता, असंगतियों और तर्कहीन फार्मूलों से पूर्ण होती हैं। फिल्म का नायक बेरोजगार है, परंतु वह रोजगार खोजने की जगह नायिका के साथ क्लब में डिस्को डांस कर रहा है? आज की फिल्मों का यथार्थ से दूर तक का नाता नहीं है। यह अत्यावश्यक हो जाता है कि फिल्में यथार्थ से जुड़ी हुई हों।

—गुरबीरसिंह चावला, रायपुर

व्यस्तता के इस युग में पाठक, लेखक से संक्षिप्तता चाहता है। उसकी इसी आवश्यकता ने हिंदी गद्य की एक नयी विधा—'लघुकथा' को जन्म दिया है। ब्लेड की धार-सा पैनापन और गागर में सागर सी गहराई—लघुकथा की कुछ ऐसी विशेषताएं, जिनके कारण इसकी सार्थकता को नकारा नहीं जा सकता। लघुकथा को उसका अपेक्षित स्थान मिल सकता है, इसके लिए आवश्यकता है 'कादम्बिनी'-जैसी शीर्षस्थ साहित्यिक पत्रिका बड़ी संख्या में लघु-कथाएं प्रकाशित करे।

—योगेन्द्र शर्मा, अलीगढ़

भैया ओखाड़ू जी, अगस्त अंक में, संपादकजी, और प्रधानमंत्रीजी के नाम आप के पत्रों को पढ़कर, सच में हृदय भर आया। आप ने इस देश के कुछ निहित स्वार्थवाले, संतुष्टों को छोड़कर एक-एक सामान्य जन की भावना को शब्द दिये हैं। यह मेरे, हर एक भारतीय के हृदय की बातें हैं।

नयी पीढ़ीवालों ने भी, अपने जीवन में इन दिनों सर्वाधिक दूषित वातावरण का अनुभव किया है, जिसका मूल कारण सड़ी हुई राजनीति है। अतः यथा राजा, तथा प्रजा!

नक्कार खाने में आप तूती—बुला रहे हैं! चुपचाप बैठाकर देखिए, यह किसी भावी भयंकर तूफान की भूमिका प्रतीत हो रही है, जिसकी बाढ़ में यह सारी सड़ांध घुलकर गंदे कीटाणुओं को बहा ले जाएगी। अभी तो, लोग भीतर ही भीतर सुलग रहे हैं।

'तमाशा है, तहे आतिश धुंआ है . . . !'

—चन्द्रमोहन प्रधान, मुजफ्फरपुर-२

'उपन्यास विशेषांक': एक अमूल्य निधि रहा यह अंक। इस अंक में मैं सेवकराम ओखाड़ू की रचना से सर्वाधिक प्रभावित हुआ। सही में, आजादी को आज पैंतीस वर्ष हो गये, लेकिन फिर भी व्यवस्था दयनीय है। सर्वत्र अराजकता और जातिवाद का बोलबाला है, इसे मिटाना चाहिए।

—देवनारायणसिंह, मुजफ्फरपुर

सेवकराम ओखाड़ू की 'पैंतीस वर्षों की भटकती हुई जिंदगी' सर्वाधिक प्रशंसनीय और प्रासंगिक रचना लगी। इसमें जिन समस्याओं को चित्रांकित किया गया है, यह न तो हमें खुलकर रोने देती और न ही हंसने। मात्र आंखों में अनंत आकाश को समाये रखने और असीम चिंतन के लिए विवश करती हैं। कितना दर्द है इन वाक्यांशों में—'हमें दर्द तो तब होता है, जब खूबसूरत लड़कियां सजायी जाती हैं, दूल्हा राजा घोड़े पर आते हैं, फिर सुहाग-के सुख के दिन बिताते हैं, और उसके बाद दहेज के लालच में उसी लड़की को जला दिया जाता है।' राह चलते आज जो दृश्य देखने को मिलता है अथवा दैनिक पत्रों में पढ़ने को मिलता है, वह आज की भ्रष्ट युवा-पीढ़ी की मानसिकता एवं नपुंसकी नैतिकता से परिचित कराता है।

ओखाड़ू जी से हम पाठकों का अभिवादन निवेदन करें और उनसे ऐसी-ऐसी ही ज्वलंत समस्याओं पर रचनाएं लेकर हम पाठकों को उपकृत और रचनाकार को समादृत करें।

—उमेशप्रसाद चौरसिया, खगड़िया

जो कुछ तुम दूसरों में नापसंद करते हो, उसे अपने में न रहने दो।

—स्पेंट

परिस्थितियों को यूं ही छोड़ दिया जाए तो वे ठीक नहीं होतीं।

—हक्सले

प्रभु, यही त्रिया चरित्र है!

किसी गांव में एक महात्माजी रहते थे। सांसारिक बातों से उन्हें किसी तरह का कोई मतलब था नहीं। जंगली फल ही उनके निर्वाह के साधन थे। पास के गांव से आकर यदि कोई कुछ भोजन आदि दे जाता, तो प्राप्त कर लेते। उनकी कुटिया के पास ही गांव के किसानों के कुछ खेत थे। उन्हीं खेतों पर एक युवती अपने भाइयों को कलेवा देने आती। फिर थोड़ा भोजन महात्माजी को भी देती और उन्हें गांव के हाल-चाल बताती। यों ही बातों-बातों में एक दिन महात्माजी पूछ बैठे कि बेटी ये 'त्रिया-चरित्र' क्या होता है? इसका जवाब दूसरे दिन देने को कहकर, वह घर चली आयी।

रोज की तरह दूसरे दिन भी वह भिक्षा लेकर महात्माजी के पास पहुंची। भिक्षा कुटिया के दरवाजे पर रखकर वह जोर-जोर से रोने लगी। आसपास के खेतों पर काम कर रहे लोग इकट्ठे हो गये, पर उसका रोना बंद नहीं हुआ। बहुत पूछने पर गरदन हिलाकर कुटिया की ओर इशारा भर कर दिया, जिसके अंदर महात्माजी पूजन कर रहे थे। लोगों ने तुरंत अनुमान लगा लिया कि महात्माजी ने अवश्य ही लड़की के साथ छेड़खानी की है। बस, फिर क्या था, लोगों ने उन्हें पीटना शुरू कर दिया। जब थोड़ी बहुत मार उन पर पड़ चुकी, तब अचानक वह गंभीर होकर बोल पड़ी, "आप सबने यह क्या कर डाला?" लोग चिल्लाये, "तूने ही तो रोते-रोते इनकी ओर इशारा किया था।" वह बोली, "तो मैंने इन्हें पीटने को कहां कहा? बात यह थी भोजन लेकर मैं जैसे ही कुटिया के दरवाजे पर खड़ी हुई, तो देखा कि महात्माजी के पैर, हाथ तथा सर उनके शरीर से अलग होकर दूर-दूर पड़े थे। यही सब देखकर मैं डर गयी थी।"

लोगों को तो महात्माजी बिलकुल ही ठीकठाक नजर आ रहे थे। लोगों ने एक दूसरे को देखा। सब चिल्लाते हुए पैरों पर गिर पड़े, "क्षमा करें महाराज, हम सबसे भारी भूल हो गयी है।" फिर क्या था, लोगों ने उनका गुणगान करना शुरू कर दिया। उनके चमत्कारों की चर्चा करने गांव की ओर दौड़ पड़े। लोगों के जाते ही वह युवती महात्माजी के पास गयी और बोली, "प्रभु, यही त्रिया-चरित्र है।"

—प्रस्तुति : अपर्णा पांडेय

वर्ष २२ : अंक १२
अक्तूबर, १९८२

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

स्थायी स्तंभ

सार-संक्षेप

कहानी एवं हास्य-व्यंग्य

कविताएं

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

संयुक्त संपादक :
शीला झुनझुनवाला
सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
उप-संपादक
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये
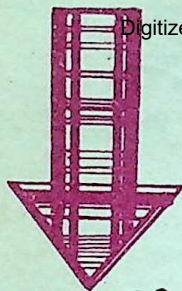
कालचिंतन

पहचान !

●●

—अपनी पहचान बनाने के लिए लूटती रही हैं वे सदियों से। आज भी क्रीत-दास की तरह लुट रहे हैं हम, उसी तरह !

—मासूम बच्चे के मुंह में किसी मां ने रबर की निपल लगी बोतल पकड़ा दी है और वह स्वच्छंद व्यस्त है, अपनी दिनचर्या में !

—देखता हूं बहुत कुछ आसपास और चाट जाता हूं समूची शहद लगी हवा। उठने की कूबत हम खो रहे हैं और हमारे पैर लंगड़े हो रहे हैं !

—अच्छा नहीं होता क्या आंख बंद कर लेना कुछ स्थानों में; मसलन पसीने से भीगी पीठ पर किसी को कोड़े पड़ रहे हों; कोई जानवर आराम से अपने शिकार का खून पी रहा हो; कानून के नाम पर अंधाधुंध बंदूकें चलायी जाती हों; या फिर खुली घास पर कोई युग्म-छंद खजुराहो के चित्र लिख रहा हो !

●●

—आंख बंद कर लेने में कई फायदे हैं ! —आंखों की रोशनी बढ़ती है। एक लय में बीन बजाते स्वर 'हैया हो हैया' बहुत मीठे लगते हैं, करेले में चासनी मिला दें तो भी वह मिठास नसीब नहीं होगी। अपना ही पसीना पीते हुए वे नीबू और नमक मुफ्त में चाटते हैं; जिनकी देनी पड़ती है, हमें कीमत !

—भाग रहे हैं बेतहाशा वे सब तेज अंधड़ में तिनके की तरह; उनके पैर तब भी जमीन पर हैं, मजबूती से एकरस धड़कता है उनका हृदय और हर पल, हर क्षण एक-एक बूंद खून बढ़ता जा रहा है उनके शरीर में।

—लापरवाह हो सकना भी कितनी खुशनसीबी है !

—अधिकारों का बोझ ढोना एक कछुए का अपनी पीठ पर समूची धरती को सम्हालना है।

—हर हलकी-सी सिहरन भूकंप बन सकती है, टूट सकते हैं दरवाजे और खिड़कियों के कांच, अन्यत्र ढह सकती है पूरी इमारत या अतल गहराई में समा सकता है पूरा शहर।

—मजा आता है अपना बोझ कुली के कंधों पर लादकर ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ना।

●●

—हिसाब-किताब रखना ततैया को छेड़ना है ! बहुत-कुछ करना पड़ता है तब काले और सफेद जिल्दों पर चढ़े हुए लाल कपड़े, सफेद धागे से सिये हुए, ऑपरेशन के बाद किसी मरीज की याद दिलाते हैं।

—बेसहारा जिंदगी मौत है, ऐसी जो डॉक्टरों के हवाले हो; और डॉक्टर भी वह, जो खून को सफेद धागों से सी रहा हो !

—रात हराम हो जाती है और हर दस्तक एक मजबूर सिपाही का सपना बन जाती है।

—सूरज की रोशनी में भी ताला लगाना पड़ता है और छटपटाते हैं हम, दमे के मरीज की तरह !

—बोझ ! बोझ ! बोझ !

—हमेशा ढोते रहेंगे हम इसे अपने कांपते होंठों के साथ। तब भी नाटक करेंगे मजबूती का और एहसास भी नहीं होने देंगे कि हमारी शेरवानी भीतर पसीने से तरबतर है !

—प्रोटोकॉल के नाम पर जून की गरमी में गरम सूट पहनकर आलीशान दावतों में जाना अजगर की केंचुली है !

—अजगर अपनी केंचुली छोड़ सकता है, हमें सूट और शेरवानी पहनने होंगे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए, अपने दंभ और अहं में अपने आप पिसने के लिए और इसलिए भी कि दूसरे की नाखुश आहट कहीं हमें पके हुए पीले पत्ते की तरह हिला न दे !

—मजबूरी मौत की सास है !

—सास के सामने बहू स्वच्छंद नहीं रह सकती ! इसलिए कि सास धार-धार बहती हुई पहाड़ी नदी है और बहू को उसे झेलने के लिए महासागर बनना ही होगा !

—नियति का यह चक्र ! ओफ ! . . . अपराजेय समय ने भी यहां घुटने टेक दिये हैं !

—किससे शिकायत करें हम ?

—दमघोंट धुएं से भरे कमरे और अनंत विस्तारमयी इस धरती में कोई अंतर नहीं है।

—तो थोड़ा ठहर जाइए . . . दम ले लीजिए . . . ऊपर की सांस को नीचे आ जाने दीजिए !

●●

—सड़कों से जुलूस गुजर रहा है, किसी लक्ष्मीपति की अंतिम शवयात्रा की तरह।

—अधिकारों की मांग की जाती है, अपनी मांग भरकर। हम सीधे तने हुए महाबोधिवृक्ष उभरी हुई कुबड़े की मजबूरी में धरती की धूप चाटते हैं।

—सुनने दो मुझे इन नारों को ! अबलाओं के बोल हैं ये ! संरक्षण देने की जिम्मेदारी हमारी है।

—इसी जिम्मेदारी के माया-महल में बड़े-बड़े कारखाने खुलते हैं : फैशन की बिंदियां कब्रगाहों-जैसी मशीनों पर उभरती हैं। यहीं फटे हुए दूध से मलाई बनायी जाती है। इसी मलाई को फिर हम अपने ओंठों से चाटते हैं !

—प्यार का समूचा इतिहास यहीं लिखा जाता है !

—यहीं वह पुस्तक छपती है और सोने की जिल्द में चढ़ायी जाती है।

—परीक्षा का समय है चित्रकार के लिए : हार और बालियां, बिंदियां और चूड़ियां, पायजेब और तराशे हुए पत्थरों की मीनाकारी ! कितने बना सकता है वह, कितनी तरह के !

—सौंदर्यबोध हमारे लिए आवश्यक है। श्रृंगार हमारी आंखों के भीतर की काली गोल दृष्टि है; कौन चाहेगा कि उसमें मोतियाबिंद हो जाए !

—मारे गये न हम अपने ही हाथों। प्यार के इतिहास में सुनहरी जिल्द चढ़ाते हुए भी किसी ने हमें न महाकवि समझा और न ईमानदार लेखक माना !

●●

—आइए, हम अपनी कुछ आदतों को भी देख लें !

—स्वच्छ सपाट दीवारों पर हमने अपने कमरे में क्या लटका रखा है : भिखमंगे, अधनंगे बच्चों की तसवीरें; अपने ब्लाउज की सीवन को सीती हुई भूखी और गरीब औरत; भीड़भरे बाजार में तानाशाह-सी घूमती हुई गायें, खोखले और भयानक मुखौटे, ऊबड़-खाबड़ रेखाओं से पुती हुई बेमतलब पेंटिंग (जिसे कल मेरे नौकर ने उल्टी लगा दी थी, अब भी लगी है), पुराने टूटे हुए बरतन, लोहे की कड़ाहियां और हाथ की हथकड़ियां !

—आधुनिक सभ्यता के साथ जीना है, तो इनकी परख को समझिए।

—फटेहाल रहकर भी ऐसे सुरक्षित ड्राइंग रूम में अपने को कला-पारखी और संपत्ति-शाली बनाये रखा जा सकता है !

—जी हां, ऐसे ही छोटे-छोटे समझौतों से महाप्रतापी शासकों का पतन हुआ है।

○●

—बात पहचान से उठी थी, पहचानने की प्रक्रिया में ही वह खोती जा रही है !

—यूं ही खोती गयी, तो क्या फिर पैदा होंगे—कबीर, सूर, तुलसी; ईसा और बुद्ध; नानक और नामदेव, जरतुश्त और कार्ल मार्क्स !

—संतवाणी है : सारा संसार हमारा है ! इस वाणी को हम बार-बार दोहराते हैं, तब भी दोहरे संसार में दोहरे चेहरों के साथ क्यों जीते हैं हम ? अपने ही छोटे संसार को सारा संसार मानकर कितने मजे नहीं लेते !

—गलियों और सड़कों पर शोर है : 'हम कमजोर नहीं हैं !'

—वे नहीं हैं, तो क्या हम हैं ?

—हमारे बिना वे क्या हैं ? उनके बिना हम क्या हैं ? यह परिभाषा एक सत्य की है। दूसरा सत्य यह है कि शल्य-चिकित्सक बनने के बावजूद वे हमारी बाहों को ढूंढ़ती रहेंगी ! और हम . . . यदि हमें वे बाहें नहीं मिलेंगी, तो हम अपने पुरुषत्व के साथ सौदा करेंगे और बागी बन जाएंगे !

—लेकिन तब भी बात पहचान की है न !

—एक ने पहचान ली, दूसरा धर्मग्रंथ लिखे जा रहा है !

—लिखने की इस प्रक्रिया में आदिकवि वाल्मीकि और आदिमानव मनु हमेशा लड़ते रहेंगे और अपनी पहचान ढूंढ़ते रहेंगे।

राजेन्द्र अवस्थी

वे सागर से कर वसूलते थे!
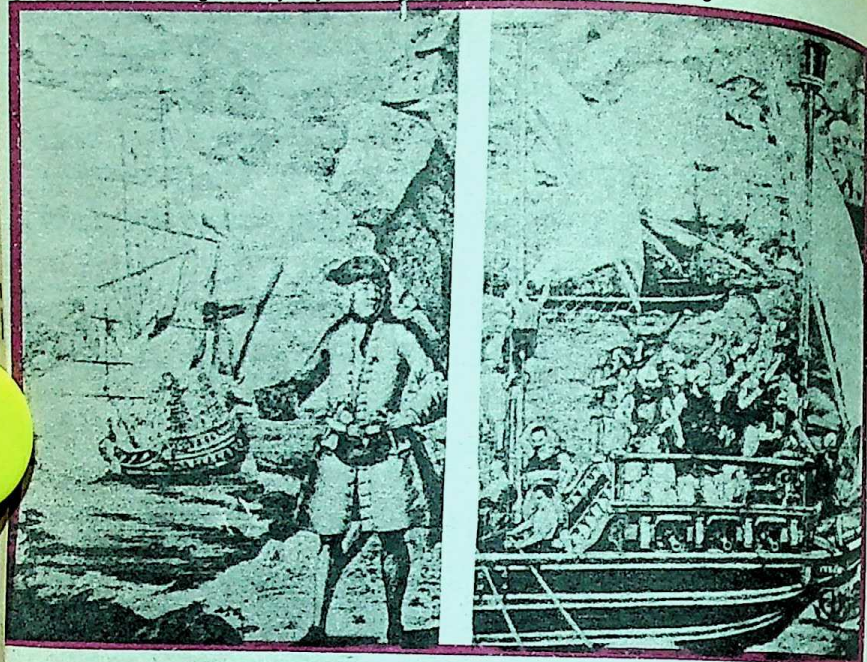
• चन्द्रमोहन प्रधान

पंद्रहवीं-सोलहवीं शती का कोई दिन, शांत-मौसम। असीम विस्तृत, नीले आकाश के नीचे, भूमध्य-सागर की नीली-हरी लहरों पर हंस की तरह तिरता जा रहा कोई यात्री जहाज। जहाज पर यात्री राग-रंग में लगे हैं, और बच्चे डेक पर खेल-कूद रहे हैं। कप्तान अपने ब्रिज की लकड़ी की डेक पर चढ़ा, प्रथम मेट को पालों को और ऊंचाई पर तानने का आदेश दे रहा है, ताकि जहाज समय पर बार्सीलोना, लिस्बन, या सिसली, जहां कहीं भी जा रहा हो, पहुंचे।

अकस्मात, क्षितिज पर एक दूसरे जहाज का पाल दीख पड़ता है। वह 'क्षिप्र

गति से इधर ही बढ़ा आ रहा है। कप्तान अपनी लंबी-सी दूरबीन उठाकर देखता है, और चिल्ला पड़ता है, "पाइरेट्स !"

उजली खोपड़ी पर क्रास

जहाज पर अफरा तफरी मंच जाती है। कप्तान जहाज को तेज चलाने का आदेश देता है, पर यह भारी, यात्री-वाहक है, अतः बहुत तेज नहीं चल सकता। नाविक हथियार बंद होने लगते हैं। स्त्री-बच्चों को नीचे के कैबिनों में भेज दिया जाता है। इधर पीछा करनेवाला पतला, हलका जहाज तेजी से पास आ पहुंचता हैं। इसकी मस्तूल पर फहरा रहे काले झंडे में अंकित उजली खोपड़ी के नीचे दो हड्डियां क्रॉस बना रही हैं।

"धड़ाम्" पहली तोप दगती है, और गोला इस जहाज की डेक पर आ गिरता है। तब तक दोनों जहाज भिड़ जाते हैं। दांतों में तलवार दबाये, कमर में लंबी पिस्तौल खोंसे, डाकू रस्सी के सहारे कूद-कूदकर यात्री जहाज पर छा जाते हैं। नाविक सामना करते हैं, किंतु बहुत शीघ्र उनमें से ज्यादातर मार डाले जाते हैं, और बाकी बंदी बना लिये जाते हैं। सारा धन, असबाब लूट लिया जाता है। स्त्री-बच्चों और पुरुषों को बांधकर, डाकू जहाज पर भेज दिया जाता है . . स्पेन, पोर्तुगाल, अरब देशों आदि में गुलामों की तरह बिक्री करने के लिए !

प्रागैतिहासिक युगों से

प्राचीन यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स और इलियड, ओडिसी की गाथाओं के गायक होमर ने भी इन जलदस्युओं का उल्लेख किया है। जहां किसी व्यापारी जहाज की गंध लगती, डाकू जहाज वहीं जा पहुंचते ! यात्री-वाहक पोतों से अधिक इन्हें मालवाही पोत लूटना पसंद था।

डाकू सरदार अपना खजाना दबाने के लिए कुछ नाविकों के साथ निर्जन स्थान पर निकल पड़ते। घोर वन या पहाड़ी अंचल में अच्छी-सी जगह देख-कर सरदार वहीं खोदने का आदेश देता। अच्छी-खासी लंबी चौड़ी जगह खुद जाने पर संदूक उसी में गाड़ दिये जाते। प्रायः भीतर खड़े होकर काम कर रहे डाकुओं को सरदार ऊपर से ही अपनी पिस्तौल की गोलियों का निशाना बना देता, यह इसलिए कि खजाने की जगह का रहस्य, रहस्य ही बना रहे।

जूलियस सीजर स्वयं बंदी

प्रख्यात रोमन सम्राट जूलियस सीजर (ई. पू. ५०:) जिसने तत्कालीन यूरोप को जीता, और इंगलैंड को नये सिरे से बसाया—वह भी इन डाकुओं के चक्कर में पड़कर एक बार बंदी बना, और भारी रकम देने पर छुटकारा पा सका था। सीजर छूटकर, सेना सहित दोबारा वापस लौटा, और डाकुओं पर आक्रमण कर

उनमें से लगभग ४०० को बंदी बनाया।

भू - मध्यसागर, चीन - सागर, हिंद-महासागर तत्कालीन व्यापार के व्यस्त केंद्रों में थे। इनमें डाकू-जहाजों की अबाध गतिविधियां थीं। उनके साथ केवल उनके साथी ही नहीं, बल्कि तटवर्त्ती जगहों के आवारे, छुटभैये लफंगे, और शीघ्र धनवान बनने के महत्त्वाकांक्षी लोग भी शामिल हो जाते।

सन १६५५ में यूरोप के जलमार्गों पर डाकुओं का इतना उत्पात बढ़ा कि ब्रिटेन के शासक (राजा नहीं) क्रॉमवेल को उनके विरुद्ध एक जलसेना ही संगठित कर भेजनी पड़ी। उन्नीसवीं शती में तो फ्रांस, हॉलैंड, और बाद में सं. राज्य अमरीका ने भी इनके विरुद्ध जेहाद-सा छेड़ा। जलदस्यु ज्यादातर स्पेनिश, डच, और पोर्तुगीज ही थे।

रानी एलिजाबेथ प्रथम के समय में, स्पेन के डाकू और स्पेन का सागर-तट इस धंधे में बहुत प्रख्यात हुए।

सर फ्रांसिस ड्रेक जलदस्यु ?

रानी एलिजाबेथ का प्रख्यात सेनापति सर फ्रांसिस ड्रेक भी वस्तुतः एक जलदस्यु ही था। ड्रेक बड़ा वीर और साहसी नाविक था। इसमें संदेह नहीं, इसने सारे भू-मंडल का गोल चक्कर भी लगाया था। ड्रेक शुद्ध जलदस्यु न होकर वस्तुतः 'प्राई-वेटियर' था। पहले इसने स्पेन आदि बहुत से शत्रु-देशों के जहाजों को लूटा। इसके धंधे में रानी का खुद हिस्सा था। भागीदार के हिसाब से लूट का धन रानी को भी मिला करता। उसके जहाज का नाम था—'गोल्डेन हिंद',

'प्राईवेटियर' का अर्थ है, जिसके पास अपना निजी जहाज हो, शाही नौ-सेना का नहीं। तत्कालीन सरकारें ऐसे कप्तानों को शत्रु-पक्ष के जहाजों को लूटने, डुबोने का लाईसेंस लिखित रूप में देतीं, जिसे 'लेटर ऑव मार्क' कहते। उन दिनों बहुत बड़ी संख्या में 'प्राईवेटियर' जहाज घूमा करते।

जब ड्रेक के आतंक से यूरोप बहुत तंग हुआ, तब स्पेन, पोर्तुगाल, आदि देशों ने रानी से उसे फांसी देने की मांग की। रानी ने इस मांग का उत्तर देने के लिए ड्रेक को 'नाइट हुड', या 'सर' की उपाधि देकर सेनापति बना दिया !

हेनरी मार्गन १६३५ '८८

जलदस्यु के पेशे में रहकर 'सर' की उपाधि प्राप्त करनेवाला दूसरा प्रमुख अंगरेज डाकू था, हेनरी मॉर्गन। वह पोर्टोबेलो, एवं पनामा (स्पेन के अधिकार में) में लूट-पाट मचाया करता। उसके पास २,००० आदमी, और ३७ जहाज थे। उन दिनों ब्रिटेन के साथ स्पेन का युद्ध नहीं होने के कारण स्पेन ने इसका कड़ा विरोध किया। ब्रिटेन में उस पर मुकदमा चला, किंतु राजा चार्ल्स द्वितीय ने उसे रिहा कर, 'सर' की उपाधि दे दी, और सर हेनरी मॉर्गन बनाकर उसे जमैका (क्यूबा के पास) का गवर्नर बनाकर भेज दिया।

कैप्टेन किड का रहस्यपूर्ण खजाना

कैप्टेन किड, मध्ययुगीन जलदस्युओं में सर्वाधिक प्रख्यात, और सबसे अधिक रंगीन, रोमांटिक व्यक्तित्व का रहा है। इसके साथ रहस्य जुड़ा हुआ है।

किड (१६४५-१७०१) १७वीं शती के उत्तरार्ध में ब्रिटिश नौ-सेना की सहायता पर फ्रांस से वेस्ट इंडीज, एवं उत्तरी अमरीका में लड़ा। यह प्रारंभ में डाकू नहीं था। सन १६९० में, वह निजी जहाज का स्वामी, और कप्तान बनकर न्यूयार्क सिटी में समृद्धिशाली जीवन व्यतीत करने लगा। ब्रिटेन की सहायता के लिए, वह प्रायः मैसाच्युसेट्स, न्यूयार्क आदि के दौरे करता रहा। रॉबर्ट लिविंगस्टन की सिफारिश पर उसे ब्रिटेन से 'प्राईवेटियर' का धंधा अपनाने के लिए अनुमति-पत्र, या 'लेटर ऑव मार्क' मिला। उसे तब लाल सागर और हिंद महासागर में ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों पर डाका डालनेवाले जलदस्युओं के उन्मूलन के लिए अधिकृत किया गया।

१६९७ ई. में पूर्वीय अफरीका के कोमोरो द्वीप में किड ने 'प्राईवेटियर' होने की घोषणा की। उसके जहाज 'एडवेंचर गैली' को प्रारंभ में सफलताएं नहीं मिलीं, डच जहाज पर हमले के दौरान, उसके कर्मचारियों ने विद्रोह भी किया, जिसमें उसके हाथों उसका तोपची मूर सख्त घायल हुआ, और बाद में मारा गया।

किड ने एक आरमीनियन जहाज 'क्वेडाह मर्चेंट' को पकड़ा, जिससे उसे काफी धन मिला। उसे वेस्टइंडीज के एंग्विला द्वीप पर पता लगा, कि उसे 'जलदस्यु' घोषित कर दिया गया।

'क्वेडाह मर्चेंट' को हिस्पानियोला द्वीप पर छोड़कर, उसने 'एंटोनियो' नामक एक नया जहाज खरीदा, और उसी पर न्यूयॉर्क आकर वहां स्थित ब्रिटेन के गवर्नर अर्ल ऑव बेलमांट को समझाने की कोशिश की, कि वह जलदस्यु नहीं है। किंतु उसे मुकदमे के लिए इंगलैंड भेज दिया गया, वहां मुकदमे में उसे तोपची मूर को मारने का दोषी पाकर (८-९ मई १७०१) फांसी की सजा दी गयी।

किड के जहाज 'एंटोनियो' को बेचकर उसका रुपया, एवं जहाज पर प्राप्त धन, दान में दे दिया गया।

उसके बारे में प्रख्यात है, कि वह

निरक्षर था, एवं अपने हस्ताक्षर की जगह एक बकरी के बच्चे (अंगरेजी में, किड) का चित्र बना देता था।

प्रख्यात अमरीकी रहस्य कथा-लेखक एडगर ऐलन पो ने अपनी कहानी—'सुनहला खटमल' में किड के खजाने की प्राप्ति से संबंधित बड़ा विचित्र विवरण दिया है।

ये खजाने !

यह निर्विवाद है, कि कोकोआ द्वीप पर भारी मात्रा में जलदस्युओं का धन गड़ा है।

अटलांटिक महासागर के किनारों के असंख्य द्वीपों पर न, जाने कितने जलदस्युओं के खजाने गड़े होंगे ! लोगों को कभी-कभी संयोगवश इनमें से कुछ धन मिल जाता है।

क्रूरता की हद !

डाकू सरदार अपना खजाना दबाने के लिए, अपने कुछ नाविकों के साथ, एक दो विश्वस्त सहायक साथ लेकर रात्रि में चुपचाप जहाज से किसी छोटे-से निर्जन द्वीप के किनारे उतरता, विश्वस्त साथी मशाल लिये रहता, और अन्य नाविक खजाना और भारी संदूक उठाये रहते। घोर वन में, या पहाड़ी के अंचल में, कोई अच्छी-सी जगह देखकर सरदार वहीं खोदने का आदेश देता। खासी लंबी-चौड़ी जगह खुद जाने पर, संदूक उसी में गाड़ दिये जाते। प्रायः भीतर खड़े होकर काम कर रहे डाकुओं को सरदार ऊपर से ही अपनी पिस्तौल की गोलियों का निशाना बना देता ! यह इसीलिए, कि खजाने की जगह का रहस्य, रहस्य ही बना रहे ! इसी के साथ, यह भी विश्वास किया जाता था कि खजाने के साथ दफन डाकू लोग भूत होकर सदैव उसकी रक्षा करेंगे, और सही मालिक के सिवाय और किसी के हाथों में नहीं पड़ने देंगे !

आधुनिक युग में जलदस्यु

अब प्रायः जहाज के कप्तान को बीच समुद्र में पता चलता है कि उसके जहाज पर यात्रियों में ऐसा भी गुंडा-दल बड़े मजे में चला आया है; जिसने जहाज के वायरलेस को तोड़ दिया है, कर्मचारियों को विवश कर दिया है, एवं सारे हथियारों, इंजिन-रूम आदि को अधिकृत कर रखा है। यह डाकू दल जहाज के यात्रियों के सारे धन, आभूषण, असबाब लूटकर बड़े आराम से आकाश से उतरनेवाले किसी हेलिकॉप्टर या किसी तीव्रगामी यान पर चढ़कर चल देता है !

पेट्रोल टैंकरों की स्वामी कंपनियों को सूचना मिलती है, कि अमुक दिन, हमारे दूत को अमुक रकम थमा दो नहीं तो टैंकर में बम गिरा दिया जाएगा। एक चिनगारी भी टैंकर पर खतरनाक होती है। मालिक लोग करोड़ों डॉलर के टैंकर नष्ट करवाने की अपेक्षा रुपये दे देना ही ठीक समझते हैं ! यह 'ब्लैकमेल' आम है। इसी डकैती का आधुनिक रूप है—वायुयानों का बलात्नयन। यह समस्या, लगती है, सदैव बनी रहेगी ?

निदेशक : ज्ञान-कला-केंद्र आमगोला, मुजफ्फरपुर—८४२००२

सर्दियों की एक खामोश रात। नसों को चीरती हुई ठंडी हवा। फ्लोरेंस शहर अजीब-सी चुप्पी में डूबा हुआ था —एक न समझ में आनेवाला सूनापन, जो मध्ययुगीन इतालवी पेंटिंगों में अकसर देखने को मिल जाता है। बाहर बारिश हो रही थी।

लियोनार्दो द विंची अपने स्टूडियो में उदास बैठा था। मोमबत्ती की धुंधली रोशनी में उसका चेहरा पीला और बीमार-सा हो आया था।

वह अचानक कुरसी से उठा और हवा

वह पेंटिंग देखकर कांप उठा था

• रामानंद राठी

में थरथराती मोमबत्ती को लेकर, बगल के कमरे में घुस गया। कमरे में सामने रखे कैनवास पर से उसने एकाएक परदा हटा दिया। "ओह !" उसके मुंह से अनायास निकला। मोमबत्ती के धीमे, पारदर्शी आवर्त्त में एक चित्र सांस ले रहा था—मानवीय भावों का अनोखा प्रतिदर्श ! लियोनार्दो कांप गया। उसने आज—स्टूडियो के पीले एकाकीपन से घिरे हुए—पहली बार महसूस किया कि मोनालिसा मर चुकी है। खुद उसने उसे मारा है, उसकी आत्मा को इस कैनवास पर निकालकर, किंतु उसे रंगों का अमरत्व भी प्राप्त हो गया था। उसकी मुसकान चेहरे के पीछे खड़ी चट्टानों से भी अधिक प्राचीन और शाश्वत दिखती थी।

लियोनार्दो ने देखा, इस चित्र में मोनालिसा गियोकोंदा के चेहरे पर मुसकान के वे ही भाव थे, जो आखिरी बार उससे दूर जाते समय उसके चेहरे पर घिर आये थे। बरसों पहले जब वह फ्लोरेंस को छोड़ रहा था, तब मोनालिसा ने भी उतने समय के लिए अपने पति के साथ दूसरे शहर जाने का निश्चय कर लिया था। (मोनालिसा अपने पति की तीसरी पत्नी थी, उसकी दो पत्नियों की मृत्यु पहले ही

हो चुकी थी)। उस दिन वह आखिरी बार उसके स्टूडियो में आयी थी। वह अचल बैठी थी, दीवार के साथ, जहां वह पिछले चार वर्षों से मॉडल की तरह नियमित बैठती आयी थी, और लियोनार्दो चुपचाप कैनवास पर झुक गया था।

स्टूडियो में सिर्फ वे दो ही प्राणी थे और एक अवसादभरी चुप्पी हर तरफ छायी थी।

लियोनार्दो ने अपनी आंखें मोनालिसा के चेहरे पर गड़ा दीं। वह उसके चेहरे पर आयी हलकी से हलकी छाया को भी पढ़ लेना चाहता था। वह मुसकरा रही थी। लियोनार्दो को यह मुसकान अद्भुत और अजानी लगी—विछोह की गहन पीड़ा में डूबी हुई और किसी के सम्मोहन से मुक्त।

"वक्त हो गया, अब तुम जा सकती हो" लियोनार्दो ने ब्रुश को रखते हुए कहा "जब हम वापस फ्लोरेंस लौटेंगे, यह तभी पूरी हो पाएगी।"

"लेकिन मुझे कोई जल्दी नहीं है, तुम चाहो तो इसे आज पूरा कर सकते हो।"

"नहीं वापस आने पर ही" लियोनार्दो अभी भी उसके चेहरे को बच्चे की-सी जिज्ञासा से देखे जा रहा था।

"लेकिन एक महान कलाकृति के लिए सिर्फ जिज्ञासा ही काफी नहीं होती" मोनालिसा ने अचानक लियोनार्दो के दोनों हाथों को कसकर चूम लिया।

उसके बाल लियोनार्दो के होठों से छू रहे थे और वह सृजन की अनंत पीड़ा में दुखती उंगलियों को पागलों की तरह चूम रही थी—बरसों का रुका हुआ उन्माद सभी वर्जनाओं को तोड़कर बह निकला था।

वह एकाएक पीछे मुड़ी और स्टूडियो से बाहर चली गयी। यह पहला मौका था, जब उसने लियोनार्दो की देह को छुआ था।

लियोनार्दो ने उसी दिन फ्लोरेंस शहर छोड़ दिया। फ्लोरेंस से बाहर जाते हुए उसने सोचा था, वह अब शायद ही इस पेंटिंग को पूरा कर पाये। जब तक वह दोबारा मोनालिसा से मिलेगा, उसका चेहरा बिलकुल बदल चुका होगा। औरतों के चेहरे वैसे भी पल-पल बदलते रहते हैं, उसका मानना था।

लियोनार्दो ने मोमबत्ती की हलकी रोशनी में देखा, उसकी कल्पना के विपरीत मोनालिसा की अधूरी पेंटिंग कितनी जीवंत और मुकम्मिल थी। जीवित चेहरे से भी अधिक संपूर्ण! उसके चेहरे पर बिलकुल वही भाव थे, जो बिछुड़ने के अंतिम क्षणों में वह कैनवास पर छोड़ गयी थी—पीड़ा और पछतावे से भरी मुसकान, जिसमें न कोई मोह था और न कोई विरक्ति।

लियोनार्दो ने कैनवास पर परदा डाला और असीम उत्साह से भरा कमरे से बाहर निकल आया। कमरे में बहुत उमस थी, और वह जिंदगी के पसीने से सराबोर था।

—शोध छात्र, प्राणिशास्त्र-विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

इनसैट क्या था क्यों नष्ट हुआ अब क्या होगा

• भगवती प्रसाद डोभाल

मनुष्य की आदिकाल से सूचना प्राप्त करने की तीव्र इच्छा रही है और इसी इच्छा की पूर्ति के लिए वह लगातार जी-तोड़ कोशिशें करता आ रहा है। अपनी शरीर रचना, आस-पास का वातावरण, पृथ्वी की बनावट से लेकर ब्रह्मांड को जानने के लिए वह लगातार विभिन्न उपकरणों का सहारा ले रहा है और नये उपकरण बना रहा है।

भारत ने भी इस ओर कदम बढ़ाया, अंतरिक्ष-दौड़ में कूदा और, लड़खड़ाते पांव से लगा ताकने विकसित राष्ट्रों को। 'नासा' से १० अप्रैल '८२ को भारत ने अपना 'इनसैट -१-ए' उपग्रह पृथ्वी की कक्षा में छोड़ा ('इनसैट' का अर्थ है—भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह)। १५० दिन की कशमकश को पार करता हुआ ६ सितंबर, १९८२ की प्रातः २ बजकर ५७ मिनट पर यह उपग्रह बंद हो गया। सोवियत संघ, कनाडा, संयुक्त राज्य अमरीका, जापान और इंडोनेशिया के बाद भारत ने स्वतंत्र रूप से अंतरिक्ष में विचरण की यह योजना बनायी थी। रूस और अमरीका के प्रसारण-उपग्रह अति उच्चस्तर तरंगों का प्रयोग करते हैं,

ऊपर: 'इनसैट-१-ए' को अंतरिक्ष में भेजनेवाला डेल्टा राकेट
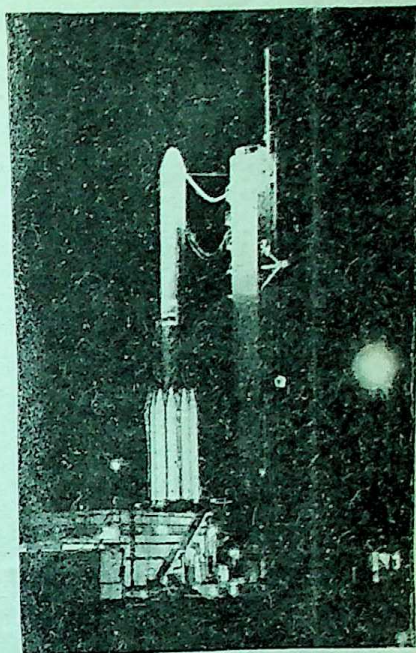
जबकि अन्य राष्ट्रों के उपग्रह गैर परंपरागत बैंड का इस्तेमाल करके काफी उपयोगी काम कर रहे हैं। मगर भारत ने अभी तक इस दिशा में उधार लिये अधिकांश उपकरणों का ही सहारा लिया है।

रूपरेखा कैसे बनी

'इनसैट—१–ए' का कार्य-क्षेत्र वास्तव में बहुमुखी था। यह मात्र दूरदर्शन-प्रसारण का ही काम नहीं करनेवाला था, वरन इसके माध्यम से संचार-व्यवस्था के सभी आयामों को छूना था, यानी तीन मुख्य कार्य उसे एक साथ करने थे। इसमें पहला था, दूरदर्शन प्रसारण, दूसरा, मौसम-विज्ञान की जानकारी, तीसरा, संचार-व्यवस्था पर नियंत्रण।

उपग्रह बनाने से पहले यह आवश्यक समझा गया था कि कुछ परीक्षण किये जाएं, उस दिशा में कदम भी बढ़ें। फलस्वरूप १९६८ से १९७८ के बीच भारतीय अंतरिक्ष विभाग ने दो महत्त्वपूर्ण प्रयोग किये।

पहला प्रयोग उपग्रह शिक्षा दूरदर्शन (साइट) का था। इस प्रयोग में अमरीकी उपग्रह ए टी एस–६ की सहायता ली गयी। इसका उद्देश्य देश के ऐसे क्षेत्रों में उपग्रह के माध्यम से प्रसारण करना था, जहां दूरदर्शन केंद्रों की सीमा नहीं थी। इससे कार्यक्रम राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार और उड़ीसा के ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाये गये। दूसरा प्रयोग था, उपग्रह

बड़ी उम्मीदों के साथ भारत ने 'इनसैट–१-ए' को अंतरिक्ष में १० अप्रैल '८२ को इंडोनेशिया के ऊपर स्थापित किया था, पर ६ सितंबर, १९८२ को सिर्फ १५० दिन का जीवन झेलकर वह ईंधन के अभाव में समाप्त हो गया। यह क्यों हुआ...?

दूर-संचार प्रयोग (स्टेप), इसमें पश्चिमी जरमनी के 'सिफोनी' उपग्रह का प्रयोग किया गया। इन परीक्षणों की सफलता से भारत सरकार को लगा कि क्यों न एक ऐसा उपग्रह तैयार किया जाए, जो सभी कार्य एक साथ कर सके। देश के विभिन्न विभाग एक ही नतीजे पर पहुंचे। 'अंतर-राष्ट्रीय अंतरिक्ष संचार संगठन' भी कुछ निष्कर्षों पर पहुंचा। फलस्वरूप इस बहुमुखी संचार मौसम और दूरदर्शन उपग्रह की तैयारियां शुरू हुईं।

जुलाई १९७८ में अमरीका के फोर्ड 'एयरोस्पेस एंड कम्यूनिकेशन कारपोरेशन' के साथ 'इनसैट' के निर्माण का समझौता हुआ। इसके अंतर्गत दो उपग्रह बनने हैं। एक वह जो 'इनसैट—१-ए' अभी समाप्त हो गया और दूसरा 'इनसैट—१–बी'।

'इनसैट—१-ए' ११५० किलोग्राम वजन का १२ चैनल के साथ था। इसके दो विशेष चैनलों का प्रयोग दूरदर्शन-प्रसारण के लिए था।

इसमें खराबियां आती ही गयीं

२८ फरवरी १९८२ को उपग्रह केप

केनवरल ले जाया गया। ८ अप्रैल को इसे कक्षा में भेजना था, पर मौसम की खराबी के कारण ८ और ९ के बजाय, १० अप्रैल को 'इनसैट—१-ए' पृथ्वी से छोड़ा गया। छोड़ने के लिए 'थार-डेल्टा ३,९१०' का प्रयोग किया गया था। ११ अप्रैल को ही 'सी-बैंड' एंटिना में खराबी आ गयी। २० अप्रैल को उपग्रह भू-स्थायी कक्षा में स्थापित कर दिया गया, पर एंटिना ठीक नहीं हो पा रहा था। २१ अप्रैल को एक और खराबी उसमें आ गयी, इससे 'सोलर सेल' ही काम नहीं कर रहे थे। सारी खींचतान के बाद १५ अगस्त को 'इनसैट—१-ए' ने अपना कार्य शुरू किया। तब अनुमान लगाया गया कि ७ वर्ष अंतरिक्ष में काम करनेवाले इस उपग्रह का जीवन अब ढाई वर्ष ही है, क्योंकि उसका अधिकांश ईंधन उपग्रह को सही कक्षा में स्थापित करने में लग गया था। पर आश्चर्य तब हुआ, जब इसने ६ सितंबर को पूरी तरह कार्य करने से मना कर दिया।

बहुत नुकसान झेल रहे हैं !

'इनसैट—१-ए' कार्यक्रम में १२ करोड़ रुपये मौसम संबंधी प्रयोगों पर, ११० करोड़ रुपया उपग्रह पर और ७० करोड़ रुपये अतिरिक्त विभिन्न भू-केंद्रों को स्थापित करने के लिए खर्च होना था। लगभग ३०० करोड़ रुपये की आर्थिक अस्त-व्यस्तता से देश गुजर गया।

इसी तरह देश के २० दूर-दर्शन केंद्रों में से ८ केंद्र कार्यक्रम नहीं दे पा रहे हैं।
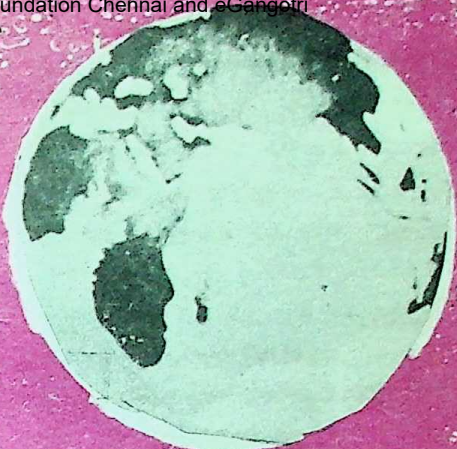
अब इनका भविष्य 'इनसैट—१-बी' की सफलता पर निर्भर करेगा। जो कार्यक्रम नहीं दे पा रहे हैं—वे केंद्र हैं—हैदराबाद, संबलपुर, गुलबर्ग, पिज, रायपुर, जयपुर, मुजफ्फरपुर और नागपुर। सिर्फ 'माइक्रोवेव' से जुड़े दूरदर्शन केंद्र ही राष्ट्रीय कार्यक्रम को प्रसारित कर रहे हैं। जो केंद्र माइक्रोवेव से जुड़े हैं, वे हैं—दिल्ली-मसूरी, बम्बई-पूना, मद्रास-बंगलौर, कलकत्ता, लखनऊ, श्रीनगर, जलंधर, अमृतसर और जयपुर। 'इनसैट—१-ए' से ९ जिलों को सीधी प्रसारण सेवा मिल रही थी, वह भी फिलहाल ठप हो गयी है। ये आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और महाराष्ट्र प्रदेश के जिले थे।

अब क्या होगा ?

'इनसैट—१-ए' के खराब होने से सबसे ज्वलंत समस्या एशियाई खेलों के प्रसारण में आ रही है। आंखों देखा हाल कैसे लोगों तक पहुंचाया जाए? मंत्रालय इस ओर

'इनसैट–१–ए' द्वारा लिया गया पृथ्वी का चित्र

भी सोच रहा है कि २० 'ट्रांसमिशन' सेट आयात किये जाएं, जो सीधी प्रसारण सेवा राष्ट्र को दे सकें। इनमें प्रत्येक ट्रांसमीटर की क्षमता सिर्फ १५ से २० कि. मी. तक ही होगी।

दूसरी तरफ डाक-तार विभाग वाशिंगटन में 'अंतरराष्ट्रीय उपग्रह संगठन' से बातचीत करके संचार-व्यवस्था को सुधारने में लगा है। भाग्यवशात डाक-तार विभाग ने पूरी तरह से 'इनसैट–१-ए' से अपना कार्य नहीं लिया था। पूरे ४,००० सर्किट में से सिर्फ ३०० दूरभाष सर्किट 'इनसैट-१–ए' से जुड़े थे और सोच रहे थे कि इस वर्ष के भीतर १,४०० सर्किट केंद्र उपग्रह से और जोड़ देंगे। फिलहाल 'इंटेलसेट' इस कार्य को पूरा कर रहा है। 'इनसेट-१—ए' के ६० करोड़ रुपये के २८ भू-केंद्रों में से २४ बन चुके हैं और चार शीघ्र ही बननेवाले हैं।

क्या खोया क्या पाया?

'इनसैट—१-ए' की ६० करोड़ रुपये की बीमे की राशि न्यू इंडिया ऐश्यूरेंश कंपनी ने देना मान लिया है। वैसे नियम के अनुसार उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में १८० दिन पूरे होने पर यह रकम मिलनी थी ऐसी कंपनी की शर्त थी।

यह राशि मात्र ऊंट के मुंह में जीरे के समान ही है। जहां इसका इतना बड़ा विस्तृत कार्यक्रम था, वहां उस अनुपात से क्षति का अनुमान एकदम लगाना कठिन है। समय की बरबादी, पैसे का दुरुपयोग व सम्मान की क्षति को एकदम सह पाना संभव नहीं है।

अभी 'इनसैट–१-बी' को कक्षा में भेजने की जिम्मेदारी भी उसी अमरीकन कंपनी की है, जिसने ७ वर्ष कार्य करनेवाले उपग्रह को सिर्फ १५० दिन का बीमार जीवन दिया। अब यदि पिछली गलतियों को मध्य नजर न रखकर काम किया गया, तो अंतरिक्ष-विचरण का स्वप्न साकार नहीं हो पायेगा। आवश्यकता इस बात की है कि आनेवाले जुलाई के महीने में 'इनसैट-१–बी' को अंतरिक्ष में भेजने से पहले, उसकी कड़ी परख की जाए।

सरकार को भी सही जानकारी जनता को देनी चाहिए, ताकि दिन प्रति-दिन के बढ़ते ज्ञान से राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपरिचित न रहे। ●

मादक गंधों से परिपूर्ण पीले फूलों-वाली चंपा, लाल भभूका अड़हूल पुष्प एवं मौलसिरी के वृक्षों में पुष्प-प्रसव का आरंभ . . . श्वेत सीपियों की भांति झरते शुभ्र शेफालिका के फूलों की शोभा . . . ओस कणों के भार से दुहरी होती, मंद-मंद बह रही हवा की सुखद अनुभूति, मन-प्राण में रच बस जाती है। शरद ऋतु की आहट को वातावरण में महसूस किया आपने ?

आकाश में किसी प्रकार का मालिन्य नहीं रह जाता है। एकदम सफेद—झक्क। मिथिला के किसी गांव में इस चांदनी की बाबत पूछेंगे आप तो जवाब मिलेगा,

● विकासकुमार झा

"ठहाठही इजोरिया।" शरद पूर्णिमा की इस चांदनी का सौंदर्य वर्णन करते हुए महाकवि राजशेखर ने कहा है—

स्फटिक मणिघट इवेन्दुस्त स्यामपिधान मान नमिवांक
क्षरति चिरं तेन यथा ज्योत्सना धनसार धूलिरिव ।

अर्थात स्वच्छ आकाश में चमकता हुआ चंद्रमा स्फटिक मणि के कलश के समान प्रतीत होता है और उसके मध्य से कर्पूर-चूर्ण के समान चांदनी गिर रही है।

कोजागर्ति : जागरण की समीक्षा

इसी शरद ऋतु में विजयादशमी के ठीक पांचवें दिन आश्विन मास के शुक्ल पक्ष

की पूर्णिमा तिथि में मिथिला के गांवों में एक पर्व बड़े धूम-धाम एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है--कोजागरा। 'कोजागरा' संस्कृत शब्द 'कोजागर्त्ति' का अपभ्रंश है। मिथिला के लोगों की ऐसी मान्यता है कि कोजागरा की इस तिथि में अर्द्ध रात्रि के समय वरदायिनी लक्ष्मी आती हैं और देखती हैं कि पृथ्वी पर कौन-कौन अक्ष-क्रीड़ा, जुआ, कर रहे हैं। उसे ही वे सुख-संपत्ति का अक्षय ऐश्वर्य प्रदान करेंगी। शास्त्रों में कहा गया है कि उस दिन लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। ऐरावत हाथी पर सुशोभित देवराज इंद्र एवं धन-ऐश्वर्य के दाता कुबेर की पूजा अर्चना करनी चाहिए। रात्रि में सुगंधित पदार्थों का छिड़काव करना चाहिए एवं चौपड़ खेल खेलकर रात्रि जागरण-करना चाहिए। आश्विन के उपरांत खेतों से फसल आने का समय हो जाता है, इसलिए भी लोग कोजागरा के अवसर पर इन तीनों देवी-देवताओं की आराधना करते हैं।

मिथिला में भगवान राम का कोजागरा

मिथिला में ऐसी जनश्रुति है कि भगवान रामचंद्र का भी कोजागरा उनकी ससुराल मिथिला में बड़े धूमधाम से मनाया गया था और तभी से यह पर्व यहां चला आ रहा है। इसलिए नवविवाहितों के लिए यह पर्व और भी विशिष्ट महत्त्व का हो जाता है। इस दिन दूल्हे की ससुराल से भार में बांस की कमचियों से निर्मित 'डाला' धान से भरा होता है। डाले के मध्य में

मिथिला के लोगों की ऐसी मान्यता है कि कोजागरा की इस तिथि में अर्द्ध-रात्रि के समय वरदायिनी लक्ष्मी आती है और देखती हैं कि पृथ्वी पर कौन-कौन अक्ष-क्रीड़ा(जुआं)कर रहे हैं। उसे ही वे सुख-संपत्ति का अक्षय ऐश्वर्य प्रदान करेंगी। शास्त्रों में कहा गया है कि उस दिन ऐरावत हाथी पर सुशोभित देवराज इंद्र एवं धन ऐश्वर्य के दाता कुबेर की पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

दही की एक 'छांछी' और उसके चारों तरफ छोटी-छोटी नौ चंगेरियों में नौ किस्म की मिठाइयां रहती हैं। चंदन-चंदरौटा एवं एक कटोरे में चांदी की पांच कौड़ियां रखी रहती हैं तथा 'अहिपन' लिखी पीढ़ी होती है। दूल्हे के लिए पीले रंग में रंगी धोती, कुर्ता, चादर, लाल पाग, एक जोड़ा जनेऊ, खड़ांव, छाता इत्यादि आता है। कोजागरा के भोज के निमित्त चूड़ा, दही, केला, मिठाई और मखाने का भार लड़की वालों की ओर से लड़के वाले के यहां आता है। अपने सामर्थ्य के अनुसार लोग अपने टीले या पूरे गांवभर के लोगों को यह भेज देते हैं। इस रात्रि, आंगन के मध्य 'पिठार' (पिसे हुए चावल का घोल) से महिलाएं 'अहिपन' बनाती हैं और उस पर सिंदूर के बूंदके लगाती हैं। चांदनी में इस अहिपन की शोभा, मानों सौंदर्य के सर्जक कामदेव ने स्वयं इस रात्रि को सजा दिया हो। पीली धोती और लाल पाग पहनकर

दूल्हा पीढ़ी पर बैठता है। दूल्हे के आगे डाला रख दिया जाता है एवं उसके बगल में 'अहिबात का पातील' रखा होता है। अहिबात के पातील में घड़े पर चित्र-कारी की गयी होती है और उस घड़े के भीतर अखंड सुहाग का दीप जलता रहता है। महिलाएं लड़के का 'चुमाश्रोन' करती हैं और दही का टीका लगाती हैं। फिर समूचा आंगन मैथिल ललनाओं के मृदु स्वर में गाये जा रहे, चुमाश्रोन गीत से गूंज उठता है—

आजु चुमाओन सिया रघुवर के,
नाईन देत हकार गे माई!
आंगन चानन नीपू कौशल्या माई,
गज मोती चौक पुराऊ हे।

चुमाश्रोन समाप्त होने के उपरांत बारी आती है, चौपड़ खेलने की। चांदी की पांच कौड़ियों से हंसी-ठहाकों के बीच नव विवा-हित दूल्हा अपनी भाभी के संग चौपड़ खेलता है और महिलाओं के स्वर में 'चौपड़ गीत' की मोहक ध्वनि से आंगन थिरक उठता है—

जुआ खेलो कुंवर वर चार, बाजी लगाई के
बिहुंसि-बिहुंसि कर बाजे,
निज-निज दाव सम्हार
सुख सरसाई के।

इन विधियों के बाद बाहर दरवाजे पर बैठे बुजुर्गों को वर को 'दुर्वाक्षत' देने के लिए बुलाया जाता है। तांबे के बरतन में चावल और दूर्वादल रखा रहता है, इसे लेकर मंत्रोच्चारण के संग, बूढ़े बुजुर्ग दूल्हे को आशीर्वाद देते हैं। तत्पश्चात अलग-अलग बड़ी चंगेरियों में मिष्ठान, मखान एवं पान से आमंत्रित व्यक्तियों व जन-बनिहारों का स्वागत किया जाता है। इस दिन सब एक-दूसरे के यहां जाकर पान-मखान ग्रहण करते हैं एवं रातभर जगकर चौपड़ खेलते हैं। पान-मखान एवं मधुर देने का कारण यह है कि पान एवं मधुर सौहार्द्रता के प्रतीक है। पंच-

देवता की पूजा में भी पान का उपयोग होता है। साथ ही मखाने बांटने का उद्देश्य यह है कि मिथिला के लोगों में ऐसी मान्यता है कि फल बांटने से जीवन में सफलता की प्राप्ति होती है। दूसरे, जिस देश में, जिस माह में, जिस फल की उत्पत्ति होती है, उस फल को खाने से स्वास्थ्य में लाभ होता है। मिथिला में पोखरों में मखाना बड़े पैमाने पर होता है।

औषधियों का पोषक चंद्रमा

मिथिला के हरेक पर्व त्योहार, खान-पान एवं आचार-विचार वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसे हैं। कहते हैं, इस दिन जिस प्रकार की स्वच्छ एवं निर्बाध चांदनी मिलती है, वैसी चांदनी वर्षभर में किसी पूर्णिमा की रात्रि में उपलब्ध नहीं होती। जाड़े में शीत कुहासे के कारण, वसंत ऋतु में धूल-गर्दे के कारण, वर्षा ऋतु में मेघ के कारण, स्वच्छ चांदनी नहीं मिल पाती है। कोजागरा के इस दिन अधिक से अधिक चंद्रमा की ज्योति में नहाने से लोग वर्षभर रोगादि से मुक्त एवं स्वस्थ-प्रसन्न रहते हैं। चंद्रमा का एक नाम 'ओषधिपति' भी कहा गया है, क्योंकि जितनी भी ओषधियां एवं फसलें हैं, उनका पोषण चंद्रमा ही करते हैं। इसलिए भी लोग रातभर चौपड़ खेलकर अधिकाधिक चांदनी में रहते हैं।

कोजागरा और कृष्ण की रासलीला

महाकवि गोविंद दास की शृंगार भजनावली में कहा गया है कि कोजागरा के इसदिन चांदनी रात में भगवान श्रीकृष्ण गोपियों के संग मंडलाकार रास-लीला रचाते थे। लोग 'शमी' नामक वृक्ष को जाकर प्रणाम करते हैं, कहते हैं कि नंदन वन के कल्प-तरु के समान ये वृक्ष भी मनोकामना को पूर्ण करनेवाला है। तिथि तत्व चिंतामणि के गोपथ ब्राह्मण के श्लोक में शमी की महत्ता के संबंध में कहा भी गया है—

अमंगल नाम शमनीं दुःकृतस्य प्रणाशिनीम्।
दुःस्वप्न नाशिनीं धन्यां प्रपद्ये हं शमीं शुभाम्।

अर्थात अमंगल को शांत करनेवाले, पाप को नष्ट करनेवाले एवं दुःस्वप्नों को दूर करनेवाले शुभदायक शमी वृक्ष के समीप मैं शरणागत हूं।

चहुं दिशि चंपा चमेली फुलायल

मिथिला में पर्व-त्योहारों में कोजागरा अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है। विशेषकर नव विवाहितों के लिए यह महत्त्व का है ही, क्योंकि विवाह के प्रथम वर्ष में उनका कोजागरा होता है। फिर उसके बाद नहीं।

कोजागरा के अवसर पर अगर आप मिथिला के किसी भी गांव में चले जाएं, तो सांझ घिरते-घिरते दीया-बाती के बाद मैथिल-ललनाओं के मोहक स्वर में गाये जा रहे सोहर-गीत आपके हृदय की अतल गहराइयों में उतर जाएंगे—

मोरा रे अंगनमा चंदन केर गछिया,
ताहि चढ़ि कुहकं काग रे
चहुं दिशि चंपा-चमेली फुलायल
चांद इजोरिया रात रे

—६, विद्यापति मार्ग, पटना

अदृश्य कामना

● विजय मल्ल

एक दिन की बात है। मैं अपने साथी कृष्णदास के साथ शाम को 'टुंडीखेल' की ओर घूमने निकला था। घूमने के क्रम में बहुत विषयों के बारे में वाद-विवाद करता रहा, किंतु हमारे वाद-विवाद का कोई सिलसिला नहीं होता था। किसी सिद्धांत का प्रतिपादन या खंडन भी उससे नहीं होता था—वह सिर्फ उद्गार होता था—अपनी रुचि-अरुचि की सीमा के अंदर सीमित। रास्ते में देखे और मिले व्यक्तियों के चरित्र और बुद्धि के संबंध में भी हम लोग अपना मत प्रकट करते रहे—मानो हमारा मत ही अंतिम सत्य है। यदि कोई औरत दिखलायी पड़ी, तो उसके विषय में भी अपनी राय जाहिर करने से बाज नहीं आते थे। वह औरत सुंदर है या असुंदर, प्रगतिशील है या अप्रगतिशील, शिक्षित है या अशिक्षित? बस!

और आज भी एक औरत मिली थी, जिसके संबंध में हमने अनायास ही चर्चा छेड़ दी, क्योंकि वह शिक्षित तो थी, किंतु अपने पहले पति को छोड़कर दूसरे पति के साथ रहने लगी थी। इसी बात पर हमारा ध्यान केंद्रित हो गया था।

उसका पहला पति शिक्षित, रूप और गुण संपन्न होते हुए भी निःसंदेह कुछ कट्टर भी था। हमने उस औरत के दुस्साहस की प्रशंसा तो की, किंतु मैं मन से मान नहीं सका। उसके उस कार्य का समर्थन

इस कहानी के लेखक विजय मल्ल (विजय बहादुर मल्ल) की गणना नेपाल के प्रमुख आधुनिक कहानीकारों में होती है। 'काठमांडू' के एक संभ्रांत परिवार में जन्मे श्री मल्ल, कहानीकार होने के साथ-साथ कवि भी हैं। उनकी प्रकाशित कृतियां हैं—कथा-संग्रह—'एक बाटो अनेक मोड़', उपन्यास—'अनुराधा' और काव्य-संग्रह 'विजय मल्ल को कविता।' संप्रति—राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान के सचिव हैं।

नहीं कर सका, क्योंकि उस औरत पर पहले भी चरित्र-हीनता का किसी-न-किसी रूप से आरोप लग चुका था। किंतु उसी क्षण मुझे कृष्णदास की दीदी की याद आ गयी। उसकी दीदी-ललिता—अपने मोहल्ले की ही होने के कारण, उसके विषय में मुझे बहुत-सी बातों की जानकारी थी। सौंदर्य की दृष्टि से ललिता अत्यंत सुंदरी थी। मोहल्लेभर में उस-जैसी सुंदर औरत कोई नहीं थी, किंतु उसकी शादी ऐसे पुरुष के साथ हुई थी, जो कुरूप ही नहीं, बल्कि अष्टावक्र भी था। हमेशा बीमार ही बीमार रहता था। बिछावन का रोगी हुए, तो उसे वर्षों बीत गये थे। मुझे हमेशा आश्चर्य होता था कि ऐसे विचित्र मर्द के साथ उस-जैसी औरत का विवाह उसके माता-पिता ने कैसे कर दिया? किंतु मुझे यह भी पता था कि कृष्णदास की आर्थिक अवस्था पहले से ही अच्छी नहीं थी। खाने-पीने की समस्या और अर्थाभाव के कारण उसके मां-बाप ने उसकी शादी वैसे आदमी के साथ कर दी होगी। आज भी सुनने में आता है कि उसी के आधार पर कृष्णदास के घर का कारोबार चल रहा है। इतना होने पर भी उस-जैसी सुंदर औरत के लिए दूसरी शादी करना, या लुक छिपकर वेश्या-वृत्ति कर अपनी काम-वासना की पूर्ति करना बहुत ही आसान था, किंतु उसने ऐसा कुछ नहीं किया। हमारे मोहल्ले की कितनी ही औरतें या तो भागकर चली गयी हैं या अपने पति को छोड़कर पीहर में बस गयी हैं या दूसरे पति के साथ रह रही हैं। इस प्रकार उनका चरित्र लांछित हो चुका है, किंतु ललिता अपने रोगी पति की सेवा-सुश्रूषा करती रहती है। उसके आचरण पर कोई अंगुली तक नहीं उठा सका है। उसकी उज्ज्वल और सौम्य आकृति से सुकुमार्य और गांभीर्य छलकता रहता है। कहीं भी कृत्रिमता नहीं दिखलायी पड़ती है। वह सदैव सहज, सरल और स्वाभाविक दिखलायी पड़ती है। उसके नम्र और मधुर व्यवहार से सभी मुग्ध हो जाते हैं। मोहल्ले में सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। उसके ऐसे अतुलनीय पातिव्रत्य और कर्तव्यपालन की कठोरता देखकर, मैं भी कभी-कभी दंग पड़ जाता और मन-ही-मन उसका सम्मान भी करता था। उसके प्रति मेरे दिल में श्रद्धा भी थी। ऐसी दृढ़ता और ऐसा संकल्प, इच्छा और काम-वासना का ऐसा दमन और कठोर आत्मसंयम, कि

वासना से विह्वल और आत्मसंयमहीन औरतें उसके सामने एक क्षण भी टिक नहीं सकतीं। घूमते-घूमते एक पल मैं इस पर सोचने लगा और कृष्णदास से धीरे-से कहा, "नैतिकता और अनैतिकता का प्रश्न अत्यंत जटिल है। अभी जो औरत गयी है, उसने यदि सिर्फ काम-वासना से प्रेरित होकर अपने पति को नहीं छोड़ा है, तो वह अपराध नहीं है, किंतु काम-वासना ही यदि लक्ष्य है, तो उसकी अपेक्षा लाख गुना अच्छी पतिव्रता धर्म को कर्त्तव्य मानकर पालन

जीवन में कभी-कभी ऐसी घटना घटित हो जाती है, कि सारी पूर्व धारणाएं खंडित हो जाती हैं। निश्चित लगता-सा मत महत्त्वहीन हो जाता है, जिसे अपना संस्कार बर्दाश्त नहीं कर पाता है। फलतः दिल में बेचैनी होने लगती है। यहां मैं अपने मोहल्ले की पड़ोसिन ललिता के संबंध में सोच रहा हूं।

करनेवाली, उसके लिए जीवन बलिदान देनेवाली औरतें होती हैं।" मैंने उसी की दीदी के विषय में सोचकर, यह कहा है, यह बात कृष्णदास को नहीं बतलायी।

और हम लोग घूमते हुए घर की ओर लौट पड़े। मैं घर जाने ही वाला था कि कृष्णदास ने मुझे समाज-शास्त्र की उस किताब की याद दिलायी, जो मैंने उससे मांगी थी। मैं उसके घर पर गया। उसके कमरे से किताब लेकर निकलने ही वाला था कि मुझे एक क्षण इंतजार करने का अनुरोध करते हुए वह ऊपर चला गया। मैं वहीं इंतजार करता रहा और समय काटने के लिए समाज-शास्त्र की किताब उलटने लगा। कुछ ही देर में कमरे के अंदर किसी ने प्रवेश किया। किताब बंद करके, आंखें उठाकर देखा। सामने कृष्ण-दास की दीदी ही खड़ी दिखलायी पड़ी। मैं धीरे-से उठा और मुसकराते हुए मैंने कहा, "आइए, मुझे तो ऐसा लगा कि कृष्णदास ही नीचे उतरा है।"

कुछ भी उत्तर दिये बिना वह खिड़की के पास जाकर बैठ गयी। मुझे कुछ देर पहले सोची हुई बात की याद आयी और उस दृष्टि से उसका व्यवहार और आचरण अत्यंत सौम्य, सरल और हृदयग्राही लगा। अद्वितीय रूप और मधुर सौंदर्य की सीमा थी। ओंठों पर सरल हास्य खिल रहा था।

चेहरे पर विचित्र गांभीर्य छाया हुआ था। ऐसी अनुपमेय लावण्यमयी औरत की तुलना कुरूप और रोगी पति से करने मात्र की कल्पना से किसी कठोर व्यक्ति का भी दिल पिघल सकता था। किंतु इस औरत को इसकी कोई परवाह नहीं है, वरन सहज रूप से अंगीकार करके अपने तन-मन से उस रोगी पति की सेवा में आत्मदान कर रही है। मैं यह सोचकर विह्वल होता रहा।

मेरे मन में उसके प्रति एकदम अनूठा भाव जागृत हुआ—सम्मान और श्रद्धा से नतमस्तक होकर मैं अपने उद्गार रोक नहीं सका, "आपकी कठोर तपस्या देखकर तो कभी-कभी आश्चर्य लगता है। आपकी जिंदगी में आपके पातिव्रत्य धर्म को कोई बात क्या डिगा सकेगी? आपकी जगह कोई और औरत होती, तो कितनी बार पदच्युत हो गयी होती, कितनी बार लुढ़क गयी होती। आपके पति ऐसे बीमार और निष्क्रिय हैं कि अब उनसे कुछ भी आशा नहीं की जा सकती है, तब भी आप पति-सेवा में, अपने नारी-धर्म में अडिग हैं। आपकी सहिष्णुता और धार्मिक प्रवृत्ति की तारीफ किये बिना, कौन रह सकता है? और होता तो . . . ।"

मेरी बात पर उसे सहसा विश्वास नहीं हुआ। मैंने फिर कहा, "मैं अन्तःकरण से यह कह रहा हूं। आपकी तारीफ न करनेवाला कौन है? कहिए तो। मोहल्ले में आपकी-जैसी सती-साध्वी कौन है? जिसे देखता हूं वह क्षणिक सुख, क्षणिक लिप्सा पूर्ति के लिए लाज-शरम की थोड़ी भी परवाह किये बिना, मनमाने ढंग से घूमती हैं और नैतिकता बेचती रहती हैं। उन्हें न तो धर्म के प्रति आस्था है और न आत्मसंयम का महत्त्व ही पता है।"

ललिता ने, विस्मित नेत्रों से देखते हुई आकृति में लालिमा घोलते, धीरे-से पूछा, "सचमुच मुझे सब चाहते हैं!"

मैंने शीघ्रतापूर्वक उत्तर दिया, "आपको सिर्फ चाहते ही नहीं हैं, आपकी इज्जत भी करते हैं।"

एक पल विचलित होकर, खूब विचार करके, व्याकुल-जैसी ललिता ने फिर पूछा, "देखिए, शरीर शुद्ध होते हुए भी मन शुद्ध नहीं हुआ, और मन शुद्ध होकर भी शरीर शुद्ध नहीं हुआ, तब क्या होगा?"

मैंने इस बात का तात्पर्य पहले तो नहीं समझा, किंतु तब भी वैसे ही बहलाते करते उत्तर दिया, "दोनों की शुद्धता

आवश्यक है। तन की भी और मन की भी।"

ललिता ने मेरी बात पर उतना ध्यान न देकर एक ही धुन में पहले की बात दुहराते हुए फिर पूछा, "तन की भी आवश्यकता है, और मन की भी ?"

"यह जगह देखकर होता है।"

वह चुप हो गयी। उसके चेहरे का रंग धीरे-धीरे बदलने लगा। आंखें जल्दी-जल्दी घूमने लगीं। आंखों की भौंहें सिकुड़ने लगीं, ओठों की मंद मुसकान विलीन होने लगी। चेहरा थोड़ा गमगीन हुआ और मेरी ओर अचानक तीव्र दृष्टि से देखकर बोलने लगी, "इधर देखिए तो सही, सचमुच आपको विश्वास होता है, मेरे ऊपर।"

मैं आश्चर्यचकित हो गया, किंतु उसके रूप की ओर देखते हुए जवाब नहीं दे सका। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि उसकी भावभंगिमा विचित्रतापूर्वक बदल रही है, वह कुछ कहने के लिए छटपटा रही है। मैं उसे एकटक देखता रहा।

एक पल ललिता खिड़की के बाहर देखने लगी और मेरी ओर घूमकर आकुल होती हुई कहने लगी, "वहां देखिए, वहां उस बिछावन पर आप सोते थे और मैं भी वहां होती थी।"

मैं एकदम विस्मित हो गया। लाज से सिकुड़ गया। अजीब-सी बात ने मुझे भी उत्सुक बना दिया। मुझसे मजाक तो नहीं किया है, ऐसा समझकर सतर्क भी हो गया और अनायास ही उसका चेहरा देखने लगा। उसने भी मुझे ध्यानपूर्वक देखा और कहा, "क्या आपको इस बात पर विश्वास नहीं है? हम परस्पर आलिंगन-बद्ध होते थे। मैं आंखें बंद किये बैठी रहती थी।" यह कहते-कहते उसके हाथ की गति, आंख की चितवन, चेहरे के भाव और मुद्रा में परिवर्तन होता गया। उसके बाद उसने आंखें बंद कर लीं। मैं तो अवाक् रह गया। मुझे यह मजाक-जैसा

नहीं लगा।

आंखें उघारकर, उतावली हो उसने कहा, "आपको पता है, मैं वहां खिड़की पर बैठी रहती हूं और आदमी आते-जाते रहते हैं।

मैं आश्चर्य से उसकी भाव-भंगिमा पढ़ने लगा। मुझे ऐसा लगा, वह अपने आपको भूल रही है। वह अपने आपे में नहीं है।

एक ही पल में वह एकदम उठी और

मेरा हाथ पकड़कर कहने लगी, "उठिए यहां से। वहां आप सोइए, लिखिए, लेटिए। मैं आपके पास बैठती हूं।"

सचमुच वह मेरा हाथ पकड़कर उठाने लगी। मैं तो एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया। मैं हताश हो गया। मैं घबरा गया। ऐसी लाज और शर्म लगने लगी कि वहां से भागने का मन हुआ। किसी ने यदि देख लिया तो मेरी क्या हालत होगी? मैं छटपटाने लगा, किंतु धीरे-से हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए मैंने कहा, "यह आपने क्या किया?"

धीरे-से उसने हाथ छुड़ाते हुए ऐसे दयनीय स्वर में कहा, "आपने अभी कहा नहीं कि सभी मुझे पसंद करते हैं? क्या आप मुझे पसंद नहीं करते हैं?" और निराश होकर वह एकदम से बैठ गयी। मैं उस कमरे से शीघ्र से शीघ्र निकलने के लिए घबराकर जूता पहनने लगा। मुझे ऐसा डर था कि कहीं ललिता फिर उठकर और मेरा हाथ पकड़कर उसी प्रकार का पागलपन न करने लगे। वह चुपचाप मेरी ओर बढ़ने लगी।

उसी समय कृष्णदास भी ऊपर से उतरकर वहीं आ पहुंचा और कहने लगा, "क्या भागने लगे हो? ठहरो! मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।"

मैंने ललिता की ओर आंख उठाकर देखा। वह उसी तरह, जहां की तहां खड़ी, मुझे देखते हुए कहने लगी, "आपने अभी कहा है न कि सभी मुझे पसंद करते हैं।"

कृष्णदास जूता पहनकर तैयार हो चुका था। मैंने कुछ भी जवाब नहीं दिया। हम दोनों वहां से निकल पड़े।

कृष्णदास ने नीचे उतरकर कहा, "दीदी को इन दिनों न जाने क्या हो गया है? बीमार कहूं तो कैसे कहूं?"

अनुवादक—डॉ. रामदयाल राकेश

गीतिका

समय ने जब भी अंधेरों से दोस्ती की है
जला के अपना ही घर, हमने रोशनी की है

सुबूत हैं मेरे घर में ये धुएं के धब्बे
कभी यहां पे उजालों ने खुदकुशी की है

कभी भी वक्त ने उनको नहीं मुआफ़ किया
जिन्होंने दुखियों के आंसू से दिल्लगी की है

जली है आग में जब-जब भी शहर की लड़की
मेरे ही पांव के छालों ने तब नमी की है

न लड़खड़ाया कभी, और कभी न बहका मैं
मुझे पिलाने में फिर तुमने क्यों कमी की है

किसी के जख्म को मरहम दिया है, गर तूने
समझ ले तूनें खुदा की ही बंदगी की है

बहत हैं लोग यहां गीत सुननेवाले
किसने नीरज की तरह रात रेशमी की है

—नीरज

४७, मेरिस रोड, अलीगढ़-२०२००१

> पिछले अंक में आपने प्रसिद्ध पुरातत्त्व उत्खनन तथा भाषा-विज्ञान के प्रकांड पंडित और 'आर्केआलाजिकल सर्वे ऑव इंडिया' के भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. शिकारीपुर रंगनाथ राव से सिंधु-लिपि से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की थी, प्रस्तुत है, इस अंक में उस लेख की अंतिम किस्त

संसार की सबसे पहली लिपि का रहस्य (२)

● डॉ. एस. आर. राव

आरंभिक काल के सिंधु पुरालेखों में आक्षरिक ध्वनि का संकेत देने के लिए, एकस्वरित स ह इत्यादि के बजाय, पक्षी आदि का चित्र गोलकार आकार में (०) बना दिया गया थी। इस प्रकार चित्र द्वारा दर्शित शब्दों के अक्षर उत्तुंगता के आधार पर व्युत्पादित किये गये थे। इस बात का निर्णय पहाड़ी तथा विच्छू के चित्र में जोड़े गये ध्वनित चिह्न से किया जा सकता है। पहाड़ी, पीपल का पत्ता तथा बिच्छू के चिह्न को एक-दूसरे से या किसी अन्य चित्र में जोड़ दिया गया था। इससे साफ मालूम हो जाता है कि चित्रण न तो चित्र-लिपि से संबंधित है और न वह भावात्मक प्रभाव प्रदर्शित करता है, जिसमें प्रत्येक चिह्न पृथक भावना का प्रतीक होता है-जैसे पक्षी का चिह्न उड़ान की भावना प्रदर्शित करता है।

अन्य पुरालेखों में अचित्रित चिह्न यह बताते हैं कि भाषा प्राचीन भारत-यूरोपीय है, जिसमें ध्वन्यात्मक मूल्यांकन उत्तुंगता के सिद्धांत पर व्युत्पादिक किया गया था :

हरप्पा के आरंभिक काल में चित्र तथा रेखांकन दोनों साथ-साथ उपयोग किये जाते थे। उदाहरणार्थ शक्र शब्द बनाने के लिए शक-ध्वनित पक्षी का चित्र रेखा-चित्र पर रखकर रा की ध्वनि श क्र शब्द व्युत्पादित करने के लिए थी। इसी

SEMITIC & INDUS SIGNS

S NO	PHONETIC VALUE	OLD NORTH SEMITIC SIGNS 16th-13th c BC	HARAPPAN SIGNS	LATE HARAPPAN SIGNS
1	b			
2	s			
3	d			
4	h			
5	w			
6	ḥ			
7	th			
8	k			
9	n			
10	s			
11	(cy)			
12	p			
13	r			
14	sh			
15	t			
16	s			
17	h			
18	m			
19	o			
20	'			
21	s			

सेमिटिक भाषा से मिलते-जुलते रेखाकारिक मूलक चिह्नों का स्वराघातिक मूल्य

प्रकार अश्वक पढ़ने के लिए अ तथा ह के संकेत के लिए पीपल-पत्र में रेखांकन किया गया। सिंधु-काल का रक्षक-शब्द अश्वक से पृथक लिखा हुआ है। यह नाम वेद में भी मिलता है।

चित्र,	शब्द,	ध्वन्यात्मकमूल्यांकन
बिच्छू	वृश्चिक	वृश
पीपल पत्ता	अश्वत्थ	अश्व
पक्षी (शकुन लक्षणी)	शकुन	शक
मक्खी या मधुमक्खी	मक्ष	मख
हाथ	हस्त	हस
पहाड़ी	अद्रि	अद्र
खेत या मैदान	क्षेत्र	क्ष

शासकों की पदक्रम परंपरा

सिंधु सील-मोहरों में शासकों की केवल उपाधियां ही नहीं लिखी हैं, उनकी पदक्रम परंपरा भी बतायी गयी है। कहीं-कहीं शासक का नाम भी लिखा हुआ है। पदानुक्रमानुसार रक्षक तथा अभिवाहक का पद निम्नतम स्तर का था। 'शासक का शासक' पद राजराज के समान था और महानतम पद था। द्रह या द्रुह, दास पप्र या पिप्रू, त्रिक्ष या त्रिक्षी, अश्व, बक, सस, वृशन, भग, दक्ष, कश्यप, केश इत्यादि सब महत्त्वपूर्ण नाम हैं। यह सभी नाम मोहरों में अंकित हैं। वैदिक साहित्य में भी यही नाम शासकों, राजकुमारों, नृपों, तथा धर्मगुरुओं के पाये जाते हैं। मोहरों में जन-जाति का भी उल्लेख है—जैसे पप्र, द्रह, वृश, यह तीन जन-जातियां महत्त्वपूर्ण हैं।

मोहरों के पढ़ने से यह मालूम हो जाता है कि प्राकृतिक आधार पर ही देश के राजनीतिक या प्रशासनिक भाग किये गये थे। जल से घिरी हुई भूमि के क्षेत्र या दो नदियों द्वारा घिरी हुई भूमि-क्षेत्र के लिए बहुधा द्वप्प शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक क्षेत्र का शासक पृथक था। सरस्वती नदी की घाटी सबसे अधिक पवित्र मानी जाती है। एक-द्वप्प,

Five stages of reading inscriptions

पुरालेख के ५ विकास चरण पढ़ने की रीति

पंत-द्वप्प और हप्त-द्वप्प नदियों के बीच-वाली भूमि के लिए प्रयोग किये गये हैं। सरस्वती घाटी का नाम भद्रमद्वप्प था। भद्रमद्वप्प भूमि क्षेत्र (राज्य) के शासक की मोहर कालीबंगन में मिली है। उसमें प भद्रम अंकित है; जिसका अर्थ यह है, 'सर्वाधिक पवित्र सर्वाधिक मांगलिक रक्षक,' चरागाह गव्य कहलाते थे और पर्वतीय क्षेत्र को अद्रिपतक कहा जाता था।

सिंधुजनों का धर्म

हरप्पण लोगों की धर्म-संबंधी जानकारी के तथ्य भी पुरातत्व उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। कई एक मोहरों पर अग्नि-देव खुदे होने के अतिरिक्त एक मोहर पर 'भगर्क' (स्वामी अर्क या अर्क स्वामी) तथा दूसरी मोहर में अग्निवेदी पर पर-फग-अर्कह लिखा हुआ है। इसका सांकेतिक अर्थ है 'पराक्रमी अर्क स्वामी।' पशुपति की मोहर में पुरालेख
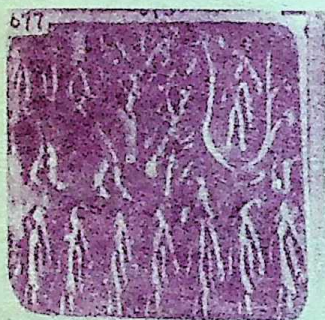
अग्निदेव की पूजा

है—रम-त्रिद (त्रिधा) ओशा (ओप) अर्थात 'तीन प्रकार से मनोहर ओजस्वी' अर्थात पशुओं से घिरी हुई अग्नि। ऋग्वेद की भांति हरप्पा काल में भी अग्नि को तीनमुखी कहा गया है। अग्निदेव के मुकुट के केंद्र में सप्तरश्मी (सूर्य की सात किरणें) बनी हुई हैं। नीचे बना हुआ हरिण अग्नि का प्रतीक है। हाथी, बाघ, भैंसा और गैंडा-जैसे पशुओं की पूजा करनेवाली जन-[illegible] सेवा में उपस्थित हैं, क्योंकि वे अग्नि पूजकों को सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोच्च मानते थे।

एक पुरालेख में अश्वासत्र अर्थात अश्वबलि लिखा हुआ है। लोथाल तथा सुरकोतड़ में अश्व की हड्डियां प्राप्त हुई हैं। इससे यह प्रमाणित हो जाता है कि हरप्पण को घोड़े की जानकारी थी।

अंत्येष्टि की क्रिया

स्थाल, दाम्ब तथा भूती स्थानों से प्राप्त साक्ष्य के अनुसार हरप्पण लोग शव का दाह संस्कार करते थे, परंतु दफनाने की प्रथा थी। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ऋग्वैदिक काल के आर्यजन दहन तथा दफन दोनों प्रथा मानते थे। लोथाल में एक बलि-वेदी पर रुक्म (स्वर्ण चक्रिका) के साथ जली हुई गोजातीय हड्डियां प्राप्त होने से यह प्रमाणित हो गया है कि हरप्पा काल में गवामयन बलि दी जाती थी। मोहन्जोदारो की मूर्ति भी, लोथाल में पाये गये रुक्म की तरह ही, एक-एक रुक्म पहिने हुए है। इस तथ्य का उल्लेख वैदिक ग्रंथों में भी मिलता है।

धार्मिक-शंका समाधान

सुमेर-देश के बट्टे तथा दीवार-सजावट लिए पाये गये शंकुफल के आधार पर हरप्पण को लिंग उपासक कहना सरासर गलत है। हरप्पण को किसी प्रकार भी लिंग उपासना से संबंधित करना, केवल झूठा आरोप लगाकर जानबूझकर बदनाम करना है।

हरप्पा तथा वैदिक दोनों काल में

एक ही धर्म था। शासक तथा रक्षक की धारणा हरप्पा तथा वैदिक दोनों काल में एक समान थी। देवताओं के अमूर्त गुण को दोनों काल में मूर्तिवत माना है और उसी गुण को शासक का गुणसूचक बना दिया था। देव तथा शासक दोनों वृश (हृष्ट-पुष्ट या हट्टा-कट्टा) से, शक (शक्ति-शाली) थे। अद्रिह (विद्वेष रहित) थे, तथा भग (उदार, मुक्त-हस्त) थे। वे शत्रु (शत्रु प) से उनकी रक्षा करते थे। यद्यपि हरप्पा तथा वैदिक दोनों काल में लोग अनेक देवताओं की कल्पना करते थे, वास्तव में वे लोग ३० या ३३ (त्रिदंश) देव मानते थे। साथ ही साथ श्रेष्ठतम देव परमेश्वर भी मान्य था, जो एक या 'पर' गुणसूचक लगाकर बताया गया है। ऋत (आज्ञा) की कल्पना, नैतिक तथा अंतरिक्षीय, दोनों द्वारा मान्य थी। इस विस्तृत वर्णन से यह साफ हो जाता है कि सिंधु-जन भारत-यूरोपीय भाषा बोलते थे, जिसका ऋग्वेद से घनिष्ठ संबंध था, और हरप्पण के धार्मिक कृत्य वही थे, जो आर्य लोगों के थे।

सिंधु-सभ्यता के रचयिता

सिंधु जन तथा मूल-मानव जाति के संबंध में भी बताना आवश्यक है। यह एक मनोरंजक तथ्य है कि मानव जाति के आधार पर खोज करने से निष्कर्ष यह निकला है कि हरप्पा, मोहंजोदारो तथा लोथाल की आबादी उसी जाति की थी, जो आज भी पंजाब, सिंध तथा गुजरात में रह रहे हैं। इसका अर्थ यही हुआ कि पांच हजार वर्ष से अधिक समय में इस क्षेत्र की आबादी में कोई मानव-वंशीय या नसली परिवर्तन नहीं हुआ है।

पुराजीवी मेडीट्रेनियन, नार्डिक तथा अल्पाइन जातियों से मिश्रित हरप्पा जाति बन गयी और उसमें मंगोल जाति भी मिश्रित हो गयी। किसी भी भाषाई समुदाय में भिन्न जाति का मिश्रण हो ही जाता है। आर्य लोग मेडीट्रेनियन लघुशिरस्क

लोथल नगर

तथा नार्डिक जाति के वर्णसंकर थे। नार्डिक लाल काफिर, आस्ट्रोल्वायड भील तथा पुराजीवी गुरखा जाति यह सब आर्य भाषा बोलते हैं। उसी प्रकार द्रविड़ भाषा भी केवल पुराजीवी मेडीट्रेनियन तमिल तथा आंध्र लोग ही नहीं, परंतु कुर्ग सहित आल्पो-दिनारी कर्नाटक के लोग, नेग्रीटो कादर, इरुला, आस्ट्रोल्वायड चेन्चू, मलसर और गोंड के लोग द्रविड़ भाषा बोलते हैं। हरप्पा के लोग मिश्रित जाति के थे।

लोथाल में पाये युगल अस्थि-पंजर से यह सिद्ध हो जाता है । युगल में एक नर तथा एक स्त्री दोनों के अस्थि-पंजर एक ही शव-कक्ष में पाये गये हैं।

उक्तलिखित तथ्यों से यह बात साफ हो जाती है, कि हरप्पा के लोग भिन्न मानव-जातियों की संतान थे। आर्य-भाषा बोलने-वाले हरप्पण ही सिंधु तथा सरस्वती घाटी तथा गुजरात में बसे हुए थे। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह मालूम करें कि मृद्धवान्न (टूटी-फूटी भाषा बोलनें-वाले) और कृष्णवर्ण: (काले रंग के) कौन लोग थे, जिनका उल्लेख ऋग्वेद में है।

इतिहास की पुनर्रचना होनी चाहिए

भाषा-विज्ञान, पुरातत्त्व उत्खनन तथा मानव-जातीय तथ्यों के आधार पर भारत के इतिहास को नये सिरे से फिर लिखना आवश्यक हो गया है। इस नये इतिहास में इस बात को ध्यान में रखना होगा कि आर्य-भाषा बोलनेवाले हरप्पण ने बिना किसी जातिगत भेदभाव के ही संघठित समाज की आधारशिला रखी थी। वर्णात्मक शैली की लिपि का आविष्कार करके, योग-विज्ञान द्वारा, मानसिक अनुशासन स्थापित करके हरप्पण लोगों ने मानव-प्रगति के लिए बहुत बड़ा योग-दान दिया।

पुरातत्त्व उत्खनन से प्राप्त तथ्य, इस बात का अखंडीय प्रमाण देते हैं, कि सिंधु नगर तथा बस्तियां केवल बाढ़ द्वारा ही नष्ट हुई थीं। आर्य आक्रामक सेना द्वारा कुछ भी नष्ट नहीं किया गया। तथाकथित जनसंहार, विदेशियों द्वारा फैलायी गयी अनुपाती अतिशयोक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस हत्याकांड का काल भी मोहंजोदारो का अंततम काल नहीं था और इसी समय के आधार पर यह साफ मालूम हो जाता है कि नगरों से भाग जाने का कारण आर्य आक्रमण कदापि नहीं था।

ऋग्वेद में उल्लिखित जल-प्रलय के बाद, सिंधु-गंगा घाटी में अन्य बसनेवालों के आने से बहुत पहले ही, हरप्पण जन अपने नगरों को छोड़कर भाग गये थे। जब सिंधु सभ्यता अपने चर्मोत्कर्ष पर थी, उस समय भी दक्षिण भारत की नव प्रस्तर सभ्यता के लोग हरप्पा से व्यापक व्यापार करते थे और स्वर्ण, रत्न आदि वस्तुएं हरप्पा भेजते थे। बदले में हरप्पा से दक्षिण भारत के लोग धातु के बने हुए औजार तथा माला के दाने मंगाते थे। यह बात अवश्य थी कि उस समय तक दक्षिण भारत में लेखन-विद्या नहीं पहुंच पायी थी।

उत्तर तथा दक्षिण भारत के बीच आपसी फूट डालकर उनमें शत्रुता उत्पन्न करने के लिए ही पाश्चात्य विदेशी विद्वानों ने यह परिकल्पना निकाली थी कि सिंधु सभ्यता द्रविड़ थी, जिसको आर्यों ने ध्वंस कर डाला। यह बात भ्रामक है।

—राधाकृष्ण कंचन द्वारा अनुवादित
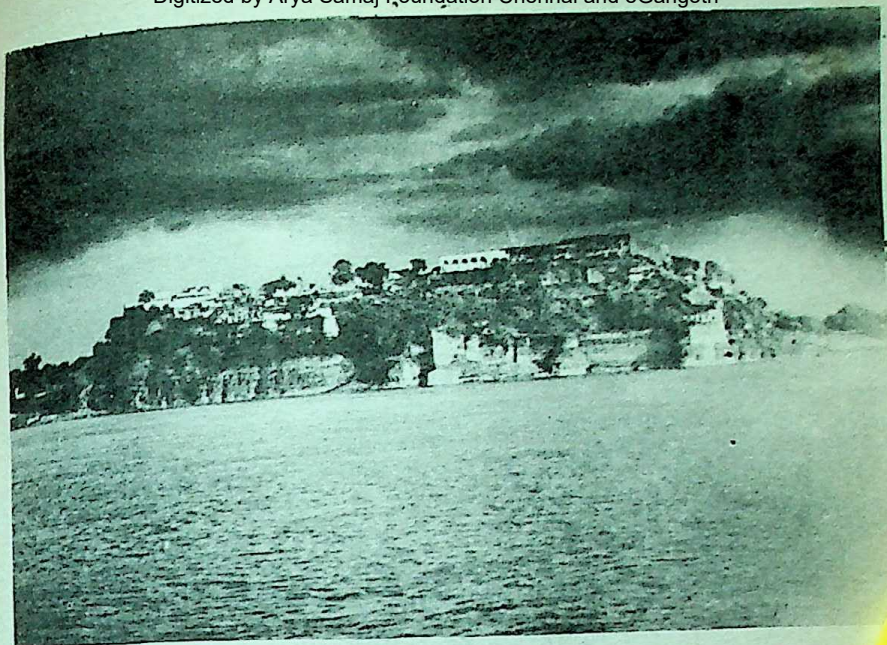
चुनार का तिलिस्मी किला

यहां बीस हजार राजा कैद थे

• शिवप्रसाद 'कमल'

"तिलिस्मी खंडहर में घुसकर पहले वे उस दालान में गये, जहां पत्थर के चबूतरे पर, पत्थर का ही आदमी सोया हुआ था। कुमार ने इसी जगह से तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाया।"

"जिस चबूतरे पर पत्थर का आदमी सोया था, उसके सिरहाने की तरफ पांच हाथ हटकर, कुमार ने अपने हाथ से जमीन खोदी। गजभर खोदने के बाद' एक सफेद पत्थर की चट्टान दिखी। जिसमें उठाने के लिए लोहे की मजबूत कड़ी लगी हुई भी दिखायी पड़ी। कड़ी में हाथ डालकर पत्थर उठाकर बाहर किया। तहखाना मालूम पड़ा, जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियां बनी थीं।"

"तेजसिंह ने मशाल जला ली, उसी

ऊपर: दुर्ग का उत्तरी भाग: पांव के पंजे-जैसा
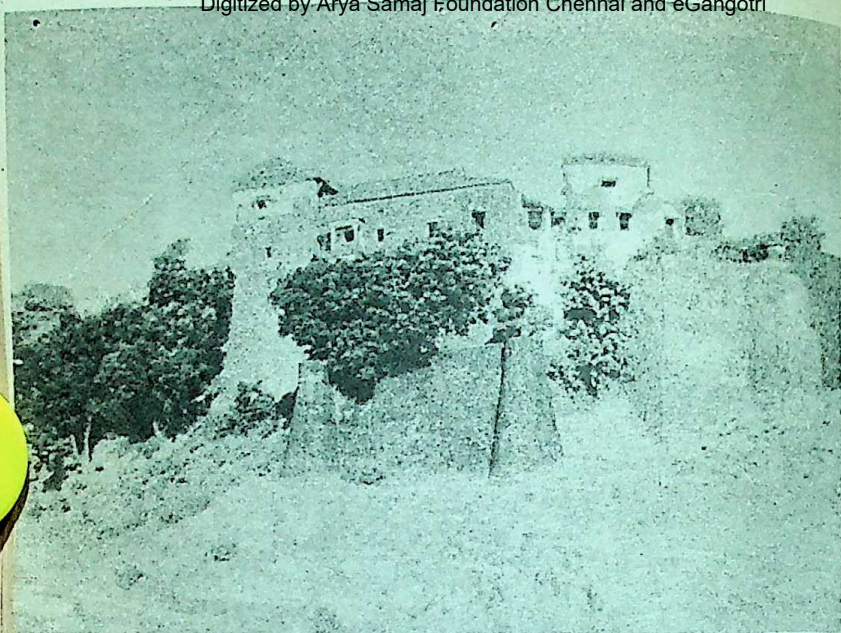
चुनार दुर्ग का रनिवास

की रोशनी में सब कोई नीचे उतरे। खूब खुलासा कोठरी देखी गयी, कहीं गर्द या कूड़े का नाम-निशान नहीं। बीच में संगमरमर पत्थर की खूबसूरत पुतली, एक हाथ में कांटी, दूसरे हाथ में हथौड़ी लिये खड़ी थी।"

"कुमार ने उसके हाथ से कांटी-हथौड़ी लेकर, उसी के बाएं कान में कांटी डाल हथौड़ी से ठोंक दी, साथ ही उस पुतली के होंठ हिलने लगे और उसमें से बाजे की-सी आवाज आने लगी। मालूम होता था, मानो वह पुतली गा रही है . . ।"

उपरोक्त अंश महान उपन्यासकार बाबू देवकीनंदन खत्री की प्रथम रचना 'चंद्रकांता' के हैं, जिसमें नौगढ़ के राजकुमार वीरेन्द्रसिंह अपने ऐयारों के साथ चुनारगढ़ का तिलिस्म तोड़ रहे हैं। खत्रीजी ने 'चंद्रकांता' (चार भाग), 'चंद्रकांता संतति' (२४ भाग) और 'भूतनाथ' (२१ भाग) में चुनार का अद्भुत और आश्चर्यजनक वृत्तांत लिखा है। ये वही उपन्यास हैं, जिनके प्रकाशित होते ही तहलका मच गया था, एवं लोगों को इसे पढ़ने हेतु, हिंदी सीखनी पड़ी थी।

अब प्रश्न उठता है कि आखिर चुनार दुर्ग तथा इसके आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य को उन्होंने अपनी रचनाओं में इतनी प्रधानता क्यों दी? क्या इसलिए कि वह काशी के थे और चुनार उनके

स्वर्गीय देवकीनंदन खत्री

तिलिस्मी खंडहर में घुसकर पहले वे उस दालान में गये, जहां पत्थर के चबूतरे पर, पत्थर का ही आदमी सोया हुआ था, कुमार ने इसी जगह से तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाया ?

एकदम पड़ोस में था, या फिर सचमुच यह किला तिलिस्मी है, जहां विशाल खजाना सुरक्षित रखा गया था? उत्तर के लिए हमें भी इतिहास की अंधेरी गुफाओं में, तिलिस्म तोड़ने के लिए उतरना पड़ेगा। आइए चलें।

प्रचलित कथाएं

चुनार के संबंध में अनेक स्थलों पर विभिन्न कथाएं मिलती हैं। एक कथा यह भी है कि जरासंध द्वारा २० हजार राजा (तब कई राजा छोटे-छोटे ताल्लुकेदार की तरह होते थे) इसी दुर्ग में कैद थे, जिनका उद्धार कृष्ण ने जरासंध वध के पश्चात किया था। महाभारत में ही इसे एक अन्य स्थल पर चांडालगढ़ कहा गया है। भारत सरकार के शिक्षा-मंत्रालय द्वारा प्रकाशित 'ऐतिहासिक स्थानावली' पुस्तक के लेखक श्री वी. के. माथुर ने' महाकवि कालिदास के 'रघुवंश' से उद्धरण देते हुए, कुशावती से अयोध्या को पुनः राजधानी बनाने हेतु, कुश के ससैन्य लौटते समय विंध्याचल पार करने का उल्लेख किया है—**व्यलडघयद्विन्ध्य मुपायनानि पश्यन्पुलिंदैरुपपादितानि, रघु. १६–३२।** विंध्य के पश्चात कुश की सेना ने गंगा को भी हाथियों के सेतु द्वारा पार किया था—**तीर्थे नदीयेंगज सेतुबंधा प्रतीपगामुत्तरतोऽस्य गंगाम् अयत्नबाल व्यजनीब भूवुर्हंसानभोलंधन लोल पक्षा . · ,रघु. १६–३३।**

अर्थात—"जिस समय कुश पश्चिमवाहिनी गंगा को गजसेतु द्वारा पार कर रहे थे, आकाश में उड़ते हुए चंचल पंखों वाले हंसों की श्रेणियां उनके ऊपर डोलती हुई, चंवर के समान जान पड़ती थीं।" यह स्थान चुनार ही है, जहां कुश ने गंगा

चुनार दुर्ग पर कब, किसका अधिकार रहा

विक्रमादित्य —	५६ ई. पूर्व
पृथ्वीराज चौहान—	१२वीं शताब्दी
ज्वालासेन—	१२वीं शताब्दी
शहाबुद्दीन गौरी—	सन ११९४
स्वामी राजा—	सन १३३३
मोहम्मदशाह (जौनपुर)—	सन १४४४
सिकंदर लोदी—	सन १४९५
बाबर—	सन १५२९
शेरशाह सूरी—	सन १५३०
हुमायूं—	सन १५३६
इस्लाम शाह—	सन १५४५–५२
मोहम्मद आदिल—	सन १५५२
आदिलशाह का दास फत्तू—	सन १५६४
अकबर—	सन १५६४
जहांगीर—	सन १६०५
औरंगजेब—	सन १६५८
सरदार खान अवध—	सन १७५०
ब्रिटिश (प्रथम बार)—	सन १७६५
ब्रिटिश (द्वितीय बार)—	सन १७७२
भारत सरकार—	सन १९४७

को पार किया था; क्योंकि इसी स्थान पर गंगा पहली बार हिमालय से चलकर विंध्यपर्वत का स्पर्श करती हैं और यहीं उत्तर-पश्चिम मुड़कर बहती हुई, काशी पहुंचकर, फिर सीधी बहने लगती हैं।

भौगोलिक संरचना एवं प्राकृतिक सुषमा

काशी के दक्षिण, विंध्य पर्वत मालाओं की गोद में अवस्थित चुनार नगर तथा इसके पार्श्व में विंध्य पर्वत खंड पर निर्मित ऐतिहासिक दुर्ग, युगों-युगों से रहस्य एवं कुतूहल का केंद्र रहा है। न जाने कितनी सदियां बीत गयीं, इस दुर्ग को बने हुए, न जाने कितने राजाओं, सम्राटों, बादशाहों-शहंशाहों का अधिकार इस पर रहा, न जाने कितनी कथाएं प्रचलित हुईं, इसके सबंध में, किंतु यह मूक ही बना रहा। इसने अपनी खुद जुबान नहीं खोली।

काश्याश्च दक्षिणे भागे चरणाद्रिश्च गह्वरे
तत्र गंगेश्वरः साक्षात् महादेवो विराजते।

चुनार नगर वाराणसी-मिर्जापुर के मध्य २५।८ अक्षांश तथा ८२।५६ देशांतर पर स्थित है। नगर के पश्चिम में ऐतिहासिक दुर्ग है, जिसका स्पर्श करती हुई भागीरथी गंगा प्रवाहित होती हैं। पूर्व में कलकल झरती-बहती है, जरगो नदी, दक्षिण में विंध्य पर्वत श्रेणियों की अटूट शृंखला और नगर के उत्तर में है, ढाब का उपजाऊ हरीतिमायुक्त मैदान। नगर पूर्णतया गंगा-जरगो के मध्य बसा हुआ, अलकापुरी-सा भासित होता है यह ऐतिहासिक दुर्ग ८०० मीटर लंबा १३३ से ३०० मीटर चौड़ा तथा ८० से १७५ मीटर ऊंचा है।

ऐतिहासिक तथ्य

अपनी विशिष्ट भौगोलिक संरचना के कारण, इस दुर्ग के निर्माण के संबंध में अनेक धारणाएं प्रचलित हैं। कहते हैं यह दुर्ग महाराज भर्तृहरि के समय का है। इनकी समाधि दुर्ग के अंदर सोनवां मंडप के निकट है। इस समाधि की देख-रेख

दुर्ग में स्थित रहस्यमय बावड़ी : उपन्यासों में वर्णित तिलस्मी घटनाओं का केंद्रबिंदु
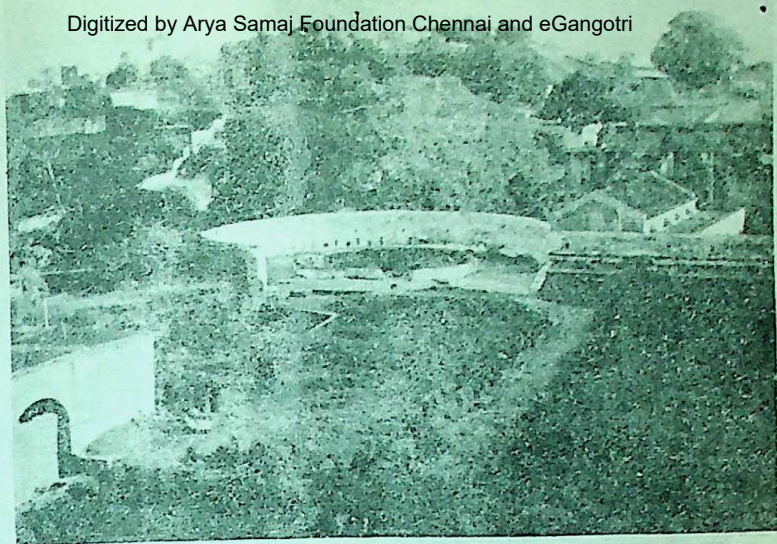
का भार सम्राट अकबर ने स्वयं लिया था तथा समाधिस्थल पर नियुक्त पुजारी के वंशजों के पास आज भी सम्राट अकबर द्वारा जारी राज्यादेश सुरक्षित हैं। किंवदंती है कि राज्य से संन्यास लेने के पश्चात भर्तृहरि के वैरागी मन को यहां विश्राम मिला था और वह बोल उठे थे—

सा रम्या नगरी महान्स नृपतिः सामन्तचक्रम् चतत्।
पार्श्वे तस्य च साऽपि राजपरिषत्ताश्चन्द्र बिम्बाननाः।।
उद्दीप्तः स च राजपुत्र निवहस्ते बंदिनस्ता कथाः।
सर्वं यस्य वंशगताः स्मृति पदं कालयस्मै नमः।।

अर्थात—पहले यहां कैसी सुंदर नगरी थी। इसका राजा कैसा उत्तम था और उसका राज्य कैसा दूर तक फैला हुआ था। उसके निकट सभा कैसी होती थी तथा चंद्रमुखी स्त्रियां कैसी शोभायमान थीं। राजा के पुत्रों का समूह कैसा प्रचंड था। कैसे वे बंदीगण थे और कैसी अच्छी कथा कहते थे। अब वे सब जिस काल के वशीभूत हो गये, उस काल को नमस्कार है।

यहां नैना नाम की एक योगिनी ने कठिन साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त की थी, जिससे कालांतर में लोग इसे नैनागढ़ कहने लगे। चुनार के आसपास रंग-बिरंगे पत्थरों की बहुत-सी खानें हैं। इन पत्थरों तथा यहां के कारीगरों द्वारा देश के विभिन्न भागों में अनेक कलात्मक मंदिर-मठ, स्मारक तथा भव्य-भवन आदि बनाये गये हैं। रंग-बिरंगे पत्थरों की इन विशेषताओं के कारण, इसे आज भी पत्थरगढ़ कहते हैं।

चुनार का किला मुख्यतः बलुआ पत्थरों से निर्मित है। मुख्य द्वार लाल पत्थरों से बना है, जिसपर सुंदर नक्काशी

की गयी है। भूमितल से काफी ऊंचाई पर बना दुर्ग का परकोटा दो मीटर चौड़ा है, जिसके बीच-बीच में तोपों को चलाने के लिए स्थान-स्थान पर बुर्ज बने हुए हैं। किले में स्थित बावड़ी काफी गहरी एवं रहस्यमय है। स्व. खत्रीजी ने इसका प्रयोग कई स्थलों पर अपने उपन्यासों में किया है। सोनवां मंडप से सटे काफी गहरे तहखाने हैं, जिनमें बनी सुरंगों का संबंध दूर-दराज के राज्यों से माना जाता है। इस दुर्ग के संबंध में विस्तृत वर्णन स्व. भानुप्रताप तिवारी की सन १८८० में प्रकाशित पुस्तक 'तारीख चुनार' तथा डॉ. बी. एल. शर्मा की पुस्तक 'दि हिस्ट्री ऑव चुनार' में मिलता है।

खत्रीजी का रचना-संसार एवं चुनार-दुर्ग

बाबू देवकीनंदन खत्री काशी के प्रमुख रईस थे। अतः आसपास के राजा-महाराजाओं से उनका निकट का संबंध था। अकसर महफिलें और बैठकें जमती थीं, जिनमें आसपास के राज्यों में होनेवाली घटनाओं की चर्चा होती रहती थी। काशी में स्वयं विभिन्न क्षेत्रों—जनपदों के राजाओं के निवास थे, जहां किस्से-कहानियों का दौर चला करता था। वह हिंदी क़हानियों-उपन्यासों का विकास काल था। हैरतअंगेज, रहस्यपूर्ण, चमत्कारिक कथा-कहानियां अधिक पसंद की जाती थीं।

खत्रीजी जहां एक ओर रईस थे, वहीं दूसरी ओर शिकार-प्रेमी भी। अपने लाव-लश्कर के साथ वह मिर्जापुर, चुनार, नौगढ़, चकिया आदि के जंगलों में शिकार के निमित्त जाया करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि खत्रीजी की कल्पना आकार पाने के लिए बेचैन हो उठी। फलतः सन १८८८ में उनका पहला उपन्यास 'चंद्रकांता' धारावाहिक रूप से छपना शुरू हुआ। इस उपन्यास में जहां एक ओर प्रकृति का सजीव, सरस चित्रण हुआ, वहीं दूसरी ओर ऐयारों के हैरतअंगेज कारनामें तथा तिलिस्मी घटनाओं ने पाठकों को आत्मविभोर कर दिया। 'भूतनाथ' में एक स्थल पर वह लिखते हैं—"चुनारगढ़ से लगभग चार कोस हटकर जंगल के किनारे पर बने हुए एक बड़े और पक्के कुएं पर हम पाठकों को ले चलते हैं। सुबह का समय है, सूरज अभी नहीं निकला है, फिर भी उसकी आवाई जान रंग-बिरंगी चिड़ियां जाग उठी हैं और टहनियों पर बैठकर अपनी मनोहर बोलियों से जंगल को गुंजा रही हैं।"

खत्रीजी के सभी उपन्यासों में तत्कालीन समाज का जीवंत चित्रण हुआ है। उनके द्वारा कल्पित तिलिस्मी घटनाएं और कुछ नहीं, मात्र भविष्य में होनेवाले वैज्ञानिक आविष्कार हैं, उस समय जो तिलिस्म थे, आज वे वैज्ञानिक आविष्कार हैं।

देखना यह है कि बीसवीं सदी में, किस शोधकर्ता के द्वारा चुनार के किले का तिलिस्म टूटता है?

कल्पना मंदिर, चुनार मिर्जापुर (उ. प्र.)

मजे लीजिए कठपुतली वानर के

• धीरेन्द्रकुमार दीक्षित

दिल्ली का एक भव्य सभा-गृह। दर्शकों से खचाखच भरा। आज मनोरंजन का अनोखा कार्यक्रम है। कौतूहल और जिज्ञासा से लोग कलाकार का इंतजार कर रहे हैं। कलाकार अपनी आकर्षक वेश-भूषा में मंच पर आता है, साथ में उसके है, उसका 'पार्टनर'—मंको नाम का बंदर। मंको अपने चटपटे-लटपटे संवादों से प्रेक्षकों के आकर्षण व प्रशंसा का केंद्र-बिंदु बन गया है। कलाकार के प्रश्नों को बड़े मार्मिक ढंग से उत्तर देता है, मंको। हंसी के कह-कहों के बीच प्रोग्राम समाप्त होता है। तभी एक वयोवृद्ध सज्जन मंच पर पधारते हैं और मंको को एक केला छीलकर खाने को देते हैं। उन्हें लगा कि मंको सचमुच बंदर है, जिसे आर्टिस्ट ने इनसान की तरह बोलना सिखा दिया है। जब कलाकार उन्हें बताता है कि मंको 'कठपुतली वानर' है तथा दरअसल उसके संवाद में ही बोल रहा था, तो वे वृद्ध महाशय आश्चर्य-चकित होकर कलाकार की ओर घूर-घूरकर देखने लग जाते हैं।

क्या है यह अद्‍भुत कला और कौन था, वह कलाकार? 'शब्द-भ्रमकला' के नाम से मशहूर इस कला में पारंगत तरुण कलाकार हैं—३० वर्षीय रामदास पाध्ये, जो अंतरराष्ट्रीय ख्याति के सर्वाधिक

ऊपर: रामदास अपनी पत्नी अपर्णा के साथ

सिंसीनाटी में आयोजित अंतरराष्ट्रीय शब्द-भ्रमकार सम्मेलन में रामदास पाध्ये सम्मेलन के अध्यक्ष के साथ

लोकप्रिय भारतीय शब्द-भ्रमकार हैं। व्यवसाय से तो वे यंत्रकर्मी (मेकेनिकल इंजीनियर) हैं, पर स्वभाव व प्रशिक्षण से हैं—कलाधर्मी।

शब्द-भ्रमकला है क्या ?

शब्द-भ्रमकला का अंगरेजी पर्यायवाची शब्द 'वेंट्रिलोक्विज्म', लेटिन भाषा के दो शब्दों 'वेंटर' यानी पेट व 'लोक्वी' यानी 'बोला गया' के मेल से बना है। पहले यह भ्रामक धारणा थी कि शब्द-भ्रमध्वनि का उद्‌गम स्थान उदर या पेट है। प्राचीन भारती विद्वानों का ख्याल था कि शब्द-भ्रमकारी आवाज नाभि से उत्पन्न होती है। यूनानी लोग भी शब्द-भ्रमकारों को 'एंग्रे-स्ट्रीमेंटिस' (पेट से भविष्य बतानेवाले) नाम से संबोधित करते थे। जबकि वस्तु-स्थिति यह है कि शब्द-भ्रम-प्रक्रिया में आवाज निकालते समय पेट का कोई योगदान या उपयोग नहीं होता। आवाज का उद्‌गम हमेशा की तरह सामान्य शारीरिक अवयवों की मदद से ही होता है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि आवाज निकालने की प्रणाली अप्राकृतिक है तथा शरीर-रचना-शास्त्र पर आधारित नहीं होती।

शब्द-भ्रम के संदर्भ में प्राचीनतम उल्लेख लगभग ई. पू. २,००० में राजा सर्गोन द्वितीय द्वारा लिखित 'चाल्डियन बुक ऑव प्रॉफेसीज' नामक ग्रंथ में मिलता है। हिब्रू तथा मिस्र के पुरातत्व विज्ञान में भी शब्द-भ्रम-विषयक प्रमाण उपलब्ध हैं। फ्रेड रसेल को आधुनिक शब्द-भ्रमकला का जनक कहा जाता है।

भारत में शब्द-भ्रमकला का इतिहास करीब सौ साल पुराना ही है। तब प्रो नाग नामक एक बंगाली शब्द-भ्रमकार कपड़े की बनी गुड़ियों की मदद से कार्य-क्रम प्रस्तुत करते थे। आज से लगभग ६० साल पहले रामदास पाध्ये के पिता स्व. यशवंतराव केशव पाध्ये ने शब्द-भ्रमकला का सर्वांगीण अध्ययन कर उसका कायाकल्प किया। तकनीकी दृष्टि से श्रेष्ठ विदेशी कठपुतलियां भारत में सर्वप्रथम उन्होंने ही लाकर शब्द-भ्रम प्रयोगों में, उनका यथेष्ट उपयोग किया।

शब्द-भ्रमकला में उनकी महारत को गौरवान्वित करते हुए औंध रियासत की ओर से उन्हें 'शब्द-भ्रमकलारत्न' की उपाधि दी गयी थी। भारत में उन्हें आधुनिक
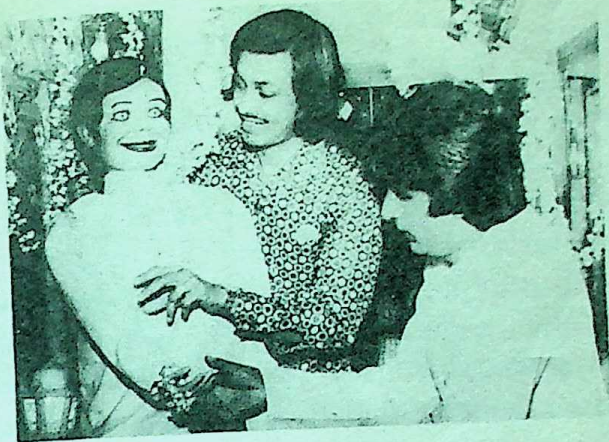
'महान' फिल्म में अमिताभ बच्चन को 'प्लेबैक' देनेवाले रामदास और उनकी कठपुतली

शब्द-भ्रमकला का जनक कहा जाता है। एक साथ दो पात्रों (गुड़ियों) के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत करने की परंपरा, उन्होंने ही शुरू की थी। शब्द-भ्रम और संगीत का संगम भी उन्हीं की मस्तिष्क की उपज थी। 'डॉल्स' के माध्यम से उन्होंने जादू-प्रयोग तथा हारमोनियम-वादन करवाने में भी ख्याति अर्जित की थी। उनकी एक 'डॉल' को करीब २० साल पूर्व की हिंदी फिल्म 'अकेलीं मत जइयो' में राजेंद्रकुमार के साथ काम में लाया गया था।

अमिताभ बच्चन की सराहना

आगामी हिंदी फिल्म 'महान' में 'शब्द-भ्रमकार' के रूप में दर्शक अपने चहेते अभिनेता अभिताभ बच्चन को देख सकेंगे। रामदास पाध्ये ने 'प्लेबैक' पद्धति से अमिताभ को शब्द-भ्रमी आवाज दी है तथा फिल्म में पाध्ये की 'डॉल्स' का भी उपयोग किया है। इसकी पृष्ट-भूमि की चर्चा करते हुए रामदास ने कहा, "१९८० में 'फिल्मफेयर अवार्ड नाइट' के अवसर पर मैंने अपना शब्द-भ्रम-कार्यक्रम पेश किया, जिसे अमिताभजी ने देखा व सराहा। तब हमारा कोई परस्पर परिचय नहीं था। २-३ माह बाद ग्रांट मेडिकल कालेज में अमिताभ पुनः मेरे प्रोग्राम में आये व मेरी कला की उन्होंने सराहना की। इसके कुछेक महीने पश्चात 'तबस्सुम हिट परेड' कार्यक्रम में अमिताभ प्रमुख अतिथि थे। प्रशंसकों की भीड़ को चीरते हुए वे मेरे पास आये व मुझे 'सेठ स्टूडियो' में दो दिन बाद आकर मिलने को कहा, मैं तब समझा नहीं, पर जब स्टूडियो गया, तब पता चला कि 'महान' फिल्म के लिए अमिताभजी मेरी

सेवाएं चाहते थे। मैं इस गुणग्राहकता पर मुग्ध था।"

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

शब्द-भ्रमकार दूर से आती हुई आवाज को 'इफेक्ट' (प्रभाव) प्रदान करने के लिए पहले तो अपनी आवाज को विस्तृत (फैली हुई) बनाता है, फिर धीरे-धीरे 'वॉल्यूम' मॉडयूलेट कर (कमकर या बढ़ाकर) क्रमश: ध्वनि की तीव्रता बढ़ाता जाता है। और अधिक नजदीक आने का आभास कराता है। विशिष्ट प्रकार से भिन्न-भिन्न प्रकार की आवाज निकालने में कुछ सीमाएं-मर्यादाएं जरूर हैं-जैसे आवाज दूर तक सुनायी न देना। अत: सभा-गृह में सूक्ष्म ध्वनिविस्तारक यंत्रों की कार्य-क्षमता उत्तम होनी अनिवार्य है। उत्कृष्ट ध्वनि-संयोजन तथा संगीत-वाद्ययंत्रादि का मेल कार्यक्रम में चार चांद लगा सकता है। १९७९ में सिसिनाटी में हुए 'अंतरराष्ट्रीय शब्द-भ्रमकार सम्मेलन' में एकमात्र आमंत्रित भारतीय शब्द-भ्रमकार थे—रामदास पाध्ये। वहां रामदास ने 'योग एंड ड्रग्स' (योग तथा मादक द्रव्य) नामक अपना कार्यक्रम पेश किया। 'वेंट्रीयोगा' (शब्द-भ्रमयोग) का यह प्रयोग अत्यंत सफल रहा। रंग-बिरंगी वेश-भूषा तथा उपयुक्त साज-सज्जा के कारण कथावस्तु विशुद्ध भारतीय होने से अमरीकी नागरिकों को यह प्रयोग अभिनव तथा रुचिकर लगा। वहां एन. बी. सी. (नेशनल ब्राडकास्टिंग कॉरपोरेशन) के 'रीयल पीपुल' कार्यक्रम के अंतर्गत रामदास ने अपनी कला का प्रदर्शन किया, जिसे सारे कनाडा व अमरीका में दिखाया गया। ए. बी. सी. (अमरीकन ब्राडकास्टिंग कॉरपोरेशन) में भी 'आंखों देखी वृत्त-कथा' के तहत रामदास पाध्ये को 'स्पेशल फोकस' मिला।

राष्ट्रपति भवन में प्रदर्शन

हाल में ही 'शिपिंग कॉरपोरेशन ऑव इंडिया' की ओर से चिदंबरम् नामक जहाज पर मद्रास से सिंगापुर की अपनी यात्रा के दौरान बोलती कठपुतलियों का कार्यक्रम रामदास ने पेश कर जहाज पर यह मनोरंजन कार्यक्रम प्रस्तुत करने का श्रेय लिया। रामदास ने भारत की कई महान विभूतियों के समक्ष अपने कार्यक्रम पेश किये हैं। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के निवासस्थान पर उनके सामने व राष्ट्रपति स्व. वी. वी. गिरि के सामने राष्ट्रपति भवन में प्रस्तुत किये गये कार्यक्रमों को वे अविस्मरणीय मानते हैं। राष्ट्रपति भवन में कार्यक्रम के दर्शक थे, कुल तीन-खुद गिरि साहब, उनके सचिव नीलकंठन् व उनका अंगरक्षक। इसके विपरीत शिवाजी पार्क (बंबई) का वह कार्यक्रम भी भुलाया नहीं जा सकता जिसमें सबसे ज्यादा ३०,००० दर्शकों के सामने रामदास ने शब्द-भ्रमकला का आम प्रदर्शन किया।

रामदास पाध्ये को शब्द-भ्रम की कला अपने पिता यशवंतराव पाध्ये से विरासत में मिली। आठ साल की उम्र से ही बालक
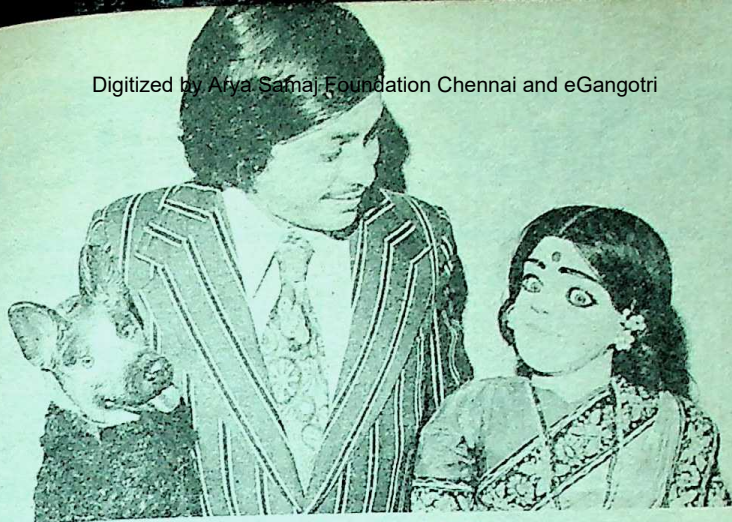
रामदास पाध्ये अपने पात्रों के साथ

रामदास ने यह कला सीखनी शुरू की व ८-९ साल बाद सतत अभ्यास कर १९वें साल में अपना पहला 'पब्लिक प्रोग्राम' दिया। रामदास बताते हैं, "१९७२ में मैं पहली बार अमरीका गया। वहां शब्द-भ्रमकला का प्रचार-प्रसार व विस्तार देखकर, मेरे जेहन में यह ख्याल उभरा कि क्यों न भारत में भी इस कला को विकसित कर उसे जनप्रिय बनाया जाए। वहां स्पेशल कोर्स 'टेलिवेंट', भी मैंने पूरा किया।"

परिवार का सहयोग

शब्द-भ्रमकला का जुनून अकेले रामदास पर सवार हो, तो वैसी भी बात नहीं। सारा पाध्ये परिवार इस 'आनंद-यात्रा' में सहभागी है! रामदास की एक बहन सुश्री उषा पाध्ये कठपुतलियों के कपड़े तैयार कर परिधान बनाती हैं, तो दूसरी सुश्री शीला पाध्ये के गायिका होने से भी काफी फायदा होता है। बड़ा भाई राजेंद्र पाध्ये चार्टर्ड अकाउंटेंट है। वह रामदास के सभी विदेशी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाता है तथा आर्थिक पक्ष पर भी नजर रखता है।

रामदास पाध्ये की पत्नी अपर्णा रंगमंच की होनहार कलाकार तथा संगीत-स्वर-साधिका हैं। शब्दभ्रमकला में अपनी अभिरुचि का जिक्र करते हुए अपर्णा रामदास ने बताया, "मैं खुद कला की पुजारिन हूं। अपने गाने के 'प्रोग्राम्स' में मैं खुद व्यस्त रहती हूं। अपने पति की मदद मैं 'स्क्रिप्ट्स' लिखने में करती हूं।"

रामदास पाध्ये नवोदित कलाकारों को प्रशिक्षण देने के लिए तैयार हैं, पर वे धैर्य का उनमें अभाव पाते हैं, इस उपेक्षित कला के पुनरुज्जीवन की दिशा में केंद्र व राज्य सरकारों के शिक्षा व संस्कृति विभागों तथा विभिन्न अकादमियों (जैसे संगीत-नाटक अकादमी) द्वारा संगठित प्रयास होना जरूरी है।

—मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, आइ. आइ. टी. पवई, बंबई-४०००७६

तनाव से मुक्ति

• डॉ. सतीश मलिक

पुस्तकों का असर

क. ख. ग., फरीदाबाद : मैं २२ वर्षीय अविवाहित युवक हूं, ब्रह्मचर्य पर इतनी किताबें पढ़ ली हैं कि अपने आपको नपुंसक समझने लगा हूं। शर्म के मारे यह बात किसी को नहीं बता पाता; हकीमों तथा सेक्स-विशेषज्ञों पर विश्वास नहीं होता, क्या करूं? कृपया मेरे निम्न प्रश्नों का समाधान शीघ्र दें :

१. अगर नपुंसक (मानसिकता) हो जाए, तो क्या डॉक्टरी परीक्षण द्वारा पता लगाया जा सकता है कि व्यक्ति नपुंसक है या नहीं। ऐसा परीक्षण कहां पर कराया जाए? २. क्या यौगिक, प्राकृतिक या ऐलोपैथिक चिकित्सा द्वारा नपुंसकता ठीक हो सकती है?

३. मुझे आत्महत्या तक के विचार आते हैं, इसलिए कि मैं नपुंसक हूं।

डॉक्टर साहब! इनसे कैसे छुटकारा मिले।

पहले तो आत्महत्या-जैसी बात आपको सोचनी नहीं चाहिए। ऐसे विचार आपकी तनावपूर्ण व उदासीन मनःस्थिति व हीन-भावना की वजह से हैं। इस मनःस्थिति में सेक्स उत्तेजना अस्थाई रूप से खतम हो जाती हैं, और व्यक्ति अपने आपको नपुंसक मान लेता है।

नपुंसकता डॉक्टरी परीक्षण द्वारा जानी जा सकती है। इसलिए घबराने की आवश्यकता नहीं, मस्तिष्क से ऐसे विचार अवश्य त्याग दें कि अप्राकृतिक मैथुन से नपुंसकता बढ़ रही है।

उधेड़बुन कहां ले जाएगी?

बलराम सूरी, दिल्ली : मैं साढ़े उनतीस वर्षीय साधारण कद व शरीर का व्यक्ति हूं। सरकारी कर्मचारी हूं। ८५० रु. प्रति माह वेतन पाता हूं। मेरी शादी फरवरी '८० में बैंक में कार्यरत युवती से संपन्न हुई है।

योजनाएं बहुत जल्दी, व हर समय बनाता रहता हूं, पर कभी पूरी नहीं हुई। मैं हर समय उदास, सुस्त और चिड़चिड़ापन लिए रहता हूं। मित्र बहुत कम, पर जब बना लेता हूं, तब आत्मसमर्पण पर पहुंच जाता हूं। अकसर साधु-संन्यासी बनने या मरने की इच्छा होती है। घर में सभी मांसाहारी हैं, पर मैं ११ वर्षों से

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

अपनी इच्छा से शाकाहारी बना हुआ हूं। क्या करूं, कहां जाऊं, मेरी आत्मा को कहां शांति मिलेगी, मेरा भविष्य क्या होगा? कृपया इन प्रश्नों का उत्तर हो, तो लिखें; मैं आभारी रहूंगा।

आप इस समय विषाद की अवस्था से गुजर रहे हैं। इसकी चिकित्सा १०० प्रतिशत संभव है। आप मनोचिकित्सक से अवश्य मिलें।

सूनापन कैसे दूर करूं

देवीशंकर शर्मा, गाजियाबाद : २९ वर्ष का युवक हूं। ७ वर्ष पूर्व मेरी शादी एक अपंग से हुई। दो बच्चे भी हो गये। एक वर्ष से पत्नी मायके में है। वह समझती है कि मैं उसकी उपेक्षा करता हूं। सूनापन दूर करने हेतु, क्या मैं दूसरी शादी कर सकता हूं—क्या पत्नी अपंग हो तो ऐसी कुछ व्यवस्था कानून में है, कृपया स्पष्ट करें।

कानून में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं। अपंग पत्नी और आप में जो दूरी आ गयी है—उसके लिए आप दिल्ली के किसी बड़े अस्पताल के मनोविभाग में दिखाकर पुनः ठीक करा सकते हैं।

अ. ब. स., लखनऊ : १७ वर्षीय युवक हूं। इस वर्ष विज्ञान से इंटरमीजिएट परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है। पिताजी की इच्छा मुझे डॉक्टर बनाने की थी, परंतु मैं बचपन से ही इंजीनियर बनना चाहता था। आई. आई. टी. की प्रतियोगिता परीक्षाओं में स्थान नीचे आने से कोई इंजीनियरिंग की ब्रांच नहीं मिली। अब पिता व रिश्तेदार हर समय ताना कसते रहते हैं। पिताजी ने क्रोधवश बी. ए. के लिए नाम लिखवा दिया है। कहते हैं विज्ञान इससे नहीं चल पाएगा, नहीं तो इंजीनियरिंग में ही आ जाता। मैं अपने को समर्थहीन, अयोग्य मानने लगा हूं। कृपया समाधान सुझाएं।

डॉ. सतीश मलिक

सबसे बड़ी गलती मां-बाप तब करते हैं, जब वह अपने बच्चे की रुचि, अरुचि का ध्यान किये बिना, उसके लिए उसका 'कैरियर' आदि तक चुन लेते हैं। मैंने देखा है कि कई बार यह अपने घर में बीमार व्यक्ति को सम्हालने के लिए या फिर पिता की जमी हुई 'प्रैक्टिस' को चलाने के लिए किया जाता है।

आप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए, यह आपकी बुद्धि व रुचि का प्रमाण है। प्रतियोगिता आजकल बहुत कठिन है। यदि आप पूर्णतया अब अपने-आपको इसकी तैयारी में जुटाएं, तो अगली बार सफलता हासिल कर सकते हैं।

आपके पिता व रिश्तेदारों को चाहिए कि वे आपका साहस बढ़ायें। क्रोधवश कोई महत्वपूर्ण फैसला करना बुद्धिमानी नहीं। आपको अपने साहस, कठिन निश्चय व मेहनत का परिचय देना चाहिए।

घरेलू उपचार

हिचकी

तीक्ष्ण् पदार्थों के सेवन से, उत्तेजक दवा अधिक खाने से, लाल मिर्च, तीक्ष्ण मसाला आदि के सेवन से, बहुत से रोगों में उपद्रव के रूप में हिचकी रोग हो जाता है। हिचकी साधारण तथा भयंकर दो प्रकार की हो जाती है।

निम्नलिखित किसी एक उपाय के करने से लाभ होता है:—

(१) एक छोटा चम्मच तुलसी का रस, आधा चम्मच शहद, एक साथ मिलाकर सुबह-शाम लें।

(२) सोंठ का चूर्ण १० ग्राम, पुराना गुड़ १० ग्राम, पीसकर, दिन में बार-बार सूंघते रहें।

(३) पोदीने के पत्ते मुख में रखकर चूसते रहें।

(४) मोर के पंख जलाकर पीसकर रखें, आधा ग्राम पिसा मोर-पंख, एक चम्मच शुद्ध शहद के साथ सुबह, दोपहर, शाम सेवन करें।

(५) गाय का शुद्ध गर्म दूध मिसरी डालकर आहिस्ता-आहिस्ता पीयें।

(६) ताजे अदरक के छोटे-टुकड़े बनाकर मुख में रखकर चूसते रहें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा
—बी ५१७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

उसे पहचान नहीं पाती

अ. ब. स., गुना : मैं बी. ए. की अट्ठारह वर्षीय छात्रा हूं। यों तो पढ़ते समय मेरी स्मरण-शक्ति बिल्कुल ठीक रहती है, किंतु जब भी मैं किसी व्यक्ति से (जिसे मैं पहले भी मिल चुकी हूं) मिलती हूं—उसे पहचान नहीं पाती। इसी तरह बहुत बार अनजाने व्यक्ति से किसी और के भ्रम में नमस्ते कर देती हूं। फिर बाद में चिंताग्रस्त हो जाती हूं कि वह व्यक्ति क्या सोचेगा। बेहद पछतावा भी होता है! क्या करूं समझ नहीं आता।

अट्ठारह वर्ष की अवस्था में प्रायः लोग नाम व चेहरे नहीं भूल पाते। चूंकि पढ़ते समय आपकी स्मरण-शक्ति ठीक है, इसीलिए आपकी याददाशत में कोई भी खराबी नहीं। आप अंर्तमुखी प्रवृत्ति की हैं, अपने खयालों में खोये रहने के कारण ही दूसरे को पहचानने में गलती करती हैं। वास्तव में हमारी स्मरण-शक्ति का रुचि से संबंध होता है। आपकी पढ़ाई में रुचि है, इसीलिए आपको वहां कठिनाई प्रतीत नहीं होती।

आपको अपने आप में थोड़ा परिवर्तन लाना होगा, बहिर्मुखी बनें। और लोग आपकी खिल्ली उड़ायेंगे, इस भय को मन से निकाल दें। फुरसत के समय दिनभर आप जिन लोगों से मिलीं... उनके चेहरों को याद करें... उनके नाम सोचें...! धीरे-धीरे आपको अपने से कोई शिकायत न रहेगी।

सीपिकाएँ

सृजन

भगवान करे हम ऐसी जिंदगी बितायें
जैसे कोई बदसूरत आदमी
रुंधे हुए गले से गाये
और गाने के दौरान
अचानक खूबसूरत हो जाए . .

घिसी हुई ब्लेड

रोज बढ़ जाती हैं, परेशानियां
दाढ़ी की तरह,
और खरोंचते हुए चलती है
दरअसल
अभावों की घिसी हुई ब्लेड
हर चेहरा एक खरोंचा हुआ सुख है
इसी बात का तो दुख है . . .

—प्रवीण तन्मय

प्रेम

शहर में नौकरी करता हुआ बेटा
मां-बाप से
चाहे जितना भी करता हो प्रेम
लाख चाहने पर भी
हर माह भेज पाता है
उनके लिए
केवल अपना कुशल-क्षेम

रूपांतर

कुछ चेहरे
बड़े घिनौने होते हैं
पर वे
मुखौटे पहने होते हैं

बरसाती दिन

काम; पर नहीं आया—
सूरज;
धूप: चादर ताने सोती रही
बाहर दिनभर
गोलियों की बौछार होती रही

—अखिलेश 'अंजुम'

सुख के दिन

उड़े फुर्र से सुख के दिन,
ज्यों उड़ी गौरेया
टहनी पर से झटपट
दस तक गिनती गिन

रिश्ते

छूते ही छुई-मुई हो गये रिश्ते,
जब तलक सधता रहा प्रेम—
शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा-सा बढ़ता रहा स्वार्थ,
जब न सधा, तो
रिश्ते सूई हो गये।

—त्रिलोकचन्द महावर

नैतिकता

पक्ष में रहकर लोग
जिस बात का
करते हैं पुरजोर समर्थन
प्रतिपक्ष में आते ही
उसी का करते हैं मर्दन।

—दशरथ पाल 'सागर'

अर्द्धशती के अवसर पर विशेष लेख

भारतीय विमानों की अद्भुत क्षमता

● धनंजय सिंह

आधी शताब्दी पूर्व ८ अक्तूबर, १९३२ को ब्रिटेन की एयर रायल फोर्स में कमीशन पा गये भारतीय पायलटों के एक ग्रुप को किंग्स कमीशन प्रदान किया गया। इसी ग्रुप के पायलटों को लेकर भारतीय वायुसेना की स्थापना इंडियन एयर फोर्स एक्ट को लागू किये जाने के साथ की गयी। भारत के प्रथम वायुसेना के अध्यक्ष बने भारतीय पायलटों के इसी ग्रुप के सुब्रतो मुखर्जी।

सर्वप्रथम छह भारतीय अधिकारियों और कुछ हवाई सिपाहियों को लेकर 'ए फ्लाइट नंबर वन स्क्वाड्रन' का गठन किया गया था। इनके साथ ही कुछ अंगरेज अधिकारी तथा हवाई सिपाही भी इनकी सहायता और मार्गदर्शन के विचार से सम्मिलित कर लिये गये थे।

भारतीय वायुसेना के पास केवल एक ही स्क्वाड्रन थी। किंतु इसके पायलटों ने अपनी योग्यता और विशिष्ट कार्य-

क्षमता का प्रदर्शन करके अच्छा नाम कमाया। धीरे-धीरे इसके आकार और क्षमताओं में वृद्धि होती गयी।

बहादुरी में बेमिसाल

भारतीय पायलट बहादुरी में बेमिसाल थे, जिसके कारण अंगरेज भी उनका सम्मान करते थे। द्वितीय महायुद्ध में जापान से युद्ध के समय भारतीय वायुसेना की बहादुरी के कारण ही जापानियों को अंगरेजों की सेनाओं से हार का सामना करना पड़ा था।

बर्मा में युद्धरत भारतीय वायुसेना के विमान जोड़े से उड़ान भरते थे। इनकी 'आराकान जोड़ी' के नाम से बड़ी ख्याति थी। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद युद्ध में वीरता प्रदर्शित करने के लिए भारतीय वायुसेना को रायल शब्द से सम्मानित किया गया और इस प्रकार ब्रिटेन की रायल एयरफोर्स के समान ही इसका नाम 'रायल इंडियन एयर फोर्स' पड़ गया। भारत के गणतंत्र बनने तक भारतीय वायुसेना का यही नाम रहा।

भारत की स्वाधीनता के साथ ही भारत का विभाजन भी हुआ और इस विभाजन के फ़लस्वरूप भारतीय वायुसेना का भी विभाजन हो गया। इसके दस स्क्वाड्रन पाकिस्तान को मिले। अखंड भारत की वायुसेना के अधिकांश डिपो और एयरबेस उन भागों में थे, जो विभाजन के बाद पाकिस्तान को मिल गये थे। इसके परिणामस्वरूप भारत के हिस्से में भारतीय वायुसेना का जो

भाग आया, वह बहुत ही अव्यवस्थित था।

भारतीय वायुसेना में सबसे पहले प्रयोग में लाये गये विमान का नाम था, वापिती। तब विमान में ऊपर और नीचे दोनों जगह पंख होते थे। इसके बाद लाइसेंडर, हरिकेन, स्पिट फायर, टेंपेस्ट, वैंपायर और ओरेमन या तूफानी जहाजों को क्रमशः प्रयोग में लाना आरंभ हुआ।

१९४७ के आसपास तक भारतीय वायुसेना में वैंपायर विमानों का ही प्रचलन अधिक था। ये विमान बंगलौर स्थित हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स कारखाने में बनाये भी जाते थे। तब इस कारखाने का नाम था हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट। १९६५ के भारत-पाक युद्ध में इन विमानों का प्रयोग किया गया था।

विमानों की क्षमता

आज हमारी वायुसेना के पास युद्ध में सीधी कार्यवाही में काम आने की क्षमतावाले निम्न विमान हैं—मिग–२१ से लेकर मिग–२३ तक, सुखोई एस. यू.–७ और सुखोई एस. यू.–२२, कैनबरा, तथा भारत में निर्मित अजीत, मारुत, हंटर, नैट, चेतक तथा एम. आइ. –८ हेलिकॉप्टर। इन सबके साथ भारतीय वायुसेना की सबसे बड़ी उपलब्धि है, ब्रिटेन और फ्रांस के सहयोग से बना हुआ युद्धक विमान जगुआर। इसका निर्माण ब्रिटेन में हुआ है। यह १३१५ किलोमीटर की दूरी तक आक्रमण कर सकने की क्षमतावाला है। यद्यपि कैनबरा की दूरमारक
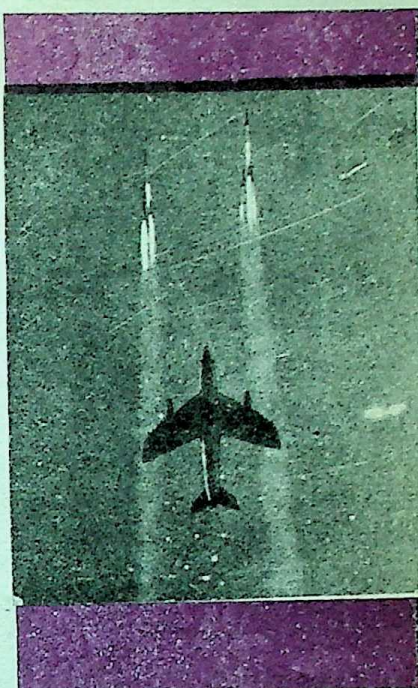
क्षमता, इससे अधिक अर्थात २,००० किलोमीटर तक है।

इनके साथ ही भारतीय वायुसेना यात्री ले जानेवाले विशाल विमान एंटीनोव–१२, ओटर, कैरेव्यु, पैकिट, एवरो और डकोटा विमानों से संयुक्त है। इन विमानों का प्रयोग सेनाओं को ले जाने, पैराशूट से छोड़ने अथवा दुर्गम स्थानों पर सामग्री पहुंचाने के लिए किया जाता है।

पोलेंड का बना इस्करा नामक विमान एक प्रशिक्षण विमान है। प्रशिक्षण के प्रयुक्त होनेवाले अन्य विमान हैं किरण, एस. टी.–२, एम. आई.–८, एम. आई. –४ तथा कृषक।

युद्धक विमानों की क्षमता

मिग–२३ : इसके पंख लपेटे जा सकते हैं, यह पृथ्वी पर आक्रमण कर सकता है। इसमें दो तोपें होती हैं। यह ३,००० पौंड के बम या राकेट ले जा सकता है। समुद्र-तल पर इसकी अधिकतम गति १,३५० किलो मीटर प्रतिघंटा है। यह ५९ हजार फुट तक की ऊंचाई पर चल सकता है और ९६० किलोमीटर तक के क्षेत्र में उड़ान कर लौट सकता है। ३६,००० फुट के ऊपर इसकी गति २,४४० किलोमीटर प्रति घंटा हो जाती है।

मिग–२१ : यह ६०० किलोमीटर के क्षेत्र में उड़ान करके लौट सकता है। इसमें २३ मिलीमीटर की दो मुंही तोप होती है तथा वायु से वायु में मार करनेवाली मिसाइलें हैं। ३६,००० फुट की ऊंचाई पर इसकी अधिकतम गति २,२३० किलोमीटर प्रति घंटा होती है। यह ५९,०५० फीट की ऊंचाई तक उड़ान भर सकता है।

सुखोही एस–२२ : यह ४०० किलोमीटर क्षेत्र में उड़ान भर सकता है। जमीन से ऊपर उठकर भी यह ध्वनि से तेज रफ्तार में जा सकता है। ३,६०० फीट से ऊपर तो इसकी गति १,७७० किलोमीटर प्रतिघंटा हो जाती है। यह १,४५० किलोमीटर तक की अधिकतम सीमा में जा सकता है, किंतु इसका युद्ध-क्षेत्र का दायरा ४०० किलोमीटर का होता है। इसमें दो ७५० किलोग्राम के और दो ५०० किलोग्राम के बम होते हैं तथा इसके हरेक पंख में एक तोप लगी होती है।

जगुआर : इस विमान में कंप्यूटर द्वारा मिसाइलों के नियंत्रण की व्यवस्था होती है और लेसर द्वारा लक्ष्य का पता लगाया जा सकता है। समुद्र-तल तक इसकी गति १,३५० किलोमीटर प्रतिघंटा होती है और ३६,००० फुट की ऊंचाई पर १,५६० किलो मीटर प्रतिघंटा। यह अधिकतम १,३१५ किलोमीटर की दूरी तक आक्रमण कर सकता है।

कैनबरा : यह दो चालकोंवाला होता है। और ३,२१५ किलो मीटर तक की उड़ान भर सकता है। इसमें चार तोपें होती हैं जो २०,००० गोले दाग सकती हैं। इसमें कुल मिलाकर ३,६२७ किलोग्राम तक हथियार ले जाये जा सकते हैं। इसकी गति ३०,००० फुट की ऊंचाई पर ९३० किलोमीटर प्रतिघंटा होती है।

—१०८४ बी, अभिमन्यु निवास, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१

कासानोवा अभी जिंदा है, स्वस्थ प्रसन्न है और इटली में है। इससे अधिक आप क्या जानना चाहेंगे उसके बारे में, यही न कि वह एक कैथोलिक पादरी है।

वैसे उसे धानी डॉन लुइगी कासानोवा को अभी हाल ही में गिरफ्तार भी किया गया है। अपराध ? उसे गिनाआ में अपनी एक भूतपूर्व प्रेमिका के घर के बगीचे में दंगा करने के अपराध में पकड़ा गया। उसके पास से एक पिस्तौल और गोलियां मिलीं।

करतब भारतीय हवाबाजों
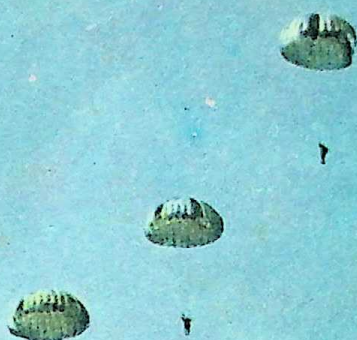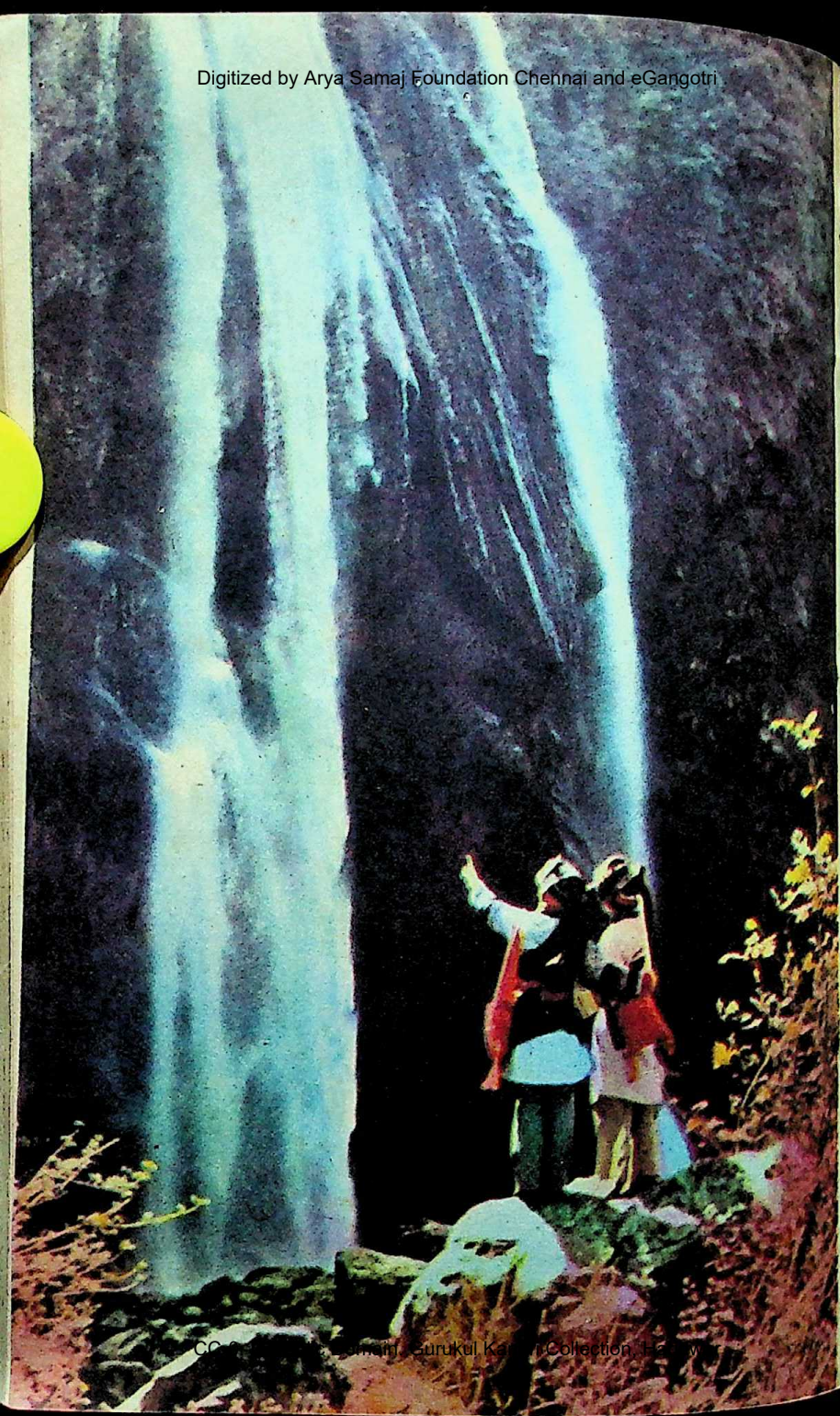
चीन में अब चिड़ियां चहकती हैं

● डॉ. पंचानन मिश्र

[पे]किंग। सुबह पांच बजे। देखा सामने पेड़ पर कुछ चिड़ियां चहक [रह]ी थीं। इन चिड़ियों को तो चीनियों ने [कु]छ साल पहले ही मार दिया था। चूहों, [चि]ड़ियों, मक्खियों को एक अभियान के [द्वा]रा समाप्त कर दिया था। हमें मक्खियां [औ]र चूहे तो कहीं नहीं मिले। परंतु चिड़ियां [ख]ूब उड़ती दिखीं। चिड़ियों के समाप्त [हो] जाने पर उन्होंने महसूस किया कि [खे]तों में बहुत कीड़े हो गये, जो फसल का [नु]कसान करने लगे। चिड़ियों का मारना बंद कर दिया गया।

पेकिंग करीब उतना ही बड़ा शहर है, जितना दिल्ली। उसी प्रकार पुरानी पेकिंग और नयी पेकिंग। पुरानी पेकिंग में पुराने घर, पतली गलियां। नयी पेकिंग में चौड़ी सड़कें, गगनचुंबी अट्टालिकाएं। चीन में जो मैंने देखा, दुनिया में कहीं नहीं। प्रातः काल ही हजारों लोग सड़कों पर व्यायाम करने के लिए आ जाते हैं। बूढ़ों से लेकर
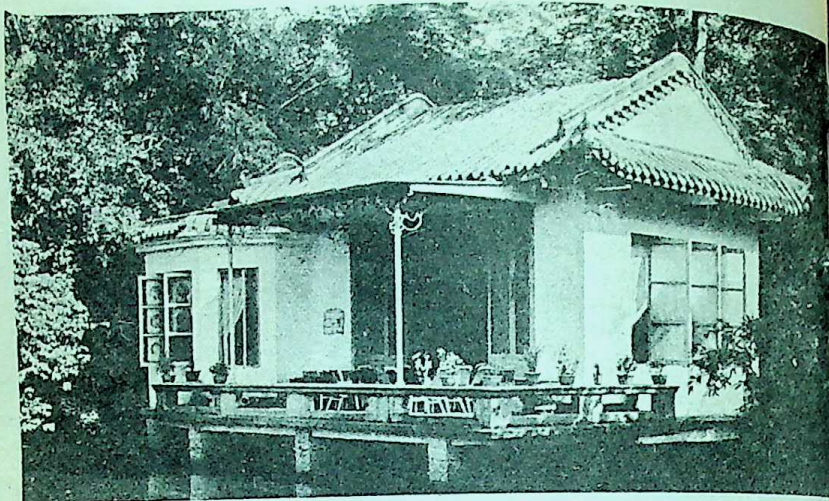
जवान तक, और नाना प्रकार के व्यायाम। शरीर को तंदरुस्त रखने का एक पागलपन-सा देखा। एक मित्र ने कहा इस व्यायाम का मतलब यह है कि सब को भोजन ठीक मिलता है। भूखे पेट कहीं व्यायाम थोड़े होता है।

पेकिंग से शंघाई, चांग हो, हो चांग होते हम दो सप्ताह के बाद फिर कांटेंग पहुंचे। इन दो सप्ताहों में हम गांव के कम्यूनों और कारखानों में गये। सड़कों पर घूमे, गलियों में गये।

रोजी-रोटी की समस्या नहीं

चीन भारत-जैसा ही एक पिछड़ा हुआ देश रहा है। अब भी है। परंतु वहां समाजवादी क्रांति १९४९ में हुई। वह आज समाजवादी ढंग से अपनी समस्याओं का हल निकाल रहा है। एक घनी आबादी-वाला देश, जहां १०० करोड़ लोग रहते हैं। जहां की दस प्रतिशत जमीन पर ही खेती होती है। इन तीस-पैंतीस सालों में चीन जनता की दैनिक आवश्यकताओं को पूरी करने में सफल हुआ। रोजी, रोटी, कपड़े और मकान की समस्या को या तो हल कर लिया है, या कर रहा है। हमने दो सप्ताह के भीतर न किसी भिखारी को देखा, न नंगे आदमियों या गंदे कपड़ों को। देश में राशनिंग है और सब को राशन मिलता है। जैसा अधिकारियों ने बताया गांवों और शहरों में सबके पास काम है यह चीन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। साथ ही कोई विशेष आर्थिक असमानता नहीं। लोगों के वेतनों में एक और चार पांच का अंतर है। शिक्षा, स्वास्थ्य, बुढ़ापे की पेंशन प्रायः सबको उपलब्ध है।

मजदूरों के लिए बहुमंजिली इमारतें

आज चीन के शहरों में गंदी बस्तियां नहीं

चीन में प्रातःकाल होते ही हजारों लोग सड़कों पर व्यायाम करने के लिए आ जाते हैं। बूढ़ों से लेकर जवान सब। और नाना प्रकार के व्यायाम। शरीर को तंदुरुस्त रखने का एक पागलपन-सा सवार हो सब पर जैसे। इस व्यायाम का मतलब है कि सबको भोजन ठीक मिलता है। भूखे पेट कहीं व्यायाम थोड़े होता है।

झुग्गी-झोपड़ियां नहीं। पुरानी गंदी बस्तियों की जगह मजदूरों के आवास के लिए हजारों बहुमंजिली इमारतें खड़ी कर दी गयी हैं। किराया सिर्फ नाम का है। और वे किश्तों में इन फ्लैटों को आज खरीदने लगे हैं। देहातों में कम्यूनों के बैरेक भंग कर दिये गये हैं। उन्हें छोटे-छोटे आवास बनाकर किसानों को दे दिया गया है, जिनमें किसान अपने परिवारों के साथ रहते हैं। अपनी निजी जमीन पर, जो आधे एकड़ के करीब है, वे आज छोटे-छोटे मकान बना रहे हैं। चीन की बुनियादी आर्थिक और राजनीतिक इकाई कम्यून हैं, जिनकी आबादी २० हजार से ८० हजार तक है। इन कम्यूनों में किसान काम करते हैं। सबको काम के अनुसार वेतन मिलता है। खेती का राष्ट्रीयकरण तो १९५५ में ही हो गया था।

हमारी यात्रा चीन के उस भू-भाग में रही, जो चीन का अन्न-भंडार है। यह शंघाई से लेकर कांटेंग तक फैला है। यहां नहरों के जाल मिंग-काल से ही फैले हुए हैं। वर्षा भी पर्याप्त होती है। यहां का किसान दो से तीन फसलें तक लेता है। धान, गेहूं, कपास, गन्ना, रेशम मुख्य फसलें हैं, और यहां की पैदावार, भारत के प्रति एकड़ से दोगुनी है। इस क्षेत्र में एक इंच भी जमीन खाली नहीं। यहां तक कि रेल की पटरियों के पास तक खेती की जाती है। परंतु जनसंख्या इतनी बड़ी है कि सिर्फ खेती से सबको रोजगार नहीं दिया जा सकता। अतः कम्यूनों में बिजली से चलनेवाले लघु उद्योग लगाये गये हैं। आज गांव के २०% मजदूर काम करते हैं। साथ ही मछली-पालन, बत्तख, मुर्गी-पालन और सुअरों का पालन बड़े पैमाने पर हो रहा है। उस क्षेत्र में चीन के हरेक

गांव में सड़कों और, बिजली की व्यवस्था है। डेंग सियाओ पिंग के नेतृत्व में जापान की सहायता से और भी लघु उद्योग गांवों में लगाये जा रहे हैं।

हरेक को काम की जिम्मेदारी

हरेक कम्यून की वहां के बाशिंदों को काम देने की जिम्मेदारी है। अतः बिना कम्यून की इजाजत के आप अपना गांव नहीं छोड़ सकते। हां अगर आप को कहीं बाहर काम मिल गया हो, या किसी रिश्तेदार से मिलना हो, या देश-भ्रमण के लिए जाना चाहते हों, तभी आप कम्यून के बाहर जा सकते हैं। यही कारण है कि रेलों में यहां से कम यात्रा होती है। रेल स्टेशनों में यात्रियों के ठहरने का कोई इंतजाम नहीं। स्टेशन तभी खुलता है जब रेल गाड़ी आती है। गाड़ियों के जाने पर स्टेशन बंद हो जाते हैं। आप न वहां ठहर सकते हैं, न घूम सकते हैं। यही कारण है कि शहरों में आज नयी गंदी बस्तियां नहीं बन पा रही हैं। शहर में नौकरी या काम खोजने के लिए आप जा ही नहीं सकते। अगर किसी काम से आपको जाना भी पड़ा, तब अपना राशन कार्ड साथ ले जाना पड़ता है। परंतु गांवों में कोई घुटन का वातावरण नहीं।

आधुनिकीकरण का दौर

आज डेंग सियाओ पिंग के नेतृत्व में, चीन एक नये आधुनिकीकरण के दौर से गुजर रहा है। सुरक्षा, विज्ञान, उद्योग और खेती के क्षेत्रों में। हजारों विद्यार्थी इन क्षेत्रों में

विशेषता प्राप्त करने के लिए बाहर भेजे गये हैं। विदेशी पूंजी और तकनीक, जिसका चीन अब तक बहिष्कार करता रहा, प्रचुर मात्रा में आमंत्रित है। चीन को विदेशी पूंजी व ऋण ४० बिलियन डॉलर मिला है, परंतु उसने ४ बिलियन ही स्वीकार किया है। एक तो वह विदेशी ऋण से डरता है, साथ ही वह बड़े कल-कारखानों को नहीं लगाना चाहता, जिससे बेकारी बढ़े।

उपभोक्ता सामग्री का आकर्षण

आज चीन में उपभोक्ता सामानों की बेहद मांग है। सब लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहनना चाहते हैं। घरों को सामानों से सजाना चाहते हैं। रेडियो, टी.वी. खरीदना चाहते हैं। हरेक आदमी के पास साइकिल होनी चाहिए। अतः उपभोक्ता सामान की मांग बढ़ गयी है। सब के पास आमदनी है, सब खरीदना चाहते हैं। यही कारण है

के नये नेतृत्व ने भारी उद्योगों के उत्पादन को कम किया है, और गत वर्ष उपभोक्ता सामानों की वृद्धि आठ प्रतिशत बढ़ी है। इस वर्ष दस प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है।

शहरों में केवल साइकिलें और बसें ही हैं। पेकिंग में ३० लाख साइकिलें हैं। प्राइवेट गाड़ियां नहीं। हां टैक्सी और सरकारी गाड़ियां हैं। सुबह और शाम शहर साइकिलों से भर जाते हैं। यह समाजवादी बराबरी का प्रतीक समझा जाता है।

चीन में धर्म

चीन में मालूम होता है कि चीन के पुराने धर्म, चाहे वह कनफूशियस का या माओ का हो कहीं भी नहीं दिखलायी देते। परंतु चीन के कोने-कोने में बौद्ध मंदिर हैं, जहां हजारों पर्यटक रोज जाते हैं। कुछ चीनी तो वहां पूजा करते हुए भी पाये गये। चीन में आज धार्मिक स्वतंत्रता है। ये स्थान युवा पीढ़ी के लिए पर्यटक-स्थल हो गये हैं, जहां नौजवान लड़के और लड़कियां घूमने जाते हैं।

आज चीन ने माओ का नीला कोट उतार फेंका है। लड़के-लड़कियां, बुश शर्ट, पैंट, फ्राक पहन रहे हैं। हाथ में हाथ मिलाकर घूमते हैं। समुद्र, नदियों और झीलों के किनारे बैठकर प्रेमालाप करते हैं। रात में होटलों में पश्चिमी नाच होते हैं।

हमने चीन की विशाल दीवार 'ग्रेट-वाल' भी देखी। यह सोलह मील लंबी है। इसको हजारों साल पहले चीनी सम्राटों ने बनाया था। वहां हजारों नवजवान और युवतियां पर्यटन के लिए आये थे। लोग पिकनिक कर रहे थे। हमको देखकर मुसकराये। पूछा 'इंदुस?' 'हां' हमने कहा, तो बहुत प्रसन्न हुए। 'भारत से मैत्री बहुत आवश्यक है', सबने कहा, चीन के नेताओं ने भी कहा। १९६२ की लड़ाई एक भूल थी, यह उन्होंने स्वीकार किया। चीन भारत से मित्रता के लिए आतुर है, और हमारा नेतृत्व भी इसको समझता है।

—सी–२/२७, ईस्ट ऑव कैलाश, नयी दिल्ली

स्टेट्समैन (दिल्ली) में छपी एक खबर:

'नयी दिल्ली की पुलिस ने एक टैक्सी-ड्राइवर को गिरफ्तार किया। उसका अपराध यह था कि उसने सड़क पार कर रहे एक आदमी को जमीन पर गिरा दिया था और टैक्सी को उसके ऊपर लाकर कहा, "उस्ताद! अब जब नीचे पड़े ही हो, तो जरा ऑइल भी चैक कर दो।"

शाम के चार बज चुके थे, मेहता साहब की टेबल पर अब भी फाइलों का अंबार लगा था। बाहर से कुछ लोग 'डेप्यूटेशन' पर आये हुए हैं, इसलिए जरा भी वक्त नहीं मिल पाता है। वैसे भी, वे रोज ही इतने व्यस्त रहते हैं। इनका पी. ए. एक-एक फाइल खोलकर उनके 'साइन' कराता है। अचानक मेहता साहब पूछ लेते हैं, "रमेश, वो 'एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्मवाली फाइल' का क्या हुआ ?"

"वह तो, आपके कलकत्ता जाने के पहले ही भिजवा दी थी, सर !"

"अच्छा, ठीक है, और कोई फाइल है क्या ?"

"हां सर, वे कुछ 'मैन्युअल्स' और 'आफिशियल मैगजीन' के 'पब्लिकेशन' की 'स्टेटमैंट्स' हैं, ये भी 'साइन' होनी हैं" कहते हुए रमेश ने फाइल आगे बढ़ा दी।

"बस, या कुछ और है।"

"सर, वो 'विंग कंसट्रक्शन' के 'कोटेशनवाली फाइल' मैंने तैयार तो कर दी है, पर आप एक बार देख लें, तो ज्यादा अच्छा रहे।"

"ठीक है, तुम ऐसा करो ठाकुर के हाथ वह फाइल नीचे गाड़ी में रखवा दो, मैं उसे एक बार खुद देख लूंगा," कहते हुए मेहता साहब ने चपरासी को बुलाने के लिए घंटी बजायी।

केबिन के दरवाजे को धकेलता हुआ ठाकुर अंदर आया। पता नहीं क्यों, वह बड़ा ही लापरवाह किस्म का आदमी है। उसके चेहरे और चाल-ढाल से लगता है कि वह हर समय सोता ही रहता है।

मेहता साहब ने उसे समझाते हुए कहा, "देखो भई, ये फाइल गाड़ी में रख दो। रमेश तुम इसके साथ चले जाओ, संभाल के रखवा देना," यह निर्देश देने के साथ ही उन्होंने पेन कलमदान में टिका दिया। दोनों हाथ ऊपर उठाकर अंगुलियों को आपस में फंसाते हुए एक जोरदार अंगड़ाई

कहानी

• विजयश्री

...ती, मानो सारी की सारी थकान उतार देना चाहते हों ।

मेहता साहब उठे और कमरे के बरा-बर 'टॉयलेट' में लगे 'वाश बेसिन' में उन्होंने हाथ-मुंह धोये और फिर अपने बालों में कंघी फेरते हुए बाहर आ गये। सीढ़ियां उतरते हुए वह सोचने लगे कि आज कहां जाएं ?

नीचे उतरकर उन्होंने चारों ओर निगाह दौड़ायी । राधा कहीं दिखायी नहीं दे रही थी । थोड़ी देर वे इधर-उधर चहल-कदमी करते रहे, फिर गाड़ी में जाकर बैठ गये । चपरासी जो फाइल रख गया था, उसे देखने लगे । दो-चार पन्ने उलट-पुलट-कर फिर उसे ज्यों का त्यों रख दिया । फिर जेब से एक सिगरेट निकालकर सुलगायी और लंबा-सा कश खींचकर हवा में छल्ले बनाते हुए धुआं छोड़ने लगे । खिड़की से कोहनी टिकाये वे कुछ सोच रहे थे, शायद यही कि राधा क्यों नहीं आयी अभी तक, या आयी हो और लौट भी गयी हो। पर नहीं, उनका मन कहता है कि वह आयी ही नहीं और शायद अब आएगी भी नहीं, और ज्यादा इंतजार करने से कोई लाभ भी नहीं है। उसे आना होता तो आ जाती अब तक . . . । राधा का और अधिक इंतजार किये बगैर ही उन्होंने गाड़ी स्टार्ट कर दी ।

सड़क पर आकर उन्हें लगा कि बेतहाशा भीड़ है । बसें, मोटर, स्कूटर सभी अंधे होकर दौड़े जा रहे हैं। भीड़ का एक सैलाब सड़क पर फैलता जा रहा है । रोज ही तो ऐसी भीड़ होती है। आखिर लोग दफ्तर से सीधे घरों को ही क्यों भागते हैं ? आखिर उनके साथ ऐसा क्यों नहीं होता । वह तो शायद ही कभी दफ्तर से सीधे घर पहुंचे हों।

सामने लाल बत्ती हो जाती है और

मेहता साहब को न चाहते हुए भी उस भीड़ के सैलाब में रुकना पड़ता है।

"बाबूजी, गाड़ी पे कपड़ा फेरा है, एक चार आना दे दो ना," गाड़ी पर जरा-सा कपड़ा फिराकर, लड़का खिड़की से लटककर पैसों के लिए गिड़गिड़ा रहा है।

"हट जाओ यहां से," मेहता ने उसे झिड़क दिया। वह फिर भी नहीं माना। रेंगती हुई गाड़ी के साथ-साथ चलता रहा, "बाबू तेरा घर-बार बना रहेगा, दे देना एक चा...।"

"हटता है या कि लगाऊं एक ...।"

और जैसे ही मेहता ने उसे मारने के लिए हाथ उठाया, वह भाग गया। आगे हरी बत्ती हो गयी थी, पर मेहता पीछे लौट चुके थे। घर-बार शब्द की प्रतिध्वनियां उनके कानों में गूंजने लगी थीं।

उन्हें याद आने लगा वह घर, जिसमें उनके माता-पिता, ताऊ-चाचा, दादी-बुआ सभी तो थे। और इन सभी ने मिलकर उनका घर बसाया था। इंटर में ही थे कि चाहते-न-चाहते उनकी शादी तय कर दी गयी थी। विरोध करने पर पिता ने एक जोरदार डांट लगायी थी कि, 'तुम अभी लड़के हो, तुम्हें मालूम ही क्या है? हम जो कर रहे हैं, बस, तुम चुपचाप करते रहो, जो तुमसे कहा जाए, समझे।'

"मगर, मैं आगे पढ़ना चाहता हूं ...।"

"पढ़ने की कौन मनाही है, शादी तो करनी ही है। ऐसा रिश्ता बार-बार नहीं मिलता ... और फिर लोग शादी के बाद

पढ़ते नहीं हैं क्या? ... वो रामकिशन ...।" उसके बाद पिता ने दर्जनों ऐसे नाम गिना दिये थे, जिन्होंने शादी के बाद पढ़ाई करके कई डिग्रियां हासिल की थीं।

और फिर इसी तरह के रोबदार माहौल में उनका विवाह हो गया था। इस साल वे आई. ए. एस. की परीक्षा में पास नहीं हो सके थे, पर ए. एस. सी. का इम्तहान पास करके एयर-हेडक्वार्टर में लग गये थे, और उसके बाद कई 'डिपार्टमेंटल' परीक्षाएं पास करके अनेक विभागों का दौरा करते हुए, इस बड़े ओहदे पर पहुंच पाये थे।

सामने सूरज डूब रहा था और शाम झुक आयी थी, सारा माहौल नारंगी रंग में रंग गया था। लगता था-जैसे किसी ने स्टेज पर नारंगी रंग की लाइट जला दी हो। मेहता को अजीब-सा लगा। उन्होंने जेब से एक और सिगरेट निकालकर जला ली। और फिर गाड़ी को इंडिया गेट के

सामनेवाली रोड पर ले जाकर रोक दिया। पहले भी उन्होंने इस तरह डूबते सूरज को अनेक बार देखा है। उगते सूरज को हर कोई देखते हैं, आदर से सिर भी झुकाते हैं ... लेकिन वे भूल जाते हैं कि डूबता सूरज स्वार्थहीन संबंधों का प्रतीक है।

शाम का धुंधलका बढ़ने लगा। पेड़ों के झुरमुटों के नीचे बैठे कितने ही जोड़े और भी सटकर बैठ गये। मेहता भी यहां कई बार आये हैं, लेकिन अकेले ... बिलकुल अकेले ... उनकी शामें अकसर सूनी और वीरान होती हैं। अगर उनके साथ होती हैं, तो बीते कुछ मधुर क्षणों की यादें या फिर अतीत के गर्द का गुब्बार, जिसने आज और आनेवाले कल दोनों को धुंधला दिया है। ऐसे में वे सिर्फ अपने आप से बातें करते रहे हैं।

सड़क के दोनों ओर की कार्बन-लाइट्स जल उठीं, पर घासवाले मैदानों में अब भी अंधेरा है। मेहता के अंतर में भी ऐसा ही अंधेरा है। मेहनत और लगन ने उन्हें एक मामूली क्लर्क से सेक्रेटरी-जनरल तो बना दिया, पर इतने बड़े ओहदे की गरिमा और उनका प्यार-दुलार सावित्री को अपने अनुरूप न ढाल सका। अब उन्हें महसूस होता है कि कोई किसी को अपने ढंग से नहीं चला सकता। हर व्यक्ति का 'जैनेटिक कांबिनेशन' एक दूसरे से अलग ही होता है, इसीलिए सभी व्यक्ति एक दूसरे से अलग होते हैं।

अचानक एक झटके से उनकी चेतना लौट आयी। उन्होंने देखा अंगुली में दबी सिगरेट खत्म होने को है, और उसी की जलन से ही चेतना लौटी थी। मेहता हंसे, ऐसे कि मन कहीं रो उठा। सोचने लगे, 'किस-किस ने नहीं जलाया है मुझे, फिर किसी से क्या कहूं।' और उन्होंने जोर का एक कश लिया फिर उस टुकड़े को खिड़की से बाहर फेंक दिया। पीछे से आता हुआ स्कूटर उस पर से होकर गुजर गया और सिगरेट का वह जलता हुआ टुकड़ा 'फिस्स' की आवाज करता हुआ बुझ गया।

कुछ जोड़े चहल-कदमी करते हुए हाथ में हाथ डाले उनके आगे से गुजर गये। मेहता ने उन सब की ओर ध्यान नहीं दिया, पर शायद, एकाध ने उन्हें इस तरह अकेले बैठे हुए देख लिया था। अचानक मेहता का हाथ अपनी कमीज के बटन पर अटक गया। पर वहां बटन नहीं, सेफ्टी-पिन लगा हुआ है। मेहता को याद आया कि कैसे पहले-पहल वह आलपिन लगा

लिया करते थे, जो अकसर चुभ जाया करती थी। अम्मा, बाबूजी, दद्दा, काका, मालती, केशव, दीनू—इन सबका ख्याल रखते-रखते सावित्री को इतनी फुरसत ही कहां होती कि वह मेहता की ओर ध्यान दे पाये। बटन तो दूर, कितनी ही बार ऐसा होता है कि उनके कपड़े बगैर धुले पड़े रहते हैं। जब वे दूसरे दफ्तर में थे, तब कितनी ही बार बगैर इस्त्री किये कपड़े ही पहनकर जाना पड़ता था। ऐसे ही एक दिन जब उन्हें डायरेक्टर सिंह साहब ने किसी काम से बुलवाया था, तब मेहता की सिलवटोंभरी कमीज और उदास चेहरे की ओर देखते हुए पूछा था, "क्या बात है मि. मेहता कुछ परेशान-से नजर आते हो?"

"नहीं सर, वो . . . वो . . . जरा, बात कुछ . . .।"

"हां, हां, क्या बात है . . . ?"

"आइ एम सॉरी सर, मुझे ऐसे कपड़े पहनकर आफिस नहीं आना चाहिए था", मेहता को अपने पर बड़ी खिसियाहट आयी थी।

"अरे! किस्मत बदलते कोई देर थोड़े ही लगती है, सब सिलवटें दूर हो जाएंगी।"

"और अगर सिलवटें जिंदगी में ही पड़ी हों, तब सर?"

"तुम शायर कब से गये हो, मेहता?" सिंह साहब को मेहता के इस दार्शनिक लहजे पर आश्चर्य हो आया था।

और तब से मेहता ने अपनी कमीज तहकर रोज रात को सिरहाने के नीचे रखनी शुरू कर दी।

"बाबूजी, एक वेणी ले लो, मेम साब खुश हो जाएंगी, बाबूजी!" मेहता साहब चौंक पड़े।

बहुत पहले, शुरू-शुरू में, वे ऐसी कितनी ही वेणियां सावित्री के लिए ले गये, लेकिन वे कितनी ही बार खूंटी से टंगी-टंगी मुरझाकर रह गयीं।

कभी-कभी न तो दोष दृष्टि में होता है और न दृश्य में। हां, दृश्य और दृष्टि के बीच यदि कोई व्यवधान हो, तब चीज सही नजर नहीं आती। मेहता के साथ भी शायद यही हुआ। दोष किसी का नहीं; दोष है, तो परिस्थितियों और मनःस्थितियों का।

अपने कदम पीछे लौटाकर, पूरे मन के साथ शुरूआत तो उसने सावित्री के साथ ही की थी। पर चिंतन और महत्त्वाकांक्षाओं में वह, आगे और आगे और . . . और आगे बढ़ते गये और सावित्री? वह घरेलू माहौल में अटकी, न जाने किसी अनजाने संतोष के भंवर में ही अटकी रही। ऐसा नहीं कि मेहता ने उसे वहां से निकालना नहीं चाहा, लेकिन सावित्री को यह सब नहीं भाया। क्यों? पसंद अलग-अलग होना स्वाभाविक है, लेकिन विरोधी स्वभाववालों का एक साथ होना शायद विडंबना।

वह सावित्री को कभी समझ नहीं पाये। बस इतना जान पाये हैं कि उनकी पसंद

सावित्री की नापसंद है,क्यों ? और कैसे ? यह पता नहीं ।

अंधेरा और बढ़ जाता है । दूर की लाइट और गहरी होकर चमकने लगती है। वह जेब से एक और सिगरेट निकाल लेते हैं। अचानक उन्हें ध्यान आता है कि इसी रविवार को अखबार में उन्होंने पढ़ा था कि अधिक सिगरेट पीने से कैंसर हो जाता है और कैंसर से मौत तक हो जाती है ।

मेहता बड़ी जोर से हंस पड़े हैं और सोचने लगे, 'क्या मौत सिर्फ कैंसर से ही होती है ?' कौन जानता है कि अपने मन को मारकर वे कैसे जी रहे हैं, सिर्फ औरों के लिए।

उन्होंने निर्णय कर लिया कि कल से ही अपनी सिगरेट का कोटा २० से बढ़ा कर ३० कर देंगे । जिंदगी की बाजी वे भी भले ही न जीत सके, पर अब मौत से बाजी हारना नहीं चाहते। मौत के नाम से उन्हें मुन्ना, टीटू और बेला याद आ गये । मुन्ना को इस साल इंजीनियरिंग में दाखिला करवाना होगा, और बेला, उसे तो वे डॉक्टर बनाएंगे ही, जो कि वे कभी खुद बनना चाहते थे। वैसे तीनों के नाम मेहता ने शुरू में ही एफ. डी. करा दी थी, और वैसे उनका अपना खुद का 'लाइफ इंशोरेंस' भी है, फिर घर में कौन-सी उनकी कमी महसूस की गयी है कभी। ...और सावित्री हुं...ऊं... वह सावित्री तो और ही थी, जिसका प्यार उसके पति को यमराज के मुंह से वापस छीन लाया था ।

ज्ञान - गंगा

धनबाहुल्यमहेतुः कोऽपि निसर्गेण मुक्तकरः।
प्रावृषि कस्याम्बुमुचः संपत्तिः किमधिकाम्बुनिधे।।

उदार होने के लिए धन का बहुत होना कोई कारण नहीं है। कोई व्यक्ति स्वभाव से ही मुक्त-हस्त अर्थात उदार होते हैं। उदाहरणतया वर्षा ऋतु में क्या मेघ की जल-संपत्ति समुद्र से अधिक होती है।

बुद्धिर्या सत्त्वरहिता स्त्रीत्वं तत्केवलं मतम् ।
सत्त्वं चानयसम्पन्नं तत्पशुत्वं न पौरुषम् ।।

शक्ति से हीन बुद्धि केवल स्त्री-भाव है और शक्ति भी यदि अनीति से युक्त हो, तो वह पशुता है, पौरुष नहीं।

शूराश्च कृतविद्याश्च रुपवत्यश्च योषितः
यत्र यत्र गमिष्यन्ति तत्र तत्र कृतात्नयाः

शूरवीर पुरुष, विद्वान और रूपवती स्त्रियां—ये जहां-जहां जाएंगे वहां-वहां उनको मान मिलता जाएगा अर्थात शूर, विद्वान और सुंदरी को सर्वत्र सम्मान मिलता है।

मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम् ।

दृढ़ निश्चय से युक्त कार्यार्थी सुख और दुःख की परवाह नहीं करता।

—प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

"बाबूजी, एक तो ले लो ना !" मेहता ने खिड़की के बाहर झांका, फूल-वाला लड़का अभी तक खड़ा था . . . नहीं, शायद वह दूर मैदान का चक्कर लगाकर वापस लौट आया था।

पता नहीं, क्या सोचकर मेहता ने एक वेणी खरीद ही ली और सामने गाड़ी में लगे शीशे के साथ लटका दी। उन्हें मोतिया की खुशबू और सफेदी बेहद पसंद हैं। पसंद की चीजें आसानी से मिल पाना कौन आसान बात होती है। शायद इसीलिए उन्होंने वेणी खरीद ली। पैसे देने के लिए जैसे ही हाथ खिड़की से बाहर निकाला, तब लगा कि 'टू-व्हीलर' के पीछे बैठी लड़की का चेहरा कुछ परिचित-सा है। वह गाड़ी स्टार्टकर उसका पीछा करते हुए कुछ दूर आगे तक गये।

'अरे, यह तो राधा है, अपने मंगेतर के साथ पीछे बैठी हुई है।' उन्होंने बुद-बुदाया। राधा उनके पिछले दफ्तर में काम किया करती थी। उसकी मुसकराहट में एक खूबी थी, जिसे देखकर कोई भी कुछ क्षण के लिए अपनी परेशानियां भूल सकता था . . . और फिर उनके साथ तो राधा घंटों-घंटों बैठकर बतियायी है। तब शायद वे भी अच्छी तरह नहीं जान पाये थे, पर आज महसूस करते हैं कि ऐसे ही किसी माहौल में यह गीत लिखा गया होगा कि 'यूं ही कोई मिल गया था सरे राह चलते चलते . . .।

उन्हें याद हो आया, अभी तीन-चार रोज पहले राधा का फोन आया था कि वह शादी कर रही है। उसने आज आने को भी कहा था। पर पता नहीं . . . वे भी कितने मूर्ख हैं। अपनी पसंद के साथ को छोड़कर वह भला उनके पास क्यों आने लगी? ... पर नहीं, वह जब भी उनके पास आयी है पूरी बेखुदी से, बिलकुल निस्वार्थ भाव से। सभी एक दर्जे के मतलबपरस्त हों, यह तो जरूरी नहीं।

इन्हीं ख्यालों में डूबते-उतराते वे घर पहुंच गये। गाड़ी गैराज में खड़ी की ही थी कि रसोईघर से बरतन फेंके जाने की जोरदार आवाज आयी। मन ही मन उन्होंने घर लौट आने पर अपने आपको लानत भेजी। फिर सोचा . . . शायद, यही उनकी नियति है . . . या फिर यही अगवानी है, यही उनका मधुर स्वागत है।

मेहता के दिमाग की नसें और तन गयीं। बरतनों के फेंके जाने की आवाज के जवाब में उन्होंने पूरी ताकत लगाकर जोर से गाड़ी का दरवाजा बंद किया, जिसकी धड़ाकेदार आवाज दूर-दूर तक गूंज गयी।

एक बार लगा, मुड़ कर देखें कि कहीं फाइलें तो नहीं गिर गयीं हैं।

—१३१९, देशबंधु गुप्ता रोड, करौलबाग, नयी दिल्ली-११०००५

वही पूर्ण सरकार है, जिसमें एक तुच्छ व्यक्ति के साथ किया गया अन्याय सभी का अपमान समझा जाता है। —सोलन

वक्त ठहर जाएगा

मेरी गलती है यही, मुझको ये मालूम न था
आपको मेरा तरन्नुम भी अखर जाएगा
नहीं जाना खुशी की भीड़ के एक कोने में
किसी को मेरा तबस्सुम भी अखर जाएगा

मैंने खामोश कर दिया है अपनी नज्मों को
अलविदा कह दिया है महफिलों को, बज्मों को
कभी सोचा ही न था अपने दिल के बारे में
जिधर जाना न था, कम्बख्त उधर जाएगा

आपका शौक-शगल, वाह-वाह, क्या कहने
आपका शीशमहल, वाह-वाह, क्या कहने
मैं हूं क्या चीज, चीज क्या है मेरा सुरमंडल
देखते-देखते शीराजा बिखर जाएगा

उसूल नंगे-बदन हैं, लगाइये कोड़े
जहांपनाह ! सुबह-शाम हैं हाथी-घोड़े
आप देखेंगे तो शतरंज के आईने में
एक पैदल भी बादशाह नजर आएगा

नहीं जो हैसियतवाले हों, छोड़िये भी उन्हें
मेरे रिश्ते पिछड़ गये हैं, तोड़िए भी उन्हें
आपकी तेज चाल देखकर लगता है यही
आप तो क्या रुकेंगे, वक्त ठहर जाएगा

---वीरेन्द्र मिश्र
कृष्णकुंज, दादाभाई क्रास-३, बंबई-४०००५६

शब्द भी सफर करते हैं

अजब देखा तमाशा तार घर में
यहां अल्फाज रहते हैं सफर में

● डॉ. गोविन्दप्रसाद सत्यार्थी

बिस्मिल साहब ने भी शब्दों के सफर की वात तो बखूबी कही है, किंतु यह शब्द-यात्रा तार-घर तक ही सीमित नहीं है। शब्द हमारे हम-सफर हैं, जो जीवनभर हमारा साथ नहीं छोड़ते। हम जो कुछ भी लिखते-पढ़ते-बोलते- समझते हैं, वह सब कुछ शब्दों का ही तो सफर है।

यदि स्वयं 'सफर' शब्द को ही लें, तब विदित होगा कि यह शब्द अरवी भाषा के पुलिंग रूप का है। हिंदी में यह शब्द अरवी से ही आया है और मूल अर्थ 'यात्रा' के लिए ही प्रयोग किया जाता है। यही शब्द इसी ध्वनि में अंगरेजी भाषा में 'सहना' 'क्लेश' या 'पीड़ा' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अतः कहा जा सकता है कि हिंदी अर्थ के अनुसार शब्द 'सफर' अर्थात यात्रा करते हैं और अंगरेजी अर्थ के अनुसार शब्द 'सफर' अर्थात सहन करते हैं, 'पीड़ित' होते हैं। यह तो हुई अर्थ की बात कि किस प्रकार शब्द अर्थ-भेद के साथ विभिन्न भाषाओं में प्रकट होते हैं, जहां उनका परस्पर कोई ताल-मेल नहीं होता।

व्युत्पत्तिमूलक विकास-क्रम

अर्थ की ही दृष्टि से देखा जाए, तब यह शब्द-यात्रा कम रोचक नहीं है। हिंदी में गृहीत अरवी, फारसी, संस्कृत और अंगरेजी के सैकड़ों, हजारों शब्दों का अपना यात्रा-वृत्तांत है।

शब्दों का यह सफर व्युत्पत्तिमूलक और अर्थमूलक दृष्टि से और भी स्पष्ट हो जाता है। कुछ उदाहरण देखिए:

संस्कृत शब्द 'हृदय' मध्य भारतीय आर्य भाषा में 'हिअअ' और हिंदी में 'हिआ' या 'हिया' हो गया। संस्कृत शब्द 'अमृत', मध्य भारतीय आर्य भाषा में 'अमिअ' और हिंदी में 'अमी' हो गया। **अमिय मूरिमय चूरन चारू।** (मानस) संस्कृत 'कर्म' से मध्य भारतीय आर्य भाषा में 'कम्म' हो गया और हिंदी में 'काम' वन गया। संस्कृत शब्द 'वार्ता' मध्य भारतीय आर्य भाषा में वत्ता और हिंदी में 'बात' हो गया, हिंदी में 'ऊंचा' शब्द संस्कृत 'उच्च' से आया है। हिंदी में 'चकोर'

एक देश के निवासियों का दूसरे देश के निवासियों से संबंध एवं संपर्क होने मात्र का तात्पर्य है कि कुछ न कुछ शब्द अवश्य एक भाषा से दूसरी भाषा के बोलनेवालों ने ग्रहण किये होंगे। कालांतर में गृहीत शब्दों में विदेशीपन की गंध भी नहीं आती।

हिंदी में गृहीत अरबी, फारसी, संस्कृत और अंगरेजी के सैकड़ों, हजारों शब्दों का अपना यात्रा वृत्तांत है . . .

शब्द संस्कृत में 'चकोरः' पालि में 'चकोरो' और प्राकृत में 'चओर' था। इससे स्पष्ट होता है कि शब्द किस प्रकार अपने मूल स्वरूप से बनते-बिगड़ते आगे की ओर बढ़ते हैं। यह शब्दों का व्युत्पत्तिमूलक विकास क्रम है।

कैसे होती है शब्द-यात्रा

अब हम देखेंगे कि शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा में कैसे सफर करते हैं। समस्त भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत को ही लिया जाए, तब उसमें भी अनार्य भाषा से अणु, कपि, काल, पूजा, घोटक, तिंतिणी, हेरम्भ आदि शब्द आये हैं। इसी प्रकार इसमें परशु सुमेरीय भाषा से, यवन, होड़ा, द्रम्य, खलन आदि शब्द ग्रीक से, कीचक प्राचीन चीनी भाषा से, मुद्रा, पुस्त, मिहिर आदि शब्द प्राचीन फारसी से आये हैं। हिंदी में तो अरबी-फारसी, तुर्की, अंगरेजी आदि विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द आ गये हैं। संस्कृत और अंगरेजी में भी शब्दों की साम्यता एक 'एडवेंचरस जर्नी' है। संस्कृत का 'दंत' अंगरेजी में 'टूथ' है (प्राचीन अंगरेजी में 'टांथ' था), संस्कृत का 'नासा' अंगरेजी का 'नोज' है। संस्कृत का 'स्मित' अंगरेजी का 'स्माइल' है। संस्कृत का 'पितर' अर्थात पिता अंगरेजी में 'फादर' है। संस्कृत का 'मूषक' अंगरेजी में 'माउस' हो गया है।

एक देश के निवासियों का दूसरे देश के निवासियों से संबंध एवं संपर्क होने मात्र का तात्पर्य है कि कुछ न कुछ शब्द अवश्य एक भाषा से दूसरी भाषा के बोलनेवालों ने ग्रहण किये होंगे। कालांतर में गृहीत शब्दों में विदेशीपन की गंध भी नहीं आती है। भारतेंदु द्वारा रचित कविताओं में अंगरेजी शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग मिलता है।

डिसलायल हिंदुन कहत कहां मूड़ वे लोग
दृग भर निरखहिं आज ते राजभक्ति संयोग

अंगरेजी लंकलाट, साटन, सिल्क, जाकेट, गाउन, गेटिस, क्रीज, गिलास, टिफिन, बेसिन इत्यादि अनेक शब्द हिंदी में हमारे दैनंदिन जीवन का व्यावहारिक सफर तय कर रहे हैं।

अरबी के शब्द भी हिंदी में फारसी के माध्यम से आये हैं। अरबी-फारसी के भी कुछ शब्द दृष्टव्य हैं। 'अदालत' अरबी का शब्द है। अरबी में इसका मूल अर्थ न्यायालय और कचहरी के साथ ही न्याय और इंसाफ भी था, किंतु हिंदी में यह केवल

न्यायालय और कचहरी के अर्थ में ही ग्रहण किया गया है।

'कसम' शब्द अरबी का है। इसका मूल अर्थ है शपथ, सौगंध। हिंदी में भी यह इसी अर्थ में ग्रहण किया गया है। उदाहरण के लिए देखिए:

भुजा उठाई, सखि संकर करि
कसम खाइ तुलसी मनी। (गीतावली)

'दीन' शब्द संस्कृत और अरबी भाषा में अलग-अलग अर्थ देता है। संस्कृत में इसका अर्थ दयनीय, करुण और दु:खी है। अरबी में यह शब्द मत और मजहब के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। हिंदी में यह संस्कृत और अरबी दोनों ही अर्थों में अलग-अलग ग्रहण किया गया है।

मुहावरे के रूप में प्रयोग

तुलसीदास ने विनय पत्रिका में कहा है, 'तू दयालु दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी।' हिंदी में अरबी अर्थ के मुहावरे के रूप में भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। यथा-दीन-दुनिया दोनों से जाना—अर्थात लोक-परलोक दोनों से हाथ धोना। दीन-इलाही मुगल सम्राट अकबर का चलाया हुआ एक धार्मिक संप्रदाय भी था, जो अधिक समय तक न चल सका था।

'गुलाम' शब्द अरबी का है। इसका मूल अर्थ है, लड़का, बालक, दास, पराधीन। हिंदी में यह दास के अर्थ में ही ग्रहण किया गया है। तुलसीदास ने कई जगह इस शब्द का प्रयोग किया है। उदाहरण देखिए:

इहै जानिकै तुलसी निहारो जन भया न्यारो के गनिबो जहां गने गरीब गुलाम।

'नवाज' शब्द फारसी का है। इसका मूल अर्थ है बजानेवाला जैसे—नय नवाज कृपा करनेवाला-जैसे गरीब नवाज।

विरद गरीब निवाज राम को।

तू गरीब को निवाज, हौं गरीब तेरो।

इस शब्द का प्रयोग तुलसी ने गरीब नवाज के अर्थ में बहुत किया है।

यात्रा में अर्थ-परिवर्तन भी

गरीब शब्द भी अरबी का है। इसका अरबी में अर्थ है परदेशी, जो सफर में हो, दीन, कंगाल, बेबस। हिंदी में यह शब्द केवल दु:खी या दीन के अर्थ में ही प्रयोग किया जाता है। उपर्युक्त वाक्य में तुलसी ने इस शब्द को भिन्न अर्थ में प्रयोग किया है। उन्होंने सांसारिक गरीबी के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग नहीं किया है। इसमें मन की अंतर्दशा विनय का बोध हो रहा है। इसलिए अर्थ-परिवर्तन की दृष्टि से भी

यह शब्द-यात्रा विशेष उल्लेखनीय है। जब अर्थ-परिवर्तन की ही बात आ गयी है तो आइए इस दृष्टि से भी शब्दों के सफर का निरीक्षण करें। प्रायः जब शब्द जन्म लेते हैं, तब उनमें बड़ी शक्ति होती है, लेकिन दुनिया के व्यापारों के चक्कर में पड़कर शब्द कभी व्यापक और कभी संकुचित अर्थ ग्रहण कर लेते हैं।

अंगरेजी शब्द 'स्टेशन' का मूल अर्थ है 'कोई चीज कहीं आकर ठहरे।' हिंदी में यह शब्द 'रेलवे स्टेशन' के अर्थ में ही प्रयोग किया जाता है। इसी कोटि में कांगरेस, लीग, मोटर, साइकिल आदि शब्द लिये जा सकते हैं।

अंगरेजी में 'कांगरेस' का अर्थ है सम्मिलित होना, विचार-विमर्श की औपचारिक बैठक। आज हिंदी में यह शब्द एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

अंगरेजी में 'लीग' का अर्थ होता है सामान्यहित की रक्षा के लिए आपसी संगठन। आज हिंदी में यह शब्द मुस्लिम लीग के अर्थ का ही द्योतक है।

'मोटर' का मूल अर्थ है, जो गति प्रदान करे। 'साइकिल' का अंगरेजी में मूल अर्थ है, आवर्तनीय समय। किसी भी चक्र के अर्थ में प्रयुक्त यह शब्द आज बाइसिकिल के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। इसी प्रकार के सैकड़ों उदाहरण दिये जा सकते हैं। अर्थ परिवर्तन की विविध दिशाएं भी शब्दों के इस सफर को अत्यंत रोचक बना देती हैं। शब्दों ने अपनी रथ-यात्रा की सुगमता के लिए लेखनी के 'शेल्टर' में अपनी जगह सुरक्षित रखी है। अब यह कोई आलोचना का विषय नहीं रहा। 'दूसरे सप्तक' में कहा गया है :

आलोचनाएं सो रहीं
बेफिक्र
परवाह नहीं
है सीट तो रिजर्व।

—२३९/५२, कटरामीर जहांगीर
ख्वाजा कुतुबुद्दीन रोड, लखनऊ-३

एक बंबईवासी को जिन्नवाली बोतल मिल गयी। जिन्न बोला, "मांगो क्या चाहिए . . . ?"

"मुझे रहने के लिए घर . . .।"

अचानक जिन्न यथावत बोतल में समा गय। और गुस्से में भुनभुनाया, "कंबख्त, अगर बंबई में रहने को मुझे घर ही मिल जाता, तो क्या मैं भला सदियों से इस बोतल में ही गुजारा करता . . .।"

—कुमार रमेश

★

"देखो बेटे, तुम्हारे दादाजी ने शादी की और पछताये, मैंने शादी की और पछता रहा हूं, तुम क्या करोगे?"

"जी, परंपरा के अनुसार पहले शादी करूंगा और फिर पछताऊंगा।"

—अनिल रसवंत राही

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यह दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।
—संपादक

बुद्धि विलास

१. ऐसी दो संख्याएं बताइए जिनका जोड़ १०८ तथा अंतर ७४ हो।

२. शुक्र ग्रह का एक दिन पृथ्वी के दिन से लगभग कितना बड़ा होता है?— क. ५० गुना, ख. ७५ गुना, ग. ११८ गुना, घ. १३७ गुना।

३. भारत के किस बंदरगाह को 'पूर्व का वेनिस' तथा 'अरब सागर की रानी' कहा जाता है?—
क. बंबई, ख. कांडला, ग. कोचीन, घ. मार्मुगाओ।

४. सुप्रसिद्ध अफ्रीकी यात्री तथा विद्वान इब्न बतूता किसके शासनकाल में भारत आया था?—
क. चंद्रगुप्त मौर्य, ख. कुतुबुद्दीन ऐबक, ग. अलाउद्दीन खिलजी, घ. मुहम्मद तुगलक।

५. हमारे देश में कालीन का प्रचलन कब से प्रारंभ हुआ?

६. लंदन में किस प्रसिद्ध व्यक्ति की कब्र के पत्थर पर उसी की कृति के ये शब्द लिखे हैं—"दार्शनिकों ने विभिन्न प्रकार से दुनिया की केवल मीमांसा की है। मुख्य बात तो है उसे (दुनिया को) बदलना।"

७. हाल में दुनिया की किस फिल्म के प्रदर्शन के पहले मास में १० करोड़ डालर से अधिक के टिकटों की रिकार्ड बिक्री हुई है?

८. अब तक एक ही संगीत-निदेशक के नेतृत्व में सबसे बड़े आर्केस्ट्रा का आयोजन कहां और कब हुआ?

९. ब्रिटिश शासनकाल में भारत की किस देशी रियासत ने सबसे पहले प्रातिनिधिक विधानसभा की स्थापना की ओर कदम बढ़ाया था?—
क. ग्वालियर, ख. मैसूर, ग. जयपुर, घ. औंध।

१०. इस वर्ष विश्व कप फुटबाल का विजेता कौन है?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है?—

विश्व की प्रथम हवाई डाक सेवा

इस सदी के दूसरे दशक की बात है। इलाहाबाद के किले के सामनेवाले मैदान में हजारों नागरिक एकत्रित थे हवाई जहाज की पहली उड़ान देखने के लिए। यह उड़ान थी डाक ले जानेवाले एक विमान की, जो एक ऐतिहासिक उड़ान सिद्ध हुई।

● गोपालकृष्ण मीना
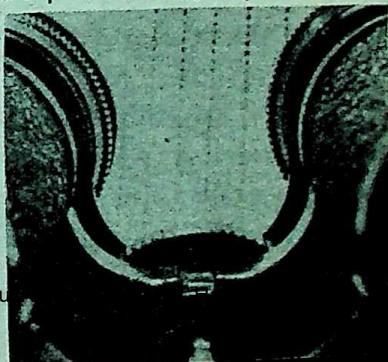
सात समंदर पार, दूरदराज देश में बसे किसी संबंधी अथवा परिचित द्वारा भेजे पत्र पर छपे (बाइ एअर मेल) शब्द को पढ़कर आप तुरंत समझ जाते हैं कि पत्र हवाई डाक सेवा द्वारा आप तक पहुंचाया गया है। विश्व के प्रायः सभी विकसित एवं विकासशील देशों में हवाई डाक सेवा प्रचलित है तथा इसके माध्यम से हजारों किलोमीटर दूर भेजा जाने-वाला पत्र कुछ ही घंटों में गंतव्य स्थान पर पहुंचा दिया जाता है।

विश्व में हवाई डाक सेवा की दिशा में प्रथम प्रयास की शुरुआत १८ फरवरी, १९११ को सर्वप्रथम भारत में और वह भी इलाहाबाद से हुई।

उस समय तक अधिकांश लोगों ने वायुयान देखे तक न थे। इलाहाबाद के अधिकांश नागरिकों ने भी केवल ऊपर से उड़ते वायुयान देखे थे, समीप से वायुयान देखने का अवसर उन्हें भी प्राप्त नहीं हुआ था। उस समय तक इलाहाबाद से किसी वायुयान ने न तो कोई उड़ान भरी थी और न ही वहां कोई वायुयान उतरा था। इस पर भी इलाहाबाद को प्रथम हवाई डाक सेवा आरंभ करनेवाला नगर तथा भारत को प्रथम हवाई डाक सेवा आरंभ करनेवाला देश होने का गौरव प्राप्त है।

कौतूहलभरी शुरुआत

उस दिन १८ फरवरी, १९११ को इलाहा-बाद के किले के सामने, मैदान में सैकड़ों-हजारों उत्सुक नागरिकों की भारी-भीड़, इलाहाबाद की प्रथम वायुयान उड़ान देखने को एकत्रित थी। मैदान के बीचों-बीच एक विमान खड़ा था। विमान का नाम था—'बंबर-सोंभर'। यह एक उच्च विमान था, जिसे फ्रांसीसी चालक हेनरी पिके फ्रांस से अपने साथ लाया था।

नियत समय पर भारत सरकार के डाक-तार विभाग के (अंगरेज) अधिकारियों के साथ हेनरी पिके उड़ान-स्थल पर पहुंचा।

प्रथम डाक विमान पर सवार बालक

उसके साथ डाक के कुछ थैले भी थे, जिनमें प्रथम हवाई डाक सेवा द्वारा भेजे जाने-वाले पत्र थे। अधिकारियों ने डाक के थैले वायुयान में रखवा दिये, तब फ्रांसीसी हेनरी पिके भी जहाज के काकपिट में घुस गया। मशीनों की आवश्यक जांच-पड़ताल करके हेनरी पिके ने मैदान में खड़े अधि-कारियों से चिल्लाकर कहा—'कांट्रेक्ट !' इसी के साथ वहां निस्तब्धता छा गयी।

हेनरी पिके ने जहाज के 'प्रोपेलर' चालू कर दिये। सब कुछ ओ. के. पाकर पिके ने यान आगे बढ़ा दिया। हवाई जहाज को हरी घास के मैदान में दौड़ते देख लोगों ने हर्ष-ध्वनि में चिल्लाना आरंभ कर दिया था। वायुयान कुछ दूर तक घास पर दौड़ता रहा, इसके पश्चात हवा में उड़ान भरकर मैदान का चक्कर लगाया तथा अपने गंतव्य स्थान की ओर चला गया।

छोटी-सी पर ऐतिहासिक उड़ान

हवाई-डाक-सेवा की यह प्रथम उड़ान यद्यपि केवल छह मील दूरी की थी, किंतु इलाहाबाद से नैनी जंक्शन तक की वही उड़ान विश्व की ऐतिहासिक उड़ान बन गयी। प्रथम हवाई डाक सेवा के उन सभी पत्रों पर, जिन्हें हेनरी पिके अपने साथ लेकर उड़ा था, बैंगनी रंग के विशेष गोल डाक टिकट लगे हुए थे तथा सभी पत्रों पर गोल घेरे में 'फर्स्ट एरियल यू. पी. एक्जीबीशन, १९११' तथा बीच में 'बंबर सोमर' नामक उस विमान का चित्र छपा हुआ था, जिसे हेनरी पिके उड़ाकर ले गया था।

भारत से आरंभ की गयी इस प्रथम हवाई डाक सेवा का दूसरा चरण तब

पूरा हुआ, जब ६ सितंबर, १६११ को इंगलैंड से वायुयान द्वारा डाक भेजी गयी। तीसरी डाक परीक्षण उड़ान १८ मई, १६१६ को एक आस्ट्रेलियाई विमान-चालक हेरी हॉकर को अटलांटिक महासागर पर से भरनी थी, परंतु विमान का इंजिन खराब हो जाने के कारण, उसे अटलांटिक महासागर में ही उतारना पड़ा। इस दुर्घटना में चालक हेरी हॉकर को तो डूबने से बचा लिया गया, परंतु विमान में रखे सभी पत्र अटलांटिक महासागर में डूबकर नष्ट हो गये थे। तत्पश्चात अंतर्राष्ट्रीय हवाई डाक सेवा की प्रथम सफल उड़ान इटली के ब्रिडस्ट नामक स्थान से अल्वानिया के बेलोना नामक स्थान के मध्य संपन्न हुई थी।

किंतु ये सभी परीक्षण उड़ानें थीं, नागरिक हवाई डाक सेवा आरंभ करने का गौरव आस्ट्रिया को प्राप्त है। आस्ट्रिया हवाई डाक सेवा के अंतर्गत यह सुविधा सर्व प्रथम आस्ट्रिया के वियेना नगर तथा रूस के कीव नगर के मध्य प्रचलन में लायी गयी थी।

अधिकृत डाक टिकटों का प्रचलन

अधिकृत हवाई डाक टिकटों का प्रचलन सर्व प्रथम १६१७ में इटली से आरंभ हुआ। इसके पश्चात १६१८ में संयुक्त राज्य अमरीका ने भी हवाई डाक सेवा टिकिट जारी किये। संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा जारी किये डाक टिकिट में प्रथम बार एक विमान का चित्र अंकित किया गया था, बाद में कुछ अन्य देशों ने भी हवाई डाक सेवा के टिकिट तथा उन पर विमान का चित्र जारी किया।

प्रथम हवाई डाक सेवा द्वारा भेजे गये पत्रों में से एक पत्र

Miss Pocklington
Chilbolton Down
Stockbridge
Hants
England
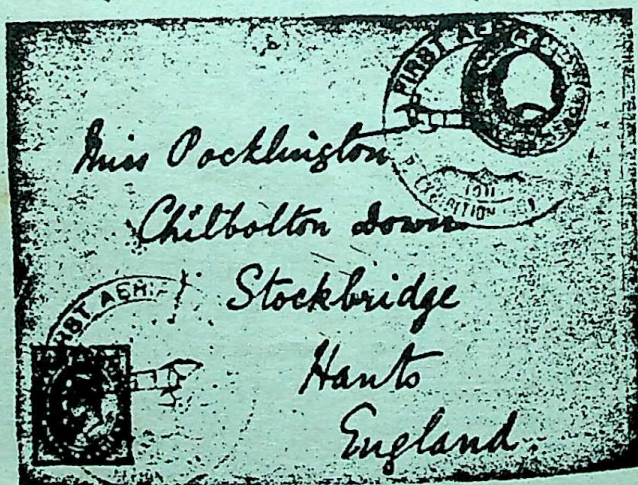
अधिकृत हवाई डाक लिफाफे का उपयोग भी सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा १९३२ में आरंभ किया गया। विश्व का पहला हवाई तार १९४६ में भेजा गया था।

हवाई डाक सेवा द्वारा प्रथम समाचार पत्र ६ नवबंर, १९१७ को भेजा गया। 'केप टाइम्स' नामक यह समाचार पत्र केपटाउन से भेजा गया था, विमान का नाम था—पोर्ट ऐलिजाबेथ। इसके पश्चात १९२८ में 'न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून' ने अपने नियमित हवाई डाक संस्करण का प्रकाशन आरंभ किया। यह पत्र लेबोर्ट से लंदन भेजा जाता था।

गैस के गुब्बारे

वायुयान द्वारा नियमित हवाई डाक सेवा आरंभ किये जाने से पूर्व हवाई डाक लाने ले जाने के लिए गैस के गुब्बारे भी प्रयोग में लाये जाते थे, जिनमें वाल्व लगे होते थे। ऐसे गुब्बारों को स्थिर रखने के लिए उनमें बालू (रेत) के बैग रखे जाते थे। जब गुब्बारे को नीचे उतारना होता, तब वाल्व खोलकर गुब्बारे की गैस निकाल दी जाती थी।

गुब्बारे से पहली डाक ले जानेवाले व्यक्ति का नाम जान वाईज था, उसने ३५ मील की उड़ान भरी थी। जान वाईज के इस साहसिक प्रयास के सम्मानस्वरूप १९५९ में संयुक्त राज्य अमरीका ने एक विशेष हवाई डाक सेवा आरंभ की। उस समय उस गुब्बारे का प्रदर्शन भी किया गया, जिसमें जान वाईज ने ऐतिहासिक उड़ान की थी।
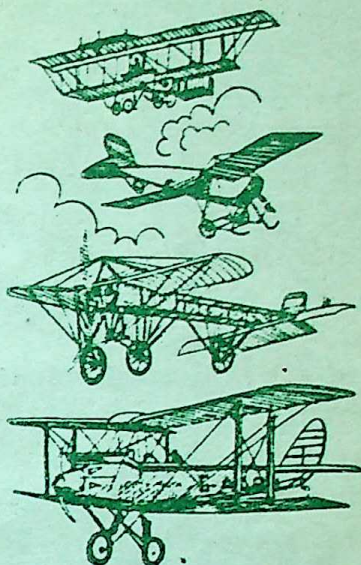
भारत सरकार द्वारा हवाई डाक सेवा पर जारी एक विशेष प्रथम दिवस-आवरण

सन १९७०-७१ में पेरिस के घेराव के समय भी कुछ साहसी गुब्बारा चालकों ने पेरिस तथा फ्रांस के मध्य डाक व्यवस्था बनाये रखने का ऐतिहासिक प्रयास किया था। गुब्बारा चालकों के इस साहसिक कारनामे के सम्मानस्वरूप फ्रांस सरकार ने भी १९५५ में 'पेरिस घेराव स्मृति' में एक विशेष हवाई डाक टिकिट जारी किया था।

—कल्याण कुंज, लक्ष्मीनगर, जयपुर

मुल्ला नसीरुद्दीन के लतीफे

कुछ नहीं कहना अचकन के बारे में

• रसिक बिहारी

मुल्ला नसीरुद्दीन मध्ययुगीन लोक-कथाओं के एक विख्यात नायक हैं। शताब्दियों से उनकी कथाओं ने मध्य-एशिया, तुर्की, ग्रीस, सिसिली, रूस और फ्रांस आदि यूरोपीय देशों के लोगों का, हमारे देश के बीरबल की तरह, मनोरंजन के साथ ही साथ ज्ञानवर्द्धन भी किया है। यहां प्रस्तुत हैं कुछ चुनी हुई कथाएं

सत्य का स्वरूप

शहंशाह-ए-तुर्की बजरिए शाही फरमान के अपनी प्रजा में सत्य का प्रचार करके उन्हें चरित्रवान बनाना चाहते थे। इस पर नसीरुद्दीन ने शहंशाह को समझाया, "मेरा सत्य और तुम्हारा सत्य अलग-अलग चीजें हैं। केवल कानून से मनुष्य को सत्यवादी और चरित्रवान नहीं बनाया जा सकता। सत्य की उपलब्धि आसान बात नहीं। इसके लिए बहुत कुछ करना पड़ेगा। साधारणतया हम जिसे सत्य कहते हैं, वह सत्य का बाह्य स्वरूप मात्र होता है। अतः आंशिक है वह सत्य।"

पर शहंशाह अपने निश्चय पर अड़े रहे। उन्होंने तय किया कि वे प्रजा को सत्य भाषण और आचरण में पटु बनाकर ही रहेंगे।

शहंशाह के राज्य में प्रवेश करने के लिए एक पुल पार करना पड़ता था। पुल के मुहाने पर एक फांसी की टिकटी लगायी गयी। एक फौजी अफसर कुछ सिपाहियों के साथ वहां तैनात हुआ, आने-वालों की जांच के लिए।

घोषणा की गयी कि हर एक से कुछ सवाल पूछे जाएंगे, जो सच बोलेगा उसे ही अंदर जाने दिया जाएगा, जो झूठ बोलेगा उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा।

नसीरुद्दीन आगे आये सबसे पहले।

सवाल हुआ, "कहां जा रहे हो?"

शांत भाव से नसीरुद्दीन ने कहा, "फांसी पर लटकने।"

"हमें तुम्हारी बात पर यकीन नहीं।"

"ठीक है, अगर मैंने झूठ कहा है, तब मुझे फांसी पर लटका दो।"

"वाह, हम अगर तुम्हें इस तरह झूठ बोलने के लिए फांसी पर लटका दें, तब तुम्हारी बात हो सच हो जाएगी।"

"बेशक हो जाएगी। अब देख लिया न सत्य के स्वरूप को। सत्य के दो रूप हैं: मेरा सत्य और तुम्हारा सत्य।"

अचकन

एक दिन नसीरुद्दीन के पुराने मित्र जलाल उनके यहां आये। मुल्ला उन्हें देखकर खुशी से बोल उठे, "अरे आओ, आओ, बहुत दिन बाद आये। मैं बाहर निकल रहा था। कई जगह जाना है। चलो न तुम भी मेरे साथ। चलते-चलते बातें भी होंगी।"

जलाल ने कहा, "तब भई, मुझे कोई अच्छा कपड़ा दो पहनने को। क्योंकि मेरे ये कपड़े किसी भले आदमी के यहां जाने लायक नहीं हैं।"

नसीरुद्दीन ने दोस्त के पहनने के लिए एक बढ़िया-सी अचकन ला दी।

पहले जिस मकान में नसीरुद्दीन गये, वहां मित्र का परिचय कराते हुए बोले, "ये मेरे बचपन के मित्र जलाल हैं। पर जो अचकन ये पहने हुए हैं, वह मेरी है।"

वहां से निकलने पर रास्ते में जलाल ने कहा, "बड़े नासमझ हो दोस्त, तुम; 'जो अचकन ये पहने हुए हैं वह मेरी है,' ऐसा कहीं कहा जाता है। अब ऐसी

बात फिर मत करना।"

मित्र की बात मान ली नसीरुद्दीन ने।

नसीरुद्दीन दूसरी जगह पहुंचे। वहां इतमीनान से बैठकर बोले, "ये हैं जलाल, मेरे बचपन के दोस्त। मेरे यहां आये थे, मैं पकड़ लाया इन्हें अपने साथ। लेकिन वह अचकन जिसे वे पहने हुए हैं, वह उन्हीं की है।"

वहां से निकलकर जलाल ने बिगड़कर कहा, "तुम्हें अचकन के बारे में कोई बात भी नहीं कहनी चाहिए थी।"

नसीरुद्दीन ने मित्र की सलाह मान ली।

तीसरी जगह पहुंचकर नसीरुद्दीन बोले, "ये हैं मेरे प्यारे दोस्त जलाल। और वह अचकन जिसे वे पहने हुए हैं—जाने दो उसके बारे में, यानी अचकन के बारे में कुछ न कहना ही अच्छा है। क्यों भाई जलाल, क्या ख्याल है तुम्हारा?"

मछली ने मुल्ला के प्राण बचाये

नसीरुद्दीन एक बार भारत में आये, भ्रमण के लिए। एक कुटिया के सामने
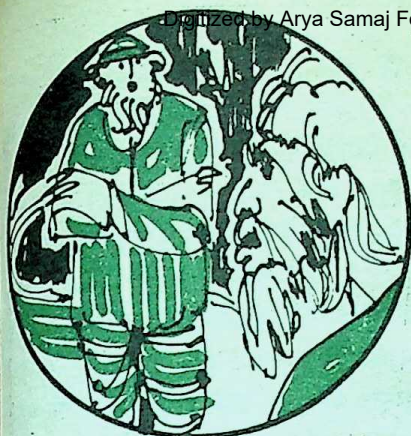
से गुजरते हुए उन्होंने देखा कि उसमें एक साधु शांत मुद्रा में बैठे हैं। नसीरुद्दीन को उनसे परिचय प्राप्त करने की इच्छा हुई। वह साधु के पास जाकर बोले, "आप जैसे संत से अनेक ऐसे विषयों पर विचार-विनिमय हो सकता है, जो हम दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।"

साधु ने कहा, "मैं एक योगी हूं। मछली, पक्षी आदि प्राणियों की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया है मैंने।"

मुल्ला ने कहा, "तब तो मेरे और आपके विचारों में बहुत समानता है। इसका अंदाज मुझे पहले ही से था। मछली ने तो एक बार मेरे भी प्राण बचाये थे।"

योगी ने कहा, "आश्चर्य ! आपके-जैसा महान पुरुष तो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा। इतने दिन से प्राणियों की सेवा में लगा हूं। पर मछली ने किसी के प्राण बचाये हों, ऐसी बात तो मैंने कभी नहीं सुनी। ऐसी घटना घटते भी नहीं देखी। तब मेरा मत सही मालूम पड़ता है, समस्त प्राणियों में एक पारस्परिक संयोग है।"

कई हफ्ते साथ-साथ काटे दोनों ने। एक दिन योगी ने कहा, "अब तो हम एक दूसरे से काफी परिचित हो चुके हैं। आपकी भी यात्रा की थकावट दूर हो गयी है। यदि आपको आपत्ति न हो तब अपने अनुभव से मुझे भी अवगत कराने का अनुग्रह करें।"

तब नसीरुद्दीन ने कहा, "जब सुनना ही चाहते हैं तब सुनिए। मेरी उपलब्धि से कहां तक आप सहमत होंगे, मैं नहीं जानता। मछली ने मेरे प्राण बचाये थे। मैं भूखा मर रहा था। कई दिन के फाके के बाद मैंने एक मछली पकड़ी, जो इतनी बड़ी थी कि मुझे तीन दिन तक भोजन की फिक्र नहीं करनी पड़ी। कहिए, मछली ने मेरे प्राण बचाये कि नहीं ?"

—संकटमोचन कॉलोनी, लंका,
वाराणसी-२२१००५ (उ. प्र.)

दो लघु कथाएं

राजकृपा

बूढ़ा पीपल थक गया, परंतु पगडंडी की जिद जारी रही। वह हर कीमत पर राजपथ तक जाना चाहती थी। उसमें राजा का वैभव देखने की भूख थी। राजपथ पर भागते राजा के रथ के घोड़ों की टाप उसकी बेसब्री को और बढ़ा देती थी।

एक दिन, राजा के रथ की धुरी टूट गयी। वह मंत्री के साथ राजपथ से उतरकर पगडंडी पर आ गया। इस अप्रत्याशित सौभाग्य से वह पगडंडी फूली न समायी। उसने राजा और मंत्री की बातें नहीं सुनी। वह तो आत्मविभोर थी। इधर राजा को पगडंडी पसंद आ गयी थी। राजपथ के लंबे सफर की तुलना में यह कहीं बहुत कम समय में गंतव्य तक ले आती थी। राजा ने मंत्री को आज्ञा दी--'इस पगडंडी को नया राजपथ बनवा दो।'

सुबह हुई, मजदूरों के कोलाहल से जंगल की शांति नष्ट हो गयी। पगडंडी के किनारे की वनस्पतियां काट दी गयीं, पक्षी आतंकित होकर उड़ गये, पगडंडी को पत्थरों से पाट दिया गया।

नया राजपथ तैयार हो गया।

....पर पगडंडी मर गयी थी!

न जाने दुर्भाग्य ने भिखारी को ही क्यों चुना जो वह गुस्से में तमतमाये घर से निकल रहे बाबू साहब के सामने पड़ गया। बाबू साहब ने आव देखा न ताव, पूरी शक्ति से उस पर हाथ की छड़ी दे मारी। फूटा कटोरा उसके निर्बल हाथ से निकलकर खड़खड़ाता हुआ पास की नाली में जा गिरा। बाबू साहब ने उसे गाली दी और यह कहते हुए आगे बढ़ गये--'भीख मांगने चला है! काम करते नानी मरती है!' भिखारी इस अप्रत्याशित आघात से सन्न था। नाली इतनी गहरी थी कि उससे पुनः कटोरा निकालना इसके वश की बात नहीं थी।

एक पाप और

गहरा आघात था। कटोरे के बिना कौन कहता, वह भिखारी था!

तभी उधर से गुजरता एक व्यक्ति उस पर तरस खा गया। उसने घर जाकर एक फूटा कटोरा ढूंढ़ लिया और भिखारी के हाथ में उसे पकड़ाता हुआ बोला--'लोग भीख नहीं दे सकते, न दें। ऐसी बेदर्दी क्यों दिखाते हैं?'

भिखारी के हाथों से पुनः कटोरा जा लगा। ...और विधि ने दूसरे व्यक्ति के पापों की सूची में एक पाप और जोड़ दिया!

--श्याम सुन्दर

पांडा की राजनीति

• नीरा गर्ग

"कभी-कभी मैं सोचता हूं कि चीनी लोग पश्चिमी देशों को छोटी उम्र के उन्हीं पांडा जोड़ों को उपहार में देते या भेजते हैं, जो प्रजनन-क्षमता अथवा यौन-विकृति से ग्रस्त होते हैं। माना कि चीनी पांडा का सम्मान करते हैं। उसे प्यार करते हैं, लेकिन वह इतने चालाक हैं और जानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक संबंधों में पांडा की अपनी विशिष्ट भूमिका है।" यह है एक पांडा-विशेषज्ञ का कथन।

१९७२ में चाऊ एन लाई ने अमरीका को हिस्संग और लिंग का जोड़ा भेंट किया था। बदले में अमरीका ने भी वहां से कस्तूरी गाय-बैल की सुंदर जोडी उपहारस्वरूप दी थी। इसी प्रकार चीन ने लंदन, पेरिस, मैड्रिड, बर्लिन और तोक्यो को पांडा के जोड़े भेंट किये हैं।

निरंतर घटती संख्या

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले इस जीव का वजन मात्र २५० किलोग्राम है। न यह भालू है और न रैकून, जबकि यह भालू भी दिखता है और रैकून भी। मांसाहारी लगता है, लेकिन मांसाहारी है नहीं। शाकाहारी श्रेणी में आता है, पर शाकाहारी कहीं से नहीं लगता। मध्य चीन के घने जंगलों में बांसों के झुरमुट इसकी प्रकृति के पोषक और अनुकूल तत्व हैं। इन्हीं की टहनियों और पत्तियों को खाकर जीनेवाला प्राणी एकाएक संसार की नजरों में क्यों चढ़ गया? शीतल प्रकृति प्रेमी पांडा को जब सभ्य मानवों के बीच शहरी वातावरण में लाया जाता है, तब जीवन की घड़ियां सिमट जाती हैं। रात दिन दर्शक इस लज्जालु और संकोची जीव को इतना क्षुब्ध कर देते हैं कि यह अपनी वंश-वृद्धि के प्राकृतिक नियम को भूल बैठता है। जिन शिकारियों ने चीन के घने जंगलों को छाना है, वे

बताते हैं कि पांडा की संख्या बड़ी तेजी से घटती जा रही है। आज मुश्किल से १,००० पांडा बचे हैं। हाल में पता चला है कि चीन के जूखेन क्षेत्र में १४८ पांडा मिले हैं। शायद बांसों के अचानक नष्ट हो जाने से बाकी पांडा मर गये हैं। बड़े पांडा तो इतने कम बचें हैं कि उन्हें उनके नाम लेकर उंगली पर गिना जा सकता है। चीन के चिड़ियाघरों में ५० पांडा होंगे और पश्चिम के चिड़ियाघरों में एक दर्जन से अधिक नहीं होंगे।

मजबूत जबड़े

'पांडा के जबड़े उसके आकार-प्रकार के सभी जानवरों में सबसे अधिक मजबूत होते हैं। ऐसा शायद उसके सुंदर गोल सिर के कारण होता है।' नेशनल पार्क के डायरेक्टर रिड ने अपने प्रेस समाचार में कहा था, 'वे इतने सुंदर और प्यारे हैं इतने खिलाने लायक हैं कि तुम्हारी इच्छा हो कि उन्हें गोद में उठा लो और गले से लगाकर भींच लो। वह तुम्हारी जिंदगी का सारा दर्द क्षणों में भुला देंगे।'

लेकिन संवेदनशील इतने कि एक थप्पड़ लगाते ही हाथ ही काट डालें। एक दशक पहले शिकागो जू में एक रक्षक का पूरा हाथ चबा डाला था। बिंग नाम की मादा ने भी अपने रक्षक की एड़ी में दांत गड़ा दिये थे। लेकिन वह शायद धमकी न होकर खिलवाड़ अधिक था और फिर आदमी ने जूते पहने थे, इसलिए सुरक्षित बच गया था।

चीनियों ने लिंग और हिस्सिंग को अलग-अलग कटघरों में रखने की चेतावनी दी थी, वरना वह एक-दूसरे से लड़-लड़कर ही जान दे देंगे। लेकिन क्लाईमन ने अपने हाल के अध्ययन में पाया कि चीन में पांडा जोड़े साथ रहते हैं—जैसे कि मैक्सिको में रहते हैं। शायद इसीलिए वह सफलतापूर्वक बच्चे पैदा कर सके हैं। हो सकता है, इसका कारण ऊंचाई पर बसे मैक्सिको की उनके मध्य चीन के जंगलों के मूल प्राकृतिक निवास से मिलती-जुलती जलवायु भी है।

प्रजनन की समस्याएं

संसार जानता है कि पांडा-प्रजनन कितना कठिन और कितनी विचित्रताओं और कितनी अनजानी गुत्थियों से भरा पड़ा है। मात्र इसके कारण दो देशों की सद्भावना और प्रेम संदेहास्पद हो जाता है। नेशनैल पार्क अमरीका के डायरेक्टर थेडोर रीड का विश्वास है कि मादा पांडा अपने वर्ष के पांच गरम दिनों में सिर्फ २४ से ३६ घंटे तक ही जनन-योग्य रहती है। यह भी अपने प्रणय-व्यापार में मनुष्यों की भांति सौम्य होती है और बड़ी मुश्किल से संतुष्ट होती है। इस समय सुंदरता, ताकत आदि के हिसाब से ठीक जोड़ा मिलाना ही सबसे बड़ा कौशल है।

चीन में पांडा-प्रजनन अभी तक सबसे सफल रहा है। १९६३ से अब तक वहां कम से कम दो दर्जन बच्चे सफलतापूर्वक पैदा हो चुके हैं। लेकिन पश्चिमी चिड़िया-

घरों में अब तक एक बार भी कोई पांडा बच्चा नहीं हुआ है। पिछले साल मैक्सिको शहर के चैंपुलटेक पार्क चिड़ियाघर की यिंग यिंग पांडा ने एक बच्चा दिया था। लेकिन दुर्घटनावश उसकी मृत्यु हो गयी। ऐसा ही दुर्भाग्य नेशनल पार्क का भी रहा। लेकिन मैक्सिको में दो बार पांडा-शिशु पैदा हो चुके हैं।
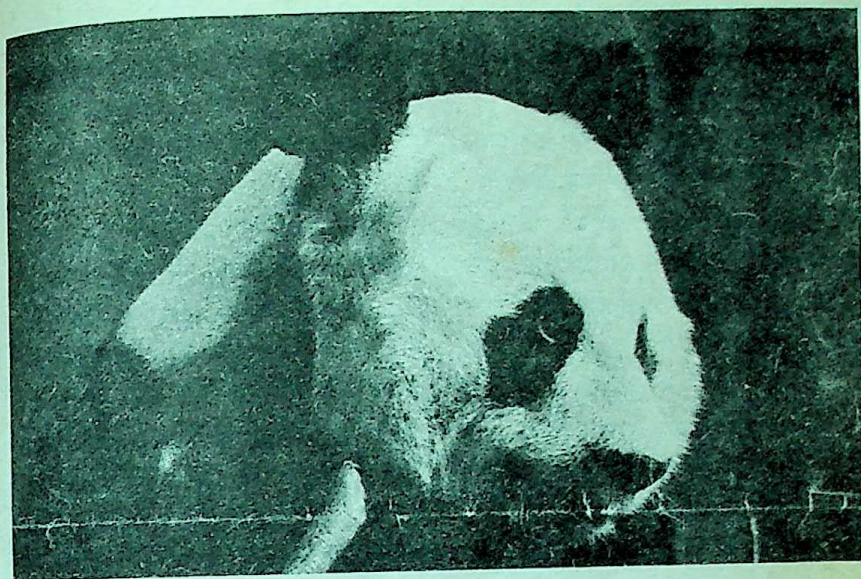
वास्तविकता यह है कि पांडा के जीवन के बारे में वैज्ञानिक आज भी बहुत कम जानते हैं। मास्को में एन. एन. पांडा का भोजन होती है भुनी टहनी और रूसी चाय। लेकिन चीनी लोग पांडाओं को चावल खिलाते हैं। वह दिन बड़ा शुभ माना जाता है, जिस दिन कोई मादा पांडा गर्भवती होती है। उसके पर्यवेक्षक दुआएं मांगते हैं कि वह ठीक से बच्चे जने और बच्चे बीसेक वर्ष तक जिंदा रहें।

कृत्रिम गर्भाधान के प्रयोग भी चीन ही में सफल हुए हैं। हिंस्सिंग के शुक्राणुओं को लिंग के गर्भ में प्रविष्ट कराकर कृत्रिम गर्भाधान का प्रयोग किया गया, किंतु वह असफल रहा।

उत्सुक दर्शकों की भीड़

ऐसे विलक्षण जीव को देखने डी. सी नेशनल पार्क जू वाशिंगटन में हजारों लोगों की भीड़ जुटी थी। क्या वैज्ञानिक, क्या प्राणिशास्त्री और क्या प्रकृति-प्रेमी, हजारों दर्शक दम साधे, सूरज की पहली किरण के साथ ही कांपते-ठिठुरते हुए,

दांत किटकिटाती, बर्फ पड़ती सुबह में मादा पांडा के दड़बे को एकटक देख रहे थे। निस्तब्ध वातावरण को चीर रहा था एक स्यामी उलूक का स्वर।

प्राणिशास्त्री डॉ. देवरा क्लाइमन अपने माइक्रोस्कोप को फोल्डिंग चेयर पर थामे और पशु चिकित्सक डॉ. माइकेल ब्रुश अपने पैरों को बे-आवाज थपथपाते खड़े थे। एक रखवाले ने तभी एक स्विच दबाया और लंबा काला दरवाजा एक ओर खिसक गया। उसमें दिखलायी दी मादा पांडा लिंग-लिंग। वह निकली और बाहर लटकती छड़ पर आकर उछलने-कूदने और झूलने लगी। २३६ पौंड की यह मादा दर्शकों से कुछ इंच दूर एक जाली के दड़बे में बंद थी। कभी वह घोड़े-सी हिनहिनाती, कभी मशीनगन की-सी आवाज रैंट-रैंट-टारा-टारा करके मिमियाने लगती, कभी खुश पिल्ले-सी चकहने लगती, कभी ऐसे कराहती, मानो उसका कुछ खो गया हो।

इस समय लिंग-लिंग गाभिन होने के लिए रंभा रही थी। यही वह समय था, जबकि उसके लिए उचित साथी मिलने पर उसकी देखभाल करनेवालों की इच्छा पूरी हो सकती थी। हिस्सिग नाम के साथी को तुरंत उसके दड़बे में प्रविष्ट कराया गया। लेकिन काफी कोशिशों के बाद भी हिस्सिग लिंग-लिंग को संतुष्ट नहीं कर सका। तब लिंग ने क्रोधित होकर उसे मारना और खदेड़ना शुरू कर दिया। अधिकारियों ने जब देखा कि हिस्सिग असफल रहा है, तब लंदन से आये चिया नामक नर पांडा को लिंग के दड़बे में भेजा, लेकिन सिवाय १० मिनिट की लड़ाई और उससे हुए तीखे घावों के कुछ भी आशा न बंधी।

इस वर्ष रीड फिर हताश हुए। चिया को लंदन वापस भेज दिया। हिस्सिग को तो नाकाबिल करार किया ही जा चुका है। इस बीच उन्होंने वीडियो कैसेट पर प्रणय-दृश्य की रील की रील बना दीं। उनके आल्हाद-स्वरों को रिकार्ड किया गया। निरंतर प्रयोग व अध्ययन चल रहा है, पांडा-वंश वृद्धि के लिए। कितने ताज्जुब की बात है कि पांडा के बगल के पिंजरों में रह रहे जानवर हर वर्ष के दो बच्चे देते हैं, लेकिन पांडा को इससे कोई असर नहीं पड़ता। लोग आते हैं और उनकी ओर ध्यान तक नहीं देते, जबकि पांडा के पास खड़े घंटों उससे बतियाते रहते हैं। पांडा खाते हैं, पीते हैं और सभी दैनिक कर्म करते हैं, पर प्रकृति-प्रदत्त सबसे बड़े गुण से एकदम उदासीन हैं।

उनकी यह उदासी सभ्य कहे जानेवाले मानव-समुदाय पर क्या कुछ कर गुजरेगी, कौन कह सकता है। उनका निजी जीवन राजनीतिक रंग ले रहा है।

—द्वारा, नयी दुनिया, इंदौर

स्वाधीनता चाहते हो, तो अपनी शक्ति पर विश्वास रखकर जोर लगाओ।
—बाइटन

गुजराती कहानी

• नसीर इसमाइली
(अनु. सुशीला जोशी)

आंखों के गीले कोने

आप शायद मुझे नहीं पहचानतीं, हां जानती अवश्य हैं; लेकिन जानना और पहचानना, ये तो दो भिन्न किनारे हैं, हमारे अस्तित्व की नदी के। सिर्फ समझ-दारी का पुल ही तो जोड़ सकता है, उसे। और तभी तो आपको जानते कई लोग हैं, किंतु समझदारी के पुल पर चलकर आपको पहचानने का दावा तो कर सकता हूं, सिर्फ मैं ही। हालांकि आप यह नहीं जानतीं।

आप हर रोज करीब साढ़े दस बजे दफ्तर जाने के लिए दस बजे से तैयार होने लगती हैं और सजावट के लिए आईने के सामने खड़ी रह जाती हैं तथा महल्ले के अंधियारे—उजाले से और फीके पड़े हुए आईने की उदास तह में कैद बने हुए अपने फीके व्यक्तित्व को ताकती रहती हैं।

नाम-स्वरुपा रमणलाल पंडित। ऑफि-शियल मेरिटल स्टेटस-कुमारी। उम्र—३४ वर्ष। क्वॉलिफिकेशन बी. ए., एल. एल. बी.। ऊंचाई—चार फीट तीन इंच, तथा ऊंची एड़ीवाले कष्टदायक सैंडिल पहने हों, तो चार फीट छह इंच।

आईने में प्रतिबिंब निहारते हुए, काजल घिसने से बरबस बड़ी दीखने का प्रयत्न करती हुई आपकी छोटी आंखें तथा गोल गेहुंआ वर्ण, चेहरा खिन्नता से भर आता है।

आहिस्ता से आईने की तह पर आप

अंगुलियां घुमाती हैं और तभी महसूस होता है आपको, गोया वह अंगुली आपकी दुबली देह के उभरने को भूले हुए सपाट अंगों की ओर उठ रही है।

आपको याद आ रहा है, बाबूजी रमणलाल पंडित निवृत्त होने से पूर्व स्कूल में भूगोल के अध्यापक थे। आप जब स्कूल में थीं, उस समय पढ़ाते थे, 'गंगा-यमुना के सपाट मैदानों का उपजाऊ प्रदेश भारत और वहां के रहनेवालों के लिए सर्वाधिक उपज पैदा करनेवाला सद्भागी प्रदेश है।' इस बात में, वहां के निवासियों को सद्भागी समझा जाए या प्रदेश को यह उस समय भी आपकी समझ में नहीं आया था, अब भी समझ में नहीं आ रहा।

निराश आंखों से आप आईने पर लटकती और धूल खाकर मैली बनी हुई सद्गत मां की तस्वीर के सामने देखती हैं। क्या देखकर स्वरूपा नाम रखा होगा इस मां ने?

. आपको पता है, अधिकतर आपको बस में जाने की जरूरत नहीं होती। कोई-न-कोई स्कूटर या मोटरसाइकिलवाला, परिचित लिफ्ट देनेवाला मिल ही जाएगा। और आपका ,सर्कल, विशेषतया पुरुष मित्रों का फ्रेंड सर्कल, काफी बड़ा है . . .

खिन्न मन से आप छोटे चेहरे पर दिखायी न दे, उस तरह स्नो-पाउडर मलती हैं। और घेरदार लहंगे पर बंगाली ढंग से साड़ी पहनकर पुनः एक बार अपने-आपको आईने में निहारकर मुसकराती हैं।

आपकी छोटी लंबाई की वजह से किसी ने, आपको 'जया भादुड़ी-जैसी लगती हैं,' कहा था। तब से आप अधिकतर सफेद साड़ी ही पहनती हैं। इस तरह आईने के सामने खड़े होकर निहारने का

चुके डायलवाला ... सूचना देता है। और 'बाबूजी' जा रही हूं' कहते हुए शीघ्रता से सैंडिल पहनकर निकलने लगती हैं।

'शामको लौटते समय मेरी 'अस्थालक सिरप' की बोतल ले आना सरु, दो दिन से खत्म हो गयी है।' बाबूजी खांसते हुए कहते हैं। 'अच्छा, बाबूजी! मुझे भी . . .।' लेकिन आगे का वाक्य गले में उतारकर आप बाहर निकल जाती हैं

... जमाना नहीं है आपके पास और ब्याहने की उम्र भी पार कर चुकी हैं आप आक्टोपस की भांति लिपटी हुई जिम्मेदारियां आपको कभी किसी एक पुरुष की धरोहर बनने नहीं दे सकतीं। अतः आपने स्वतः अपने आपको आम मिलकियत बना दिया है . . .

समय सिर्फ इसी वक्त आपको मिलता है, जब कि दोनों छोटी बहनें—शकुंतला और पिंकी कॉलेज चली गयी हों और छोटा भाई कौशिक स्कूल गया हो। वरना जिम्मेदार बड़ी बहन का बुरका आपको आईने के आगे खड़ा ही होने नहीं देता।

'बेटा सरू, दफ्तर नहीं गयी अभी तक?' पास के कमरे से बाबूजी की खांसती हुई बूढ़ी आवाज सुनायी देती है। आप चौंककर घड़ी के सामने देखती हैं। पीले पड़

और मन ही मन पूरा कर देती हैं—'मुझे भी 'ओरल' का पैकेट लेना है—दो दिन ऊपर हो चुके हैं।'

दफ्तर जाने में देर हो रही है। लेकिन बस-स्टॉप पर चैन से खड़ी हैं आप! और पर्स से कामू के 'आउट साइडर' का अनुवाद सत्रहवें पृष्ठ से आगे पढ़ने का प्रयत्न करती हैं।

आपको पता है, अधिकतर आपको बस में जाने की जरूरत नहीं होती। कोई-

न-कोई स्कूटर या मोटरसाइकिलवाला 'परिचित' लिफ्ट देनेवाला मिल ही जाएगा। ग्रौर आपका 'सर्कल' विशेषतया पुरुष मित्रों का 'फ्रेंड सर्कल' काफी बड़ा है।

शुरू-शुरू में इस तरह किसी अजनबी पुरुष के स्कूटर की सीट पर पीछे बैठना आपको जंचता नहीं था ग्रौर स्कूटर या मोटरसाइकिल के जानबूझकर लगने-वाले हिचकोलों से अकुला उठती थीं आप। लेकिन अब तो सब रास आ गया है आपको ! पुरुष को स्पर्श—जितनी दूरी पर रखकर बेवकूफ बनाने की कला में अब सिद्ध-हस्त हैं आप !

आप अच्छी तरह जानती हैं कि, आपके अति सामान्य व्यक्तित्व में केवल एक स्त्री होने के सिवा पुरुष को आकर्षित कर सके—ऐसा कुछ भी नहीं है। लेकिन आपकी वह एकमात्र जमा चीज दुनिया-भर के बेवकूफ पुरुषों की कमजोरी है; इसका विश्वास हो चुका है, आपको। ग्रौर इसीलिए बिल्ली-जिस तरह चूहे को नचाती है,—वैसे ही पुरुषों को नचाकर बाद में ग्रंगूठा दिखाकर तड़पाने में बड़ा मजा आता है आपको !

रूप का खजाना नहीं है, आपके पास ग्रौर ब्याहने की उम्र भी पार कर चुकी हैं, आप। ग्रॉक्टोपस की भांति लिपटी हुई जिम्मेदारियां आपको कभी किसी एक पुरुष की धरोहर बनने नहीं दे सकतीं। अतः आपने स्वतः अपने आपको आम मिल-कियत बना दिया है।

सुंदर स्त्रियों से ब्याह कर 'सेटल' बने हुए परिणीत पुरुषों के बेवकूफीपूर्ण अहं को, अपने मुलायम साथ से पालकर, उनके टूटते हुए घरों के मलबे से आप अपने नहीं बन पाये हुए घर की ईंटें ढूंढ़ती हैं, ग्रौर आरब का खून कर फांसी पर चढ़ते हुए 'आउट साइडर' के नायक-सी रिक्त शांति महसूस करती हैं।

आप खूब पढ़ती हैं अतः इसी वजह से इनसानों को परख लेने की सूझ आपके लिए सहज हो गयी है। पीठ के पीछे आपको 'फ्लर्ट' कहकर निंदा करनेवाले मर्दों को अपने सामने पूंछ पटपटाते हुए देखकर आपको घृणा हो जाती है। लेकिन उनके आगे 'बिस्कुट' फेंकने के सिवा आपके समान अकेली-अकेली-सी लड़की के लिए और कोई चारा नहीं है।

लेकिन आपकी इस आवारगी के पीछे एक अश्रु-मंडित प्यारी-सी उदास लड़की को मैं पहचानता हूं। पिछले साल आप अपने बाबूजी को चार धाम की यात्रा कराने ले गयी थीं, तब संतोष से गद्गद् हो उठनेवाली आपके वृद्ध पिता की मुरझी हुई आंखों में छलकी हुई आपकी स्नेहभरी-तस्वीर को देखा है मैंने। ग्रोंठ नहीं, लेकिन भाल चूमकर पलकों पर ग्रंगुलि फिरा सके ऐसे प्यार भरे पुरुष की निष्फल तलाश की लाश को आपकी आंखों के कोनों में तैरते हुए मैंने अनेक बार देखा है। आपके लिए अब मृग-जल-सी बनी हुई मातृत्व की चाह को आपके चेहरे पर झरते हुए

देखा है, मैंने। श्रौर यह मेरा भ्रम नहीं है। अपनी तीसरी आंख के जरिये आपकी उन भावनाओं को छूकर ही मैंने विश्वास किया है। श्रौर तभी तो अपने इर्द-गिर्द पूंछ पटपटाते हुए पुरुषों के झमेले की उपेक्षा कर आप मेरी इज्जत करती हैं।

उस दिन शाम को मैं एक दोस्त के साथ 'हेवमोर' में बैठा था श्रौर आप अपने दफ्तर के, परायी स्त्रियों के सामने पूंछ पटपटाने की क्रिया को बहादुरी समझनेवाले एक बेवक़ूफ ऑफिसर के साथ अचानक भीतर चली आयी थीं, किंतु मुझे बैठा हुआ देखकर शीघ्र ही वापस लौट गयी थीं।

आपके द्वारा दी हुई उस आदर की भावना को मैंने कुबूल कर लिया है। वरना मैं जानता हूं कि डर श्रौर क्षोभ की सीमा से बाहर तो आप कब की निकल चुकी हैं अतः मुझसे डरने की या संकोच रखने की कोई वजह नहीं थी, आपके पास।

लेकिन न जाने क्यों, हमारे बीच इत्तफाक के बादल हमेशा मंडराते रहते हैं। पिछला शनिवार आपको याद होगा ही। मैं अपनी पत्नी के साथ 'एडवांस' में 'हाइवे क्वीन' देखने के लिए गया था श्रौर एयर कंडिशंड अंधकार में किसी पुरुष मित्र के साथ लिपटकर बैठी हुई आपको पहचान लिया था, मैंने।

पिक्चर खत्म होने पर मैं आपकी श्रोर देखकर अपनी पत्नी से कुछ कह रहा था, यह देखकर आपने अनुमान कर लिया कि मैं अपनी पत्नी को दिखा रहा था कि, देखो हमारे दफ्तर की वह 'फलर्ट' लड़की।

लेकिन नहीं, वह गलतफहमी थी आपकी। मैं अपनी पत्नी से कह रहा था कि, देखो, इस चित्र को देखने के बाद सिर्फ उस एक लड़की की आंखों की कोर गीली है।

काश ! आप मुझे जानती ही नहीं, पहचानती भी होतीं तो...?

—२९८५, काजी महल्ला दरियापुर,
पोपटिया वाड, अहमदाबाद-१

उपन्यास लेखन

कनाडा की उपन्यास-लेखिका मारग्रेट ऐटवुड से किसी ने पूछा, "आप उपन्यास इतने आत्मविश्वास के साथ कैसे लिख लेती हैं?

"मैं जाने-पहचाने स्थानों के विषय में ही लिखती हूं। ऐसा ही विलियम फाकनर और अन्य उपन्यासकार करते थे। मैं सोचा करती थी कि फाकनर में अद्भुत कल्पना-शक्ति थी सृजनात्मक लेखन की और वह उसके संदर्भ में गवेषणा भी करता रहा करता था। परंतु मुझको आक्सफोर्ड मिशन से आये हुए किसी आदमी ने बतलाया था कि फाकनर ने कभी भी कोई गवेषणात्मक कार्य नहीं किया, बल्कि वह इस विषय में लिखता जरूर रहा था! इसी तरह मैं भी बेहिचक लिखती रहती हूं!"

—दुर्गाशंकर त्रिवेदी

सावधान! भौंहें आपका भेद बताती हैं

● मुकुल तिवारी

'अपनी भौंहों से सावधान रहिए, क्योंकि वे आपके भावावेग, उत्पादन-शीलता तथा करतूतों का भेद बता देती हैं। उनके आकारों में सब कुछ लिखा होता है।' और यह भी कहा जाता है कि 'किसी स्त्री के व्यक्तित्व के गहनतम रहस्य उसके चेहरे पर पढ़े जा सकते हैं।' यह चेतावनी समस्त नारी जाति के लिए पीटर शैन नामक एक चीनी लेखक की है।

सौभाग्य की बात है कि पीटर अपनी नारी-पारखी-निपुणता के लिए अपने आपको चीनी मुख-सामुद्रिकी का ऋणी मानता है। उसने एक छोटी-सी कुंजी प्रकाशित की है, जिसमें व्यक्ति की भौंह, आंख, नाक, मुंह आदि के आकार-प्रकारों के भेद तथा भावार्थ समझाये हैं, जिनका सार कुछ इस प्रकार है—

भौंहें

मेहराबी भौंहें—

ऐसी भौंहें सौंदर्य की प्रतीक हैं। स्वाभाविक मेहराबी भौंहें रुचि-उत्तेजक कलात्मक, अद्भुत तथा इंद्रियसुखाकांक्षी मनोवृत्ति, और अच्छे चरित्र तथा सफलता का परिचय देती हैं।

ऊर्ध्वारोही भौंहें—

ऐसी भौंहों के दोनों छोर यदि ऊपर को जाएं तो उनका संकेत यह होता है कि वह स्त्री चंचल, उत्तेजनशील, कामुक, उद्यमी, मानिनी तथा दृढ़निश्चयवाली है।

अधोन्मुखी भौंहें—

इस प्रकार की अधोन्मुखी भौंहें पीड़ित जीवन की द्योतक होती हैं। ऐसी स्त्री की विवशताओं अथवा कामुकता का लाभ उठाने से बचना चाहिए अन्यथा समाज यह निष्कर्ष निकाल लेता है कि आप चरित्र-हीन, अवलंबी और स्वार्थी हैं।

सूक्ष्म भौंहें—

ये भौंहें उत्कट प्रेमिका की पहचान हैं। ऐसी स्त्री कामातुर, महत्त्वाकांक्षी तथा स्वेच्छाचारी होती है और चपल तथा चिड़चिड़े स्वभाव की भी।

समतल (सपाट) भौंहें—

इस प्रकार की भौंहें वृत्तिजीवी स्वभाव का संकेत करती हैं। ऐसी स्त्री आवेगी, साहसी, खेलकूद तथा बाहरी जीवन-अनुरागिनी और शिष्टाचारी तथा काम बना लेनेवाली होती है, पर वह पारंपरिक गृहिणी नहीं होती। लोग उसे चतुर तथा सुयोग्य तो मानते हैं, पर उसकी नारी-सुलभ अपेक्षाओं की अवहेलना करते हैं।

सकोण भौंहें—

इस प्रकार की कोणयुक्त भौंहें महिला के साहसिक चरित्र का प्रमाण होती हैं। ऐसी स्त्री मौलिक तथा वित्तकुशल होती

है, और दीर्घजीवी भी। मंद और निर्बल पुरुष उसका सहारा चाहते हैं तथा दंभ-पोषी, सशक्त लोग उसे तोड़ने में विजय का अनुभव करते हैं। ऐसी स्त्री का जीवन उद्दीपक और निश्चित रूप से सफल होता है।

गोल भौंहें—

व्यावसायिक नारी, गायिका, नर्तकी की पहचान है। लगभग अर्धगोलाकार ये भौंहें उपायकुशल, स्वावलंबी तथा वित्तसंपन्न नारी की होती हैं। ऐसी स्त्री पुरुषों तथा उनकी इच्छाओं को चुटकियों में परख लेती हैं और संबद्ध पुरुष पर सदैव हावी रहती है।

आंखें

कांतिमयी आंखें—

ऐसी सब आंखों को आदर्श आंखें माना जाता है। निर्मल आंखें चतुरता साहस, संवेदनशीलता, कलात्मक मनोवृत्ति तथा नेतृत्व-क्षमता की द्योतक होती हैं। आंखें श्रृंगारोद्दीपक होने के साथ-साथ व्यक्तित्व का वह प्रथम अंग हैं, जिन्हें हर कोई, हर किसी में सबसे पहले देखता है।

भरपूर आंखें—

ऐसी आंखोंवाली सभी स्त्रियों को लोग, स्पष्टभाषी और निष्कपट स्वभाव वाली मानते हैं। वह सहवासी साथी आसानी से पा जाती है, पर निराशा भी इसीलिए भोगती है कि उसकी आंखें पुरुषों को आसानी से आकर्षित कर लेती हैं।

छोटी आंखें—

ऐसी आंखें एक स्वामिभक्त, सुव्यवस्थित तथा आत्मसंतोषी स्त्री की होती हैं, जिसके नैतिक मानक ऊंचे होते हैं, और जिसे वरना कठिन होता है। पर एक बार किसी से मन हार जाने पर पूरी भक्ति तथा अटल निष्ठा से उसका साथ देती है।

गहरी आंखें—

स्वप्नदर्शी व्यक्तित्व की परिचायका। ऐसी स्त्री अद्भुत और बुद्धिवादी होती है पर कामुक और रत्योन्मादिनी नहीं। ऐसी विश्वसनीय और विश्वासपात्र नारी का मन आसानी से टूट जाता है, क्योंकि वह अपनी कल्पनाओं को साकार रूप में देखना चाहती है। मानसिक विवेक के लिए लोग उसका स्वागत और सत्संग करना चाहते हैं।

बाहर को उभरी आंखें—

ऐसी आंखें उस जुआरी स्त्री की होती हैं जो पुरुषों के साथ दांव-पर-दांव लगाती हैं और अत्याचार करती हैं। महत्त्वाकांक्षी, दृढ़प्रतिज्ञ और निकम्मी न मानकर लोग उसे उतावली और दुस्साहसी स्त्री ही मानते हैं।

ऊर्ध्वारोही आंखें—

ऐसी आंखोंवाली स्त्री खुश-मिजाज होती है उसका स्वभाव विनोदी, आशावादी, और साहसिक होता है, तथा चरित्र अवसरवादी, निश्चयी, आत्मविश्वासी और बहुधा आक्रोशी होता है।

अधोन्मुखी आंखें—

ढालू आंखें विचारशील और त्यागी व्यक्तित्व की द्योतक होती हैं। ऐसी आंखों

सौंदर्य की प्रतीक भौंहें

वाली स्त्री की नम्रता का पुरुष लाभ उठाता है और वह बार-बार धोखा खाती है। वह औरों की समस्याओं को तुरंत समझ लेती है, पर अपने विकल्पों को नहीं सुलझा पाती।

नाक

नाक व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। स्त्री दौलत उलीचती है या पानी की तरह बहाती है, यह सब कुछ उसकी नाक से जाना जा सकता है।

सीधी नाक—
इस प्रकार की नाक धन संबंधी सफलता का वचन देती है। ऐसी नारी सत्यनिष्ठ समस्वभाववाली, उद्यमी तथा सम्मान अर्जित करनेवाली होती है।

हठीली नाक—
जिस स्त्री की नाक चौड़ी हड्डीवाली और दुबली हो वह स्त्री घमंडी तथा हेकड़ होती है। ऐसी स्त्री को अपने ऊपर ही अधिक भरोसा करना पड़ता है, क्योंकि उसका स्वभाव स्वकेंद्रित, छिद्रान्वेषी तथा परिष्कारवादी होता है।

गरुड़ीय नाक—
ऐसी नाकवाली स्त्री द्रव्यांध होती है। रोमन सांचे की यह नाक स्त्री को कुछ स्वार्थी, चालाक और कामुक बना देती है। ऐसी नारी धन और शक्तिसेवी होती है।

छोटी नाक—
जीवन-प्रेमी चरित्र की परिचायक। ऐसी नाकवाली स्त्री खुले दिमागवाली, आशावादी तथा निर्गामी स्वभाव की होती है जो अपनी उमंगों-आकांक्षाओं को छुपा नहीं पाती। उसे असंयम, अतिराग तथा मनोवेग से बचना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि करोड़पति होना तो उसके भाग्य में है नहीं, पर जीवन का सुख उसे प्रचुर मात्रा में मिलेगा।

लंबी नाक—
लंबी नाक विचारशीलता का प्रतीक है। ऐसी नाकवाली स्त्री की बुद्धि उसकी

भावना पर हावी रहती है, जिसके फल-स्वरूप वह कभी-कभी दूसरों के भाव नहीं समझ पाती और वह अपनी संपन्नता धीरे-धीरे जोड़कर बनाती है।

ऊर्ध्वारोही नाक—

एक उदार स्त्री की पहचान। युवा तथा आकर्षक-व्यक्तित्व के अतिरिक्त ऐसी नारी का स्वभाव हंसोड़, स्वच्छंद तथा अतिव्ययी होता है और वह उल्लासी, निरंकुश तथा धन और रति की दृष्टियों से उदारमना होती है।

गोल नोकवाली नाक—

धनाढ्य व्यक्तित्व का संकेत। ऐसी नाक वाली स्त्री स्नेही और नर्म-दिल होती है और वह न चाहे, तो भी उसे धन की कमी नहीं रहती।

मुंह

वासना मुख पर लिखी रहती है और आंखों की सहायता से चेहरे पर एक मुद्रा अंकित करती है जिससे व्यक्तित्व की पहिचान की जा सकती है।

संतुलित मुंह—

दोनों होंठ समान रूप से भरे-पूरे और सही कोनों पर मिले हुए यह जताते हैं कि स्त्री में हार्दिकता, सौजन्यता तथा विश्वसनीयता है और वह सम-स्वभावी, स्नेही, प्रसन्न चित्त तथा व्यवहार-कुशल है।

अर्धचंद्राकार मुंह—

ऊपर को उठे हुए दोनों कोनों का अर्थ यह होता है कि स्त्री हंसमुख, आशावादी, सर्जक तथा लोकप्रिय प्रकृतिवाली है। भावुक होते हुए भी वह आंसू और मुस्कानों के बीच खेल सकती है। अशांत होने पर भी वह खुशमिजाज लोगों का आकर्षण होती है और कभी भी ऊबती नहीं है।

धनुषाकार मुंह—

ऐसे मुंहवाली स्त्री किसी वस्तु या बात को स्पष्ट देखती-समझती नहीं है और लोग उसे स्वकेंद्रित समझते हैं, पर जब भी वह किसी पर विश्वास करती है पूरी आसक्ति, संवेदना और समर्पण भावना के साथ।

पतला चौड़ा मुंह—

ऐसे मुंहवाली स्त्री घमंडी और जिद्दी तो होती है, पर ऊर्जस्वी तथा उदारमना होने के साथ-साथ, आवश्यकता पड़ने पर बड़ा काम संभाल लेने की योग्यता भी रखती है।

छोटा मुंह—

इस प्रकार की मुख-रचना एकांत स्वभाव-वाली स्त्री की होती है। जो कभी-कभी सूनापन इसलिए भोगती है कि उसमें सबके साथ मिलकर चलने की क्षमता नहीं होती।

मत्स्य मुंह—

ऐसी स्त्री जिसके होठों के कोने अधोमुखी हों, वह दृढ़-संकल्प तथा अत्याभिलाषी होती है और कभी-कभी निरंकुश हो जाती है। आलसी होने के कारण वह अपना काम दूसरों पर भी डालती है।

चैरी मुंह—

जिस स्त्री का मुंह चुंबन-मुद्रा-जैसा हो, वह दयालु, सौम्य तथा शांत-स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्री सुगृहिणी होती है।

—सी-३/४०, अशोक विहार-२, दिल्ली

बोलती रेखाएं

इन रेखाचित्रों के चित्रकार हैं—श्रवणकुमार शर्मा। मध्यप्रदेश के आदिवासी अंचल सरगुजा जिले के केदारपुर ग्राम में १९५६ में जन्मे युवा चित्रकार को यह कला विरासत में मिली है। अनेक सार्वजनिक पुरस्कारों के अतिरिक्त १९७२-७३ में 'रोटी' और 'अकाल-पीड़ित' शीर्षक तैलचित्र राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा पुरस्कृत। विदेशों में उनके बनाये ईसा मसीह के चित्र चर्चों में लगे हुए हैं।

—विमला रस्तोगी

एक नयी जिंदगी की ओर

चुनौती सूरज को पाने की

भय

र हैं—
प्रदेश के
के केदार-
चित्रकार
मिली है।
अतिरिक्त
ल-पीड़ित
प्रधानमंत्री
नके बनाये
गे हुए हैं।
ला रस्तोगी

हमारी अपनी दुनिया

रिश्ते पवित्र हैं

शहनाई वादन

भय
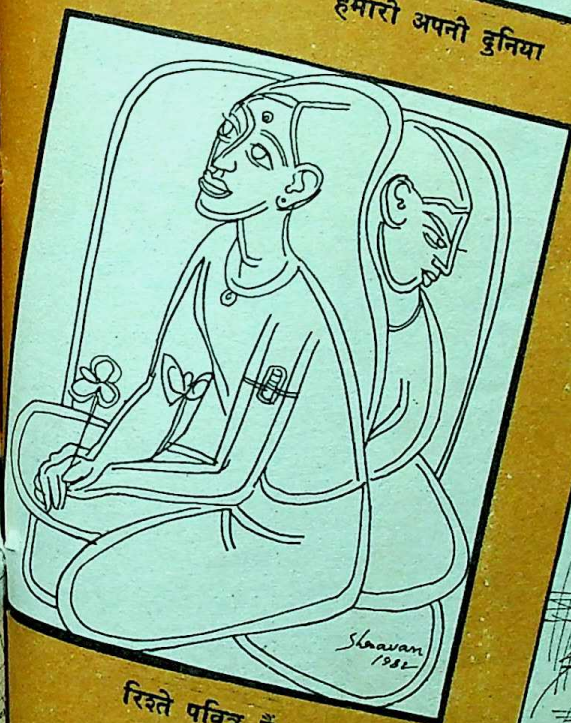
रेखांकन : श्रवण कुमार

जलकुंभी के पुष्पयुक्त गुच्छे

जलकुंभी से दोस्ती

• अखिलेशकुमार सिंह

काफी समय से खेती, जल परिवहन, सिंचाई तथा मछली-पालन के लिए जलकुंभी सिर-दर्द साबित होती रही है। देश के दस सबसे अधिक विस्तार क्षेत्रवाले तथा बहुत अधिक हानिकारक पौधों की सूची में इसका नाम सबसे ऊपर है।

अकेले पश्चिम बंगाल में गरमी के मौसम में लगभग १२,००० हेक्टेयर जमीन पर इसके कारण खेती नहीं हो पाती। बरसात में समस्या और भी जटिल हो जाती है। पश्चिम बंगाल में इस पौधे के कारण लगभग १,१०० लाख रुपये वार्षिक का आर्थिक नुकसान होता है। बिहार में भी इसका प्रसार कम व्यापक नहीं है। शायद ही कोई जलाशय, गड्ढा या नदी मिले, जिस पर इसका प्रकोप न

हो। बरसात के दिनों में धान के खेत तक इसके प्रकोप से नहीं बच पाते। उत्तर-प्रदेश, असम, हिमाचल, पंजाब, तमिल-नाडु, अंडमान द्वीप समूह, कर्नाटक, आंध्र-प्रदेश, लक्षद्वीप आदि में भी समस्या अपनी पूरी गंभीरता के साथ विद्यमान है।

शत्रु के बजाय मित्र

जलकुंभी वनस्पति जगत के पांटेडैरिएसी कुल की सदस्य है। जिसे वैज्ञानिक भाषा में **आइकार्निया क्रैसियस** के नाम से जाना जाता है। भारत में यह ब्राजील से १८९६ ई. में आयी थी। आज ९० वर्षों से भी कम समय में यह पूरे देश में फैल चुकी है, और इतनी अच्छी तरह अपनी जड़ें जमा चुकी है कि इसका संहार मुश्किल ही नहीं, असंभव-सा लगने लगा है। इसमें वृद्धि तथा पुनर्जनन की अपार क्षमता है। यह केवल प्रचंड विस्तारवादी ही नहीं है, अपने विस्तार की प्रक्रिया में खनिजों, पोषक तत्वों तथा कार्बनिक पदार्थों का इतनी तेज गति से शोषण करती है, कि आसपास उगनेवाले अन्य पौधे इन जीवन-दायी तत्वों से लगभग पूरी तरह वंचित होकर अपना अस्तित्व ही खोने लगते हैं। प्रजनन तथा विस्तार की असीम क्षमता के कारण इसको जड़-मूल से समाप्त करने के सारे प्रयास विफल साबित हुए हैं। ऐसी हालत में वैज्ञानिकों ने यह सोचना शुरू किया है कि इसको नष्ट करने की बजाय क्यों न इसके सार्थक उपयोग का प्रयास
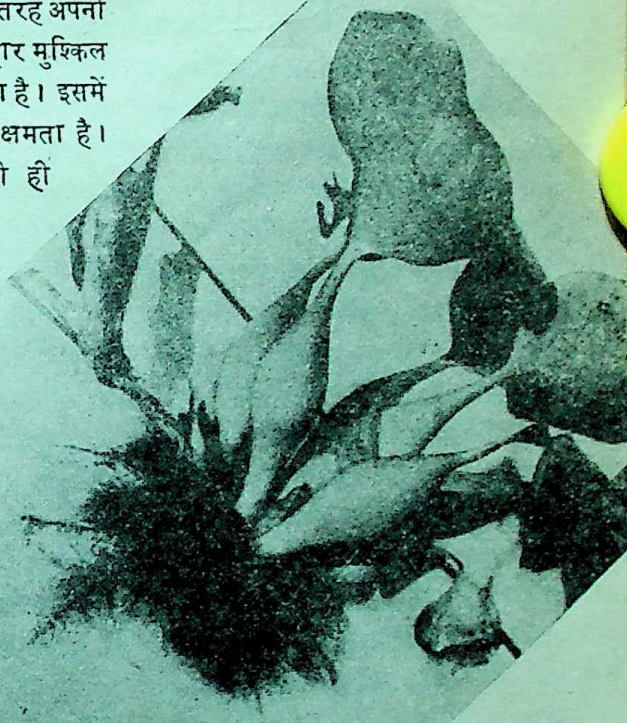
जलकुंभी का एक पौधा

किया जाए। इसमें उन्हें काफी सफलता भी मिली है। अब जलकुंभी के ऐसे सार्थक उपयोग खोजे जा चुके हैं, जिससे यह शत्रु की बजाय एक बहुत अच्छी मित्र साबित होगी। इसके कुछ प्रमुख उपयोग हैं—प्रदूषण निवारण, पशु-आहार, उर्वरक तथा ऊर्जा-उत्पादन।

कचरे को साफ करती है

खनिजों, पोषक तत्वों, कार्बनिक पदार्थों इत्यादि को तेजी से अवशोषित करने की इसकी अद्भुत क्षमता का उपयोग, नगरीय जल-मल या औद्योगिक इकाइयों से आनेवाले दूषित निकास जल के शुद्धीकरण के लिए किया जा सकता है। फ्लोरिडा (संयुक्त राज्य अमरीका) में किये गये एक प्रयोग में देखा गया कि यदि नगरीय मल-जल को जलकुंभीयुक्त एक विशाल ताल में, २२ लाख लीटर प्रति हेक्टेयर प्रतिदिन की दर से प्रवाहित किया जाए, तब दो दिन की अवधि में यह नाइट्रोजनयुक्त पदार्थों का लगभग ८० प्रतिशत तथा फास्फोरस-युक्त पदार्थों का लगभग ४० प्रतिशत अवशोषित कर लेती है।

औद्योगिक प्रतिष्ठानों से निकलनेवाले दूषित जल को शुद्ध करने के लिए भी जलकुंभी का उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि बहुत-सी हानिकारक भारी धातु, यथा—कैडमियम, निकिल, पारा, तथा कतिपय रेडियो सक्रिय धातुएं,जिनको अन्य किसी विधि से प्रदूषित जल से अलग करना प्रायः असंभव होता है, भी इसके द्वारा आसानी से अवशोषित कर ली जाती हैं। भारी धातुओं को अवशोषित करने के साथ-साथ यह उनको संचित करने की भी अपूर्व क्षमता रखती है। इस संचयी प्रवृत्ति का उपयोग इन धातुओं की पुनः प्राप्ति के लिए किया जा सकता है।

एक हेक्टेयर के क्षेत्रफल में उगायी गयी जलकुंभी की फसल २,४०,००० लीटर दूषित जल से २४ घंटे में लगभग ३००ग्राम निकिल या कैडमियम अवशोषित करने की क्षमता रखती है। इतनी ही फसल ७२ घंटे में लगभग १६० किलोग्राम फीनाल का अवशोषण करती है। लेकिन भारी धातुओं के विपरीत फीनाल इसके ऊतकों में संचित नहीं होते, बल्कि शारीरिक चयापचय में लिये जाते हैं। जलकुंभी द्वारा परिशोधित जल का पी. एच. मान ६.८ से ७.८ तक पाया गया है। जो कि स्वच्छ जल के सामान्य पी. एच. मान के बहुत निकट है।

जटिल तकनीक की आवश्यकता नहीं

प्रदूषित जल के परिशोधन हेतु जलकुंभी का उपयोग करने के लिए किसी जटिल तकनीक के आयात या विकास की आवश्यकता भी नहीं होगी। इसके लिए तो केवल जलकुंभी से आच्छादित तालों के एक सिरे पर प्रदूषित जल को गिराना होगा और दूसरे सिरे से पंपों की सहायता से परिशोधित जल को ताल से बाहर निकाल लेना होगा। इसकी एक फसल एक निश्चित समयावधि तक ही परिशोधन

का कार्य कर सकेगी, इसलिए नियत अंत-रालों पर इसकी कटाई आवश्यक है।

प्रोटीन से भरपूर

काफी मात्रा में प्रोटीन, खनिज तथा पोषक तत्वों को संचित करने के कारण यह एक उपयोगी पशु-आहार के रूप में भी प्रयुक्त हो सकती है। यद्यपि केवल जलकुंभी खिलाने से दुधार पशुओं का दूध पतला हो जाता है, और इस दूध से प्राप्त मक्खन भी उतना स्वादिष्ट नहीं होता, लेकिन पारा-घास (ब्रैचिएरिया म्यूटिका) या धान की भूसी के साथ इसको ४:१ के अनुपात में मिश्रित करके खिलाने पर परिणाम संतोषजनक पाये गये हैं।

कुछ अन्य आहारों के साथ मिलाकर इसे भेड़, सूअर तथा बत्तखों को भी खिलाया जा सकता है। फिलीपाइन ने जलकुंभी से दुधार पशुओं और मुर्गियों का आहार बनाने की कई प्रविधियां विकसित की हैं। आहार के रूप में प्रयुक्त करने में सबसे बड़ी बाधा, इसमें बहुत अधिक रेशों के होने की थी, लेकिन फिलीपीनी तकनीक ने अब इस समस्या को हल कर लिया है। दूसरी बाधा इसके ऊतकों में बहुत अधिक मात्रा में संचित पानी की है, जो इसके परिवहन का व्यय बहुत बढ़ा देता है। लेकिन यांत्रिक दाब के प्रयोग द्वारा या धूप में सुखाकर इससे मुक्ति पायी जा सकती है।

सावधानी

स्वच्छ जल या घरेलू जल-मल से भरे

जलकुंभी : आईकार्निया क्रैसियस

तालों में उगायी गयी जलकुंभी का प्रयोग तो पशु आहार के रूप में किया जा सकेगा, लेकिन औद्योगिक कचरों से दूषित जल में उगायी गयी फसल का इस कार्य के लिए उपयोग नहीं हो सकेगा, क्योंकि ऐसा करने से दूषित जल से अवशोषित किये गये प्रदूषक, पशुओं के शरीर में पहुंच जाएंगे।

'मीथेन' से ऊर्जा-संकट का हल

ऊर्जा-संकट के इस दौर में ईंधन-उत्पादन के लिए भी जलकुंभी का प्रयोग बहुत लाभदायक होगा। अवायवीय दशाओं में मीथेन जीवाणु द्वारा इसको पचाकर आसानी से जैव गैस प्राप्त की जा सकती है, जो कि एक उत्तम ईंधन है। इससे प्राप्त जैव गैस में सामान्यतया ७० से ८० प्रतिशत तक मीथेन होती है। जब इसके ऊतकों में निकिल तथा कैडमियम-जैसी भारी धातुएं भी विद्यमान होती हैं, तब मीथेन का प्रतिशत ९१.१ हो जाता है। दूषित जल को परिशोधित करने के

लिए उगायी गयी फसल इस कार्य के लिए विशेष रूप से उपयोगी रहेगी, क्योंकि धातुओं के संचित होने पर गैस उत्पादन की दर भी अपेक्षाकृत अधिक होती है।

जलकुंभी के प्रति किलोग्राम शुष्क भार से लगभग ३७० लीटर जैव-गैस प्राप्त की जा सकती है। इसकी उत्पादकता लगभग ६०० किलोग्राम शुष्क भार हेक्टेयर दिन है। इस प्रकार इसकी एक हेक्टेयर में उगायी गयी फसल से प्रतिदिन २,२६,४०० लीटर जैव गैस प्राप्त की जा सकती है। जलाये जाने पर लगभग ७० प्रतिशत मीथेन युक्त गैस का कैलोरी मान २२,००० कि. जू.। मी.३ पाया गया है। जो मीथेन का प्रतिशत बढ़ने के साथ-साथ बढ़ता जाता है। शुद्ध मीथेन का कैलोरी मान ३३,००० कि. जू.। मी. ३ होता है।

अच्छा उर्वरक

खनिजों तथा कार्बनिक पदार्थों को संचित करने की इसकी असाधारण क्षमता का उपयोग मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। घरेलू मल-जल से भरे तालों में उगाये गये पौधों में शुष्क भार के आधार पर २.८ से ३.५ प्रतिशत नाइट्रोजन, तथा ०.४ से १ प्रतिशत फास्फोरस पाया गया है। पोटैशियम, सोडियम और कैलशियम की माला क्रमश: २.० से ३.५, १.५ से २.५ तथा ०.६ से १.३ प्रतिशत पायी गयी है। यद्यपि इसके ऊतकों में संचित पानी की बहुत अधिक माला [illegible], जिसमें एक बाधा है, लेकिन लगभग ५० प्रतिशत पानी सुखा दिये जाने पर इससे बहुत अच्छी कंपोस्ट तैयार होती है। श्रीलंका में जलकुंभी, अन्य कचरों तथा राख को मिलाकर उत्कृष्ट स्तर की कंपोस्ट खाद तैयार की जाती है, जिसे गार्बेज जेम्स के व्यावसायिक नाम से बेचा जाता है। रासायनिक उर्वरकों की मंहगाई के दौर में जलकुंभी-कंपोस्ट का विशेष महत्त्व है।

जलकुंभी का कार्बन, नाइट्रोजन अनुपात २३.१ होता है। यह इसका उत्तम कार्बनिक खाद बनानेवाला गुण है। सुखाये हुए पौधों को कुकुरमुत्तों की खेती के लिए आधार बनाने के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

अभिशाप नहीं वरदान

जलकुंभी के तनों में लगभग २४ प्रतिशत रेशा होता है, जिसका उपयोग कागज उद्योग में किया जा सकता है। इससे औषधीय महत्त्व के कुछ रसायन भी प्राप्त किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त चटाई, टोकरी, पर्स इत्यादि-जैसी घरेलू वस्तुओं के निर्माण के लिए भी इसका उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार व्यवस्थित वैज्ञानिक-प्रबंध कल के शत्रु को आज के मित्र में बदल देगा और खनिजों तथा कार्बनिक पदार्थों को बहुत तेजी से अवशोषित करने और प्रचंड वेग से प्रजनन और विस्तार करने के अब तक अभिशाप प्रतीत होनेवाले इसके गुण वरदान साबित होंगे।

—अ-१६, कस्तूरबानगर, सिगरा, वाराणसी

डॉ. संसार चंद्र

अपने मेहरबान बुजुर्गों को अकसर एक ही बात अनेक बार दोहराते सुना है कि संघर्ष का दूसरा नाम ही जिंदगी है। चुनौतियां ही इसका पहाड़ा है और इस पहाड़नुमा पहाड़े पर अबूर हासिल करने का एक ही गुर है—चुनौतियों का सीना तानकर सामना करना। चुनौतियों का जिक्र आते ही अपने बारे में यह कहना जरूरी हो जाता है कि मैं पढ़ाई-लिखाई में हमेश अव्वल रहा हूं। एक से बीस तक पहाड़े दांतों-तले दबाये फिरता था। ड्योढ़े और ढ़ाइये के पहाड़े जुबान पर थिरकते थे। ऊंट-जैसे बेकाबू हूंटे के पहाड़े की नकेल भी अपने हाथ में कसी रहती थी। मगर जब चुनौतियों के पहाड़े पहाड़ बनकर टूट पड़े तो हम उनके भयंकर बोझ से इस कदर चकनाचूर हो उठे कि इकबाल का एक भूला-बिसरा शेर एकदम दिमाग में हरकत कर उठा :

इकबाल तेरे इश्क ने सब बल दिये निकाल
मुद्दत से आरजू थी के सीधा करे कोई

मगर हम कभी भी चुनौतियों के डर से हथियार डालने के कायल नहीं रहे। जब भी चुनौतियों ने ललकारा हमने इनके विरुद्ध एक विराट किलाबंदी रच डाली। ज्यों ही इन्होंने हमारा महासरा करने के लिए बिगुल बजाया, हमं अपने किलों के फौलादी गेटों पर कुफल चढ़ाते गये। चुनौतियों की गोलाबारी के छिड़ते ही हम जमींदोज सुरंगों में पनाह लेते रहे। हमने चुनौतियों की हर 'रिइनफोर्समेंट' के दांत खट्टे किये और जब भी दुश्मन की फौजे आगे बढ़ने में कामयाब हुई, हम ऐसी चाल से पीछे हटे कि वह हमारे ही किले में कैद हो गया और हमने बाहर से हल्ला बोलकर पूरी तरह उसकी नाकाबंदी कर दी।

आज जब सोचता हूं तब लगता है मेरा सभी कुछ इन चुनौतियों की ही बदौलत है। इसीलिए मेरा चुनौतियों से चोली-दामन का संबंध रहा है। कभी-कभी वक्त की नजाकत के मुताबिक मैंने इनके आगे घुटने भी टेके हैं। ठीक उसी तरह जैसे ढाका के रेसकोर्स में हजरत मियां नियाजी ने 'हैंड्स-अप' कर दिये थे। हमने परस्पर 'सीज फायर' के एलान भी किये हैं, परंतु मेरे और चुनौतियों के बीच कभी मुकम्मिल जंग-बंदी नहीं हुई।

हर फैसले के बाद शर्तें टूटी हैं और मेरे लिए वाटर लू-जैसी स्थिति पैदा होती रही है।

यह मात्र मेरी कैफियत नहीं। हम सबको चुनौतियों से दो-दो हाथ करने पड़ते हैं। वास्तव में हमारी तमाम जिंदगी ही चुनौतियों की एक लंबी बारात है। बारात का नाम लेते ही मुझे अपनी बारात का स्मरण हो आया है। मेरे लिए मेरी बारात ही एक दारुण चुनौती बनकर आयी थी।

यह कोई मामूली घटना नहीं थी। आज के खुले जमाने की बात और है, तब जमाना और था। अपनी महबूबा को तलवारों के साये के नीचे से ले उड़ना ही सच्ची वीरता की मिसाल थी। बात का खुलासा इस प्रकार है कि हमारी 'बड़ी मां' यानी कि दादी और बीवी की, 'बड़ी बी' अर्थात् उनकी दादी दोनों सत्संग-कीर्तन में विश्वास रखनेवाली नेक महिलाएं थीं। खरतालें बजाते-बजाते उन्हें धर्म कमाने की क्या सूझी कि दोनों ने भगवान के हजूर में चरणामृत हाथ में लेकर हम दोनों के गठबंधन का संकल्प ले लिया। उन्होंने आंख झपकते-झपकते हमारा पाणिग्रहण-संस्कार संपन्न कर दिया। न मुझे खबर, न मेरी बीवी को। उन्होंने नेकी की और दरिया में डालकर गाफिल हो गयीं।

उधर बेटी के हाथ जल्दी पीले करने की चिंता में हमारे ससुर की नींद हराम हो रही थी। आखिर कुछ अरसा इधर-उधर भटकने के बाद एक दिन वे चुपचाप अपनी लड़की का रिश्ता कहीं और पक्का कर आये। जब घर में बात खुली, तब पता चला कि यह नेक काम तो उनकी दरिया-दिल मां पहले ही सरंजाम दे चुकी हैं। लिहाजा घर में संघर्ष शुरू हो गया। हमने भी हनुमानजी के राम पंचायती अखाड़े में कसरत की थी, डंड पेले थे, शरीर कमा रखा था। हमने शिशुपाल को चुनौती दी। जब शिशुपाल की बारात चढ़ी, तब हमने भी अपने अखाड़िया लठैतों की एक खुफिया बारात जुटायी। हमारे पास घोड़ी, बैंड-बाजा आदि कुछ भी न था। केवल कुछ गोप वेशधारी लठैत थे, जिनमें एक लठैत गोपकन्या की भूमिका अदा कर रहा था। बारात का खाना चल रहा था और साथ ही हमारा गोप-गोपी का खेल। इतने में हमारी गोप-कन्या इठलाती हुई दुल्हन के पास गयी और हमारा पैगाम उसके कानों में उडेल आयी। हमारे पास दुल्हन का ब्राह्मण-संदेश लेकर आ चुका था और हम

उसके उत्तर में चुपचाप 'ग्रीन सिगनल' दे चुके थे। देखते-देखते दुल्हन गोप-कन्या के साथ हमारी टोली में शामिल हो गयी। फिर क्या था! देखते-देखते विवाह का रंगीन मंडप विकराल समरांगण का रूप धारण कर उठा। ऐसी लाठियां चलीं कि बारात के होश ठिकाने आ गये और उसके होश आने से पहले ही हम अपनी दुल्हन की लाज बचाने में कामयाब हो गये—

शिशुपाल के हाथ रह्यो कंगना
विधना कछु और की और करी।

'इंटरव्यू' हुआ, 'टेस्ट' हुआ मगर मैदान किसी और के हाथ रहा। ये हजरत थे मैदाने इश्क के हारे हुए मजनूं या दूसरे शब्दों में बैरंग लौटे हुए शिशुपाल महोदय! उन्होंने अपनी शिकस्त का बदला इस मैदान में चुकाया था। हमने सोचा, अभी मैदान और भी है, इम्तहान और भी है, सितारों के आगे जहां और भी हैं। तब हमने यह संकल्प कर लिया कि कंबख्त अब तुम्हें तारे न दिखाये, तो हमारा नाम भी ताराचंद नहीं।

चुनौतियों का पहला कदम शेर का होता है और पिछला गीदड़ का ही नहीं, बल्कि गधे का होता है। आप चुनौतियों से मुंह छिपाएंगे, तो वे शेर की तरह दहाड़ेंगी और ...

यह थी हमारी पहली फतह। चुनौतियों का हमने अंत तक मुकाबला किया था, मगर चुनौतियां भी कभी खामोश बैठती हैं। उन्होंने फिर सिर उठाया। इस बार चाल गहरी थी और हम बेखबर थे।

एक टाइपिस्ट की जगह खाली पड़ी थी। हमने स्टेनो टाइपिंग की पूरी ट्रेनिंग हासिल कर रखी थी। टाइपराइटर पर हमारी अंगुलियां ऐसे थिरकतीं थीं गोया वह हारमोनियम हो। मैं हर लिहाज से इस जगह के लिए मौजूं था। उम्मीदवार बीस से ऊपर थे, मगर मैं इन सबके लिए नहले पर दहला साबित हो रहा था।

चुनौतियों का अध्याय

खैर, यह तो रहा जीवन का एक अध्याय। वस्तुतः हम सबका जीवन का हर अध्याय चुनौतियों का ही अध्याय है। कई बार सोचता हूं कि क्या सचमुच हम सब जीवनपर्यंत चुनौतियों से पंजा लड़ाने के लिए ही पैदा हुए हैं। इस लिहाज से हम एक उमर कैदी से किसी भी हालत में कम नहीं हैं। अब प्रश्न यह है कि हम इस सजा को हंसकर कबूल करते हैं या रोकर। यदि हम चुनौतियों को हंसकर स्वीकार करते हैं, तो आपको नेकचलनी पर उम्र कैदियों की तरह कुछ अर्से के लिए कैद मुआफी मिलनी चाहिए। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखते
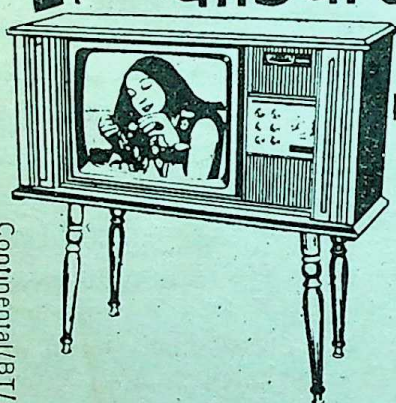
हुए मैंने हर चुनौती के अफजल खां से बगलगीर होने की कोशिश की है। मेरा बघनखा हर परीक्षा में खरा उतरा है, और मैंने बड़ी-बड़ी खौफनाक चुनौतियों को जमीन सुंघायी है।

चोरों का माल, लाठियों के गज से

अभी कुछ साल पहले की बात है कि अकस्मात् मकान मालिक से तकरार हो गयी। मैंने बहुतेरा कहा कि मकान मिलते ही फौरन 'शिफ्ट' कर लूंगा, मगर उसने मुझे सात दिन के भीतर निकालने का फैसला कर लिया था। इतनी जल्दी मकान खाली होना संभव न था, इसलिए उसने मेरे दफ्तर में शिकायत कर दी कि मैं एक मुद्दत से महकमें में किराये की जाली रसीदें दाखिल करके किराये की अच्छी-खासी रकम हथियाता चला आ रहा हूं। खोज-पड़ताल करने पर पता चला कि हजरत मकान मालिक ही मुझे जाली रसीदें देते चले आ रहे हैं। मुझे उन्होंने शुरू में यह बताया था कि यह मकान उनके भाई का है। वे किराया ले जाते थे और चंद दिन बाद अपने भाई के हस्ताक्षरों से जारी की हुई एक रसीद दे जाते थे। मैं उनकी शराफत से कायल ही नहीं बल्कि घायल हो चुका था। वे अपने योजनाबद्ध षड्यंत्र के बल पर मुझे 'ब्लैक मेल' कर रहे थे। लिहाजा मैं शेर हो गया और मैंने मकान मालिक पर चुपचाप चार सौ बीसी का इस्तगासा दायर कर दिया। अंत में दोस्तों ने बीच-बचाव किया। हमने मकान छोड़ा तो नहीं, हां खरीद जरूर लिया और वह भी चोरों का माल लाठियों के गज से।

सारांश यह कि 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' की तरह इन चुनौतियों की की परंपरा भी अत्यंत विशाल है। जिधर देखो चुनौतियां मुंह बाये खड़ी हैं। मेरा तो अब यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही चुनौतियों का मुकाबिला करना है। अब देखना तो यह है कि हम यह रोकर करते हैं या हंसकर।

इस संबंध में एक राज की बात। हो सके तो इसे अपनी गुप्त डायरी में भी नोट कर लीजिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर काम आ सके। बात यह है कि चुनौतियों का पहला कदम शेर का होता है और पिछला गीदड़ का ही नहीं, बल्कि गधे का होता है। आप चुनौतियों से मुंह छिपाएंगे, तो वे शेर की तरह दहाड़ेंगी। आप जमकर उनका पीछा करें तो वे गीदड़ की तरह दुम दबाकर भाग निकलेंगी।

—अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

एक कमेंटेटर रेडियो में बड़ी जोरों से कॉमेंट्री दे रहे थे। थोड़ी देर बाद उन्हें दूर से आती हुई अपनी मोटी पत्नी दिखायी दी, तो उन्होंने फौरन कॉमेंट्री बंद कर दी व छुप गये। पत्नी आयी और चारों तरफ देखकर चली गयी। अब पत्नी के चले जाने के बाद वह फौरन उठे और बोले, हमें खेद है कि आप कुछ देर के लिये कॉमेंट्री नहीं सुन सके, क्यों कि कॉमेंट्री बॉक्स के आस-पास रोलर फिर रहा था। -पुष्पा पंत

सुभाष बाबू राठोड़, बाड़मेर: चाय की पत्तियों को हरी रहने की अवस्था में ही 'चाय' बना दिया जाता है, या पहले उन्हें तोड़कर सुखाया जाता है? यदि हां, तो किस प्रकार?

चाय की हरी पत्तियों को पहले सुखाया जाता है और सुखाने की इस क्रिया को 'विदरिंग' कहते हैं। सुखाने के लिए बांस की चटाइयों का अथवा टाट का उपयोग किया जाता है। सुखाने में कुछ मात्रा में चाय के कार्बोहाइड्रेट विघटित हो जाते हैं और साथ ही चाय का लचीलापन भी कम हो जाता है। इसके अलावा कुछ प्रोटीनों का भी विखंडन होता है। बढ़िया चाय के लिए पत्तियों का पूरी तरह सूखना आवश्यक है। अपूर्ण सूखी पत्तियों को रगड़ने और तोड़ने में दिक्कत होती है। साधारणतः १६ से २४ घंटों के अंदर पत्तियां सूख जाती हैं। सुखाने का यह समय कृत्रिम विधियों द्वारा घटाया भी जा सकता है। इसके लिए चाय के कारखानों में वायु की आपेक्षिक आर्द्रता कृत्रिम तरीकों से घटायी जाती है और कमरे का ताप बढ़ा दिया जाता है। परंतु प्राकृतिक रूप मे सूखी हुई पत्तियां उत्तम चाय देती हैं। साथ ही उनमें ऐमिनो अम्लों की मात्रा अधिक होती है।

पूर्णचंद्र भदौरिया, मेरठ: 'मैकाले की शिक्षा-प्रणाली' क्या है? और यह मैकाले था कौन?

मैकाले (१८००–१८५९) का पूरा नाम लार्ड थामस बैबिंगटन मैकाले था। यह एक अंगरेज राजनीतिज्ञ और इतिहासकार था। इंगलैंड में वह वहां की संसद का सदस्य, पेमास्टर जनरल और युद्ध-सचिव रहा तथा भारत में पांच वर्ष तक कलकत्ता की सुप्रीम काउंसिल का सदस्य रहा। वह भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद को चिरस्थायी बनाने के लिए चिंतित था और इसके लिए उसने यहां की जातीय संस्कृति, भाषा और साहित्य को उपेक्षा के द्वारा नष्ट करने के लिए संस्कृत और अरबी भाषाओं तथा उनके साहित्य को पढ़ाये जाने का विरोध किया और अंगरेजी की शिक्षा को अनिवार्य बताया। उसने अपनी शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य इन शब्दों में व्यक्त किया है—'हमें इस समय एक ऐसा-वर्ग पैदा करने में पूरी शक्ति लगानी चाहिए, जो हमारे और उन लोगों के बीच जिन पर हम शासन करते हैं, दुभाषिये का काम कर सके—ऐसे-लोगों का एक वर्ग जिनका रक्त और रंग भारतीय हो, किंतु जो रुचि, विचारों, नैतिकता व बुद्धि की दृष्टि से अंगरेज हों।'

ा चतुर्वेदी, आगरा : सिंधु घाटी में वी-देवताओं की आराधना होती थी या हीं? यदि हां, तो किनकी ?

सिंधु घाटी में आराधना के विशेष ान के रूप में कोई मंदिर नहीं पाया या। उस प्राचीन काल में धर्म के अवशेषों रूप में अधिकतर मुहरें, पक्की ईंटों छोटी-छोटी मूर्तियां और पत्थर की तियां पायी गयी हैं। ये ही इन लोगों की न्यताओं और आचार-विचार पर थोड़ा-हुत प्रकाश डालती हैं। मोहन-जो-दड़ों र हड़प्पा के कई घरों में जो स्त्री-मूर्तियां यी गयी हैं, ये प्राचीन भारत में उस माने के धार्मिक विचारों का परिचय ी हैं, जबकि सामाजिक जीवन में तीवाड़ी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा रने लगी थी। वे यही सूचित करती हैं देवी (माता) की पूजा सर्वव्यापक थी। छ पुरुष-मूर्तियां भी पायी गयी हैं, जनसे पुरातत्ववेत्ता यह निष्कर्ष निका-ते हैं, कि शिव अथवा पशुपति की पूजा चलित थी। पूजा की अन्य वस्तुओं में ग, वृक्ष, नदियां, सर्प, अग्नि, वर्षा ा बाघ, हाथी, भैंसा, ऊंट और बैल-जैसे नेक जानवर थे, परंतु देवियों की पूजा धिक प्रचलित थी।

ा प्रद्योत, जमशेदपुर : वाइरसयुक्त ल को शुद्ध करने की विधि क्या है ?

वाइरसयुक्त जल को शुद्ध करने के ए सबसे पहले उसका भंडारण किया ाता है, अर्थात पानी को कुछ देर के लिए रोककर स्थिर किया जाता है जिससे उसमें मौजूद वायरसों की सांद्रता में थोड़ी कमी आ जाती है। इसके बाद पानी का स्कंदन या उर्णन किया जाता है, अर्थात उसमें फिटकरी-जैसे पदार्थों का उपयोग करके उसके प्रदूषण तत्वों को नीचे बैठा दिया जाता है। इस प्रक्रिया में वायरस नीचे बैठ जाते हैं, लेकिन नष्ट नहीं होते। इसके बाद पानी को रेत में से गुजारकर छाना जाता है, जिसे निस्पंदन कहते हैं। रेत में छानने से पानी काफी हद तक वायरसों से मुक्त हो जाता है, लेकिन उनको पूरी तरह नष्ट विसंक्रमण की प्रक्रिया में ही किया जा सकता है। यह प्रक्रिया क्लोरीन-उपचार भी कहलाती है। एक लीटर जल में एक मि. ग्रा. अव-शिष्ट क्लोरीन यदि ३० मिनट तक रहे तो उसमें मौजूद वायरसों का संपूर्ण नाश हो जाता है। लेकिन इन सारी प्रक्रियाओं से जल को शुद्ध करने का काम किसी सुसंचालित जल-शोधन-संयंत्र में ही हो सकता है। यदि आपको निजी उपयोग के लिए पानी साफ करना है, तो बेहतर यही है कि आप उसे निथार कर छानें, अच्छी तरह उबालकर फिर छानें और ठंडा करके पिएं!

राकेश, बेगूसराय : सुना है कि रूस में एक ऐसी भेड़ पायी जाती है, जिससे एक साल में तीन-चार सूट बनाने लायक ऊन मिल जाती है। उसका परिचय देने की कृपा करें।

इस भेड़ का नाम 'अस्कानिया' है और

आँखें सजकर नाचें, नचाएँ...

EYETEX

सोवियत संघ में विकसित की गयी
नायम रोयेंदार भेड़ की सर्वोत्तम नस्ल
चूंकि यह उक्रइन के अस्कानिया-नोवा
विकसित की गयी, इसलिए इसका नाम
कानिया भेड़' पड़ गया। इस नस्ल की
से बड़ी भारी मात्रा में ऊन और मांस
ता है। तीन-चार सूटों के लिए ही
, इस नस्ल की सर्वोत्तम भेड़ से तो आठ
के लिए प्रर्याप्त (२९.४ किलोग्राम)
तक पाया गया है।

थ पांडे, जगदलपुर : आदमी चलने-ते या काम करने पर थकता है, लेकिन बैठे भी थक जाता है। ऐसा क्यों ?

यह सोचना गलत है कि आदमी सक्रिय परही थकता है। वस्तुतः वह निष्क्रिय पर ही थकता है, बल्कि निष्क्रिय होने ज्यादा थकता है। कारण यह है कि र्य' और 'विश्राम' के बीच थकान का दन वास्तव में एक ही प्रकार के कार्य निरंतर करते चले जाने से उत्पन्न नेवाली भिन्न प्रकार के कार्य की मांग । इस अर्थ में विश्राम भी एक प्रकार कार्य है और कार्य में परिवर्तन की दशा श्राम है। यही वजह है कि जो लोग दिन कई प्रकार के कार्य करते हैं, वे निरंतर ही प्रकार का कार्य करनेवालों की ना में काफी चुस्त-दुरुस्त होते हैं, जबकि के कार्य, गुण और परिमाण की दृष्टि एक ही प्रकार का कार्य करनेवाले की ना में अधिक हो सकते हैं। इस बात यों भी कह सकते हैं कि कार्य में विविधता ही उन लोगों के अनथक 'कार्य करते रहने का राज है। इसका उदाहरण हम खेल में देख सकते हैं जो थकान दूर करने का सबसे अच्छा साधन माना जाता है। खेल में 'कार्य' की स्थिति निरंतर बदलती रहती है और उस स्थिति-परिवर्तन में हम निरंतर कार्य और विश्राम की शृंखला से गुजरते हैं, जो अपनी विविधता से हमें स्फूर्ति प्रदान करती है, लेकिन जब यह शृंखला स्वयं एक नैरंतर्य बन जाती है, तब हम खेलते-खेलते भी थक जाते हैं और बैठने, लेटने या सोने के 'कार्य' की दशा में 'विश्राम' पाते हैं। लेकिन जब हम इस 'कार्य' को भी निरंतर काफी देर तक कर चुकते हैं, तब पुनः किसी भिन्न कार्य की आवश्यकता अनुभव करते हैं। यदि परिस्थितिवश अन्य कार्य संभव नहीं होता, या हम कार्य करना नहीं चाहते, तो भिन्न प्रकार के कार्य की हमारी शारीरिक और मानसिक मांग हमें 'थकान' के संवेदन के रूप में अनुभव होती है और हम बैठे-बैठे, लेटे-लेटे या सोते-सोते थक जाते हैं। ऐसी दशा में उठकर चलना या कोई अन्य कार्य शुरू कर देना आवश्यक होता है।

चलते-चलते एक प्रश्न और ...

कु. क. ख. ग., नयी दिल्ली : पुराने जमाने में स्त्रियां सोलह शृंगार करती थीं। कितना समय लगता होगा ?

आज एक-दो शृंगार करने में जितना लगता है, उससे शायद कुछ कम ही।

—बिंदु भास्कर

हिमालय के हिमखंड कब पिघलेंगे?

• रणबीर सिंह

समुद्रतल से २१९२ मीटर की ऊंचाई पर मनाली में ब्यास की शीतल धारा के किनारे हिम व अवघाव अध्ययन केंद्र है। इसे सासे (स्नो एंड एवलांश स्टडी एस्टेब्लिशमेंट, एस. ए. एस. ई.) के नाम से जाना जाता है। १९७० से कार्यरत यह केंद्र सेना की सीमा पर द्रुत आवाजाही और स्थानीय जनसंख्या की जान-माल की सुरक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

हिमस्खलनों का पता कैसे ?

शीत ऋतु में जब संपूर्ण हिमालय हिमाच्छादित हो जाए, और बर्फीली हवाएं १५०–२०० कि. मी. प्रतिघंटा की गति से बहें, तब सासे के वैज्ञानिक हिम व अवघाव (एवलांश) अध्ययन करने के लिए बाहर निकलते हैं।

देश में सासे ही एकमात्र संस्था है जो हिम व अवघाव अध्ययन का कार्य नियोजित व संगठित रूप में कर रही है।

हिमालय में मौसमी परिस्थितियों का हिमपात, हिम के तापमान, हिम घनत्व आदि पर क्या प्रभाव पड़ता है, हवा के बहाव से हिमपात के वितरण पर कितना, कैसा और क्यों असर पड़ता है, सासे इसकी जानकारी जुटाती है। धरा-तलीय व मौसमी अवस्थाओं को ध्यान में रखकर संपूर्ण उत्तर-पश्चिमी हिमालय (जम्मूकश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश) में हिम–स्खलन की किस्मों का पता लगाना और अवघाव के स्थानों की निशानदेही सासे का प्रमुख काम है।

सैनिक टुकड़ियों को मदद

जब-जब मनाली के हिम व अवघाव अध्ययन केंद्र की आवश्यकता व भूमिका की हम बात करते हैं, तब-तब १९६२ के भारत-चीन युद्ध का जिक्र प्रासंगिक हो उठता है। इस संबंध में, सासे के उपनिदेशक के. सी. अग्रवाल के अनुसार—'१९६२
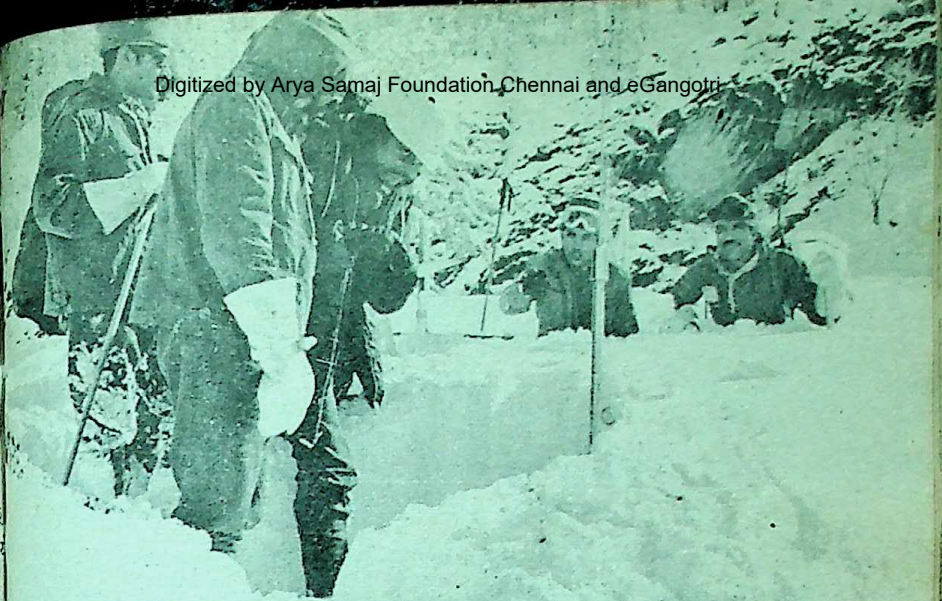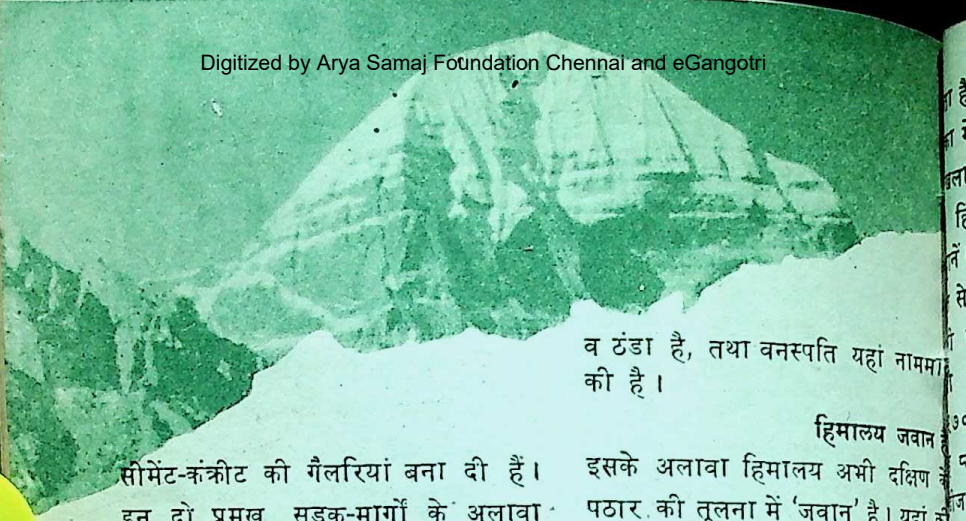
ीन के साथ हुए युद्ध में भारतीय ा को दुर्गम व वर्फीले क्षेत्र में युद्ध लड़ना ा। इसका सेना को अनुभव न था। ला अप्रत्याशित था। प्रतिकूल मौसम स्थाओं के कारण न केवल हजारों िकों की जान गयी, बल्कि हजारों ील क्षेत्र भी हमसे छिन गया।

'इस युद्ध के बाद हिमालय के इस िक महत्त्व के नाजुक क्षेत्र की प्रतिरक्षा धी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ूस किया गया कि एक ऐसी संस्था बनायी जाए, जो हिमाच्छादित ालय में तैनात हमारी सैनिक टुकड़ियों निरंतर संपर्क साधे रखने में मदद दे। म व हिम तथा अवधाव अध्ययन लिए सासे के पास २५० के लगभग स्टाफ है। इनमें २५ वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं।'

अपने १२ वर्ष के कार्यकाल में सासे ने मनाली-लेह व लेह-श्रीनगर सैनिक महत्त्व के सड़क मार्गों पर मौसम व हिम-पात संबंधी अध्ययन कार्य पूरा कर लिया है, और अवधाव स्थानों की निशानदेही पूरी कर ली है। इन दोनों ही सड़क मार्गों पर नवंबर-मार्च में अत्यधिक हिमपात होता है। अवधाव के परिणामस्वरूप इन सड़कों पर पहले यातायात रुक जाया करता था। इस मुश्किल को दूर करने के लिए सासे ने अवधाव के मार्ग में लकड़ी की मजबूत संविरचनाएं (स्ट्रकचर्ज) और

सीमेंट-कंक्रीट की गैलरियां बना दी हैं। इन दो प्रमुख सड़क-मार्गों के अलावा सासे ने कुछ अन्य, छोटी पर महत्त्व की सड़कों के क्षेत्र में भी मौसम, हिमपात व अवघाव की सूचनाएं एकत्रित कर वहां अवघाव नियंत्रण व निरोधक उपाय अपनाये हैं। यह स्थानीय जनसंख्या की आवाजाही और उसके बागों आदि की सुरक्षा के वास्ते किया गया है।

हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर में सासे ने पिछले १० वर्ष में, जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है, उसका मूल्यांकन अहसास करके ही किया जा सकता है।

धौलाधार, पीरपंजाल और उससे भी परे वृहत हिमालय में छितरे पांगी, लाहौल व स्पीति क्षेत्रों में औसतन हर वर्ष १० आदमी व सैंकड़ों मवेशी हिम-स्खलन या अवघाव से मारे जाते हैं। अवधाव की घटनाएं हिमाचल-प्रदेश में सर्वाधिक होती हैं, और इस प्रदेश का २२,१३६ वर्ग कि. मी. क्षेत्र इनसे प्रभावित है। वृहत हिमालय में स्थित यह क्षेत्र अति शुष्क व ठंडा है, तथा वनस्पति यहां नाममात्र की है।

हिमालय जवान है

इसके अलावा हिमालय अभी दक्षिण के पठार की तुलना में 'जवान' है। यहां की चट्टानें अभी मजबूत नहीं, मिट्टी नरम है, इसलिए चट्टाने व मिट्टी वर्षा व हिमपात की मोटी तह का भार सहने में असमर्थ हैं। यह असमर्थता और हिमालय की सीधी खड़ी ढलान ही अवघाव की जन्मदाता है। अवघाव अप्रत्यक्ष रूप से मौसम की अवस्था और प्रत्यक्ष रूप से हिम की तह और उसके नीचे दबी चट्टानों और मिट्टी की सुदृढ़ता तथा ढ़लान पर निर्भर करता है। २५ या नीचे के अंश वाली ढलान पर हिम-स्खलन कभी नहीं होता पर, ३५ अंश और अधिक के कोणवाली ढलान पर अवघाव की पूरी संभावना रहती है। सीधी खड़ी ढलान पर भी अवघाव की संभावना उस समय प्रबल होती है, जब १२ इंच और मोटी हिम की तह बनी हो। अवघाव तापमान में परिवर्तन अथवा धरातलीय हलचल के कारण होता है। वैज्ञानिकों ने अवघाव को दो श्रेणियों में रखा है— शुष्क तथा आर्द्र। हिमालय में आर्द्र अवघाव

है, जबकि स्विटजरलैंड व अम... मॉडल बनाने में कार्यरत हैं।
में क्रमशः आल्पस व राकी पर्वत
लाओं में शुष्क अवघाव होता है।
हिमस्खलन में शामिल बर्फ और
तें एक सेकंड में १० से ६० मीटर की
से नीचे सरकते हैं, पर गति कभी-
इससे भी अधिक देखी गयी है।
अधिक गति का अवघाव पेरू में
७० में एक भूकंप के दौरान हुआ था।
८० मीटर प्रति सेकंड की गति से
ज पर्वतमाला से नीचे सरका था।
ाचल में बड़ा अवघाव १९७९ में
ौल-स्पीति में हुआ था। इसमें एक
गांव दब गया था। यह अवघाव
त्याशित और नये स्थान पर था।

रों की भविष्यवाणी

ऋतु में सासे का सबसे महत्त्वपूर्ण
अवघाव की भविष्यवाणी है।
मित स्तर पर अवघाव भविष्यवाणी का
म १९७५–७६ में प्रायोगिक आधार
सर्वप्रथम जम्मू-कश्मीर में किया गया।
परीक्षण बेहद कामयाब रहा था।
पश्चात भविष्यवाणी का क्षेत्र बढ़ा दिया
ा, क्योंकि अवघाव निशानदेही, मौसमी
भौगोलिक विशेषताओं की सूचनाएं
फी हद तक अब जुटायी जा चुकी
। इसका सबसे ज्यादा लाभ सेना को
ा। फिलहाल सासे समस्त उत्तर-
श्चमी हिमालय में भूतकाल के मौसम
हिमपात की सूचनाओं के आधार पर
प्यूटर की सहायता से एक गणितीय-

कौनसी शक्तियां हैं

यहां एक रोचक बात यह जानना है कि अवघाव से पूर्व कौनसी शक्तियां कैसे-कार्य करती हैं ? इसके लिए सासे के अलावा सोवियत संघ, पश्चिमी जरमनी, स्विटजरलैंड व अमरीका आदि देशों के वैज्ञानिक पिछले कई वर्षों से अनुसंधानरत हैं। यह पता लगाने की कोशिश हुई कि अवघाव से पूर्व हिमखंडों में क्या भौतिक परिवर्तन होता है, और हिमस्खलन की गति-विधि समाप्त होने पर टूटे हिमखंडों की भौतिक संरचना कैसी हो जाती है ? इस अध्ययन के दौरान वैज्ञानिकों को कुछ आश्चर्यजनक जानकारी हासिल हुई है। यह पता लगा है कि अवघाव आने से पूर्व हिम के मणिभ (क्रिस्टल) की भौतिकीय संरचना विकृत हो जाती है। हिम-मणिभ-भौतिकी अध्ययन के दौरान यह भी पता चला कि अरबों-खरबों मणियुक्त हिमखंडों के मणिभों का जब रूपांतरण होता है, तब वे ८० से २०० किलोहर्ट्ज की पराध्वनि तरंगे छोड़ते हैं। पराध्वनि तरंग-मापक यंत्र ज्योंही यह ध्वनि-तरंगे अंकित करना आरंभ करता है, वैसे ही यह मालूम हो जाता है कि अब अवघाव होगा। हिम मणिभ में परिवर्तन तापमान में परिवर्तन के कारण होता है।

सुरंगों से बर्फ साफ

हिमस्खलन की भविष्यवाणी महत्त्वपूर्ण

विभिन्न आकार के हिम-मणिभ

है। पर इससे महत्त्वपूर्ण है अवघाव की रोक-थाम इसके लिए सासे कुछ अल्पकालीन उपाय भी अपनाती है। हिमस्खलन का पूर्वानुमान लगा हिमपात की मोटी तह को तोप के गोले या बारूदी सुरंगें लगाकर उड़ा दिया जाता है। इस तरह अचानक आनेवाले अवघाव के नुकसान से बचाव हो जाता है। सासे काफी समय से अवघाव तकनीकों का सफलतापूर्वक उपयोग कर रही है। सासे, रसायनों (सोडियम क्लोरायड) का छिड़काव करके सड़क पर जमी बर्फ की ३ सें. मी. तक मोटी तह को पिघलाने का उपाय भी करती है। उत्तर-पश्चिमी हिमालय में अनेक अवघावों की शक्ति का अनुमान लगाकर सासे ने इनसे प्रभावित होनेवाली सड़कों को अनेक तरह की लकड़ी की संविरचनाएं लगाकर बचाया है। संविरचनाएं हिम को उसके फिसलन-पथ पर ही रोक लेती हैं।

जम्मू-श्रीनगर तथा श्रीनगर-लेह सड़क मार्गों पर आनेवाले अवघाव क्षेत्रों गगनगीर-दरास क्षेत्र, शैतानी नाला, जोशीमठ क्षेत्र में माना अवघाव क्षेत्र तथा त्रिलोकी व बद्रीनाथ मंदिर के समीपवर्ती क्षेत्र अब अवघाव के विनाश से सुरक्षित हैं। इन संविरचनाओं के बारे में सासे के एक वैज्ञानिक श्री एन. रंगाचारी ने कहा, '१९५२ में बद्रीनाथ-मंदिर क्षेत्र में बड़ा भारी अवघाव हुआ था। तब मंदिर के पास मकान व आबादी न थी। उस समय तो बचाव हो गया, पर उत्तरप्रदेश सरकार तभी से मंदिर की सुरक्षा के प्रति चितातुर थी। १९७० में जब सासे बनी तब कुछ समय बाद हमें उ. प्र. सरकार की ओर से मंदिर के लिए सुरक्षात्मक उपाय करने का अनुरोध प्राप्त हुआ। बद्रीनाथ मंदिर अब पूरी तरह सुरक्षित है।'

सासे के बहुविधा मौसम वैज्ञानिक हर वर्ष लगभग २५ अवघाव-भविष्यवाणियां करते हैं। ये पूर्वानुमान अधिक सटीक हुआ करेंगे, क्योंकि भारत 'अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' और मौसम विभाग के उपग्रहों से प्राप्त मौसम संबंधी सूचनाएं सासे को उपलब्ध करा रहा है।

—४५५/१९, दुर्गा कालोनी, रोहतक-१२४००१

जिनके लिए आजादी धन से अधिक मूल्य रखती है

• नवीन नौटियाल
छाया : ब्रह्मदेव
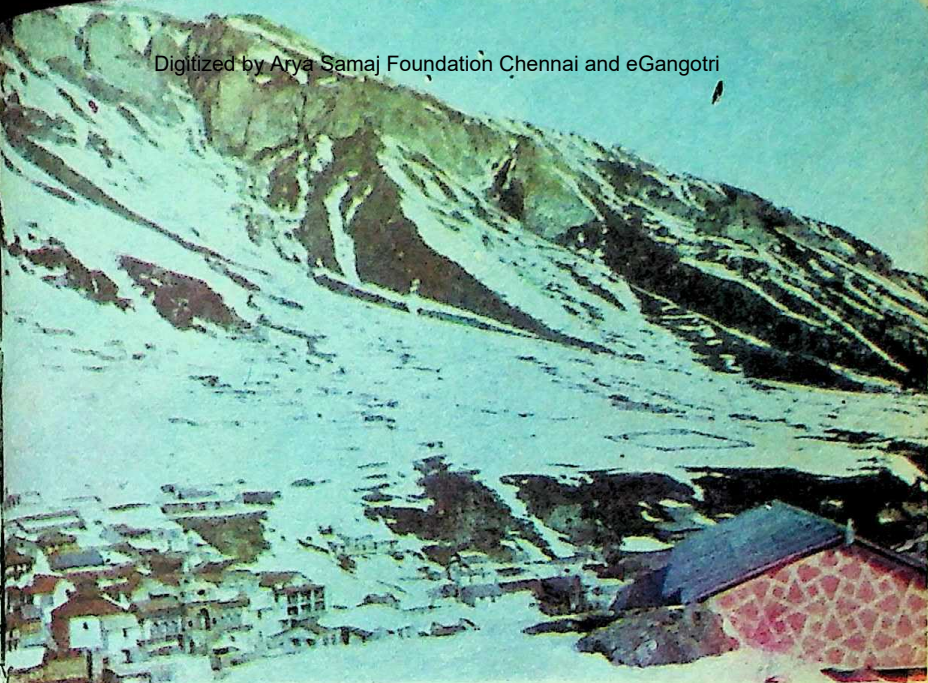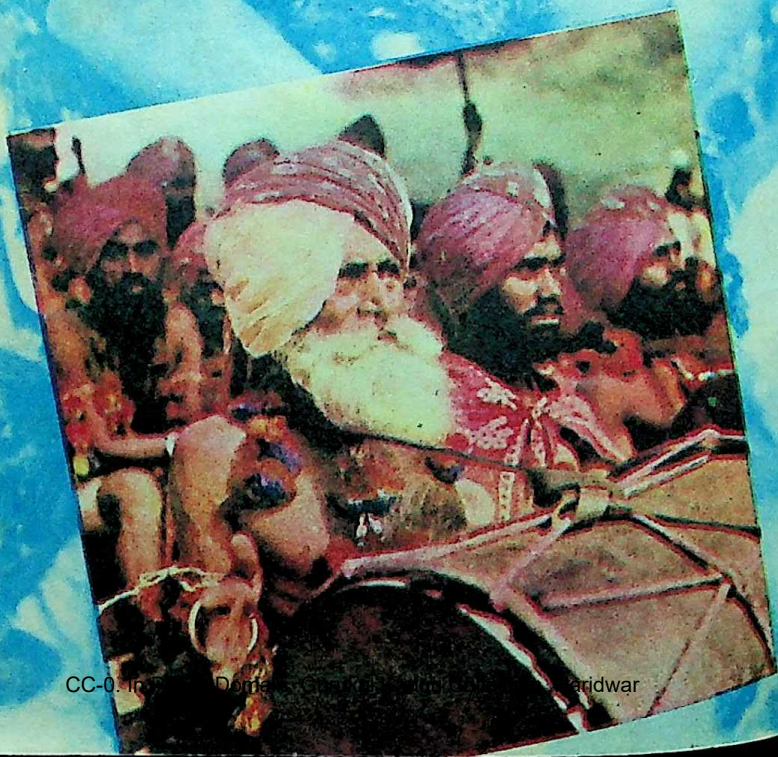
अक्तूबर का महीना, बरसात को विदाकर सर्दियों के मौसम के स्वागत में मसरूफ खड़ा महीना। डंगरों के लिए यह महीना व्यस्ततामरा होता है। इस महीने में वे अपना माल-असबाब अपने जानवरों पर लाद, बीवी-बच्चों को घर पर ही छोड़, दूर-दराज के देहाती इलाकों में निकल पड़ते हैं।

ये डंगर लोग कौन हैं और कहां से आये हैं, इस बारे में एक लोक-कथा प्रचलित है। इस लोक-कथा के अनुसार गरमियों की शुरुआत के दिन थे। किसानों की निगाहें एकाएक चीटियों की बांबियों की ओर जा लगीं। सभी किसान आश्चर्यचकित थे, क्योंकि चीटियों की बांबियों से चीटियां नहीं, बल्कि अजीबोगरीब किस्म के जानवर निकल रहे थे। इस तरह के जानवरों को किसानों ने इससे पहले कभी नहीं देखा था। दरअसल, ये जानवर भेड़-बकरियां थीं। भेड़-बकरियों के झुंड के झुंड देखते ही देखते खेतों में फैल गये और उन्होंने फसल को खाना शुरू कर दिया। पहले तो किसान आश्चर्य से खड़े देखते रहे, लेकिन जब उन्हें लगा कि ये तो फसल
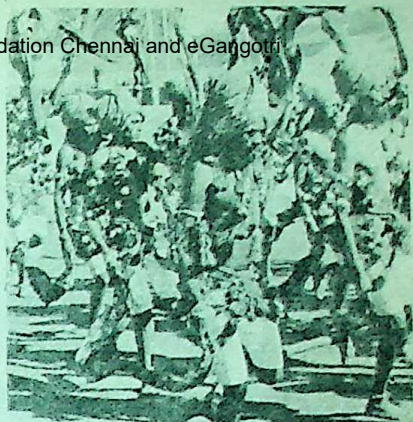
ढोल की थिरकन : एक डंगर पुरुष
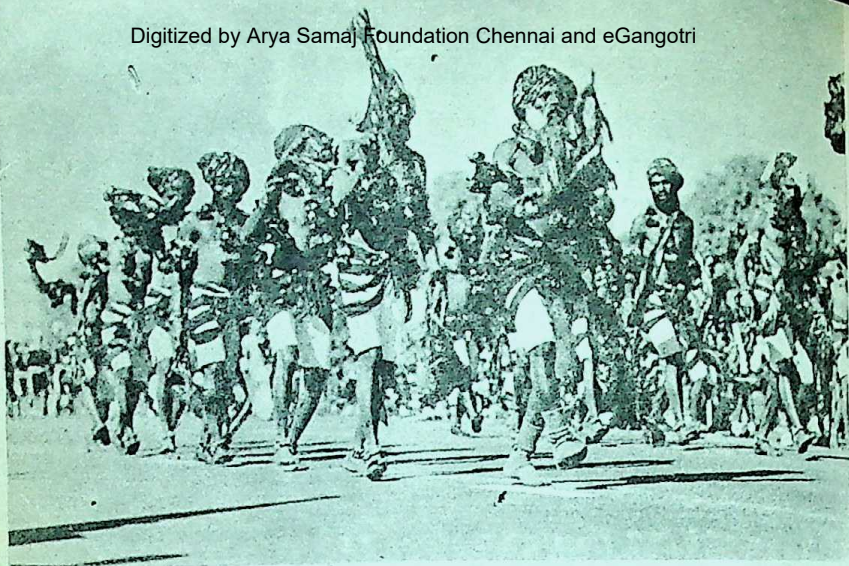
गणतंत्र दिवस की परेड में : राजपथ पर नृत्यरत डंगर

को चौपट किये दे रहे हैं, तो उन्होंने इन जानवरों को भगाने की कोशिश की, लेकिन उनकी हर कोशिश नाकामयाब रही। नाकामयाब आदमी अंततः भगवान को याद करता है। किसानों ने भी अपने इष्टदेव महादेव को याद किया और उनसे प्रार्थना की कि वे इन जानवरों की विनाश लीला से उनकी रक्षा करें। महादेव प्रसन्न हुए और उन्होंने इसके लिए प्रथम डंगर पुरुष की सृष्टि की। डंगर ने इन बनैले जानवरों को पालतू बनाकर किसानों को उन से छुटकारा दिलाया।

लंबे, पुख्ता और दाढ़ीदार चेहरेवाले डंगर लोग अपने आप में सबसे अलग होते हैं। ये डंगर यानी गड़रिये आज तक अपनी परंपराओं का निष्ठापूर्वक निर्वाह करते आ रहे हैं। महाराष्ट्र, कोल्हापुर और सांगली डंगरों के प्रमुख केंद्र है, जहां इन्हें बड़ी संख्या में पाया जाता है। हाथ में छड़ी और पीछे-पीछे चलते कुत्ते इनकी एक खास पहचान हैं। इनके ये कुत्ते पालतू जानवर ही नहीं, वरन सहयोगी व मित्र भी होते हैं। डंगरों के बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि ये चींटियों की बांबियों को पूजते हैं। दीवाली के दिन तो चीटियों की बांबियों पर चावल व फूलों के अंबार लग जाते हैं।

बदलते समय के तेवर के आगे कुछेक डंगरों ने आत्मसमर्पण कर दिया है और उन्होंने अन्य रोजगार अपना लिये हैं, लेकिन अधिसंख्यक डंगरों ने अपने आदिम रीति-रिवाजों को बदस्तूर अपनाये रखा।

आजादी के दीवाने

विश्वास किया जाता है कि डंगर शब्द
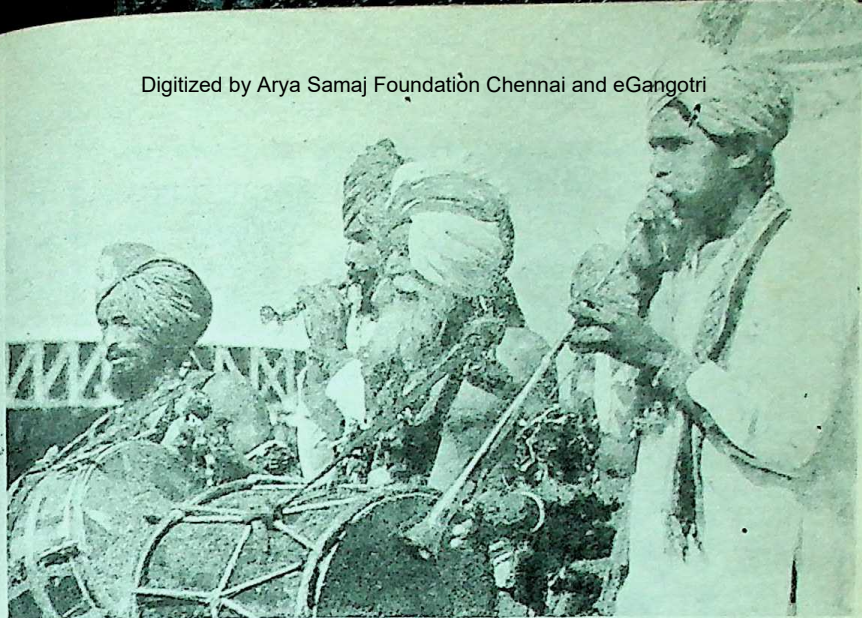
नेशनल स्टेडियम में आयोजित लोकनृत्य-समारोह में डंगरों द्वारा नृत्य-प्रदर्शन

संस्कृत के धेनु (गाय) से विगड़कर बना है। वैसे, विद्वानों के अनुसार इस बात की संभावना अधिक है कि यह शब्द धन से निकला होगा, जिसका तात्पर्य गो-धन, गज-धन आदि संपदा के रूपों से है। भारत में पशु को भी संपत्ति के रूप में ही माना जाता है। वैसे, सच बात तो यह है कि डंगरों का धन से दूर का भी नाता नहीं है। यायावरी जीवन के कारण उनकी किस्मत में आराम भी नहीं लिखा। लेकिन उनके पास एक ऐसी चीज है, जिसका मुकाबला कोई भी संपदा नहीं कर सकती, वह है उनकी आजादी। आजादी को अंतर्मन से चाहनेवाली ये कौम सरकारी तौर पर पिछड़ी जातियों में गिनी जाती है। इनका अपना निजी अनुशासन, अपनी संस्कृति और अपनी एक अलग पहचान है। इनका समाज तथाकथित सभ्य समाज की कई कुरीतियों से मुक्त है।

शादी का पैमाना : लंबाई

डंगरों के नृत्य तो विशिष्ट होते ही हैं, साथ ही उनके विवाह संबंधी रिवाज भी कम रोचक नहीं होते। जब किसी युवती को जीवन-साथी का चुनाव करना होता है, तब कुछ डंगर बुर्जुग वधू की ऊंचाई नाप लेते हैं, फिर इच्छुक वरों के पास जाते हैं। जो भी प्रत्याशी वधू से ऊंचा निकलता है, उसे विवाह के लिये उपयुक्त मान लिया जाता है। इस नाप-जोख में पुरुष की वय नहीं देखी जाती। इनमें विवाह आमतौर पर बरसात के मौसम में होते हैं, क्योंकि इसी मौसम में उन्हें फुरसत होती है।

लड़ाकू कौम के लोग

डंगर लोग अपने फोटो नहीं खिचवाते
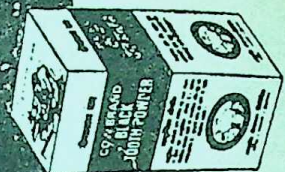
क्योंकि वे फोटो उतारने को दुर्भाग्य का सूचक मानते हैं, और यही वजह थी कि गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लेने के लिए डंगरों को काफी मुश्किल से तैयार किया गया। एक-दो मौके ऐसे भी आये, जब वे गणतंत्र दिवस के अवसर पर फोटो ले रहे फोटोग्राफरों से झगड़ भी पड़े। ये बाहरी लोगों से मिलना पसंद नहीं करते। वैसे, उनका मानना है कि उनका समाज एक वैभवमय इतिहास का अंग है। उन्होंने छत्रपति शिवाजी की एक महत्त्वपूर्ण गोरिल्ला टुकडी का निर्माण किया था। उनका वास्तविक इष्ट देवता भी वीरोबा (वीर पुरुष) है, जिनके गीत वे बड़े उत्साह से गाते हैं। वे अपने को लड़ाकू कौम के रूप में पहिचाने जाने पर गर्व का अनुभव करते हैं।

दीवाली इनका सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहार होता है। इस दिन ये महादेव तथा रणदेवी की पूजा करते हैं। इस अवसर पर ये लोग अपनी बकरियों के सींगों को रंगते हैं और फिर उनके खुरों को छूकर पूजा करते हैं। ये जानवरों का बहुत आदर करते हैं और उनकी अधिकांश मान्यताएं जानवरों को लेकर ही हैं। भले ही यह बात अजीब-सी लगे, लेकिन यह सच है कि जिस घर में बिल्ली मर जाती है, उस घर में पूरे पांच हफ्ते तक रोटी नहीं सिकती। मृत कुत्ते या बिल्ली को छूना, गाय, सांड या भैंस को मारना और गले में रस्सी डालकर फांसी लगाना, इस कौम में एक दंडनीय अपराध माना जाता है।

तन से बूढ़ा पर मन से जवान : एक डंगर

डंगरों की आबादी कुल सत्तर हजार आंकी गयी है। आज वे जिंदगी के एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं, जहां एक तरफ उनकी परंपरागत जीवन-शैली है, तो दूसरी तरफ एक तेज रफ्तार जिंदगी, जो कि उनको निरंतर परास्त किये जा रही है।

—१५ बी, राजपुर रोड, देहरादून

हर आदमी के दो जीवन होते हैं। एक वह, जिसे उसकी पत्नी जानती है और दूसरा जिसे वह समझता है कि उसकी पत्नी नहीं जानती।

• जगदीश चन्द्र पाण्डेय

उद्घाटन-भाषण के इस हिस्से ने तो इस बार भास्कर को इतना विचलित कर दिया कि उसके लिए एक शब्द आगे टाइप करना कठिन हो आया। वैसे, डिक्टेशन लेते समय भी इस हिस्से ने उसे परेशान किया था। सम्मेलन शुरू होने में मुश्किल से सात-आठ मिनट शेष थे, जबकि उद्घाटन-भाषण छपना तो दूर, टाइप तक नहीं हुआ था। ऐसा इसलिए हुआ कि जिन मंत्रीजी को पहले उद्घाटन करना था, उन्हें किसी जरूरी काम से नयी दिल्ली जाना पड़ा था। वह तो सम्मेलन के 'आर्गनाइजिंग-सेक्रेटरी' ही इतने तेज-तर्रार थे कि उन्होंने सारा मामला संभाल लिया था।

उन्होंने रात ही रात में एक अन्य मंत्रीजी से उद्घाटन करने की स्वीकृति ले ली थी। नये मंत्रीजी से संपर्क कर उद्घाटन-भाषण का मसौदा तैयार कर उनसे 'एप्रूव' भी करवा लिया था। बल्कि उन्होंने तो यहां तक व्यवस्था कर ली थी कि इधर उद्घाटन भाषण होगा, उधर भाषण एक घंटे में छपकर पत्रकारों आदि को ठीक वैसे ही बांटा जाएगा-जैसे अध्यक्षीय भाषण। यही वजह थी कि सारी तैयारियां अफरा-तफरी में हो रही थीं। ठीक ऐसे ही समय भास्कर की यह मानसिकता कैसे खपती? तभी तो उसके टाइप-राइटर की टिक-टिक रुकी नहीं कि सेक्रेटरी सहित तीन-चार व्यक्ति एक साथ बोल उठे थे, "क्या हुआ?"
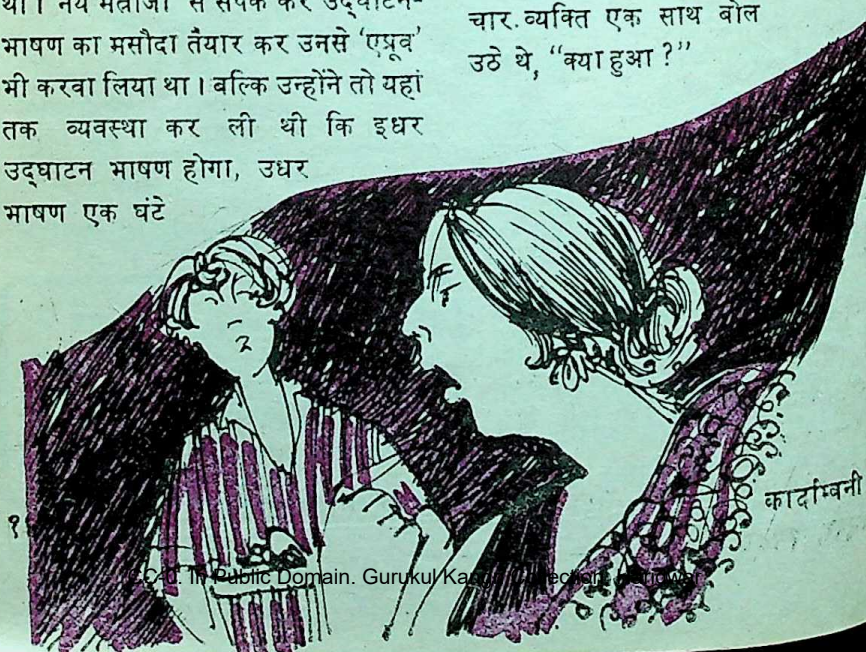
टिक-टिक, टक-टक । म...
...बूरन भास्कर को भी अपने को
संयत करना पड़ा था ।

"हरी-अप प्लीज,
हरी-अप . . . ।"

वैसे भास्कर
की टाइपिंग
की स्पीड
नब्बे
शब्द प्रति मिनट थी । पर आज, उसके लिए बचे दो पृष्ठ टाइप कर पाना कठिन हो आया था । वह एक बार फिर उसी मानसिकता में आ गया था, जब 'डिक्टेशन' लेते समय इसी हिस्से पर वह ठहरा था । तब उसकी हूं-हूं न सुनने पर सेक्रेटरी साहब ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचा था । पर वह था कि न केवल अतीत की यादों में जा पहुंचा था, वरन उन यादों के कारण उसकी पलकें तक गीली हो आयी थीं । यही वजह थी कि सेक्रेटरी साहब अवाक से भास्कर को देखते रह गये थे । वे समझ गये थे कि भास्कर की इस मनःस्थिति के पीछे उनके द्वारा तैयार किये गये उद्घाटन-भाषण की लाइनें हैं । भाषण का विषय भी तो 'ड्राप आउट स्टूडेंट्स' यानी 'स्कूल छोड़नेवाले बच्चों की समस्याएं' था । आखिर, वे भी तो स्वयं भुक्तभोगी थे । तब उनके लिए भी आगे भाषण का 'डिक्टेशन' दे पाना कठिन हो आया था । मगर, अब उनकी मजबूरी ऐसी थी कि भाषण के तैयार हुए बिना काम चल नहीं सकता था । इसीलिए उन्होंने भास्कर को तब झकझोरा था ।

* * *

"साहब, सुना है आपको नौकर की . . . ।"

"यस, यस, कम इन, कम इन, कितने पढ़े लिखे हो ?"

"जी साहब, मैं तो अनपढ़ . . . ।"

सचमुच वही दिन भास्कर की जिंदगी का स्वर्णिम दिन था। कहां वह बरतन मलने की नौकरी की खोज में निकला था। कहां उसकी स्कूली जिंदगी फिर शुरू हो गयी थी, जिसकी उसे सपने में भी उम्मीद नहीं थी। क्योंकि, पिता की मृत्यु के साथ उसकी स्कूली जिंदगी समाप्त हो गयी थी। बेचारी मां की भी तबियत यदि ठीक होती, तो स्कूल पढ़ने का सपना वह बनाये रह सकता था। पर बीमारी के कारण मां को खुद ही सहारे की जरूरत थी। ऊपर से सबसे बड़ा होने के कारण सारे परिवार का भार उसी पर था। यह भी मात्र संयोग था कि वह ऐसे दरवाजे पहुंचा, जिन्होंने भले ही उससे नौकरी करवायी पर साथ ही उसे पढ़ाया भी। वह तो उसकी मालकिन नहीं मानी, नहीं तो मालिक शायद उससे नौकरी भी नहीं करवाते। इतना ही नहीं, उसके मालिक ने उसके भाई-बहनों व मां तक की पूरी मदद की थी। वह दिनभर काम और रातभर पढ़ाई करता था।

ये ही सारी बातें थीं कि उद्‌घाटन-भाषण के इस हिस्से को वह सह नहीं पाया था। क्योंकि सेक्रेटरी साहब ने उसे 'डिक्टेशन' दिया था---'अपवादों को छोड़, जो भी बच्चे पढ़ाई के दिनों स्कूल छोड़ते हैं, उसके पीछे कोई न कोई मजबूरी होती है। चाहे वह माता-पिता की अकाल मौत हो या फिर गरीबी। आंकड़े यदि इकट्ठे किये जाएं, तो स्कूल छोड़नेवालों का पचानवे प्रतिशत ऐसे ही अभागों का होता है। पर अफसोस कि 'ड्राप आउट स्टूडेंट्स' की बातें तो आये दिन होती हैं और उनकी साक्षरता की बातें भी आये-दिन की जाती हैं, पर इस दिशा में सोचा ही नहीं जाता कि ऐसे बच्चे स्कूल क्यों छोड़ते हैं...। यह ठीक है कि संविधान के अनुसार चौदह साल से कम उम्र के बच्चों से मजदूरी कराना कानूनन जुर्म है। क्या इस मुद्दे पर अमल होता है। निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर बनाने के लाख प्रयास करते हुए भी निरक्षरों की संख्या में कमी नहीं आ पाती है। ऐसा इसलिए कि सौ निरक्षरों को जहां साक्षर बनाया जाता है, वहीं निरक्षरों में एक साथ पांच सौ और आ मिलते हैं। इनकी समस्याओं के बारे में गांधीजी तथा जवाहरलालजी ने गंभीरता से सोचा था। वे समझते थे कि यही बच्चे आगे चलकर समाज के लिए अभिशाप बनते हैं। इसलिए स्कूल छोड़नेवालों की समस्याओं . . . ।'

इससे आगे भास्कर के लिए 'डिक्टेशन' ले पाना कठिन हो आया था। क्योंकि, इससे आगे की लाइनें बिलकुल उसकी जिंदगी से मेल खाती थीं। ऊपर से 'डिक्टेशन' देते समय सेक्रेटरी साहब की गीली पलकों के दर्द ने उसे और भी विचलित कर दिया था। क्योंकि, तब उसके मन में विचार आया था कि जो व्यक्ति इस
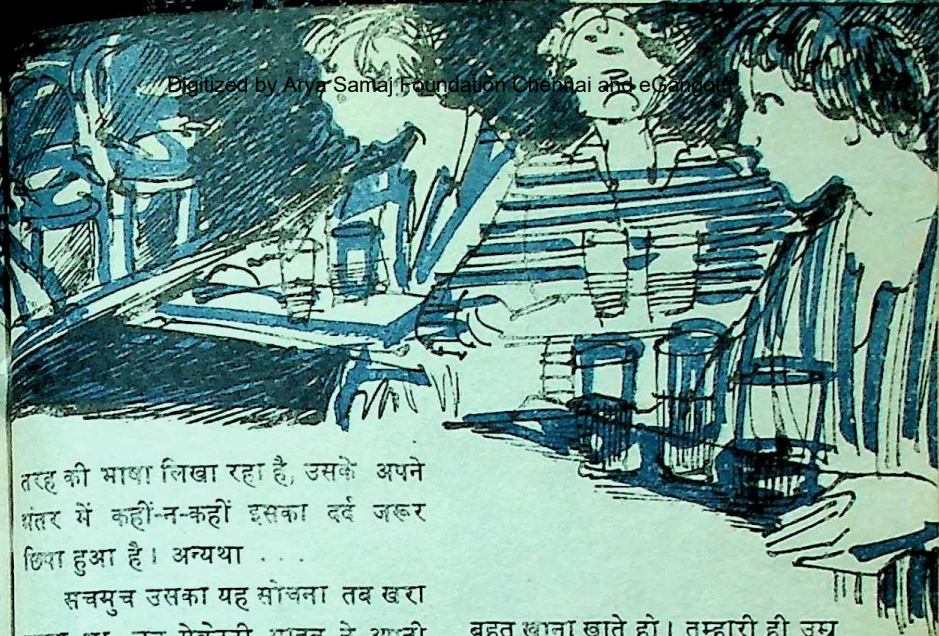
तरह की भाषा लिखा रहा है, उसके अपने अंतर में कहीं-न-कहीं इसका दर्द जरूर छिपा हुआ है। अन्यथा . . .

सचमुच उसका यह सोचना तब खरा उतरा था, जब सेक्रेटरी साहब ने अपनी कहानी उसे सुनायी थी। मसौदा टाइप होने के बाद सेक्रेटरी साहब ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकारा था कि 'यदि मैं तीन दिन की भूख के कारण हुसैनी साहब की क्लास में न गिर पड़ता तो, शायद मैं भी मूरख-गंवार ही रहता। क्योंकि, तब हकीकत का पता चलते ही हुसैनी साहब ने मेरी पढ़ाई की व्यवस्था की थी। ऊपर से यदि मेरे नंबरों को देख मेरी बीवी मुझ पर, फिदा नहीं होती, तब शायद इतने पर ही मैं किसी स्कूल का मास्टर ही रह जाता। जबकि आज मैं प्रोफेसर हूं।' इतना तो क्या उन्होंने यहां तक सुनाया था कि उन्होंने न केवल चार-पांच घरों में बर्तन मले, वरन मालिकों के बच्चों को मक्खन, डबल-रोटी खिलाकर खुद आधे पेट कई दिन बिताये हैं। क्योंकि तीन-चार रोटियां खाते ही मालकिनें कह उठती थीं—'अरे तुम तो बहुत खाना खाते हो। तुम्हारी ही उम्र का मेरा बेटा दो रोटी भी नहीं खा पाता है।' मगर इतने पर भी मेरी पढ़ने की लालसा खत्म नहीं हुई थी। जब भी मालिकों के बच्चों के हाथों कापी-किताबें देखता, तब मेरे मन में विचार आता कि क्या कभी मैं भी इसी तरह किताबें पढ़-पाऊंगा।

'संयोग से एक दिन मेरा संपर्क रात्रि-स्कूल के एक अध्यापक से हो गया। उसने मुझे मैट्रिक की परीक्षा प्राइवेट तौर पर देने की सलाह दी। मगर मेरे लिए फार्म भरना आदि सभी कुछ समस्या थी। जाने उस अध्यापक को मुझ पर कैसे तरस आया या जाने क्या बात थी कि उसने मेरा फार्म खुद फीस देकर भरा दिया। मैं मालिकों की नजरें बचाकर रात में पढ़ता था। मैं परीक्षा में पास हुआ और अपने जिले में फर्स्ट आया था। इसी नतीजे के साथ मेरा भाग्य बदला। मुझे वजीफा मिल

RED & WHITE
FILTER
" हम रेड एण्ड व्हाईट
पीनेवालों की
बात ही कुछ और है."

गया और मैंने इंटर में दाखिला ले लिया।

वजीफे के पैसों से कापी किताबें तो जुट जातीं, पर रोटी व मकान नहीं जुटते थे। यह सब कुछ हुसैनी साहब ने दिया था। मैं भूखा उनकी क्लास में बेहोश जो हुआ था। यही वजह है कि अब जब भी मैं किसी छोटे बच्चे को मजदूरी करते देखता हूं, तब मेरा माथा फट आता है; घंटों-घंटों मैं यही सोचता रह जाता हूं, काश! इसे भी रात्रि-स्कूल के मास्टर चन्दरसिंह व हुसैनी साहब-जैसे कोई मिल जाते।

'यह भी भाग्य की बात है कि एक आई. ए. एस. की बेटी होते हुए भी मेरी पत्नी मुझे इन कामों से रोकती नहीं, बल्कि पैसों की वजह से मेरे कामों में रुकावटें आती देख स्वयं नौकरी करती है। मगर इस तरह के अभागे बच्चों की तायदाद इतनी है कि चाहते हुए भी हम उनके लिए अधिक कर नहीं पाते हैं। स्वयं को इन केंद्रों को समर्पित करके मैं सिर्फ उस चंदरसिंह की गुरु-दक्षिणा को चुका रहा हूं, जिन्होंने मेरी नौकरी लगने की खुशी पर मिठाई के डिब्बे को पकड़ते समय कहा था, 'बेटे, यदि अभागे बच्चों के आंखों के आंसुओं को अधिक से अधिक पोंछ सको, तो यह मेरे ऊपर बड़ी कृपा होगी . . .'

भास्कर तब अवाक-सा सेक्रेटरी साहब को देखता रह गया था। उसका अनुभव यही था कि जितने भी लोग ऊपर पहुंचे हैं, आम जनता के बीच से, या तो हैं ही नहीं, या फिर वे ऐसे हैं, जो अपनी असलियत को भूल गये हैं। जबकि इस बार नये मंत्रीजी ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकारा था—'दुनिया की अधिकांश सरकारें भले ही शिक्षा-पद्धति पर जोर देने का दिखावा करती हैं, मगर उनकी योजनाएं ऐसी होती हैं, जिससे गिरे व दबे हुए हमेशा-हमेशा के लिए और अधिक दबते चले जाएं, क्योंकि ऐसा करने पर ही उनके अपने निकम्मे बेटों की जिंदगी निर्भर रहती है। वैसे, हम भी यह दावा तो नहीं करते कि इस तरह की बातों से हम उबर सके हैं। मैं यह भी मानता हूं कि हमारी शिक्षा-पद्धति बच्चों को दो भागों में बांट देती है। एक ओर संपन्नों के बच्चे होते हैं, दूसरी ओर विपन्नों के। पर एकदम सारी बुराइयों को दूर नहीं किया जा सकता। नेहरूजी का सपना था कि उनके वतन का एक भी आदमी शारीरिक व मानसिक रूप से गुलाम न रहे। इसीलिए उनके

बदसूरत बादशाह

एक दिन बादशाह ने अपना चेहरा शीशे में देखा और गुस्से से भरकर कहा, "मैं बहुत बदसूरत हूं! मैं अब कभी दुबारा शीशे में अपना चेहरा नहीं देखूंगा।"

"महाराज! आप परेशान हो उठे, हम, आपकी प्रजा, दिन में दर्जनों बार आपके चेहरे को देखते और बर्दाश्त करते रहते हैं," आवंती ने कहा।

मूल चीनी से : सत्यप्रकाश

इसी सपने को पूरा करने के लिए पूरे देश में एक योजना बनायी गयी है कि . . .

उद्‌घाटन-भाषण पूरा टाइप हो चुका था। सेक्रेटरी साहब भास्कर की पीठ थपथपाते हुए एक प्रति छपने के लिए प्रेस-वाले को दे और दूसरी स्वयं लेकर हाल की ओर चल पड़े।

पूरा हाल खचाखच भरा हुआ था। भीड़ की वजह से भास्कर को भी अंदर पहुंचने में थोड़ी देर लगी। वह अंदर तब पहुंचा, जब तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उद्‌घाटन - भाषण शुरू हो चुका था। मंच के पीछे मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था—'बाल-मजदूर और उनकी समस्याएं।'

उसने मुड़कर पीछे देखा तो दंग रह गया, क्योंकि हाल में इधर-उधर जाने भर को छोड़ी जगहों में ट्रे में पानी के गिलास लिये बारह-चौदह साल के बच्चे जहां-तहां खड़े थे, जो कुरसियों के बीच खिसक-कर लोगों को पानी पिला रहे थे। उसका माथा झनझना उठा। उसका मन वहां से फिर उखड़ गया। पर हाल से बाहर निकलने की सोच ही रहा था कि उसकी नजर फिर सेक्रेटरी साहब पर जा टिकी। वह सोचता रह गया, कहीं सेक्रेटरी साहब ने सम्मेलन के विषय की ओर लोगों का ध्यान खींचने के लिए जानबूझ कर तो ऐसा नहीं किया है, या उनसे व्यस्ततावश अनजाने में ऐसा हो गया है।

—डी-१३२ सरोजिनी नगर,
नयी दिल्ली-११००२३

समस्या बाल-श्रमिकों की

भारत में किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार, यद्यपि कानूनन १४ साल से कम उम्र के बच्चे को नौकरी पर नहीं रखा जा सकता, फिर भी लोग उन्हें नौकरी पर रखते हैं। बंबई में जो बच्चे नौकरी कर रहे हैं, उनमें से २५ प्रतिशत की उम्र छह से नौ साल है, ४८ प्रतिशत की उम्र दस से बारह साल है, और २७ प्रतिशत की उम्र तेरह से पंद्रह साल है।

अभी हाल ही में दिल्ली में 'एशियाड'-८२' के लिए चल रहे निर्माण कार्यों में ठेकेदारों द्वारा चौदह साल से कम उम्र के बच्चों को श्रमिक के रूप में काम पर रखने और उनका शोषण किये जाने के कई मामले सामने आये थे। इन्हें लेकर 'पीपुल्स यूनियन फॉर डेमोक्रेटिक राइट्स' नामक संस्था ने सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की थी, जिस पर सर्वोच्च न्यायालय ने भारत सरकार, दिल्ली प्रशासन और दिल्ली विकास प्राधिकरण को आदेश दिया और एक समिति का गठन किया, जो निर्माण स्थलों का प्रति सप्ताह दौरा करके देखे कि कहीं 'इम्पलॉयमेंट आॅव चिल्ड्रन एक्ट १९३८' का ठेकेदारों द्वारा उल्लंघन तो नहीं किया जा रहा।

इस आदेश का जारी किया जाना इस बात को स्पष्ट दर्शाता है कि १४ वर्ष से कम उम्र के बच्चों से श्रमिक के रूप में काम लिया जाता है।

—योगेश

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने काव्य को भावयोग और साहित्य का लक्ष्य सर्वभूतात्मभूत लोकमंगल माना है। साहित्य सिद्धांत उन्होंने अपने जीने के ढंग से उपलब्ध किया। वे उन गिने-चुने मनीषियों में हैं, जिन्होंने अपना जिया हुआ ही संसार को दिया। कहीं दोहरापन नहीं है। आरोपित, प्रक्षेपित, ग्रंथित कोई तत्व नहीं है। उनके निजी जीवन में जो रूप, रस, गंध है, वही उनके साहित्य में है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल : पारिवारिक संस्मरण

उनके यहां सांप घूमा करते थे

● कुसुम चतुर्वेदी

१८८४ की शरद पूर्णिमा को अगौना गांव में जन्मे शुक्लजी शैशव से गुल्ली-डंडा, लुका-छिपी, गोली, लट्टू आदि बाल-सुलभ खेलों को छोड़कर शरारती बच्चों को इकट्ठा करते। पेड़ों पर चढ़ते, नदी, नालों में उतरते, पर्वतों पर दूर-दूर तक घूमते रहते। उनके पिता जब राज्य में कानूनगो हुए, तब बुंदेलखंड की पहाड़ियों ने पेड़ों के झूले लटका दिये। बाल-मित्रों सहित वे चरखारी, महोबा, राठ में पैदल घूमते हुए गन्ना चूसते, मटर खाते, किसानों से बातें करते, पहाड़ों में उभरे तालाबों में स्नान करते, चट्टानों पर सोते और रात उतरने पर घर आते। तब शांत प्रवृति की मां तो कम, किंतु ज्वलंत दादी उन्हें कड़ा दंड देतीं। वे कमरे में बंद कर दिये जाते। जोर-जोर से विनय-पत्रिका पढ़ते-पढ़ते दादी का मन कचोटने लगता, तो वे दरवाजा खोलतीं, उनके कान उमेठती हुई गोद में बैठाकर दूध-रोटी खिलाने लगतीं। रामचंद्र बड़ी मासूमी से दादी का आंचल पकड़कर कहते, 'दूधू मां, हम आल्ह-ऊदल के तलवारें त ढूड़ियथ पहाड़न पर।' दादी उबल पड़ती, 'हां, आल्है-ऊदल त-बनबौ। अरे नाती, हल चलावै बढे मी ताक चाही।'

अरबी-फारसी के विद्वान, लंबी दाढ़ी, लंबे कुरते-शेरवानी में पूरे मौलवी बने

उनके पिता दादी-पोते का संभाषण सुनकर चुपचाप खिसक जाते।

रामचंद्र ने नौ वर्ष की आयु में अपनी मां की जलती हुई चिता में एक नश्वर जीवन देखा। पिता सदर कानूनगो होकर मिर्जापुर आये। खंडित ममता विराट से जुड़कर उन्हें जीवन के सच्चे अर्थ की खोज में घुमाने लगी। आधी रात तक वे बालमंडली सहित बिंध्या देवी के जंगल-पहाड़ों की खाक छानते और प्रातः से सायं चार बजे तक घर और विद्यालय में पढ़ते।

साहित्य के संपर्क में

यहां मेयो मेमोरियल लाइब्रेरी में एडिसन के 'ऐसे आन री-इमेजिनेशन' में डूबे हुए बालक रामचंद्र को केदारनाथ पाठक ने पहले-पहल देखा था। प्रेमधनजी के काव्य-विवाद की शोहरत रामचंद्र ने यहां आकर सुनी। भारतेंदु-मंडल के इस एकमात्र अवशेष प्रेमधनजी की एक झलक पाने के लिए इन्हें अपनी बाल-मंडली के साथ तीन घंटे सड़क पर घूमना पड़ा। कुछ दिन बाद अपने सायंकालीन दरबार में प्रेमधनजी ने सभी उपस्थित-जनों से निमंत्रण-पत्र पर छपने के लिए एक दोहा बनाने को कहा। सुगठित शब्दावली और गहरे भाव का एक दोहा पढ़कर जब रचयिता का नाम जानना चाहा, तब उन्होंने इस अपरिचित बालक में चिरपरिचित साहित्यिक पहचान देखी।

कलह ने घर से अलग किया

घर में सौतेली मां का आतंक था। बारह वर्ष की उम्र में ही रामचन्द्र की शादी हो गयी थी। कलह बढ़ने पर ये घर से अलग किराये की एक कोठरी में रहने लगे और पंद्रह रुपये के ट्यूशन से जीवन-निर्वाह करते हुए कक्षा नौ की पढ़ाई भी पूरी करने लगे। पिता के वात्सल्य ने उनकी सामाजिक न्याय की भावना को समझा। तीसरे माह पिता उस कोठरी में दाखिल हुए। पुत्र से लिपटकर फूट-फूटकर रोये और उन्हें सम्मानपूर्वक घर वापस लिवा लाये। दादी दिवंगत हो चुकी थीं। वह अब भी पहले की तरह ही रात-रात जंगल, पहाड़, फूल, वृक्षों से बात करते; किसानों से छेड़खानी करते और दिन में स्वाध्याय में निरत रहते। उनकी मित्र-मंडली में अब कुत्ते, बिल्ली, खरगोश और नेवले भी शामिल रहते। घर पर नित्य पिताजी से अपशब्द सुनने पड़ते।

राज-सत्ता से टकराव

किसी तरह उन्होंने इंटर पास किया। पिता को मिर्जापुर का नक्शा बनाना था। उन्होंने यह काम रामचंद्र को सौंपा। सुडौल अक्षर और कलात्मक रेखाएं देखकर कलक्टर बिंढम ने तत्काल इनका मनोनयन नायब तहसीलदारी में कर लिया। प्रशिक्षण शुरू हुआ। घोड़ा पाकर रामचंद्र फूले न समाए। किसी मित्र को पीछे बैठाकर दिनभर विंध्याटवी पहाड़ियों पर घूमते, प्रपातों एवं गंगा की लहरों से बातें करते। घुड़सवारी की परीक्षा में वे प्रथम आये। तभी एक दिन

कलक्टर ने प्रातः इन्हें अपने घर बुलवाया। रामचंद्र का स्वाभिमान सत्ता की बराबरी में खड़ा हो गया। १६ वर्ष के थे। अब तक इनकी दो एक रचनाएं छप चुकी थीं। कोई अंगरेज हिंदुस्तानी को, कोई जिलाधीश विद्वान को अपने घर बुलाए, यह उन्हें बरदाश्त नहीं हुआ। बूढ़े चपरासी ने समझाया, मां-बाप ने डांटा, पत्नी गिड़गिड़ायी, किंतु उन्होंने अपना त्याग-पत्र उसी चपरासी से भिजवा दिया। घर में कलह बढ़ा। रामचंद्र को पत्नी और दो बच्चों सहित गांव अगौना जाकर धान, सावां में फटे-हाल दिन गुजारने पड़े, किंतु उन्होंने राज्य-सत्ता से संधि नहीं की। भारत में ऐसे तीन ही मनस्वियों के उदाहरण हैं, जिन्होंने सरकारी नौकरी में चयन व मनोनयन के बाद प्रशिक्षण-काल में ही त्याग-पत्र दे दिया; ये थे श्री अरविन्द घोष, सुभाषचंद्र बोस और आचार्य रामचंद्र शुक्ल। परिस्थितियों से उपेक्षित, भूख-प्यास की कठिन ज्वाला में दिया हुआ शुक्लजी का त्याग-पत्र, अपना एक अलग इतिहास रखता है।

गांव से ही इन्होंने 'व्हाइट हैज इंडिया टू डू' लिखकर नौकरशाही का पर्दाफाश किया। 'हिंदुस्तान रिव्यू' में वह लेख पढ़कर कलक्टर विंढम ने इनके पिता को सचेत किया कि 'संभालिए, आपका लड़का क्रांतिकारी हो रहा है।' पिता लाचार थे। एक वर्ष बाद १९०३ में शुक्लजी गांव से 'आनन्द कादम्बिनी' के संपादक होकर लौटे। सन १९०८ में वे नागरी प्रचारिणी सभा आये और १९१९ में मालवीयजी ने उन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय में बुला लिया।

बड़ा परिवार : कम आय

शुक्लजी ने अपने जीवन में अपनी विमाता को सब से अधिक सम्मान और स्नेह दिया। पिता ने रुग्ण होकर अवकाश प्राप्त कर लिया था। कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु भी हो गयी। बनारस में इनके यहां ८५ आदमियों का भोजन रोज बनता था। एक भंडारी और तीन नौकर बराबर रहते थे। संयुक्त परिवार में तीन भाइयों के परिवार, मेंड़ी व अगौना के विपन्न रिश्तेदार, श्यालक आदि तो सम्मिलित थे ही, वे गरीब विद्यार्थी भी थे, जो पूरब-पश्चिम से हिंदू विश्वविद्यालय का नाम सुनकर आ जाते उनके लिए कोट, कंबल, जूते और धोती की व्यवस्था तो शुक्लजी करते ही थे, फीस भी अपने पास से जमा करते थे।

उनका परिवार वृहद था और आमदनी थोड़ी। डेढ़ सौ वेतन और रायल्टी। दो बहनें अपनी और भाइयों की कुल नौ पुत्रियों के ब्याह का दायित्व भी सिर पर था। मालवीयजी के मना करने पर भी, घरवालों के हठ से अलवर नरेश के यहां साहित्य-सचिव का पद स्वीकार कर लिया। एक दिन नरेश ने रात बारह बजे फोन पर इनसे एक चौपाई का अर्थ पूछा। अर्थ बता दिया, किंतु रात को भी लेखन-कार्य में व्यवधान डालनेवाली सामंती-वृत्ति इन्हें

खल गयी। तुरंत दूसरी ट्रेन से काशी वापस आ गये। अलवर नरेश ने मंत्री भेजा, स्वयं जनवरी में मिलने आये, तीन हजार रुपये प्रति माह देने तक का प्रस्ताव भी रखा, किंतु जिलाधीश की शासन-सत्ता ठुकरा देनेवाला व्यक्तित्व घोर आर्थिक संकट में भी संपत्ति-सत्ता के आगे नहीं झुका। विषय बहु चर्चित हुआ। पत्नी ने पुनः आग्रह किया। 'हिंदी साहित्य के इतिहास' से कलम उठाकर उन्होंने कागज पर एक दोहा लिख पत्नी को थमा दिया—

'चीथड़े लपेटे चने चाबेंगे चौखट चढ़ि पै चाकरी न करेंगे इन चौपट चमार की '

शुक्लजी को पेड़-पौधों से बेहद लगाव था। मथुरा से करील, कदंब, उत्तराखंड से सफेद नीले-काले गुलाब, दक्षिण-पश्चिम से फूल-पौधे ला-लाकर अपने बगीचे को उस जंगल की शक्ल दी, जिसकी प्राणवायु ने इन्हें जीवन-दर्शन और काव्यादर्श दिये। शाम का उनका समय केवल फूल-पत्तियों से बात करने का होता था। बारह बिल्ली, तीन कुत्ते धोती में उलझते पीछे-पीछे। सांप इनके परिवार में मारे नहीं जाते, लिहाजा अकसर सांप भी उनके यहां घूमते नजर आ जाते थे। कदंब में पानी डालते और उससे अपना मुंह सटाकर नित्य पूछते, "का हो कदंब, तू कब बढ़वा ?"

पत्ते भी हिल-हिलकर जो उत्तर देते, उसे वे ही समझते थे। शहर से हटकर ताड़, बेल और नीबू का जंगल था। उसी के बीच इन्होंने मकान बनवाया था।

शुक्लजी के शयन-लेखन कक्ष में ही बैठकर पत्नी की पारिवारिक समस्याएं हल होतीं, और शुक्लजी समाधिस्थ लिखते रहते। बीच-बीच में व्यंग्य-विनोद में बोल पड़ते। एक दिन सूई-डोरा की खोज हो रही थी। शुक्लजी बोले, "अरे, कत्थे क भानमंती क पेटारा देखा।" पिटारा में सुई-डोरा मिल गया। कत्थे अर्थात शुक्लजी के छोटे पुत्र गोकुलचंद्र शुक्ल पिता की ही तरह तत्वग्राही थे। लोहे की उनकी जिस संदूक को शुक्लजी ने 'भानमती का पिटारा' नाम दिया था, उसी में से गोकुलचंद्र शुक्ल ने एक दिन पौने दो लाख रुपये निकालकर काशी में 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल साहित्य-शोध संस्थान' की स्थापना करवायी। आचार्य शुक्ल द्वारा प्रतिपादित शक्ति, शील और सौंदर्य का उद्घोषक प्रतीक समाज को हस्तांतरित कर दिया।

—प्रधानाचार्य
राजकीय महिला इंटर कालेज, वाराणसी

पिछले दो अंकों में पाठकों ने पढ़ा कि किस प्रकार रियासतों को भारतीय संघ में शामिल कर देश को खंड-खंड होने से बचाया गया, पंद्रह अगस्त को किस प्रकार सत्ता का हस्तांतरण हुआ और ध्वज-स्तंभ से यूनियन जैक उतार कर तिरंगा फहराया गया। यहां प्रस्तुत है डी. आर. मानकेकर के कुछ और संस्मरण

एक पत्रकार की डायरी के कुछ पृष्ठ--३

'मि. नेहरू आप सही राह पर हैं!'

◉ डी. आर. मानकेकर

द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद के कुछ वर्षों तक, युद्ध-क्षत यूरोप को पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए अमरीका द्वारा विशाल पैमाने पर किये गये प्रयासों की पश्चिम में सर्वाधिक चर्चा रही। इसके बाद भारत ने सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट किया। गांधी और नेहरू तथा भारत का स्वाधीनता-प्राप्ति का तरीका भी अंतर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बना। एक संत-राजनीतिज्ञ के नेतृत्व में हुए अहिंसक संघर्ष की परिणति के रूप में, भारतीयों ने औपनिवेशिक जुए को कंधों से उतार फेंका था। यह साम्राज्यवादी शासकों द्वारा अपनी शासित जनता को शांतिपूर्ण तथा वैधानिक सत्ता हस्तांतरण था, जो मानवता के लंबे रक्त-रंजित इतिहास में अभूतपूर्व था। अमरीका में, गांधीजी को नये ईसा के रूप में देखा गया, जिसका संदेश समयोचित तथा परमाणु बम के भय से त्रस्त विश्व की मुक्ति का एकमात्र उपाय था।

उपनिवेश के जुए को उतार फेंकने-वाले उपनिवेश-राष्ट्र के रूप में भारत अन्य उपनिवेशों के लिए आदर्श बना। इसके अतिरिक्त, यह वह भारत था जो बर्बरतापूर्ण विभाजन के घावों से उत्पन्न कठिनाइयों पर आश्चर्यजनक रूप से, तेजी से विजय पा चुका था और प्रगति करते हुए अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने लगा था।

स्वयं नेहरू ने भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति की उपलब्धि की प्रक्रिया—जिसे वह रक्तहीन-क्रांति कहते थे, का वर्णन करते हुए अनजाने ही, भारतीय आत्म-श्लाघा को बल दिया था। वह भारत के प्रभाव और प्रतिष्ठा की चर्चा बड़े गर्व के साथ किया करते थे।

अपने अद्वितीय भाषण में उन्होंने अमरीकी श्रोताओं को बताया था कि 'भारत में, हमारी ही पीढ़ी में एक ऐसा आदमी हुआ, जिसने महान प्रयासों के लिए हमें प्रेरित किया, हमेशा यह याद दिलाते हुए कि विचार और कार्यों को नैतिक सिद्धांतों से अलग नहीं किया जाना चाहिए और कि सत्य और शांति का मार्ग ही मनुष्य का सही मार्ग है।

भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति के वर्ष में ही, विश्व में शीत-युद्ध भी छिड़ गया था जिससे एक और विनाशकारी युद्ध के आसार नजर आने लगे थे।

गांधीजी के उत्तराधिकारी और निर्माण-शील भारत के निर्वाचित नेता जवाहरलाल

"मि. नेहरू, आप हमारे साथ हैं या खिलाफ ?" अमरीकी पत्रकारों ने न्यूयार्क के हवाई अड्डे पर उतरते ही पूछा, तो नेहरू ने प्रत्युत्तर में प्रहार किया, "मुझे तुम्हारे साथ या खिलाफ क्यों होना चाहिए ?"

नेहरू, युद्ध-पीड़ित विश्व के लिए ध्रुव-तारा थे। वह महात्मा गांधी की शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भाषा बोलते थे। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांतों—पंचशील का उपदेश दिया। उनकी आवाज एशिया के अन्य उपनिवेश-राष्ट्रों तथा स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए जूझ रहे अफरीका के लिए शंखनाद था।

नेहरूजी के बौद्धिक व्यक्तित्व तथा राजनीतिक दर्शन ने अमरीका के बौद्धिकों को आकर्षित किया। इसके साथ ही साथ, अपने देश को शीत-युद्ध से अलग रखने की उनकी उद्घोषणा तथा गुट-निरपेक्षता की उनकी वकालत से अमरीका के नीति-निर्धारक परेशान हो उठे।

इसी संदर्भ में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने नेहरूजी को अमरीका की यात्रा करने का निमंत्रण देने का निर्णय लिया, ताकि वह उस एशियायी नेता से आमने-सामने बातचीत कर सकें, जो तेजी से तीसरी दुनिया के जागरूक औपनिवेशिक राष्ट्रों

पत्रकारों से बातचीत करते हुए प्रधानमंत्री श्री नेहरू

का नेता बनता जा रहा था।

अमरीकी चाहते थे कि नेहरूजी को निकट से देखें, उनसे बातचीत करें, उनके दृष्टिकोण को समझें और यह निश्चित कर पाएं कि शीत-युद्ध में वह किसके पक्षधर हैं तथा क्या पश्चिमी देश उनका समर्थन प्राप्त कर सकते हैं—एक ऐसे आदमी का, जो घोषित रूप से जनतांत्रिक, उदार और कम्युनिस्ट-विरोधी है, और जिसे उन मूल्यों से भावनात्मक लगाव है, जो अमरीका को प्रिय हैं।

सन १९४९ के वसंत में स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नेहरूजी ने पहली विदेश-यात्रा की। राष्ट्रपति ट्रूमैन के निमंत्रण पर वह अमरीका गये।

प्रधानमंत्री का दल न्यूयार्क के ला गार्दिया हवाई अड्डे पर सुबह के समय उतरा। जैसे ही नेहरू हवाई जहाज से उतरे, पत्रकारों के दल ने उनका स्वागत इस प्रश्न के साथ किया, "मि. नेहरू, आप हमारे साथ हैं या खिलाफ? इस प्रश्न से व्यग्र हो नेहरूजी ने प्रत्युत्तर में प्रहार किया, "मुझे तुम्हारे साथ या तुम्हारे खिलाफ क्यों होना चाहिए? ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि मैं इन दोनों में से एक भी न होऊं?"

इस उत्तर से हमारे अमरीकी मेजबानों को, शीत-युद्ध से उपजे इस ज्वलंत मुद्दे पर नेहरू के विचारों का प्रथम संकेत मिल गया। वास्तव में, नेहरू को वाशिंगटन के निमंत्रण का प्रमुख उद्देश्य, एशिया के भूतपूर्व उपनिवेश-राष्ट्रों के नये बने गुट के इस निर्विवाद नेता को पूर्व-पश्चिम संघर्ष में पश्चिमी-शिविर में खींचना था।

इसके बाद अमरीकी पत्रकार इस एशियाई अतिथि के प्रति अपने व्यवहार में उत्साहहीन हो गये। नेहरू की उद्घोषणाओं पर अमरीकी पत्रकार और जनता

सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से गौर करने लगी।

न्यूयार्क हवाई अड्डे पर नेहरू के उस दो टूक बयान से निर्गुटता का बीजारोपण हुआ और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक ऐसी तीसरी नयी राजनीतिक स्थिति को स्पष्ट परिभाषा मिली, जो बाद में एक सकारात्मक राजनीतिक दर्शन के रूप में विकसित हुई।

कोलंबिया विश्वविद्यालय में दिये अपने दीक्षांत-भाषण में निर्गुटता के विचार को स्पष्ट करते हुए नेहरू ने अमरीका को आश्वासन दिया कि, "जब शांति या स्वतंत्रता को खतरा होगा, व्यक्ति की स्वतंत्रता या शांति पर संकट आयेगा, तब हम तटस्थ नहीं रह सकते, और न ही रहेंगे। तब तटस्थता उन मूल्यों के प्रति विश्वासघात होगा, जिनके लिए हमने संघर्ष किया था।"

भाषण की समाप्ति पर, कोलंबिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष जनरल आइजन हावर (जिन्होंने शायद तब तक राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने के बारे में सोचा भी नहीं था) ने उठकर नेहरू से बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाया और कहा, "मि. नेहरू, आप सही राह पर हैं। इस पर डटे रहिए!"

दार्शनिक लहजे से पूर्ण इस भाषण से श्रोता प्रभावित हुए, लेकिन अमरीका के नीति-निर्धारकों को इससे बड़ी निराशा हुई। वाशिंगटन इस बात से अप्रसन्न था कि नेहरू ने अमरीकी प्रस्तावों का अनुकूल उत्तर नहीं दिया। उन्हें वह इतने अभिमानी लगे कि अमरीकी सहायता के लिए भी उन्होंने नहीं कहा। दूसरी ओर संवेदनशील नेहरू ने अमरीकियों द्वारा उन्हें घेरने के तौर-तरीकों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसके विपरीत, अमरीका नेहरू के पक्ष को जानना अपना अधिकार समझ रहा था। उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं था कि एक जानतांत्रिक, उदार और कम्युनिस्ट-विरोधी होने के नाते नेहरू की विचारधारा उनसे मेल खाती थी।

अच्छे बच्चे बन जाओ तो . . .

कढ़ाई में उबाल तब आया, जब व्हाइट सल्फर स्प्रिंग्स में राष्ट्रपति ट्रूमैन के रक्षा-सचिव लुई जौनसन द्वारा एक गुप्त और विशेष भोज दिया गया। इस भोज-वार्ता में अमरीकी उद्योग और वित्त के शीर्षस्थ नेता भी सम्मिलित थे। भारतीय पत्रकारों को इसमें नहीं बुलाया गया था। भोज में सम्मिलित विशिष्ट अतिथियों की ओर इशारा करते हुए अमरीका के एक वरिष्ठ अफसर ने बड़े गर्व के साथ घोषणा की, "मि. नेहरू, इस कक्ष में अमरीका की दौलत व शक्ति एकत्रित है।"

नेहरू को इस तरह का परिचय पसंद नहीं आया और वह भोज के दौरान उदासीन रहे। उन्हें लगा कि अमरीकी दौलत और शक्ति दिखाकर अमरीकी प्रशासन जैसे कह रहा हो, 'अगर तुम अच्छे बच्चे बन जाओ, तो यह सब तुम्हारा होगा।'

न्यूयार्क के एक विशाल समारोह में लगभग दो हजार लोगों ने भोज में भाग

लिया। इसमें अमरीका के वरिष्ठ नेता शामिल थे। समारोह में नेहरू बीस मिनट देरी से पहुंचे। मंच पर जाते हुए वह बड़े थके-थके और खिन्न-से लग रहे थे। इसके बाद दूसरी गलती उन्होंने यह की कि ऐसे अवसर पर परंपरानुसार विशेष रूप से लिखित भाषण की बजाय, वह बिना किसी तैयारी के बोले। यह एक असंबद्ध भाषण था, जो बीस मिनट की बजाय चालीस मिनट तक चला। भारतीय पत्रकारों के लिये वह दोहरावों और उकताहट से भरा था। हम लोग यह सोचकर परेशान थे कि न्यूयार्क के पत्रकार नेहरूजी के इस भाषण पर न जाने कैसी टिप्पणी करेंगे।

हृदय की आवाज-जैसा भाषण

अगली सुबह मैंने पिछली रात के समारोह की रिपोर्ट देखने के लिए 'न्यूयार्क टाइम्स' खरीदा। मगर उसमें नेहरू की प्रशंसा पढ़कर मुझे काफी संतोष मिला। संवाददाता ने इसे एक नयी तरह का भाषण बताते हुए कहा कि ऐसा लग रहा था, जैसे वह कोई भाषण नहीं, बल्कि हर व्यक्ति से अंतरंग बातचीत हो। लिखित भाषण के अभ्यस्त देश में नेहरू का भाषण हृदय की आवाज-जैसा लगना अपने आप में एक अद्भुत स्वागत था।

अमरीका यात्रा में नेहरू के साथ गये पांच पत्रकारों में से एक मैं भी था। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के तत्कालीन समाचार संपादक के. रामाराव (जो बाद में नेहरूजी के पत्र 'नेशनल हैराल्ड', लखनऊ के संस्थापक-संपादक हुए), 'इंडियन एक्सप्रेस', मद्रास के प्रतिनिधि पी. डी. शर्मा, 'हिन्दू' के संयुक्त राष्ट्र स्थित संवाददाता के. बालारमन और 'ए. पी. आई.' तथा लंदन के 'राइटर' के प्रतिनिधि डी. पी. वागले भी साथ थे।

के. रामाराव मेरे पुराने दोस्त थे। नेहरू की विदेश यात्रा की पूर्व-संध्या को जब वह बंबई में मुझे मिले, तब उन्होंने मुझे प्यार से भींच लिया। दल में मेरे होने की सूचना से वह प्रसन्न थे। यह उनकी पहली विदेश-यात्रा थी और वह घबराये हुए थे। उन्होंने मुझ से वादा लिया कि उन्हीं के साथ कमरे में रहूंगा और मैंने यह वादा पूरा भी किया।

खर्राटों का किस्सा

हां, सैन फ्रेंसिस्को के होटल में पी. डी. शर्मा और मैं एक कमरे में ठहरे। पी. डी. शर्मा के खर्राटों की वजह से मैं सारी रात सो नहीं सका। सांस लेते हुए उनकी आवाज हाथी की चिंघाड़-जैसी होती और सांस छोड़ते हुए शेर की दहाड़-जैसी।

लेकिन अगले दिन मुझे ही झटका लगा, जब सुबह-सुबह पी. डी. शर्मा मेरे पास आये और शिकायत करने लगे कि मेरे खर्राटों की वजह से वह और अन्य पड़ोसी सो नहीं सके। तब मैंने और पी. डी. शर्मा ने अपना-अपना अपराध स्वीकार करते हुए आपस में समझौता किया। तभी मैंने उन्हें बताया कि खर्राटों की वजह से ही सन १९४४ में बर्मा में फौज

में मेरा कोर्ट-मार्शल होते-होते वचा था, क्योंकि मेरे खर्राटों को टोहते हुए जापानी सैनिक वहां आ गये थे।

सैन फ्रेंसिस्को के प्रेस क्लब की परंपरा के अनुसार वहां एक शनिवार को दिलचस्प समारोह हुआ। यह समारोह अनौपचारिक था और इसमें सभी पत्नकार सम्मिलित हुए, ताकि वे हल्के-फुल्के हो सकें और चुटकुले आदि सुनाकर मनोविनोद कर सकें। इसमें नेहरूजी को भी आमंत्रित किया गया। एक बौद्धिक और साहित्यिक के रूप में उनकी ख्याति वहां पहुंच गयी थी, लेकिन तब तक नेहरूजी हर दिन चार-पांच बार भाषण देकर थक चुके थे। क्लब के अध्यक्ष ने विनोदपूर्ण भाषण दिया और ऐलान किया कि आज के सारे भाषण 'ऑव दि रिकार्ड' रहेंगे। उन्होंने अतिथियों से अनुरोध किया कि वे खुले मन से बोलें और अपने पद का खयाल न करें। चूंकि, नेहरू मानसिक रूप से काफी थके हुए थे, इसलिए वह समारोह के भाषणों की भावना को नहीं समझ पाये और कह बैठे कि 'मेरे बारे में कुछ भी 'ऑव दि रिकार्ड' नहीं है, और हर कोई उसके बारे में लिखने के लिए स्वतंत्र है।'

यह एक भयंकर भूल और अपराध था। यह सुनते ही वहां एकत्रित पत्नकारों ने भारतीय अतिथियों को कोसना शुरू कर दिया और भाषण नोट करने लगे।

इसके बाद भारतीय पत्नकारों की

ओर से पी. डी. शर्मा ने बोलना शुरू किया। उन्होंने सुबह मेरे द्वारा बतायी गयी खुर्राटों और कोर्ट मार्शल की कहानी मेरी ओर इशारा करते हुए पूरी तफसील के साथ सुनायी और इस तरह सभी ने मेरी कीमत पर खुलकर ठहाके लगाये।

—सी-४४, गुलमोहर पार्क,
नयी दिल्ली-४९

अपहरणकर्त्ता ने संदेश भेजा, 'हमने आपकी सास का अपहरण कर लिया है। यदि कल शाम तक दो हजार रुपये आपने काली पहाड़ी पर नहीं पहुंचाएं, तो हम आपकी सास को वापस आपके पास भेज देंगे।'

"काम चाहे जैसा हो, यदि लगातार कोशिश की जाए तो सफलता मिलती ही है," एक साहब ने उपदेश देते हुए कहा।

"ठीक है, यदि ऐसा ही है तो कभी गलती से ज्यादा निकल आये टूथपेस्ट को वापस ट्यूब में डालने की कोशिश कर दिखाइएगा," दूसरे ने मुसकराते हुए कहा।

★

"तुम्हारा नाम?" कर्नल ने नये सैनिक से पूछा।

"सेरसिंह।"

"अब सेर, छटांक नहीं चलेगा, अपना नाम किलोसिंह रखो।"

★

"हां, मैंने अपने पति की हत्या की है," महिला ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए कहा।

"लेकिन क्यों?" अदालत ने पूछा।

"क्योंकि मैं तलाक का खर्चा बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।" —राजकुमार जैन

★

क्लर्क जब दफ्तर पहुंचा, तब उसके सिर और हाथ-पैर पर चोटें थीं। उसे देखते ही बॉस ने गरजकर पूछा, "तुम एक घंटा देरी से क्यों आये हो?"

"सर, मैं चौथी मंजिल की सीढ़ियों से फिसलकर गिर पड़ा था।"

"तो इसमें तुम्हें एक घंटे का समय लग गया?" बॉस ने गुस्से में कहा।

★

"तुम्हारी पत्नी तो बहुत ठिगनी है, यार!"

"हां, लेकिन ठीक ही है। हमारे बुजुर्गों ने कहा है कि मुसीबत जितनी छोटी हो, उतना ही अच्छा।"

★

पाठशाला में गणित की अध्यापिका ने छात्राओं से पूछा, "बताओ, किसी व्यक्ति का जन्म १९५५ में हुआ है, तो इस समय उसकी उम्र क्या होगी?"

"पहले यह बताइए कि वह व्यक्ति पुरुष है या स्त्री?" एक छात्रा ने खड़े होकर प्रश्न किया। —अशोक श्रीश्रीमाल

लक्ष्मी

"तुम मेरे हृदय में ही रहोगी"
"उदास न हो.
रहो प्रिय... रहो... सदा
जेबों के पास रहो"

संदेश

दीवाली की रात
लक्ष्मी, गृहलक्ष्मी को बताती है
वह अपने वाहन को
उल्लू (कैसे) बनाती है !

सशंक

उनकी आंखों के पास
काजल का क्रॉस देखकर
उन्हें खटका है...
क्रॉस पर कोई
मसीहा लटका है

बेरुखी

उनकी शराब छलकाती आंखों में
बेरुखी देखकर बोले वे
"आज यहां भी ड्राई-डे ?"

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

होटल मैनेजर नये रखे नौकर को डांटते हुए बोले, "अरे, तुमने अभी तक कैबिन की सफाई भी नहीं की ?"

"साहब ! मिठाइयों की तो सफाई कर दी है, अब नमकीन बची है, उसकी अभी कर देता हूं !" नये नौकर ने मासूमियत से कहा।

—बाबूलाल सखलेचा 'रवि'

★

तू हमेशा सत्ता-पक्ष की तरह मुझे बर्दाश्त नहीं करती, हमेशा मेरे चले जाने की कामना करती है।" सास ने बहू को डांटते हुए कहा।

"तुम भी तो विरोधी-पक्ष की तरह हमेशा मेरी गलतियां ही निकालती रहती हो। कितना भी अच्छा काम कर दूं, कभी प्रशंसा नहीं करती हो।" —पुष्पा पंत

★

एक व्यक्ति साठ रुपये का कर्जदार था। लेनदार ने बीच राह में टोका तो उसने कहा, "देखो, बीस रुपये मैं कल दूंगा और अड़तीस रुपये परसों, बाकी कितने रहे ?"

"दो रुपये।"

"सिर्फ दो रुपये के लिए किसी भले आदमी को रास्ते में टोकना शोभा नहीं देता। यह लो अपने दो रुपये।" और उसने दो रुपये पकड़ाकर अपनी राह ली।

—अशोक आनंद
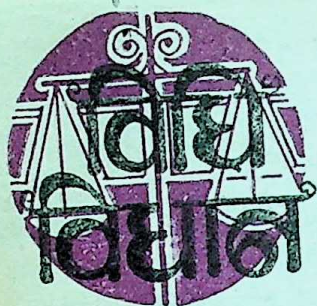
कृष्णनंदन प्रसाद, गांव-असोई : हम तीन भाई हैं। पिताजी मर चुके हैं। मां जीवित हैं। हमारा बंटवारा १९७२ में हो चुका है। दोनों भाई मां को मारते-पीटते हैं, टांग काट देने व जान से मार देने की धमकी देते हैं और उससे रुपये पैसे छीन लेते हैं। मां सारी जायदाद मुझे देना चाहती है। बताइए मैं क्या करूं? जायदाद अपने नाम कराऊं या पत्नी के?

पहले तो आप पुलिस में प्रथम सूचना (रपट) लिखवायें, जिससे आपकी मां के जीवन की सुरक्षा हो सके व धमकी देनेवाले आपके दोनों भाइयों को भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत दंड मिल सके।

मां अपनी संपत्ति आपको दे या आपकी पत्नी को, यह निर्णय तो आपके परिवार को करना है, लेकिन यह अवश्य देख लें कि मां को संपत्ति हस्तांतरित करने का अधिकार है भी या नहीं?

अनबन पति-पत्नी में

अवधनारायण वर्मा, देवरिया : ढ़ाई साल पहले मेरी पत्नी और तीन बच्चों को मेरे सास-ससुर लिवा ले गये। बाद में उन्होंने मुझे यह कहकर कि मेरे और मेरी पत्नी के बीच अनबन रहती है, पत्नी व बच्चों को भेजने से इंकार कर दिया। मैं हर तरह से उन्हें समझा चुका, लेकिन वे मानते ही नहीं। बताइए मैं क्या करूं?

पहले तो आपको अपने सास-ससुर व पत्नी तथा स्वयं के आचरण की कमियों को खोजना चाहिए कि ऐसा क्यों है। वैवाहिक तथा पारिवारिक संबंधों को कानून से अधिक सामाजिक धरातल पर सुलझाना आपके हित में होगा। यदि समस्या किसी भी तरह न सुलझे, तब आप चाहें तो हिंदू विवाह अधिनियम की धारा-९ के अंतर्गत दांपत्य अधिकारों के पुर्नस्थापन हेतु या उसी अधिनियम की धारा-१३ के अंतर्गत संबंध-विच्छेद (तलाक) के लिए आवेदन कर सकते हैं।

शर्त पंच फैसले की

रजनीशकुमार कलकत्ता : हम तीन मित्रों ने मिलकर एक फर्म शुरू की थी, जो तीन वर्ष तक चलती रही। अब हम लोगों में झगड़ा पड़ गया है और एक साथी ने अदालत में दावा कर दिया है। जबकि हमारे लिखित साझेनामे में यह शर्त थी कि

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

झगड़े की हालत में फैसला पंच से कराया जाएगा। क्या उसका अदालत में दावा करना न्यायसंगत है? क्या हम अपना मामला पंच फैसले के लिए भेज सकते हैं?

भारतीय मध्यस्थता अधिनियम की धारा–३४ के अंतर्गत न्यायालय में आवेदन दिया जा सकता है। आप न्यायालय में पहली पेशी पर मध्यस्थता अधिनियम की धारा–३४ के अंतर्गत आवेदन कर सकते हैं कि साझेनामे की लिखित शर्त के अनुसार मामले को पंच फैसले के लिए भेजा जाए। न्यायालय आपके आवेदन पर विचार करके मामला पंच फैसले के लिए भेजने का आदेश दे सकता है, और मुकदमे की कार्यवाही रोक सकता है। यह आपको पहली ही पेशी पर करना होगा, अन्यथा मुकदमे की कार्यवाही में भाग ले लेने के बाद फिर आप धारा–३४ का आवेदन नहीं दे सकते। दावे का जवाब देने के लिए अन्य तिथि मांगना भी मुकदमे में भाग लेना ही माना जाएगा। इस संदर्भ में कलकत्ता उच्च न्यायालय के मान्य न्यायाधीश श्री सुरेन्द्रमोहन गुहा द्वारा वाद संख्या–१२३२, वर्ष १९८० में दिया गया निर्णय उल्लेखनीय है।

परवरिश खर्च लेना है

एस. के. शर्मा, तिबारा: मैं तीस वर्षीय, शादीशुदा, अध्यापक हूं। मेरे पिता एक पुलिस अफसर हैं, जो गत पंद्रह वर्षों से एक अन्य शादीशुदा औरत के साथ अपना निजी मकान बनवाकर रह रहे हैं। उस औरत से पिताजी को कोई संतान नहीं है। पिताजी दो साल बाद रिटायर हो जाएंगे। पिताजी ने पंद्रह वर्ष से हमारे पास आना-जाना और घर का खर्च देना बंद कर रखा है। हम तीन भाई व दो बहनें हैं। सबसे बड़ा मैं हूं। हमारे पालन-पोषण व पढ़ाई-लिखाई में निजी संपत्ति खत्म हो गयी है और हम पांच हजार के कर्जदार हो गये हैं। बहनें शादी लायक हो गयी हैं। पिताजी से बहनों की शादी के बारे में बात की तो उन्होंने मदद करने से साफ इंकार कर दिया। क्या ऐसा कोई कानून है, जिसके द्वारा हमें पिताजी से आर्थिक मदद मिल सके।

रामप्रकाश गुप्त

अपनी पत्नी व बच्चों की परवरिश करने का उत्तरदायित्व आपके पिताजी का है। इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न करने के कारण आपकी मां अपने पति से तथा छोटे भाई-बहन अपने पिता से भरण-पोषण हेतु खर्चे की मांग कर सकते हैं। इस हेतु न्यायालय में वाद प्रस्तुत किया जा सकता है। परिवार द्वारा आवश्यकता के लिए किये गये कर्जे की रकम को भी लेनदार आपके पिताजी से वसूल करने की कार्यवाही कर सकते हैं—कर्ज की अदायगी के उत्तरदायित्व से वे कानूनन नहीं बच सकते।

संरक्षण बच्चे का

गोपीलाल शर्मा, देवकर, दुर्ग : मेरी पुत्रवधू ने जलकर आत्महत्या कर ली। उसके पिता ने बदले की भावना से मेरे पुत्र पर धारा–३०२ कायम करा कर उसे गिरफ्तार करा दिया। मामला सैशन कोर्ट में चल रहा है। घटनावाले दिन ही पुत्र-वधू के पिता मेरे नौ माह के नाती को उठाकर ले गये और अब वे उसे लौटा नहीं रहे, जबकि उनके पास बच्चे को पालने की उचित व्यवस्था नहीं है। क्या मैं बच्चे को कानूनन प्राप्त कर सकता हूं ?

साधारणतया बच्चे के प्राकृतिक संरक्षक उसके माता-पिता होते हैं। दुर्भाग्य से एक दुनिया में नहीं है, और दूसरा जेल में है। बच्चे का संरक्षक नियुक्त करने में बच्चे के हित का सर्वोपरि ध्यान रखा जाता है। पुत्रवधू का आपके घर में जलकर मरना, बेटे पर धारा–३०२ के अंतर्गत मुकदमा चलना—आपके संरक्षक बनने के मार्ग में बाधक है। फिर आपकी पत्नी भी दूसरी है, जो निस्संतान है। अतः उनका उस बच्चे से कितना लगाव होगा, यह भी संदेहास्पद है। फिर भी आप संरक्षक तथा प्रतिपालित अधिनियम —१८९० के अंतर्गत न्यायालय में आवेदन देकर अपना भाग्य आजमा सकते हैं।

मकान किराया भत्ता

क. ख. ग., दिल्ली : किसी सरकारी कर्मचारी को रहने के लिए मकान न दिए जाने की स्थिति में क्या वह मकान किराये भत्ते की मांग कर सकता है?

सरकारी मकान प्राप्त करने के योग्य सरकारी कर्मचारी मकान किराये भत्ते की मांग मूलभूत नियम के परिशिष्ट-सी के नियम–४ के अंतर्गत कर सकता है। उक्त नियम में वर्णित शर्तों के पूरा होने की स्थिति में मकान किराया भत्ता दिया जा सकता है।

मुकदमे की फिर से सुनवाई

सांवरमल, उटकमंड : हमारा एक मुकदमा दाखिल दफ्तर हो गया। कारण—मैं बीमारी के कारण, और वकील साहब अन्य किसी अदालत में व्यस्त होने के कारण सुनवाई के समय उपस्थित नहीं हो सके थे। मुकदमा दोबारा चालू करने का आवेदन दिया। न्यायालय ने कुछ खर्चा लगाकर मुकदमा दोबारा सुनने की अनुमति दे दी। अगली तारीख की मुझे सूचना नहीं मिल सकी और अदालत ने खर्चा न दिये जाने के कारण हमारी दरखास्त भी दाखिल दफ्तर कर दी। क्या मैं अब फिर मुकदमे की सुनवायी करवा सकता हूं ?

आप दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश—४७, नियम–१ के अंतर्गत पुनर्विचार-याचिका प्रस्तुत कर सकते हैं। इसमें आप खर्चा देने का समय बढ़ाने तथा मुकदमा पुनः चालू करने का निवेदन भी कर सकते हैं। इस संदर्भ में मद्रास उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति गोकुल कृष्णन द्वारा दीवानी पुनर्विचार याचिका —३५०, वर्ष १९८१ में दिनांक २५–९–१९८१ को दिया गया निर्णय उल्लेखनीय है। ●

आज के युवा जागरूक हैं!

परिचर्चा : वेदप्रकाश दुबे

युवा और आक्रोश का संबंध बहुत पुराना है । आज की जिंदगी हर तरफ से टूट रही है, मूल्य बिखरते जा रहे हैं; व्यक्ति, परिवार, समाज सभी अपने होने का अर्थ खोते जा रहे हैं। ऐसे में बहुत-कुछ मन में उबलता है । युवा पीढ़ी इन ज्वलंत संदर्भों में कहां तक जुड़ी है, कहां तक वह अपने आक्रोश को सही रूप दे पा रही है—इस पर हमने कुछ युवक-युवतियों से बात की। प्रस्तुत है उन्हीं के शब्दों में उनका आक्रोश—

युवकों को गैर-जिम्मेदार समझा जाता है —साधना

राजनीति-शास्त्र में एम. ए. साधना आजकल अन्नामलय विश्वविद्यालय से बी. एड. कर रही हैं। विनम्र एवं चिंतन-शील व्यक्तित्व-संपन्न साधना का कहना है—'असल में आक्रोश इसलिए है कि आज युवक व युवतियों को गैर-जिम्मेदार समझा जा रहा है । समाज उन पर गलत परंपराओं को भी लादना चाहता है।

'सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज सास-बहू को लेकर जारी द्वंद्व की वजह से पारिवारिक-जीवन कष्टप्रद होता जा रहा है। मेरा तो कहना यह है कि आज की सास मां नहीं बन सकती और आज की बहू बेटी नहीं बन सकती। आज घर की भावना का लोप हो गया है। सब कहीं स्वार्थ है। युवा वर्ग आज बेहद टूटन का शिकार है, जिसके कारण वह तनाव से जूझ रहा है।

दूसरे, समाज का आर्थिक ढांचा भी

जर्जर है, इसकी वजह से भी आक्रोश पैदा होता है। समाज के कुछ नियम ऐसे भी हैं, जो तोड़े नहीं जा सकते, लेकिन आज का युवा-वर्ग इनको तोड़ रहा है। विवाह के ही क्षेत्र में लीजिए! प्रेम-विवाह हो रहे हैं, लेकिन वे कितने सफल हो पाते हैं? दरअसल, आज की लड़कियों में ज्यादा पढ़ लेने से घमंड आ जाता है, ग्रौर यह घमंड ही घर का नाश करता है।

'जो युवक दहेज मांगते हैं, उन्हें देखते ही क्रोध चढ़ आता है। मैं ऐसे युवक से हरगिज विवाह नहीं करूंगी। हां, विवाह मैं माता-पिता की पसंद से ही करूंगी।

'एक ग्रौर अन्य कारण की वजह से गुस्सा आता है, वह है—भाषा। आज ग्रंगरेजी बोलनेवालों को सम्मान अधिक दिया जाता है, चाहे उन्हें ज्ञान के नाम पर कुछ भी न आता हो। ऐसे लोग जो आज चार शब्द ग्रंगरेजी के बोल लेते हैं, ग्रौर खुद को बेहद 'स्मार्ट' समझते हैं, असलियत में खोखले होते हैं।

'आज हमें युवाग्रों में आक्रोश को सही आकार देना होगा, लेकिन गलतियों का विरोध करते हुए।'

प्रेम और विवाह दोनों अलग-अलग हैं

—नीलम भटनागर

नीलम भटनागर ने दिल्ली विश्वविद्यालय से पत्रकारिता विषय लेकर एम. ए. हिंदी में पास किया है। आक्रोश की बात करते ही बोलीं—'मन में इतना आक्रोश भरा पड़ा है कि चाहती हूं आग लगा दूं। आज की सबसे बड़ी बुराई जिसकी वजह से मन में आग-सी सुलगती है, वह है लोगों द्वारा गलत निगाह से देखना व शक करना। लड़की अगर किसी लड़के से बात करे, तो उसे गलत निगाहों से देखा जाता है। पुराने ढर्रे, पुरानी मान्यतायों का यह दृष्टिकोण समाज को तोड़े डाल रहा है।

'बीसवीं शताब्दी में क्या लड़की की कोई 'वैल्यू' नहीं है? आज उसे जलाया जा रहा है, मारा जा रहा है ग्रौर इसके विरोध में कहीं कुछ भी नहीं हो रहा। आज जरूरत इस बात की है कि ऐसे लोगों को चुन-चुनकर पकड़ा जाए ग्रौर उन्हें सरेआम कोड़े लगाये जाएं, ताकि कोई दूसरा ऐसा दुस्साहस न कर सके। इस दिशा में हम लड़कियों को भी उचित कदम उठाना चाहिए, इसका डटकर विरोध भी करें।

जहां तक सवाल है विवाह का, मैं प्रेम-विवाह को पसंद नहीं करती, क्योंकि प्रेम ग्रौर विवाह दोनों अलग-अलग चीजें हैं। प्रेम कभी भी, कहीं भी, किसी से हो सकता है, उसका विवाह से कोई मतलब नहीं। मैं विवाह माता-पिता की अनुमति से ही करूंगी। मेरे मन में उन युवा लोगों को लेकर बहुत आक्रोश है, जो आज प्रेम के नाम पर उच्छृंखलता बरत रहे हैं। आधुनिकता के नाम पर आज जो कुछ

भी उल्टा-सीधा हो रहा है, उससे तो मन बस तड़प ही उठता है। और तो और आजकल अधेड़ उम्रवाली मानसिकता के लोग भी भूल गये हैं, उनके भी बहू-बेटियां हैं। ऐसा लगता है कि समूचा समाज ही गंदी राह की ओर निकल पड़ा है। पता नहीं हम कहां जायेंगे? कहां पहुंचेंगे?'

गलत बात का रचनात्मक विरोध नहीं किया जाता

—अशोक अवस्थी

गंभीर प्रवृत्ति के अशोक अवस्थी बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के साथ एम. काम. कर रहे हैं। उनका कहना है—'आक्रोश मेरी दृष्टि से सही समझ न होने की वजह से होता है। आज युवा-वर्ग के साथ किसी भी क्षेत्र में संवाद की स्थिति नहीं बन पा रही है, जबकि युवक बहुत कुछ अपनी बात कहना चाहता है, पर मजबूरी में उसे चुप रहना पड़ता है। परिणामतः उसके मन में से आक्रोश का लावा फूट निकलता है। शिक्षा, सामाजिक-मूल्य व परंपराएं आदि आज उनके लिए सहायक नहीं, अपितु बाधक सिद्ध हो रही हैं। ऐसे में मन करता है कि सब कुछ बदल डालें, खत्म कर दें, लेकिन करें तो कैसे करें? मन की मन में हीं रह जाती है।

'युवा वर्ग भी कुछ हद तक दोषी है क्योंकि वह गलत बात का कभी भी कोई रचनात्मक विरोध नहीं करता। इस कारण उसका और भी अधिक शोषण होता है। यदि युवा वर्ग कमर कसकर उठ खड़ा हो, तो निस्संदेह स्थिति बदल सकती है।

'हमें आज अंधानुकरण छोड़ना होगा, ताकि हम अपनी बनायी नयी जमीन पर खड़े हो सकें। विदेशी जमीनों की तरफ देख-देखकर हम आज पंगु होते जा रहे हैं। दूसरे, समाज से हमें जुड़ना होगा ताकि, हम समाज में अजनबी बनकर न जियें।

'मैं कभी-कभी विरोध का स्वर भी उठाता हूं, तो वह दब जाता है, क्योंकि मेरे साथी ही मेरा मजाक उड़ाते हैं। ऐसे में आप ही बताइए, आक्रोश कैसे रचनात्मक स्वरूप प्राप्त कर सकता है?

'मैं प्रेम-विवाह को मान्यता देता हूं, क्योंकि प्रेम-विवाह से ही दहेज की समस्या से छुटकारा तथा परिवारों को टूटने से बचाया जा सकता है।'

युवा-वर्ग नपुंसक होता जा रहा है

—भूपेश मंगला

भूपेश मंगला, जो एक जुझारू किस्म का व्यक्तित्व रखते हैं, का कहना है—'आज युवा नपुंसक होता जा रहा है। आये-दिन समाचार-पत्रों में घटनाएं छपती हैं, और सब कुछ जानकर भी युवा-वर्ग आवाज नहीं उठाता। इसलिए, मैं तो यही कहूंगा, युवा-वर्ग खुद दोषी है, क्योंकि जब उसे

मालूम है कि उसका शोषण हो रहा है, उसे गलत शिक्षा, गलत मूल्य मिल रहे हैं, तब वह इनका विरोध क्यों नहीं करता ?

'मुझे तो जब विरोध करना होता है, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों में लिख भेजता हूं। और तो और, युवकों को संगठितकर विरोध व प्रदर्शन करने का प्रयास भी करता हूं, लेकिन दुःख इस बात का है मुझे युवकों का आपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाता।

'मैं समाज में आमूल परिवर्तन चाहता हूं। क्योंकि आमूल परिवर्तन द्वारा ही हम हजारों साल पुरानी सड़ी-गली परंपराओं को त्यागकर एक नया समाज बना सकेंगे। आजकल पश्चिमी मूल्यों की नकल के कारण हमारी जिंदगी अपनी नहीं रही। लगता है—जैसे उधार के माल पर हम सब जी रहे हैं। इसलिए हमें कुछ अपना तलाश करना है ताकि हम अपने दायरों में अपने अनुसार जी सकें। युवा-वर्ग को आज संकल्प करके उठ खड़ा होना होगा तभी कुछ हो सकेगा।'

दोषी युवा नहीं, उनके मां-बाप हैं

—उपेन्द्रकुमार

उपेन्द्र कुमार राष्ट्रीय नाट्य-विद्यालय से अभिनय का प्रशिक्षण पूरा कर चुके हैं। उपेंद्र का कहना है —'मैं रंगमंच से जुड़ा हूं और यह क्षेत्र जितना मोहक है उतना [illegible] इसकी कटुता ने मन में आग भर दी है। रंगमंच को आज यहां के पुराने लोगों की दोरंगी नीति ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। एक

आयोजक

कलाकार से काम खूब लिया जाता है, लेकिन पैसा बहुत कम या फिर दिया ही नहीं जाता।

'जहां तक विरोध का प्रश्न है, कलाकार खुद ही विरोध नहीं करते, तो दूसरों को क्या पड़ी है ? दूसरे थियेटर व रंगमंच के कलाकार को फिल्मों में जाने से रोका जाता है। एक तो आप पैसा न दें, शोषण करें, और यदि हम फिल्मों में जाना चाहें तो जाने न दिया जाए, यह कहां का न्याय है ?

समाज व माता-पिता का सही मार्गदर्शन न मिल पाने की वजह से आज हम युवा अगर कोई गलती कर बैठते हैं, तो इसमें दोष हमारा नहीं है, दोष बुजुर्ग पीढ़ी का है। आक्रोश की स्थिति में यदि युवा तोड़-फोड़ करता भी है, तो तनाव दूर करने के लिए न कि जानबूझकर।

मैं तो यह कहना चाहूंगा पहले समाज के बड़े-बूढ़ों को अपने आपको बदलना होगा, नहीं तो युवा आक्रोश के सम्मुख एक दिन उन्हें झुकना ही पड़ेगा, क्योंकि आज का युवा जागरूक होने की ओर अग्रसर है।'

—३११/५, आर. के. पुरम, नयी दिल्ली

ज्योतिष
आपकी समस्याओं का निदान

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि–५ का उत्तर यदि इस अंक में न मिले तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि भेजिए।
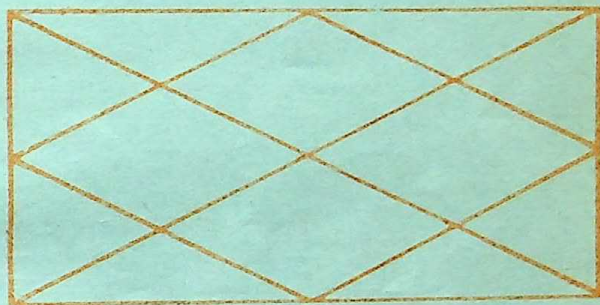
.... यहां से काटिए ....

नाम ....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) .... महीना .... सन ......

जन्म-स्थान .... जन्म-समय, ...

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ....

पता ....

आपका एक प्रश्न ....

....

.... यहां से काटिए ....

इस पते को ही काटकर लिफाफे पर चिपकाएं

....

संपादक (ज्योतिष विभाग –प्रविष्टि–७), 'कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८–२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

ज्योतिष समस्या और समाधान

५

'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ--'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान'--का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक--पांच के लिए हमें काफी संख्या में पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, चंडीगढ़ के सुपरिचित ज्योतिषाचार्य आचार्य डॉ. कुसुम

उमाशंकर मिश्र, सारणी, वैतूल (म.प्र.)

प्रश्न : बच्चे की बीमारी कब तक रहेगी ?

उत्तर : जन्म-कुंडली के अनुसार, बालक का ग्रह-योग बहुत ही क्रूर है। अतः २२ वर्ष तक बालक के अस्वस्थ रहने का ही योग है। शनि, राहु, मंगल एवं केतु आदि ग्रह एकदम प्रतिकूल हैं।

जीवन मेहता, अल्मोड़ा

प्रश्न : धन ऐश्वर्य एवं वाहन लाभ कब होगा ?

उत्तर : उपरोक्त लिखित लाभ आप कुछ प्राप्त कर चुके हैं। शेष ५२ वर्ष की आयु के बाद मिलेगा, क्योंकि गुरु ग्रह विशेष अच्छा है, इसलिए भी।

उमेश खंडेलवाल, जयपुर

प्रश्न : मैं डॉक्टर हूं, विदेश जाने का योग कब का है ?

उत्तर : आपकी जन्म-कुंडली के अनुसार आपके विदेश जाने का पूर्ण योग १९८५ में है। इससे पूर्व भी एक योग टल चुका है।

जगदीश प्रसाद, कलकत्ता

प्रश्न : मेरी आर्थिक स्थिति के सुदृढ़ होने एवं पुत्र प्राप्ति की संभावना कब है ?

उत्तर : दोनों ही बातों में सूर्य एवं मंगल अवरोधक हैं, फिर भी १९८४ तक दोनों प्रकार से सफलता की पूर्ण संभावना की जा सकती है।

योगेन्द्रगुप्त, अलीगढ़

प्रश्न : मैं रक्त-कैंसर से पीड़ित हूं। अतः मेरे स्वास्थ्य एवं आयु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार आपको शनि, मंगल एवं केतु शुभ नहीं हैं। अतः २-४-८५ तक स्वास्थ्य खराब

ही रहेगा। आयु मध्यम है।

बालकृष्ण केशवराव वैद्य, इंदौर

प्रश्न : अधिक धन कब मिलेगा तथा कर-भार से मुक्ति कब मिलेगी ?

उत्तर—आपके ग्रह-योग के अनुसार तो आप काफी दिनों से परेशान चल रहे हैं, क्योंकि सूर्य, मंगल, केतु, शनि आदि ग्रह प्रतिकूल हैं। १९८५ से आर्थिक लाभ भी होने लगेगा तथा कर-मुक्ति भी।

धर्मानन्द शर्मा, काठमाण्डू (नेपाल)

प्रश्न : शादी कब तक होगी ?

उत्तर : आपकी जन्म-कुंडली के अनुसार शनि एवं सूर्य ही विवाह में कुछ बाधक हैं। १९८३ के अंत तक विवाह हो जाने का पूर्ण योग है।

मायादेवी श्रीवास्तव, रायपुर (म. प्र.)

प्रश्न : राजनीतिक दृष्टि से मेरा सर्वोत्कृष्ट समय कब है ?

उत्तर : आपके ग्रहों के योगायोग के विचार से राजनीतिक दृष्टि से आपका सर्वोत्कृष्ट समय १९८४ एवं १९८५ का रहेगा। भली प्रकार इस अच्छे समय का सदुपयोग करें।

कु. मधुलिका सिन्हा, भागलपुर

प्रश्न : क्या मेरा विवाह किसी उच्च प्रशासकीय अधिकारी से हो सकेगा ?

उत्तर : यद्यपि आप का ग्रह-योग उत्तम है। आपकी जन्म-कुंडली के अनुसार लग्नस्थ चंद्र एवं सप्तमस्थ गुरु सभी प्रकार से योग्य पति मिलने के द्योतक हैं। किंतु यह कहना कि प्रशासकीय विभाग का ही अधिकारी मिलेगा, कल्पना के मोदक खिलाना होगा। १९८३ के अंत तक विवाह-योग है।

ललित बी. कांडपाल, नैनीताल

प्रश्न : विवाह कब होगा ? होगा भी या नहीं ?

उत्तर : आपके योग के अनुसार केतु एवं नीचस्थ गुरु विवाह में कुछ अवरोधक रहे हैं। १९८४ में विवाह का पूर्ण योग है, निराशा से बचें।

नवीन कुमार उपाध्याय, मंदसौर (म.प्र.)

प्रश्न : भाग्योदय कब से होगा ?

उत्तर : आपके ग्रहों के योगायोग के अनुसार १९८३ से ही आपका भाग्योदय हो जाएगा।

सुबोध कुमारी, रतनगढ़ (राजस्थान)

प्रश्न : मेरा दांपत्य जीवन कब से सुखी होगा ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार आप मंगली हैं। मंगल सप्तम भावगत है एवं चंद्र अष्टम भावगत। अतः दांपत्य जीवन सामान्य मतभेदपूर्ण रहेगा ही।

दिनेशकुमार गुप्ता, रीवा

प्रश्न : क्या मैं नौकरी ही करूंगा अथवा व्यवसाय का भी मौका मिलेगा ?

उत्तर : आपकी जन्म-कुंडली के अनुसार आप नौकरी में ही अच्छे रहेंगे। स्वतंत्र व्यवसाय में नहीं। क्योंकि मंगल एवं राहु आदि ग्रह व्यवसाय हेतु प्रतिकूल हैं।

तुलजा श्रीवास्तव, सागर

प्रश्न : क्या विवाह का योग है?

यदि है तो कब तक ?

उत्तर : आपकी जन्म-कुंडली के अनुसार शनि, सूर्य एवं केतु आपका शीघ्र विवाह होने में अवरोध पैदा करते हैं। तब भी आपके २७वें वर्ष में विवाह का पूर्ण योग बनता है। सप्तम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि है, अतः योग्य पति अवश्य मिलेगा। किंतु विशेष संपन्न नहीं।

श्रीमती विमला श्रीवास्तव, सीतापुर

प्रश्न : नौकरी से संबंधित मुकदमे में मेरी विजय होगी या नहीं ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार नवंबर १९८२ से ही कुछ अनुकूल समय प्रारंभ हो जाएगा। अतः नौकरी से संबंधित मुकदमे में आपको विजय मिलेगी। क्योंकि इसी नवंबर से आपका प्रतिकूल शनि अनुकूल हो जाएगा।

संजय निरौला, नेपाल

प्रश्न : जीवन में उन्नति करने के लिए मुझे क्या करना पड़ेगा, मैं कहां तक पढ़ सकता हूं ?

उत्तर : ग्रह-योग के अनुसार आप अस्थिर मति हैं। क्योंकि चंद्र एवं राहु शुभ नहीं हैं, इसलिए आपको मोती एवं गोमेद अवश्य धारण करने चाहिएं, इनसे लाभ होगा। वैसे आपको उच्च शिक्षा प्राप्ति का योग है।

सुधाकर स्वरूप शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : क्या आगामी वर्ष में विदेश जाना संभव है ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार, आपको १९८३ में विदेशयात्रा का योग इसलिए भी बनता है कि चलित कुंडली के अनुसार, आपके लिए शनि, राहु, गुरु आदि ग्रह शुभ हैं।

मूल कुंवर रांका, जोधपुर

प्रश्न : वर्षों से सिरदर्द रहता है, यह कब तक ठीक होगा ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार, यह आपको १९८३ के अंत तक रहेगा। इसके लिए माणिक दो रत्ती तथा गोमेद पांच रत्ती पहनें। स्नान के बाद प्रतिदिन सूर्य को जल दें, अवश्य लाभ होगा !

कु. मीरा चतुर्वेदी, आगरा

प्रश्न : प्लूरिसी की गंभीर बीमारी कब समाप्त होगी ?

उत्तर : आपकी कुंडली के अनुसार आपको चंद्र, मंगल एवं शुक्र शुभ नहीं हैं। ऐसा १९८४ तक रहेगा। १९८५ से राहत मिलेगी। मोती एवं मूंगा पहन लें। इससे लाभ होगा।

हिमांशु शेखर अग्रवाल, औरंगाबाद (बि.)

प्रश्न : क्या मुझे धन की प्राप्ति होगी ? हां, तो कब और कहां से ?

उत्तर : आपकी जन्म-कुंडली के ग्रह-योग में १९८३ एवं १९८४ में आपको धन-प्राप्ति का योग है। कहां से, कैसे, यह नहीं कहा जा सकता है।

नि. नि. शर्मा, ग्वालियर

प्रश्न : वर्तमान नौकरी में परिवर्तन या पदोन्नति कब होगी ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार पिछले तीन वर्ष बहुत खराब रहे हैं। नौकरी में पदोन्नति का योग १९८४ में है।

—३१४३, सेक्टर ३७-डी, चंडीगढ़

इस बार प्रवेश के माध्यम से पाठकों के सम्मुख हम प्रस्तुत कर रहे हैं एक कवयित्री को, उनका नाम है—रेणु राजवंशी। इनकी कविताएं पढ़ने के बाद हमें लगा कि इनकी रचनाओं में आत्मीय क्षणों को सहेजने के प्रयास के साथ-साथ सामाजिक जीवन की विसंगतियों को और उनसे जूझते युवा मन को एक सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। प्रस्तुत हैं इनकी चार रचनाएं—संपादक

फुटपाथ

सड़क के किनारे
फुटपाथ पर खड़ी हूं मैं
विदेशी हवा का झोंका
अभी-अभी टकराकर गया है
एक शीत उष्णता लिये . . .
भागती जिंदगी-सी कारें
सनसनाती हुई दौड़ रही हैं
त्रस्त व्यस्तता का शोर लिये . . .
परिवेश के अश्लील वस्त्र
शालीनता की संज्ञा लिये लहरा रहे हैं
सेंट मिश्रित अपरिचित गंध लिये . . .
गगन-चुंबी गर्वीली इमारतों से घिरी
मैं पैरों तले कूड़े के ढेर देख रही हूं
समानता / विषमता की राह पर कहां
हूं मैं
विदेशी भूमि पर
या भारत के फुटपाथ पर

समानांतर

शरीर में कहीं कांटें उग आये हैं . . .
अपना अस्तित्व टटोलते हृदय को
इनकी चुभन से
लहू-लुहान होते देखा है
कांटों की जड़ें गहरी जम रही हैं
अस्थि के कठोर तल पर
कोमल त्वचा के शीर्ष पर
इस चुभन की
असहनीय पीड़ा से
छटपटाती आत्मा का रक्त
बहकर तुम तक फैल जाएगा
तुम आये भी तो—
कांटों से बिंधा तन-मन
पहचान नहीं पाओगे
अशेष होते इस जीवन में . . .
तुम्हारा आगमन
मेरा गमन
कहीं समानांतर तो नहीं होगा

पतझड़

अविश्वासी मौसम ने
प्रियतमा हवा की
कौमार्य भावना को
आहत कर
पागल कर दिया है

इस पेड़ से उस पेड़ तक टकराती
अपने ही श्वास से सींचे हुए
शिशु पल्लव को
चोट करती हुई
भूमि के गर्त में
अनंतकाल के लिए
सिसकने की सजा दे रही है

रंगहीन

दल बदलते-बदलते
राजनीति का रंग बदरंग हो गया है
स्वार्थलोलुप सत्ताधारियों के गिरगिट
स्वभाव से
जनता रंगहीन हो गयी है
अब किसी रंग की
निश्चत पहचान नहीं रही
आश्वासन की पीली रौशनी में
कालिमा ही नजर आती है

—रेणु राजवंशी
अपार्टमेंट ए-२, १३४६ फॉल्कराँड स्ट्रीट,
फिलाडेल्फिया पेंसिल्वेनिया-१९१२४
(अमरीका)

आत्म कथ्य

जन्म—२० अक्टूबर, १९५७। संप्रति: अंगरेजी साहित्य की शोध-छात्रा।

कविता मेरी अंतरंग मित्र है। मेरा प्रयास मात्र आत्मीय क्षणों को सहेजना ही है। भारत में एवं वर्तमान में यहां दिनचर्या के अव्यवस्थित खंडों का संचयन ही नियति बन गयी है। संघर्ष की ज्वाला में स्व-अस्तित्व की रक्षा हेतु लेखन व अध्ययन का अवलंबन।

यह महीना और आपका भविष्य

● प्रो. के. ए. दुबे पद्मेश

ग्रह-स्थिति : सूर्य, बुध, शुक्र कन्या में, राहु मिथुन में, केतु धनु में, गुरु तुला में, मंगल वृश्चिक में, ६ से शनि तुला में, १७ से सूर्य तुला में, २० से शुक्र तुला में, २३ से मंगल धनु में, ३० से बुध तुला में।

मेष (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो, अ)

६ से १६ एवं २४ से २८ के मध्य सुखद समाचार प्राप्त होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार की दिशा में सफलता मिलेगी। पदोन्नति के प्रयास में भी सफलता मिलेगी। आर्थिक दिशा में किये गये प्रयास इस अवधि में सफल होंगे। पत्नी के संबंध में भी सुखद समाचार मिलेंगे। स्वास्थ्य में आशातीत वृद्धि होगी। मन में उत्साह। परिचय क्षेत्र में वृद्धि। अधिकारी, ससुराल आदि से सहयोग की संभावना। १ से ५ तक तथा १७ से २३ के मध्य का समय परेशानी दायक। यात्रा, अप्रिय समाचार, विवाद, झगड़ा, तनाव एवं अर्थहानि की स्थिति आ सकती है।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू, बो)

१ से ५ तक समय विशेष सुखद होगा। किये गये प्रयास सफल होंगे। आर्थिक एवं व्यावसायिक मामले में लाभ मिलेगा। संतान की उन्नति की दिशा, विवाह, शिक्षा, नौकरी आदि के क्षेत्र में चल रहे प्रयास सफल होंगे। विभागीय, प्रतियोगी परीक्षा के परिणाम भी इस अवधि में सुखद होंगे। ६ अक्तूबर से शनि छठे घर में होगा, शत्रु-पक्ष को, विरोध तथा बीमारी की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। २३ से मंगल आठवां होगा। ऐसी स्थिति में २३ के बाद दुर्घटना, अर्थ-हानि तथा व्यवसाय के प्रति आवश्यक रूप से सतर्कता बरतें।

ाथुन (क, की, कु, को, घ, ङ, ह, हो)

६ से २२ के मध्य बनायी गयी योजना में सफलता मिलेगी। योजना (चाहे वह धन अर्जित करने के लिए हो अथवा कीर्ति अर्जित करने के लिए हो) कार्यान्वित होने पर ही सफलता मिलेगी। प्रतियोगी, विभागीय परीक्षा में भी आशातीत सफलता मिलेगी। संतान-पक्ष के संबंध में किये गये प्रयास सफल होंगे। १ से ५ तक तथा २३ से ३१ के मध्य विभागीय या पारिवारिक सदस्य से झगड़ा-विवाद न करें। मानसिक रूप से उलझनें उत्पन्न हो सकती हैं। क्रोध पर संयम करना ही हितकर होगा। भावुकता में कोई निर्णय न लें।

कर्क (ही, हू, हो, हे, ड, डी, डू, डे, डो)

१ से १७ तक भौतिक सुख के साधनों में वृद्धि संभव है। मकान तथा भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति हेतु किये गये प्रयास सफल होंगे। व्यापार व नौकरी की दिशा में चल रहे प्रयास भी सफल होंगे। संतान के दायित्व की पूर्ति करने में भी सफल होंगे। आर्थिक रूप से सफलतादायक

पर्व एवं त्योहार

२ अक्तूबर—पूर्णिमा, महात्मागांधी एवं लाल बहादुरशास्त्री का जन्मदिवस, ९—गणेश चतुर्थी, १०—कालाष्टमी, १३—कमला एकादशी, १४—प्रदोष, १६—अमावस्या, १७—शारदीय नवरात्रारंभ, २०—चतुर्थी, २५—दुर्गाष्टमी, २६—महानवमी, २७—दशहरा (विजया दशमी), २८—पापांकुशा एकादशी, भरतमिलाप, ३०—शनि प्रदोष।

राशियां और प्रभाव—६ अक्तूबर से शनि तुला राशि में प्रवेश कर रहा है, जिससे वृश्चिक राशि पर साढ़े साती शनि प्रवेश होगा। वृष, मीन राशि विशेष रूप से प्रभावित होंगी। मेष, सिंह, कुंभ राशियों के लिए सफलता के द्वार खुल जाएंगे। वृष, वृश्चिक, मीन कन्या तथा तुला राशियां विशेष प्रभावित होंगी। ऐसी स्थिति में व्यवसाय (नौकरी, व्यापार) के प्रति विशेष सतर्क रहें। पारिवारिक तनाव, आकस्मिक व्यय, दुर्घटना, अधिकारियों से विवाद, सत्ता-पीड़ा, अर्थहानि एवं अप्रिय समाचार मिल सकते हैं। वायु-प्रकोप में वृद्धि होगी। भारत की प्रगति के द्वार प्रशस्त होंगे। श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि संभव है। प्रयास सफल होंगे।

शांति कैसे करें—जिन राशियों पर शनि ग्रह का प्रभाव है, निम्न मंत्र का जाप करें:

ॐ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड सम्भूतं नमामि शनैश्चरम् ।।

प्रातःकाल शनि-यंत्र या शनि के चित्र अथवा ऐसे ही इस मंत्र का १०८ बार या उससे अधिक बार जाप करने से लाभ मिलेगा।

समय होगा। १८ से २२ तक सुख के साधनों में व्यवधान। पारिवारिक तनाव अथवा अधिकारी से तनाव की स्थिति आ सकती है। २३ से मंगल छठे भाव में होगा अतएव स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता रखें। क्रोध पर संयम करना हितकर होगा। अर्थ-हानि भी संभव है।

सिंह (म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू, टे)

६ से २३ तक रुके हुए कार्य संपन्न होंगे। प्रमोशन की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। व्यवसाय के व्यवधान समाप्त होंगे। पारिवारिक एवं व्यावसायिक वातावरण सुखद होगा। संपत्ति, जमीन, मुकदमा आदि के संबंध में भी सफलता मिलेगी। २३ से मंगल के साधनों में वृद्धि होगी। पंचम भाव में पहुंचने से संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी। उच्च शिक्षा, शोध, लेखन, आदि रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रथम सप्ताह का प्रारंभ अवश्य ही तनावपूर्ण हो सकता है।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो)

७ से १२ तथा १८ से २३ के मध्य आर्थिक संदर्भ में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। नवीन परिवर्तन का प्रयास भी सुखद होगा। १ से ६ तथा २४ से ३१ के मध्य मित्रों तथा विभागीय एवं पारिवारिक सदस्यों से झगड़े एवं तनाव की स्थिति न उत्पन्न होने दें। सुख के साधनों में व्यवधान आ सकते हैं। अर्थ-हानि, व्यवसाय, प्रतिष्ठा, दुर्घटना आदि के प्रति सतर्क रहें। क्रोध एवं भावुकता पर नियंत्रण रखें, खास तौर पर महिलाओं के लिए अपयश तथा मानसिक क्लेश की स्थिति आ सकती है।

तुला (र, रा, रु, रे, रो, त, ती, तू, ते)

१ से ६ तथा १७ से २२ के मध्य संपत्ति, जमीन, रोजगार आदि की दिशा में किये गये प्रयास सफल होंगे, राजनीतिक अधिकार के लिए प्रयत्न में पूरी शक्ति लगा दें, सफलता प्रतीक्षा कर रही है। आकस्मिक लाभ भी मिल सकता है। ७ से १६ के मध्य रोजगार के प्रति विशेष सजग रहें, व्यवधान न आने दें। पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति उदासीन स्थिति कष्टदायक हो सकती है। अधिकारियों से विवाद भी न होने दें। स्वास्थ्य एवं व्यवसाय के प्रति सतर्क अवश्य रहें।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, नो, य, यी, यु)

१ से ६ तक किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। यदि विदेश-यात्रा या किसी बड़ी यात्रा का प्रयास कर रहे हैं, तब उस दिशा में सफलता मिलेगी। स्थानांतरण, विभागीय परिवर्तन की दिशा में सफलता मिलेगी। ७ से शनि का प्रभाव होगा। स्वास्थ्य, व्यवसाय, धन, परिवार आदि के प्रति सतर्क रहें, किसी भी मामले में जोखिम लेना हितकर नहीं होगा। २३ से मंगल द्वितीय भाव में होगा, जिससे स्वास्थ्य, विरोध, बीमारी, व्यवसाय के प्रति अधिक सजग रहने की आवश्यकता है। क्रोध एवं भावुकता पर नियंत्रण रखें।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ़, भे)

७ से १६ तथा २३ से ३१ के मध्य

उन्नति की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। मानसिक शांति मिलेगी तथा तनाव कम होंगे। नया व्यापार, नौकरी, मकान परिवर्तन आदि की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। संतान (कन्या) के विवाह के लिए चल रहे प्रयासों में सफलता मिलेगी। १ से ६ तथा १७ से २३ के मध्य संतान के कारण क्लेश की स्थिति आ सकती है। योजनाओं में व्यवधान आयेंगे मानसिक क्लेश की स्थिति उत्पन्न होगी। कष्टप्रद यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

मकर (भो, ज, जी, जू, जे, जो, ख, खी, ग, गी)

६ से २३ के मध्य राजनेता, अधिकारी, पारिवारिक सदस्यों आदि से संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी। उनके माध्यम से लाभ भी मिल सकता है। परिचय-क्षेत्र में भी वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य, सृजन, रचनात्मक कार्य की दिशा में बनायी गयी योजना सफल होगी। पदोन्नति, नये व्यापार आदि की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। राजनेता से २४ के बाद अवश्य सतर्क रहें। षड्यंत्र, दुर्घटना, अर्थ हानि की भी स्थिति आ सकती है। विवाद, झगड़ों आदि में न पड़ें। संयम एवं धैर्य से कार्य लेने पर सफलता मिलेगी।

कुंभ—(गू, गे, गो, स, सी, सु, से, सो, श्र, द)

६ से २८ के मध्य पदोन्नति, नये व्यापार, नयी नौकरी, आर्थिक प्रयास, लेखन, सृजन, कला, सामाजिक और राजनीति की दिशा में किये जा रहे प्रयास

प्रो. पद्मेश

सफल होंगे। एक लंबे समय से चले आ रहे तनाव कम होंगे। शनि राशि से नवम् भाव में होगा। किसी अधिकारी, पिता या बड़ी आयु के मित्र से लाभ मिलेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा। सुख के साधनों में वृद्धि होगी। १७ से २३ के मध्य 'अहं', क्रोध की स्थिति पर नियंत्रण नितांत आवश्यक है। स्वास्थ्य के प्रति उदासीन न रहें।

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)

१ से ६ तथा १८ से २३ के मध्य रोजगार की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। नया व्यापार, नयी नौकरी का प्रयास सफल होगा। सुखद-यात्रा भी संभव है। विदेश-यात्रा के प्रयास में कुछ व्याघात आयेंगे, लेकिन सफलता मिल सकती है। विभागीय परिवर्तन, स्थानांतरण का प्रयास भी सफल होगा। ७ से शनि आठवें होंगे, जिससे स्वास्थ्य, व्यवसाय, परिवार के प्रति विशेष सावधानी रखें, व्यवधान की स्थिति आ सकती है। मित्र स्वजन से झगड़ा या विवाद की स्थिति न आने दें। यात्रा से बचने का प्रयास करें।

—१८, एम. आई. जी., रतनलाल नगर, कानपुर—२२

नाटक

स्वर्ग के तीन ही द्वार : जन मानस के भावनात्मक शोषण की बात करता है। धर्म के नाम पर पंडित, शासन के नाम पर राजा और सेवा के नाम पर नेता, सभी जनता के कंधे पर बंदूक चला रहे हैं। जनता के लिए स्वर्ग के द्वार खोलने की प्रक्रिया में स्वार्थपरता के कारण वे द्वार बंद होते जा रहे हैं। भिक्षुक पात्र की स्थिति एक पर्यवेक्षक की है, जो तटस्थ भाव से स्थितियों का विश्लेषण करता चलता है। समाज में आ रही चेतना की झलक भी नाटक में मिलती है, पर यह चेतना शोषकों के हथकंडों के आगे बहुत कामगर सिद्ध नहीं होती।

शोकचक्र : सामान्य जनता के स्वप्नभंग की कथा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय जो स्वप्न लोगों ने देखे थे, वे सब नेताओं की स्वार्थपरता, शक्ति-संचय में गुम हो गये। राजनीति के नाम पर देश-प्रेम, गांधी—जैसे शब्दों का मनमाना प्रयोग करके नेतागण अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में संस्कृति, सिद्धांतों की बलि दी जा रही है। सिद्धांतों को अपनानेवाले लोगों की दुर्गति दिखलाकर नाटककार ने आधुनिक राजनीति पर तीखा व्यंग्य किया है। अशोकचक्र शक्ति का प्रतीक है और शोकचक्र सत्य और अहिंसा पर चलनेवाले देश-सेवकों का, जिनका प्रतिनिधि जयराम नामक पात्र है।

रंगभारती : महाभारत की कथा, पात्र एवं परिस्थितियों को समसामायिक परिवेश में प्रस्तुत करके नाटककार ने शाश्वत सत्य का उद्घाटन किया है। तथा कथित आधुनिकता पर व्यंग्य करते हुए, लेखक ने यक्ष-धर्म संवाद द्वारा चारों ओर फैले भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है। सत्य की स्थिति को जय और पराजय से जोड़कर समाज को आईना दिखा दिया है।

उक्त तीनों नाटक यद्यपि काफी प्रभावशाली हैं तथापि हिंदी-अनुवाद में प्रभाव कहीं-कहीं काफी हल्का पड़ गया है। पात्रों के नामों का भी यदि हिंदीकरण कर दिया जाता, तब मंचन की दृष्टि से अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते—जैसे गोविन्दप्पा, हनुमंतय्या आसानी से गोविंद और हनुमंत हो सकते थे। **तीनों के लेखक—आद्य रंगाचार्य, अनुवादक—बी. आर. नारायण, प्रकाशक—शब्दकार प्रकाशन, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६, मूल्य—प्रत्येक दस रुपये।**
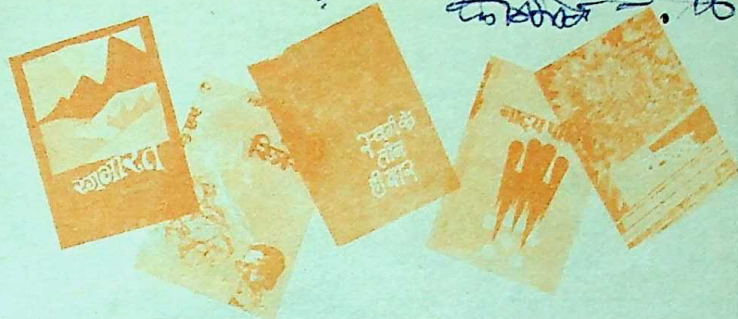
काला मुंह: पिछड़े इलाकों में हरिजनों के आर्थिक, सामाजिक शोषण पर कुछ प्रश्नों को उठाता हुआ यह नाटक मुख्य रूप से कोशी-गोबर और केसर के इर्द-गिर्द घूमता है। पटवारी, साहूकार, प्रधान, ठेकेदार, ब्राह्मण पात्र शोषकवर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आरंभ में केसर नामक पात्र में नाटकीय संभावनाएं दिखायी देती हैं, पर बाद में इसका समुचित विकास नहीं हो पाता। कुछ कहता हुआ-सा यह पात्र रह जाता है। केशी भी जिस रूप में उभरती है, वह रूप अधिक देर तक टिक नहीं पाता। पर्वतीय परिवेश को अवश्य नाटक में अच्छी तरह उभारा गया है। **लेखक— गोविन्द चातक, प्रकाशक— तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली—२, मूल्य—१५ रुपये।**

ख्याल भारमली: यह जयपुर शैली में लिखा गया ख्याल नामक लोकधर्मी प्रयोगात्मक नाटक है। इसकी कथा धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, शृंगारिक या सामाजिक होती है। संवाद पद्यबद्ध होते हैं। गद्य का कम प्रयोग होता है। गीत, नृत्य, पद्यबद्ध संवाद, अभिजात नायक, परंपरागत वेशभूषा-जैसे लोक-धर्मी तत्त्वों का समावेश रहता है। प्रस्तुत नाटक राजस्थान की प्रसिद्ध भारमली, कथा पर आधारित है। भारमली राजकुमारी उमादे की बालसखी दासी थी। मालदेव से विवाह के समय भारमली भी उमादे के साथ जाती है। शृंगार करती हुई उमादे भारमली को राजा के पास मनोरंजन हेतु भेज देती है। उन्मादी राजा पत्नी की प्रतीक्षा न करके भारमली के रूप-यौवन पर आसक्त होकर उसे अपने प्रणयपाश में बांध लेता है। उमादे इस स्थिति से खिन्न होकर अपने घर वापस चली जाती है। राज्य के उत्तराधिकारी चाहिए। अब समस्या उत्पन्न होती है। दासी भोग्या तो हो सकती है, पर राज्य को उत्तराधिकारी नहीं दे सकती। भारमली नारीत्व के इस अपमान से क्षुब्ध होती है और डाकू बाघसिंह की

संगिनि बन जाती है। उधर उमादे को वापस लाने के लिए राजा के सारे प्रयत्न विफल हो जाते हैं। भारमली फिर से राजा की अंकशायिनी होने के लिए विवश की जाती है। यही नहीं उसे सामूहिक भोग की वस्तु बना दिया जाता है। स्वामी का यह कथन"...साझा भी एक शब्द हुआ करता है। एक सामूहिक भोग हुआ करता है," सामंतकालीन नारी की विडंबना प्रदर्शित करता है।

पात्र इतिहास की परिधि लांघकर आधुनिक परिवेश में रम जाते हैं। गीत एवं कथा-गायन विशिष्ट प्रभाव की सृष्टि करते हैं। प्रभाव की दृष्टि से बीच-बीच में प्रतीकात्मक नाटकीय प्रयोग सुंदर है।

• लेखक—हमीदुल्ला, प्रकाशक—शब्दकार प्रकाशन, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६, मूल्य-दस रुपये। —डॉ. शशि शर्मा

उपन्यास

मेरी स्त्रियां : मणि मधुकर का 'सफेद मेमने', 'पत्तों की बिरादरी' और 'पिंजरे में पन्ना' के बाद चौथा उपन्यास है। राजस्थानी लोक-जीवन की गहरी पकड़ रखनेवाले मणि मधुकर का यह उपन्यास, उनकी शैली से बिल्कुल भिन्न हैदराबाद की जमीन पर लिखा गया, एक प्रयोगशील उपन्यास है। 'मेरी स्त्रियां' इस व्यवस्था की विकृति को, जहां एक ओर पूरी तरह उकेरने की कोशिश करती है, वहीं क्रांति की प्रक्रिया का एक वायवीय ढांचा भी

प्रस्तुत करती है। पहली स्थिति में उपन्यासकार को सफल माना जा सकता है, पर दूसरी स्थिति में वह अतिशय रोमानी हो गया है। इसी कारण उपन्यास अंत में जाकर बेहद ढीला और प्रभावहीन हो गया है।

मणि मधुकर ने अपनी अकवितावादी भंगिमा इस उपन्यास में दिखलाने की कोशिश की है, जो पाठकों को सहज आकर्षक तो लगेगी, पर यह रीतिवादी कविता की तरह महज कौतुकता या चमत्कारवादिता के सिवा कुछ भी नहीं कही जा सकती। कुल मिलाकर यह प्रयोग हिंदी उपन्यासों की परंपरा में कहीं से भी उपलब्धि स्वीकार नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक--सरस्वती विहार, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२, मूल्य--२० रुपये।

समय एक शब्दभर नहीं है : धीरेन्द्र अस्थाना का पहला उपन्यास है। वैसे इसके पूर्व प्रकाशित उनकी कहानियों का संग्रह 'लोग हाशिए पर' अपनी यथार्थवादी रुझान के कारण काफी प्रशंसित रहा है। अस्थाना के इस उपन्यास का नायक भुवन, अज्ञेय-निर्मित भुवन की 'इमेज' को तोड़ता है। पर उसकी जनपक्षधरता एवं संघर्षशीलता कहीं से आयातित नहीं है, बल्कि आज के जीवन के सही संदर्भों से संपृक्त है। यही कारण है कि उपन्यास का नायक भुवन, जो बाद में जनता की शक्ति के रूप में उपस्थित है, प्रारंभ में पराजय और पलायन की गहरी पीड़ा से संत्रस्त रहता है। 'समय एक शब्द भर नहीं है' हिंदी उपन्यास की किसी खास टेकनीक या वाद के घेरे में नहीं होने के बावजूद भी उस सच्चाई को महत्त्व प्रदान करता है, जो आज की जन-चेतना की सबसे बड़ी जरूरत है।

प्रकाशक-- राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी मार्ग, नयी दिल्ली-२, मूल्य--१५ रुपये।

चाणक्य : भगवती चरण वर्मा का अंतिम उपन्यास है, जो ऐतिहासिक युग-पुरुष चाणक्य की मात्र गाथा न होकर, मगध-साम्राज्य की पतनशीलता के चित्रण के तहत कहीं-न-कहीं आज के समय से जुड़ता है। भगवती बाबू का यह उपन्यास उनके प्रारंभिक उपन्यास 'चित्रलेखा,' का मजा देता है, पर 'चित्रलेखा' की तरह दार्शनिक प्रश्नों से कहीं भी नहीं घिरता। अपितु उसकी दृष्टि तत्कालीन वातावरण को सजीव करने हेतु दृश्यों व चित्रण पर होती है।

भगवती बाबू की दृष्टि इस उपन्यास में एक पतनोन्मुख समाज की विकृतियों एवं खोखलेपन को उजागर करने की रही है, जिसके कारण उपन्यास की प्रासंगिकता पर शक नहीं किया जा सकता। ऐतिहासिक उपन्यास हेतु जिस भाषा की आवश्यकता होती है, उसका अभाव उपन्यास में कहीं भी नहीं है।

प्रकाशक---राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-२, मूल्य--१८ रुपये।

---श. श.

मन परदेसी : कर्तारसिंह दुग्गल का नया उपन्यास है, जिसकी भूमिका के तौर पर नानक की एक सूक्ति रखी गयी है--'मन परदेशी जे थीये सब देस पराया।' अर्थात, 'यदि मन परदेशी हो जाए तो सब देश पराया हो जाता है, उपन्यास की नायिका बेगम मुजीब वर्तमान के धरातल पर जीने की भरपूर कोशिश करती है, पर मन है कि बार-बार उड़कर अतीत की ओर चला जाता है। अतीत जो किसी और देश का है। हिंदुस्तान के विभाजन ने कितने ही लोगों को इधर-का उधर करके रख दिया। बेगम मुजीब पाकिस्तान में होते हुए भी बार-बार भारत में बिताये अपने बचपन की ओर लौटती है। जीवन की वास्तव में यह कारुणिक स्थिति है कि तन एक देश में रहे और मन दूसरे देश में। वास्तव में जिसका मन परदेशी हो उसके लिए पूरे-के-पूरे देश का ही पराया हो जाना, कितना कष्टप्रद है। देश का यह विभाजन क्या बेगम मुजीब —जैसे पात्रों के मन का विभाजन कर सकता है ?

दुग्गल की भाषा उपन्यास की कथा के प्रवाह के अनुरूप सहज एवं गतिशील है। **प्रकाशक—सरस्वती विहार, जी. टी. रोड शाहदरा, दिल्ली–३२, मूल्य–२५ रुपये।**

नाट्य परिवेश : नाटक के अहम पक्षों पर चर्चा करती है, यह पुस्तक। हालांकि इनमें से किसी भी पक्ष से लेखक का सीधा संबंध नहीं है, फिर भी एक प्रेक्षक की दृष्टि से लेखक ने काफी ईमानदारी बरती है और शायद इसीलिए वह अनेक पूर्वाग्रहों से बच सका है। पुस्तक तीन भागों में विभक्त है। पहले भाग 'प्रेक्षागार में नाट्यानुभव' में बंबई और दिल्ली में खेले गये अनेक चर्चित नाटकों की समीक्षाएं हैं, जो 'धर्मयुग' में छप चुकी हैं। इसी भाग में 'ओ कलकत्ता' के विषय में भी अपेक्षाकृत विस्तार से चर्चा की गयी है। लंदन में वर्षों लगातार प्रदर्शित होते रहे इस नाटक की चर्चा यद्यपि पत्र-पत्रिकाओं में काफी हो चुकी है, तथापि इस पुस्तक के द्वारा एक बार फिर पाठकों के मन में इस नाटक की नग्न प्रयोगधर्मिता को लेकर काफी उथल-पुथल हो सकती। दूसरा भाग—'पृष्ठभूमि और परिवेश है हैं', जिसमें नाटकीय परिवेश से जुड़े डॉ. लाल, अल्काजी, नरसीलाल, विजय तेन्दुलकर, सत्यदेव दूबे आदि के साथ बात-चीत है। तीसरे भाग—'आलेख पड़ताल' में कुछ नाटकों के अंश प्रकाशित किये गये हैं। इनके द्वारा लेखक क्या कहना चाहता है यह स्पष्ट नहीं है। नाटकों पर लिखी आम पुस्तकों की गंभीरता से मुक्त यह पुस्तक सहजभाव से पाठकों तक अपनी बात पहुंचाती है। पुस्तक में आद्योपांत एक पकड़ है। चटखारे लेती भाषा पाठकों को बांधे रखती है। **लेखक—कन्हैयालाल नंदन, प्रकाशक—[illegible] प्रकाशन, मूल्य—५० रुपये।**

—[illegible]

कादम्बिनी

विविध

एवरेस्ट की कहानी : संसार के सबसे ऊंचे शिखर एवरेस्ट पर पहुंचनेवाले अभियानों और पर्वतारोहियों का रोचक लेखा-जोखा इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। इसके लेखक मे. हरपालसिंह प्रख्यात पर्वतारोही हैं और उन्होंने २९ मई, '६५ में एवरेस्ट चोटी पर पहुंचने में सफलता पायी थी, पर्वतारोहण संबंधी उनकी पांच पुस्तकों में 'फेसेज़ ऑव एवरेस्ट' पुस्तक ने खासी लोकप्रियता पायी। 'एवरेस्ट की कहानी' इसी का, धर्मपाल पाण्डेय द्वारा किया गया हिंदी अनुवाद है, जिसे भारत सरकार की एक योजना के तहत प्रकाशित किया गया है।

आज तक जो ४२ पर्वतारोहण अभियान हुए हैं, लेखक अहूवालिया ने उन सभी का विवरण इसमें दिया है। इस शिखर का नाम 'माउंट एवरेस्ट' क्यों पड़ा ? लोग पर्वतारोहण क्यों करते हैं ? एवरेस्ट की खोज करने में कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ? आदि की संक्षिप्त चर्चा इसमें प्रस्तुत की गयी है। नौ रेखा-चित्रों एवं पंद्रह छाया-चित्रों के समावेश से पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि हुई है। पुस्तक के पढ़ने से साहसिक कार्यों की प्रेरणा भी मिलती है और रोमांचकारी अनुभव भी होता है।

प्रकाशक—राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, मूल्य—२० रुपये।

—प्रो. विश्वंभर 'अरुण'

भजनामृत : आजादी के पूर्व हिंदुस्तानी संगीत पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए स्व. पलुस्कर एवं 'चतुर पंडित' भातखंडजी ने बहुमूल्य कार्य किया था। इन दोनों संगीताचार्यों ने नोटेशन पद्धति भी शुरू की, जिससे संगीत के छात्रों एवं प्रेमियों के लिए इस कला को सीखना काफी आसान हो गया। 'भजनामृत' में अमलदाश शर्मा ने मीरा बाई, कबीरदास, सूरदास, तुलसी दास, नानक देव, ब्रह्मानंद, दादुदयाल, दरिया साहब, रैदास, मलूकदास के अतिरिक्त अपने दो पदों की स्वरलिपि दी हैं। ये सभी पद विभिन्न श्रुति-मधुर राग-रागनियों में निबद्ध हैं। तीसरे परिच्छेद में उन्होंने इन पदों के लिए प्रयुक्त रागों का परिचय दिया है और चतुर्थ परिच्छेद में सांगीतिक शब्दों का परिचय। अंतिम परिच्छेद में भक्तों की जीवन-कथा है। संगीत-प्रेमियों के लिए यह एक उपयोगी पुस्तक है।

प्रकाशक—अमलदाश शर्मा, एस-७/१२५०, रामकृष्णपुरम, नयी दिल्ली, मूल्य—पचीस रुपये।

—राज शेखर

> सिद्धांत जीवन का ढांचा है, सत्य का कंकाल, जो पवित्र जीवन के सजीव सौंदर्य से सुडौल और सुसज्जित किया जाना चाहिए। —गार्डन
>
> यदि कोई सद्गुणशीलता की ओर प्रतिदिन शक्तिपूर्वक बढ़ता जाता है, तो वह अवश्य सिद्धि प्राप्त करता है। —कन्फ्युशस

नारी-यंत्रणा का सच
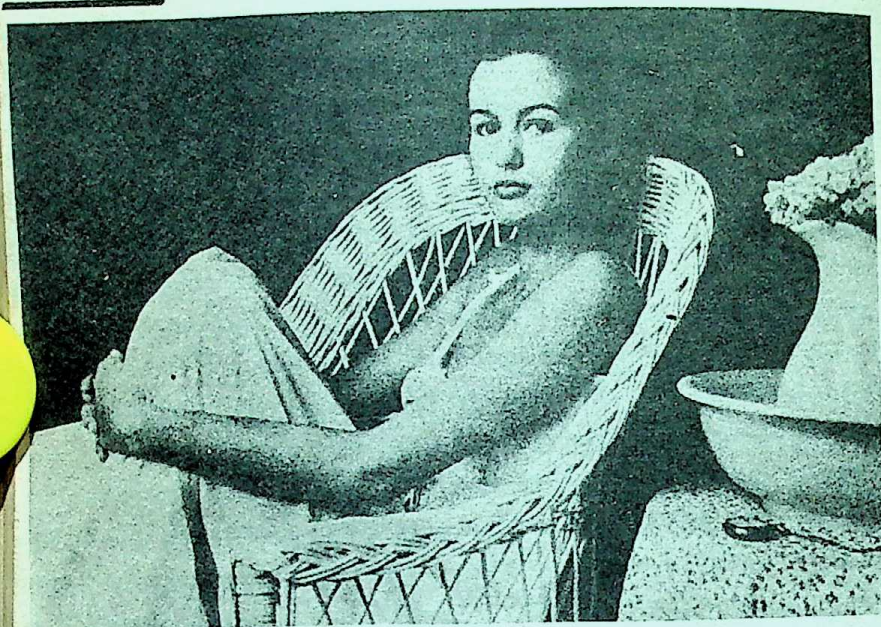
• वर्जीनिया वुल्फ

आभिजात्य की गरिमा से आवेष्टित ड्राइंगरूम का साहित्यिक वातावरण। अपने सर्वश्रेष्ठ परिधानों में सजे स्त्री-पुरुष। मिस्टर और मिसेज हिल्बेरी को प्रशंसकों से घिरे रहकर, चाय की चुस्कियों के दौरान, साहित्य चर्चा करने की आदत थी, और इसका अधिकार उन्हें विरासत में मिला था। परिवार के बड़े रिचर्ड एलारडायस प्रतिष्ठित कवि थे! पूरे घर पर तुरंत आंखों में चुभनेवाली संपन्नता और साहित्यिक अभिरुचि की छाप लगी हुई थी।

घर के बड़ों की साहित्यिक तथा दूसरी उपलब्धियों के प्रतीकों की स्थायी प्रदर्शनी दूसरे कमरे में लगी हुई थी। मेहमानों को संग्रहालय-दर्शन कराना मिस केथरीन हिल्बेरी के जिम्मे था! चाय-पान से लेकर गोष्ठी-संचालन भी उसी को करना होता था।

स्त्री और पुरुष के जीवन में प्रेम और विवाह का वास्तविक अर्थ क्या है ? क्या विवाह में समझौता और छल की स्थिति अनिवार्य है ? प्रख्यात लेखिका वर्जीनिया वुल्फ ने इस प्रकार के अनेक चुभते हुए प्रश्न अपने प्रसिद्ध उपन्यास, 'नाइट एण्ड डे' के पात्रों के माध्यम से पाठकों के समक्ष रखे हैं। प्रस्तुत है इस महत्त्वपूर्ण उपन्यास का सार। प्रस्तुति—देवेन्द्र कुमार

केथरीन ने विलियम रोड्नी का पत्र कई बार पढ़ा था और हर बार उसकी ईमानदारी ने केथरीन को प्रभावित किया था। उसने लिखा था, 'मैं तुम्हारे बिना जिंदा नहीं रह सकता। मुझे विश्वास है, मैं तुम्हें जान गया हूं, पहचान गया हूं तुम्हारे मन को। तुम्हारे दामन में खुशियां भर सकूंगा, इसका मुझे विश्वास है।'

और केथरीन की मां श्रीमती हिल्बेरी ने भी तो यही कहा था, बल्कि उन्होंने उसे केथरीन रोड्नी कहकर पुकारा था।

'प्यार' यह क्या होता है ? कौन-सी भावनाएं जगाता है मन में !' केथरीन ने कई बार अपने से पूछा था और हमेशा कुछ उलझ-सी गयी थी। रात का अंधेरा खिड़कियों पर हल्की दस्तक दे रहा था। उसने एक झटके से परदे खींच दिये। रात के आगोश में डूबा लंदन। आकाश में यहां-वहां तारे टिमटिमा रहे थे। हां, यही है, उसका आकाश, अनंत-अथाह, जिसका
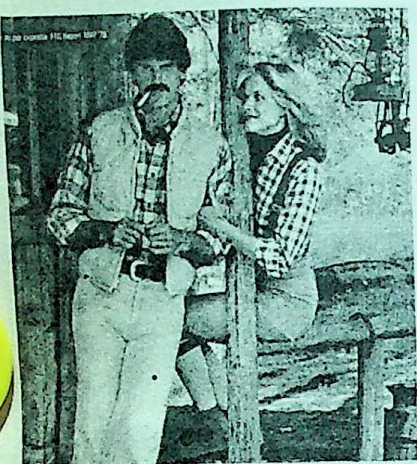
आभास एक कुहासे की तरह उसे अपने में लपेटे हुए है।

आनेवाले अत्यंत संतुष्ट और प्रभावित होकर लौटते थे। लेकिन राल्फ डेनम ऐसा कोई प्रभाव ग्रहण करने को तैयार नहीं था। पेशे से वकील डेनम एक साधारण हैसियत के बड़े परिवार का महत्त्वहीन सदस्य था। ओढ़े हुए आभिजात्य और नकली साहित्यिकता से उसे चिढ़ थी। मिस्टर हिल्बेरी ने अपनी पत्रिका में उसका कानून संबंधी एक लेख छापा था, इसीलिए उसे वहां आने का सौभाग्य दिया गया था।

रुटीन के तौर पर कैथरीन न चाहते हुए भी उसे म्यूजियम-कक्ष में ले गयी थी और यांत्रिक ढंग से महान पूर्वजों की महानता से भाराक्रांत चीजों का इतिहास बता रही थी। भीड़भाड़ के बीच एकांत खोजने को छटपटाती, गणित की दीवानी, अंतरिक्ष की गहराइयों में अपने प्रश्नों के उत्तर खोजती उसकी नीली आंखें, डेनम को गहरी झीलों की याद दिला गयी थीं। केथरीन के सौंदर्य ने, डेनम को पहली नजर में ही प्रभावित किया था, लेकिन फिर भी उसे न जाने क्यों ऐसा लग रहा था कि केथरीन उसका, उसकी अतिसाधारण स्थिति का छिपे तौर पर मजाक उड़ा रही थी। वह एकाएक क्रूर हो उठा। केथरीन के पूरे परिवार की महानता को अपनी अति साधारण स्थिति की तुलना में तुच्छ बताकर ही उसका आक्रोश ठंडा हो सकता था—और वही उसने किया भी। केथरीन को हतप्रभ छोड़कर वह बाहर चला आया था। लेकिन वहां से दूर जाते हुए भी, एक प्रभाव उस पर हावी होता जा रहा था। केथरीन की झील-जैसी आंखों की गहराई की थाह पाने की अभिलाषा उसके मन में धीरे-धीरे सिर उठा रही थी।

महीने में दो बुधवार, रात को नौ बजे मेरी के कमरे में साहित्यिक गोष्ठी होती थी। साहित्य की विभिन्न धाराओं पर पर्चे पढ़े जाते, गंभीर ढंग से अगंभीर वाद-विवाद होता और खा-पीकर सब विदा हो जाते। मेरी अकेली रहती थी वहां। पच्चीस की उम्र में ही कुछ अधिक उम्र की लगती थी। वह एक नारी कल्याण

समिति में काम करती थी।

राल्फ डेनम गोष्ठी से पहले ही आ गया था। उसे देखकर मेरी को अच्छा लगा। वह डेनम को पसंद करती थी, लेकिन अपने बारे में डेनम की राय उसे मालूम नहीं थी। गोष्ठी में आनेवाले लोगों में दो नाम महत्त्वपूर्ण लगे डेनम को—केथरीन हिल्बेरी और विलियम रोड्नी। मेरी ने संकेत दिया था—शायद केथरीन और रोड्नी शादी करनेवाले थे।

गोष्ठी चलती रही। वह अंदर ही अंदर रोड्नी का मजाक उड़ाता रहा। चाहता था केथरीन उससे बातें करे और जब केथरीन ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, तब स्वयं अटपटे ढंग से अपनी पहली भेंट का स्मरण करा बैठा। लेकिन केथरीन की भावहीन आंखों में उसके लिए परिचय की कोई छाया नहीं कौंधी। गोष्ठी के बाद रोड्नी और केथरीन साथ-साथ विदा हुए, और न जाने क्यों राल्फ डेनम भी उनके पीछे चल दिया।

रात चुप थी, सड़कें शांत। आकाश में चांद का गोला तैर रहा था। डेनम ने देखा रोड्नी और केथरीन तटबंध पर जाकर खड़े हो गये थे। चांदनी की लुका-छिपी, नदी की लहरों पर तैरती चांदी की पट्टियों का आभास केथरीन को अशरीरी बनाये दे रहा था!

और तब उसने सुने विलियम रोड्नी के शब्द—"केथरीन, क्या मुझे हमेशा के लिए अभिशप्त रहना होगा? क्या मैं
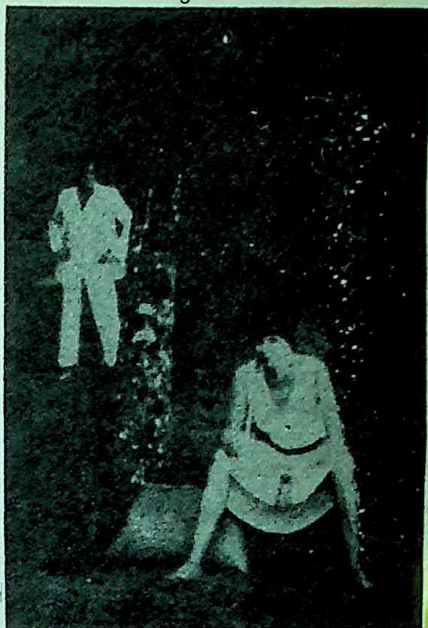
अपने मन की बात कभी नहीं कह सकूंगा! अगर तुम मुझसे . . . विवाह कर सको, तब मेरा कवि सार्थक हो जाए!"

उत्तर में कुछ पल चुप्पी का दामन थामे रहने के बाद केथरीन हंस पड़ी, हंसती रही; न जाने उस हंसी के कितने अर्थ गूंज उठे डेनम के मन में। थोड़ी देर बाद रोड्नी को अकेला छोड़कर केथरीन जा चुकी थी।

केथरीन और डेनम की अगली मुलाकात मेरी के आफिस में हुई। उससे थोड़ी देर पहले, जब डेनम नहीं आया था, तब एकांत में मन को टटोलती रही थी, जहां से एक आवाज रह-रहकर उठती और वह सिहर जाती—'आई लव डेनम!' मेरी

ने-जैसे अपने से शरमाकर इधर-उधर ताका था कि कहीं कोई और तो नहीं देख रहा उसकी मानस छवि को। मेरी जब डेनम को देखती, तब अपने मन की अन-सुनी-अनकही पुकार उसे चौंका जाती। उसकी आंखों में डेनम का कोई दूसरा ही रूप उभर आता, लेकिन डेनम इस सबसे बेखबर केथरीन को देख रहा था। वह इतने दिन बाद केथरीन से मिला था। हां, इस दौरान अकेले में केथरीन न जाने कितनी बार उसके सामने आयी थी और उसने केथरीन से खूब बातें की थीं, लेकिन आज . . . आज . . . वह आमने-सामने कुछ कहना चाहता था।

केथरीन को हतप्रभ छोड़कर वह बाहर चला आया था। लेकिन यहां से दूर जाते हुए भी, एक प्रभाव उस पर हावी होता जा रहा था। केथरीन की झील-जैसी आंखों की गहराई की थाह पाने की अभिलाषा उसके मन में धीरे-धीरे सिर उठा रही थी।

केथरीन चलने लगी तब डेनम उसके साथ ही उठ खड़ा हुआ। मेरी ने उसकी इस कोशिश को देखा और प्रस्तरवत बैठी रह गयी। मन में एक तपिश उठी, लेकिन उसने डेनम को रोकने की कोशिश नहीं की। अगले ही पल दोनों बाहर जा चुके थे। मेरी बंद हुए दरवाजे को हिंसक आंखों से घूरती रह गयी!

केथरीन इस समय एकांत चाहती थी। वही आकाश की अनंतता में अपने अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने के खेल! वह तेजी से बढ़ती रही, बीच-बीच में डेनम के प्रश्नों के उत्तर भी दे देती थी। डेनम को लग रहा था—जैसे वह तूफान में झूमते किसी ऊंचे पेड़ के शीर्ष से बात कर रहा हो।

थोड़ी देर बाद वे एक बग्घी में बैठ गये। हवा केथरीन की केशराशि से खिलवाड़ करती हुई गुजर रही थी। "यहां का दृश्य कुछ-कुछ वेनिस की तरह लगता है!" केथरीन ने हाथ हिलाकर कहा।

"लेकिन मैंने तो वेनिस आज तक देखा ही नहीं . . ., इसे और इस-जैसी और चीजों को मैंने अपने बुढ़ापे के लिए रख छोड़ा है! असल में मैंने बचपन से ही अपनी जिंदगी को टुकड़ों में जीना सीखा है, हर टुकड़े की जिंदगी जितनी लंबी खिंच सके उतना अच्छा है!" डेनम ने कुछ क्रूरता से कहा।

"अरे सच! मुझे भी बिल्कुल ऐसा ही लगता है!" केथरीन ने हंसकर कहा।

"तुम्हारा क्या है, तुम चाहो तो वेनिस, भारत और दांते हर रोज तुम्हारी जिंदगी में आ सकते हैं, क्योंकि तुम अमीर हो और मैं गरीब . . ।"

केथरीन चुप खड़ी रही! यह आदमी—जिसे वह पूरी तरह नहीं समझ पायी थी,

जिसे [illegible] उसकी और अपनी जिंदगी में एक-सी ही तसवीरें क्यों उभर आयी थीं। वह भी तो इसी तरह टुकड़ों में जीने की आदी थी—हर टुकड़ा एक पूरी जिंदगी की तरह, दूसरे टुकड़े से अलग, कटा हुआ। लेकिन इस कुहासे के बीच, उड़ते हुए उसे धरती का यथार्थ स्वरूप दिखायी देता है। हां, उसका सच, आकाश में नहीं इसी धरती पर है—और फिर उसकी जगह विलियम रोड्नी का चेहरा उभर आता है हां, यही तो यथार्थ है उसकी धरती का !

राल्फ डेनम दफ्तर का काम निबटाकर निकला था। सांझ ढलने लगी थी, आकाश से उतरती रोशनी के मद्धिम होते ही नीचे रोशनियों के रंगारंग कुमकुमे जगमगाने लगे थे। वहां की चकाचौंध, शहर के बाहर बसी बस्तियों की संकरी गलियों में पहुंचते-पहुंचते, घरों से बाहर आते धुएं के कारण फीकी पड़ चुकी थी। ऐसे में राल्फ डेनम के मस्तिष्क में ऐसी अनेक बातें आ रही थीं, जिनके बारे में वह अकसर नहीं सोचा करता था ! तभी उसने केथरीन को अपनी ओर आते देखा, वह अपने में मस्त न जाने कहां खोयी हुई चली आ रही थी।

उसने डेनम को-जैसे देखकर भी नहीं देखा था। कुछ पल के लिए डेनम को लगा-—जैसे वे दोनों एक-दूसरे की ओर बढ़ रहे हैं और कहीं कोई नहीं है, लेकिन वह उसके पास से गुजरकर आगे चली गयी, [illegible] उभरते शोर का अहसास हुआ। उसका शरीर कांपने लगा। उसमें केथरीन को रोकने का साहस नहीं था।

अब तक वह शाम के पूरे माहौल का हिस्सा बना खड़ा था। लेकिन केथरीन ने एक झटके से उसे इससे जुदा कर दिया था। लेकिन . . . लेकिन . . . फिर उसे यूं ही छोड़कर चली भी गयी थी। अब वह उसमें नहीं लौट सकता था। ऐसे में वह केवल एक ही दरवाजा खटखटा सकता था,

रात चुप थी, सड़कें शांत। आकाश में चांद का गोला तैर रहा था। डेनम ने देखा रोड्नी और केथरीन तटबंध पर जाकर खड़े हो गये थे। चांदनी की लुकाछिपी, नदी की लहरों पर तैरती चांदी की पट्टियों का आभास केथरीन को अशरीरी बनाये दे रहा था।

मेरी का। अरे हां, अब तो वह दफ्तर से लौट भी आयी होगी !

मेरी उसे देखकर चौंक उठी—उस दिन केथरीन के साथ एकाएक चले जाना . . उसे याद था। उसने होंठ काट लिये और फिर उसके साथ बातचीत में ऐसे मशगूल हो गयी—जैसे कुछ हुआ ही नहीं था।

वह चाह रही थी कि राल्फ कुछ और बातें करे, अपने बारे में कहे-सुने,

वर्जीनिया वुल्फ का जन्म १८८२ में हुआ था। उनकी अधिकांश प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। उनकी पहली रचना 'द गार्डियन' में छपी थी। १९०५ में 'द टाइम्स लिटरेरी सप्लीमेंट' से उनका संबंध जुड़ा, जो लगभग मृत्युपर्यंत चला। द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में वह ब्लूम्सबरी की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था 'ब्लूम्सबरी सर्किल' की प्रमुख सक्रिय सदस्या बन गयी थीं। यहां उनकी मित्रता लिटन स्ट्रैची और लियोनार्ड वुल्फ-जैसे व्यक्तियों से हुई। लियोनार्ड वुल्फ के साथ १९१२ में उनका विवाह हुआ।

मार्च १९१५ में वर्जीनिया वुल्फ का पहला उपन्यास 'वॉयेज आउट' प्रकाशित हुआ।

पागलपन के बार-बार पड़नेवाले दौरों ने वर्जीनिया के बचपन और वैवाहिक जीवन दोनों को ही अभिशप्त बना दिया था। अप्रैल १९४१ में वर्जीनिया वुल्फ ने अपने जीवन का अंत कर लिया। अपनी मृत्यु के समय तक उन्होंने अंगरेजी साहित्य जगत के शीर्षस्थ रचनाकारों में अपना स्थान स्थायी रूप से बना लिया था।

ताकि मेरी जान सके कि राल्फ उसके बारे में क्या सोचता है! उन्होंने ढेर सारी बातें कीं, लेकिन उनके बीच दीवार बनकर खड़ा सन्नाटा वैसे ही तना रहा। और फिर किसी भी प्रश्न का उत्तर दिये बिना राल्फ डेनम चला गया। मेरी रीती आंखों से उसे देखती रही। क्या वह इसी आदमी से प्यार करती है, जो उसे समझने को बिल्कुल तैयार नहीं है! शायद वह भी उसे प्यार नहीं करती . . हां, नहीं करती।

केथरीन को रोड्नी ने चाय पर आमंत्रित किया था। वह दो घंटे से उसके स्वागत की तैयारी कर रहा था। केथरीन ने देखा कमरे की हर चीज चमक रही थी। उसे एक हल्का संतोष हुआ।

वह रोड्नी के पत्र का जवाब देने के बाद पहली बार मिल रही थी, उससे! रोड्नी के लंबे प्रेम-पत्र के उत्तर में उसने संक्षेप में लिख दिया था, 'मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकती। हां, हमारी मैत्री जीवित रह सकती है। मुझे तुम्हारे गीत बहुत पसंद हैं।'

उसने रोड्नी से अपनी कविताएं सुनाने को कहा था।

कविताएं सुनने के बाद वह कुछ कहने को हुई तो रोड्नी ने उसे रोक दिय। बोला, "केथरीन, मैं तुम्हारे मुंह से अपने लेखन की समीक्षा नहीं सुनना चाहता! उसके लिए इंगलैंड में अनेक समीक्षक हैं! मैं बताता हूं तुम्हें, इन्हें लिखते समय तुम मेरे सामने रही हो। लिखते समय और लिखने के बाद मैंने अपने से बार-बार पूछा है, "क्या केथरीन इसे पसंद करेगी! यह गीत उसे कैसा लगेगा? तुम्हें क्या मालूम, तुम्हारे बारे में मैं क्या सोचता हूं!"

इस प्रशंसा में हार्दिकता का आभास हुआ केथरीन को, मन में कहीं कुछ पिघल गया, "विलियम, तुम मेरे बारे में इतना क्यों सोचते हो?" केथरीन ने कहा। उसे लगा, जो कुछ वह कह गयी, सचमुच

हना नहीं चा[illegible] थी।

"हां, मुझे तुम्हारे बारे में सोचने पर च्छा लगता है!" सिर्फ इतनी सी बात ने थरीन के अंदर विलियम के प्रति ऐसी वना जगा दी, जो आज से पहले नहीं आयी मन में।

वह अपने से कहती हुई खड़ी थी, रोड्नी से ही विवाह करूंगी। इस स्थिति बचा नहीं जा सकता।" अपने विवाह बात सोचते ही उसकी दुनिया —जैसे एक बदल गयी। न जाने कितनी वीरें एक साथ आंखों में उभरीं और डमगड्ड हो गयीं। वह चेहरे पहचानने कोशिश करती खड़ी रही। केथरीन कानों में उसकी अपनी आवाज सुनायी —जैसे कोई नींद में बोल रहा हो, लियम, अगर तुम अब भी मुझसे शादी ना चाहते हो, तो मैं तैयार हूं।"

उसकी जिंदगी की सबसे बड़ी अभि- ा इस तरह भावहीन स्वर में पूरी की बात सुनकर विलियम को कहीं चुभा, लेकिन वह कुछ बोल नहीं ा। केथरीन उसकी आवाज की प्रतीक्षा ती खड़ी रही।

राल्फ डेनम मिस्टर हिल्बेरी से मिलने था। पता लगा कि पूरे घर में केथरीन बेरी के अलावा और कोई नहीं है। इस सुखद संयोग की कल्पना नहीं थी। कभी ऐसा हो सकता है, जब केवल और केथरीन हों, कहीं और कोई न हो! अप्रत्याशित रूप से वही स्थिति बन [illegible] सब कह सकेगा, जो अकेली कल्पना में केथरीन से कहा करता है!

वहीं बातों-बातों में पता चला कि केथरीन और रोड्नी विवाह-सूत्र में बंधने-वाले हैं। डेनम को—जैसे किसी ने आकाश से धरती पर फेंक दिया। वह केथरीन के बहुत रोकने पर भी वहां से चला आया। 'धोखा . . . केथरीन ने धोखा दिया है', उसका अणु-अणु पुकार रहा था।

नदी किनारे, जहां उस रात रोड्नी और केथरीन साथ-साथ दिखायी दिये थे, जाकर बैठ गया डेनम। चारों ओर ठिठुरानेवाला कोहरा छाया हुआ था। नदी के दूसरे किनारे पर . . . उसे यह संतोष था कि उसने केथरीन के अहं को नीचा दिखाया था, लेकिन अब पता चल गया था कि सच कुछ और ही था। असल में तो केथरीन ही अब तक उसे अपमानित करती रही थी! लेकिन . . . लेकिन . . . उसने केथरीन से यह सब चाहा ही क्यों? केथरीन ने भला उसे कब कुछ देने का वादा किया था? और उससे लिया भी क्या है? केथरीन के लिए उसके सपनों का कोई मतलब नहीं था! उसने तो अपना हर पल केथरीन को नहीं, नहीं . . . उसकी कल्पना को समर्पित कर दिया था। वह नदी के बहाव पर आंखें गड़ाये बैठा रहा। बहता हुआ काला जल अपनी जीवन-धारा की तरह ही मालूम हुआ!

मेरी ने डेनम को बाजार में देखा था।

वह लंच लेकर लौट रही थी। वह और डेनम पास-पास से गुजर गये, लेकिन डेनम-जैसे आर-पार देख रहा था। मेरी लौटी और होले से डेनम को छुआ, तब वह चौंक उठा, "अरे मेरी तुम . . . तुम।"

"हां, मैं . . . मैंने देखा तुम नींद में चल रहे हो, इसलिए तुम्हें जगाने चली आयी," कहकर वह हंस दी।

डेनम की समझ में नहीं आया कि मेरी से क्या कहे! उसने अपनी पारिवारिक कठिनाइयां बतायीं, किस तरह सब भाई-बहन एक दूसरे से अलग और दूर भाग रहे थे, उसके बड़े परिवार में।

मेरी ने उसे सांत्वना दी, लेकिन डेनम उससे अप्रभावित रहा, क्योंकि उसने मेरी से सच कहा ही कब था!

मेरी के मन में कुछ हो रहा था, डेनम के लिए। वह उसका बोझ कुछ हल्का करना चाहती थी। उसने एकाएक कह डाला, "डेनम, इस बार तुम क्रिसमस हमारे साथ गांव में क्यों नहीं बिताते? आओ न!"

"वहां आ जाऊं!"

"हां, तुम्हें जरा भी असुविधा नहीं होगी।"

मेरी के पादरी पिता डाइशम गांव में रहते थे। मेरी वहां पहुंच गयी, लेकिन उसे डेनम के प्रोग्राम का पता नहीं था। वैसे वह जानती थी कि डेनम के आने की संभावना कम ही थी, इसलिए उसके आने का टेलीग्राम पाकर उसे खुशी हुई। डेनम ने लिखा था कि वह खाना उनके साथ खाएगा, लेकिन रहेगा कहीं और।

क्या मेरी को पता था कि डेनम के पास मिस्टर हिल्बेरी का भी एक पत्र था, जिसमें लिखा था कि पंद्रह दि[न] के लिए लेंगशर में ओट्वे परिवार [के] बीच रहेंगे। इस पत्र का यह मतलब [तो] नहीं था कि केथरीन भी वहीं रहेगी, लेकि[न] डेनम कल्पना की आंखों से उसे लेंपश[ायर] में देख रहा था। और क्या मेरी यह भ[ी] जानती थी, उनके घर से ओट्वे परिवा[र] का मकान ज्यादा दूर नहीं था।

शाम ढल रही थी। दौड़ती ट्रेन के दोन[ों] ओर पीछे छूटती झाड़ियां काही रंग [में] डूब चुकी थीं। अंधेरे ने आकाश औ[र] धरती के बीच की दूरी कम कर दी थी। डेनम बाहर देखता बैठा था—कहां हो[गी] केथरीन, यहां होगी केथरीन! जहां अंधे[रे] के बीच एक अकेला प्रकाश बिंदु चमकक[र] लुप्त हो जाता है, एक संकेत देता हुआ लेकिन . . . लेकिन . . . वह केथरीन [के] बारे में ज्यादा देर तक नहीं सोच सका। न जाने कहां से विलियम रोड्नी का चेहरा भी झांकने लगा। हां, जब से उन दोनों [के] आसन्न विवाह की सूचना मिली थी, त[ब] से केथरीन को लेकर अपनी कल्पना मे[ं] ज्यादा देर तक अकेला नहीं रह पाता थ[ा]।

स्टेशन पर मेरी उसे लेने आयी थ[ी]। उसने घोड़ागाड़ी छोड़कर पैदल ही मे[री] के साथ खेतों के बीच से होते हुए घर प[हुं]चने का निर्णय किया था। वह अपने

यथार्थ की कड़ी धरती पर जमाने की कोशिश कर रहा था। हां, केथरीन की कल्पना को उसने जैसे-तैसे परे धकेल दिया था। वह ताजा भुरभुरी मिट्टी को धकेलता, ताजा हवा को फेफड़ों में भरता चल रहा था। हां, यही तो सच है। मेरी उसे अपनी योजना के बारे में बता रही थी, "मैं तो स्वयं यहां रहना चाहती हूं, लंदन की रेलमपेल से दूर होकर! हरे-भरे उद्यान के बीचों-बीच छोटी सी काटेज, जहां आप अपनी पसंद के फूल और सब्जियां उगा सकें।"

"और जहां छह बच्चों की मां पड़ोसिन हर समय चीखती-पुकारती रहती हो—ऐसी काटेज चाहिए तुम्हें," डेनम ने हंसकर कहा था, लेकिन वह खुद भी ऐसी काटेज की कल्पना कर रहा था। उसका केथरीन की कल्पना से कोई सामंजस्य नहीं था लेकिन यह सोचकर उसे बुरा लगा था कि मेरी ने उससे बिना पूछे ही कितनी योजनाएं बना ली थीं।

शाम को खाना राल्फ ने मेरी और उसके भाइयों के साथ मिलकर खाया था। वह हंसता-हंसाता फिर गंभीर हो जाता! खाने के बाद वे दहकते आतिशदान के पास जा बैठे थे। सूखी ऊष्मा, उसे सुखद आलस्य से भर रही थी। मेरी का छोटा भाई एडवर्ड बहन की गोद में सिर रखकर लेट गया। मेरी की उंगलियां उसके उलझे बालों में फिरने लगीं। सूखी लकड़ी से चट-चट की हल्की आवाजें उठ रही थीं। नीम अंधेरे कमरे में आतिशदान की दहक और चमक अंधेरे से आंखमिचौनी खेल रही थी। राल्फ देखता रहा—क्या ऐसा नहीं हो सकता कि एडवर्ड की जगह वह हो और मेरी की उंगलियां . . . तभी न जाने कहां से केथरीन की छाया आकर बीच में खड़ी हो गयी थी, पर वह अकेली नहीं थी—साथ में था विलियम रोड्नी!

लेकिन इस समय सचमुच अकेली थी केथरीन! वह विलियम रोड्नी के साथ लेंपशर में अपनी मौसी श्रीमती ओट्वे के घर आयी थी। बिना चांद की अंधेरी रात थी। वह घर के बाहर हल्की सर्दी की सिहरन सहती बैठी अनंत अंतरिक्ष में ताक रही थी। कितना चाहती थी कि अकेली रहकर अपने में खो जाए, लेकिन ऐसा कहां हो पाता था।

सब जानना चाहते थे कि वह विलियम से विवाह क्यों कर रही थी। क्या कोई विशेष कारण था। केथरीन कहना चाहती थी कि विवाह इसलिए करना चाहती थी कि विवाह होना था। उसका एक अपना घर भी होना चाहिए। बस, और कोई कारण नहीं है!

विलियम रोड्नी को केथरीन अपनी संपूर्णता में चाहिए थी। उसे यह बरदाश्त नहीं था कि केथरीन मन की कई परतों में उसके लिए अपरिचित थी, उससे दूर थी। विलियम रोड्नी की राय में विवाह एक एकाग्र बंधन था। उसके पास होते हुए भी केथरीन की आंखें कहीं दूर देखने लगती

थीं। यह कैसी बात थी कि वह केथरीन को पाकर भी उसे अपनी कह पाने का साहस नहीं जुटा सकता था।

रोड्नी केथरीन से पूछना चाहता था कि 'क्या वह विवाह का मतलब संपूर्ण समर्पण समझती थी अथवा . . .।' इसी-लिए छोटी-छोटी बात पर नाराजगी जाहिर करके वह चाहता था कि केथरीन उसे मनाए, रिझाए ! और. . .वही-वही करती जाए, जो वह चाहे। ऐसा कई बार होता; तभी उसे विश्वास होता पूर्ण समर्पण का। लेकिन केथरीन से उसकी ऐसी आशा आशंका में बदल गयी। केथरीन उसके कवि से प्रभावित थी, लेकिन डेनम की तरह टुकड़ों में बंटा जीवन, उसके लिए सिर्फ एक ही अर्थ देनेवाला नहीं था। ठीक है वह रोड्नी से विवाह करने जा रही थी, लेकिन उसमें रोड्नी की शर्त अनावश्यक थी। आकाश में सितारों के खेल देखना, अंतरिक्ष में घूमते जीवित पिंडों से आते संदेश सुनना और गणित की उलझनें सुलझाना, आखिर वह भी तो केथरीन थी ! लेकिन शायद विलियम रोड्नी को उस केथरीन की कुछ परवाह नहीं थी। और डेनम. . .? क्योंकि वह खुद टुकड़ों में जीने का आदी था, शायद इसीलिए केथरीन की पीड़ा को समझता था।

ओट्वे परिवार के बारह बच्चों में सबसे छोटी कसांद्रा में, रोड्नी को अपने मन की झलक दिखायी दी ! एक गरीब परिवार में अपनी इच्छाओं-कामनाओं को दबाने और दुःख सहने में कुशल, कसांद्रा के मन में किसी के प्रति भी समर्पित होने का भाव हिलोरें ले रहा था ! न कोई उनके गरीब घर में आता था, न ही वे लोग कहीं जा पाते थे, इसलिए जब रोड्नी और केथरीन क्रिसमस के मौके पर वहां आये, तब कसांद्रा के सारे मन-कपाट एक बारगी ही खुल गये। और रोड्नी ? उसकी आंखों ने कसांद्रा में अपनी इच्छाओं की प्रतिमूर्ति देखी। उसका मन कह रहा था कि कसांद्रा ही है, जिसे उसका मन चाहता है। एक गीली मिट्टी का जीवित पिंड; उसे मन-चाहा रूपाकार दिया जा सकता था !

केथरीन ने उसे कई बार बता दिया था, जता दिया था—'वह उससे शादी कर कसती है, उसे प्यार भी करती है। लेकिन एकांत समर्पण, ऊं हूं. . . यह संभव नहीं था उसके लिए, क्योंकि वह अपनी स्वामिनी आप कहां थी। ऊपर आकाश में टिमटिमाते तारे, सुदूर ग्रहों से आते अव्यक्त संदेश, गणित के उलझाव, उसकी जिंदगी के हिस्से अलग-अलग धड़क रहे थे।'

इसी दौर में एक रोज मेरी केथरीन से मिली थी। वह-जैसे न चाहते हुए भी बता गयी थी कि डेनम को लेकर उसने भी सपने देखे हैं। वह भी अपने एकांत से ऊब चुकी है। लेकिन इससे केथरीन को क्या ! क्या मेरी यह सब इसलिए बता

रही थी कि कहीं मन में वह केथरीन और डेनम को. . . .लेकिन केथरीन ने तो कभी नहीं चाहा था डेनम को ! हां, वह अपने तेजाबी व्यक्तित्व से उसे परेशान जरूर करता था। बस, इतना ही !

मेरी राल्फ डेनम से प्यार करती थी। डेनम केथरीन पर प्राण देता था और केथरीन पूरी तरह न चाहते हुए विलियम रोड्नी से शादी करने जा रही थी। क्या विचित्र त्रिकोण था। हां, एक नया बिंदु उभरा था—कसांद्रा के रूप में। केथरीन से पूर्ण समर्पण की मांग को अप्राप्य समझकर रोड्नी कसांद्रा की ओर झुक गया था। लेकिन केथरीन अभी असंपृक्त-सी बीच में ही खड़ी थी। डेनम और उसके बीच की दूरी में कोई कमी नहीं आयी थी। केथरीन से निराश होकर डेनम कभी-कभी मेरी की ओर झुकता था। उस समय वह आंखों में आंसू भर-कर मेरी से याचना करता था, 'मेरी मुझे छोड़कर मत जाना. . .।' और अगले ही पल केथरीन की याद उसे फिर परे खींच ले जाती थी। इस क्रूर खेल से मेरी का मन टूट चुका था— उसे अब डेनम पर विश्वास नहीं रह गया था। उसमें अपने अकेलेपन को डुबोकर, निश्चित हो जाने की आशा का गला मेरी ने अंतिम बार घोंट दिया था।

डेनम और केथरीन एक बार फिर मिल गये थे। डेनम ने पूछा था, "तुम शादी करने जा रही हो!"—"किससे ?" केथरीन ने जैसे चौंककर अपने से पूछा था, क्योंकि एकांत समर्पण की घुटन से ऊबकर उसने विवाह न करने का निर्णय ले लिया था !

"मैं काम छोड़कर गांव में बस जाने की सोच रहा हूं। शहर में रहा नहीं जाता !"

"क्यों ! कहीं तुम मुझे तो इसका कारण नहीं समझते ?" केथरीन पूछ बैठी थी !

"हां, तुम्हीं तो हो वह !" डेनम अपने को नहीं रोक सका था।

"लेकिन . . . मैं किस तरह. . . कैसे !" फिर जैसे कोई भूली बात याद आ जाए, इस तरह केथरीन ने कहा, "मैं मेरी से मिली थी।"

डेनम चौंक पड़ा। बोला, "मैंने उससे विवाह का प्रस्ताव किया था, मैं बहुत दुःखी था ! लेकिन उसी समय मैंने खिड़की से बाहर तुम्हें जाते देखा और मैं सब कुछ भूल गया !" डेनम ने अपनी बात कह दी थी।

"उसके प्रति तुम्हारा व्यवहार एकदम गलत था," केथरीन ने कुछ गुस्से से कहा।

"मैं तुमसे यह नहीं कह रहा हूं कि मैं तुमसे प्यार करता हूं। मैं जो कुछ कह रहा हूं, उसका वह मतलब नहीं है, जो शब्दों से निकलता है !"

"तो सही अर्थ बता दो," केथरीन ने पूछ लिया !

और डेनम ने उसे सब कुछ बता दिया, "मैं तुमसे प्यार करता हूं; तुम मेरी आदर्श हो... मेरी... मेरी कल्पनाओं में आती हो ! ... मैं तुमसे खूब बातें करता हूं, तुम चुप रहती हो... मुझे कहने से नहीं रोकतीं ... मैं कहता जाता हूं, कहता जाता हूं... हम अंधेरी सड़कों पर, खुली चांदनी में, साथ-साथ निकले चले जाते हैं ! किसी के लिए यह सब बेहूदी कल्पना हो सकती है, लेकिन मेरे लिए यही सच है ...।"

केथरीन चुप खड़ी सुनती रही। वह उसकी आंखों में देख रही थी, "अगर तुम मुझे सचमुच जानते, तब यह सब न कहते...सच मैं वैसी बिल्कुल नहीं हूं —जैसी तुम समझ रहे हो...हम दोनों एक-दूसरे को नहीं जानते !"

वह रुक गयी। क्या सचमुच ठीक कह रही थी ! डेनम एक कांटे की तरह हर समय चुभन नहीं पैदा करता रहता था, उसके अंदर ! अपनी याद दिलाता हुआ !

केथरीन ने देख लिया था कि विलियम कसांद्रा की ओर तेजी से झुक रहा था, लेकिन उसके मन में कहीं जरा भी हलचल नहीं थी। जैसे इसे वह एक मुक्ति मान रही थी ! एक शाम वह और राल्फ डेनम बाग में मिले थे। बहुत देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं, फिर डेनम ने एक प्रस्ताव रख दिया। लेकिन प्रस्ताव विवाह का नहीं, था अनंत मैत्री का। उसमें कहीं कोई शर्त नहीं थी। डेनम जानता था कि केथरीन और विलियम रोड्नी विवाह करनेवाले हैं। इसलिए वह अपने और केथरीन के विवाह की कल्पना भी नहीं कर सकता था। लेकिन केथरीन उसके सपनों की देवी थी व... कल्पना में हमेशा उसके साथ रहती थी। इसीलिए आज उसने मैत्री मांगी थी।

केथरीन सोच रही थी—'विलियम द्वारा पूर्ण, एकांतिक समर्पण की मांग और दूसरी ओर स्वच्छंद मैत्री-भाव।' एक है, जो बाग में खड़े होकर केवल सुगंध का दान लेना चाहता है फूलों से। और दूसरी ओर रोड्नी है ! न चाहते हुए भी वह प्रभावित हो उठी डेनम की निश्छलता से ! डेनम—जो उसे हर पल कांटे-सा चुभता था, उसकी साधारण स्थिति, उसका थोथा अहं—इस सबके बावजूद उसके पूजा भाव ने केथरीन को मोह लिया।

ओट्वे परिवार के पास से लंदन लौटकर रोड्नी ने कसांद्रा को पत्र लिखा। वह चाहता था कि कसांद्रा लंदन आकर उसके साथ रहे। अपनी कुंआरी आंखों से लंदन देखे, दुनिया को जाने। केथरीन को पता चला, तब उसने कुछ नहीं कहा। वह रोड्नी को सहयोग देना चाहती थी, उसकी मुक्ति का मार्ग भी तो इसी में से निकलता था कहीं।

उस रोज कसांद्रा विलियम रोड्नी और केथरीन साथ-साथ घूमने गये, तब

रीन ने जल्दी ही यह बता दिया कि ा राल्फ डेनम के साथ थियेटर जाना । विलियम ने हल्का-सा प्रतिवाद किया र डेनम के आते ही दोनों जोड़े एक रे से अलग हो गये ... केथरीन र राल्फ डेनम ... च पुल बनानेवाले काम नहीं कर ... था विलियम ड्नी ने !

छोटे-छोटे क्षण, चिड़ियाघर में रीछ लिए बन खरीदते हुए राल्फ ने इस बात जोर दिया कि पैसे वह देगा, केथरीन । क्या केथरीन उसका कारण जान ती थी ! राल्फ चाहता था कि अपना कुछ उस पर लुटा दे, उसे सुखी ा दे . . . ।

थोड़ी देर बाद डेनम के अति साधा- घर में, उसके अस्तव्यस्त कमरे में, ड़की से लंदन का कुहासा मंडित आकाश ते हुए, डेनम ने उसे फिर चौंका दिया । जाने का समय हो गया था, लेकिन जानती थी घर में रोड्नी और कसांद्रा , लेकिन वह ठहर भी कैसे सकती । तभी राल्फ ने कहा था, "जब तुम ड़की में खड़ी बाहर झांक रही थीं, तब..."

"तब . . . एकदम साधारण दिखायी रही थी !" केथरीन ने बीच में टोक ा ।

"हां, मैं चाहता था कि तुम वैसी खायी देतीं, लेकिन . . . तुम . . . तुम . . . से अलग हो !"

और केथरीन को लगा-जैसे आत्म- ोष का गहरा घूंट उसके गले से उतर गया है ... कुरसी के हत्थे पर बैठ गयी, आंखें मूंद लीं । अंधेरा कब का नीचे उतर ...था, पर उसे ... कोई जल्दी नहीं थी ।

रोड्नी ने केथरीन से कहा था, "मैं जानता हूं, तुम उसे प्यार करती हो !"

केथरीन ने सच्चे अचरज से उसे देखते हुए अपने से पूछा था, "मैं उसे प्यार करती हूं ?"

और केथरीन के मन में एक के बाद दूसरी परतें अनावृत्त होती गयीं । 'प्यार' यह शब्द तो पहली बार बजा था उसके कानों में । वह रोड्नी से विवाह करने जा रही थी, लेकिन उसमें प्यार तो नहीं था । डेनम उसे कांटे चुभाता था, उसकी पूजा करता था । वह उसे भी प्यार नहीं करती थी । तब उसके किस व्यवहार से विलियम रोड्नी ने यह निष्कर्ष निकाल लिया कि वह राल्फ डेनम को प्यार करती है ?

और अगले दिन जब रोड्नी डेनम से मिला, तब उसी ने कहा, "सबसे पहले व्यक्ति तुम्हीं हो, जिसे मैं यह खबर बता रहा हूं कि केथरीन ने मुझसे शादी करने का विचार त्याग दिया है ।"

लेकिन यह भी सच था कि विलियम रोड्नी और कसांद्रा विवाह करने जा रहे थे ।

शाम ढल रही थी । केथरीन अकेली अपने बड़े कमरे में बैठी थी । चारों ओर से अंधेरा दबे पांव अंदर आने लगा था । लेकिन केथरीन ने रोशनी की जरूरत नहीं

समस्या-पूर्ति—४२

हइया हो हइया !

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार—२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार—१५ रुपये
अंतिम तिथि—२० अक्तूबर, १९८२